

श्री निर्यावर्तिकास्तु



॥ श्रीः ॥

॥ श्री निर्यावालिकासूत्रम् ॥

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराज-विरचित-
सुन्दरबोधिनीटीकासमलंकृतम्

(हिन्दीगुर्जरभाषानुवादसहितम्)

नियोजकौ

साहित्यरत्न सुबोध-पं. मुनिश्री समीरमल्लजी महाराजः
संस्कृत-प्राकृतज्ञ-पं. मुनिश्री कन्हैयालालजी महाराजश्च ।

एतच्च

श्री श्वे. स्था. जैनशास्त्रोद्धारकसमिति ' सेक्रेटरी '—
पदभूषितेन गुलाबचन्द पानाचन्द मेहता महोदयेन स्वद्रव्यतः

प्रकाशितम्

आवृत्तिः प्रथमा	}	वीर संवत् २४९४	{	मूल्यः—रु. ७ आ. ८
प्रति— १०००		वि. संवत् २००४		
		ई. सन् १९४८		

: : प्राप्तिस्थानम् : :

गुलाबचन्द पानाचन्द महेता
कोठारीया नाका, मांडविया बिल्डिंग
राजकोट. (कठियावाड)

स्थानकवासी जैन कार्यालय
पंचभाइनी पोळ
अमदावाद.

: मुद्रक :
सरस्वती प्रि. प्रेस
राजकोट (सौराष्ट्र)

મુરખી વડિલ ભાઈશ્રી
કપુરચંદ પાનાચંદ મહેતા

— તથા —

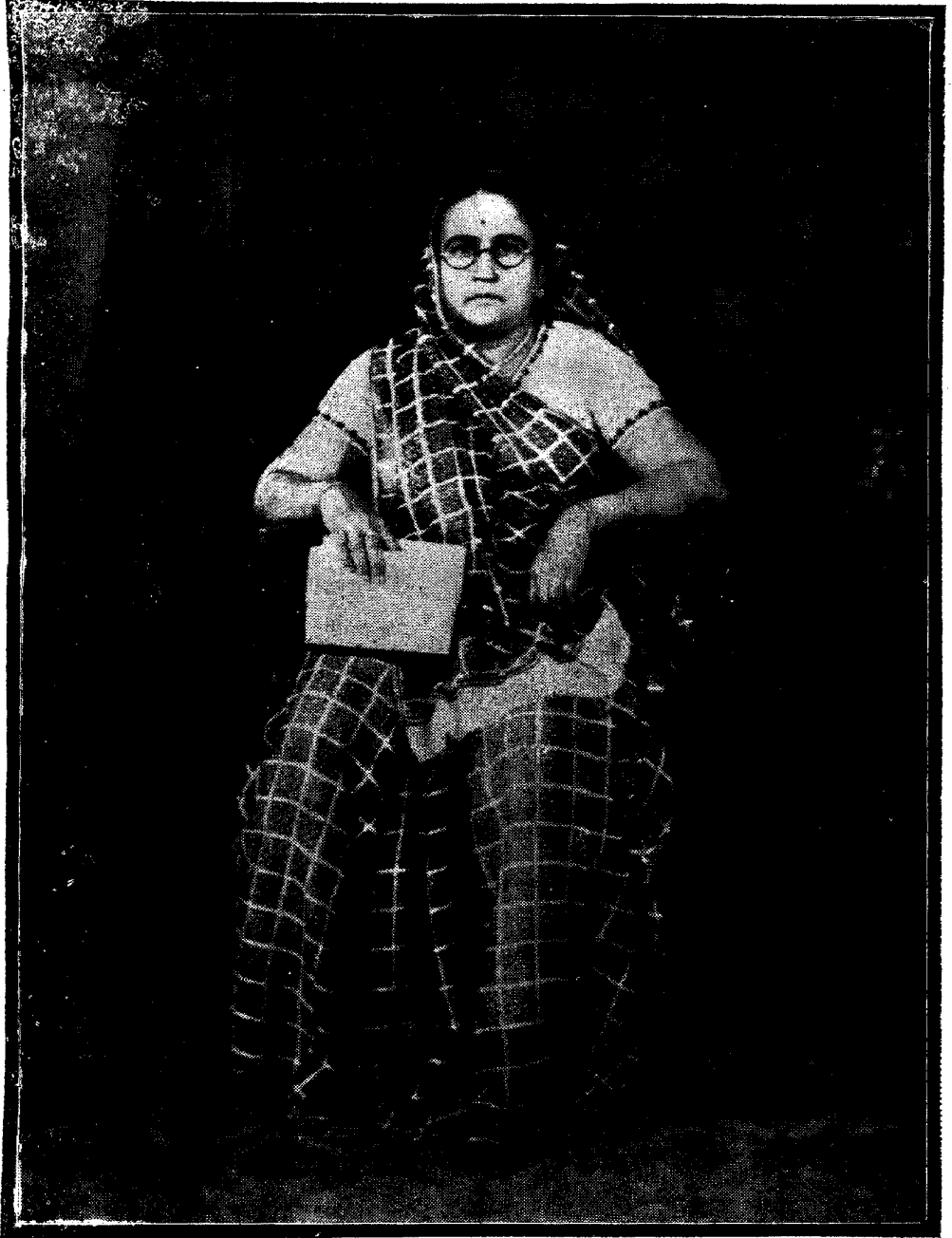
દુર્ગાદાસ પાનાચંદ મહેતા
તથા વડિલ બહેનો

રંભા બહેન તથા કસુંબા બહેન

જેમના તરફથી ધર્મ સંબંધી મને ઘણું જાણવાનું મળ્યું છે,
તે સ્વર્ગિય આત્માઓને ઘણાજ માનપૂર્વક નાનાભાઈ તરીકે
આ સૂત્ર અર્પણ કરી કૃતાર્થ થાઉં છું.

ગુલાબચંદ પાનાચંદ મહેતા.
રાજકોટ.

રાજકોટ નિવાસી મહેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદના
ધર્મપત્ની અ. સૌ. પ્રભાકુવર ગોપાલજી ભીમજી પારેખ



જેમણે શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને રૂ. ૩૦૦૧) આપી આ “નિરિયાવલિકા” સૂત્ર
છપાવી આપેલ છે.

પ્રકાશકનું નિવેદન



“શ્રીમજ્જેનાયાર્ય,” “જૈનધર્મદિવાકર” પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ સાહેબે રચેલી ટીકા સહિત ૩૨ સૂત્રો માહેતું આ શ્રી “નિરયાવલિકા” નામનું ‘ઉપાંગ’ સૂત્ર વાચકવર્ગના હાથમાં મૂકતાં અમને અત્યંત આનંદ થાય છે.

પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મ. સા. પ્રખર વિદ્વાન છે. તેઓશ્રીનાં જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને તપથી પ્રમોદ પામીને કરાંચીના સમસ્ત સ્થાનકવાસી જૈન શ્રીસંઘે તથા તેમના અનુયાયી મુનિવરોએ પૂજ્યશ્રીને “જેનાયાર્ય” તથા “જૈનધર્મદિવાકર” પદની સાથે માનવંતી ‘પૂજ્ય’ પદવી સમર્પણ કરી. તથા પૂજ્યશ્રીએ રચેલી સંસ્કૃત-હિંદી-ગુજરાતી ટીકા સાથેનું ‘શ્રી ઉપાસક-દશાંગ સૂત્ર’ કરાંચી શ્રીસંઘે છપાવીને બહાર પાડ્યું. આ ઉપરાંત પૂજ્યશ્રીએ રચેલી સંસ્કૃત ટીકાવાળું ‘શ્રી દશવૈકલિક સૂત્ર’ ભા. ૧ લો લીમડી (જી. પંચમંડાલ)ના શ્રી સંઘે છપાવીને બહાર પાડેલ છે. ત્યાર બાદ ‘શ્રી અનુત્તરોવવાઈ સૂત્ર’ ‘શ્રી યે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ-રાજકોટ તરફથી પ્રગટ થયેલ છે. અને તે પછી પ્રસ્તુત ‘નિરયાવલિકા સૂત્ર’ (જેમાં પાંચ સૂત્રોનો સમાવેશ છે) બહાર પડે છે. આ રીતે આજ મુખીમાં પૂજ્યશ્રીની રચિત ટીકાઓ સાથેનાં ૩૨ સૂત્રો પ્રગટ થઈ ગયાં છે અને હવે પછી ‘શ્રી દશ વૈકલિક સૂત્ર’નો બીજો ભાગ (જે છપાઈ રહેલ છે) ટુંક સમયમાં પ્રગટ થશે.

રાજકોટ નિવાસી મહેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદે આ પુસ્તક છપાવવા માટે રૂ. ૩૦૦૧)ની ઉદાર મદદ સમિતિને આપી છે, તે માટે સમિતિ તેઓશ્રીનો આભાર માને છે.

આ ઉપરાંત નીચેના ધર્મશાસ્ત્રના પ્રેમી અને ઉદાર ગૃહસ્થોએ એક-એક સૂત્ર છપાવી આપવાનું વચન આપેલ છે. (૧) દોશી પ્રભુદાસ મૂળજીભાઈ રાજકોટ (૨) વસા હગનલાલ હેમચંદ, જામનગર (૩) સંઘવી પીતાંબરદાસ ગુલાબચંદ,

૬

જામનગર (વાડીલાલ ડાઈંગ એન્ડ પ્રિન્ટિંગ વર્ક્સ-મુંબઈ), (૪) કોઠારી હરખચંદ જગજીવન, જામનગર હાલ યોટાદ, હા. શ્રી છબીલાલસલાઈ હરખચંદ, તથા શ્રી રંગીલાલસલાઈ. આ માટે સમિતિ ઉપરોક્ત સર્વ બંધુઓને ધન્યવાદ આપે છે.

અન્ય બંધુઓ અને ધર્મપ્રેમી પહેનો ઉપરોક્ત બંધુઓનું અનુકરણ કરીને એક એક સૂત્ર છપાવી આપવાની ઉદારતા બતાવશે તો સમિતિનું પ્રકાશન કાર્ય ઘણું જ હળવું બની જશે અને જૈન જનતાને માટે આ કાર્ય મહાન ઉપકારક નીવડશે.

આ સુત્રોનાં મૂકે તપાસવામાં પૂરેપૂરી કાળજી રાખવામાં આવી છે, તેમ છતાં પ્રેસદોષ કે દૃષ્ટિ દોષથી અથવા છદ્મસ્થપણાને કારણે ભૂલો રહી જવા પામી હોય તો વાંચકો સુધારીને વાંચશે અને અમારું ધ્યાન દોરશે તો તે તે ભૂલો બીજી આવૃત્તિ વખતે આભાર સાથે સુધારવામાં આવશે. કિં બહુના સુસ્રેષ્ઠ ?

રાજકોટ તા. ૧૧-૫-૪૮

બૈશાખ શુક ૩

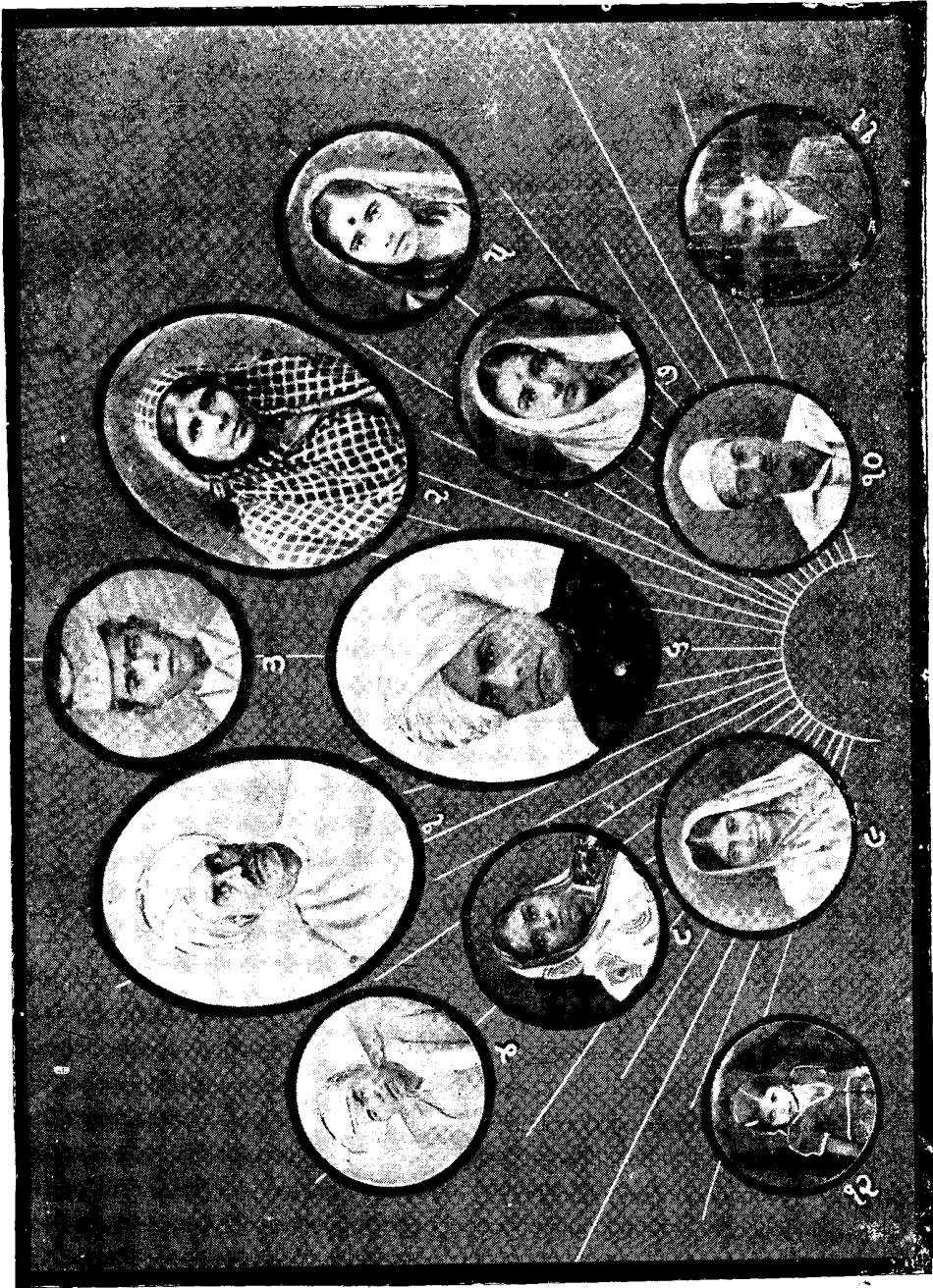
સંવત: ૨૦૦૪

મંત્રીઓ,

શ્રી યે. સ્થાનકવામી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ



રાજકોટવાસી કોણાર હરગોવિંદ નય દલાઇ જમણ
શ્રી સ્થા. જૈન સાયોજીય સમિતિને રૂ. ૫૦૦૧) આપેલ છે.



૧ જયંદ અજરામર. ૨ વખતપાલ વદાભજ. ૩ શાન્તીલાલ જયંદ ૪ ઉમેદચંદ જયંદ. ૫ મણીમહેત જયંદ (પિરખંદર). ૬ હરગોવિંદ જયંદ
૭ જયંદ અજરામર. ૮ જયંદ અજરામર. ૯ જયંદ અજરામર. ૧૦ ભાનમતી. ૧૧ દીનેશચંદ. ૧૨ છતુમાળા

प्रस्तावना.

संसारके सभी जीव परम अमृत समान सुखकी गवेषणा करते हैं, सुखके प्रयत्नमें लगे रहते हैं, सुखके कारणको ढूँढते हैं, सुखके वातावरणको पसंद करते हैं, सुखकी याचना और सुख ही की भिन्नत मानते हैं, तो भी वे परम सुखके बदले परम दुःख ही प्राप्त करते हैं। सभी प्रयत्न सभी कारण और सभी वातावरण दुःखरूप जालमें परिणत होकर आत्मारूप भोले भाले मृगोंको फसाकर दुःखित करते हैं। जिससे आत्मा अपना भान भूलकर अज्ञानरूपी अन्धकारमें गोता खाती है भटकती है, फिर इन्द्रिय रूपी चोर चारों तरफसे आकर दुर्बल आत्माको घेर लेते हैं और अनेक प्रकारकी विडम्बना करते हुए आत्माको हैरान करते हैं। जैसे इन्द्र वज्रसे पर्वतको चूर २ कर डालता है वैसे ही वे आत्माके शम—दम आदि गुणोंको नाश करके आत्माको जड जैसा बनाते हुए दीन हीन बनाकर छोड़ते हैं।

जब आत्मा निर्बल हो जाता है तब मोहरूपी सुभट आत्मराज्यमें प्रवेश करता है, और वहाँ विघ्नपरंपराको उपस्थित कर आत्माका सर्वस्व छूटकर उसको भवरूप कूपमें डालता है। वहाँ आत्माको संयोग वियोगरूप आधिग्याधि रूप दुष्ट जलजंतु हरएक तरहसे कष्ट पहुँचाते हैं, सर्प जैसे मेढकको गिल जाता है वैसे ही जन्म जरा मृत्यु आत्माको गिलती रहती है। फिर किस प्रकार सुखकी आशा की जाय? ऐसी अवस्थामें तो सुखका स्वप्न भी नहीं मिल सकता, 'हा कष्टम्' तो भी संसारी जीव सुखकी आशा करते हैं।

फिर अविरति रूपी राक्षसी आकर आत्माको घेर लेती है और विष समान विषय भोगोंमें फसाकर उसे निःसार बना देती है, आत्माके निज स्वरूपको पल्टाकर विभावदशा उत्पन्न करती है जिससे आत्मा परस्वरूपको अपना स्वरूप समझकर भवभ्रमण रूप परंपराकी और भी वृद्धि करती हुई कष्ट पर कष्ट भोगती है, सुख कैसे प्राप्त हो इसकी तलाशमें घूमती है, इतनेमें कषाय रूप राक्षस विविध प्रकारसे त्रास पैदा करता है, तो भी आत्मा दुःखके निदान रूप उस कषायको ही सुखका निदान समझकर उसमें आसक्त होती है, सुखके जितने भी कारण हैं—

८

अहिंसा संयम तप आदि; उनको दुःख रूप समझकर उन्हें छोड़ बैठती है, धर्म अधर्म आत्मा अनात्माके विवेकसे वंचित रहती है, उन्मार्गगामी बनती है, सुमार्गको परित्याग करती है, फिर उसी दुःख परंपराकी जालमें फसती है। इतनेमें प्रमाद रूपी पिशाच आकर झूमता है और आत्माकी ऐसी छिन्न भिन्न दशा करता है कि आत्मा जड़ स्वरूप बनकर जड़ वस्तुओंमें ही आनन्द मानती है।

इधर अशुभयोग रूप भूत आत्मामें प्रवेश करता है; तब फिर क्या ? कल्पनासे भी बाहर परिस्थिति बन जाती है। अशुभ योगों की अशुभ प्रवृत्तियाँ अशुभ कार्योंकी ओर आत्माको घसीटती हैं। फिर आत्मा परतंत्र बनकर ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मोंको मन्द तीव्र आदि रसमें प्रवृत्त हो बांधती है और एकसौ अड़तालीस प्रकृतियों की फासमें फसकर नाना प्रकार का दुष्कृत्य करके नरक निगोद आदि अनन्त दुःख-रूपी खड्डेमें गिर जाती है। इस प्रकार अनन्त काल तक आत्माके लिये मनुष्यभव पाना तो दूर रहा, किन्तु निगोदकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रियसे वादर एकेन्द्रियका भी भव वह नहीं पा सकती।

इस तरह चतुरगतीमें भटकती भटकती भव भ्रमण करती २ आत्मा कदाचित् मनुष्य भवमें आ भी गयी तो मिथ्यात्व अविरति कषाय प्रमाद और अशुभ योगों की प्रवृत्तियाँ उसको घेर लेती हैं, जिससे वह फिर भवाटवीमें पड़ जाती है और उसी विकल दशाको प्राप्त कर जन्म मरण आदि पाती रहती है।

इस प्रकारकी अवस्था सकल संसारी जीवों की भगवानने अपने केवल-ज्ञानरूपी प्रकाशसे अवलोकन करके परम करुणा करते हुए शारीरिक मानसिक दुःखोंको मिटानेवाली जन्म मरण आदिको उच्छेद करनेवाली जिनवाणीको द्वादश अंग द्वारा प्रवचन रूपसे प्रकाशित की है। वह वाणी १ चरणकरणानुयोग २ धर्मकथानुयोग ३ गणितानुयोग और ४ द्रव्यानुयोग रूपमें विभक्त है।

निरयावलिका आदि पाँच उपाङ्ग भगवानकी धर्मकथानुयोग वाणीमें अन्तर्हित हैं। इन पाँचों उपाङ्गोंमें (१) निरयावलिका अन्तकृतका उपाङ्ग है, और (२) कल्पावतंसिका अनुत्तरोपपातिकका, (३) पुष्पिता प्रश्नव्याकरण सूत्रका, (४) पुष्प-चूलिका विपाकसूत्रका, एवं वृष्णिदशा दृष्टिवादाङ्गका उपाङ्ग है।

इनमें निर्याबलिका उपाङ्गमें काल आदि दस कुमारोंका वर्णन काल आदि दस अध्ययनोंमें किया गया है। जो संक्षिप्तमें इस प्रकार है—

महाराज श्रेणिककी अनेक रानियाँ थीं। उनमें नन्दा, चेछना, काली, सुकाली, महाकाली, कृष्णा, सुकृष्णा, महाकृष्णा, वीरकृष्णा, रामकृष्णा, पितृसेनकृष्णा, और महासेनकृष्णा, ये उनकी मुख्य रानियाँ थीं। इनमें नन्दाके पुत्र अभयकुमार थे, चेछनाके पुत्र कूणिक, वैहल्य, और वैहायस थे। काली आदि दसों रानियोंके पुत्र क्रमशः काल, सुकाल, महाकाल, कृष्ण, सुकृष्ण, महाकृष्ण, वीरकृष्ण, रामकृष्ण, पितृसेनकृष्ण और महासेनकृष्ण थे। इन कुमारोंमें अभयकुमार प्रव्रजित हो गये। चेछनाके पुत्र कूणिकने काल आदि दस कुमारोंको अपनी ओर मिलाकर महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया और उन्हें अनेक प्रकारकी तकलीफें देने लगा। एक दिन कूणिक अपनी माताके चरण वन्दनके लिये आया। माताने उसे देखकर अपना मुँह फिरा लिया। यह देख कूणिक हाथ जोड़ इस प्रकार बोला—हे माता ! मैं अपने पराक्रमसे राज्यका सम्राट् बना, यह देखकर भी तुझे आनन्द नहीं होता, तुम्हारे मुखपर सुखीका कोई चिह्न नहीं दिखायी देता, तुम उदासीन हो, क्या यह तुम्हारे लिये उचित है ? भला तुम्ही सोचो, कौन ऐसी मा होगी जो अपने पुत्रकी उन्नति पर खुश न होगी। यह सुनकर महारानी चेछनाने कहा—बेटा ! तुम्हारी इस उन्नतिसे मुझे किस प्रकार आनन्द हो ? क्यों कि तुमने अपने पिता महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया है, जो तुम्हारे देव गुरुके समान हैं, जिन्होंने तुम्हारे उपर अनेक उपकार किये हैं। उन्हींके साथ तुम्हारा यह व्यवहार समुचित है ! जरा तुम्ही सोचो !

कूणिकने कहा—मा ! जो श्रेणिक राजा मुझे मार डालना चाहते थे, वे मेरे परम उपकारी हैं, यह कैसे ! स्पष्ट बताओ।

रानीने कहा—बेटा ! जब तुम मेरे गर्भमें आये, उस समय मुझे दोहद उत्पन्न हुआ कि मैं राजा श्रेणिकके उदरबलिका मांस तल भूनकर मदिराके साथ खाऊँ। इसके लिये मैं उदास रहने लगी और दिनानुदिन क्षीण होने लगी। जब

यह समाचार तुम्हारे पिताको मिला तो उन्होंने इसका कारण शपथ पूर्वक पूछा, तो मैंने अपना दोहद बतलाया। बादमें तुम्हारे पिताने मेरा दोहद पूरा किया। दोहद पूरा हो जानेके बाद मैंने सोचा—यह बालक गर्भावस्थामें ही पिताका मांस खाया, उत्पन्न होनेपर न जाने क्या करेगा? इस लिये जिस किसी प्रकार इस गर्भको गिरा देना ही श्रेयस्कर है। पर अनेक प्रकारकी ओषधीसे भी गर्भ न गिरा। फिर नौ महीनेके बाद उस गर्भसे तुम पैदा हुए, मैंने तुम्हें अनिष्ट समझ कर उकरडी पर फिकवा दिया। यह बात तुम्हारे पिताको मालूम हुई, वह तुम्हें खोज कर ले आये और मुझे उन्होंने इस कार्यके लिये बड़ी भर्त्सना की। तेरी उझलीको उकरडी पर मुर्गेने काट खाया जिससे वह सूज गयी उसमें पोप भर आया, तुझे असह्य वेदना होने लगी, तूँ चिल्लाने लगा, उस समय तेरे पिता तुम्हारे पास बैठे रहते थे, दिन रात तुम्हारी परिचर्या करते रहते थे, तुम जब व्रणकी वेदनासे रो पड़ते थे, उस समय तुम्हारी अँगुलीको अपने मुँहमें डाल पोप चूसकर थूक देते थे, उससे तुझे शान्ति मिलती थी और तूँ धीरे २ चंगा हो गया। बेटा! तूँ ही सोच, ऐसे परम उपकारी पिताके साथ तेरा यह वर्ताव उचित है? अपनी माँ के मुखसे यह सुन कूणिक बहुत दुखी हुआ। परम उपकारी पिताका बन्धन तोड़ूँ इस भावनासे उसी समय हाथमें कुल्हाड़ी लेकर जिस पिंजरेमें महाराजा श्रेणिक कैद थे, उस पिंजरेको तोड़नेके लिये चल पड़ा। लेकिन राजा श्रेणिकने कूणिको हाथमें कुल्हाड़ी लेकर धाते हुए देख मनमें सोचा—न जाने यह कूणिक मुझे किस कुमौतसे मारेगा? इस भयसे उन्होंने अपनी अंगूठीमें जडा हुआ तालपुट बिषसे अपना अन्त कर लिया। पिताकी मृत्युसे कूणिक अत्यधिक दुखी हुआ, उसे राजगृहकी प्रत्येक वस्तु पिताकी स्मृति दिलाकर दुःखित करने लगी, पिताके प्रति किये हुए अन्याय उसकी आत्माको कष्ट देने लगे। वह राजगृहमें नहीं रह सका, राजगृह छोड़कर चम्पा नगरीको उसने राजधानी बनायी। वहाँ अपने भाई बन्धुओंके साथ रहने लगा और राज्यको ग्यारह भागोंमें बाँटकर

एक २ भाग काल आदि दस कुमारोंको दिया, और ग्यारहवाँ भाग खुद लेकर राज्य करने लगा ।

राजा श्रेणिकने सेचनक गन्ध हाथी और रानी नन्दाने अठारह लडीबाला हार कूणिकके छोटे भाई वैहल्यको दिया था । वह हाथी पर बैठ गङ्गा नदीमें अपने अन्तःपुर परिवारके साथ क्रीडा करते थे । उनकी क्रीडा देखकर लोग कहने लगे—वास्तविक राज्योपभोग तो वैहल्य कुमार ही करते हैं । कूणिक तो नाम मात्रके राजा हैं, क्यों कि उनके पास सेचनक गन्ध हाथी नहीं है । धीरे २ वैहल्यको जलक्रीडाका समाचार कूणिक राजाकी रानी पद्मावतीको मालूम हुआ, वह वैहल्यसे सेचनक हाथी और अठारह लडीबाला हार ले लेनेके लिये कूणिकको बार बार प्रेरित करने लगी । कूणिक अन्तमें रानीकी बात मानकर अपने भाईसे हाथी और हार माँगा । उन्होंने भी राज्यका हिस्सा माँगा, परन्तु कूणिक इस पर तैयार न हो सके । यह देख वैहल्य कुमार मौका पाकर हाथी हार आदि अपनी सभी सामग्री लेकर अपने अन्तःपुर परिवारके साथ वैशाली नगरीमें अपने नाना चेटकके पास पहुँचे । कूणिकने अपने दूतके द्वारा चेटकको संदेशा दिया—कि आप हाथी और हारके साथ वैहल्यको भेज दें । इसपर चेटकने उत्तरमें संदेशा भेजा—यदि तुम राज्यका भाग वैहल्यको दो तो इसे हम हाथी और हारके साथ भेज सकते हैं, परन्तु कूणिकको यह शर्त मंजूर नहीं हुई, फल स्वरूप दोनोंमें युद्ध हुआ । इधर कूणिककी तरफ काल आदि दस कुमार थे उधर चेटककी और नौ लच्छी नौ मल्लिकि ये अठारह गणराजा थे । इनमें प्रत्येकके पास तीन २ हजार हाथी घोड़े रथ और तीन २ करोड पैदल सैनिक थे । प्रथम दिनकी लड़ाईमें कालकुमार अपने तीन २ हजार हाथी घोड़े रथ और तीन करोड पैदल सैनिकके साथ चेटक राजासे लड़नेके लिये आया और चेटकके एक अमोघ बाणसे सैन्य सहित मारा गया । दूसरे दिन सुकालकुमार, तीसरे दिन महाकाल, चौथे दिन कृष्णकुमार, पाँचवें दिन सुकृष्ण, छठे दिन महाकृष्ण, सातवें दिन वीरकृष्ण, आठवें दिन रामकृष्ण, नवमें दिन पितृसेनकृष्ण और दशवें दिन महासेनकृष्ण, अपने २ सैन्य

१२

सहित चेटकके साथ लडने आये और चेटकके द्वारा ससैन्य मारे गये। और अपने पाप कर्मके प्रभावसे निरय (नरक) गामी हुए। इसी वस्तुको भगवानने गौतम स्वामीको उनके पूछने पर निरयावल्लिका नामसे फरमाया है।

कल्पावतंसिका नामक द्वितीय वर्गमें दस अध्ययन हैं, इन दसों अध्ययनोंका नाम क्रमसे—पद्म (१) महापद्म (२) भद्र (३) सुभद्र (४) पद्मभद्र (५) पद्मसेन (६) पद्मगुल्म (७) नलिनीगुल्म (८) आनन्द (९) और नन्दन (१०) है। प्रथम अध्ययनमें पद्मकुमारका वर्णन इस प्रकार है। पद्मकुमार भगवान महावीर स्वामीके पास प्रव्रजित हो पाँच वर्षों तक श्रामण्य पर्याय पाळे, अन्तमें मासिकी संलेखनासे साठ भक्तोंको छेदित कर काल प्राप्त हुए, और सौधर्म कल्पमें देवता होकर उत्पन्न हुए। वहाँसे च्यव कर महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेंगे और सिद्ध होकर सब दुखोंका अन्त करेंगे। इसी प्रकार महापद्मसे लेकर नन्दन पर्यन्त नौ कुमारों का वर्णन जानना चाहिये। ये सभी भगवानके समीप प्रव्रजित हुए और संलेखनासे अपने शरीरको त्याग कर देवलोकमें देव होकर उत्पन्न हुए। वहाँसे च्यव कर महाविदेह वर्षमें जन्म लेंगे और सिद्ध होकर सब दुखोंका अन्त करेंगे। ये पद्म आदि दस कुमार काल आदि दस कुमारोंके पुत्र और महाराज श्रेणिकके पौत्र (पोते) थे।

पुष्पिता नामक तृतीय वर्गमें चन्द्र (१) सूर (२) शुक्र (३) बहु-पुत्रिका (४) पूर्ण (५) मानभद्र (६) दत्त (७) शिव (८) बलेपक (९) अनादृत (१०) इन दसों देवोंका दस अध्ययनोंमें वर्णन है। ये सब भगवान महावीर प्रभुके दर्शन करनेके लिये देवलोकसे अपने २ परिवारके साथ आये और अपनी वैक्रियिक शक्तिसे नाट्य विधि दिखाकर अन्तर्हित हो गये। गौतम स्वामीने उनकी विशाल ऋद्धिके बारेमें भगवानसे पूछा—हे भदन्त ! इन्हें यह ऋद्धि कहाँसे प्राप्त हुई ? भगवानने गौतम स्वामीको चन्द्र आदि देवके पूर्व भवका वर्णन सुनाया और उन्होंने कहा—गौतम ! ये सब देवलोकसे च्यव कर महाविदेह वर्षमें उत्पन्न होकर सिद्ध होंगे।

पूष्पचूलिका नामक चतुर्थ वर्गमें भी दस देवियोंके नामसे दस अध्ययन हैं। उन दसों देवियोंका नाम—श्री (१) ह्री (२) धी (३) कीर्त्ति (४) बुद्धि (५) लक्ष्मी (६) इलादेवी (७) सुरादेवी (८) रसदेवी (९) और गन्ध-देवी (१०) है। ये दसों देवियाँ भगवानके दर्शनके लिये आयीं और नाट्य-विधि दिखाकर अपने २ स्थान पर चली गयीं। गौतम स्वामीने इन देवियोंको ऋद्धि प्राप्तिके बारेमें पूछा। भगवानने इन सबोंके पूर्व भवका वर्णन किया, और कहा—हे गौतम ! ये सभी देवलोकोसे ज्यव कर महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेंगी और सिद्ध होकर सभी दुखोंका अन्त करेंगी।

इसका पाँचवाँ वर्गका नाम वृष्णिदशा वर्ग है। इसमें बारह अध्ययन हैं। ये बारहों अध्ययन बारह कुमारोंके नामसे हैं। उन कुमारोंका नाम—निषध (१) मायनी (२) वह (३) वह (४) पगता (५) ज्योति (६) दशरथ (७) दृढरथ (८) महाधन्वा (९) सप्तधन्वा (१०) दशधन्वा और शतधन्वा है। इनमें निषधकुमारका वर्णन इस प्रकार है—निषध कुमार राजा बलदेव और रानी रेवतीके पुत्र थे। इनका विवाह पचास राज-कन्याओंके साथ हुआ और वह अपने उपरी महलमें सुख पूर्वक रहने लगे। एक समय द्वारकाके नन्दन वन उद्यानमें भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि पधारे। भगवानके दर्शनके लिये कृष्ण वासुदेव आदि नन्दन वन उद्यानमें गये। निषधकुमारको भी भगवानके पधारनेका समाचार ज्ञात हुआ। वह भी भगवानके दर्शनके लिये गये। धर्म कथा सुनकर श्रावक धर्म स्वीकार कर अपने घर लौट गये। भगवानका अन्तेवासी वरदत्त अनगार निषधकुमारकी सौम्यता देख मुग्ध हो गये। और निषधकुमारको यह सौम्यता और ऋद्धि आदि कैसे प्राप्त हुई ? इस बारेमें भगवानसे पूछा। भगवानने निषधकुमारके पूर्व भवका वर्णन किया। वरदत्तने पूछा—हे भदन्त ! यह निषधकुमार आपके समीप प्रव्रजित होगा ? भगवानने कहा—हाँ, वरदत्त ! यह निषधकुमार मेरे समीप प्रव्रजित होगा। इसके बाद भगवान जनपदमें विचरने लगे। एक समय निषधकुमार पोषधशालामें दर्भके आसन पर

बैठे हुए थे। उनके मनमें यह भावना पैदा हुई—यदि भगवान यहाँ आवें तो मैं उनका दर्शन करूँ और उनकी उपासना करूँ। भगवान निषधकुमारके मनकी बात जान ली और अठारह हजार श्रमणके साथ नन्दन वन उद्यानमें पधारे। निषधकुमारने भगवानका दर्शन किया, और बादमें माता पितासे पूछकर अनगार हो गये और बयालीस भक्तोंको अनशनसे छेदित कर काल प्राप्त हुए। उनके काल प्राप्त होनेके बाद वरदत्त अनगारने भगवानसे पूछा—हे भदन्त ! आपका अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध अनगार इस शरीर को छोड़कर कहाँ गये ? भगवानने कहा—हे वरदत्त ! मेरा अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध नामक अनगार सर्वार्थ सिद्ध विमानमें देव होकर उत्पन्न हुआ। वहाँ उसकी स्थिति तैत्तीस सागरोपम है। वह वहाँ से च्यव कर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमें विशुद्ध मातृ पितृ वंशवाले राजकुलमें उत्पन्न होगा, बाल्यावस्था बीत जानेपर स्थविरोके समीप प्रव्रजित होगा और सिद्ध होकर सभी दुखोंका अन्त करेगा। इसी प्रकार मायनी आदि ग्यारह राजकुमारोंकाभी वर्णन जानना चाहिये। ये सभी भगवान अरिष्टनेमिके समीप प्रव्रजित हुए और अपने नश्वर शरीरको छोड़ सर्वार्थ सिद्ध विमानमें देव होकर उत्पन्न हुए और च्यवकर महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेकर सिद्ध होंगे और सभी दुखोंका अन्त करेंगे।

यह पाचों उपाङ्गका संक्षिप्त वर्णन है।

इस निरयावलिका आदि पाचों उपाङ्गों पर जैनाचार्य पूज्य श्री घासीलालजी महाराजने सुन्दरबोधिनी नामकी टीका की है। इस टीकाकी विशेषता संस्कृत प्राकृतज्ञ विद्वान मूल और संस्कृत टीकाको देखकर समझ लेंगे। और सकल साधारण भग्यजन हिन्दी और गुजराती भाषाके अनुवादसे इसकी विशेषता समझेंगे। इस पर हम अधिक लिखना उचित नहीं समझते, क्यों कि 'हाथ कङ्गनको आरसी क्या ?' बस; इसी न्यायसे हम अपना वक्तव्य समाप्त करते हैं। इत्यलम्।

राजकोट
१५ मई १९४८ }

मुनि कन्हैयालाल.

श्री निरयावलिका सूत्रका विषयानुक्रम (प्रथम अध्ययन)

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
१	मङ्गलाचरण	१
२	शास्त्रप्रारम्भ	३
३	पृथिवीशिलापट्ट	५
४	आर्य सुधर्मा	७
५	आर्य सुधर्माका पधारना, पांच अभिगम	११
६	जम्बू स्वामीका परिचय	१३
७	जम्बू प्रभव आदि (५२७) की दीक्षा	१५
८	जम्बूका शरीर वर्णन	१७
९	जम्बूका प्रश्न	२१
१०	शास्त्रपरिचय	२७
११	जम्बूका प्रश्न	२९
१२	कूणिकराजवर्णन	३३
१३	पद्मावती वर्णन	३६
१४	काली वर्णन	४२
१५	सम्यत्त्व प्रशंसा	४७
१६	देवकृतश्रेणिकपरीक्षा	५५
१७	सम्यत्त्वप्रशंसा	५७
१८	अभयकुमार वर्णन	५९
१९	कूणिक वर्णन	६१
२०	चेष्टना वर्णन	६३
२१	कूणिक वर्णन	६५
२२	रथगुशल संग्रामका कारण	६९

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
२३	संग्राम वर्णन	७३
२४	काली रानीके विचार	७५
२५	‘ भगवान ’ शब्दका अर्थ	८५
२६	काली रानीके विचार	८७
२७	काली रानीका वन्दनार्थ भगवानके समीप जाना	८९
२८	अठारह देशकी दासियाँ	९३
२९	धर्मकथा	९५
३०	काली पृच्छा	९७
३१	कालकुमार वृत्तान्त	९९
३२	काली रानीको पुत्रशोक	१०३
३३	गौतम प्रश्न	१०५
३४	भगवानका उत्तर	१०७
३५	अभयकुमारका वर्णन	१०९
३६	चेलना रानीका दोहद	१११
३७	श्रेणिक राजाके विचार	११९
३८	चेलना रानीका दोहद	१२१
३९	चेलना रानीके विचार	१३१
४०	कूणिक जन्म	१३३
४१	चेलनाको श्रेणिकका उपालम्भ	१३५
४२	कूणिककी अंगुलि वेदना	१४१
४३	कूणिकका नामकरण	१४३
४४	श्रेणिकबन्धन	१४५
४५	कूणिकको श्रेणिकका परिचय	१४९
४६	श्रेणिकमरण	१५१

१७

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
४७	कूणिकको श्रेणिकका परिचय	१५३
४८	श्रेणिकमरण	१५६
४९	श्रेणिकके साथ कूणिकका पूर्वभवसंबन्ध	१५९
५०	कूणिकश्रेणिकका वैर कारण	१६१
५१	वैहल्यका गन्धहाथी पर चढकर क्रीडा करना	१६९
५२	वैहल्यका वैशाली नगरीमें जाना	१७७
५३	चेटक-कूणिकका दूत द्वारा संवाद	१७९
५४	राजा कूणिककी दश कुमारोंसे मन्त्रणा	१९३
५५	राजा कूणिक-चेटककी युद्ध तैयारियाँ	२०१
५६	राजा कूणिक चेटकका युद्ध और कालकुमारका मरण	२०९

द्वितीय अध्याय.

५७	सुकाल (सुकाली) कुमारकी मृत्यु	२१६
	अध्ययन ३-१०	
५८	महाकाल आदि आठ कुमारकी मृत्यु	२१७

:कल्पावतंसिका सूत्रका विषयानुक्रम

प्रथम अध्याय

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
१	पद्मकुमारका वर्णन	२२०
	द्वितीय अध्यायन	
२	महापद्मकुमारका वर्णन	२३०
	अध्ययन ३-१०	
३	भद्रकुमार आदि आठ कुमारका वर्णन	२३१
४	भद्र आदि देवोंकी स्थिति	२३५

पुष्पिता (पुष्पिया) सूत्र

प्रथम अध्ययन

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
१	चन्द्रदेवका पूर्वभक्त वर्णन	२३८
२	चन्द्रदेवका वर्णन	२४१
३	अङ्गति गाथापतिका वर्णन	२४५

द्वितीय अध्ययन

४	सूर्यका भगवानके समीप आना	२६६
---	--------------------------	-----

तृतीय अध्ययन

५	शुक्रका भगवानके समीप आना	२६९
६	सोमिल ब्राह्मणका वर्णन	२७०

चतुर्थ अध्ययन

७	बहुपुत्रिका देवीका वर्णन	३१६
---	--------------------------	-----

पञ्चम अध्ययन

८	पूर्णभद्र देवका वर्णन	३८४
---	-----------------------	-----

छठा अध्ययन

९	माणिक्य देवका वर्णन	३९०
---	---------------------	-----

अध्ययन ७-१०

१०	दत्त, शिव, बल, अनादितका वर्णन	३९४
----	-------------------------------	-----

पूष्पचूलिका सूत्र

१	श्री देवीका वर्णन	३९६
२	ह्री—गन्धदेवी ९ का वर्णन	४१४

वृष्णिदशा सूत्र

१	निषधकुमारका वर्णन	४१५
२	मायनि आदि ११ कुमारोंका वर्णन	४४९
३	शास्त्र प्रशस्ति	४५१

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२८	९	विशेष	विशेष
३०	२१	अध्ययननों के	अध्ययनों के
३९	२०	पडिपुण	पडिपुण
४१	६	भज्जा	भज्जा
४५	९	खलु	खलु
४८	५	युद्दल	युद्दल
५१	३	दलो शील	शीलदलो
५२	५	वदनकमलः	वदनकमलः
५५	१	बुभुक्षाणा	बुभुक्षमाणा
७१	५	संग्रामप्रसङ्गा	संग्रामप्रसङ्गं
७४	४	सङ्गामो	सङ्गामो
८९	९	रथ्या	रथ्या
११३	३	अपरिशुञ्जन्ती	अपरिशुञ्जाना
११४	३	अपरिशुञ्जन्ती	अपरिशुञ्जाना
११४	८	क्रियायमाणीं	क्रियायमार्णिं
१३०	१३	—एवा गालि—	—एवा पाडित्तए वा गालि—
१४८	३	जन्यदा	अन्यदा
१५३	२	खलु	खलु
१८०	१३	सेवनकं	सेचनकं
१८७	१५	सत्करोमि	सत्करोति

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२२१	२४	देव्याः	काल्या देव्याः
२३८	७	पञ्चप्पिणइ	पञ्चप्पिणंति
२३८	२३	कूटागारशाला	कूटाकारशाला
२६७	शीर्षक	अङ्गति गाथापति	सुरदेव
२६९	शीर्षक	अङ्गति गाथापति	शुक्रदेव
२७१-२८७	शीर्षक	अङ्गति गाथापति	सोमिल ब्राह्मण
२९३	शीर्षक	दर बोधिनी	सुन्दरबोधिनी
२९६	१७	बद्धा	बद्ध्वा
२९६	१९	”	”
३०४	३	उवलेवणण सं	उवलेवण सं -
३०६	५	रुवं	एवं
३४६	१८	-मवादीत्	-मवादिषुः
३६९	८	ताडयद्भिः	ताडयद्भिः
३९६	४	करिकहेइ	परिकहेइ
३८४	१	पञ्चमध्ययनम्	पञ्चमाध्ययनम्
४२७	१०	वीरंगयस्स	वीरंगयस्स
४२७	१४	कड्ड	कड्ड
४३९	१४	द्विचत्तारिंशत्	द्विचत्तारिंशद्
४४६	४	तद्रूपा	तद्रूपा
४४८	७	संग्रह्य-	संग्रह्य-

॥ श्री बीतरागाय नमः ॥



जैनाचार्य-जैनधर्म-दिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजीमहाराजविरचित-
सुन्दरबोधिनीवृत्तिसमलङ्कृतम्

॥ श्री निरयावलिकासूत्रम् ॥

॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥

(मालिनी छन्दः)

सुरमनुजमुनीन्द्रैर्वन्द्यमानाऽर्च्यपद्मं,

विदितसकलतत्त्वं बोधिदं तीर्थनाथम् ।

कृतभवजलनौकारूपधर्मोपदेशं,

विमलनयनदं तं वर्धमानं प्रणम्य ॥ १ ॥

श्री निरयावलिकासूत्र की सुन्दरबोधिनी टीकाका हिन्दीभाषानुवाद
मङ्गलाचरण

जिनके चरणकमल, देव, मनुष्य और मुनिवरोसे वंदित हैं। जो सर्व तत्त्वोंके ज्ञाता और बोधिको देने वाले हैं। तथा संसार-सागरसे पार होनेके लिये नौकास्वरूप श्रुतचारित्र धर्मके उपदेशक हैं। एवं ज्ञानरूपी नेत्रके दाता हैं, और चतुर्विधसंघरूपी तीर्थके स्वामी हैं। ऐसे त्रिलोकमें प्रसिद्ध (चौबीसवें तीर्थंकर) श्री वर्धमानस्वामीको नमस्कार करके ॥ १ ॥

श्री निरयावलिका सूत्रની સુંદરબોધિની નામે ટીકાનો
ગુજરાતી અનુવાદ.

મંગલાચરણ.

જેનાં ચરણ કમળ દેવ મનુષ્ય તથા મુનિવરોથી વંદિત છે, જે સર્વ તત્ત્વના બાણનારા તથા બોધિ સ્વરૂપને આપવા વાળા છે, જે સંસાર સાગર તરીકે જવા માટે હોયે રૂપી શ્રુતચારિત્ર ધર્મના ઉપદેશક છે, જે જ્ઞાનરૂપી ચક્ષુના કેનાર છે તથા ચાર પ્રકારના સંઘરૂપી તીર્થના પ્રભુ છે, એવા ત્રણ લોકમાં વિખ્યાત (ચોવીસમા તીર્થંકર) શ્રી વર્ધમાન સ્વામીને નમસ્કાર કરીને, (૧)

સકલનિગમદક્ષં જ્ઞાનચક્ષુઃસમેતં,
 કલિતસકલલબ્ધિં પૂર્વધારં મુનીન્દ્રમ્ ।
 જિનવચનરહસ્યઘોતકં દીનવન્ધું,
 કરણ-ચરણધારં ગૌતમં ચાઽપિ નત્તા ॥ ૨ ॥

(પૃથ્વી છન્દઃ)

સગુપ્તિસમિતિં સમાં વિરતિમાદધાનં સદા,
 ક્ષમાવદ્ધિલક્ષમં કલિતમજ્જુચારિત્રકમ્ ।
 સદોરમુખવલ્લિકાવિલસિતાઽઽનનેન્દું ગુરું,
 પ્રણમ્ય ભવચારિધિપુષ્પમૂર્વવોધમદમ્ ॥ ૩ ॥

તથા સર્વ શાસ્ત્રોકે તત્ત્વ સમજ્ઞાને મેં દક્ષ (ચતુર), જ્ઞાનદૃષ્ટિ સે તત્ત્વાતત્ત્વ
 કા નિર્ણય કરને વાલે, સંપૂર્ણ લબ્ધિવાલે, ચૌદહપૂર્વધારક, સ્વાદ્વાદરૂપ જિન-વચનકે
 રહસ્યકો બતાને વાલે, ષટ્કાયકે રક્ષક, ઓર ચરણ-કરણકે ધારી, મુનિઓમેં
 પ્રધાન એસે શ્રી ગૌતમસ્વામીકો શીશ હુકાકર ॥ ૨ ॥

તથા સમિતિ ગુપ્તિધારક, સમદર્શી, વિરતિમાર્ગમેં ચલને વાલે, પૃથ્વીકે
 સમાન સર્વ પરિષદોપસર્ગોંકો સહન કરને વાલે, નિરતિચાર ચારિત્રવાલે, સમ્યક્ બોધ
 કે દેને વાલે, વાયુકાય આદિ જીવોંકી રક્ષાકે લિપે હોર સહિત મુખવલ્લિકાસે
 જિનકા મુખચન્દ્ર દેદીપ્યમાન હૈ, ઓર જો સંસારસાગરમેં તૈરનેકે લિપે નૌકાકે
 સમાન હૈ, એસે પરમકૃપાળુ ગુરુદેવકો વન્દના કરકે ॥ ૩ ॥

તથા સર્વ શાસ્ત્રોંનું તત્ત્વ સમજાવવામાં ચતુર, જ્ઞાનદૃષ્ટિથી તત્ત્વાતત્ત્વને
 નિર્ણય કરવાવાળા, સંપૂર્ણ લબ્ધીવાળા, ચૌદ પૂર્વ ધારક, સ્વાદ્વાદ રૂપી જિન-વચનનાં
 રહસ્યને બતાવનાર, છકાયની રક્ષા કરનાર તથા ચરણ કરણના ધારક; મુનિઓમાં
 પ્રધાન એવા શ્રી ગૌતમ સ્વામીને મસ્તક નમાવીને, (૨) તથા સમિતિ ગુપ્તિના
 ધારણ કરનારા, સમદર્શી, વિરતિ માર્ગમાં વિચરનારા, પૃથ્વીની પેઠે તમામ પરિ-
 પક્ષો તથા ઉપસર્ગોંને સહન કરવાવાળા, નિરતિચાર ચારિત્રવાળા, સમ્યક્ ઉપદેશ
 આપવાવાળા, વાયુકાય આદિ જીવોંની રક્ષાને માટે દોરા સહિત મુખ વલ્લિકાથી
 જેનું મુખારવિન્દ શોભી રહ્યું છે. તથા જે સંસારસાગર તરવા માટે એક નાવ
 સમાન છે. એવા પરમ કૃપાળુ ગુરુદેવને વંદન કરીને, (૩).

सुन्दरबोधिनी टीका शास्त्रप्रारम्भ

३

(अनुष्टुप् छन्दः)

जैनीं सरस्वतीं नत्वा लोकालोकप्रकाशिनीम् ।

निरयावलिकावृत्तिं कुर्वे सुन्दरबोधिनीम् ॥ ४ ॥

मूलम्—

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था । रिद्धत्थिमिय-
समिद्धे ॥ १ ॥

छाया—

तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरम् आसीत् ।
ऋद्धस्तिमितसमृद्धम् ॥ १ ॥

टीका—

‘तेणंकालेणं’ इत्यादि—तस्मिन् काले = अवसर्पिण्याश्चतुर्थारकरूपे
तस्मिन् समये = कालविशेषरूपे हीयमानलक्षणे राजगृहं नाम नगरम् आसीत् ।

तद्—(राजगृह)—वर्णनमित्थमाह—‘रिद्धत्थिमियसमिद्धे’ इत्युपलक्षणम्,
तेन ‘पमुइयजणजाणवए, उत्ताणनयणपेक्खणिज्जे, पासाईए, दरिसणिज्जे,

तथा लोकालोकके स्वरूपको प्रकाशित करने वाली—जिनवाणीको नमस्कार
करके मैं घासीलाल मुनि निरयावलिकासूत्र की ‘सुन्दरबोधिनी’ नामक टीका की
रचना करता हूँ ॥ ४ ॥

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि ।

उस काल उस समय में अर्थात्—अवसर्पिणीके चौथे आरेके, उसी हीय-
मान रूप समयमें राजगृह नामका प्रसिद्ध नगर था । जिसमें नभःस्पर्शी ऊँचे—ऊँचे
सुन्दर महल थे । जहाँ स्व—पर चक्रका कोई भय नहीं था । और वह धन,
धान्यादि ऋद्धियोंसे समृद्ध परिपूर्ण था । जो वहाँ के निवासियोंको तथा देश—

तथा दोकादोडना स्वरूपने प्रकाशित करवावाणी जिन—वाणीने नमस्कार करी
हुं घासीलाल मुनि निरयावलिका सूत्रनी ‘सुन्दरबोधिनी’ नामनी टीकानी
रचना करे छुं. (४)

तेणं कालेणं इत्यादि. ते काल ते समयभां अर्थात् अवसर्पिणी (काल) ना
थोथा आराना हीयमान (उत्तरता) समयभां राजगृह नामे अेक प्रख्यात नगर હતું
કે જેમાં ગગનચુંબી ઊંચાં ઊંચાં સુંદર મહાલયો હતા. જ્યાં સ્વ પર ચક્રનો ભય
ન હોતો તથા તે નગર ધન ધાન્યાદિ ઋદ્ધિઓથી પરિપૂર્ણ સમૃદ્ધિવાળું હતું, જે ભાંના

अभिरूपे, पडिरूपे,' इत्येतेषामपि सङ्ग्रहः । छाया-ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्, प्रमुदितजनजानपदम्, उत्ताननयनप्रेक्षणीयम्, प्रासादीयम्, दर्शनीयम्, अभिरूपम्, प्रतिरूपम्; ।

‘ऋद्धे’—त्यादि—ऋद्धं=नभःस्पर्शिवहुलप्रासादयुक्तं बहुजनसङ्कुलं च स्तिमितं=स्वपरचक्रभयरहितं, समृद्धं=हिरण्य-सुवर्ण-धन-धान्यादिपरिपूर्ण-मिति ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्, अत्र त्रिपदकर्मधारयः । ‘प्रमुदिते’—ति प्रमुदित-जनजानपदयुक्तम् । तत्रत्यास्तत्राऽऽगता देशान्तरीयाश्च जना हिरण्य-सुवर्ण-धन-धान्य-वस्त्रादीनां समर्घलभ्यतया विविधवाणिज्येन स्वस्वाभीष्टानां पूर्णतया यथानीतिलाभेन च प्रमुदिता भवन्ति । ‘उत्ताने’—ति उत्ताननयनप्रेक्षणीयम्=सौन्दर्यातिशयादुन्मीलितनिमेषपातवर्जिताक्षिभिर्दर्शनीयम् ‘प्रासादीयम्=द्रष्टृणां चित्तप्रसादजनकत्वात्प्रमोदजनकम्, दर्शनीयम्=दृष्टिसुखदत्त्वेन पुनः पुनर्दर्शन-योग्यम् । अभिरूपम्=मनोहाकृतिकम्, प्रतिरूपम्=अपूर्वचमत्कारकशिल्पकला-कलितत्वेनाद्वितीयरूपम् ॥ १ ॥

देशान्तरसे आनेवालोंको स्वर्ण चांदी रत्नादिके व्यापारसे लाभान्वित करनेके कारण आनन्दजनक था । जिसका अतिशय सौन्दर्य टक-टकी लगाकर अनिमेष दृष्टिसे देखनेके योग्य होनेसे वह ‘प्रेक्षणीय’ था । जो दर्शकोंका मन प्रफुल्लित कर देनेके कारण ‘प्रासादीय’ प्रमोदजनक था । नेत्रोंको देखनेमें बारम्बार सुख देनेवाला होनेके कारण ‘दर्शनीय’ था । सुन्दर आकृतिका होने के कारण ‘अभिरूप’ था । अपूर्व-अपूर्व चमत्कार उत्पन्न करने वाली शिल्पकलाओं से युक्त होने के कारण प्रतिरूप अर्थात् अनुपम था ॥ १ ॥

रङ्गवाशीओने तथा देश परदेशथी आववावागाने सोनु आंदी रत्न वगेरेना वेपार-रोजगारथी लाभकारक होवाथी आनन्दजनक હતું, જેનું અતિશય સૌંદર્ય અનિ-મેષ દૃષ્ટિથી જોવા લાયક હોવાથી તે ‘પ્રેક્ષણીય’ હતું, જે જોનારનાં મનને પ્રફુલ્લિત કરવાનાં કારણે ‘પ્રાસાદીય’ પ્રમોદજનક હતું, આંખોથી જોવામાં વારંવાર સુખ આપ-નાર હોવાથી ‘દર્શનીય’ હતું, સુંદર આકૃતિવાળું હોવાથી ‘અભિરૂપ’ હતું. નવિન નવિન આશ્ચર્ય ઉપજાવે એવી શિલ્પકલાઓવાળું હોવાથી ‘પ્રતિરૂપ’ અર્થાત્ અનુપમ હતું. ૧

સુન્દરબોધિની ટીકા, પૃથિવીશિલાપદ્ય

૫

મૂલ્ય—

તત્થ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાણ ગુણસિલ્લ (નામં) ચેઈણ (હોત્થા) વણ્ણઓ । અસોગવરપાયવે પુઢવીસિલાપદ્દ (હોત્થા) ॥ ૨ ॥

છાયા—

તત્થ ઉત્તરપૌરસ્ત્યે દિગ્માગે ગુણશિલકં (નામ) ચૈત્યમ્ (અભવત્) વર્ણકઃ । અશોકવરપાદપઃ પૃથિવીશિલાપદ્મકઃ (અભવત્) ॥ ૨ ॥

ટીકા—

‘તત્થ’ इत्यादि—तत्र=राजगृहे, उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गुणशिलकं (नाम) चैत्यं=व्यन्तरायतनमासीत्, कीदृशं चैत्यमिति जिज्ञासायां शास्त्रान्तरे तद्वर्णनमेवमाह—

‘चिराईए, पुव्वपुरिसपन्नत्ते, सच्छत्ते, सज्झए, सघंटे, सपडागे, कयवियहीए, लाइयोल्लोइयमहिण’ इति, । छाया— चिरादिकम्, पूर्वपुरुषप्रज्ञप्तम्, सच्छत्रम्, सध्वजम्, सघण्टम्, सपताकम्, कृतवितर्दिक, लिप्तोपलिप्तमहितम्, इति ।

‘તત્થ’ इत्यादि ।

उस राजगृहके ईशान कोणमें गुणशिलक नामका व्यन्तरायतन था । उसका वर्णन अन्यत्र (दूसरे शास्त्रोंमें) इस प्रकार है—

पूर्व पुरुषोंके कथनानुसार वह प्राचीन कालसे है । उसमें छत्र, ध्वजा, घण्टा, पताका आदि लगे हुए थे और वेदिकाएँ बनी हुई थीं । उसकी भूमि गोमय और मिट्टी से लिपी हुई थी । भीतें खड़ी चूना आदि से धवलिता थीं ।

‘તત્થ’ इत्यादि. તે રાજગૃહના ઇશાનકોણમાં ગુણશિલક નામનું વ્યન્તરાયતન હતું જેનું વર્ણન અન્યત્ર (બીજાં શાસ્ત્રોમાં) આવી રીતે છે:—

અગાઉના લોકોના કહેવા પ્રમાણે તે બુના વખતથી છે. તેમાં છત્ર, ધ્વજ, ઘંટા, પતાકા આદિ લાગેલાં હતાં. વેદિકાઓ બનેલી હતી. તેની ભૂમિ છાણ અને માટીથી લીપેલી હતી. અને ભીંતો ખડી ચુના વજેરથી ધવલિત હતી.

‘चिरादिकम्’ इति—चिरः=बहुकालिकः आदिः=निवेशो यस्य तत् तथा, ‘पूर्वपुरुषे’ति पूर्वपुरुषैः=प्राचीनपुंभिः प्रज्ञप्तम्=उपादेयतया प्रतिबोधितम्, सञ्चित्रम्, सध्वजम्, सघण्टम्, सपताकम्, एतत्सर्वं स्पष्टम्, कृतवितर्दिकम्=रचितवेदिकम्, ‘लाइये’त्यादि लाइयं=गोमयमृत्तिकादिना भूम्युपलेपनम् च उल्लोइयं=भित्ति-समुदायस्य सेटिकादिभिः संमृष्टीकरणं च; लाइयोल्लोइये; ताभ्यां महितं=पूजितं प्रशस्तम् परिष्कृतमिति यावत्, एवम्भूतं चैत्यमासीत् ।

तत्र व्यन्तरायतनभूमौ अशोकवरपादपः=अशोकारूढो महावृक्षोऽस्ति, तस्याऽधस्तटे ‘पृथिवीशिलापट्टकः’ पट्टक इव पट्टकः, आसनरूपेण परिणता पृथिवीशिलेत्यर्थः, अभवत्=आसीत्, तस्य शास्त्रान्तरे वर्णनमित्थमाह—

“विष्कम्भायामसुप्पमाणे, आङ्गण-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे, पासाईए, दरिसणिजे, अभिरूवे, पडिरूवे” इति । छाया— विष्कम्भायामसुप्पमाणः, अजिनक-रूत-बूर-नवनीत-तूलस्पर्शः, प्रासादीयः, दर्शनीयः, अभिरूपः, प्रतिरूपः, इति ।

‘विष्कम्भे’—ति—विस्तारदैर्घ्याभ्यां समुचितप्रमाणोपेतः ‘अजिनके’—ति—अजिनमेवाऽजिनकं=मृगचर्म, रूतं=कार्पासः, बूरः=स्निग्धवनस्पतिविशेषः, नवनीतं=दुग्धविकारविशेषः, तूलं=अर्क-शालमलीवृक्षजातम्, तद्वत्स्पर्शः कोमल-स्पर्शः, इत्यर्थः, ‘प्रासादीय’ इत्यादिपदानां व्याख्या पूर्वोक्तरीत्याऽवगन्तव्या । एवम्भूतः पृथिवीशिलापट्टक आसीत् ॥ २ ॥

वहाँ उसी स्थान पर एक बड़ा अशोक वृक्ष था । उसके नीचे मृगचर्म, कपास, बूर (वनस्पति), मक्खन और आंकड़े (अर्क) की रूई (तूल) के समान स्पर्शवाला, उचित प्रमाण से लम्बा चौड़ा आसन के आकारसा बना हुआ पृथ्वीशिलापट्ट था, जो दर्शनीय अभिरूप प्रतिरूप था ॥ २ ॥

त्यां એ જગ્યા ઉપર એક મોટું અશોક વૃક્ષ હતું. તેની નીચે મૃગચર્મ, કપાસ, બૂર (વનસ્પતિ) માખણ અને આકડાના રૂ જેવું સુવાળું અને ઉચિત પ્રમાણથી લંબાઈ પહોળાઈ વાળું આસનના આકાર જેવું પૃથ્વીશિલાપટ્ટ હતું જે દર્શનીય અભિરૂપ અને પ્રતિરૂપ હતું. (૨)

सुन्दरबोधिनी टीका आर्य सुधर्मा

७

मूलम्—

तेणं कालेणं तेणं समणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्ते-
वासी अज्जसुहम्मो णामं अणगारे जाइसंपन्ने जहा केसी जाव पंचहिं अणगार-
सएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे (गामाणुगामं दुइज्जमाणे)
जेणेव रायगिहे जाव अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेण जाव विहरइ ।
परिसा णिग्गया धम्मो कहिओ । परिसा पडिग्गया ॥ ३ ॥

छाया—

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तेवासी
आर्यसुधर्मा नामाऽनगारो जातिसम्पन्नो यथा केशी, यावत् पञ्चभिरनगारशतैः
सार्द्धं संपरिवृतः पूर्वानुपूर्व्यां चरन् (ग्रामानुग्रामं द्रवन्) यत्रैव राजगृहं नगरं
यावत् यथाप्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य संयमेन यावद् विहरति । परिषन्निर्गता ।
धर्मः कथितः । परिषत् प्रतिगता ॥ ३ ॥

टीका—

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि—तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य
भगवतो महावीरस्य अन्तेवासी=शिष्यः, आर्यसुधर्मा (स्वामी) नामाऽनगारः
विहरतीत्यन्वयः । अथ तद्वर्णनमाह—जातिसम्पन्नः=सुविशुद्धमातृवंशयुक्तः, ‘यथा-

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि ।

उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामीके अन्तेवासी
(शिष्य) श्री आर्यसुधर्मास्वामी विचरते थे । उनका वर्णन केशी श्रमणके समान
इस प्रकार है—

माताका वंश विशुद्ध होनेसे जातिसंपन्न थे । पैतृक पक्ष
निर्मल (शुद्ध) होनेसे कुलसंपन्न थे । बलसंपन्न अर्थात् संहनन
से उत्पन्न पराक्रमसे युक्त थे । वज्ररूपभनाराचसंहननके धारी थे ।

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि. ते काल ते समयमां श्रमण भगवान् महावीर स्वामीना
अन्तेवासी श्री आर्यसुधर्मा स्वामी विचरी रह्या हता. तेभनुं वर्युन केशी श्रमण
समान आ प्रकारे छे:—

मातानुं कुण विशुद्ध होवाथी जातिसंपन्न हता, पितानो पक्ष शुद्ध
होवाथी कुणसंपन्न हता, बलसंपन्न हता, अर्थात् संहननथी उत्पन्न थयेला
पराक्रमवाणा हता. वज्ररूपभनाराच संघयधारी हता. ते आठ कर्मेना नाश

केशी' ति-केशिनामा श्रमणो गणधरो यथाऽऽसीदित्यर्थः, अत्र यावच्छब्देनैवं केशिविशेषणानि संशुद्धन्ते-तथाहि-‘कुलसंपन्ने, बलसंपन्ने, विनयसंपन्ने, लाघवसंपन्ने, ओयंसी, तेयंसी, वयंसी, जसंसी, जियकोहमाणमायालोहे, जीविया-सामरणभयविप्पमुक्के, तवप्पहाणे, गुणप्पहाणे, करणचरणप्पहाणे, निग्गहप्पहाणे, घोरबंभचेरवासी, उच्छूढसरीरे, चोदसपुव्वी, चउनाणोवगए’ इति । अस्य ज्ञाया—“कुलसम्पन्नः, बलसम्पन्नः, विनयसम्पन्नः, लाघवसम्पन्नः, ओजस्वी, तेजस्वी, वचस्वी, यशस्वी, जितक्रोधमानमायालोभः, जीविता-शामरणभयविप्रमुक्तः, तपःप्रधानः, गुणप्रधानः, करणचरणप्रधानः, निग्रहप्रधानः, घोरब्रह्मचर्यवासी, उच्छूढशरीरः, चतुर्दशपूर्वी, चतुर्ज्ञानोपगतः” । इति,

जो आठ कमौंका नाश करे उसको विनय कहते हैं, वह अभ्युत्थानादि गुरुसेवा स्वरूप है, उससे युक्त थे । लाघवसंपन्न थे अर्थात् द्रव्यसे अल्प उपधि वाले थे और भावसे गौरव—(गारव)—त्रय रहित थे । इन्द्रियोंके सौन्दर्य और तप आदि के प्रभावसे ओजस्वी—प्रतिभाशाली थे । अन्तर ‘आत्मप्रभाव’ और बाहर ‘शरीर प्रभाव’ से देदीप्यमान होने के कारण तेजस्वी थे । सब प्राणियोंके हितकारक और निरवय (निर्दोष) वचन युक्त होनेसे आदय (प्राह्य) वचन वाले थे । तप और संयमके आराधनसे प्रसिद्धि प्राप्ति होने के कारण यशस्वी थे । उदयावलिकामें आनेवाले क्रोध आदिको निष्फल करनेके कारण कषायोंके विजेता थे । जीनेकी आशा और मृत्युके भयसे रहित थे । अन्य मुनियोंकी अपेक्षा

करे तेने विनय कडे छे, ते अभ्युत्थानादि गुरुसेवाना लक्षण युक्त विनयसंपन्न हुता. लाघवसंपन्न हुता अर्थात् द्रव्यथी थोड़ी उपाधिवाला हुता अने लाघवथी त्रय गौरवथी रहित हुता. इन्द्रियोनां सौंदर्यथी तथा तप वगेरेना प्रभावथी प्रतिभाशाली हुता. अन्तर आत्मप्रभाव अने अहार शरीरप्रभावथी देदीप्यमान होवाना कारणे तेजस्वी हुता. सर्वे प्राणीओना कल्याणकारक तथा निर्दोष वचन युक्त होवाथी आदय (प्राह्य) वचनवाला हुता. तप तथा संयमनी आराधना करवाथी प्रसिद्धिप्राप्त होवाने कारणे यशस्वी हुता, उदयावलिका ओटले कर्मइणनी परंपराभां आववा वाजा कोधादिने उत्तमाथी कषायोना विजेता हुता. जीवानी आशा तथा मृत्युना भय रहित हुता.

सुन्दरबोधिनी टीका आर्यसुधर्मा

९

‘कुले’ति-कुलं=पैतृकः पक्षस्तत्सम्पन्नः, उत्तमपैतृकपक्षयुक्तः,
 ‘बले’ति-बलेन=संहननसमुत्थेन पराक्रमेण युक्तः, वज्र-ऋषभ-नाराच-संहनन-
 धारीत्यर्थः, ‘विनये’ति-विनयति=नाशयति अष्टप्रकारकं कर्म यः स विनयः=
 अभ्युत्थानादिगुरुसेवालक्षणस्तत्सम्पन्नः । ‘लाघवे’ति-लाघवं द्रव्यतः स्वल्पो-
 पधितम्, भावतो गौरवत्रयनिवारणं, तत्सम्पन्नः । ‘ओजस्वी’ति-ओजः=सकले-
 न्द्रियाणां पाटवं तपःप्रभृतिप्रभावात् समुत्थतेजो वा, तद्वान्, ‘तेजस्वी’ति-
 तेजः=अन्तर्बहिर्देदीप्यमानत्वम् तेजोलेइयादि वा, तद्वान्, ‘वचस्वी’ति-वचः=
 आदेयं वचनं सकलप्राणिगणहितसंपादकं निरवद्यवचनं, तद्वान्, ‘यशस्वी’ति-
 यशः=तपःसंयमाराधनख्यातिस्तद्वान्, ‘जिते’-त्यादि-उदयावलिकाप्रविष्ट-
 क्रोधादीनां विजयो=विफलीकरणं, तद्वान्, ‘जीविते’-त्यादि-जीवितं=प्राण-
 धारणं तस्याशा, मरणं=मृत्युस्तस्माद्भयं=त्रासः, ताभ्यां विप्रमुक्तः=वर्जितः,
 ‘तपःप्रधान’ इति-तपति=दहति ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्माणि इति तपः=
 चतुर्थ-षष्ठा-ऽष्टमभक्तादिलक्षणं तत्प्रधानः शेषमुनिजनापेक्षया विविधप्रकारक-
 तपोयुक्तः पारणादौ नानाविधाभिग्रहयुक्तः । ‘गुणप्रधान’ इति-गुणः=ज्ञानादि-
 रत्नत्रयं क्षान्त्यादिर्वा तत्प्रधानः, उक्तञ्च—

“परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमनुत्थचित्तता ।

विद्या विनोदोऽनुदिनं न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववतां भवन्ति ॥१॥” इति ।

चतुर्थ भवत आदि तप अधिक करनेसे, और पारणा आदिमें अनेक प्रकारके
 कठिन अभिग्रह करनेसे, ‘तपःप्रधान’ थे, सम्यग् ज्ञान आदि रत्नत्रय, और क्षान्ति
 आदि दसविध यतिधर्मसे युक्त होनेके कारण ‘गुणप्रधान’ थे । कहा भी है:-

“परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमनुत्थचित्तता ।

विद्या विनोदोऽनुदिनं न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववतां भवन्ति ॥” इति ॥

भीष्म मुनिमानों अपेक्षासे चतुर्थ भक्त (उपवास) आदि तप बहुत
 करवाथी तथा पारणों आदिमें अनेक व्यतनां कठिन अभिग्रह करवाथी ‘तप-
 प्रधान’ होता।

सम्यक् ज्ञान आदि रत्नत्रय तथा क्षान्ति (क्षमा) आदि दशविध यति-
 धर्मथी युक्त होवाथी ‘गुणप्रधान’ होता। येम कहुं पणु छे के:-

“परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमनुत्थचित्तता”

विद्या विनोदोऽनुदिनं न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववतां भवन्ति ॥इति॥

‘કરણે’ તિ-કરણસમ્પત્તિઃ, ચરણસમ્પત્તિઃ, તત્પ્રધાનઃ, ‘નિગ્રહપ્રધાન’
 इति इन्द्रियनोऽन्द्रियनिरोधकरणेन, स्वात्मनोऽपूर्ववीर्यपरिस्फोटनं, तत्प्रधानः,
 ‘ઘોરબ્રહ્મે’-ત્યાદિ-બ્રહ્મ=કામપરિવેષણત્યાગસ્તત્ર ચરણં બ્રહ્મચર્યં, ઘોરં ચ તદ્
 ब्रह्मचर्यं घोरब्रह्मचर्यम् अल्पसत्त्वेन दुरुनुष्ठेयं, तत्र वस्तुं शीलमस्येति घोर-
 ब्रह्मचर्यवासी । ‘ઉચ્છૂદશરીર’ इति-उच्छूदमुज्झितमिव संस्कारपरित्यागाच्छरीरं
 येन स उच्छूदशरीरः, सर्वथा शरीरसंस्कारवर्जितः । ‘ચતુર્દશપૂર્વી’=चतुर्दश-
 पूर्वधारी; चतुर्ज्ञानोपगतः=केवलवर्जितमत्यादिचतुर्ज्ञानवान् । કેશી શ્રમણસ્તુ-
 मतिश्रुताऽवधिज्ञानत्रयवान्, उक्तञ्च - उत्तराध्ययनसूत्रे त्रयोविंशाध्ययने-
 “ओहिनाणे सुए बुद्धे” इति एतादृशकेशिश्रमणगणधरसदृशः पञ्चमगणधरः

અર્થાત્-પરોપકારમેં આનન્દ માનના, નિઃસ્પૃહતા રક્ષના, વિનય, સત્ય, પ્રશાન્ત
 भाव, विद्या विनोद, मध्यस्थ भाव और दीनताका त्याग, ये गुण महापुरुषोंमें होते हैं ॥

તથા કરણ ચરણકે ધારી થે, ઇન્દ્રિય નોઇન્દ્રિય (મન) કે દમન કરને
 से आत्माका अपूर्व वीर्य स्फोरन करनेके कारण ‘निरग्रहप्रधान’ थे । अल्पसत्त्ववालों
 से दुश्चरणीय ब्रह्मचर्यके धारक होनेसे ‘घोरब्रह्मचारी’ थे । शृङ्गारके लिए
 सर्वथा शरीरसंस्काररहित होनेके कारण ‘उच्छूदशरीर’ (शरीरममत्वरहित) थे ।
 કેશી શ્રમણ મતિ, શ્રુત, ઔર અવધિ, તીન જ્ઞાનકે હી ધારી થે । જૈસે ઉત્તરાધ્યયન
 -સૂત્રમેં કહા હૈ - “ઓહિનાણે સુએ બુદ્ધે ” इति । इस प्रकार केशी श्रमण गणधर
 કે સમાન ગુણકે ધારણ કરનેવાલે ચાર જ્ઞાન ઔર ચૌદહ પૂર્વકે ધારી પંચમ ગણધર

અર્થાત્ - પરોપકારમાં આનંદ માનવો, નિઃસ્પૃહતા રાખવી, વિનય, સત્ય
 प्रशांत भाव, विद्या विनोद, मध्यस्थभाव અને दीनતાનો त्याગ એ ગુણ મહા-
 પુરુષોમાં હોય છે.

તથા તે કરણ ચરણના ધારણ કરવાવાળા હતા, ઇન્દ્રિયોને તથા નોઇન્દ્રિય
 (મન) ને દમન કરવાથી આત્માના અપૂર્વ વીર્ય પ્રગટ કરવાના કારણે ‘નિગ્રહ-
 પ્રધાન’ હતા. અલ્પસત્ત્વવાળાથી મુશ્કેલીએ પળાય એવાં બ્રહ્મચર્યને ધારણ કર-
 વાથી ‘ઘોરબ્રહ્મચારી’ હતા. શૃંગાર માટે શરીરને સર્વથા સંસ્કારરહિત રાખવા
 હોવાથી ઉચ્છૂદશરીર (શરીરમમત્વ રહિત) હતા. કેશી શ્રમણ, મતિ શ્રુત તથા
 અવધિ એ ત્રણ જ્ઞાનનાજ ધારી હતા. જેમ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં કહ્યું છે:—

“ઓહિનાણે સુએ બુદ્ધે” इति, એ પ્રમાણે કેશી શ્રમણ ગણધરની સમાન
 शुद्धे, निग्रह કરવાવાળા ચાર જ્ઞાન અને ચૌદ પૂર્વના ધારી પાંચમા ગણધર

સુન્દરબોધિની ટૌકા આર્યસુધર્મા, પાંચ અભિગમ

૧૧

શ્રીસુધર્મસ્વામી પञ્ચભિરનગારશતૈઃ પञ્ચશતસંખ્યકમુનિભિઃ સાર્દ્ધે=સહ સંપરિવૃતઃ= પञ્ચશતમુનિપરિવારયુક્તઃ, ‘પૂર્વાનુપૂર્વ્યા’-તીર્થકરોક્તપરમ્પરયા ચરન્=વિહરન્, (‘ગ્રામાનુગ્રામમ્’ એકસ્માત્ ગ્રામાત્ ગ્રામાન્તરં દ્રવન્=ગચ્છન્ યાન-વાહનાદિ વિના પદવિહારેણ ગ્રામાન્તરમપરિત્યજન્, અનેનાઽપ્રતિવદ્વિહારિતા સૂચિતા) ‘જેજેવ’ ઇતિ-યસ્મિન્નેવ ક્ષેત્રવિભાગે રાજગૃહનામકં નગરમસ્તિ ગુણશિલકં નામ ચૈત્યં ચ તસ્મિન્નેવ સ્થાને ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય યથાપ્રતિરૂપં સાધુ-કલ્પ્યમવગ્રહમાવસથમ્ અવગૃહ્ય=ગૃહીત્વા સંયમેન તપસા ચાઽઽત્માનં ભાવયન્ વિહરતિ સ્સ ।

પરિષર્ગિર્ગતા=શ્રીસુધર્મસ્વામિનં વન્દિતું ધર્મકથાશ્રવણાર્થં ચ પરિષદ્-વૃન્દરૂપેણ જનસંહતિર્નગરાન્નિર્ગતા=નિસ્સૃતા, શ્રેણિકમ્પૂર્ણોઽપિ નિર્ગતઃ, પञ્ચ-વિધાભિગમપુરસ્સરં તત્ર સમાગતઃ ।

શ્રીસુધર્મા સ્વામી પાંચ સૌ મુનિયોકે પરિવાર સહિત તીર્થકરોંકી મર્યાદાકા પાલન કરતે હુણે ઓર ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતે હુણે, જહાં રાજગૃહ નગર હૈ, જહાં ગુણ-શિલક નામકા ચૈત્ય (વ્યન્તરાયતન) હૈ વહાં પધારે, ઓર મુનિયોકે કલ્પકે અનુસાર અવગ્રહ લેકર સંયમ ઓર તપસે આત્માકોં ભાવિત કરતે હુણે રહને લો ।

શ્રી સુધર્મા સ્વામી યહાં પધારે હૈ, ઇસ બાતકો સુનકર રાજગૃહસે પરિષદ્ નિકલી ઇસી પ્રકાર રાજા શ્રેણિક મી વન્દન કરનેકે લિણે ઓર ધર્મકથા સુનનેકે લિણે જનસમૂહકે સાથ પાંચ અભિગમપૂર્વક ળાણે ।

સુધર્મા સ્વામી પાંચસો મુનિઓના પરિવાર સાથે તીર્થકરોની મર્યાદાનું પાલન કરતા થકા અને ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા થકા જ્યાં રાજગૃહ નગર છે, જ્યાં ગુણશિલક નામે ચૈત્ય (વ્યન્તરાયતન) છે ત્યાં પધાર્યા, તથા મુનિઓના આચાર પ્રમાણે અવગ્રહ લઈને સંયમ તથા તપથી આત્માને ભાવિત કરતા રહેવા લાગ્યા.

શ્રી સુધર્મા સ્વામી અહીં પધાર્યા છે, એ વાત સાંભળી પરિષદ્ નિકળી. એજ રીતે શ્રેણિક રાજા પણ વંદના કરવાને તથા ધર્મ કથાનું શ્રવણ કરવા માટે જન સમૂહની સાથે પાંચ અભિગમપૂર્વક આવ્યા.

पञ्चविधाभिगमो यथा-

- (१) सचित्ताणं दब्बाणं विउसरणयाए,
- (२) अचित्ताणं दब्बाणं अविउसरणयाए,
- (३) एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं,
- (४) चक्खुप्फासे अंजलिप्पग्गहेणं,
- (५) मणसो एगत्तीकरणेणं,

‘धम्मो कहिओ’ इति-श्रुतचारित्रलक्षणो धर्मः कथितः=उपदिष्टः,
‘परिसा पडिगया’ इति-परिषत्=जनसंहतिः तत्समीपे सविधिवन्दनपुरस्सरं

पाँच अभिगम इस प्रकार हैं :—

- (१) धर्मस्थान पर नहीं लेजाने योग्य पुष्पमाला आदि सचित्त द्रव्योंका त्याग करना ।
- (२) वस्त्र भूषण आदि अचित्त द्रव्योंका त्याग नहीं करना ।
- (३) सिलाई किया हुआ कपडा न हो ऐसे, अर्थात् अखण्ड वस्त्र—द्वारा मुख पर उत्तरासंग करना ।
- (४) धर्मगुरुके दृष्टि-पथमें आने पर दोनों हाथ जोड़ना ।
- (५) मनको एकाग्र करना ।

इस मर्यादा से समवसरणमें सुधर्मास्वामी आदि मुनियोंको सविधि वन्दन करके स्व-स्व स्थान पर परिशुद्धे स्थित हो जाने पर श्री सुधर्मा स्वामोने

પાંચ અભિગમ આ પ્રકારના છે:—

- (૧) ધર્મ સ્થાનપર ન લઈ જવા જેવાં પુણ્યમાલા આદિ સચિત્ત દ્રવ્યોનો ત્યાગ કરવો.
- (૨) વસ્ત્રઆભૂષણુ આદિ અચિત્ત દ્રવ્યોનો ત્યાગ ન કરવો.
- (૩) સીવેલું કપડું ન હોય એવાં અર્થાત્ અખંડ વસ્ત્રથી મુખ ઉપર ઉત્તરાશન કરવું.

- (૪) ધર્મગુરુ નબરે પડતાંજ એ હાથ જોડવા. (૫) મનને એકાગ્ર કરવું.

આવી મર્યાદાથી સમવસરણમાં સુધર્મા સ્વામી વગેરે મુનિઓને વિધિપૂર્વક વંદના કરીને પોતાપોતાને સ્થાને પરિપ્રહ (મળેજા હોકો) બેસી ગયા પછી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ શ્રુત ચારિત્ર લક્ષણ ધર્મ સંભળાવ્યો. ધર્મકથા સાંભળી રહ્યા

कुन्दरबोधिनी टीका जम्बूस्वामी

६३

धर्मकथां श्रुत्वा यस्या दिशः सकाशात् प्रादुर्भूता=आगता तामेव दिक् प्रतिगता इति ॥ ३ ॥

मूलम्

तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जमुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी जंबू गामं अणगारे समचउरंसंठाणसंठिए जाव संखित्तविउलतेयलेस्से अज्जमुहम्मस्स अणगारस्स अदूरसामन्ते उड्डंजाणू जाव विहरइ ॥ ४ ॥

छाया—

तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यमुधर्मणोऽनगरस्य अन्तेवासी 'जम्बू' नामाऽनगरः, समचतुरस्रपस्थानसंस्थितः यावत् संक्षिप्तविपुलतेजो-लेइयः, आर्यमुधर्मणोऽनगरस्य अदूरसामन्ते ऊर्ध्वजानुर्यावद् विहरति ॥४॥

टीका—

'तेणं कालेणं' इत्यादि—तस्मिन् काले तस्मिन् समये धर्मकथां श्रुत्वा श्रेणिकभूयादिजनसंहतिप्रतिगमनानन्तरकाले आर्यमुधर्मगः स्वामिनोऽनगरस्यान्तेवासो आर्यजम्बूनामाऽनगरः काश्यपगोत्रोत्पन्नः,

अत्र प्रसङ्गात् जम्बूस्वामिनः परिचयश्चायम्—'राजगृह'—नगर्याम् 'ऋषभदत्त'—नामा इभ्यश्रेष्ठी निवसति स्म, तस्य 'भद्रा'—नाम्नी भार्या,

श्रुतचारित्रलक्षण धर्म सुनाया । धर्मकथा श्रवण करनेके पश्चात् परिषद् जिस दिशासे आई, पुनः उसी दिशाको चली गई ॥ ३ ॥

'तेणं कालेणं' इत्यादि ।

उस काल उस समय श्री आर्यमुधर्मा स्वामी के अन्तेवासी काश्यपगोत्रीय श्री आर्य जम्बू स्वामी जिनका परिचय इस प्रकार है —

राजगृह नगरमें ऋषभदत्त नामके इभ्य (उत्कृष्ट धनिक) सेठ रहते थे । उनकी पत्नीका नाम भद्रा था । पंचम देवलोकसे चक्कर एक ऋद्धिशाली देवने

पछी बोझो ने ने आलुओथी आव्या हुता त्यां त्यां पाछा गया. (३)

'तेणं कालेणं' इत्यादि. ते काले ते समये श्री आर्य मुधर्मा स्वामीना अन्तेवासी (शिष्य) काश्यपगोत्री श्री आर्य जम्बूस्वामी हुता नेमनो परिचय नीचे प्रमाणे छे—
राजगृह नगरमां ऋषभदत्त नामना इभ्य (बहु धनवान शेठ) रहेता हुता. तेमनी पत्नीनुं नाम भद्रा हुतुं. पांचमा देवलोकथी व्यचीने ओक ऋद्धिशाली

१६

निरयावलिकास्तम्भ

तत्पुत्रः पञ्चमस्वर्गाच्छ्रुतो 'जम्बू'-नामा सज्जातः, मात्रा स्वप्ने जम्बूवृक्षो दृष्टस्तेन तस्य 'जम्बू' इति नाम कृतम्, स पञ्चमगणधरसुधर्मस्वामिनिकटे धर्मश्रवणात् प्रतिपन्नशीलसम्यक्त्वोऽपि पित्रोराग्रहवशादष्टानामिभ्यश्चेष्टिनामष्टौ कन्याः परिणीतवान्, किन्तु कन्यानां हावभावादिभिर्न व्यामोहितः, यतः—

“सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्यां, भवाब्धिस्तीर्यते सुखम् ।

ये दधानो मुनिर्जम्बूः, स्त्रीनदीषु कथं ब्रुवेत् ॥ १ ॥” इति ॥

उनकी कुक्षिमें जन्म लिया, माताने स्वप्नमें जम्बू वृक्षको देखा इस लिए उनका नाम जम्बू रखा था। उस जम्बू कुमारने पञ्चम गणधर श्री सुधर्मा स्वामी के पास धर्म सुनकर सम्यक्त्व और शीलव्रत धारण किया। पश्चात् सम्यक्त्व और शीलव्रत धारी होकर भी मातापिताके आग्रहसे आठ इभ्य सेठोंकी आठ कन्याओंके साथ विवाह किया, फिरभी ये कन्याओंके हाव-भाव आदिमें मोहित नहीं हुए।

कहा भी है :—

“सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्यां, भवाब्धिस्तीर्यते सुखम् ।

ये दधानो मुनिर्जम्बूः, स्त्रीनदीषु कथं ब्रुवेत् ॥ १ ॥” इति ॥

अर्थात्—सम्यक्त्व और शीलरूप तुम्बोंके द्वारा भवसमुद्र सुखसे तैरा जाता है। उन्हीं सम्यक्त्व और शीलको धारण करनेवाले जम्बू अनगार स्त्रीरूप नदियों में कैसे डूब सकते हैं ? अर्थात् कभी नहीं ॥ १ ॥

देवे तेष्ठीनी कुप्पे जन्म लीधो. माताये स्वप्नामां जम्बू वृक्षने जेथुं तेथी तेनुं नाम जम्बू पाउथुं हुतुं. ते जम्बू कुमारे पञ्चम गणधर श्री सुधर्मा स्वामीनी पास धर्मनुं श्रवणु करी सम्यक्त्व तथा शीलव्रत धारणु कथुं. सम्यक्त्व तथा शीलव्रत धारी होवा छतां पणु मातापिताना आग्रहथी छथ्य शेठोनी आठ कन्याओ साथे लग्न कथुं पणु ते आठे कन्याओनी हाव-भाव आदि चेष्टांमां मोहित तथा नहोता. जेम कहुं छे के:—

सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्यां, भवाब्धिस्तीर्यते सुखम्

ये दधानो मुनिर्जम्बूः, स्त्रीनदीषु कथं ब्रुवेत् ॥ १ ॥” इति ॥

अर्थात् सम्यक्त्व तथा शीलरूप तुंण्डीथी संसार सागर सुप्पेथी तरी जवाय छे तेज सम्यक्त्व तथा शीलने धारणु करी जम्बू स्वामी ओ इप्पी नदी-ओमां जेम डूपी शके ? अर्थात् कदी न डूजे.

सुन्दरबोधिनी द्वाका जम्बू प्रभव आदि (५२७) दीक्षा

१५

ततो रात्रौ ताः प्रतिबोधयन् चौर्यार्थमागतं चतुःशतनवनवति-
तस्करपरिवृतं 'प्रभव'—नामानं तस्कराधिपतिं प्राबोधयत्, ततः प्रातरेव
पञ्चशततस्करभार्याष्टकतज्जनकजननी—स्वजनकजननीभिः सह स्वयं पञ्चशत-
सप्तविंशतितमो यौतुकागतकनकनवनवतिकोटीः स्वगृहसम्पत्तिं
च परित्यज्य प्राव्राजीत् । क्रमेण केवली जातः, षोडश वर्षाणि गृहस्थत्वे,
विंशतिवर्षाणि छद्मस्थावस्थायां, चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि केवलपर्याये
व्यतीतानि, एवमशीतिवर्षाणि सर्वायुः परिपाल्य श्रीप्रभवं स्वपदे संस्थाप्य
सिद्धिमगमत् । उक्तञ्च—

विवाहके बाद रात्रिमें उन आठों स्त्रियोंको प्रतिबोध देते हुए जम्बू
कुमारने चोरीके लिए आये हुए 'प्रभव'को चार सौ निन्यानवे (४९९) चोरोके
साथ प्रतिबोधित किया । उसके पश्चात् प्रातःकाल ही जम्बू कुमार
पाँचसौ चोर, और अपनी आठों भार्याएँ, उनके मातापिता और अपने मातापिता
इस तरह पाँचसौ सत्ताइस (५२७) जनोंने दीक्षा ग्रहण की । जम्बू कुमारने
अपने दहेजमें आई हुई निन्यानवे (९९) कोटि स्वर्ण मोहरोंको तथा घरकी
समस्त सम्पत्तिको त्याग कर दीक्षित हुए, और क्रमसे तप संयम आराधन करके
केवल ज्ञान पाये । वे सोलह वर्ष गृहस्थावासमें रहे, बीस वर्ष छद्मस्थ रहे-
और ४४ चौवालीस वर्ष केवलपर्यायमें रहे । इस प्रकार ८० अस्सी बरसकी सर्व
आयु व्यतीत करके प्रभव स्वामी को अपने पद पर स्थापितकर सिद्धपदको पाये । कहा भी है—

विवाह पछी रातमां ते आठे स्त्रीओने उपदेश आचतां जम्बूकुमारे चोरी
करवा आवेला प्रभवने चारसो नवाणुं (४९९) चोरानी साथे
उपदेश आये, अने प्रतिबोधित कर्था. ते पछी सवारमां पांचसो चोर, पोतानी
आठ स्त्रीओ तथा तेभनां माता पिता तथा पोतानां माता पिता, अने जम्बू
पोते. ओवी रीते पांचसो सत्तावीश (५२७) जेणुओ दीक्षा ग्रहणु करी. जम्बू
कुमार पोताना दायजमां आवेली नवाणुं (९९) करोड सोना भंडोरे तथा घरनी
समस्त संपत्तिने त्याग करी दीक्षित यथा अने कुमथी तप संयम आराधन
करीने केवण ज्ञान भेज्युं. तेओ सोण वरस गृहस्थाश्रममां रह्या. बीश वरस
छद्मस्थ रह्या तथा सुभादीस (४४) वरस केवल पर्यायमां रह्या. आभ ओसी (८०)
वरसनुं सर्व आयुष्य पूर्णु करीने प्रभव स्वामीने पोतानां पद पर स्थापित करी
पोते सिद्धपदने प्राप्त कर्थुं. कहुं छे के:-

(વસન્તતિલકાવૃત્તમ્)

“જમ્બૂસમો મવિસમુદ્ધરણૈકચિત્તો,
ભૂતો ન કોઽપિ મવિતા ધરણીતલેઽસ્મિન્ ।

યસ્તસ્કરાનપિ ચકાર શિવાધ્વનીનાન્
સાધૂન્ પ્રિયાઽષ્ટકપિતાજનનીશ્ચ ધીરઃ ॥ ૧ ॥

હિત્વા વિનશ્વરધનં પ્રમવોઽપિ ધન્ય-
શ્રૌરાદ્યગોચરમનર્ઘ્યમવાપ્તવાન્ યઃ ।

રત્નત્રયં સ્થિરતરં નિજબન્ધ્વભાજ્યં
પાથેયમદ્ભુતમનન્તસુસ્વાવહં ચ ॥ ૨ ॥” ઇતિ ॥

“જમ્બૂ સ્વામી કે સમાન હસ સંસાર મેં ન હુઆ ન હોગા, જિસ ધીર પ્રશંસનીય મહાપુરુષ ને ચોરોકો મી સંયમ માર્ગમેં આરૂઢકર, ઔર વૈસે હી અપની આઠોં માર્યાઓં, તથા અનેકે માતાપિતા ઔર અપને માતાપિતાકો મી સંયમ માર્ગપર આરૂઢકર મોક્ષગામી બનાયે ॥ ૧ ॥ વિનશ્વર ધન આદિકા વ્યાગ કર, ન જિસકો ચોર ચુરાસકતે હૈં ઔર ન જિસકી કીમત હો સકતી હૈ, જો અવિનાશી હૈ, નિજબન્ધુ મી જિસકા ભાગ નહીં લે સકતે, તથા મોક્ષ સ્થાનકો પહુંચનેકે લિષ્ સંવલ- (માતા)કે સમાન હૈ, ંસે અનન્ત સુખકે દેને વાલે રત્નત્રયકો પ્રમવને મી પ્રાપ્ત ક્રિયા હસ લિયે વહ ધન્ય હૈ ॥ ૨ ॥”

“જમ્બૂ સ્વામીના જેવા આ સંસારમાં થયા નથી અને થશે પણ નહિ કે જે ધીર તથા પ્રશંસનીય મહાપુરુષે ચોરોને પણ સંયમને માર્ગે ચડાવ્યા તથા મોક્ષગામી બનાવ્યા. એવીજ રીતે પોતાની આઠ સ્ત્રીઓ તથા તેમનાં માતાપિતાને તથા પોતાનાં (જમ્બૂનાં) માતા પિતાને પણ સંયમ માર્ગે ચડાવી મોક્ષગામી બનાવ્યાં. ॥ ૧ ॥ નશ્વર ધન વગેરેનો ત્યાગ કરીને, જેને ચોર ચોરી ન શકે, જેનું મૂલ્ય ન થઇ શકે, જે અવિનાશી છે, પોતાના ભાઈ પણ જેમાંથી ભાગ પડાવી ન શકે, તથા મોક્ષ સ્થાને પહોંચવા માટે જે ભાતા સમાન છે. એવું અનંત સુખ દેવાવાળાં રત્નત્રયને પ્રાપ્ત કરનાર પ્રમવને પણ ધન્ય છે ॥ ૨ ॥”

સુન્દરબોધિની ટીકા જમ્બૂવર્ણન

૧૭

અથ સૂત્રકારો જમ્બૂસ્વામિનં વિશિનષ્ટિ-‘સમચતુરે’ ત્યાદિના, સમાઃ= તુલ્યાઃ અન્યૂનાધિકાઃ ચતસ્રોઽસ્રયો હસ્તપાદોપર્યધોરૂપાશ્ચત્વારોઽપિ વિભાગાઃ (શુભલક્ષણોપેતાઃ) યસ્ય (સંસ્થાનસ્ય) તત્ સમચતુરસ્રં=તુલ્યારોહપરિણાહં, તત્ સંસ્થાનમ્=આકારવિશેષઃ ઇતિ સમચતુરસ્રસંસ્થાનં, તેન સંસ્થિતઃ=સમચતુરસ્ર-સંસ્થાનસંસ્થિતઃ । જાવ-(યાવત્)-શબ્દેન ‘સત્તુસ્સેહે વજ્જરિસહનારાય-સંઘયણે, કણગ-પુલગ-નિઘસપમ્હગોરે’ તથા-‘ઉગ્ગતવે, તત્તતવે, દિત્તતવે, ઉરાલે, ઘોરે, ઘોરવ્વયે, સંઘિત્તવિપુલતેજોલેસે’ એતેષાં સઙ્કેહઃ । એતચ્છાયા—‘સમ્પોત્સેધઃ, વજ્રઋષભ-નાસચસંહનનઃ, કનકપુલકનિકષ-પન્નગૌરઃ, તથા-ઉગ્રતપાઃ, તપ્તતપાઃ, દીપ્તતપાઃ, ઉદારઃ, ઘોરઃ, ઘોર-વ્રતઃ, સંક્ષિપ્તવિપુલતેજોલેશ્યઃ ।

તત્ર ‘સમ્પોત્સેધ’ ઇતિ-સપ્તહસ્તોચ્છ્રયઃ=સપ્તહસ્તપ્રમિતોચ્છ્રિતદેહઃ । ‘વજ્રે’ ત્યાદિ-વજ્રં=કીલિકાકારમસ્થિ, ઋષભઃ=તદુપરિપરિવેષ્ટનપટ્ટાકૃતિકો-ઽસ્થિવિશેષઃ, નારાચમ્=ઉભયતો મર્કટબન્ધઃ, તથા ચ-દ્વયોરસ્થોરુભયતો મર્કટબન્ધનેન બદ્ધયોઃ પટ્ટાકૃતિના તૃતીયેનાઽસ્થા પરિવેષ્ટિતયોરુપરિ તદસ્થિ-ત્રયં પુનરપિ દૃઢીકર્તું તત્ર નિશ્ચાતં કીલિકાકારં વજ્રનામકમસ્થિ યત્ર ભવતિ તદ્ વજ્રઋષભનારાચમ્, તત્ સંહનનં-સંહન્યન્તે=દૃઢીક્રિયન્તે શરીરપુદ્ગલા યેન તત્ સંહનનમ્=અસ્થિનિચયો યસ્ય સ વજ્રઋષભનારાચસંહનનઃ ।

સૂત્રકાર ફિર જમ્બૂ સ્વામીકા વર્ણન કરતે હૈં — જો સમચતુરસ્ર સંસ્થાનવાલે થે, જિનકે શરીરકી અવગાહના સાત (૭) હાથકી થી, વજ્રઋષભનારાચ સંહનનકે ધારી થે,

સૂત્રકાર વળી જમ્બૂ સ્વામીનું વર્ણન કરે છે — જે સમચતુરસ્ર સંસ્થાનવાળા હતા, જેના શરીરની અવગાહના સાત(૭)હાથની હતી, વજ્ર ઋષભનારાચ સંઘયણવાળા હતા,

‘कनके’ त्यादि-कनकस्य=सुवर्णस्य पुलकः=खण्डम्, तस्य निकषः=शाणनिघृष्टरेखा, ‘पद्म’-शब्देन पद्मकिञ्चलं गृह्यते, पद्मं=पद्मकिञ्चलं च, तद्वद् गौरः, इति । यद्वा-कनकस्य=सुवर्णस्य पुलकः=सारी वर्णातिशयस्तत्प्रधानो यो निकषः=शाणनिघृष्टसुवर्णरेखा तस्य यत् पक्ष्म=बहुलत्वं तद्वद् गौरः=शाणनिघृष्टानेकसुवर्णरेखावच्चाकचिक्ययुक्तगौरशरीरः, ‘उग्रतपा’ इति-उग्रं=विशुद्धं प्रवृद्धपरिणामत्वात्पारणादौ विचित्राभिग्रहत्वाच्च अप्रधृष्यमनशनादि द्वादशविधं तपो यस्य स तथा, तीव्रतपोधारीत्यर्थः । ‘तप्ततपा’ इति-येन तपसा ज्ञानावरणीयाद्यष्टकर्म भस्मीभवति तादृशं तपस्तप्तं येन स तथा, कर्म निर्जरणार्थतपस्यावान् । ‘दीप्ततपाः’ इति-दीप्तं=जाज्वल्यमानं तपो यस्य स तथा वह्निरिव कर्मवनदाहकत्वेन, ज्वलत्तेजस्वीत्यर्थः, उदारः=सकलजीवैः सह मैत्रीभावात्, ‘घोर’ इति-परीषहोपसर्गकषायशत्रुप्रणाशविधौ भयानकः, ‘घोरव्रत’ इति-घोरं=कातरैर्दुश्चरं व्रतं=सम्यक्त्वशीलादिकं यस्य स तथा, ‘संक्षिप्तविपुले’ त्यादि-संक्षिप्ता=शरीरान्तर्गतत्वेन सङ्कुचिता विपुला=विशाला अनेकयोजनपरिमितक्षेत्रगतवस्तुभस्मीकरणसमर्थाऽपि, तेजोलेख्या=विशिष्टतपोजनितलब्धिविशेषसमुत्पन्नतेजोज्वाला यस्य स संक्षिप्तविपुलतेजो-लेख्यः=शरीरान्तर्लीनतेजोलेख्यावान् । एवं गुणगणसमेतो ‘जम्बूस्वामी’ आर्य-

कसौटी पर घिसी हुई स्वर्णरेखाके समान, तथा कमल-केशरके समान गौर वर्ण थे । उग्र तपस्वी थे । तीव्र तपके करनेवाले देदीप्यमान तपोधारी थे । षट्कायिके रक्षक होनेसे उदार थे, और परीषहोपसर्ग-कषाय-रूप शत्रुके विजय करनेमें भयानक अर्थात् वीर थे । घोरव्रतवाले थे अर्थात् कठिन व्रतके पालक थे ।

तपके प्रभावसे उत्पन्न होने वाली और अनेक योजन विस्तृत (लम्बे-चौड़े) क्षेत्रमें रही हुई वस्तुको भस्म करने वाली अन्तर्ज्वालारूप लब्धिको ‘तेजोलेख्या’ कहते हैं, उसको संक्षिप्त करनेवाले, अर्थात् गुप्तरूपसे रखनेवाले थे । इस तरह गुणके

कसौटी उपर घसेली सुवर्ण रेखा समान तथा कमल-केशर समान गेना गौर वर्णुं हुता, उग्र तपस्वी हुता. तीव्र तप करवावाणा देदीप्यमान तपोधारी हुता छ आयोना रक्षक होवाथी उदार हुता, परिषह उपसर्ग कषायरूप शत्रुना विजय करवाभां भयानक अर्थात् वीर (अडाडुर) हुता. उग्र तपधारी हुता. अर्थात् कठण व्रतनुं पालन करता हुता.

तपना प्रभावथी उत्पन्न थवावाणी अने अनेक योजन विस्तारना क्षेत्रमा रहेली वस्तुने भस्म करवावाणी अंतर्ज्वाला रूप लब्धिने ‘तेजोलेख्या’ छहे छ. तेने संक्षिप्त करवावाणा अर्थात् गुप्तरूपमां राखवावाणा हुता. आवी रीते-अनेक

सुन्दरबोधिनी टीका जम्बूवर्णन

१२

सुधर्मणोऽनगारस्य अदूरसामन्ते-दूरं=विप्रकर्षः, सामन्तं = समीपं तयोरभावो-
दूरसामन्तं तस्मिन् नातिदूरे नातिनिकटे, उचिते देशे इत्यर्थः । 'उड्डंजाणू'
इति-ऊर्ध्वजानुः-ऊर्ध्वे जानुनी यस्य स तथा, जाव-(यावत्)-शब्देन 'अहो-
सिरे, कयंजलिपुडे, उकुडासणे, झाणकोट्टोवगए, संजमेण तवसा अप्पाणं
भावेमाणे' इत्येषां सङ्ग्रहः । 'अहोसिरे' इति-अधःशिराः=नतमस्तकः,
इतस्ततश्चक्षुर्व्यापारं निवर्त्य नियमितभूमिभागनिहितदृष्टिरित्यर्थः । 'कयंजलिपुडे'
इति कृताञ्जलिपुटः=मस्तकन्यस्तसम्पुटीकृतहस्तः, 'उकुडासणे' इति-
उत्कुटासनः उत्कुटं = भूमावलग्नपुतम् आसनं यस्य स तथोक्तः भूपदेशास्पृष्ट-
पुततयोपविष्ट इत्यर्थः । ध्यानकोष्ठोपगतः-ध्यायते=चिन्त्यतेऽनेनेति ध्यानम्,
एकस्मिन् वस्तुनि तदेकाग्रतया चित्तस्यावस्थापनमित्यर्थः, ध्यानं कोष्ठ इव
ध्यानकोष्ठस्तमुपगतः, यथा कोष्ठगतं धान्यं विकीर्णं न भवति तथैव ध्यानत
इन्द्रियान्तःकरणवृत्तयो बहिर्न यान्तीति भावः, नियन्त्रितचित्तवृत्तिमानित्यर्थः ।
'संजमेण'इति-संयमेन सप्तदशविधेन, 'तवसे'ति-तपसा=द्वादशविधेन आत्मानं
भावयन् विहरति=तिष्ठति, इति ॥ ४ ॥

मण्डार श्री जम्बू अनगार श्री आर्यसुधर्मा स्वामी के पास ऊर्ध्वजानु किये हुए,
इधर उधर न देखते हुए, दोनों हाथ जोड़कर मस्तक झुकाये, उकुडासनसे बैठे हुए
ध्यानरूपी कोठेमें स्थित, अर्थात् चित्तवृत्तिको एकाग्र करके तप और संयमसे
आत्माको भावित करते हुए बैठे थे ॥ ४ ॥

मण्डार श्री जम्बू स्वामीએ શ્રી આર્યસુધર્મા સ્વામીની પાસે ઉર્ધ્વજાનુ રહીને
આબુ-આબુએ નજર ન નાખતાં એ હાથ બેઢીને માથું નમાવી ઉકુડાસને
બેઠેલા મનને ધ્યાનરૂપી કોઠામાં સ્થિર રાખીને અર્થાત્ ચિત્તવૃત્તિને એકાગ્ર કરીને
તપ તથા સંયમથી આત્માને ભાવિત કરતા થકા બેઠા હતા ॥ ૪ ॥

મૂલમ્—

તણં સે ભગવં જમ્બૂ જાયસઢે જાવ પજ્જુવાસમાણે એવં વયાસી-
 ઉવંગાણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં કે અદ્દે પણત્તે ? એવં સ્વલુ જંબૂ !
 સમણેણં ભગવયા જાવ સંપત્તેણં એવં ઉવંગાણં પંચ વગ્ગા પણત્તા, તં જહા-
 નિરયાવલિયાઓ ૧, કપ્પવર્ડિસિયાઓ ૨, પુષ્પિયાઓ ૩, પુષ્પચૂલિયાઓ ૪,
 વહ્નિદસાઓ ૫ ॥ ૫ ॥

છાયા—

તતઃ સ્વલુ ભદન્ત ! સ ભગવાન્ જમ્બૂઃ જાતશ્રદ્ધઃ યાવત્ પર્યુપાસીનઃ
 એવમવાદીત-ઉપાજ્ઞાનાં ભદન્ત ! શ્રમણેન યાવત્સંપ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞસઃ ? ।
 એવં સ્વલુ જમ્બૂઃ ! શ્રમણેન ભગવતા યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન એવમ્ ઉપાજ્ઞાનાં પચ્ચ
 વર્ગાઃ પ્રજ્ઞસાઃ, તદ્વથા-નિરયાવલિકાઃ (૧) કલ્પાવતંસિકાઃ (૨) પુષ્પિતાઃ (૩)
 પુષ્પચૂલિકાઃ (૪) વહ્નિદશાઃ (૫) ॥ ૫ ॥

ટીકા—

‘ તણંસે ’ इत्यादि-ततः स्वलु=निश्चयेन सः=असौ भगवान्=अपूर्व-
 सम्यक्त्वशीलसमाराधनयशोवान् जम्बूः-जातश्रद्धः=उत्पन्नप्रश्रेच्छः, यावच्छ-
 बदेन-जातसंशयः=उद्धूतसंदेहः, जातकुतूहलः=उत्पन्नौत्सुक्यः, इति सर्गो बोध्यः,

‘ તણંસે ’ इत्यादि,

उसके बाद श्री आर्य जम्बू अनगार जो जिज्ञासु थे, जिनमें श्रद्धा थी और
 जिन्हें जिज्ञासाके कारण कौतूहल (उत्सुकता) हुआ था। श्रद्धा उत्पन्न हुई, संशय
 उत्पन्न हुआ और कौतूहल हुआ। जिन्हें भली भाँति श्रद्धा थी, भली भाँति संशय
 था और भली भाँति कौतूहल था, खड़े होकर जहाँ श्री आर्यसुधर्मा स्वामी थे, वहाँ
 गये। वहाँ जाकर श्री आर्यसुधर्माको अपने दक्षिण तरफसे अंजलिपुट (दोनों हाथ) को

‘ તણંસે ’ इत्यादि.

ત્યાર પછી શ્રી આર્ય જંબૂસ્વામી કે જે જિજ્ઞાસુ હતા, જેને સારી રીતે શ્રદ્ધા
 હતી, સંશય પણ સારી રીતે હતો, અને કુતૂહલ પણ સારી રીતે થયું હતું તે ઉભા
 થઈને જ્યાં શ્રી આર્ય સુધર્મા સ્વામી હતા ત્યાં ગયા. ત્યાં જઈને શ્રી આર્ય સુધર્માને
 પોતાની જમણી બાજુએથી અંજલીપુટ (બે હાથ) ધુમાવવા શરૂ કરી ત્રણ વાર પ્રદક્ષિણા

श्रीसुधर्मस्वामिनमुपागत्य सविधिवन्दनं विधायाभिमुखं प्राञ्जलिः पर्युपासीनः= सेवमानः एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=अवोचत् अप्राक्षीदित्यर्थः—

हे भदन्त ! = हे भगवन् ! इदं गुरोः सम्बोधनम्, उपाङ्गानां श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् आदिकरेण, तीर्थकरेण, स्वयंसंबुद्धेन पुरुषोत्तमेन, पुरुषसिंहेन, पुरुषवरपुण्डरीकेन, पुरुषवरगन्धहस्तिना, लोकोत्तमेन, लोकनाथेन,

घुमानेरूप तीनवार प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दना की, तत्पश्चात् श्री आर्य सुधर्मा स्वामी से न अधिक दूर और न अधिक पास—निकट सेवामें उपस्थित हो युगलकर जोड़ विधिपूर्वक श्रृंषा करते हुए, इस प्रकार बोले—

हे भगवन् ! — श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने जो स्वशासनकी अपेक्षासे धर्मकी आदि करनेवाले, जिससे संसार-सागर तैरा जाय उसे तीर्थ कहते हैं, वे तीर्थ चार प्रकार के हैं—साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका, ऐसे चतुर्विध संघ रूप तीर्थकी स्थापना करने वाले, स्वयं बोधको पाने वाले, ज्ञानादि अनन्त गुणोंके धारक होनेसे पुरुषोत्तम । राग द्वेषादि शत्रुओंके पराजय करनेमें अलौकिक पराक्रमशाली होनेसे पुरुषोंमें केशरीसिंहके समान । समस्त अशुभरूप मलसे रहित होनेके कारण विशुद्ध श्वेत कमल के समान निर्मल । अथवा—जैसे कीचडसे उत्पन्न और जलके योगसे बड़ा हुआ होकर भी कमल उन दोनों (जल-कीच) के संसर्ग को छोड़कर सदा निर्लेप रहता है, और अपने अलौकिक सुगंधि आदि गुणोंसे

पूर्वक वन्दना करी त्यार पछी श्री आर्य सुधर्मा स्वामीथी णहु दुर नडि तेम णहु पास पणु नडि अेम निकट सेवामां उपस्थित थछ अे हाथ जेडी विधिपूर्वक सेवा करतां आम जेदथाः—

हे भगवन् ! श्रमणु भगवान् महावीर स्वामीअे जे स्वशासननी अपेक्षा धर्मनी आदि करवावाणा, जेथी संसार सागर तरी जवाय तेने तीर्थ कहे छे. ते तीर्थ चार प्रकारनां छे.—साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका अेवा अतुर्विध संघ इप तीर्थनी स्थापना करवावाणा, पोते बोध पाबेला, ज्ञानःवगेरे अनन्त गुणु संपन्न होवाथी पुरुषोत्तम, रागद्वेषादि शत्रुओंना पराजय करवामां अलौकिक पराक्रमवाणा होवाथी पुरुषोत्तम केशरीसिंह समान, समस्त अशुभरूपी भणथी रहित होवाथी विशुद्ध, श्वेतकमल समान निर्मल, अथवा—जेम काँवमांथी उत्पन्न थछ पाणीना योगथी वधतं होवा छतां कमल अे जेठ (पाणी-काँव) ना संसर्गने

લોકહિતેન, લોકપ્રદીપેન, લોકપ્રદ્યોતકરેણ, અભયદેન, ચક્ષુર્દેન, માર્ગદેન,

દેવ મનુષ્યાદિકોંકા શિરોમૂષ્ણ બનતા હૈ, વૈસે હી ભગવાન્ કર્મરૂપી કીચડ સે ઉત્પન્ન ઓર ભોગરૂપી જલસે બડે હુએ હોકર મી ડન દોનોંકે સંસર્ગકો ત્યાગ કર નિર્લેપ રહતે હૈં ઓર કેવલજ્ઞાનાદિ ગુણોસે પરિપૂર્ણ હોનેકે કારણ મન્ય જીવોં કે શિરોધાર્ય હૈં, જિસકા ગન્ધ સૂંઘતે હી સબ હાથી ડર કે મારે ભાગ જાતે હૈં ડસ હાથીકો ‘ગન્ધહરતી’ કહતે હૈં। ડસ ગન્ધહસ્તીકે આશ્રયસે જૈસે રાજા સદા વિજયી હોતા હૈ, ડસી પ્રકાર ભગવાનકે અતિશય સે દેશકે ૧ અતિવૃષ્ટિ, ૨ અનાવૃષ્ટિ, ૩ શલભ(તીડ), ૪ પૂહે, ૫ પક્ષી, ૬ સ્વચક્ર-પરચક્ર-ભય, યહ છહ પ્રકારકી રીતિ, ઓર મહામારી આદિ સમી ઉપદ્રવ તત્કાલ દૂર હો જાતે હૈં। ઓર આશ્રિત મન્ય જીવ સદા સબ પ્રકારસે વિજયી હોતે હૈં। ચૌતીસ અતિશયોં ઓર વાણીકે પૈંતીસ ગુણોસે યુક્ત હોનેકે કારણ લોગોંમં ઉત્તમ। અલભ્ય રત્નત્રય કે લાભ રૂપ યોગ ઓર લબ્ધ રત્નત્રયકે પાલન રૂપ ક્ષેમકે કારણ હોને સે મન્ય જીવોંકે નાથ। એકેન્દ્રિય આદિ સકલ પ્રાણીગણકે હિતકારક। જિસ પ્રકાર દીપક સબકે લિયે સમાન પ્રકાશકારી હૈ તો મી નેત્રવાલે હી ડસસે

છોડીને હમેશાં નિર્લેપ રહે છે, તથા પોતાની અલૌકિક સુગંધી આદિ ગુણોથી દેવ, મનુષ્ય આદિના મસ્તકનું ભૂષણ બને છે, તેવીજ રીતે ભગવાન કર્મરૂપી કાદવમાંથી ઉત્પન્ન અને ભોગરૂપી જલથી વૃદ્ધિ પામ્યા છતાં તે બેઉના સંસર્ગનો ત્યાગ કરીને નિર્લેપ રહે છે, તથા કેવળ જ્ઞાન આદિ ગુણોથી પરિપૂર્ણ હોવાથી ભવ્ય જીવોને શિરોધાર્ય છે. જેનું ગંધ સુંઘતાંજ બધા હાથી બીકથીજ ભાગી બચ છે તેવા હાથીને ‘ગંધહસ્તી’ કહે છે; તે ગંધહસ્તીના આશ્રયથી જેમ રાબા હમેશાં વિજય મેળવે છે, તેવીજ રીતે ભગવાનના અતિશયથી દેશના અતિવૃષ્ટિ (૧), અનાવૃષ્ટિ (૨), શલભા (તીડ) (૩), ઉંદર (૪), પક્ષી (૫), સ્વચક્ર પરચક્ર ભય (૬), એ છ પ્રકારની ઇતિ (ઉપદ્રવ) અને મહામારી આદિ સર્વે ઉપદ્રવ તત્કાલ દૂર થઈ બચ છે, તથા આશ્રિત ભવ્ય જીવ હમેશાં સર્વ પ્રકારે વિજયી થાય છે. ચૌત્રીશ અતિશય તથા વાણીના પાંત્રીશ ગુણોથી યુક્ત હોવાથી લોકોમાં ઉત્તમ, અલભ્ય રત્નત્રયના લાભરૂપી યોગ, તથા લબ્ધ રત્નત્રયના પાલન રૂપી ક્ષેમનું કારણ હોવાથી ભવ્ય જીવોના નાથક, એકેન્દ્રિય આદિ સર્વ પ્રાણીગણના હિત કરનારા, જેમ દીપક બધાને માટે સરખો પ્રકાશ કરે છે તો પણ આંખવાળાજ માત્ર તેનાથી લાભ મેળવી શકે છે. નેત્રહીન એટલે

सुन्दरबोधिनी टीका जम्बूप्रश्न

३३

लाम उठा सकते हैं नेत्रहीन नहीं, उसी प्रकार भगवानका उपदेश सबके लिये समान हितकर होने पर भी भव्य जीव ही उससे लाम उठाते हैं अभव्य नहीं, अतएव भव्योंके हृदयमें अनादि कालसे रहे हुए मिथ्यात्व रूप अन्धकार को मिटाकर आत्माके यथार्थ स्वरूपको प्रकाशित करनेवाले। लोक शब्दसे यहाँ लोक और अलोक दोनोंका ग्रहण है अतएव केवलज्ञान रूपी आलोकसे समस्त लोकालोकके प्रकाश करनेवाले। मोक्षके साधक उत्कृष्ट धैर्य रूपी अभय को देनेवाले, अथवा—समस्त प्राणियोंके संकटको छुड़ाने वाली दया (अनुकम्पा) के धारक। ज्ञाननेत्रके दायक, अर्थात् जैसे किसी गहन वनमें लुटेरोंसे छटे गये और आखों पर पट्टी बांध कर तथा हाथ पैर पकड़ कर गड्ढेमें गिराये गये पथिकके कोई दयालु सब बन्धनोंको तोड़ कर नेत्र खोल देता है, इसी प्रकार भगवान भी संसार रूपी अपार कान्तारमें राग-द्वेष रूप लुटेरोंसे, ज्ञानादि गुणोंको छटकर तथा कदाग्रह रूप पट्टेसे ज्ञान चक्षुको ढक कर मिथ्यात्व के गड्ढेमें गिराये गये भव्य जीवोंके उस कदाग्रह रूप पट्टेको दूर कर ज्ञाननेत्रको देने वाले हैं, अतएव सम्यक् रत्नत्रय स्वरूप मोक्षमार्ग, अथवा विशिष्ट गुणको प्राप्त होने वाले, क्षयोपशम भाव रूप मार्गको देने वाले। कर्म शत्रुओं

आंधणा नहि भेजवी शके, तेम भगवाननो उपदेश भधा भाटे समान हितकरक होवा छतां पणु भव्य जेवोने तेनो लाल भेजवी शकसे अभव्य नहि भेजवे. जे रीते लोभ्याना हृदयमां अनादि काणथी रहैवुं मिथ्यात्वइपी आंधाई मटाडीने आत्माना यथार्थ स्वइपने प्रकाशित करवावाणा. लोक शब्दथी अर्ही लोक अने अलोक जेउ समजवानुं छे. आ रीते केवजज्ञानइपी आलोकथी तमाम लोक अने अलोकने प्रकाश करवावाणा, मोक्षना साधक, उत्कृष्ट धैर्यइपी अभयने देवावाणा, अथवा समस्त प्राणिज्जोनां संकट मटाउनारी दया (अनुकम्पा) ना धारक, ज्ञानइपी नेत्र आपनारा अर्थात् जेम केछ गहनवनमां लूटाराथी लूटाछ गयेला अने आंजे पाटा आंधीने तथा हाथपग पकडीने आडांमां नाथी दीधेला मुसाइरने केछ दयाणु भधां भंधनो तोडी आंजे उवाडी दे छे तेवी रीते भगवान पणु संसारइपी अटवीमां राग-द्वेष इपी लूटाराथी, ज्ञानादि गुणोने लूटी तथा कदाग्रहइपी पाटाथी ज्ञानचक्षुने ढांडी ढर मिथ्यात्वइपी आडांमां पाडी नायेला भव्य जेवोने कदाग्रहइपी पाटाथी मुक्त करी ज्ञानइपी नेत्र देवावाणा, अटवे सम्यक् रत्नत्रय स्वइप मोक्षमार्ग अथवा विशिष्ट गुणना प्रप्ति करवावाणा क्षयोपशमभाव इपी मार्ग देवावाणा, कर्मशत्रुथी पीडित

શરણદેન, જીવદેન, બોધિદેન, ધર્મદેન, ધર્મદેશનાદેન, ધર્મનાયકેન, ધર્મસાર-
થિકેન, ધર્મવર-ચાતુરંતચક્રવર્તિકેન, દ્વીપત્રાણ-શરણ-ગતિપ્રતિષ્ઠેન, અપ્રતિહત-

સે દુઃખિત પ્રાણિયોકો શરણ (આશ્રય) દેને વાલે, પૃથિવ્યાદિ ષડ્જીવ-નિકાય
મેં દયા રચને વાલે, અથવા મુનિયોકે જીવનાધાર સ્વરૂપ સંયમજીવિતકો દેને વાલે ।
શમ સંવેગ આદિ પ્રકાશ, અથવા જિનવચનમેં રુચિકો દેને વાલે । ધર્મકે
ઉપદેશક । ધર્મકે નાયક અર્થાત્ પ્રવર્તક । ધર્મકે સારથી અર્થાત્ જિસ પ્રકાર
રથપર ચઢે હુણ કો સારથી રથકે દ્વારા સુખપૂર્વક ઉસકે અભીષ્ટ સ્થાન પર પહુંચાતા
હૈ, ઉસી પ્રકાર ભવ્ય પ્રાણિયોકો ધર્મ રૂપી રથકે દ્વારા સુખપૂર્વક મોક્ષ સ્થાન
પર પહુંચાને વાલે । દાન, શીલ, તપ ઓર ભાવસે નરક આદિ ચાર ગતિયોકા
અથવા ચાર કષાયોકા અન્ત કરને વાલે, અથવા ચાર-દાન, શીલ, તપ ઓર ભાવ સે
અન્ત = રમણીય, યા દાન આદિ ચાર અન્ત=અવયવ વાલે, અથવા દાન આદિ ચાર
અન્ત=સ્વરૂપ વાલે શ્રેષ્ઠ ધર્મ કો ‘ ધર્મવરચાતુરન્ત ’ કહતે હૈ, યહી જન્મ જસ
મરણ કે નાશક હોને સે ચક્ર કે સમાન હૈ । અતઃપ્રવ ધર્મવરચાતુરન્ત રૂપ ચક્ર
કે ધારક । યહોં પર ‘ વર ’ પદ દેનેસે રાજચક્રકી અપેક્ષા ધર્મચક્રકી ઉત્કૃષ્ટતા

પ્રાણિઓને આશ્રય દેવાવાળા, પૃથ્વી આદિ છજીવ નિકાયમાં દયા રાખવાવાળા,
અથવા મુનીઓના જીવન આધાર સ્વરૂપ સંયમ જીવન દેવાવાળા, શમ સંવેગ
આદિ પ્રકાશ અથવા જિન વચનમાં રૂચિ દેવાવાળા, ધર્મના ઉપદેશક, ધર્મના
નાયક અર્થાત્ પ્રવર્તક, ધર્મના સારથી અર્થાત્ જેમ રથ ઉપર બેઠેલાને સારથી
રથવડે સુખપૂર્વક તેના અભીષ્ટ સ્થાને પહોંચાડે છે તેવી રીતે ભવ્ય પ્રાણિઓને
ધર્મરૂપી રથદ્વારા સુખપૂર્વક મોક્ષસ્થાન પર પહોંચાડનાર, દાન, શીલ, તપ તથા
ભાવથી નરક આદિ ચાર ગતિઓના અથવા ચાર કષાયોના અન્ત કરવાવાળા,
અથવા ચાર-દાન, શીલ, તપ તથા ભાવથી અન્ત=રમણીય, અથવા દાન આદિ
ચાર અન્ત=અવયવવાળા, અથવા દાન આદિ ચાર અન્ત=સ્વરૂપવાળા, શ્રેષ્ઠ ધર્મને
‘ ધર્મવરચાતુરન્ત ’ કહે છે, એજ જન્મ જસ મરણના નાશ કરવાવાળા હોવાથી
ચક્ર સમાન છે, એટલે ધર્મવરચાતુરન્ત રૂપી ચક્રના ધારક, અહીં ‘ વર ’ પદ
દેવાથી રાજચક્રની અપેક્ષા ધર્મચક્રની ઉત્કૃષ્ટતા તથા સૌમ્ય (મૌન) આદિ ધર્મનું

સુન્દરબોધિની ટીકા જન્મપ્રશ્ન

૨૫

વરજ્ઞાનદર્શનધરેણ, વ્યાવૃત્તચ્છદ્યકેન, જિનેન, જાયકેન, તીર્ણેન, તારકેણ,
બુદ્ધેન, વોધકેન, મુક્તેન, મોચકેન, સર્વજ્ઞેન, સર્વદર્શિના, શિવમચલમરુજ-

તથા સૌગત (બૌદ્ધ) આદિ ધર્મકા નિરાકરણ ક્રિયા ગયા છે, ક્યોંકિ રાજચક્ર કેવલ આ લોકકા સાધક છે પરલોકકા નહીં, તથા સૌગત આદિ ધર્મ યથાર્થ તત્ત્વોકા નિરૂપક ન હોનેસે શ્રેષ્ઠ નહીં. 'ચક્રવર્તી' પદ દેનેસે તીર્થંકરોંકો છદ્ધ સ્વખંડકે અધિપતિકી ઉપમા દી ગઈ છે, ક્યોંકિ વહ ચક્રવર્તીં મી ચાર સીમાવાલે, અર્થાત્ ઉત્તર દિશામં હિમવાન ઓર પૂર્વ, દક્ષિણ, પશ્ચિમ, દિશાઓમં લવણ સમુદ્ર તક જિસકી સીમા છે એસે ભરતક્ષેત્ર પર એક શાસન રાજ્ય કરતા. સંસાર—સમુદ્રમં ઢૂબતે હુણ જીવોંકે એક માત્ર આશ્રય હોનેસે દ્વીપ સમાન. ભવ્ય જીવોંકે કલ્યાણકારી હોનેસે ત્રાણસ્વરૂપ અતઃપૂર્વે ઉંકે શરણ—આધારસ્થાન. તીનોં કાલમં અવિનાશી સ્વરૂપ વાલે. આવરણરહિત કેવલ જ્ઞાન, કેવલ દર્શન કે ધારક. જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોંકા નાશ કરને વાલે. રાગ—દ્વેષરૂપ શત્રુકો સ્વયં જીતને વાલે ઓર દૂસરોંકો જીતાને વાલે. ભવસમુદ્રકો સ્વયં તૈરને વાલે ઓર દૂસરોંકો તિરાને વાલે. સ્વયં બોધકો પ્રાપ્ત કરને વાલે ઓર દૂસરોંકો પ્રાપ્ત કરાને વાલે. સ્વયં મુક્ત હોને વાલે ઓર દૂસરોંકો મુક્ત કરને-વાલે. સર્વજ્ઞ, સર્વદર્શીં તથા નિરુપદ્રવ, નિશ્ચલ, કર્મરોગરહિત, અનન્ત, અક્ષય,

નિશકરણ કરેલું છે, કેમકે રાજચક્ર કેવળ આ લોકનું જ સાધન છે પરલોકનું નહિ, તથા સૌગત આદિ ધર્મ યથાર્થ તત્ત્વોનાં નિરૂપણ ન કરતા હોવાથી શ્રેષ્ઠ નથી. 'ચક્રવર્તિ' પદ આપવાથી તીર્થંકરોંકો છ ખંડના અધિપતિની ઉપમા દીધી છે, કેમકે તે ચક્રવર્તીં પણ ચાર સીમાવાળા અર્થાત્ ઉત્તર દિશામાં હિમવાન અને પૂર્વ, દક્ષિણ પશ્ચિમ દિશાઓમાં લવણ સમુદ્ર સુધી જેની સીમા છે એવા ભરતક્ષેત્ર પર એક શાસન રાજ્ય કરે છે. સંસારસમુદ્રમાં ડુબતા જીવોને એકજ આશ્રય હોવાથી દ્વીપ સમાન, ભવ્ય જીવોના કલ્યાણકારી હોવાથી ત્રાણ સ્વરૂપ તેથી તેઓને શરણ—આધારસ્થાન, ત્રણે કાળમાં આવરણરહિત કેવળ જ્ઞાન, કેવળ દર્શનના ધારક, જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોના નાશ કરવાવાળા, રાગદ્વેષરૂપી શત્રુને જીતેજ જીતનારા તેમજ જીતેજ જીતાવવાવાળા, ભવસમુદ્રને જીતે તરનારા તેમ જીતેજ તારનારા, પોતે બોધ મેળવનારા તેમજ જીતેજ બોધ પ્રાપ્ત કરાવનારા, પોતે મુક્ત થવાવાળા તથા જીતેજ મુક્ત કરવા વાળા, સર્વજ્ઞ, સર્વદર્શીં તથા ઉપદ્રવ વગરના, નિશ્ચલ, કર્મરોગ રહિત, અનન્ત, અક્ષય,

મનન્તમક્ષયમવ્યાબાધમપુંનરાવૃત્તિકં સિદ્ધિગતિનામધેયં સ્થાનં સંપ્રાપ્તેન,
 કોઽર્થઃ=શબ્દસમુદાયાત્મકવાક્યતાત્પર્યવિષયીભૂતઃ કો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ=પ્રરૂ-
 પિતઃ, કથિત ઇત્યર્થઃ । જમ્બૂસ્વામિપૃચ્છાનન્તરં સુધર્મસ્વામી જમ્બૂસ્વામિનં
 પ્રતિ પ્રાહ-હે જમ્બૂઃ ! એવમ્=ઇત્યમ્ સ્વલુ=નિશ્ચયેન યાવત્=ઉક્તગુણવતા
 સમ્પ્રાપ્તેન=મુક્તિ લબ્ધવતા શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ એવં=વક્ષ્યમાણરીત્યા
 ઉપાદ્ધાનાં ‘પञ्च वर्गाः’ ઇતિ, અધ્યયનસમૂહો વર્ગસ્તે પ્રજ્ઞપ્તાઃ=નિરૂપિતાઃ,
 તદ્વચ્ચા=તદેવ દર્શયતે=નિરયાવલિકાઃ (૧), અસ્યોપાદ્ધસ્ય ‘કલ્પિકે’તિ
 નામાન્તરમ્, કલ્પાવંતસિકાઃ (૨), પુષ્પિતાઃ (૩), પુષ્પચૂલિકાઃ (૪),
 વૃષ્ણિદશાઃ (૫), અસ્ય ‘વહ્નિદશે’તિ નામાન્તરમ્ । ઇહ સર્વત્રાવયવગતબહુત્વ-
 વિવક્ષાયાં બહુવચનમ્ ।

બાધારહિત, પુનરાગમનરહિત, એસે સિદ્ધ સ્થાન અર્થાત્ મોક્ષકો પ્રાપ્ત કરને વાલે
 ઊન પ્રભુને ઉપાદ્ધોંકા ક્યા ભાવ કહા ? । ઇસ પ્રકાર જમ્બૂ સ્વામીકે પૂછને પર
 શ્રી સુધર્મા સ્વામીને જમ્બૂ સ્વામીસે કહા-હે જમ્બૂ ! ઇસ પ્રકાર ઉક્ત ગુણ વિશિષ્ટ
 યાવત્ સિદ્ધિ ગતિકો પ્રાપ્ત કરને વાલે ભગવાનને ઉપાદ્ધોંકે પાંચ વર્ગ નિરૂપણ
 કિયે હૈં વે ક્રમશઃ ઇસ પ્રકાર હૈં :—

(૧) નિરયાવલિકા, ઇસકા દૂસરા નામ ‘કલ્પિકા, મો હૈં । (૨)
 કલ્પાવંતસિકા, (૩) પુષ્પિતા, (૪) પુષ્પચૂલિકા ઓર (૫) વૃષ્ણિદશા,
 ઇસકા મો ‘વહ્નિદશા’ દૂસરા નામ હૈં । યહોં સવ જગહ-અવયવગત બહુત્વ વિવક્ષા
 સે બહુ વચન હૈં ।

બાધારહિત, પુનરાગમનરહિત, એવા સિદ્ધસ્થાન એટલે મોક્ષને પ્રાપ્ત કરવાવાળા
 તે પ્રભુએ ઉપાદ્ધોના ભાવ શું કહ્યો છે. એ પ્રકારે જમ્બૂ સ્વામીએ પૂછવાથી શ્રી
 સુધર્મા સ્વામીએ જમ્બૂ સ્વામીને કહ્યું:-હે જમ્બૂ ! એ પ્રકારે કહેલા ગુણવિશિષ્ટ યાવત્
 સિદ્ધિ ગતિની પ્રાપ્તિ કરવાવાળા ભગવાને ઉપાદ્ધોના પાંચ વર્ગ નિરૂપણ કયા
 છે તે અનુક્રમે નીચે પ્રમાણે છે :—

(૧) નિરયાવલિકા, આનું બીજું નામ ‘કલ્પિકા’ પણ છે. (૨) કલ્પાવંતસિકા
 (૩) પુષ્પિતા (૪) પુષ્પચૂલિકા તથા (૫) વૃષ્ણિદશા આનું પણ ‘વહ્નિદશા’ એવું
 બીજું નામ છે. અહીં બધે ઠેકાણે અવયવગત બહુત્વ વિવક્ષાથી બહુવચન
 વપરાયું છે.

સુન્દરબોધિનો ટોકા શાસ્ત્રપરિચય

૨૭

તત્ર નિરયાવલિકા:—

યત્રાવલિકાપ્રવિષ્ટા:—શ્રેણિષ્વસ્થિતા: इतरे च नरकाऽऽवासाः प्रसङ्ग-
तस्तद्गामिनश्च मनुष्यास्तिर्यश्च: प्रतिपाद्यन्ते तास्तथा (१), कल्पावतंसिका:—
नाम—कल्पावतंसकदेवप्रतिबद्धग्रन्थपद्धतिः, तास्तथा (२), पुष्पिता:—संयम-
भावनया पुष्पिता: सुखिता: प्राणिनः संयमाऽऽराधनपरित्यागेन ग्लाना-
वस्थां प्राप्ताः सङ्कुचिताः सन्तो भूयस्तदाराधनेन पुष्पिता यत्र प्रतिपाद्यन्ते

इन पांचोमेसे प्रथम—(१) निरयावलिका सूत्रमें नरकावासोका तथा उनमें उत्पन्न होने वाले मनुष्य और तिर्यञ्चोका वर्णन है ।

(२) द्वितीय—कल्पावतंसिका सूत्रमें सौधर्म आदि बारह देवलोकोमें कल्प-
प्रधान इन्द्र सामानिक आदिकी मर्यादायुक्त—कल्पावतंसक विमानोका और तप
विशेषसे उनमें उत्पन्न होने वाले देवोंका तथा उनकी ऋद्धिका वर्णन है ।

(३) तृतीय पुष्पिता सूत्रमें जिन्होंने संयम भावनासे विकसित हृदय
होकर संयम लिया, पीछे उसके आराधनाका परित्याग करनेमें शिथिल होनेसे
ग्लान अवस्थाको प्राप्त हुए और फिर संयमकी आराधना करके पुष्पित और सुखी
बने, उनका वर्णन है ।

એ પાંચેમાંથી પ્રથમ (૧) નિરયાવલિકા સૂત્રમાં નરકાવાસોનું તથા તેમાં
ઉત્પન્ન થનારા મનુષ્ય તથા તિર્યંચોનું વર્ણન છે.

(૨) દ્વિતીય—કલ્પાવતંસિકા સૂત્રમાં સૌધર્મ આદિ બાર દેવલોકમાં કલ્પ
પ્રધાન ઈન્દ્રસામાનિક આદિ મર્યાદાયુક્ત કલ્પાવતંસક વિમાનોનું તથા તપ
વિશેષથી તેમાં ઉત્પન્ન થનારા દેવોનું તથા તેમની ઋદ્ધિનું વર્ણન છે.

(૩) તૃતીય—પુષ્પિતા સૂત્રમાં જેમણે સંયમ ભાવનાથી વિકસિત હૃદયપૂર્વક
સંયમ લીધો, પછી તેની આરાધનાનો પરિત્યાગ કરવામાં શિથિલ થઈ જતાં
ગ્લાન અવસ્થા પ્રાપ્ત થઈ અને ફરી સંયમની આરાધના કરી પુષ્પિત અને
સુખી બન્યા તેનું વર્ણન છે.

તા: પુષ્પિતા: (૩), 'પુષ્પચૂલિકા: ' પૂર્વોક્તાર્થવિશેષપ્રતિપાદિકા: પુષ્પચૂડા:, તા એવ તથા હ-લયોરૈકયાત્ (૪), વૃષ્ણિદશા:—અયં ચાન્વર્થ:—વૃષ્ણિપદેન 'નામૈક-દેશેન નામગ્રહણમ્' इति न्यायबलात् अन्धकवृष्णिनराधिपो गृह्यते, तत्कुले ये, जातास्तेऽपि अन्धकवृष्णयो निगद्यन्ते, तेषां दशा:—अवस्थाश्चरितगतिसिद्धि-गमनलक्षणा यासु ग्रन्थपद्धतिषु वर्ण्यन्ते तास्तथा (૫), તત્ર 'અન્તકૃદશા-જ્ઞસ્ય કલ્પિકા (નિરયાવલિકા) (૧), અનુત્તરોપપાતિકદશાજ્ઞસ્ય કલ્પાવતં-સિકા:(૨), પ્રશ્નવ્યાકરણસ્ય પુષ્પિકા:(તા:)(૩), વિપાકસૂત્રસ્ય પુષ્પચૂલિકા:(૪), દૃષ્ટિવાદસ્ય વૃષ્ણિદશા: (૫) ઉપાજ્ઞાનિ વિજ્ઞેયાનિ ॥ ૫ ॥

(૪) ચૌથે પુષ્પચૂલિકા સૂત્રમે—પૂર્વોક્ત અર્થકા હી વિશેષ વર્ણન હૈ ।

(૫) પાંચવે—વૃષ્ણિદશા સૂત્રમે—અન્ધકવૃષ્ણિ રાજાકે કુલમે ઉત્પન્ન હોને વાલોંકી અવસ્થા—ચરિત્ર, ગતિ ઓર સિદ્ધિગમનકા વર્ણન હૈ ।

નિરયાવલિકા—અન્તકૃદશાજ્ઞકા ઉપાજ્ઞ હૈ । કલ્પાવતંસિકા—અનુત્તરોપપાતિક દશાજ્ઞકા । પુષ્પિકા—પ્રશ્નવ્યાકરણકા । પુષ્પચૂલિકા—વિપાકસૂત્રકા । ઓર વૃષ્ણિદશા—દૃષ્ટિવાદકા ઉપાજ્ઞ હૈ । ॥ ૫ ॥

(૪) ચોથાં પુષ્પચૂલિકા—સૂત્રમાં અગાઉ કહેલા અર્થનુજ વિશેષ વર્ણન છે.

(૫) પાંચમાં વૃષ્ણિદશા—સૂત્રમાં અન્ધકવૃષ્ણિરાજાના કુળમાં ઉત્પન્ન થનારાની અવસ્થા, ચરિત્ર, ગતિ તથા સિદ્ધિગમનનું વર્ણન છે.

નિરયાવલિકા—અન્તકૃતદશાંગનું ઉપાંગ છે, કલ્પાવતંસિકા, એ અનુત્તરોપ-પાતિક દશાંગનું, પુષ્પિકા પ્રશ્નવ્યાકરણનું, પુષ્પચૂલિકા, એ વિપાક સૂત્રનું તથા, વૃષ્ણિદશા, એ દૃષ્ટિવાદનું ઉપાંગ છે. ॥ ૫ ॥

सुन्दरबोधिनी द्वेका जम्बूप्रश्न

३६

मूलम्—

जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगणं पंच वग्गा पन्नत्ता तंजहा—निरयावलियाओ जाव वण्हिदसाओ, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स उक्कं गाणं निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ? ॥ ६ ॥

छाया—

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन उपाङ्गानां पञ्च वर्गाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—निरयावलिका यावत् वृष्णिदशाः, प्रथमस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य उपाङ्गानां निरयावलिकानां श्रमणेन भगवता यावत् संप्राप्तेन क्वि अध्ययानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

टीका—

‘जइणं भंते’ इत्यादि । अथ सोत्साहं सविनयं जम्बूस्वामी सुधर्म-स्वामिनं पप्रच्छ—भदन्त=हे भगवन् ! यदि=यदा खलु=निश्चयेन यावत्=उक्त-गुणवता संप्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता, श्रमणेन=दुश्चरतपश्चर्याप्रसिद्धेन भगवता महावीरेण उपाङ्गानां पञ्च वर्गाः प्रज्ञप्ताः=निरूपिताः तद्यथा=तदेव दर्श्यते—निरयावलिका इत्यारभ्य वृष्णिदशापर्यन्ताः, तेषु हे भदन्त !=हे भगवन् निरयावलिकानामुपाङ्गानां प्रथमवर्गस्य श्रमणेन भगवता यावत्=उक्तगुणवता सम्प्राप्तेन=मोक्षंगतेन कति=कियत्संख्यकानि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

‘जइणं भंते’ इत्यादि । हे भदन्त ! भगवान् महावीर प्रभुने निरयावलिका से लेकर वृष्णिदशा पर्यन्त उपाङ्गोंके पांच वर्ग कहे उनमें भगवानने निरयावलिका के कितने अध्ययन कहे हैं ? ॥ ६ ॥

‘जइणं भंते’ इत्यादि । हे भदन्त ! भगवान् महावीर प्रभुने निरयावलिका से मांडीने वृष्णिदशा सुधीनां उपाङ्गोंना पांच वर्ग कहे तेमां भगवाने निरयावलिकानां कितना अध्ययन कहे छे ? ॥ ६ ॥

મૂલમ્—

एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा-काले १ सुकाले २ महा-काले ३ कण्हे ४ सुकण्हे ५ तथा महाकण्हे ६ वीरकण्हे ७ य बोद्धव्वे रामकण्हे ८ तहेव य पितुसेणकण्हे ९ नवमे दसमे महासेणकण्हे १० उ ॥७॥

છાયા—

एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन उपाङ्गानां प्रथमस्य वर्गस्य निरयावलिकानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-कालः (१) सुकालः (२) महाकालः (३) कृष्णः (४) सुकृष्णः (५) तथा महाकृष्णः (६) वीरकृष्णश्च (७) बोद्धव्यः । रामकृष्णः (८) तथैव च पितृसेनकृष्णो नवमः (९), दशमो महासेनकृष्णस्तु (१०) ॥ ७ ॥

ટીકા—

सुधर्मास्वामी प्राह-‘एवं खलु’ इत्यादि-हे जम्बू ! एवं खलु यावत्=उक्तगुणवता सम्प्राप्तेन सिद्धिगतिं गतेन, श्रमणेन=घोरपरीषहोपसर्ग-सहनशीलेन भगवता महावीरेण निरयावलिकानामकोपाङ्गस्य प्रथमस्य वर्गस्य दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-कालः (१), सुकालः (२), महाकालः (३), कृष्णः (४), सुकृष्णः (५), तथा महाकृष्णः (६), वीरकृष्णः (७), राम-कृष्णः (८), तथैव च पितृसेनकृष्णः (९), नवमः । दशमस्तु महासेनकृष्णः (१०),

શ્રી સુધર્મા સ્વામી શ્રી જમ્બૂ સ્વામીસે કહેતે હૈં-‘एवं खलु’ इत्यादि ।

हे जम्बू ! श्रमण यावत् मोक्षप्राप्त भगवानने निरयावलिकाके दस अध्ययन कहे हँ उन दस अध्ययननोके नाम इस प्रकार हैं ।-(१) काल, (२) सुकाल, (३) महाकाल, (४) कृष्ण, (५) सुकृष्ण, (६) महाकृष्ण, (७) वीरकृष्ण, (८) रामकृष्ण, (९) पितृसेन कृष्ण, और (१०) महासेनकृष्ण ।

શ્રી સુધર્મા સ્વામી શ્રી જમ્બૂ સ્વામીને કહે છે :— ‘एवं खलु’ इत्यादि.
हे जम्बू ! श्रमण यावत् मोक्षप्राप्ति भगवाने निरयावलिकानां दश अध्ययन कर्त्तव्यां छे. ये दश अध्ययननां नाम आ प्रकारनां छे:—

(१) કાલ, (२) સુકાલ, (३) મહાકાલ, (४) કૃષ્ણ, (५) સુકૃષ્ણ, (६) મહાકૃષ્ણ, (७) વીરકૃષ્ણ, (८) રામકૃષ્ણ, (९) પિતૃસેનકૃષ્ણ તથા (१०) મહાસેનકૃષ્ણ.

બોદ્ધવ્યંયમ્ એવમિતિ સર્વત્રાન્વેતિ, વિજ્ઞેયમિતિ તદર્થઃ । કાલ્યાદિશબ્દેભ્ય
ઇદમર્થેઽણપ્રત્યયે કૃતે કાલાદયઃ શબ્દાઃ સિદ્ધયન્તિ યથા કાલ્યાઃ=તન્નામ્ન્યા
મહારાજ્યા અયં પુત્રમિતિ કાલઃ । એવં સર્વત્ર વિજ્ઞેયમ્ । અત્ર 'કુમારે'તિ
સર્વત્ર યોજનીયં યથા—'કાલકુમાર' ઇત્યાદિ, કાલીકુમાર ઇત્યર્થઃ ॥૭॥

મૂલમ્—

જઈણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં ઉવંગાણં પઠમસ્સ નિરયાવલિ-
યાણં દસ અઙ્ગયણા પન્નત્તા, પઠમસ્સ ણં મંતે ! અઙ્ગયણસ્સ નિરયાવલિ-
યાણં સમણેણં જાવ સંપત્તેણં કે અટ્ટે પન્નત્તે ? ॥૮॥

છાયા—

યદિ સ્વલુ ભદન્ત ! શ્રમણેન યાવત્ સંપ્રાપ્તેન ઉપાજ્ઞાનાં પ્રથમસ્ય
નિરયાવલિકાનાં દશ અઙ્ગયણાનિ પ્રજ્ઞસાનિ, પ્રથમસ્ય ભદન્ત ! અઙ્ગયણસ્ય
નિરયાવલિકાનાં શ્રમણેન યાવત્ સંપ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞતઃ ? ॥ ૮ ॥

ટીકા—

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ । યદિ સ્વલુ ભદન્ત ! =હે ભગવન્ ! યાવત્=

‘કાલી’ આદિ શબ્દોસે—ઉસકે સમ્બન્ધી અર્થમેં ‘અણ્’ પ્રત્યય ક્રિયા હૈ,
જિસસે કાલી મહારાણીના પુત્ર કાલ કુમાર કહા જાતા હૈ, ઉસકે ચરિત્રપ્રતિ-
બોધક અઙ્ગયણ મી કાલ-અઙ્ગયણ નામસે પ્રસિદ્ધ હૈ । ઇસ પ્રકાર સબ અઙ્ગયણની
યોજના સમજના ચાહિયે ॥ ૭ ॥

જમ્બૂ સ્વામીને સુધર્મા સ્વામીસે ફિર પૂછા—‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ ।

‘કાલી’ આદિ શબ્દોથી તેના સંબંધી અર્થમાં ‘અણ્’ પ્રત્યય કર્યો છે,
જેથી કાલી મહારાણીના પુત્ર કાલકુમાર કહેવાય છે. તેનું ચરિત્રપ્રતિબોધક
અઙ્ગયણ પણ કાલ-અઙ્ગયણ નામથી પ્રસિદ્ધ છે. આ પ્રકારે બધાં અઙ્ગયણની
યોજના સમજવી જોઈએ ॥ ૭ ॥

જમ્બૂ સ્વામીએ સુધર્મા સ્વામીને વળી પૂછ્યું—‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ.

પૂર્વોક્તગુણવતા સંપ્રાપ્તેન=મુક્તિ લબ્ધવતા, શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ નિરયા-
વલિકાનામકોપાદ્ગસ્ય પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય દશ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ=નિગદિતાનિ
હે ભદન્ત ! =હે ભગવન્ ! નિરયાવલિકાનાં પ્રથમસ્ય અધ્યયનસ્ય યાવત્=
પૂર્વોક્તગુણવતા સંપ્રાપ્તેન=મુક્તિ લબ્ધવતા શ્રમણેન=ભગવતા મહાવીરેણ કોઽર્થઃ
પ્રજ્ઞપ્તઃ=પ્રતિપાદિતઃ ?

અત્ર સર્વત્ર ‘શ્રમણેન’ ‘યાવત્’ ‘સંપ્રાપ્તેન’ इत्यादिपदानां पुनः
पुनरुपादानं भगवद्भक्तिबाहुल्यसूचनाय ।

યદ્વા-વાક્યભેદેન પુનરુક્તિર્ન વિજ્ઞેયા । અન્યચ્ચ ભગવદ્ગુણાનાં
સન્તતં સ્મરણેન ભવ્યાનામન્યવિષયતો મનોનિવૃત્તિપૂર્વકોપાદેયવિષયાવધાનાર્થ
પુનઃ પુનઃ કથનં ગુણ એવેતિ ॥ ૮ ॥

હે ભદન્ત ! इन दस अध्ययनोंमें प्रथम—कालकुमार अध्ययनका भगवान्ने
क्या अर्थ कहा ?

यहां सर्वत्र श्रमण आदि पदोंका पुनः पुनः उपादान किया है वह
भगवानकी अतिशय भक्ति सूचनार्थ है । अथवा वाक्यभेदसे पुनरुक्तिदोष नहीं
संभङ्गना चाहिए । अथवा भगवान के गुणोंको बार बार स्मरण करनेसे भव्यों
का अन्य विषयसे मनोवृत्ति का निरोध होजाता है । उपादेय विषयमें सावधान होनेके
लिये पुनः पुनः उन्हीं शब्दोंका उच्चारण किया है अर्थात् उन्हीं पदोंका बार बार
श्रवण करनेसे उपादेय विषय पर चित्त श्रद्धालु होजाता है ॥ ८ ॥

હે ભદન્ત, એ દશ અધ્યયનોમાં પ્રથમ—કાલકુમાર અધ્યયનનો ભગવાને
શું અર્થ કહ્યો ?

અહીં સર્વત્ર શ્રમણ આદિ પદોનું વારંવાર ઉપાદાન કર્યું છે, તે ભગવાનની
અતિશય ભક્તિ સૂચનાર્થ છે. અથવા વાક્ય ભેદથી પુનરુક્તિ દોષ ન સમજવો
જોઈએ અથવા ભગવાનના ગુણોનું વારંવાર સ્મરણ કરવાથી ભવ્યોની બીજા
વિષયથી મનોવૃત્તિનો નિરોધ થઈ જાય છે. ઉપાદેય વિષયમાં સાવધાન થવા માટે ફરી
ફરી તે શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કર્યું છે અર્થાત્ તેના તે શબ્દો વારંવાર શ્રવણ
કરવાથી ઉપાદેય વિષયમાં ચિત્ત શ્રદ્ધાળુ થઈ જાય છે. (૮)

अथ प्रथमं कालकुमारं वर्णयति—‘एवं खलु’ इत्यादि ।

मूलम्—

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे
मारहे वासे चंपा नामं नयरी होत्था, रिद्धि०, पुन्नमहे चेइए, तत्थणं चंपाए
नयरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेळणाए देवी अत्तए कूणिए नामं राया
होत्था, महया०, ॥ ९ ॥

छाया—

एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे
द्वीपे भारते वर्षे चंपा नाम नगरी अभूत् । ऋद्धि०, पूर्णभद्रं चैत्यम्, तत्र
खलु चम्पायां नगर्या श्रेणिकस्य राज्ञः चेळनाया देव्या आत्मजः कूणिको
नाम राजाऽभवत्, महता० ॥ ९ ॥

टीका—

हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव=अस्मिन्नेव देशतः
प्रत्यक्षं दृश्यमाने जम्बूद्वीपे=तन्नामकमध्यद्वीपे न पुनर्जम्बूद्वीपानामनन्तत्वादन्य-
त्रेति भावः । भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे=भरतक्षेत्रस्य मध्यप्रदेशे चम्पा नाम

यहां प्रथम काल कुमारका वर्णन करते हैं—

श्री सुधर्मा स्वामी श्री जम्बू स्वामी से कहते हैं—‘एवं खलु’ इत्यादि ।

हे जम्बू ! उस काल उस समय इसी ही—मध्य जम्बू द्वीप में भरत
नामका क्षेत्र है, उसके मध्य भागमें चम्पा नामकी नगरी गगनचुम्बी प्रासादों से

आडि पडेला कालकुमारनु वर्णुन करे छे :—

श्री सुधर्मा स्वामी श्री जंभू स्वामीने कहे छे :—‘एवं खलु’ इत्यादि
हे जंभू ! ते काल ते समय आज मध्य जंभूद्वीपमां भरतनामे क्षेत्र छे
जेना मध्य भागमां चंपा नामनी नगरी आकाशस्थशीं बननोथीं शोभित

૩૪

નિરયાવલિકાસૂત્ર

નગરી અમૃત : 'ઋદ્ધસ્તિમિતસમૃદ્ધા' ઋદ્ધા=નમઃસ્પર્શિવહુલપ્રાસાદયુક્તા
વહુલજનસઙ્કુલા ચ, સ્તિમિતા=સ્વપરચક્રમયરહિતા, સમૃદ્ધા=ધન-ધાન્યાદિ-
પરિપૂર્ણા, અત્ર ત્રિપદકર્મધારયઃ ।

તત્રેશાનકોણે પૂર્ણમદ્રં નામ ચૈત્યમ્=વ્યન્તરાયતનમ્ ઉદ્યાનમિતિ વા
આસીદિતિ શેષઃ । તત્ર સ્વલુ ચમ્પાનગર્યા શ્રેણિકસ્ય=તન્નામકસ્ય, રાજ્ઞઃ
પુત્રઃ ચેલ્લનાયાઃ=તન્નામ્ન્યા દેવ્યાઃ=રાજ્યાઃ આત્મજઃ=અન્નજાતઃ કૂળિકો
નામ રાજા અમવત્ । 'મહતા' શબ્દેન—'મહયાહિમવંતમહંતમલયમંદરમહિંદસારે'
અચંતવિસુદ્ધદીર્ઘરાયકુલવંસસુપ્પસૂણ, નિરંતરં રાયલક્ષ્ણવિરાજ્યંગમંગે સીમંધરે
મણુર્સિદે, પુરિસસીહે, પસંતર્ડિંબડંબરરજ્જં પસાહેમાણે વિહરત્'
ઇત્યાદીનાં સદ્ગુહઃ । છાયા— મહાહિમવન્મહામલયમંદરમહેન્દ્રસારઃ, અત્યન્ત-
વિશુદ્ધદીર્ઘરાજકુલવંશસુપ્રસૂતઃ, નિરન્તરં રાજલક્ષણવિરાજિતાઙ્ગાઙ્ગઃ, સીમંધરઃ,
મનુષ્યેન્દ્રઃ, પુરુષસિંહઃ, પ્રશાન્તડિમ્બડમ્બરં રાજ્યં પ્રસાધયન્ વિહરતિ ।

રાજવર્ણનમાહ—'મહાહિમવ'દિત્યાદિના—મહાશ્વાસૌ હિમવાન્ મહા-

બલહૃત, સ્વચક્ર પરચક્રકા મય રહિત ઔર ધન ધાન્ય આદિ સે સમ્પન્ન
થી । ડસકે ઇશાન કોણમેં પૂર્ણમદ્ર નામકા વ્યન્તરાયતન થા ।

ડસ ચમ્પાનગરીમેં શ્રેણિક રાજાકે પુત્ર કોણિક રાજા રાજ્ય કરતે થે
જો ચેલના મહારાનીકે ગર્ભસે જન્મે થે ।

કોણિક રાજાકા વર્ણન ઇસ પ્રકાર હૈ—મહા હિમવાન પર્વતકે સમાન થે

સ્વપર ચક્ર ભય રહિત અને ધન ધાન્ય આદિથી સંપન્ન હતી. તેના ઇશાન
કોણુમાં પૂર્ણમદ્ર નામે વ્યન્તરાયતન હતું.

તે અંધા નગરીમાં શ્રેણિક રાજાના પુત્ર કોણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા, જે
ચેલના મહારાણીના ગર્ભથી જન્મ્યા હતા.

કોણિક રાજાનું વર્ણન આ પ્રકારે છે:—

મહા હિમવાન પર્વત સમાન હતા અર્થાત્ શેષ અન્ન રાજા રૂપી પર્વતોથી

हिमवान् स इव महान् शेषराजपर्वतापेक्षया, मलयो=मलयाचलः, मन्दरो=मेरुगिरिः, महेन्द्रः=सुरपतिः पर्वतविशेषो वा, तद्वत्सारः=प्रधानो यस्तथा, अत्यन्तविशुद्धः=अतिनिर्मलः दीर्घः=चिरकालीनो राज्ञां कुलरूपो वंशस्तत्र प्रसूतः=जातः अतिनिर्मलचिरन्तनराजकुलसमुत्पन्नः, निरन्तरं=सर्वदा, राज्ञां लक्षणानि=स्वस्तिकशङ्खचक्रादीनि तैः विराजितं=शोभितमङ्गाङ्गं=प्रत्यङ्गं यस्य स तथा, सामुद्रिकशास्त्रप्रतिपादितराजलक्षणोपेतशरीर इत्यर्थः, 'सीमन्धरः' राज-मर्यादापालकः, 'मनुष्येन्द्रः'=मनुष्येषु=नरेषु इन्द्र इव ऐश्वर्यवान्, 'पुरुष-सिंहः'=पुरुषेषु सिंह इव शूरः शत्रून् प्रति अप्रतिहतवीर्यवान्, 'प्रशान्ते' ति-प्रशान्तानि डिम्बानि=अतिवृष्ट्यनावृष्टिमूषकशलभशुकात्यासन्नराजरूपा विघ्नाः, डम्बराणि=परस्परराजप्रजाविरोधरूपकेशा यत्र, तथाभूतं राज्यं प्रसाधयन्=परिपालयन् विहरति=तिष्ठति ॥ ९ ॥

अर्थात्—शेष अन्य राजा रूप पर्वतोसे बड़े चढ़े थे। मलय पर्वत और महेन्द्र पर्वत के समान श्रेष्ठ थे, अत्यन्त निर्मल प्राचीन राजवंशमें जन्मे थे। जिनके शरीर के प्रत्येक अवयवमें स्वस्तिक, शंख, चक्र आदि राजचिह्न यथास्थान स्थित थे। राजमर्यादाके पालक थे। ऐश्वर्यसम्पन्न होनेसे मनुष्योंके इन्द्र थे। और शत्रुओंको अप्रतिहत शक्ति द्वारा जीतनेसे पुरुषमें सिंहके समान थे। जिनका राज्य अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूषक-चूहे, शलभ-टिड्डियाँ, शुक-तोते तथा राजाओं का युद्धादिके कारण गांव के समीप निवास करना, इन छह प्रकार की ईतियों=उपद्रवोंसे मुक्त था। ऐसे राज्यका पालन महाराज कोणिक करते थे। ॥ ९ ॥

मोटा होता। मलय पर्वत अने महेन्द्र पर्वतना समान श्रेष्ठ होता। अत्यंत निर्मल प्राचीन राजवंशमां जन्म्या होता। जेना शरीरना प्रत्येक अवयवमां स्वस्तिक, शंख, चक्र आदि राजचिह्न योग्य ठेकाण्ठे रहलां होतां। राजमर्यादाना पालक होता। ऐश्वर्यसंपन्न होवाथी मनुष्योना धन्द्र होता। तथा शत्रुओने अप्रतिहत शक्ति द्वारा जीतवाथी पुरुषमां सिंहसमान होता। जेनुं राज्य अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूषक (कूँडरे), शलभ (लीड), शुक (पोपट) तथा राजओनां युद्ध आदिना कारणे गासनी नशुक निवास करवा, ओ छ प्रकारनी धति ओटवे छपद्रवथी मुक्ता हुतुं। ओवां राज्यनुं पालन महाराज कोणिक करता होता ॥ ९ ॥

मूलम्—

तस्स णं कूणियस्स रत्तो पडमावई नामं देवी होत्था, सोमाल-
पाणिपाया जाव विहरइ ॥ १० ॥

छाया—

तस्य खलु कूणिकस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी अभवत्, सुकुमार-
पाणिपादा यावत् विहरति ॥ १० ॥

टीका—

‘तस्सणं’ इत्यादि—तस्य कूणिकस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी अभ-
वत्, तस्या वर्णनमाह—‘सुकुमारपाणिपादा’ सुकुमारं=कोमलं पाणिपादं
यस्या सा तथा, कोमलकरचरणयुक्ता, अत्र—‘यावत्’ शब्देन—‘अहीनपंचि-
दियसरीरा, लक्षणवज्जणगुणोववेया, माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंग-
सुंदरंगा, ससिसोमाकारा, कंता, पियदंसणा, सुरूवा’ इत्यन्तविशेषणाना-
मन्यत्रोक्तानां समन्वयो बोद्धव्यः । एषां छाया—अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरा,

‘तस्सणं’ इत्यादि । महाराज कोणिकके पद्मावती नामक महारानी
थी । ‘सुकुमालपाणिपाया’ जिसके हाथ पैर अत्यन्त कोमल थे । ‘अहीण-
पंचिदियसरीरा’ लक्षण और स्वरूपसे परिपूर्ण (पूरी) पाँच इन्द्रियां सहित
शरीर वाली थी, अर्थात् जिसकी चक्षु आदि पांचों इन्द्रियाँ अपने-अपने विषय
ग्रहण करनेमें पूर्ण समर्थान, तथा—यथायोग्य आकार वाली थी ।

‘तस्सणं’ इत्यादि. महाराज कोणिकके पद्मावती नामकी महाराणी होती.

‘सुकुमालपाणिपाया’ जेना हाथ पैर अत्यन्त कोमल हता.

‘अहीणपंचिदियसरीरा’, लक्षण तथा स्वरूपकी परिपूर्ण पांच इन्द्रियो
सहित शरीरवाणी होती अर्थात् जेनी चक्षु आदि पांचे इन्द्रियो पोत पोताना
विषय ग्रहण करवाभा पूर्ण सावधान. तथा यथायोग्य आकारवाणी होती.

લક્ષણવ્યञ્जनगुणोपपेता, मानोन्मानप्रमाणपरिपूर्णसुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्गी,
शशिसौम्याकारा, कान्ता, म्रियदर्शना, सुरूपा, इति ।

अथैतानि विशेषणानि प्रतिपदं व्याचक्ष्महे—अहीनानि=लक्षणस्वरूपाभ्यां
परिपूर्णानि पञ्च इन्द्रियाणि यस्मिस्तादृशं शरीरं यस्याः सा अहीनपञ्चेन्द्रिय-
शरीरा—स्वस्वविषयग्रहणसमर्थपूर्णाकारचक्षुरादीन्द्रियविशिष्टेत्यर्थः, ‘लक्षणे’
ति लक्ष्यन्ते=चिह्नयन्ते यैस्तानि लक्षणानि=स्त्रीचिह्नानि हस्तस्थविद्याधनजीवित-
रेखारूपाणि वा, व्यज्यन्ते यैस्तानि व्यञ्जनानि=मषतिलकादीनि, गुणाः=
सौशील्यपातिव्रत्यादयो, यद्वा—पूर्वोक्तप्रकारैर्लक्षणैर्व्यज्यन्ते इति लक्षणव्यञ्ज-
नास्ते च गुणाः, अथवा—प्रोक्तस्वरूपाणां लक्षणव्यञ्जनानां ये गुणास्तैः,
उपपेता=समन्विता, अत्र ‘उप’ ‘अप’ इत्युपसर्गयोः शकन्वादित्वात्पररूपम् ।

‘लક્ષણવંજનગુણોપવેયા’ જિનકે દ્વારા પહચાન હોતી હૈં ઁનકો લક્ષણ (ચિહ્ન) કહતે
હૈં । અથવા હાથ આદિમૈં બની હુર્દ વિદ્યા ધન જીવન આદિકો રેલાઓકો લક્ષણ
કહતે હૈં । જિનકે દ્વારા અભિવ્યક્તિ (પ્રગટપન) હોતી હૈં, ઁન તિલ ઔર મસ આદિ
કો વ્યજ્ઞન કહતે હૈં, સુશીલતા પતિવ્રતતા આદિ ગુણ હૈં, ઁન તીનોં સે જો સ્ત્રી
યુક્ત હો ઁસે લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહતે હૈં, અથવા લક્ષણોંકે દ્વારા વ્યક્ત
હોને વાલે ગુણોંકો લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણ કહતે હૈં, ઔર ઁનસે યુક્ત સ્ત્રીકો—
લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહતે હૈં, અથવા—પૂર્વોક્ત લક્ષણોં ઔર વ્યજ્ઞનોંકે
ગુણોંકો લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણ કહતે હૈં, ઔર ઁનસે યુક્ત સ્ત્રીકો લક્ષણવ્યજ્ઞન-
ગુણોપપેતા કહતે હૈં । મહારાની પદ્યાવતી ઁન ગુણોં સે યુક્ત થી ।

‘લક્ષણવંજનગુણોપવેયા’ જેનાથી ઝોળખાય તેને લક્ષણ કહે છે. અથવા હાથ
આદિમાં બનેલી વિદ્યા ધન જીવન આદિની રેખાઓને લક્ષણ (ચિહ્ન) કહે છે. જેના
દ્વારા અભિવ્યક્તિ (પ્રગટપણું) થાય છે તે તલ અથવા મસ આદિને વ્યજ્ઞન કહે છે.
સુશીલતા પતિવ્રતપણું આદિ ગુણ છે. આ ત્રણેથી જે સ્ત્રી યુક્ત હોય તેને લક્ષણ
વ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહે છે અથવા લક્ષણો દ્વારા વ્યક્ત હોવાવાળા ગુણોને લક્ષણ
વ્યજ્ઞન ગુણ કહે છે. તથા તેનાથી યુક્ત જે સ્ત્રી હોય તેને લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણો
પપેતા કહે છે અથવા પૂર્વોક્ત લક્ષણો તથા વ્યજ્ઞનોના ગુણોને લક્ષણ વ્યજ્ઞન
ગુણ કહે છે. તથા તેનાથી યુક્ત જે સ્ત્રી હોય તેને લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા
કહે છે. મહારાણી પદ્યાવતીમાં આ ગુણો હતા.

હસ્તસ્થપ્રધાનરેખાલક્ષણાનિ યથા—

“ જસસ હવઝ બહુરેહો, હત્યો અહવા રહિયસયલરેહો ।
સો અપ્પાઝ અહણો, તહા દુહી લક્ષણભુણિદિદ્ધો ॥ ૧ ॥

एगेगंगुलिमज्झे, होई पणवीसवच्चरं आऊ ।
जाणह जीवियरेहं, जा य कणिट्ठंगुलीमूला ॥ २ ॥

करहाओ धनरेहा, मणिबंधतो तहेव पिउरेहा ।
एया सव्वा पुण्णा, हवन्ति चे आउगोत्तधनलाहो ॥ ३ ॥”

छाया—यस्य भवति बहुरेखो, हस्तोऽथवा रहितसकलरेखः ।
सोऽल्पायूरधनस्तथा दुःखी लक्षणव्रनिर्दिष्टः ॥ १ ॥

एकैकाङ्गुलिमध्ये, भवति पञ्चविंशतिवत्सरमायुः ।
जानत जीवितरेखां, या च कनिष्ठाङ्गुलीमूलाद् ॥ २ ॥

હાથ કી પ્રધાન રેખાઓકે લક્ષણ ઇસ પ્રકાર હૈ—જિસકે હાથમેં
બહુત રેખાઈ હૈં યા ત્રિલ્કુલ રેખાઈ ન હૈં વે અલ્પાયુ વાલે નિર્ધન ઔર દુઃખી
હોતે હૈં, એસે, લક્ષણકે જાનને વાલે કહતે હૈં ॥ ૧ ॥

જો રેખા કનિષ્ઠ અંગુલીકે મૂલસે નિકલતી હૈ વહ જીવન-આયુ-કી
રેખા હૈ । એક-એક અંગુલીમેં પચીસ-પચીસ વર્ષકી આયુ હોતી હૈ, અર્થાત્ યદિ
આયુકી રેખા એક અંગુલી તક હૈ તો (૨૫)પચીસ વર્ષકી આયુ, દો અંગુલી
તક હો તો (૫૦)પચાસ વર્ષકી આયુ, ઇસ હિસાબસે આગે સમજના
ચાહિયે ॥ ૨ ॥

હાથની મુખ્ય મુખ્ય રેખાઓનાં લક્ષણ આ પ્રકારનાં છે:-જેના હાથમાં
બહુ રેખાઓ હોય અથવા બિલકુલ રેખા ન હોય તે અલ્પ આયુવાળા, નિર્ધન
તથા દુઃખી હોય છે. એમ લક્ષણના બાણવાવાળા કહે છે. ૧

જે રેખા ટચલી આંગળીના મૂળથી નીકળે છે તે જીવન-આયુની રેખા
છે. એક એક આંગળીમાં પચીસ-પચીસ વર્ષની આયુ હોય છે અર્થાત્ જે આયુની
રેખા એક આંગળી સુધી હોય તો પચીસ વર્ષની આયુ, એ હિસાબે આગળ
સમજ લેવું જોઈએ. (૨)

કરભાદ્ધનરેખા, મણિબન્ધાત્તથૈવ પિતૃરેખા ।

एताः सर्वाः पूर्णा, भवन्ति चेदायुर्गोत्रधनलाभः ॥ ૩ ॥ इति ।

‘માને’તિ-મીયતે=પરિચ્છિદ્યતે પદાર્થોઽનેનેતિ માને, તુલાગુલી-પ્રસ્થાદિના તોલનં, યદ્વા-જલાદિપરિપૂર્ણકુણ્ડાદિપ્રવિષ્ટે પુરુષાદૌ યદા દ્રોણ-પરિમિતં જલાદિ નિસ્સરતિ તદા સ પુરુષાદિર્માનવાનિત્યુચ્યતે તદેવ, ઉન્માનમ્=ઊર્ધ્વ માનં, યદ્વા-અર્ધભારરૂપઃ પરિમાણવિશેષઃ, પ્રમાણં=સર્વતો

ધન કી રેખા કરમ-ગુદેસે નિકલતી હૈ ઓર મણિબન્ધ (કરકે મૂલ) સે પિતૃરેખા ફૂટતી હૈ । યદિ યે સવ રેખાઈં પૂર્ણ હોં તો આયુ ગોત્ર પ્રતિષ્ઠા ઓર ધનકા લાભ હોતા હૈ ॥ ૩ ॥

“માણુમ્માણપ્પમાણપટ્ટિપુણ્ણસુજાયસવ્વંગહુદરંગા” જિસકે દ્વારા પદાર્થ માપા જાય ઉસે માન કહતે હૈં, અર્થાત્ તરાજૂ અંગુલી સેર છટાંક આદિકે દ્વારા તોલના, અથવા કોઈ પુરુષ આદિ જલસે સંપૂર્ણ ભરે હુણ કુણ્ડ (શરીરપ્રમાણ મહરા, શરીરપ્રમાણ લમ્વા વ શરીરપ્રમાણ ચૌડા) આદિ મેં ઘુસે ઓર ઉસકે ઘુસનેસે એક દ્રોણ-(પરિમાણવિશેષ) જલ બાહર નિકલે તો, ઉસ પુરુષ આદિકો માનયુક્ત કહતે હૈં । માન-શબ્દસે હસીકા પ્રહળ કરના ચાહિયે । માન સે અધિકકો અથવા અર્ધભાર રૂપ પરિમાણ કો ઉન્માન કહતે હૈં । સર્વતોમાન કો,

ધનની રેખા કરલ-ગુદાથી નિકળે છ તથા મણિબન્ધ (કાંડાનાં મૂળથી) પિતૃરેખા ફૂટે છે. જો આ બધી રેખાઓ પૂર્ણ હોય તો આયુ, ગોત્ર, પ્રતિષ્ઠા તથા ધનનો લાભ થાય છે. (૩)

“માણુમ્માણપ્પમાણપટ્ટિપુણ્ણસુજાયસવ્વંગહુદરંગા” જેના દ્વારા પદાર્થ માપી શકાય તેને માન કહે છે. અર્થાત્ તરાજુ, આંગળ, શેર, છટાંક આદિના દ્વારા તોળવું. અથવા કોઈ પુરુષ વગેરે જલથી સંપૂર્ણ ભરેલા કુંડાદિ (શરીર જેટલો ઊંડો તથા લાંબો પહોળો)માં પેસે અને તેના પેસવાથી એક દ્રોણ (પરિમાણ-વિશેષ) જલ બહાર નિકળે તો તે પુરુષ આદિને માનયુક્ત કહે છે. માન શબ્દથી આજ વાત સમજવી ભેઈએ. માનથી અધિકને અથવા અર્ધભાર રૂપ પરિમાણને

માન, યદ્વા-નિજાંગુલીભિરષ્ટોત્તરશતાંગુલિપરિમિતોચ્છ્રાયઃ, इत्थं च—मानं
 ચોન્માનં ચ પ્રમાણં ચેત્યેષાં દ્વન્દ્વે માનોન્માનપ્રમાણાનિ, तैः परिपूर्णानि=
 સમ્પન્નાનિ, અત એવ સુજાતાનિ=યથોચિતાવયવસન્નિવેશવન્તિ, सर्वाणि=
 સકલાનિ અંગાનિ=અજ્યયતે=व्यज्यते જ્ઞાયતે પ્રાણી યૈસ્તાનિ મસ્તકાદારભ્ય
 ચરણાન્તાનિ યસ્મિન્ શરીરે તત્ માનોન્માનપ્રમાણપરિપૂર્ણસુજાતસર્વાંગમ્, અત એવ
 તાદૃશં સુન્દરમંગ્લમ્=वपुर्यस्याः સા તથોક્તા, ‘શશી’તિ શશી=चन्द्रस्तद्वत् सौम्यः=
 આહ્વાદક આકારઃ=स्वरूपं यस्याः સા, ‘કાન્તા’ કમનીયા, चित्तहारिणी,

અથવા અપને અંગુલીસે (૧૦૮) એક સૌ આઠ અંગુલી ઝૂંચાઈકો પ્રમાણ
 કહેતે હૈં। इन मान उन्मान और प्रमाणसे युक्त होनेके कारण सुजात (यथा-
 योग्य अवयवोंकी रचनासे सुन्दर) जो सर्वाङ्ग-जिसके द्वारा प्राणी व्यक्त
 होता है—किसी आकृतिके रूपमें दिखाई देता है उसे, अर्थात् पैरोंसे लेकर
 मस्तक तकके अवयवोंको अंग कहते हैं। इन सब अंगोंसे सुन्दर अंगवाली महारानी
 पद्मावती थी।

“સસિસોમાકારા” ચન્દ્રમાકે સમાન શાન્ત આકારવાળી થો ‘કંતા’
 જો કમનીયા—ચિત્ત હરણ કરવાળી હો ઉસ સ્ત્રીકો ‘કાન્તા’ કહેતે હૈં।

ઉન્માન કહે છે, સર્વતોમાનને અથવા પોતાની આંગળીથી (૧૦૮) એકસો આઠ
 આંગળી ઊંચાઈને પ્રમાણ કહે છે. આ માન ઉન્માન તથા પ્રમાણથી યુક્ત હોવાને
 કારણ સુજાત (યથાયોગ્ય અવયવોની રચનાથી સુંદર) જે સર્વાંગ, જેના દ્વારા પ્રાણી
 વ્યક્ત હોય છે—કોઈ આકૃતિના રૂપમાં દેખાય છે તેને. અર્થાત્ પગથી માંડીને
 માથા સુધીના અવયવોને અંગ કહે છે. આ બધાં અંગોથી સુંદર અંગવાળી
 મહારાણી પદ્માવતી હતી.

‘સસિસોમાકારા’ ચન્દ્રમા સમાન શાન્ત આકારવાળી હતી ‘કંતા’
 જે કમનીયા ચિત્ત હરણ કરવાવાળી હોય તે સ્ત્રીને ‘કાન્તા’ કહે છે.

सुन्दरबोधिनो टीका पद्मावतीवर्णन

४१.

‘प्रिये’ति प्रियं=दर्शकजनमनोहादकं दर्शनम्=अवलोकनं यस्याः सा प्रियदर्शना, यत्तु-दर्शनं रूपमिति व्याख्यातं तत्पूर्वोत्तरोपात्तविशेषणपौनरुक्त्यापत्त्या हेयमेव । यत एवंविशेषणविशिष्टाऽतएव सुरूपा=सर्वातिशायिरूपलावण्यवती, रूपेण लावण्यस्याप्युपलक्षितत्वात् ॥ १० ॥

मूलम्—

तत्थणं चंपाए नगरीए सेणियस्स रत्तो भज्जा कूणियस्स रत्तो
खुलमाउया काली नामं देवी होत्था, सोमालपाणिपाया जाव सुरूवा ॥ ११ ॥

छाया—

तत्र खलु चम्पायां नगर्यां श्रेणिकस्य राज्ञः भार्या कूणिकस्य राज्ञः
खुलमाता काली नाम देवी अभवत्, सुकुमारपाणिपादा, यावत् सुरूपा ॥ ११ ॥

टीका—

‘तत्थणं’ इत्यादि-तत्र=तस्यां चम्पायां नगर्यां ‘खलु’ इति वाक्या-
लङ्कारे, श्रेणिकस्य राज्ञः भार्या=पट्टराज्ञी कूणिकस्य राज्ञः खुलमाता=लघु-

‘प्रियदंशणा’ जिसकी दृष्टि दर्शकोके मनमें आह्लाद उत्पन्न करती
हो उस स्त्रीको ‘प्रियदर्शना’ कहते हैं । इस प्रकार उक्तगुणविशिष्ट होनेसे—
वह ‘सुरूपा’ श्रेष्ठ रूप लावण्यवती थी ॥ १० ॥

‘तत्थणं’ इत्यादि । उस चम्पा नगरीमें श्रेणिक राजाकी पट्टरानी कोणिक
राजाकी लघुमाता काली नामकी देवी सुकुमाल कर-चरणवाली यावत् सुरूपा थी ।

‘प्रियदंशणा’ जेनी नजर जेनाराना मनमां आनंद उत्पन्न करती होय
ते स्त्रीने ‘प्रियदर्शना’ कहे छे. आ प्रकारे कहेवा शुश्रुविशिष्ट होवाथी ते
‘सुरूपा’ श्रेष्ठ-रूपलावण्यवती होती (१०)

‘तत्थणं’ इत्यादि. ते चंपा नगरीमां श्रेष्ठिक राजाणी पट्टराणी कोणिक
राजाणी लघुमाता काली नामे देवी सुकुमाल कर चरणवाणी यावत् सुरूपा होती.

जननी काली नाम देवी मुकुमारपाणिपादेति पूर्ववत्, अभवत्, पुनः सा कीदृशी? ति विशेषवर्णनमाह—‘ कोमुइरयणियरविमलपडिपुन्नसोमवयणा, कुंडलुल्लिहियगंडलेहा, सिंगारागारचारुवेसा ’ छाया-कौमुदीरजनिकरविमल-परिपूर्णसौम्यवदना, कुण्डलोल्लिखितगण्डरेखा, शृङ्गारागारचारुवेसा, एतेषां विशेषणानामेवं व्याख्या-तथाहि— ‘कौमुदी’ति—‘कु’शब्देन मही प्रोक्ता, ‘मुद’ हर्षे ततो द्वयम् । धातुजैर्नियमैश्चैव, तेन सा कौमुदी स्मृता ॥ १ ॥

फिर इन्हीं काली देवी का वर्णन करते हैं—

‘ कोमुइरयणियरविमलपडिपुन्नसोमवयणा ’

કૌમુદી શબ્દકા અર્થે આ પ્રકારે છે—

“ ‘કુ’ શબ્દેન મહી પ્રોક્તા, ‘મુદ’ હર્ષે, તતો દ્વયમ્ ।

ધાતુજૈર્નિયમૈશ્ચૈવ, તેન સા કૌમુદી સ્મૃતા ॥ ૧ ॥”

‘કુ’ શબ્દકા અર્થે પૃથ્વી છે, ‘મુદ’ શબ્દકા અર્થે હર્ષિત કરના છે, જો પૃથ્વીમાં રહે હુએ જનોનો આનન્દ ઉત્પન્ન કરે તો કૌમુદી કહેતે છે । કૌમુદી યાને આશ્વિન કાર્તિક માસ રૂપ શરદ ઋતુની પૂર્ણિમાની ઉજ્જવલ ચન્દ્રિકા (ચાંદની) તો ચન્દ્રિકાવાળા ચન્દ્રમાને સમાન નિર્મલ સંપૂર્ણ રમણીય મુખવાળો થી । ‘કુંડલુ

વળી તે કાલી દેવીનું વર્ણન કરે છે:—

‘ કોમુइरयणियरविमलपडिपुन्नसोमवयणा ’

કૌમુદી શબ્દનો અર્થ આવે છે:—

“ ‘કુ’ શબ્દેન મહી પ્રોક્તા, ‘મુદ’ હર્ષે, તતો દ્વયમ્ ।

ધાતુજૈર્નિયમૈશ્ચૈવ, તેન સા કૌમુદી સ્મૃતા ॥ ૧ ॥”

‘કુ’ શબ્દનો અર્થ પૃથ્વી છે. ‘મુદ’ શબ્દનો અર્થ ‘હર્ષિત કરવું’ છે જે પૃથ્વી ઉપર રહેલાં માણસોને આનંદ કરાવે તેને કૌમુદી કહે છે. કૌમુદી અર્થાત્ આસો કાર્તિક માસ રૂપી શરદ ઋતુની પૂર્ણિમાની ઉજ્જવલ ચન્દ્રિકા, તે ચન્દ્રિકાવાળા જે ચન્દ્રમા

सुन्दरभोगिनी टीका कालोवर्णन

५३

कौं पृथिव्यां मोदत इति अन्तर्भावितण्यर्थत्वाद् हर्षयति प्राणिन इति कुमुदश्चन्द्रस्तस्येयं कौमुदी आश्विन-कार्तिकपूर्णिमाचन्द्रिका, तत्प्रधानो यो रजनिकरश्चन्द्रस्तद्वत् विमलं परिपूर्णं सौम्यं=रमणीयं वदनं=मुखं यस्याः सा तथा, 'कुण्डले'ति-कुण्डलाभ्यां कर्णाभरणविशेषाभ्यां उल्लिखिता=घृष्टा गण्डरेखा=कपोलतलविरचितकस्तूरीरेखा यस्याः सा तथा, 'शृङ्गारे'ति-शृङ्गारस्य रसविशेषस्य अगारमिव अगारं, तथा चारुः=सुन्दरः वेशो=नेपथ्यं यस्याः सा तथा, इति ।

पुनः कीदृशी सेत्याह-‘सेणियस्स रत्नो इहा कंता प्रिया मणुक्का नामधिज्जा वेसासिया सम्मया बहुमया अणुमया भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया चेलपेडा इव सुसंपरिगहिया सा काली देवी सेणिएण रत्ना सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरइ’ छाया-‘श्रेणिकस्य राज्ञ इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा नामधेया वैश्वासिका संमता बहुमता

ल्लिहियगंडलेहा’ जिनके वर्णन लगनेसे कपोल पर रही हुई कस्तूरी आदि सुगंधी द्रव्यकी रेखा हट गई है ऐसे विशाल कुंडलको धारण करनेवाली थी । ‘सिंगारागारचारुवेसा’, शृंगार रसका घर और सुन्दर वेष वाली थी । ‘इष्टा’ पातिव्रत्य आदि गुणोंसे राजा श्रेणिकके अभिलषित थी । ‘कान्ता’ राजा के मनमें आह्लाद उत्पन्न करनेके कारण कान्ता-कमनीय थी । राजाके प्रेम उत्पन्न

समान निर्मल संपूर्ण रमणीय भुषवाणी હતી. ‘કુંડલુલ્લિહિયગંડલેહા’—જેને ઘસારો લાગવાથી ગાલ પર રહેલી કસ્તૂરી આદિ સુગંધી દ્રવ્યની રેખા જતી રહી છે એવાં વિશાલ કુંડલને ધારણ કરવા વાળી હતી. ‘સિંગારાગારચારુવેસા’ શૃંગાર રસનું ઘર તથા સુંદર વેષ વાળી હતી. ‘ઈષ્ટા’ પાતિવ્રત્ય આદિ ગુણોથી સભા શ્રેણિકની માનીતી હતી. ‘કાન્તા’ રાબાના મનમાં આનંદ ઉત્પન્ન કરનારી હતી તેથી કાન્તા એટલે કમનીય હતી. રાબાનો પ્રેમ ઉત્પન્ન કરવાને કારણે

अनुमता भाण्डकरण्डकसमाना तैलकेलेव सुसंगोपिता चेलपेटेव सुसंपरिगृहीता सा काली देवी श्रेणिकेन राज्ञा सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरति ।

इष्टा=अभिलषणीया पातिव्रत्यादिगुणबाहुल्यात्, कान्ता=कमनीया, प्रिया=प्रेमवती सदाप्रेमविषयत्वात् किमन्यदर्शनेनेति परिणामजनिका, मनोज्ञा=पतिमनोविनोदिनी, भावतः पतिभाववती, स्वरूपतः शोभना । नामधेया=प्रशस्तनामवती, नामधार्या, इति वा छाया, तत्र नाम धार्य=हृदि धरणीयं यस्याः सा तथा । वैश्वासिका=सर्वथा विश्वसनीया, सम्मता=सम्मानयोग्या तत्कृतगृहकार्याणां संमतत्वात्, बहुमता=पतिदासीदासादिसकलपरिजनसम्मानिता, अनुमता=सकलकार्यानुमतिग्रहणयोग्यत्वात् सकलकुटुम्बसमदर्शिनी विप्रियकरणेऽप्यनुकूलेत्यर्थः, भाण्डकरण्डकसमाना=आभरणकरण्डकतुल्या भूषणकरण्डकवत्पति-सुरक्षितेत्यर्थः, तैलकेलेव सुसंगोपिता=तैलकेला देशविशेषप्रसिद्धो मृण्मयस्तैलभा-जनविशेषः, सोऽतिसौन्दर्येण दृष्टिदोषसंभवाद् भङ्गभयाच्च सुष्ठु संगोप्यते, एवं सा,

करनेके कारण 'प्रिया' थी । राजाके मन प्रसन्न करनेके कारण 'मनोज्ञा' थी तथा प्रशस्त नामवाली थी, उसका नाम हृदयमें धारण करने योग्य था । शील आदि गुणके कारण विश्वास योग्य थी । पतिके मनके अनुकूल कार्य करनेसे संमान योग्य थी. सकल कुटुम्बके हित करनेसे 'बहुमता' थी, सब कार्य पतिकी संमतिसे करनेके कारण 'अनुमता' थी, भूषणकरंडकके समान 'सुरक्षिता' थी । किसी देशमें

'प्रिया' होती. राजानुं मन प्रसन्न करवावाणी होवाथी 'मनोज्ञा' होती. तथा प्रशस्त नामवाणी होती अथवा तेनुं नाम हृदयमां धारण करवा योग्य हुतुं. शील आदि गुणों वडे विश्वासपात्र होती. पतिना मनने अनुकूल कार्य करवाथी सम्मानयोग्य होती. सकल कुटुम्बनुं हित करवाथी 'बहुमता' होती. अर्थां कार्य पतिनी संमतिथी करवाने कारणे 'अनुमता' होती. भूषणकरंडक (धरेणुंवा करंडीया-डामला)नी पेडे

सुन्दरबोधिनी टीका कालीवर्णन

४१

चेलपेटेव सुसंपरिगृहीता=बहुमूल्यवस्त्रमञ्जूषेव मनागप्यविचलतया स्वायत्तीकृता
सा=पूर्वोक्तगुणविशिष्टा काली देवी श्रेणिकेन राज्ञा स्वपतिना सार्द्धं
विपुलान्=बहून् नानाविधान् भोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जाना=अनुभवन्ती
विहरति=आस्ते स्म ॥ ११ ॥

मूलम्—

तीसेणं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सोमालपाणि-
पाए जावसुरूवे ॥ १२ ॥

छाया—

तस्याः खलु काल्याः देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमारोऽभवत्,
सुकुमारपाणिपादः यावत् सुरूपः ॥ १२ ॥

टीका—

‘तीसेणं’ इत्यादि । तस्याः काल्या देव्याः पुत्रः कालो नाम

मिट्टीका तेलपात्र ऐसा सुन्दर होता है कि जिसको दृष्टिदोषसे बचानेके लिये
गुप्त रखते हैं, इसी प्रकार वह सुगोपित थी, बहु मूल्य वस्त्रवाली पेट्टीके समान
सर्वथा सुपरिगृहीता थी । ऐसे विशिष्ट गुणवाली काली महारानी श्रेणिक राजा
के साथ अनेक प्रकारके शब्दादि विषयोंका अनुभव करती हुई रहती थी ॥ ११ ॥

‘तीसेणं’ इत्यादि । उस काली महारानी के कोमल कर चरण वाञ्छ

सुरक्षित હતી. કોઇ દેશમાં માટીનું તેલપાત્ર એવું સુંદર હોય છે કે જેને દૃષ્ટિ
દોષથી બચાવવા માટે ગુપ્ત રાખે છે તેની પેઠે આ પણ સુગોપિત હતી. કિંમતી
વસ્ત્રવાળી પેટીની પેઠે સર્વથા રાજાથી સુપરિગૃહીતા હતી. એવાં વિશિષ્ટ ગુણવાળી
કાલી મહારાણી શ્રેણિક રાજાની સાથે અનેક પ્રકારના શબ્દાદિ વિષયોનો અનુભવ
કરતી રહેતી હતી. ॥ ૧૧ ॥

‘તીસેણ’ ઇત્યાદિ. તે કાલી મહારાણીને કોમળ હાથ પગ વાળો, તથા

४४

निरयानलिकासूत्र

कुमारोऽभवत्, स कीदृशः ? इत्यपेक्षायामाह—सुकुमारपाणिपादः, सुरूपः, इत्यनयोर्व्याख्या पूर्वोक्तदिशाऽवसेया । यावत्करणात् ‘पासाइए, दरिसणिजे, अभिरूवे, पडिरूवे, इत्येषां सङ्ग्रहो ज्ञेयः । एतच्छाया—प्रासादीयः, दर्शनीयः, अभिरूपः प्रतिरूपः, इति । प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीयः=दृष्टिसुखदत्वेन भूयो भूयो दर्शनयोग्यः, अभिरूपः=मनोज्ञाकृतिकः, प्रतिरूपः=सर्वातिशयिरूपलावण्यवान् इति । अत्र प्रसङ्गवशात् श्रेणिक-कूणिक-वर्णनं, कालकुमारादिवर्णनं च संक्षेपतः कथ्यते—

तत्र किल पुत्रवत्प्रजापालस्य श्रेणिकभूपालस्य राज्ये रत्नद्वयमासीत्—
देवसमर्पितहारः १, सेचनकहस्ती २ च, यावत् तदीयराज्यस्य मूल्यं ततो-

और सुन्दर रूपकाला ‘काल’ नामका कुमार था । वह ‘काशीकुमार’ के नामसे भी प्रसिद्ध है । जो मनको प्रसन्न करनेवाला, देखनेवालेके नेत्रको आनन्द देनेवाला, सुन्दर आकृतिवाला और अतिशय रूप लावण्यका धारण करनेवाला था ।

—यहां प्रसङ्गवश श्रेणिक, कूणिक तथा काल कुमारका संक्षिप्त वर्णन करते हैं—

वहां पुत्रके समान प्रजाके पालन करनेवाले श्रेणिक राजाके राज्यमें दो रत्न थे—(१)=प्रथम देवसमर्पित हार, (२) दूसरा सेचनक हस्ती था ।

सुन्दर रूप वाणो काल नामको कुंवर હતો તે ‘કાશીકુમાર’ ના નામથી પ્રસિદ્ધ છે. જે મનને પ્રસન્ન કરવાવાળો, નજરે જોનારાનાં નેત્રને આનંદ આપવા વાળો, સુંદર આકૃતિ વાળો તથા અતિશય રૂપ લાવણ્યને ધારણ કરવા વાળો હતો.

અહીં પ્રસંગવશ રાજા શ્રેણિક, કૂણિક તથા કાલ કુમારનો સંક્ષિપ્ત વર્ણન કરે છે:—

ત્યાં પુત્રની પેઠે પ્રજાનું પાલન કરવા વાળા શ્રેણિક રાજાના રાજ્યમાં બે રત્ન હતાં (૧) પ્રથમ દેવે આપેલ હાર (૨) બીજું સેચનક હાથી હતો.

सुन्दरबोधिनी टीका सम्यक्त्वप्रशंसा

५७

ऽप्यधिकं मूल्यं तद्रत्नद्वयस्य । हारोत्पत्तिरेषे भणिष्यते । कूणिकस्योत्पत्तिः
शास्त्रकारेण स्वयं विस्तारेण कथायेष्यते, कालादिकुमाराणां च आरम्भसङ्ज्ञामतो
नरकयोग्यकर्मोपचयात् तत्प्राप्तिर्मरणवर्णनं चात्रैव शास्त्रे प्रतिपादयेष्यते ।

कूणिकश्चम्पायां नगर्यां प्राज्यं राज्यं चकार । कूणिकस्य चेल्लनाऽङ्ग-
जातावन्यावपि वैहल्य-वैहायसौ द्वौ भ्रातरावास्ताम् ।

अथ कदाचित् प्रथमकल्पे सकलदेवकृद्विसम्पन्नः सुरवृन्दवन्दितपदा-

ये दोनों रत्न इतने मूल्यवान थे कि जो राजाका सम्पूर्ण राज्य भी दे दिया जाय
तो भी उनकी कीमत न हो सके । हारकी उत्पत्ति आगे कही जायगी और कूणिक
की उत्पत्ति शास्त्रकार स्वयं विस्तारसे कहेंगे । कालकुमार आदि कुमारोंके
आरंभ और संप्रामसे नरकयोग्य कर्मोंके उपचयके कारण उनकी नरकप्राप्तिका
और मरणका वर्णन इसी शास्त्रमें किया जायगा ।

चम्पा नगरीमें कूणिक राजा निष्कण्टक राज्य करता था । उस कूणिक
राजाके चेल्लना मातासे जन्मे हुए—वैहल्य और वैहायस नामके दो भाई थे ।

एक समय सौधर्म देवलोकमें सम्पूर्ण देव ऋद्धिवाले देववृन्दसे वन्दित

आ जेउ रत्न जेवां किमती हुतां डे जे राजानुं आपुं राज्य पणु दध देवाय तो
पणु तेनी किमत्त न दध शडे हारनी उत्पत्ति विषे आगण कडेवाभां आवशे तथा
कूणिकनी उत्पत्ति शास्त्रकार पोते विस्तारथी कडेशे. काल कुमार आदि कुमारोना
आरंभ तथा संभामथी नरकयोग्य कर्मोना उपचयना कारणे तेमनी नरकप्राप्तिनुं
तथा मरणनुं पणुन आ शास्त्रभां करनाभां आवशे.

कूणिक राजा चम्पा नगरीभां निष्कण्टक राज्य करता हुता. ते कूणिक राजाने
माता चेल्लनाथी जन्मेता वैहल्य तथा वैहायस नामे जे भाई हुता.

एक समय सौधर्म देव लोकभां सम्पूर्ण ऋद्धिवाणा देववृन्दथी वन्दित
थरणुवाता उत्साही शकेन्द्रे सुधर्मा संज्ञानी अहंर आ प्रकारे सम्यक्त्वनी प्रशंसा करी.

रविन्दोऽपास्ततन्द्रः शक्रेन्द्रः सुधर्मसभायां सम्यक्त्वप्रशंसां चक्रे । तथाहि—

“अंतोमुहुत्तमित्तं वि फासियं हुज्ज जेहिं संमत्तं ।

तेसिं अवहुँपुगलपरियट्ठो चेव संसारो ॥ १ ॥”

“अन्तर्मुहूर्तमात्रमपि स्पृष्टं भवेद् यैः सम्यक्त्वम् ।

तेषामपार्द्धपुद्गलपरिवर्तश्चैव संसारः ॥ १ ॥” इति ज्ञाया,

सम्यक्त्वसद्भावे प्रशमसंवेगादयो गुणाः प्रसभमुदयन्ते तदानीं कथमपि तदुदयं प्रतिरोधं न कश्चन समर्थो भवति ।

चरण वाले उत्साही शक्रेन्द्रे ने सुधर्मा सभाके अन्दर इस प्रकार सम्यक्त्वकी प्रशंसा की, जैसे कहा है:—

“अंतोमुहुत्तमित्तं वि फासियं हुज्ज जेहिं संमत्तं ।

तेसिं अवहुँपुगलपरियट्ठो चेव संसारो ॥ १ ॥”

जो भव्य प्राणी अन्तर्मुहूर्त मात्र भी सम्यक्त्वका स्पर्श कर लेता है, वह देशतः न्यून (कम) अर्धपुद्गलपरावर्तनसे अवश्य मोक्ष पाता है। अर्धपुद्गलपरावर्तनका स्वरूप अणुत्तरोपपातिक सूत्रकी अर्थबोधिनी टीकासे समझ लेना चाहिए

सम्यक्त्वकी प्राप्ति होने पर शम, संवेग आदि गुण आत्मामें सहज उत्पन्न होते हैं, सम्यक्त्वके सद्भावमें गुणोंके विकासको कोई नहीं रोक सकता है ।

नेम कथुं छे डे:—

“अंतोमुहुत्तमित्तं वि फासियं हुज्ज जेहिं संमत्तं ।

तेसिं अवहुँपुगलपरियट्ठो चेव संसारो ॥ १ ॥”

ने लव्य प्राणी अन्तर्मुहूर्त मात्र पणु सम्यक्त्वना स्पर्श करी ले छे ते देशतः (थोडुं) न्यून (ओछा) अर्धपुद्गलपरावर्तनथी अवश्य मोक्ष पाये छे. अर्धपुद्गलपरावर्तननु स्वल्प अनुत्तरोपपातिक सूत्रनी अर्थबोधिनी टीकाथी समझ लेवुं लेधये.

सम्यक्त्वनी प्राप्ति थवाथी शम संवेग आदि गुण आत्माभां सहज उत्पन्न आव छे. सम्यक्त्वना सद्भावभां गुणाना विकासने कोरि रोकी शकतुं नथी.

સુન્દરબોધિની ટોકા સમ્યક્ત્વપ્રશંસા

૪૨

ઉક્તશ્ચ—

(માલિનીછન્દઃ)

“ અસમસુખનિધાનં ધામ સંવિગ્નતાયાઃ,

ભવસુખવિમુક્ત્વોદીપને સદ્વિવેકઃ ।

નરનરકપશુત્વોચ્છેદહેતુર્નરાણાં

શિવસુખતરુવીજં શુદ્ધસમ્યક્ત્વલાભઃ ॥ ૧ ॥ ”

કહા મી હૈ:—

“ અસમસુખનિધાનં ધામ સંવિગ્નતાયાઃ,

ભવસુખવિમુક્ત્વોદીપને સદ્વિવેકઃ ।

નરનરકપશુત્વોચ્છેદહેતુર્નરાણાં,

શિવસુખતરુવીજં શુદ્ધસમ્યક્ત્વલાભઃ ॥ ૧ ॥ ”

અર્થાત્—નિર્મલ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખકા નિધાન હૈ, વૈરાગ્યકા ધામ (ઘર) હૈ, સંસારકે ક્ષણભંગુર ઓર નાશવાન સુખોંકી અસારતા સમજનેકે લિષ્ સચ્ચા વિવેકસ્વરૂપ હૈ, મન્ય જીવોંકે મનુષ્ય તિર્યચ્ચ સમ્બન્ધી ઓર નરક નિગોદ આદિ દુઃખોંકા ઉચ્છેદ કરનેવાલા હૈ ઓર મોક્ષ સુખરૂપી વૃક્ષકા વીજસ્વરૂપ હૈ ॥ ૧ ॥

કહું પણ છે કે:—

“ અસમસુખનિધાનં ધામ સંવિગ્નતાયાઃ,

ભવસુખવિમુક્ત્વોદીપને સદ્વિવેકઃ ।

નરનરકપશુત્વોચ્છેદહેતુર્નરાણાં,

શિવસુખતરુવીજં, શુદ્ધસામ્યક્ત્વલાભઃ ॥ ૧ ॥ ”

અર્થાત્—નિર્મળ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખનું નિધાન છે. વૈરાગ્યનું ધામ (ઘર) છે. સંસારનાં ક્ષણભંગુર તથા નાશવાન સુખોની અસારતા સમજવા માટે ખરે-ખર વિવેક સ્વરૂપ છે. ભવ્ય જીવોનાં મનુષ્ય તિર્યચ્ચ સંબંધી તથા નરક નિગોદ આદિ દુઃખોના ઉચ્છેદ કરવાવાળું છે તથા મોક્ષસુખ રૂપી વૃક્ષનાં બીજ સ્વરૂપ છે. (૧)

કિન્ન—

(ઇન્દ્રવજ્રાછન્દઃ)

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પરં હિ રત્નં,
સમ્યક્ત્વબન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ બન્ધુઃ ।
સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પરં હિ મિત્રં,
સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥ ૨ ॥ ”

ઔર भी कहा है:—

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પરં હિ રત્નં,
સમ્યક્ત્વબન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ બન્ધુઃ ।
સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પરં હિ મિત્રં,
સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥ ૨ ॥ ”

અર્થાત્—સંસારમેં સમ્યક્ત્વ રત્નકે સમાન અન્ય રત્ન નહીં, સમ્યક્ત્વ બન્ધુકે સમાન અન્ય બન્ધુ નહીં । સમ્યક્ત્વ મિત્રકે સમાન અન્ય મિત્ર નહીં । સમ્યક્ત્વ લાભકે સમાન અન્ય લાભ નહીં ॥ ૨ ॥

ફરી પણ કહું છે કે:—

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પરં હિ રત્નં,,
સમ્યક્ત્વબન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ બન્ધુઃ
સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પરં હિ મિત્રં,
સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥ ૨ ॥ ”

અર્થાત્—સંસારમાં સમ્યક્ત્વ રત્નના જેવું બીજું રત્ન નથી. સમ્યક્ત્વ બંધુના જેવો બીજો બંધુ નથી. સમ્યક્ત્વ મિત્રના જેવો બીજો કોઈ મિત્ર નથી અને સમ્યક્ત્વ લાભના જેવો બીજો કોઈ લાભ નથી. (૨)

हृदयभूमिकायां सज्जातः सम्यक्त्वाचारदृढमूलो भावनाजलधारासिच्य-
मानः श्रुतचारित्रलक्षणधर्मस्कन्धः प्रमाणशाखो नयप्रतिशाखो दयादानक्षमाधृति-
दलोशील भविजनमनो मिलिन्दवृन्दगुञ्जितजिनवचनप्रेमप्रसूनः शास्त्रवृत्तिकः
(वृत्ति-‘वाड’ इति भाषायाम्) स्वर्गापवर्गसुखफलो निजात्मकल्याणरसः
सम्यक्त्वमहामहीरुहो मिथ्यात्वगजेन्द्रादिकृतोपसर्गकुशास्त्रकुतर्कमहावातशतसह-
स्रैरप्युन्मूलयितुमशक्यः ।

सम्यक्त्व रूपी महावृक्ष हृदय भूमिमें उत्पन्न होता है सम्यक्त्व का आचार जिसका मूल है, भावना जलसे सींचा जाता है, जिसके श्रुत और चारित्र धर्मरूपी स्कंध हैं, प्रत्यक्ष आदि प्रमाणरूप जिसकी शाखाएँ हैं, नयरूप प्रतिशाखाएँ हैं, दया, दान, क्षमा, धृति और शीलरूप पत्र-पत्ते हैं, जिनवचनका प्रेमरूप सुन्दर पुष्प है, जिसपर भव्य जीवोंके मनरूपी भ्रमरवृन्द मूँज रहे हैं, शास्त्ररूपी वाडसे सुरक्षित है, स्वर्ग और मोक्षके सुखरूप फल है, निज आत्माके कल्याणरूप रस है, ऐसे सुदृढ सम्यक्त्वरूपी महावृक्षको मिथ्यात्वरूपी महागजकृत उपसर्ग और कुशास्त्र कुतर्करूपी हजारों महावायु नहीं उखाड़ सकता ।

સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષ હૃદયરૂપ ભૂમિમાં ઉત્પન્ન થાય છે. સમ્યક્ત્વનો આચાર જેનું મૂળ છે. ભાવનાજળથી જેનું સિંચન થાય છે. જેનાં શ્રુત તથા ચારિત્ર ધર્મ રૂપી સ્કંધ (થડ) છે. પ્રત્યક્ષ આદિ પ્રમાણ રૂપ જેની શાખાઓ છે. નયરૂપી પ્રતિ-શાખાઓ છે. દયા, દાન, ક્ષમા, ધૃતિ તથા શીલરૂપ પાંદડાં છે. જિન વચનનાં પ્રેમરૂપી સુંદર પુષ્પ છે. જેના ઉપર ભવ્ય જીવોનાં મનરૂપી ભ્રમરનાં વૃંદ ગુંજન કરી રહ્યાં છે. શાસ્ત્રરૂપી વાડથી સુરક્ષિત છે. સ્વર્ગ તથા મોક્ષનાં સુખરૂપી ફલ છે. પોતાના આત્માનાં કલ્યાણરૂપી રસ છે. એવા સુદૃઢ સમ્યક્ત્વ-રૂપી મહાવૃક્ષને મિથ્યાત્વરૂપી મહાગજકૃત ઉપસર્ગો તથા કુશાસ્ત્ર કુતર્ક રૂપી હજારો મહાવાત (આંધી) ઉખેડી નહિ શકે.

इति विस्तरेणास्य वर्णनमाचाराङ्गसूत्रस्याऽऽचारचिन्तामणिटीकातोऽव-
सेयम् ।

एवं सम्यक्त्वप्रशंसां कुर्वाणः सुरपतिरवधिज्ञानेन जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रे
श्रेणिकभूपं ददर्श । सम्यक्त्वगुणशालिनं राजनयपालिनं तं विलोक्य प्रफुल्ल-
वदनकमलः सम्यक्त्वगुणविमलः सादरं भूयो भूयोऽवाप्तसम्यक्त्वादигुण-
श्रेणिकं श्रेणिकं सुधर्माख्यायां स्वदेवसभायां प्रशंसं । इत्थं पुरन्दरास्यशैलनि-
सृष्टता श्रेणिकसम्यक्त्वप्रशंसासरित् सकलमुरसदस्यश्रवणसिन्धुमवागाहत ।

सम्यक्त्वका विस्तृत वर्णन आचाराङ्ग सूत्रके चौथे अध्ययनकी आचार-
चिन्तामणि टीकामें किया गया है ।

इस प्रकार सम्यक्त्व प्रशंसा करते हुए सुरपति सुधर्मा इन्द्रने अवधिज्ञान
द्वारा जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें श्रेणिक राजाको देखा । सम्यक्त्वगुणशाली राजनीति
को पालनेवाले राजाको देखकर प्रसन्नमुख होकर स्वयं सम्यक्त्व गुणसे निर्मल
इन्द्र, आदरके साथ बार बार सम्यक्त्वगुणधारी श्रेणिक राजाकी प्रशंसा अपनी
सुधर्मसभामें करने लगे ।

इस प्रकार राजा श्रेणिककी प्रशंसारूपी नदी इन्द्रके मुखरूपी पर्वतसे निकल
कर सभामें बैठे हुए सब देवोंके कर्णरूपी सागरमें पहुँची ।

सम्यक्त्वतु विस्तारथी वर्णुन आचारांग सूत्रता यथा अध्ययननी आचार-
चिन्तामणि टीकाभां करेत्तुं छे.

आ प्रकारे सम्यक्त्वतु प्रशंसा करता थका सुरपति सुधर्मा इन्द्रे अवधि-
ज्ञान द्वारा जम्बू द्वीपना भरत क्षेत्रमां श्रेणिक राजाने जेया. सम्यक्त्वगुणशास्त्री
राजनीतिनु पालन करवावाणा राजाने जेधने प्रसन्नमुख थछ पोते सम्यक्त्वगुणथी
निर्मल इन्द्र, आदर सहित बारवार पोतानी सुधर्मा सभाभां सम्यक्त्वगुणधारी
श्रेणिक राजानी प्रशंसा करवा लाग्या.

अे प्रकारे राजा श्रेणिकनी प्रशंसाइपी नदी इन्द्रना मुणइपी पर्वतथी
निकली सभाभां जेठेला सर्व देवाना कर्णइपी सागरभां पहुँची.

सुन्दरबोधिनी टीका देवकृतश्रेणिकपरीक्षा

५३

देवाश्च तदीयसम्यक्त्वादिगुणगणमहिमानं श्रावं श्रावममन्दानन्दतुन्दिला
जातकौतूहलाः श्रेणिकं धन्यममन्यन्त । तदा द्वौ मिथ्यात्विदेवौ शक्रवचनं न
श्रद्धधतुः । श्रेणिकं परीक्षितुं मनुष्यलोके तदन्तिकं समागतौ । उक्तञ्च—

“मुहेंदुदिव्वंमुहवत्थिगो हि

सग्गा सुरो सेणियरायमागा ।

परिक्खिउं साहुसुवेसधारी

अज्जासमेओ य सरोतडे सो ॥ १ ॥ ”

छाया—

‘मुखेन्दुदीव्यन्मुखवत्तिको हि

स्वर्गात्सुरः श्रेणिकराजमागात् ।

देवता लोग उनके सम्यक्त्व आदि गुणोंकी महिमा सुन-सुन कर अपूर्व आनन्दसे
भर गए और आश्चर्यचकित होकर श्रेणिक राजाको धन्यवाद देने लगे उस समय दो
मिथ्यात्वी देवोंने इन्द्रके वचनपर श्रद्धा नहीं की और राजा श्रेणिककी परीक्षा लेनेके
लिये मनुष्य लोकमें उनके पास आये ।

जैसे कहा है:—

मुहेंदुदिव्वंमुहवत्थिगो हि,

सग्गा सुरो सेणियरायमागा ।

देवता बोडोना ते सम्यक्त्व आदि गुणोना महिमा सांभणी सांभणीने अपूर्व
आनन्दथी भरपूर थध गया तथा आश्चर्य चकित थधने श्रेणिक राजा ने धन्यवाद
देवा लाग्या.

ते समये जे मिथ्यात्वी देवो जे इन्द्रना वचन उपर श्रद्धा न करी अने
राजा श्रेणिकनी परीक्षा देवा माटे मनुष्य लोकमां तेनी पासे आग्या. जेम कह्युं
छे के:—

मुहेंदुदिव्वंमुहवत्थिगो हि

सग्गा सुरो सेणियरायमागा ।

परीक्षितुं साधुसुवेषधारी,

आर्यासमेतश्च सरस्तटेऽसौ ॥ १ ॥'

ततः साधुरूपधारी सुरो जलाशये जालं वितत्य स्थितः, आर्यिका-
रूपधारी तत्र सरस्तीरे तिष्ठति स्म । अत्रान्तरे श्रेणिको राजा पवनसेवनार्थं
समागतः । तत्र मत्स्यं हन्तुमुद्यतं साधुं विलोक्यावोचत्-किमिति साधुर्भूत्वा
दुराचरसि ? ।

परिक्खुअं साहुसुवेषधारी,

अज्जासमेओ य सरोतढे सो ॥ १ ॥

उन दोनों देवोंने वैक्रिय शक्तिसे साधु और साध्वीका रूप धारण किया
-मुखपर सदोरक मुखवस्त्रिका बांधी और कक्ष प्रदेश (कांख) में रजोहरण लिया,
इस प्रकार वेष बनाकर सरोवरके किनारे जा खड़े हुए । उनमेंसे एक देव साधुरूप
धारण किया हुआ जाल फैलाकर सरोवरके तटपर खड़ा होगया और दूसरा साध्वी
रूप धारण किया हुआ वहीं उसके समीपमें खड़ा हो गया । उसी अवसरपर महाराज
श्रेणिक क्रीडाके निमित्त घूमते हुए वहाँ आ पहुँचे उन्होंने मछली मारनेके लिए उद्यत
साधुको देखकर कहा ओह ! तुम साधु होकर यह दुष्ट आचरण क्यों करते हो ?

परिक्खुअं साहुसुवेषधारी,

अज्जासमेओ य सरोतढे सो ॥ १ ॥

ते जन्ने देवोअे वैक्रिय शक्तिथी साधु तथा साध्वीनुं इप धारणु कथुं.
मुअ उपर होरासद्धित मुअवस्त्रिका बांधी तथा कांअभां रजेडरणु दीधुं. अे
अकारनेो वेष लध तणावने कांठे जध ज्ञा रद्धा. अेभांथी अेक देव साधुनुं इप
धारणु करीने ज्ञा इलावी सरोवरना तट उपर ज्ञो रद्धो तथा भीजे साध्वीनुं
इप धारणु करी त्यांज तेनी पासे ज्ञो रद्धो. ते वअते भडाराज अ्रेणिक क्रीडा
निमित्ते इरता इरता त्यां आवी पडेअ्या तेभणु माछदी मारवा भाटे उद्यत थयेज्ञा
साधुने जेधने कधुं. ओह ! तमे साधु थधने आ दुष्ट आचरण शा भाटे करे छे ?

सुन्दरबोधिनी टीका देवकृतश्रेणिकपरीक्षा

५५

स सरोषं तमुवाच-इयमार्यिका दोहदवतीत्यतो मीनमांसं बुभुक्षाणा-
ऽस्तीत्येतदर्थं जालं विस्तारयामि, त्वमितो गच्छ राजन् ! किं ते
प्रयोजनमेतादृशप्रश्नेन ?, इति तद्वचनं राजा श्रुत्वा कोपारुणनयनोऽवदत्-
निर्लज्ज ! कृत्यमिदं त्यज, अन्यथा देहदण्डं ते दास्यामि । इति श्रुत्वाऽसौ
साधुरवोचत्-गौतमादयश्चतुर्दशसहस्रमुनयश्चन्दनवालादयः षट्त्रिंशत्सहस्रमर्षिकाश्च
सर्वे अन्तर्दुराचारिणो बहिः साधुवेषधारिणः सन्ति तर्हि किं मामधिक्षिपसि ? ।

तब वह साधुवेषधारी क्रोधित होकर बोला-यह आर्या गर्भवती होनेसे
इसको मछली खानेका दोहद उत्पन्न हुआ है इस लिए मछलियां मारनेको जाल
फैलाये खड़ा हूँ, जाइये-राजन् ! इससे आपका क्या प्रयोजन है ?

ऐसे साधुके वचन सुनकर राजा क्रोधित हो बोले—

निर्लज्ज ! छोड़ इस दुष्कृत्यको, नहीं तो दण्ड दूंगा । यह सुनकर वह साधु-
वेषधारी बोला ? किसको दण्ड देते हैं ? गौतमादि चौदह हजार मुनि और चन्दनवाला
आदि छत्तीस हजार साध्वियाँ सभी अन्तर दुराचारी और बाहर साधुपनका आडम्बर
रखते हैं तो मुझ अकेलेपर ही क्यों आक्षेप करते हो ? ।

त्यारे ते साधुवेषधारी क्रोध करीने आह्वयो-आ आर्या गर्भवती होवानी
तेने माछली भावानो उडोणो थयो छे. आ भाटे माछली मारवाने जण देवानेने
जलो छुं. जओ राजन् ! जेनु आपने शुं प्रयोजन छे ?

जेवां साधुनां वचन सांलणी राजा क्रोध करीने आह्वयोः—

निर्लज्ज ! छोड़ी दे आ दुष्कृत्यने, नहि तो दंड करीश. आ सांलणीने
ते साधुवेषधारी आह्वयो-दंड देने आपशे ? गौतम आदि चौद हजार मुनि
तथा चंदनवाला आदि छत्तीस हजार साध्वीओ तमाम अन्तर दुराचारी तथा
बहार साधुपणानो आडंबर राखे छे तो मारा जेकवाना उपरज केम आक्षेप
करे छे ?

ततः श्रेणिकोऽवदत्-त्वादृशानां दम्भं दुराचारं च वीक्ष्य मम धर्मानु-
रागो नापगच्छति, पृथिवी पातालं गच्छेत्, सूर्यः पश्चिमदिश्युदियात्, चन्द्रो
वह्निं वर्षेत्, वह्निः शीतलो भवेत्, अमृतं विषं भवेत् तदपि मम सम्यक्त्वं न
प्रचलेत् । ततो देवद्वयमवधिज्ञानेन राजानं सम्यक्त्वधर्मे निश्चलं विज्ञाय
पुनः पुनः स्तौति । तथाहि—

(इन्द्रवज्रा)

“ सम्यक्त्वधारी च परोपकारी,
धन्योऽसि राजन् ! कृतपुण्यराशिः ।

यह सुनकर राजा श्रेणिक बोले—तुम्हारे जैसे दम्भी और दुराचारीको देख
कर मेरा धर्मका अनुराग नहीं हट सकता है, अर्थात् जिनवचनपर स्थित मेरी दृढ़
श्रद्धा नहीं हट सकती है, पृथ्वी पातालमें चली जाय, सूर्य पश्चिममें उदय हो जाय,
चन्द्र अग्नि वरसावे, अग्नि शीतल बन जाय, अमृत विष बने तो भी मेरा सम्यक्त्व
विचलित नहीं हो सकता ।

उसके पश्चात् उन दोनों देवोंने अवधिज्ञान द्वारा राजाको सम्यक्त्व
धर्मके अन्दर निश्चल जानकर बारम्बार इस प्रकार स्तुति करने लगे—

“ सम्यक्त्वधारी च परोपकारी,
धन्योऽसि राजन् ! कृतपुण्यराशिः ।

आ सांभजोने राजा श्रेणिक बोल्या—तमारा नेवा इन्ही तथा दुराचारीने
नेधने भारो धर्म उपरनो अनुराग उगी शके नहि, अर्थात् जिनवचन उपर
मारी दृढ़ श्रद्धा विचलित न थछ शके. पृथ्वी पातालमां चाली जाय, सूर्य पश्चि-
ममां उगे, चन्द्र अग्नि वरसावे, अग्नि ठंडा जनी जाय, अमृत जेर जनी जाय
तो पणु भारे सम्यक्त्व चलायमान थछ शके नहि.

त्यार पछी ते जने देवा अवधिज्ञान द्वारा राजाने सम्यक्त्व धर्मनी
अंदर निश्चल जाणीने बारंवार तेनी आ प्रमाणे प्रशंसा करवा लाग्या—

सम्यक्त्वधारी च परोपकारी,
धन्योऽसि राजन् ! कृतपुण्यराशिः ।

સુન્દરબોધિની ટીકા સમ્યક્ત્વપ્રદાંસા

૫૪૩

તુલ્યસ્ત્વયા કોઽપિ ન ભૂતલેઽસ્મિન્,
સર્વં સમક્ષં ત્વયિ દૃષ્ટમેતત્ ॥ ૧ ॥

અન્યચ્ચ—

શાર્દૂલવિક્રીડિતમ્ ।

“ સમ્યક્ત્વં વિમલં પરં દૃઢતરં ચદ્વર્ણિતં તાવકં,

તુલ્યસ્ત્વયા કોઽપિ ન ભૂતલેઽસ્મિન્,
સર્વં સમક્ષં ત્વયિ દૃષ્ટમેતત્ ॥ ૧ ॥

અર્થાત્—હે સમ્યક્ત્વધારી, પરોપકારી રાજન્, તુમ ધન્ય હો. તુમ્હારે જૈસા પુણ્યવાન્ અટલસમકિતધારી ઇસ ભૂતલ પર અન્ય નહીં. જો સમ્યક્ત્વધારીકે ગુણ હોતે હૈં વે સબ તુમમેં પ્રત્યક્ષ પાચે જાતે હૈં ॥ ૧ ॥

ફિર મી—

સમ્યક્ત્વં વિમલં પરં દૃઢતરં ચદ્વર્ણિતં તાવકં,

હે રાજન્ ! દાન દેના, દીન પર દયા રાખના, જિનવચનકે રહસ્યકો જાનના,

તુલ્યસ્ત્વયા કોઽપિ ન ભૂતલેઽસ્મિન્
સર્વં સમક્ષં ત્વયિ દૃષ્ટમેતત્ ॥ ૧ ॥

અર્થાત્—હે સમ્યક્ત્વધારી પરોપકારી રાજન્ તમેા ધન્ય છે, તમારા જેવા પુણ્યવાન અટલ સમકિતધારી આ પૃથ્વી ઉપર બીજા નથી. જે સમ્યક્ત્વધારીના ગુણ હોય છે તે બધા તમારામાં પ્રત્યક્ષ જોવામાં આવે છે. (૧)

ફરી પણ—

સમ્યક્ત્વં વિમલં પરં દૃઢતરં ચદ્વર્ણિતં તાવકં,

હે રાજન્ ! દાન દેવું, ગરીબ ઉપર દયા રાખવી, જિનવચનનાં રહસ્યને

देवेन्द्रेण ततोऽधिकं त्वयि सदा तद् भूपते ! राजते ।
 दानं दीनदयालुता जिनवचोमर्मज्ञता साधुता,
 धर्मैकप्रियता गुरौ विनयिता देवेऽनुरागस्तथा ॥ २ ॥

एवं स्तुवन् देवदर्शनममोघं भवतीति प्रसन्न एको देवो हारमपरश्च
 द्वौ मृद्गोलकौ श्रेणिकाय दत्त्वा स्वस्थानं गतौ । ततः श्रेणिकेन देवदत्तहारश्चे-
 ल्लनायै दत्तः, द्वौ मृद्गोलकौ च नन्दायै । नन्दा च 'पतिदत्तं किमपि वस्तु

देवेन्द्रेण ततोऽधिकं त्वयि सदा तद् भूपते ! राजते ।
 दानं दीनदयालुता जिनवचोमर्मज्ञता साधुता,
 धर्मैकप्रियता गुरौ विनयिता देवेऽनुरાગસ્તથા ॥ २ ॥

સજ્જનતા રાખના, ધર્મકા અદ્વિતીય પ્રેમ, ગુરુજનને સાથ વિનય ઓર વીતરાગ દેવકે
 પ્રતિ અનુરાગ ઇત્યાદિ જો તુમ્હારે દૃઢતર સમ્યક્ત્વકે નિર્મલ ગુણ ઇન્દ્રને વર્ણન કિયે
 હૈં ઉસસે મી અધિક તુમ્હારેમ્ સાક્ષાત્ મૌજૂદ હૈ ॥ ૨ ॥

इस प्रकार राजाकी प्रशंसा करते हुए देवोंने देवदर्शन अमोघ होता है,
 इस भावसे प्रसन्न होकर उनमेंसे एक देव राजाको हार और दूसरा देव दो मिट्टीके
 गोले भेंट करता है । बाद वे दोनों अपने स्थानपर गये और राजा अपने स्थानपर
 आया । पश्चात् राजा श्रेणिकेन देवसमर्पित हार चेल्लना महारानीको दिया, और
 दोनों मिट्टीके गोले नन्दा महारानीको दिये । नन्दाने भी 'पतिकी दी हुई कोई भी

देवेन्द्रेण તતોઽધિકં ત્વયિ સદા તદ્ ભૂપતે ! રાજતે ।
 દાનં દીનદયાલુતા જિનવચોમર્મજ્ઞતા સાધુતા,
 ધર્મૈકપ્રિયતા ગુરૌ વિનયિતા દેવેઽનુરાગસ્તથા ॥ ૨ ॥

બાણુવું, સબ્જનતા રાખવી, ધર્મમાં અદ્વિતીય પ્રેમ, ગુરુજનની સાથે વિનય તથા
 વીતરાગ દેવમાં અનુરાગ, ઇત્યાદિ જે તમારા દૃઢતર સમ્યક્ત્વના નિર્મળ બુદ્ધિ
 ઇન્દ્રે વર્ણન કર્યા છે તેનાથી પણ વધારે તમારામાં સાક્ષાત્ મૌબુદ છે. (૨)

આ પ્રકારે રાજાની પ્રશંસા કરતા થકા દેવોએ દેવદર્શન અમોઘ હોય
 છે, એ ભાવથી પ્રસન્ન થઈ તેમનામાંથી એક દેવ રાજાને હાર અને બીજો દેવ બે
 માટીના ગોળા ભેટ આપે છે. પછી તે બેઉ મોતાના સ્થાને ગયા તથા રાજા
 પોતાને સ્થાને આવ્યા. પછી રાજા શ્રેણિકે દેવે આપેલા હાર ચેલ્લના મહારાણીને
 આપ્યા તથા બેઉ માટીના ગોળા નન્દા મહારાણીને આપ્યા. નન્દાએ પણ 'પતિએ

સુન્દરબોધિની દ્વાકા અભયકુમારવર્ણન

૫૨

સાદરં ગ્રાહ્ય'મિતિ મનસિ કૃત્વા પાતિવ્રત્યરક્ષાયૈ મૃદ્દોલકૌ જાનાનાઽપિ સપત્ની-
દ્વેષં વિહાય સાદરમાદૃતૌ । સહર્ષોત્કર્ષ મઠજૂષાયાં સ્થાપનસમયે ભૂષણકરુણ્ડા-
ઘાતેન તૌ મગ્નૌ । તત્રૈકસ્મિન્ કુણ્ડલયુગલમપરસ્મિન્ વસ્ત્રયુગ્મં ચ વીક્ષ્ય પરં
મમુદિતા જાતા ।

અન્યદાઽભયો ભગવન્તં મહાવીરમ્મું પૃષ્ઠવાન્-અપશ્ચિમઃ કો રાજઋષિ-
ર્ભવિષ્યતિ ? । ભગવતા પ્રોક્તમ્-અતઃ પરં વદ્મુકુટો નૃપો ન પ્રવ્રજિષ્યતીતિ શ્રુત્વા
શ્રેણિકભૂપેન તાતેન દીયમાનં રાજ્યં ન સ્વીકૃતવાન્ ।

વસ્તુ આદરસે લેના चाहिए, यह पतिव्रताका धर्म है ' ऐसा विचारकर अपनी सौतके
साथ ईर्ष्याको छोड़कर आदरसे उन गोलोंको लेलिङ् । और अत्यन्त हर्षके साथ उन
मिट्टीके गोलोंको सुरक्षितपनेसे अपनी पेटोमें रखने लगी उस समय भूषणकरडंककी
टकरसे दोनों फूट गए, तब वहां वह देखती है कि एक गोलेमें कुण्डलकी जोड़ी
और दूसरेमें दो दिव्य वस्त्र हैं, ऐसा देखकर रानी बहुत प्रसन्न हुई ।

एक समय अभयकुमारने भगवान महावीर स्वामीसे पूछा कि—हे भगवन् !
अंतिम राजऋषि कौन होगा ?

भगवानने कहा—हे अभयकुमार ! आज पीछे मुकुटवद्ध राजा प्रव्रजित नहीं

આપેલી કોઈ પણ વસ્તુ આદરથી લેવી જોઈએ એ પતિવ્રતાનો ધર્મ છે ' એમ
વિચાર કરી પોતાની સોપાની સાથે ઈર્ષ્યાને છોડી આદરથી તે ગોળા લઈ લીધા
અને અત્યંત હર્ષથી તે માટીના ગોળાને સુરક્ષિત રીતે પોતાની પેટીમાં રાખવા
લાગી. પરંતુ તે રાખતી વખતે આભૂષણના ડાબલાના અથડાવાથી એક કૂટી
ગયા ત્યારે તેના બેવામાં આવે છે કે એક ગોલામાં કુંડલની જોડી છે તથા
બીજામાં બે દિવ્ય વસ્ત્ર છે. આ જોઈને રાણી ખુબ પ્રસન્ન થઈ.

એક સમય અભયકુમારે ભગવાન મહાવીર સ્વામીને પૂછ્યું કે—હે ભગ-
વાન્ ! અંતિમ રાજઋષિ કોણ થશે ?

ભગવાને કહ્યું—હે અભયકુમાર આજ પછી મુકુટધારી રાજા પ્રવ્રજિત થશે

નન્દયા દીક્ષામિલાષિનમમયકુમારં જ્ઞાત્વા કુણ્ડલયુગલં વૈહલ્યાય
દત્તમ્, વસ્ત્રયુગ્મશ્ચ વૈહાયસાય । તદનુ મહતોત્સવેન મહારાજી નન્દાઽમયકુમા-
રશ્ચોભૌ પ્રવ્રજિતૌ ।

શ્રેણિકભૂપસ્ય કાલી-મહાકાલી-પ્રમુખાન્યરાજીનામન્યે કાલકુમારાદયઃ
પુત્રા આસન્ । અમયે પ્રવ્રજિતે વક્ષ્યમાણચરિત્રઃ કૂળિકઃ કદાચિત્ રહસિ

હોગા । यह सुनकर अभयकुमारने मनमें विचार किया कि-अगर पिताद्वारा मिलने
वाले राज्यको स्वीकार करूँ तो मैं भी मुकुटबद्ध राजा बनूँ, परन्तु भगवानका वचन
है कि-मुकुटबद्ध राजा राजऋषि नहीं बनेगा एतदर्थ मैं राज्य नहीं लूँगा । इस लिए
पितासे प्राप्त होते राज्यको उनने स्वीकार नहीं किया ।

અમયકુમારકો દીક્ષામિલાષી જાનકર નન્દા મહારાજીને કુંડલ યુગલ
વૈહલ્ય કુમારકો દિયા ઓર વસ્ત્રયુગલ વૈહાયસ કુમારકો દિયા ઓર ફિર બડે ઉત્સવસે
નન્દા મહારાજી ઓર અમયકુમાર દોનો પ્રવ્રજિત હુએ ।

શ્રેણિક રાજાકે 'કાલી મહાકાલી આદિ અન્ય રાનિયોકે કાલ મહાકાલ આદિ
ઓર મી અનેક પુત્ર થે । અમયકુમારકે દીક્ષા લેને પર કૂળિક રાજા જિનકા ચરિત્ર
આગે વર્ણન કરેંગે ઉન્હોને એક સમય એકાન્તમેં કાલકુમાર આદિ દસ કુમારોકે

નહિ. આ. સાંભળીને અભયકુમારે મનમાં વિચાર કર્યો કે જો પિતા તરફથી મળનાર
રાજ્યનો સ્વીકાર કરું તો હું પણ મુગટબદ્ધ રાજા બનું પરંતુ ભગવાનનું વચન
છે કે મુગટબદ્ધ રાજા રાજઋષિ નહિ બને તે માટે પિતા તરફથી મળનાર રાજ્યનો
સ્વીકાર નહિ કરું, આમ નિશ્ચય કરીને તેણે રાજ્યનો સ્વીકાર ન કર્યો.

અભયકુમારને દીક્ષામિલાષી બાણીને નંદા મહારાણીએ કુંડલનો જોડ
વૈહલ્ય કુમારને આપી અને વસ્ત્રની જોડ વૈહાયસ કુમારને દીધી, તે પછી મોટા
ઉત્સવથી નંદા મહારાણી અને અભયકુમાર એ બન્ને પ્રવ્રજિત થયા.

શ્રેણિક રાજાને કાલી મહાકાલી આદિ બીજી રાણીઓ ના કાલ મહાકાલ
આદિ બીજા અનેક પુત્રો પણ હતા. અભયકુમારે દીક્ષા લીધા પછી કૂળિક રાજા
કે જેનું ચરિત્ર આગળ વર્ણવવામાં આવશે તેણે એક વખત એકાન્તમાં કાલ કુમાર

सुन्दर्योधिनी टीका कृणिकवर्णन

४४.

कालादिदशकुमारैः सह मन्त्रयति स्म—स्वेष्टसुखविधातकं जनकं बद्ध्वा राज्य-
स्यैकादश भागान् करोमीति सर्वैः स्वीकृतम् ।

छलेन कृणिकेन स्वपूर्वभववैरित्वेन श्रेणिको बद्धो लौहपञ्जरे निक्षिप्तश्च ।
पूर्वाङ्गेऽपराङ्गे च कशाशतं भृत्यादिना दाप्यते । भूपस्य भोजनादिकं निरुद्धम् ।
तदा चेष्टना च प्रच्छन्नरीत्या चूडायां स्वाद्यं वस्तु बद्ध्वा स्वपरिधानवस्त्रमार्द्राकृत्य
भूपसमीपे गच्छति । चूडास्थभोज्यं वस्त्रनिष्पीडनजलं च भूपाय समर्पयति ।

साथ इस प्रकार मंत्रणा (सलाह) की—अपने पिता महाराज श्रेणिक अपने इष्ट
सुखके विधातक हैं इस लिए इनको बन्धनमें डालकर राज्यका ग्यारह भाग करके सुख-
पूर्वक राज्यसुखका अनुभव करें । यह बात सब भाइयोंको पसन्द आई और
उन्होंने स्वीकार कर ली ।

अपने पूर्वभवे के वैसे कृणिकराजाने अपने पिता श्रेणिकको किसी छत्से
पकड़कर लोहेके पींजरेमें डालकर सुबह शाम अपने भृत्योंके द्वारा सौ—सौ चाबुककी
मार महाराज श्रेणिकको दिलवाता था और स्नान—पान भी रोक दिया था, जब मनमें
आता तब खानेको देता था । इस प्रकार राजाको भूख और प्यासकी यातनासे
पीड़ित देखकर चेष्टना महारानी अत्यंत दुःखित हुई और वह खानेकी वस्तु अपनी
वेणीमें गुप्त रीतिसे बांध लेती और पानीसे भीगे वस्त्र पहनकर राजाकी पास जाती
थी. स्वाद्य वस्तु अपनी वेणीसे निकालकर राजाको खिलाती और अपने कपड़े निचोड़

आदि दश कुमारानी साथे आ प्रभाणु मंत्रणा करी के—आपणा पिता महाराज श्रेणिक
आपणा छष्ट सुभनो नाश करनार छे तेथी तेने बन्धनमां नाभी राज्यना अग्नि-
यार भाग करी सुभ पूर्वक राज्य सुभनो अनुभव करवो. आ बात गधा लाधयोने
पसंद पडी अने तेओओ तेनो स्वीकार कर्यो.

पोताना पूर्व लवना वेरथी कृणिक राजाओ पोताना पिता श्रेणिकने कोष्ठ
कपटथी पकडी लोढाना पांजरामां नाभ्यो अने सवार सांज पोताना नोकरो द्वारा
सो सो आभुकनो मार महाराज श्रेणिकने देवरावतो હતો तथा ખાવા પીવાનું
પણ અટકાવ્યું હતું. પોતાના મનમાં આવે ત્યારે ખાવાને આપતો હતો. આ
પ્રકારે રાજાને ભૂખ અને તરસની પીડાથી દુઃખી બોધને ચેલના મહારાણી બહુ
દુઃખી થઈ અને તે ખાવાની વસ્તુ પોતાના અંગોડામાં છાની રીતે બાંધી તથા
ખાણીથી ભીંજવેલાં વસ્ત્ર પહેરી રાજાની પાસે જતી. ખાવાની વસ્તુ પોતાના

કશાઘાતપ્રબલવેદનાંશમનાય મેષજમિશ્રિતવસ્ત્રજલેન ગાત્રં પ્રક્ષાલયતિ, તત્પ્રભાવેન
ભૂપો વેદનાં ન વેદયતિ ।

અર્થઃ, ચેલ્લનાટ્ટતાન્તં વર્ણ્યતે—ચેલ્લના ત્રિકાલં ધર્મક્રિયાં સમારાધયતિ
મનસિ વિચારયતિ ચ—‘અહો ! કર્મણાં વિચિત્રા ગતિરીદશશક્તિશાલિનોઽપિ
ભૂપસ્યૈતાદૃશી દશા જાતા ? , કેન કર્મણા—પ્રતાદૃગવસ્થા જાતેતિ સર્વજ્ઞો જાનાતિ,
સર્વજ્ઞમન્તરેણ કો નામ કર્મગતિં જ્ઞાતું શક્નોતિ । હે આત્મન્ ! યદિ ધર્મો
નારાધ્યતે તદા તવાપિ તાદૃશી દુર્દશા ભવિષ્યતિ ’ ।

કર उसका पानी पीलती और चाबुककी प्रबल चोटसे उत्पन्न हुई वेदनाको शान्त
करनेके लिए औषधसे मिले हुए वस्त्रजलसे राजाके शरीरको धोती थी, जिससे वेदना
कुछ कम पड़जाती थी ।

અવ ચેલ્લનાકે વિષયમેં કહેતે હૈં—ચેલ્લના મહારાની ધર્માત્મા ઓર ધર્મપરાયણા
થી । ત્રિકાલ (પ્રાતઃકાલ, મધ્યાહ્ન ઓર સાયંકાલ) ધર્મધ્યાન કરતી થી ઓર અપને
પતિ મહારાજ શ્રેણિકકે વિષયમેં બોલતી થી કિ—અહો ! કર્મોંકી કૈસી વિચિત્ર ગતિ હૈ,
કિ જિસસે એસે શક્તિશાલી મહાપ્રભાવવાલે ભૂપકી મી યહ ‘દુર્દશા’ હોં રહી હૈ, કિસ
કર્મસે ઇનકી એસી દશા હુઈ હૈ ઇસે તો સર્વજ્ઞકે સિવાય કોઈ નહીં જાન સકતા
હૈ । હે આત્મન્ ! અગર તૂ ધર્મકા આરાધન નહીં કરેગા તો તેરો મી એસી હી દુર્દશા
હોનેવાલી હૈ ।

અંગ્રોહાથી કાઠી રાબને ખવરાવતી તથા પોતાનાં કપડાં નિચોવીને તનુ પાણી
પીવરાવતી તથા ચાબુકના સખત ઘાથી ઉત્પન્ન થતી વેદનાને શાંત કરવા માટે
ઔષધ લગાડેલાં વસ્ત્રનાં પાણીથી રાબનાં શરીરને ધોતી હતી જેથી વેદના કંઈક
ઓછી પડી જતી હતી.

હવે ચેલ્લનાનું વૃતાંત કહે છે—ચેલ્લના મહારાણી ધર્માત્મા તથા ધર્મપ-
રાયણા હતી. ત્રિકાલ ધર્મ ધ્યાન કરતી હતી તથા પોતાના પતિ મહારાજ શ્રેણિકની
આજ્ઞાનુસાર કહેતી હતી કે—અહો ! કર્મોની કેવી વિચિત્ર ગતિ છે જેથી આવા શક્તિશાળી
મહાપ્રભાવવાળા રાબની પણ આવી દુર્દશા થઈ રહી છે. કયા કર્મથી તેમની
આવી દશા થઈ છે તે તો સર્વજ્ઞ સિવાય કોઈ બાણી શકતું નથી.

હે આત્મન્ ! અગર જો તું ધર્મનું આરાધન નહિ કરે તો તારી પણ
આવીજ દુર્દશા થવાની છે.

सुन्दरबोधिनी टोका चेष्टनावर्णन

६३

इत्यादि स्वमनसि विचार्य चेष्टना निरन्तरं प्रवर्धमानपरिणामेन धर्म-
क्रियां करोति । नमस्कारपौरुषीप्रभृतिदशविधप्रत्याख्यानसमाचरणं श्रावक-
व्रतपरिपालनं, मार्थमाणजीवरक्षणं, स्वधर्मपरिपोषणं, दीनाऽनाथाऽन्धपङ्गवादि-
करुणाकरणं साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकारूपचतुर्विधतीर्थसेवाकरणम-
शरणशरण्यतां सकलजीवहितमुखपथ्यकारितां च दधाना, एवं विचित्रधर्मक्रियां
कुर्वाणा विहरति, त्रिकालसामायिकं च कुरुते । तथाहि—

इत्यादि कर्मकी गहन गतिको और अपने पतिको दुर्दशाको विचारती हुई
निरन्तर प्रवर्धमान परिणामसे धर्मक्रिया करती थी । नमस्कार (नवकारसी) पौरुषी
आदि दस प्रकारके प्रत्याख्यान (पचखाण) नित्यप्रति करती थी । श्रावकके व्रतोंका
पालन करती थी, मोरेजाते हुए जीवोंको बचाती थी, साधर्मियोंका पोषण करती थी, और
दीन, अनाथ, पङ्गुजनोंके ऊपर परम करुणा करके अन्न, वस्त्र, औषधि आदिके द्वारा
उनके दुःखोंका निवारण करती थी । साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चार तीर्थ
की सेवा करती थी । निराधारकी आधार थी, कहाँ तक कहें महारानी चेष्टना सब
प्रकारसे सब जीवोंके लिए हितकारी, पथ्यकारी, और सुखकारी थी, और अनेक
प्रकारसे धर्मक्रिया करती हुई शीलव्रत आदि आराधन करती हुई तीनों काल सामायिक
करती थी । कहा हैः—

आ प्रभाणु कर्मनी गहन गतिने अने पोताना पतिनी दुर्दशाने, विचार
करती थकी हमेशां प्रवर्धमान परिणामथी धर्मक्रिया करती હતી. नमस्कार
(नवकारसी) पौरुषी आदि दश प्रकारना प्रत्याख्यान (पचखाण) नित्य प्रति
करती હતી. श्रावकनां व्रतानुं पालन करती હતી. मार्था जाता लोवने गयावती હતી.
साधर्मियोंनुं पोषण करती હતી तथा दीन, अनाथ, दुःखापांगणां माणुसेना ઉપર
પરમ કરુણા કરીને અન્ન વસ્ત્ર ઔષધ વગેરેથી તેમનાં દુઃખોનું નિવારણ કરતો
હતી. સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચાર તીર્થની સેવા કરતી હતી. નિરાધારની
આધાર હતી, ક્યાં સુધી કહીએ ! મહારાણી ચેષ્ટના સર્વ પ્રકારે ગયા લોવને
માટે હિતકારી, પથ્યકારી અને સુખકારી હતી. તથા અनेક પ્રકારે ધર્મક્રિયા કરતી
થકી શીલવ્રત આદિ આરાધન કરતી થકી ત્રણે કાળ સામાયિક કરતી હતી. કહું
છે કે:—

“सा चेष्टणा भूमिथलं पमज्ज, वत्थाइ सव्वं पडिलेक्ख भावा ।

बद्धा सदोरं मुहवत्तिमासे, सामाइयं तं कुणए तिकालं ॥ १ ॥”

छाया—“सा चेष्टणा भूमिस्थलं प्रमार्ज्य, वस्त्रादि सर्वं प्रतिलेख्य भावात् ।

बद्ध्वा सदोरां मुखवस्त्रमास्ये, सामायिकं तत् कुरुते त्रिकालम् ॥ १ ॥”

अन्यदा कूणिकः सर्वालङ्कारविभूषितः स्वमातुश्चेष्टनादेव्याश्चरणौ वन्दितुं समागतस्तत्र तामार्तध्यानयुक्तां दृष्ट्वा वन्दमानः कूणिकराजः स्वजननीं पृच्छति—हे मातः ! यद्दं खलु स्वयमेव महाराज्याभिषेकेण विशालराज्य-

“सा चेष्टणा भूमिथलं पमज्ज, वत्थाइ सव्वं पडिलेक्ख भावा ।

बद्धा सदोरं मुहवत्तिमासे, सामाइयं तं कुणए तिकालं” ॥ १ ॥

वह चेष्टना महारानी विधिपूर्वक पहले प्रमार्जिका (पूँजनी) से भूमिको पूँज लेती थी, बाद वस्त्रोंकी प्रतिलेखना (पडिलेहणा) करके, मुँहपर सदोरक मुखवस्त्रिका बांधकर तीनों कालमें सामायिक करती थी ।

एक समय कूणिक महाराज सब अलङ्कार पहिने हुए अपनी माता चेष्टना महारानीके पास चरण-वन्दनके लिए आये । अपने पतिके दुःखसे दुःखित आर्त-ध्यानयुक्त अपनी माताको देखकर कहने लगे—हे जननी ! मैं स्वयं बड़े राज्यके अभिषेकसे अभिषिक्त होकर विशाल राज्यश्रीका अनुभव कर रहा हूँ, इससे तुम्हारे

“सा चेष्टणा भूमिथलं पमज्ज, वत्थाइ सव्वं पडिलेक्ख भावा ।

बद्धा सदोरं मुहवत्तिमासे सामाइयं तं कुणए तिकालं ॥ १ ॥”

ते चेष्टना महाराणी विधिपूर्वक पडेक्षां शुच्यथा भूमिने पुंछ पछी वस्त्रोनी प्रतिलेखना (पडिलेहणा) करी भों उपर दोरा सहित मुखवस्त्रिका बांधीने त्रैलोक्य काल (सवार अपोर सांज) सामायिक करती हती.

एक समय कूणिक महाराज जथा अलङ्कार पहिरीने पोतानी माता चेष्टना महाराणीनी पासो अरखु-वन्दन भाटे आव्या. पोताना पतिनां दुःखथी दुःखित आर्तध्यान करती पोतानी माताने बोधने कहेवा जाग्या.—हे जननी ! हुं पोते पोटा राज्यना अभिषेकथी अभिषेक कशयेवा डोछ विशाल राज्यश्रीने अनुभव

સુન્દરબોધિની ટીકા કૂણિકવર્ણન

૬૫

શ્રિયમનુભવામિ તેન કિં તવ મનસિ સન્તોષ ઉલ્લાસઃ પ્રમોદો ન વર્ત્તતે ? તુમ્યં મમ ભાગ્યોદયો ન રોચતે કિમ્ ? । તતશ્ચેલ્લના દેવી કૂણિકરાજમેવમવાદીત-હે પુત્ર ! યત્ત્વં દેવગુરુસદૃશ પરમસ્નેહાનુરાગરક્તં નિજતાતં નિગડબન્ધને વિધાય સ્વયં રાજ્યશ્રિયમનુભવસિ તત્કથં તાદૃશેન દુષ્કૃતેન મમ મનસિ તુષ્ટિ-ર્હર્ષાવકાશશ્ચ । તતઃ કૂણિકઃ પૃચ્છતિ-હે માતઃ ! કથં મયિ તાતઃ સ્નેહાનુરાગ-રક્તઃ ? , તદા સા જગાદ-હે પુત્ર ! યશ્ચોપકુરુતે તમેવ ત્વં દ્વેષિ, પશ્ય-જન્મા-નન્તરં મદાજ્ઞમયા દાસ્યા વને ત્વં વિસૃષ્ટસ્તદાનીં તવેયમર્ગુલિઃ કુકુટેન તુળ્હેન

મનમેં કયા સંતોષ, ઉલ્લાસ, પ્રમોદ નહીં હૈં ? કયા મેરા ભાગ્યોદય તુझे इष्ट मालूम नहीं देता ? । पुत्रके ऐसे वचन सुनकर महारानी चैलना देवी बोली-पुत्र ! तू देव और गुरुके समान परम स्नेहवाले अपने पिताको बन्धनमें डालकर स्वयं राज्यश्रीका अनुभव करता है ऐसे दुष्कृत्यसे किस तरह मेरा मन सन्तुष्ट और प्रसुद्धित हो सकता है ? ।

તવ કૂણિક મહારાજ બોલે-હે જનની ! મેરે પિતાકા મુઝપર કિસ તરહકા અનુરાગ હૈ ? ।

માતા બોલી-વત્સ ! જો તેરે ઉપકારી હૈં, તૂ ઉન્હીકા દ્વેષ કરતા હૈ, દેશ-તેરે જન્મ હોનેકે બાદ તુઝે મેરી આજ્ઞાસે દાસીને અશોક-વાટિકામેં છોડ દિયા થા, ઉસ સમય તેરી યહ અંગુલી કુકુટ-(મુર્ગે) ને અપની તીક્ષ્ણ ચોંચસે

કરી રહ્યો છું તેથી તમારા મનમાં શું સંતોષ, ઉલ્લાસ આનંદ નથી થતો ? શું માઝે લાગ્યોદય તમને નથી ગમતું ? -પુત્રનાં આવાં વચન સાંભળી મહારાણી ચેલના દેવી બોલી-પુત્ર ! તું દેવ તથા ગુરુ સમાન પરમ સ્નેહવાળા પોતાના પિતાને બંધનમાં નાખી પોતે રાજ્યશ્રીનો અનુભવ કરી રહ્યો છે. એવાં દુષ્કૃત્યથી કેવી રીતે માઝે મન સંતુષ્ટ તથા આનંદિત રહી શકે ?

ત્યારે કૂણિક મહારાજ બોલ્યા-હે જનની ! મારા પિતાનો મારા ઉપર કેવી બાતનો અનુરાગ છે ?

માતા કહે-વત્સ ! જે તારો ઉપકારી છે તેનોજ તું દ્વેષ કરે છે. જો-તારો જન્મ થયા પછી મારી આજ્ઞાથી દાસીએ તને અશોકવાટિકામાં મૂકી દીધો હતો તે વખતે તારી આ આંગળી કુકડાએ પોતાની તીખી ચાંચથી ખંડિત કરી દીધી

खण्डिता, अकस्मात्त्वामुपगतस्त्वदीयतातो गृहमानैषीत् । अङ्गुलित्रणव्यथा-
व्याकुलस्त्वमुच्चैश्चैत्कुर्वाणो मनागपि शान्तिं नावलम्बमान आसीः, करुणया
त्वत्पिता बहुविधोपचारेणाङ्गुलिवेदनामपहृत्य त्वां शान्तिमुपनीतवान्, एवं
प्रकृत्या परमोपकारिणि पितरि कथमथान्यथाभावमाविष्कुर्वन् न लज्जसे ?
इति चेल्लनावचनं निशम्य दीर्घं निःश्वस्य सपदि पीठादुत्थाय गृहीतपरशुः

खंडित करदी-थी और तू अनाथ (निराश्रित) होकर पड़ा-पड़ा चिल्ला रहा था ।
अकस्मात् तेरे पिता वहाँ आ पहुँचे और तुझे उठा लाये । तेरी अंगुलीका घाव
बढ़ गया था और तू बड़े जोर-जोरसे रुदन करता था । जब तेरी अंगुलीमें पीप
भरजाता था तब तुझे अत्यधिक पीडा होती और तनिक भी आराम नहीं मिलता था
तब तेरे पिता तेरी तड़फन और वेदनाको देख दुःखित हृदय हो करुणासे औषधि-उपचार
करते थे और परम स्नेहसे तेरी अंगुलीको मुँहमें ले पीपको चूसकर थूक देते थे और
तुझे सब तरहसे आराम पहुँचाते थे । इस तरह स्वभावसे परमोपकारी हितैषी पिताके
प्रति तू अब कृतघ्न भावको धारण कर दुष्ट व्यवहार करता हुआ क्यों नहीं
शरमाता है ।

इस प्रकार माताके मार्मिक और स्नेहभरे शब्दोंको सुनकर कूणिकने एक
लम्बी साँस ली और उसी समय आसनसे उठ पिताके बन्धन काटनेके लिये हाथमें

हुती अने तुं अनाथ (निराश्रित) थछ पड्यो-पड्यो देतो हुतो. अचानक तारा
पिता त्यां आवी पड्योच्या अने तने उपाडी लाव्या. तारी आंगणी उपरनेा धा
वधी गयो हुतो अने तुं णहु जेरथी रुदन करतो हुतो. न्यारे तारी आंगणीमां
पीप (पइ) बराध जतुं हुतुं त्यारे तने घण्णी पीडा थती हुती, अने तने जरा
पणु आराम भगतो नडोतो. त्यारे तारा पिता तारे तड्डडाट अने वेदनाने जेधने
हुःपित हृदय थछ द्याथी औषध उपचार करता हुता अने परम स्नेहथी तारी आंग-
णीने मोढाभां लछ पड्ने चुसीने थुंकी देता हुता तथा तने सर्व रीते आराम
पड्योच्याहुता हुता. आवी रीते स्वभावथीज परम उपकारी हितेच्छु पिताना तरक्
तुं हुवे कृतघ्न भावने धारणु करी हुष्ट व्यवहार करतां केम शरमातो नथी ?

आ प्रकारे माताना मार्मिक स्नेह बर्या शब्दो सांभणी कूणिके ओके लांभो
निःशासो नाज्यो तथा तेज वजते आसन उपरथी छडीने पितानुं बंधन कापी

सुन्दरबोधिनी टीका कूणिकबन्धन

६७

श्रेणिकबन्धनपञ्जरान्तिकं तदीयबन्धनं सकरुणं छेतुमुपक्रामति । श्रेणिकश्च परशुपाणिं कृतान्तमिवायान्तं कूणिकं विलोक्य जातवेपथुः कदुपचारेण परशुप्रहारेण मम प्राणानद्य हरिष्यतीति शङ्कमानो यावदसौ तदन्तिकमुपैति तावद् मुद्रिकानिहिततालपुटविषमबलिह्य प्राणानत्यजत् । ततः कूणिको मृत-कृत्यं विधाय निजदुराचारं चिन्तयन्नात्मनि परं ग्लायन् गृहमागतः, राज्य-

कुल्हाडी ली और जिस पोंजरेमें श्रेणिक थे उस तरफ जाने लगा, जब श्रेणिकने कूणिकको कुठार हाथमें लेकर आते हुए देखा तब भयसे धूजते हुए श्रेणिकको शंका हुई कि यह कुठार लिये हुए यमके समान मेरे पास आ रहा है मुझे न जाने किसकुमौतसे मारेगा?, ऐसा विचार कर जब तक वह समीप आता है उतने ही समयमें उन्होंने अपनी मुद्रिकामें लगा हुआ तालपुट विषको चूसकर अपने प्राणोंको छोड़ दिया ।

बाद यह देखकर कूणिक बहुत दुःखित हुआ और पिताका दाह संस्कार आदि मृतककार्य करके अपने दुराचारोंकी मनही मन निन्दा करता हुआ विषादयुक्त हो अपने घर आया । राज्यभारको वहन करते हुए उसे कुछ दिनोंके बाद पिताका

नाभवा हाथमां कुहाडो लीघो अने ने पींजराभां श्रेणिक छता ते तरङ्ग नवा मांडयुं. न्यारे श्रेणिके इण्डिकने यमराज समान कुहाडी हाथमां लधने आवतो. जेयो त्यारे लयथी धुनता श्रेणिकना मनमां शंका थध डे-रपे आ कुहाडी लधने यमना जेयो भारी पासे आवी रह्यो छे अने भने न जाणु केवा कुमौतथी भारशे. जेम विचारी न्यां सुधी ते पासे आवी पडोये तेटलाज वणतमां तेमणु पोतानी वींटीमां लगाडेल तालपुट विषने चुस्तीने पोताना प्राणुनो त्याग कर्यो.

आद आ जेध इण्डिक णहु दुःखित थयो तथा पिताना देहने अग्नि-संस्कार आदि मृतक कर्म करीने पोताना दुःशायरीनी मनमां ने मनमां निन्दा करतो थको. जेदयुक्त थतो पोताने घेर आव्यो. राज्यना भारने वहन करतां थोडा

મારં વહન કિયતા કાલેન વિશોકો જાતઃ । પરશ્ચ યદા યદા પિતુઃ શયના-
સનાદીનિ વસ્તૂનિ વિલોકયતિ તદા તદા તસ્ય પરમચ્છેદો જાયતે, તેન રાજ-
ગૃહાન્નિર્ગત્ય ચમ્પાયાં રાજધાનીં ચકાર । તત્ર નિજભ્રાતૃગણસહિતઃ કૂળિકો
રાજ્યં બુભોજ ॥૩૬૮૥ કૂળિકવિવરણમ્ ॥

કૂળિકસ્ય યુદ્ધે સાહાય્યવિધાયકાનાં કાલાદિદશકુમારાણાં રથમુશલ-
નામકસંગ્રામે પ્રચુરજનવિનાશકરણેન નરકપ્રાયોગ્યકર્મસમ્પાદનહેતોર્નિરયગા-
શોક વિસ્મૃત હોને લગા કિન્તુ જબ-જબ પિતાકે શયન, આસન આદિ વસ્તુઓકો
દેખતા તબ-તબ કૂળિક રાજાકે મનમેં બડા દુઃખ ઉત્પન્ન હોતા, હસ કારણ રાજગૃહ
નગરકો છોડકર રાજાને અપની રાજધાની ચમ્પાનગરીમેં કી ઓર વહાં અપને માહ્યો
વ કુટુંબિયોકે સહિત રહકર રાજ્ય કરને લગે ।

હસપ્રકાર મહારાજ કૂળિકકા વર્ણન યહાં પર સમાપ્ત હોતા હૈ ।

રથમુશલ સંગ્રામકા સંક્ષિપ્ત વર્ણન હસ પ્રકાર હૈ:—

કૂળિક રાજાકે યુદ્ધમેં સહાયતા કરનેવાલે કાલકુમાર આદિ દસ કુમારોને
રથમુશલ સંગ્રામમેં બહુત જનોંકે વિનાશ કરનેકે કારણ નરકપ્રાપ્તિરૂપ કર્મોંકા

દિવસો પછી પિતાનો શોક ભૂલાવા લાગ્યો પણ ન્યારે-ન્યારે પિતાનું બિછાનું
આસન વગેરે વસ્તુઓને બેતો ત્યારે-ત્યારે કૂળિક રાજાના મનમાં બહુ દુઃખ થતું
હતું, આ કારણથી રાજગૃહ નગરને છોડીને રાજાએ પોતાની રાજધાની ચંપાન-
ગરીમાં કરી અને ત્યાં પોતાના ભાઈઓ તથા કુટુંબિયો સાથે રહીને રાજ્ય
કરવા લાગ્યો.

આ પ્રમાણે મહારાજ કૂળિકનું વર્ણન અહીં સમાપ્ત થાય છે.

રથમુશલ સંગ્રામનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન આ પ્રકારે છે:—

કૂળિક રાજાને યુદ્ધમાં સહાયતા કરવાવાળા કાલકુમાર આદિ દસ કુમારોને
રથમુશલ સંગ્રામમાં ઘણા માણસોનો વિનાશ કરવાના કારણથી નરકપ્રાપ્તિરૂપ

સુન્દરબોધિની ટોકા રથમુશલક્રીડામ કારણ

મિત્વેન કાલાદિદશકુમારવિવરણગ્રથિતસ્ય પ્રથમાધ્યયનસ્ય ‘નિરયાયુઃ’
ઇતિ નામ ।

અથ રથમુશલભિધાનસક્રીડામાવિર્ભાવે કારણમુચ્યતે, તથાહિ-ચમ્પાયાં
નગર્યાં કૂણિકો રાજા રાજ્યશાસનં કરોતિ । તદીયાવનુજૌ વૈહલ્ય-વૈહાયસૌ
પિતૃદત્તસેચનકહસ્તિનમારૂઢૌ દિવ્યકુણ્ડલવસનહારારાલકૃતૌ વિલસન્તૌ કૂણિક-
રાજમહિષી પદ્માવતી નિરીક્ષ્ય સેચનકગજમપહર્તુ કૂણિકં પ્રેરયત્ । કૂણિકેન
નૈકથા વિજ્ઞાપ્યમાનાઽપિ હસ્તિહરણનિષક્તમાનસા તતો ન નિવૃત્તા ।

ઉપાર્જન ક્રિયા ઓર નરકગામો બને; ઉન્હીં દસ કુમારોંકા વર્ણન ઇસ પ્રથમ અધ્યયનમે-
હે, ઇસ કારણ ઇસકા ‘નિરયાયુ’ નામ હૈ ।

અવ રથમુશલ સંગ્રામકી ઉત્પત્તિકા કારણ કહતે હૈં-

ચમ્પાનગરીમેં કોણિક રાજા રાજ્ય કરતે થે । ઁનકે વૈહલ્ય ઓર વૈહાયસ,
યે દો છોટે ભાઈ થે । વે પિતાકે દિયે હુએ સેચનક હાથીપર ચઢકર દિવ્ય કુણ્ડલ
વસ્ત્ર ઓર હારકો પહેનકર વિલાસ કરતે થે । ઉન્હેં દેશકર પદ્માવતી રાનીને સેચનક
હાથીકો અપને અધીન કરનેકે લિયે કૂણિકકો પ્રેરિત ક્રિયા । ભ્રાતૃપ્રેમકે કારણ
કૂણિકકે બહુત સમભાને પર ભી રાનીકા મન હાથીસે નહીં હટા ।

કર્મોનુ ઉપાર્જન કર્યુ તથા નરકગામી બન્યા તેજ દશ કુમારોનુ વર્ણન આ
પ્રથમ અધ્યયનમાં છે. આ કારણથી આનું ‘નિરયાયુ’ નામ છે.

હવે રથમુશલ સંગ્રામની ઉત્પત્તિનું કારણ કહે છે:-

ચંપાનગરીમાં કૂણિક રાજા રાજ કરતા હતા. તેમને વૈહલ્ય તથા વૈહાયસ
એ બે નાનાભાઈ હતા. તેઓ પિતાએ આપેલા સેચનક હાથી ઉપર બેસીને દિવ્ય
-કુંડલ, વસ્ત્રો તથા હાર પહેરીને વિલાસ કરતા હતા. તેમને બેઘને પદ્માવતી
રાણીએ સેચનક હાથીને પોતાના કબજામાં લેવા માટે કૂણિકને પ્રેરણા કરી. ભ્રાતૃ-
પ્રેમને લીધે કૂણિકે બહુ સમજાવી છતાં પણ રાણીનું મન હાથીથી હઠાયું નહિ.

૭૫

નિરયાવલિકાસુત્ર

તતઃ પદ્માવતીપ્રેરિતઃ કૂળિકો હસ્તિનં તૌ યાચતે । હસ્તિયાચને કૃતે વૈહલ્યવૈ-
હાયસૌ સપરિવારૌ સાન્તઃપુરૌ કૂળિકમયાદ્ વિશાલ્યાં નગર્યાં ચેટકનામથેયં
સ્વમાતામહં રાજાનં પ્રપન્નો ।

કૂળિકેન દૂતપ્રેષણેન સ્વકીયાનુજૌ ચેટકો યાચિતઃ, પરશ્ચ ચેટકેન
તૌ ન પ્રેષિતૌ, કિન્તુ દૂતદ્વારા કૂળિકનિકટે સંવાદઃ પ્રહિતઃ—રાજ્યભાગ-
માભ્યાં યદિ દાસ્યસિ તદાઽમૂ હારહસ્તિનૌ ચ પ્રેષયિષ્યામીતિ । તતઃ કૂળિકઃ
કોપારુણનયનયુગલો વાર્તા પ્રેષયામાસ—યદિ તૌ વૈહલ્ય—વૈહાયસૌ ન પ્રેષયસિ
તદા યુદ્ધાય સંનદ્ધો ભવ । ચેટકેનોક્તમ્—અહમપિ સંનદ્ધોઽસ્મિ ।

અન્તર્મે પદ્માવતીકી બાત માનકર કૂળિક દોનોં માઈયોસે હાથીકી યાચના કી ।
હાથીકી યાચના કરનેપર દોનોં માઈ મયમીત હો અપને પરિવાર સહિત વિશાલ નગરીમેં
અપને નાના ચેટક મહારાજકે પાસ ચલે ગયે ।

કૂળિકને દૂતદ્વારા રાજા ચેટકસે હાર ઓર હાથી સહિત માઈયોકો માંગા ।
ત્વ ચેટકને દૂતદ્વારા કૂળિકકો યહ સમાચાર મેજા—યદિ તુમ રાજ્યકા ભાગ ઇન
દોનોંકો દેતે હો તો ઇનકો તથા હાર એવં હાથીકો મેજ સકતે હૈં । યહ સુનકર
મહારાજ કૂળિકકી ઑંસેં લાલ હો ગયોં ઓર ઉન્હોને સન્દેશ મેજા—યદિ હાર હાથીકે
સાથ વૈહલ્ય ઓર વૈહાયસકો નહીં મેજતે હો તો યુદ્ધકે લિષે તૈયાર હો જાઓ ।
ચેટકને કહા—હમ મી તૈયાર હૈં ।

આખરે પદ્માવતીની વાત માનીને કોણિકે બન્ને ભાઈઓ પાસેથી હાથો માંગ્યો.
હાથી માગવાથી બન્ને ભાઈને ખીક લાગી અને પોતાના પરિવાર સાથે વિશાલા-
નગરીમાં પોતાના નાના ચેટક મહારાજની પાસે આલ્યા ગયા.

કૃષ્ણિકે દૂત દ્વારા રાજા ચેટક પાસે હાર તથા હાથી સહિત ભાઈઓ
માંગ્યા ત્યારે ચેટકે દૂત દ્વારા કૃષ્ણિકને આ સમાચાર મોકલ્યા “ જો તમે રાજ્યનો
ભાગ આ બન્નેને દેતા હો તો તેઓને તથા હાર તેમજ હાથીને મોકલી શકું. ”
આ સાંભળી મહારાજ કૃષ્ણિકની આંખો લાલ થઈ ગઈ તથા તેમણે અંદેશ મોકલ્યો—
જો હાર હાથીની સાથે વૈહલ્ય અને વૈહાયસને નથી મોકલતા તો યુદ્ધને માટે
તૈયાર થઈ જાઓ. ચેટકે કહ્યું—અમે પણ તૈયાર છીએ.

सुन्दरबोधिनी टीका रथमुशलसङ्ग्राम

७१

ततो युद्धनिश्चयानन्तरं कृष्णिकेन सह कालप्रभृतयो दश वैमात्रेया अनुजा राजानश्चेटकनृपेण सङ्ग्रामायसमुपगताः । तत्रैकैकस्य त्रीणि त्रीणि गजानामश्वानां रथानां च सहस्राणि, मनुष्याणां च तिस्रः कोटय आसन्, कृष्णिकस्यापि तावदेव बलम् ।

चेटकभूपोऽपि एतादृशं सङ्ग्रामप्रसङ्गा विज्ञायाष्टादशगणराजैः सह सम्मेलनं कृतवान् । कालादीनां प्रत्येकं यावद् गजादिवलपरिमाणं तावदेव चेटकस्यापि । ततो युद्धं प्रवृत्तम् । चेटकराजस्तु युद्धकाले व्रतपरायण

इस प्रकार युद्धका निश्चय होजानेके बाद कोणिकके साथ कालकुमार आदि दसों सौतेले छोटे भाई चेटक राजासे लड़नेके लिए आये । उन दसोंमें प्रत्येकके साथ तीन-तीन हजार हाथी घोड़े और रथ थे तथा तीन-तीन करोड़ सैनिक थे । कृष्णिक के साथ भी इतनी ही सेना थी ।

चेटक (चेडा) महाराज भी इस प्रकार संग्रामका प्रसङ्ग समझकर अठारह देशके गणराजाओंका संगठन किया । कालादि कुमारोंके प्रत्येकके पास जितनी सेनायें थीं, उतनी ही चेटक आदि प्रत्येक राजाके पास थी । अनन्तर दोनोंका युद्ध हुआ । चेटक (चेडा) महाराज तो युद्धकालमें व्रतधारी थे, इसलिए युद्धमें एक

आ प्रमाणे युद्धनो निश्चय थया पछी कृष्णिकनी साथे कालकुमार आदि दशथे ओरमान नानाबाध चेटक राजा साथे लडवा भाटे आवा. ओ दशेयभां दरेकनी साथे त्रणु त्रणु हजार हाथी घोडा तथा रथ हुता अने त्रणु त्रणु करोड सैनिक हुता. कृष्णिक राजानी पासे पणु ओवडीज सेना हुती.

चेटक (चेडा) महाराज पणु आ प्रकारनो लडाधनो प्रसंग समझने अठार देशना गणराजाओनु संगठन कथुं. काल आदि कुमारानी दरेकनी पासे नेटवी सेनाओ हुती तेदवीज चेटक आदि प्रत्येक राजानी पासे हुती. तयार पछी पसेनु युद्ध थयुं. चेटक (चेडा) महाराज तो युद्धकालभां व्रतधारी हुता. अथी युद्धभां

४२

निरयावलिकाघ्न

आसीत्, अतो रणे एकस्मिन् दिने एकमेवामोघं बाणं मुञ्चति । तत्र युद्धक्षेत्रे कूणिकसैन्यदले गरुडव्यूहः, चेटकसैन्ये च सागरव्यूहो निर्मित आसीत् । ततश्च प्रथमेऽहि कूणिकराजस्य कालकुमारोऽनुजो निजसैन्ययुतः सेनापतिः स्वयं युध्यमानश्चेटकेन निक्षिप्तेनामोघेनैकेन शरेण निहतः । कूणिकसैन्यं च भग्नम् । ततो द्वयोरपि राज्ञोर्बलं निजं निजं स्थानं प्राप्तम् ।

द्वितीयेऽहि सुकालो निजसैन्यसमन्वितो रणप्रपगतो युध्यमानश्चेटकेनैकेन शरेण निपातितः । एवं तृतीयेऽहि महाकालः, चतुर्थे दिने कृष्णकुमारः, पञ्चमे दिवसे सुकृष्णकुमारः, षष्ठे महाकृष्णः, सप्तमे वीरकृष्णः,

दिनमें एकही अमोघ बाण छोड़ते थे । वहाँ कूणिकके सैन्यमें गरुडव्यूह था और चेटक (चेडा) के सैन्यमें सागरव्यूह । उसके बाद पहिले दिनमें कूणिक राजाके छोटे भाई कालकुमार अपनी सेना सहित सेनापति बनकर स्वयं चेटक—(चेडा) महाराजके साथ लड़ता हुआ उनके अमोघ बाणसे मारा गया । और कूणिककी सेना नष्ट होमायी ।

दूसरे दिन सेनासहित सुकालकुमार युद्धमें चेटकके बाणसे मारे गये । इसी तरह तीसरे दिन महाकाल कुमार, चौथे दिन कृष्ण कुमार, पाँचवें दिन सुकृष्ण-कुमार, छठे दिन महाकृष्ण कुमार, सातवें दिन वीरकृष्ण कुमार,

एक दिवसमां एकैव अमोघ बाण छोड़ता होता था । तत्र युद्धक्षेत्रे कूणिकना सैन्यमां गरुड-व्यूह होता तथा चेटक (चेडा)ना सैन्यमां सागर-व्यूह होता । तत्र पञ्च पड़ोसे दिवस कूणिक राजानो नानोबाध कालकुमार पोतानी सेना सहित सेनापति बनीने पोते चेटक (चेडा) महाराजनी साथे लड़तां लड़तां तेना अमोघ बाणुथी मार्यो गयो, अने कूणिकनी सेनानो नाश थर्छ गयो ।

द्वितीये दिवसे सेना साथे सुकालकुमार युद्धमां चेटकना बाणुथी मार्यो गया । तृतीये दिने तीसरे दिवसे महाकाल कुमार, चौथे दिवसे कृष्णकुमार, पांचवें दिवसे सुकृष्ण कुमार, छठे दिवसे महाकृष्ण कुमार, सातवें दिवसे वीरकृष्ण कुमार,

सुन्दरबोधनी टीका सङ्ग्रामवर्णन

७३

अष्टमे रामकृष्णः, नवमे पितृसेनकृष्णः, दशमे दिने पितृमहासेनकृष्णश्च
चेटकेनैकैकेन बाणेन प्रत्यहमेकैकशः कालादयो दश कुमारा निहताः ।
दशसु निहतेषु कूणिकश्चेटकं जेतुं देवाराधनायाऽष्टमभक्तं कृतवान् । ततः शक्र-
चमरौ द्वौ देवेन्द्रौ प्रसन्नौ समागतौ । तत्र शक्र उवाच—चेटको व्रतधारी
श्रावकोऽस्तीत्यतस्तं न हनिष्यामि, परं त्वां रक्षितुं शक्नोमि, कूणिकेनोक्तं-
तथाऽस्तु, ततः शक्रस्तद्रक्षणाय वज्रकल्पमभेद्यकवचं विकुर्वितवान् ।

आठवें दिन रामकृष्ण कुमार, नवमें दिन पितृसेनकृष्ण कुमार और दसवें दिन पितृमहा-
सेनकृष्ण कुमार-चेटकके एक-एक बाणसे मारे गये । दसों कुमारोंके मारे जाने पर
'चेटकको जीते' इस भावसे कूणिक राजाने देवताको आराधन करनेके लिए अष्टमभक्त
किया । उसके बाद शक्रेन्द्र और चमरेन्द्र प्रसन्न हुए और कूणिकके पास आये ।
उनमेंसे शक्रेन्द्र बोले—हे कूणिक ! चेटक (चेडा) राजा व्रतधारी श्रावक है इस
लिए हम उसे नहीं मार सकते, पर तेरी रक्षा कर सकते हैं । शक्रेन्द्रके मुखसे
निकले इन वचनोंको श्रवणकर कूणिकने 'तथास्तु' कहा । कूणिकके 'तथास्तु' कहने
वाने स्वीकार करलेनेके बाद शक्रेन्द्रने कूणिककी रक्षाके लिए—वज्रसदृश अभेद्य
कवच वैक्रियक्रियासे बनाया ।

आठमे दिवसे रामकृष्णकुमार, नवमे दिवसे पितृसेनकृष्णकुमार, तथा दशमे दिवसे
पितृमहासेनकृष्णकुमार, चेटकना ओक-ओक आणुथी मार्या गया. दशेय कुमारोना
मार्या गयाथी 'चेटकने जेतुं' जेवा लावथी कूणिके राजाजे देवतानु आराधन करवा
भाटे अठम (३ उपवास) कर्यो. तेथी शक्रेन्द्र तथा चमरेन्द्र प्रसन्न थया तथा
कूणिकनी पासे आव्या. तेमांथी शक्रेन्द्र आव्या.—हे कूणिक ! चेटक (चेडा) राजा
व्रतधारी श्रावक छे तेथी अभे तेने नहि मारी शकीजे, पणु तारी रक्षा करी
शकीजे. शक्रेन्द्रना मुण्थी निकलेलां आ वचनो सांलंजीमे कूणिके 'तथास्तु' कथुं.
कूणिकना 'तथास्तु' कडेवांथी ओटले स्वीकार करी लीधा. पछी शक्रेन्द्रे कूणिकनी
रक्षाने भाटे वज्रना जेतुं अबेद्य कवच बँडिब दिवाथी जनांजु.

ચમરશ્ચ-‘મહાશિલાકંટક’ ‘રથમુશલ’ એતિ દ્વૌ સર્જામૌ વિકુર્વિતવાન્, તત્ર મહાશિલેવ પ્રાણાપહારકત્વાત્ કંટકો ‘મહાશિલાકંટક’ इत्युच्यते । અથવા-તૃણાગ્રેણાપિ હતસ્ય ગજાશ્વાદર્મેમહાશિલાકંટકેન હતસ્યેવ વેદના યત્ર ભવતિ સ સર્જામૌ ‘મહાશિલાકંટક’ इत्युच्यते ।

‘રથમુશલ’ એતિ=મુશલેન સહિતો રથસ્તસ્માત્ નિસ્સરન્મુશલો ધાવમાનો જનસમુદાય યત્ર વિનાશયતિ સ સર્જામૌ ‘રથમુશલ’ इति નિગદ્યતે ॥ ૧૨ ॥

ચમરેન્દ્રને મહાશિલાકંટક ઓર રથમુશલ નામક સંગ્રામ વિકુર્વિત કિયા । ‘મહાશિલાકંટક’—જો મહાશિલાકે સમાન પ્રાણોકા કંટક અર્થાત્ ઘાતક હૈ વહ મહાશિલાકંટક કહલાતા હૈ, અથવા તિનકેકી નોકસે મારનેપર મી હાથી ઘોડે આદિકો મહાશિલાકંટકસે મારને જૈસી તીવ્ર વેદના હોતી હૈ ઉસ સંગ્રામકો ‘મહાશિલાકંટક’ કહતે હૈ ।

‘રથમુશલ’—મુશલયુક્ત રથકો ‘રથમુશલ’ કહતે હૈ, અર્થાત્-રથસે નિકલકર મુશલ બહુત વેગસે દોડકર શત્રુપક્ષકા વિનાશ-(સંહાર) કરતા હૈ ઉસ સંગ્રામકો ‘રથમુશલ’ કહતે હૈ । ॥ ૧૨ ॥

ચમરેન્દ્રે મહાશિલાકંટક તથા રથમુશલ નામે સંગ્રામ વિકુર્વિત કર્યો. ‘મહાશિલાકંટક’—જે મહાશિલાના જેવો પ્રાણુનો કંટક અર્થાત્ ઘાતક છે. તે મહાશિલાકંટક કહેવાય છે, અથવા તણખલાની અણીથી મારવાથી પણ હાથી ઘોડા આદિને મહાશિલાકંટકથી મારવા જેવી તીવ્ર વેદના થાય છે; એ સંગ્રામને ‘મહાશિલાકંટક’ કહે છે.

રથમુશલ—મુશલયુક્ત રથને ‘રથમુશલ’ કહે છે. અર્થાત્ રથમાંથી નીકળી મુશલ બહુ વેગથી દોડીને શત્રુપક્ષનો વિનાશ (સંહાર) કરે છે. એ સંગ્રામને “રથમુશલ” કહે છે. (૧૨)

सुन्दरबोधिनी टीका कालीरानी के विचार

७५

तत्र कूणिकेन सह कालः स्वबलसमन्वितः रथमुशलसङ्ग्राममुपयातः,
इत्याशयकं सूत्रमाह—‘तएणं से काले’ इत्यादि ।

मूलम्—

तएणं से काले कुमारः अन्नया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं, तिहिं
रहसहस्सेहिं, तिहिं आससहस्सेहिं, तिहिं मणुयकोडीहिं गरुडव्यूहे एकार-
समेणं खंडेणं कूणिणं रत्ना सद्धिं रहमुसलं संगामं ओयाए ॥ १३ ॥

छाया—

ततः खलु स कालः कुमारः अन्यदा कदाचित् त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः
त्रिभी रथसहस्रैः, त्रिभिरश्वसहस्रैः त्रिभिर्मनुजकोटिभिः गरुडव्यूहे एकादशेन
खण्डेन कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं रथमुशलं सङ्ग्रामम् उपयातः ॥ १३ ॥

टीका—

‘तएणं से’ इत्यादि—ततः सङ्ग्रामनिर्णयानन्तरं सः=असौ प्रथमः
कालः=कालकुमारः अन्यदा=अन्यस्मिन् कदाचित्=कस्मिंश्चित् समये त्रिभिः=
त्रिसंख्यकैः, दन्तिनां=हस्तिनां सहस्राणि=दन्तिसहस्राणि तैस्तथा, त्रिभी रथ-
सहस्रैः, त्रिभिरश्वसहस्रैः, त्रिभिर्मनुजकोटिभिः सह गरुडव्यूहे एकादशेन

— वहां कूणिके साथ कालकुमार अपनी सेना लेकर रथमुशल संग्राममें
उपस्थित हुए, इस आशयका सूत्र कहते हैं—‘तएणं से काले’ इत्यादि.

संग्रामके निश्चित होजानेके पश्चात् वह कालकुमार नियत समयपर तीन २
हजार हाथी-घोड़े-रथ आदि, एवं तीन करोड पैदल सेनाको लेकर गरुडव्यूहमें,

— त्थां क्षुण्डिनी साथे कालकुमार पोतानी सेना लधने रथमुशल संग्रामभां
उपस्थित थयां. आ मतलबनु सूत्र कहे छे—‘तएणं से काले’ इत्यादि.

संग्रामनो निश्चय थछ गया पछी ते कालकुमार निश्चित वधते त्रिषु त्रिषु
हजार घोषी घोड़ा रथ आदि, अने त्रिषु करोड पायदल सेनाने लधने गरुड व्यूहभां

५६

निर्याचलिकासूत्र

खण्डेन=अंशेन सहितेन एकादशभागिना कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं स्थमुशलं= तदारूपं सङ्ग्रामम् उपयातः=उपगतः प्राप्त इत्यर्थः ॥ १३ ॥

मूलम्—

तएणं तीसे कालीए देवीए अन्नया कयाइ कुटुंबजागरियं जागर-
माणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु मम पुत्रे
कालकुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव ओयाए, से मन्ने किं जइस्सइ ?
नो जइस्सइ ? जीविस्सइ नो जीविस्सइ ? पराजिणिस्सइ ? णो पराजिणि-
स्सइ ? काले णं कुमारे णं अहं जीवमाणं पासिज्जा ? ओहयमण० जाव
भियाइ ॥ १४ ॥

छाया—

ततः खलु तस्याः काल्या देव्या अन्यदा कदाचित् कुटुम्बजागरिकां
जाग्रत्या अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत—एवं खलु मम पुत्रः
कालकुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावत् उपयातः तन्मन्ये किं जेष्यति ?
न जेष्यति ? जीविष्यति ? न जीविष्यति ? पराजेष्यते ? न पराजेष्यते ?
कालं खलु कुमारम् अहं जीवन्तं द्रक्ष्यामि ? अपहतमनःसंकल्पा यावत्
ध्यायति ॥ १४ ॥

टीका—

‘तएणं तीसे’ इत्यादि । ततः=युद्धप्रवर्तनानन्तरम् अन्यदा कदा-
चित् एकस्मिन् दिने कुटुम्बजागरिकां-कुटुम्बः=स्वजनवर्गः पोष्यवर्गादिस्तदर्थं

ग्यारहवें अंशके भागी : राजा कूणिकके साथ ‘स्थमुशल’ संग्राम में उपस्थित
हुआ ॥ १३ ॥

‘तएणं तीसे’ इत्यादि.

संग्राम आरम्भ होनेपर इधर एक समय कुटुम्बजागरणा करती हुई काली

अगीयारभा लागना लागीहार राजा कुण्डिकनी साथे ‘स्थमुशल’ संग्राममें
उपस्थित था. (१३)

‘तएणं तीसे’ इत्यादि.

संग्राममें आरंभ भता जो वधत कुटुम्ब-जागरणा करती होती

सुन्दरबोधिनी टीका कालोरानीके विचार

७७

जागरिकां=जागरणमिन्द्रियैर्विषयज्ञानयोग्यावस्थां जाग्रत्याः=प्राप्नुवत्याः,
तस्याः काल्या देव्याः अयम्=एषः एतद्रूपः=वक्ष्यमाणलक्षणः आध्यात्मिकः=
आत्मविषयो विचारः वृक्षस्याऽङ्कुर इव, यावत्करणात्—“ चिंतिष्य, कप्पिष्य,
पत्थिष्य, मणोगण संकल्पे ” इति संगृह्यन्ते, तदनु चिन्तितः=पुनः पुनः
स्मरणरूपो विचारः द्विपत्रित इव, ततः कल्पितः=स एव व्यवस्थायुक्तः
पुत्रविषयको विचारः पल्लवित इव, प्रार्थितः स एव इष्टरूपेण स्वीकृतः
पुष्पित इव, मनोगतः संकल्पः=मनसि इष्टरूपेण निश्चयः फलित इव समुदप-
द्यत=जातः ।

महारानीके हृदयमें वृक्षके अङ्कुरसमान ‘ आध्यात्मिक ’ अर्थात् आत्मविषयक विचार उत्पन्न हुआ । वह—‘ चिन्तित ’ अर्थात् बारबार स्मरणसे ‘ द्विपत्रित ’ के समान, ‘ कल्पित ’ वही पुत्रविषयक विचार व्यवस्थायुक्त होनेसे ‘ पल्लवित ’ के समान, ‘ प्रार्थित ’ मनमें विचार स्वीकृत होजानेके कारण ‘ पुष्पित ’ के समान, ‘ मनोगत संकल्प ’ वही इष्ट रूपसे मनमें निश्चित होजानेके कारण ‘ फलित ’ के समान अवस्थाको प्राप्त हुआ ।

भावार्थ—

संप्रामके प्रारम्भ होजाने पर महारानी कालीके हृदयमें पुत्र स्नेहके कारण एक

महाराणीना हृदयमां वृक्षना अङ्कुरनी पेठे ‘ आध्यात्मिक ’ अर्थात् आत्म-विषयक विचार उत्पन्न थयो. ते ‘ चिन्तित ’=अर्थात् बार-बार स्मरणथी द्विपत्रित समान, ‘ कल्पित ’=ते पुत्र विषयेना विचार व्यवस्थायुक्त थवाथी पल्लवितना समान, ‘ प्रार्थित ’=मनमां विचारना स्वीकार थथ जवाथी पुष्पितना समान, ‘ मनोगत संकल्प ’=ते इष्ट रूपथी मनमां निश्चय थथ जवाथी फलितना समान अवस्थाने प्राप्त थयो.

भावार्थ—

संप्राम थइ थथ जतां महाराणी कालीना हृदयमां पुत्र-स्नेहना कारणे

સંકલ્પસ્વરૂપમાહ—‘એવં સ્વલ્પિ’-ત્યાદિના । મમ પુત્રઃ=આત્મજઃ
કાલકુમારઃ ત્રિભિર્દન્તિસહસ્રૈઃ=ત્રિસહસ્રસંખ્યકગજૈઃ, યાવત્કરણાત્-રથાનામશ્વા-
નાશ્ચ ત્રિભિઃ સહસ્રૈર્મનુષ્યાણાં ચ તિસ્રભિઃ કોટિભિઃ સહ ઉપયાતઃ=સર્વોપમાય
ગતઃ, તન્મન્યે=તત્ સંદિદે-કિં જેષ્યતિ ? સર્જામે શત્રૂનભિભૂય પ્રતાપં

સમય વૃક્ષકે અંકુરકે સદૃશ આત્મિક ભાવ અંકુરિત હુએ, પશ્ચાત્ વેહી વિચાર વાર-
વારકે ચિન્તન-સ્મરણસે દ્વિપત્રિત અર્થાત્ જૈસે બીજસે અંકુર ઓર અંકુરકે કુલ વઢનેપર
દોં કોમલ કિશલય-દોં નયે પત્તે નિકલતે હૈં, ઉસી પ્રકાર વિચારોંકા સ્વરૂપ વઢા,
બાદ વેહી વાત્સલ્યમય વિચાર ‘કલ્પિત’ યાને પલ્લવિત-અધિક પત્રોંકે રૂપમેં અગ્રસર
હુએ, પશ્ચાત્ મનમેં વઢતે-પનપતે હુએ ઉન વિચારોંકે ‘પ્રાર્થિત’ હોજાનેપર યાને
અપને વિશ્વાસસે સ્વીકૃત હોજાને પર ‘પુષ્પિત’ ફૂલે હુએકે સમાન હોગયે ઓર
અન્તમેં જવ ઉનપર દૃઢ સંકલ્પ હોગયા તવ વે ફલિતસમાન અવસ્થાકો પ્રાપ્ત હુએ
યાને વૃક્ષકે ફલકે સમાન ફલરૂપ બન ગયે ।

અવ મહારાણી કાલીકે-વિચારકા સ્વરૂપ કહતે હૈં—‘એવં સ્વલ્પ’ ઇત્યાદિ ।

મેરા પુત્ર કાલકુમાર ત્રીનર હજાર હાથી ઘોડે રથ ઓર ત્રી કોટિ
સેનાકે સાથ સંગ્રામમેં ગયા હૈ । મેરે મનમેં ઇસ વાતકા સંશય આ રહા હૈ કિ-વહ

એક સમય વૃક્ષના ફળુગા જેવો આત્મિક ભાવ અંકુરિત થયો. પછી તેજ વિચાર
વારંવારના ચિંતન સ્મરણથી દ્વિપત્ર અર્થાત્ જેમ બીજમાંથી અંકુર અને અંકુર
જરા વધવાથી એ કોમલ કિશલય-એ નવાં પાંદડાં નિકળે છે તેવીજ રીતે વિચારોનું
સ્વરૂપ વધવાં બાદ તેજ વાત્સલ્યમય વિચાર ‘કલ્પિત’ અર્થાત્ ‘પલ્લવિત’
વેધારે પાંદડાંના રૂપમાં આગળ આવે-પછી મનમાં વધતા-વિસ્તાર પામતા તે
વિચારો ‘પ્રાર્થિત’ થઈ જતાં યાને પોતાનાજ વિશ્વાસથી સ્વીકારાઈ જવાથી
પુષ્પિત ફૂલની પેઠે થઈ ગયા તથા અંતમાં જ્યારે તેના ઉપર દૃઢ સંકલ્પ થઈ
જયો ત્યારે તે ‘ફલિત’ જેવી અવસ્થાને પ્રાપ્ત થાય છે અર્થાત્ વૃક્ષનાં ફળની
જેમ ફલરૂપ થઈ ગયા.

હવે મહારાણી કાલીના વિચાર (સંકલ્પ)નું સ્વરૂપ કહે છે—‘એવં સ્વલ્પ’
ઈત્યાદિ.

મારો પુત્ર કાલ કુમાર ત્રણ ત્રણ હાથી ઘોડા રથ તથા ત્રણ કરોડ
સેનાની સાથે સંગ્રામમાં ગયો છે. મારા મનમાં આ વાતનો સંશય આવે છે કે

सुन्दरबोधिनी टीका कालीरानीके विचार

७९

प्राप्स्यति ?, अथवा-न जेष्यति ?, जीविष्यति ?=प्राणधारणं करिष्यति ?
 अथवा-न जीविष्यति ? पराजेष्यते ?=शत्रुतः परास्तो भविष्यति ? वा न
 पराजेष्यते ? अहं कालं कुमारं=स्वपुत्रं खलु=निश्चयेन जीवन्तं=प्राणयुक्तं
 द्रक्ष्यामि=प्रेक्षिष्ये, इत्येवम्, 'अपहतमनःसंकल्पा'-अपहतो=मलिनीभूतो मनः-
 संकल्पो=योग्याऽयोग्यविचारो यस्याः सा तथा, यावत्करणात्-
 'करयलपल्ह-
 त्थियमुही, अट्टभ्माणोवगया, ओमंथियणयणवयणकमला, दीणविवन्नवयणा,
 मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूया' एतेषां सङ्ग्रहः ।
 करतलपर्यस्तितमुखी, आर्तध्यानोपगता, अवमथितनयनवदनकमला, दीनविवर्ण-
 वदना, मनोमानसिकेन दुःखेन अभिभूता, इतिच्छाया; 'करतले'ति-
 करतले=हस्ततले पर्यस्तितं=स्थापितं मुखं यया सा तथा, 'आर्ते'ति-ऋतं=
 दुःखं पुत्रविरहजन्यं तत्र भवमार्ते, तच्च ध्यानं, तत्रोपगता=पुत्रविरहजन्यदुःखा-

युद्धमें शत्रुओं पर विजय पावेगा अथवा नहीं ? । वह जीवित रहेगा या नहीं ? ।
 शत्रु उससे पराजित होंगे या नहीं ? । मैं अपने लाल कालकुमारको जीवितावस्थामें
 देखूंगी या नहीं ? । इस प्रकारके अनेक संशयात्मक विचार करने लगी । ऐसे
 कर्तव्याकर्तव्यके विचार और उनका निर्णय जब शिथिल अवस्थाको धारण करने लगे
 तब सहसा रानीका मन मलिन होगया और हथेलीपर अपना मुँह रखकर पुत्र
 विरहके दुःखसे क्षुब्ध रानी आर्तध्यान करने लगी । अत्यन्त दुःखके कारण कुम्हलाये

ते युद्धमा शत्रुभ्यो उपर विजय भेजवशे के नहि ? ते अवित रहेशे के नहि ? तेनाथी
 शत्रु पराजित पावशे के नहि ? हुं मारा लाव कालकुमारने अवित अवस्थाभां जेधश
 के नहि ? आ प्रकारना अनेक संशयात्मक विचार करवा लागी. ओवा कर्तव्य अकर्त-
 व्यना विचार तथा तेना निर्णय न्यारे शिथिल अवस्थाने धारण करवा लाग्या
 त्त्यारे ओकदम राष्ट्रीनुं मन मलिन थर्ध गयुं तथा. हथेली उपर पोतानुं भों राष्ट्रीने
 पुत्र विरहना दुःखथी पीडाती राष्ट्री आर्तध्यान करवा लागी अत्यन्त दुःखने

नित्तध्यानयुक्तेत्यर्थः, 'अवमथिते'ति-अवमथितानि=अधःकृतानि नयनवदन-
रूपाणि कमलानि यया सा तथा, प्रबलदुःखेन निम्नम्लाननेत्रमुखकमलेत्यर्थः,
'दीने'ति-दीनस्य=अकिंचनस्येव विवर्ण=कान्तिरहितं मुखं यस्याः सा तथा=
शोकम्लानवदनेत्यर्थः, 'मनोमानसिकेने'ति-मनसि भवं मानसिकं दुःखं
मनस्येव, न बहिः, वचनादिभिरप्रकाशितत्वात्-यत् तन्मनोमानसिकं, तेन दुःखेन
अभिभूता=व्याप्ता, शोकसागरप्रविष्टा ध्यायति=आर्तध्यानं करोति, इति ॥१४॥

मूलम्—

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए ।
परिसा निग्गया । तए णं तीसे कालीए देवीए, इमीसे कहाए लद्धाए
समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ॥ १५ ॥

छाया—

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतः ।
परिषत् निर्गता । ततः खलु तस्याः काल्याः देव्याः एतस्याः कथायाः
लब्धार्थायाः सत्याः अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत ॥ १५ ॥

हुए कमलके समान नेत्र और मुखको नीचा किये हुए बैठ गई, उसका मुख
दीनजनके समान शोकाच्छादित-उदासीन हो गया । वह मानसिक दुःखसे घिरी हुई
शोकसागरमें डूबी हुई आर्तध्यानपरायणा थी । ॥ १४ ॥

दीधे करभार्ध गयेदां कमणना जेवां नेत्र तथा मुअने नीचुं करीने बेसी गर्ध. तेनुं
मुअ गरीअ भाखुसना जेवुं शोकाच्छादित (दीवगीरीथी छावाध गयेवुं) उदासीन
अध गयुं ते मानसिक दुःखोथी घेरायेदी शोकना सागरमां डुपी जन्थी आर्त
ध्यानपरायणा छती. (१४)

सुन्दरबोधिनी टीका काली रानीके विचार

८१

टीका—

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतः=सदेवमनुष्यपरिषदि भव्यानुपदेष्टुं समुपस्थितः, परिषत्=जनसमुदायः निर्गता=गृहान्निस्सृता । ततः परिषन्निर्गमनानन्तरं खलु=निश्चयेन तस्याः=पूर्वोक्तायाः प्रसिद्धाया वा, काल्या देव्याः एतस्याः=समीपतरवर्तिन्याः कथायाः लब्धार्थायाः-लब्धोऽर्थो यया सा तस्याः प्राप्तार्थाया इत्यर्थः, अयम् एतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः ‘आध्यात्मिकः’ आत्मनि विचारः यावत्पदगृहीतानां ‘चित्ति, कप्पि, पत्थि, मणोग, संकप्पे’ एतेषां च व्याख्याऽव्यवहितपूर्वसूत्रोक्तरीत्या विज्ञेया, समुदपद्यत ॥ १५ ॥

तदेव दर्शयति—‘एवं खलु’ इत्यादि ।

मूलम्—

एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुब्बाणुपुण्वि० इहमागए जाव विहरइ, तं महाफलं खलु तहारूवाणं जाव विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए, तं

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि ।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी उस नगरीमें पधारे । देवता और मनुष्योंकी सभामें भव्योंको धर्म-देशना देने लगे । धर्मकथा श्रवण करनेके लिए परिषद् निकली । भगवान् यहाँ पधारे हैं; ऐसा वृत्तान्त सुनकर काली रानीके मनमें वक्ष्यमाण-आगे कहे जानेवाले विचार उत्पन्न हुए । ॥ १५ ॥

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि.

ते काले ते समये श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ते नगरीमां पधार्या. देवता तथा मनुष्यानी सभामां भव्येने धर्मदेशना देवा लाग्या. धर्मकथा सांभ-जवा माटे परिषद् नीकणी. भगवान् अही पधार्या छे जेवे वृत्तान्त सांभणी काली राक्षीना मनमां वक्ष्यमाण-आ प्रमाणे विचार उत्पन्न भया. (१५)

૬૨

નિરયાવલિકાસૂત્ર

ગચ્છામિ ણં સમણં જાવ પજ્જુવાસામિ, ઇમં ચ ણં ઇયારૂવં વાગરણં પુચ્છિસ્સા-
મિત્તિ કટ્ટુ એવં સંપેહેદ્, સંપેહિત્તા કોહુંબિયપુરિસે સદાવેદ્ સદાવિત્તા એવં
વયાસી-લિપ્પામેવ ભો દેવાણુપ્પિયા ! ધમ્મિયં જાણપ્પવરં જુત્તમેવ ઉવટ્ઠવેદ્,
ઉવટ્ઠવિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ ॥ ૧૬ ॥

છાયા—

એવં સ્વલુ શ્રમણો ભગવાન્ મહાવીરઃ પૂર્વાનુપૂર્વ્યાં૦ ઇહાગતઃ યાવદ્
વિહરતિ, તન્મહાફલં સ્વલુ તથારૂપાણાં યાવત્ ત્રિપુલસ્યાર્થસ્ય ગ્રહણતયા
તદ્ગચ્છામિ સ્વલુ શ્રમણં યાવત્ પર્યુપાસે, ઇદં ચ સ્વલુ એતદૂપં વ્યાકરણં
પ્રક્ષ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા એવં સંપ્રેક્ષતે, સંપ્રેક્ષ્ય કૌદુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ,
શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-ક્ષિપ્રમેવ ભો દેવાનુપિયાઃ ! ધાર્મિકં યાનપ્રવરં
યુક્તમેવ ઉપસ્થાપયત, ઉપસ્થાપ્ય યાવત્ પ્રત્યર્પયન્તિ ॥ ૧૬ ॥

ટીકા—

એવં સ્વલુ યત્-શ્રમણો ભગવાન્ મહાવીરઃ પૂર્વાનુપૂર્વી=યથાક્રમં,
યદ્વા-પૂર્વેષાં તીર્થકરાણાં યા આનુપૂર્વી=પરિપાટી મર્યાદેત્યર્થઃ, તાં ચરન્=
આચરન્ પરિપાલયન્નિત્યર્થઃ, “ગામાણુગામં દૂઝ્જમાણે”=ગ્રામાનુગ્રામં દ્રવન્

વે વિચાર એ હૈં—‘ એવં સ્વલુ ’ ઇત્યાદિ—

શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ યહૌં પધારે હૈં ઓર સંયમી લોગોંકે કલ્પકે
અનુસાર નિવાસકે લિએ ઉદ્યાનપાલકી આજ્ઞા લેકર સંયમ ઓર તપસે અપની આત્માકો
ભાવિત કરતે હુએ વિરાજતે હૈં, તથારૂપ અરિહન્ત અર્થાત્ સર્વજ્ઞતાકે કારણ જિનસે

તે વિચાર આ છે:—‘ એવં સ્વલુ ’ ઇત્યાદિ—

શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ અહીં પધાર્યા છે તથા સંયમી લોકોના
કલ્પને અનુસરી નિવાસને માટે ઉદ્યાનપાલની (વાડીના પાલક કે માળીની) આજ્ઞા
લઇને સંયમ તથા તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા બિરાજે છે. તથા
રૂપ અરિહન્ત અર્થાત્ સર્વજ્ઞતાના કારણે જેનાથી કોઇ વાત અબાણી નથી અને

सुन्दरबोधिनी टीका कालो रानोके विचार

८३

‘ग्रामानुग्रामम्’-एकस्माद् ग्रामाद् अनु=पश्चाद् यो ग्रामस्तम्, अर्थादनुक्रमेण ग्रामाद्ग्रामान्तरं द्रवन्=विहरन्, इह=अस्यां चम्पानगर्यां विद्यमानं पूर्णभद्रमुद्यानम् आगतः=समन्ताद् विहृत्योपस्थितः, यावत्करणात् ‘अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे’ एतेषां संकुहः। छाया—‘यथाप्रतिरूपम् अवग्रहम् अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्’ इति। ‘यथे’-ति-यथाप्रतिरूपं=यथासंयमिकल्पम् अवग्रहम्=निवासार्थ-मुद्यानपालस्याज्ञाम् अवगृह्य=आदाय संयमेन=सप्तदशविधेन तपसा=द्वादशविधेन आत्मानं भावयन्=वासयन् संयोजयन्निति यावत्, विहरति=विराजते, तत्=तस्मात् महाफलं-महत्=विशालं फलं=शुभपरिणामलक्षणम्, अत्र ‘अत एवे’ति-शेषः खलु=निश्चयेन तथारूपाणां शुभपरिणामरूपमहाफलजननस्वभावानां, यावच्छब्देन—“अरिहंताणं, भगवंताणं, णामगोयस्सवि सवणयाए किमंगपुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणाए, एकस्सवि आरियस्स, धम्मियस्स, सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण” एतेषां संकुहः। छाया—‘अर्हतां भगवतां नामगोत्रस्यापि श्रवणतया किमङ्ग ! पुनरभिगमन-वन्दन-नमस्यन-प्रतिप्रच्छन-पर्युपासनेन, एकस्यापि आर्यस्य धार्मिकस्य सुवचनस्य श्रवणतया किमङ्ग ! पुनः’ इति। ‘अर्हतां’-नास्ति रहः=प्रच्छन्नं किञ्चिदपि येषां सर्वज्ञत्वात्तेऽर्हन्तस्तेषाम्, ‘भगवतां’-भगः=समग्रैश्वर्यादिगुणः, स विद्यते येषां ते भगवन्तस्तेषाम्। नाम च=वर्धमानादि, गुणनिष्पन्नमभिधानं गोत्रं च=कश्यपादि, तयोः समाहारे नामगोत्रं, तस्य श्रवणेनापि महाफलं भवति। किमङ्ग ! पुनः-अभिगमनं=सम्मुखं गमनम्, वन्दनं=गुणकीर्तनम्। नमस्यनं=पश्चाद्गत्यत्नमनपूर्वकनमस्करणम्, प्रतिप्रच्छनं=शरीरादिवार्ताप्रश्नः, पर्युपासना=सावध्ययोगपरिहारपूर्वकनिरवद्यभावेन सेवाकरणम्-एतेषां समाहारस्तथा, अयं

भावः—भगवन्नामगोत्रश्रवणस्मरणेणापि शुभपरिणामरूपं फलं भवति, तर्हि अमि-
गमनादिना जातं फलं किं पुनः कथनीयम् ? अर्थात् तत्फलमातन्त्याद्वक्तुमशक्य-
मिति । एकस्यापि आर्यस्य=आर्यप्रणीतस्य धार्मिकस्य=श्रुतचारित्रलक्षणधर्मप्रति-
बद्धस्य सुवचनस्य=सर्वप्राणिहितकारकवचनसः श्रवणतया=श्रवणेन यत् फलं तत्
किं पुनर्वाच्यम् ? अर्थात् वक्तुमशक्यम् । विपुलस्य=प्रभूततरस्य अर्थस्य=
भगवद्वचनप्रतिपाद्यविषयस्य श्रुतचारित्रलक्षणस्य ग्रहणतया=ग्रहणेन यत्फलं
भवति तत् किं पुनर्वाच्यम् ? अर्थात्कथमपि वक्तुं न शक्यम् ।

कोई बात छिपी हुई नहीं है और सम्पूर्ण ऐश्वर्यके कारण जो भगवान हैं उनके
वर्धमान आदि नाम और कश्यप आदि गोत्रके सुननेसे भी शुभ परिणाम स्वरूप
महाफल होता है तो सम्मुख जाना, गुण-कीर्तन करना और पाँचों अंगोंको यतना
पूर्वक नमाकर नमस्कार करना, शरीर आदिकी सुख-साता पूछना, और भगवानके त्यागी
होनेके कारण सावधका परिहार-पूर्वक उनकी निरवध सेवा करना, इन सबका क्या
फल होगा, इसका तो कहना ही क्या ?

और उनका एक भी श्रेष्ठ श्रुत चारित्र धर्म युक्त और समस्त प्राणियोंके
हितकारी सुवचनके श्रवणसे जो महाफल मिलता है तो उनका विपुल श्रुत चारित्र
रूप जो अर्थ है उसको ग्रहण करनेके फलका तो कहना ही क्या है ?—वह फल
तो अकथनीय=है । इसलिये मैं श्रमण भगवान् महावीर प्रभुके पास जाऊँ और

संपूर्ण ऐश्वर्यना कारणेन भगवान् छे. तेमनां वर्धमान आदि नाम तथा कश्यप
आदि वगेरे गोत्रने सांलणवाथी शुभ परिणाम स्वरूप महाफल थाय छे—तो
सम्मुख जवुं, शुशुनुं कीर्तन करवुं, तथा पांचे अंगोने यतनापूर्वक नमावीने
नमस्कार करवा, शरीर आदि वगेरेनी सुख-साता पूछवी तथा भगवान त्यागी
होवाथी सावधना परिहार पूर्वक तेमनी निरवध सेवा करवी ओ अधानुं शुं इण
डोय तेनु तो कडेवुं शुं ?

तेमनां वचननां आचार अने तेमनां ओक पणु श्रेष्ठ श्रुत चारित्र धर्म
युक्त तथा समस्त प्राणियोनुं हितकारी सुवचन सांलणवाथी ने महाफल भणे छे
तो तेमना विपुल श्रुत चारित्र इपी ने अर्थ छे तेनां अडणु करवानां इणनुं तो
कडेवुं शुं ? ते इण तो अकथनीय छे. आथी हुं श्रमण भगवान् महावीर प्रभुनी

सुन्दरबोधिनी टीका 'भगवान्' शब्दका अर्थ

५५

तत्=तस्मात् कारणात् अहं गच्छामि श्रमणं=श्राम्यति=तपस्यतीति
श्रमणो=द्वादशवर्षाणि घोरतपश्चरणात् 'श्रमण' इति प्रसिद्धिं लब्धवान्, तस्मात्
जावशब्देन—'भगवं, महावीरं, वंदामि, नमंसामि, सत्कारेमि, सम्मानेभि,

उनको वन्दन—नमस्कार करूँ; सत्कार सम्मान करूँ जो कल्याण स्वरूप हैं, मंगल
स्वरूप हैं, दैवत—इष्ट देव हैं और चैत्य—ज्ञानस्वरूप हैं उन प्रभुकी विनयपूर्वक
उपासना करूँ ।

अब यहाँ श्रमण भगवान् आदि पदोंका विशेष अर्थ करते हैं:—

(१) श्रमण=साढ़े बारह बरस तक घोर तपस्या की, इसलिए 'श्रमण'
नामसे प्रसिद्ध हैं । (२) भगवान्—भग शब्दके ज्ञानादि दस अर्थ जिनमें हों उन्हें
भगवान् कहते हैं । 'भग' शब्दके दस अर्थ—

(१) सम्पूर्ण पदार्थोंको विषय करनेवाला ज्ञान.

(२) महात्म्य अर्थात् अनुपम और महान् महिमा.

(३) विविध प्रकारके अनुकूल और प्रतिकूल परिषद्को सहन करनेसे

पासे जल तथा तेमने वंदन नमस्कार करें, सत्कार सम्मान करें जे कल्याण स्वरूप
छे. मंगल स्वरूप छे दैवत अर्थात् इष्ट देव छे तथा चैत्य—ज्ञानस्वरूप छे ते
प्रभुनी विनयपूर्वक उपासना करें.

हुवे अहीँ श्रमण भगवान् आदि शब्दोंना विशेष अर्थ करीये कीये.

(१) श्रमण=साढ़ा बार बरस सुधी उग्र तपश्चर्या करी तेथी 'श्रमण'
नामथी प्रसिद्ध छे. (२) भगवान्—भग शब्दना ज्ञान आदि दस अर्थ जेमां होय
तेने भगवान् कहैवा. 'भग' शब्दना दस अर्थ—

(१) सम्पूर्ण पदार्थोनि विषय करवा वाहुं ज्ञान.

(२) महात्म्य अर्थात् अनुपम तथा महान् महिमा.

(३) विविध प्रकारना अनुकूल तथा प्रतिकूल परिषदोने सहन करवाथी.

કલ્હાણ, મંગલ, દેવ્ય, ચેડ્યં, વિણ્ણ' इत्येषां सङ्ग्रहः । एतच्छाया—
'भगवन्तं, महावीरं, वन्दे, नमस्यामि, सत्कारयामि, सम्मानयामि, कल्याणं,
मङ्गलं, दैवतं, चैत्यं, विनयेन' इति ।

‘ भगवन्त ’मिति-भगः=ज्ञानं, माहात्म्यं, यशः, वैराग्यं, मुक्तिः,
सौन्दर्यम्, वीर्यः, श्रीः, धर्मः, ऐश्वर्यं, सोऽस्याऽस्तीति भगवान्, तम्,

ઉત્પન્ન હોનેવાલી યા સંસારકી રક્ષા કરનેવાલે અલૌકિક ભાવોસે ઉત્પન્ન હોનેવાલી કીર્તિ ।

(૪) ક્રોધ આદિ કષાયોંકા સર્વથા નિગ્રહરૂપ વૈરાગ્ય ।

(૫) સમસ્ત કર્મોંકા ક્ષયસ્વરૂપ મોક્ષ ।

(૬) સુર-અસુર ઔર માનવકે અન્તઃકરણકો હરલેને વાલા સૌન્દર્ય ।

(૭) અન્તરાય કર્મકે નાશસે ઉત્પન્ન હોનેવાલા અનન્ત બલ ।

(૮) ઘાતિયા-કર્મરૂપી પટલકે હટ જાનેસે પ્રાદુર્ભૂત હોનેવાલી અનન્ત
ચતુષ્ટય-(જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર, વીર્ય-રૂપ) લક્ષ્મી ।

(૯) મોક્ષકે દ્વારકો ધોલનેકા સાધન શ્રુત ચારિત્ર યથા-શ્રુત ચારિત્ર
રૂપ ધર્મ ।

(૧૦) ત્રીન લોકકા આધિપત્ય રૂપ ઐશ્વર્ય ।

ઉત્પન્ન થનારી અથવા સંસારની રક્ષા કરવાવાળી અલૌકિક ભાવનાથી
ઉત્પન્ન થનારી કીર્તિ.

(૪) ક્રોધ આદિ કષાયોંનો સર્વથા નિગ્રહરૂપ વૈરાગ્ય.

(૫) તમામ કર્મોંના ક્ષયસ્વરૂપ મોક્ષ.

(૬) સુર-અસુર અને માનવના અંતઃકરણને હરી લેવાવાળું સૌંદર્ય.

(૭) અંતરાય કર્મના નાશથી ઉત્પન્ન થનારું અનંત બળ.

(૮) ઘાતિયા કર્મ રૂપી પડદો હટી જવાથી પ્રાદુર્ભૂત હોવાવાળી અનંત
ચતુષ્ટય (જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર, વીર્ય-રૂપ) લક્ષ્મી.

(૯) મોક્ષનાં દ્વારને ઉઘાડનારું સાધન શ્રુત ચારિત્ર યથાશ્રુત ચારિત્ર
રૂપ ધર્મ.

(૧૦) ત્રણ લોકના આધિપત્ય રૂપ ઐશ્વર્ય.

સુન્દરબોધિની ટોકા કાલી રાની કે વિચાર

૮૭

‘મહાવીર’મિતિ-વીરયતિ=પરાક્રમતે મોક્ષાનુષ્ઠાને इति वीरः, મહૌશ્વાસૌ વીરો મહાવીરો=વર્ધમાનસ્વામી ચરમંતીર્થકરસ્તમ્ વન્દે=મનઃપ્રણિધાનપૂર્વકં વાચા સ્તૌમિ, નમસ્યામિ=સયત્તપશ્ચાદ્ગુણમનપૂર્વકં નમસ્કરોમિ, સત્કારયામિ=અભ્યુ-
ત્થાનાદિનિરવધક્રિયાસમ્પાદનેનાઽઽરાધયામિ, સમ્માનયામિ=મનોયોગપૂર્વકમર્હ-
દુચિતવાક્યપ્રયોગાદિના સમારાધયામિ, કલ્યાણં=કર્મબદ્ધસકલોપાધિવ્યાધિ-
બાધાવિધુરત્વાત્ કલ્યો મોક્ષસ્તમ્, આ=સમન્તાત્ નયતિ=પ્રાપ્યતીતિ
જ્ઞાનાદિરત્નત્રયલક્ષણમોક્ષમાર્ગોપદેશદાનદ્વારા (ભવિજનાન્) કલ્યાન્ જન્મ-
જરાદિરોગમુક્તાન્ આણયતિ=ધાતૂનામનેકાર્થત્વાત્ સમ્પાદયતીતિ વા કલ્યાણસ્તમ્,

(૩) મહાવીર-મોક્ષકે અનુષ્ઠાનમેં પરાક્રમ કરનેવાલે હોનેસે મહાવીર કહે જાતે હૈં, એસે મહાવીર વર્ધમાન સ્વામી ચરમ તીર્થકરકો નિર્મલ મનકે સાથ વચનસે સ્તુતિ કરૂં । યતના-પૂર્વક પાંચ અંગ નમાકર નમસ્કાર કરૂં । યતના-પૂર્વક અભ્યુત્થાન આદિ નિરવધ ક્રિયાસે ભગવાનકા સત્કાર કરૂં । મનોયોગ-પૂર્વક અર્હન્તોં કા ઉચિત વાક્ય દ્વારા સમ્માન કરૂં । કર્મબન્ધસે ઉત્પન્ન હોનેવાલી ઉપાધિ-વ્યાધિકે નાશક હોનેસે ‘કલ્ય’ કો મોક્ષ કહેતે હૈં, ઉસકો પ્રાપ્ત કરાનેકે કારણ ભગવાન્ કલ્યાણ-સ્વરૂપ હૈં । અથવા જ્ઞાનાદિ રત્નત્રયરૂપ મોક્ષ માર્ગકે ઉપદેશ દ્વારા ભવ્ય જીવોંકો જન્મ, જરા મૃત્યુરૂપ રોગસે મુક્ત કરતે હૈં, ઇસ કારણ મી કલ્યાણસ્વરૂપ હૈ ।

(૩) મહાવીર-મોક્ષના અનુષ્ઠાનમાં પરાક્રમ કરવાવાળા મહાવીર કહેવાય.

એવા મહાવીર વર્ધમાન સ્વામી ચરમ તીર્થકરની નિર્મળ મનની સાથે વાણ્પ્રીથી સ્તુતિ કરે. યતના-પૂર્વક પાંચ અંગ નમાવીને નમસ્કાર કરે. યતના-પૂર્વક અભ્યુત્થાન આદિ નિરવધ ક્રિયાથી ભગવાનનો સત્કાર કરે. મનોયોગ-પૂર્વક અર્હન્તોંનું ઉચિત વાક્યોથી સમ્માન કરે. કર્મબન્ધથી ઉત્પન્ન થનારી ઉપાધિ અને વ્યાધિના નાશક હોવાથી ‘કલ્ય’ તે મોક્ષ કહેવાય છે. તેને પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી ભગવાન કલ્યાણ-સ્વરૂપ છે. અથવા-જ્ઞાનાદિ રત્નત્રયરૂપ મોક્ષ માર્ગના ઉપદેશ દ્વારા ભવ્ય જીવોંને જન્મ જરા મૃત્યુ રૂપ રોગથી મુક્ત કરે છે. આ કારણથી પણ કલ્યાણ-સ્વરૂપ છે.



નિરયાવલિકાસૂત્ર

‘મજ્જલં=સકલહિતપ્રાપ્તવાચ્છુભમયં, યદ્વા-માં ગાલયતિ મવાબ્ધે-સ્તારયતીતિ મજ્જલઃ, અથવા-મજ્જતે=અજરામરત્વગુણેન ભવિજનાન્ ભૂષયતીતિ મજ્જો=મોક્ષસ્તં લાતિ=આદત્ત ઇતિ મજ્જલસ્તમ્, દૈવતમ્=આરાધ્યદેવસ્વરૂપમ્ અત્ર ‘દેવતૈવ દૈવતમિતિ સ્વાર્થેઽણ્’ ચૈત્યં=ચિત્તે ભવં તદસ્યાસ્તીતિ, યદ્વા-ચિત્તિર્વિશિષ્ટજ્ઞાનં તયા યુક્તમિતિ, સર્વથા વિશિષ્ટજ્ઞાનવન્તમિત્યર્થઃ, વિનયેન=પ્રતિપત્તિવિશેષેણ પર્યુપાસે=સેવે, તથા ‘ઇમં’ તિ-ઇદં=મમ હૃદયસ્થમ્ એતદ્રૂપં પુત્રવિષયકં વ્યાકરણં=પ્રશ્નં સ્વલુ=નિશ્ચયેન પ્રક્ષ્યામિ=નિર્ણેષ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા=ઇતિ મનસિ નિશ્ચિત્ય એવમ્=અનેન પ્રકારેણ સંપ્રેક્ષતે=વિચારયતિ,

સંપૂર્ણહિતકો પ્રાપ્ત કરાનેવાલે તથા ભવસાગરસે તારનેવાલે હૈં ઇસલિયે ભગવાન મજ્જલ સ્વરૂપ હૈં । અથવા અજર અમર ગુણોસે ભવ્યજનોકો ભૂષિત કરનેકે કારણ ‘મજ્જ’ કો મોક્ષ કહેતે હૈં, ઉસે જો પ્રાપ્ત કરાવે વહ મજ્જલ કહલાતા હૈ, ઇસલિયે ભગવાન મીં મજ્જલ હૈં । ઇષ્ટદેવ સ્વરૂપ હોનેસે દૈવત હૈં । વિશિષ્ટ જ્ઞાન યુક્ત હોનેસે ચૈત્ય હૈં । એસે ભગવાનકી વિનયકે સાથ નિરવધ સેવા કરૂં, ઓર મેરે હૃદયમેં સ્થિત પુત્રસમ્બન્ધી પ્રશ્નકા નિશ્ચય કરૂં । ઇસ પ્રકાર અપને મનમેં વિચારકર કાલી મહારાનીને અપને કૌટુમ્બિક (આજ્ઞાકારી) જનોકો બુલાયા ઓર આજ્ઞા દી ।

સંપૂર્ણ હિતને પ્રાપ્ત કરાવવાવાળા તથા ભવસાગરથી તારવાવાળા છે તેથી ભગવાન મંગલ-સ્વરૂપ છે. અથવા અજર અમર ગુણોથી ભવ્ય જનોને ભૂષિત કરવાના કારણે મંગલે મોક્ષ કહેલ છે. તેને જે પ્રાપ્ત કરાવે તે મંગલ કહેવાય છે. આથી ભગવાન પણ મંગલ છે. એવા ઇષ્ટદેવ-સ્વરૂપ હોવાથી દૈવત છે અને વિશિષ્ટ જ્ઞાનવાળા હોવાથી ચૈત્ય છે. એવાં ભગવાનની વિનય-પૂર્વક નિરવધ સેવા કરૂં તથા મારા હૃદયમાં રહેલ પુત્રસમ્બન્ધી પ્રશ્નનો નિશ્ચય-ખુલાસો-કરૂં. આ પ્રકારે પોતાના મનમાં વિચાર કરી કાલી મહારાણીએ પોતાના કૌટુમ્બિક (આજ્ઞાકારી) જનોને બોલાવ્યા તથા આજ્ઞા કરી.

सुन्दरबोधिनी : दीका कालीरानीका वन्दनार्थ गमन

२२

संमेक्ष्य=विचार्य, कौटुम्बिकपुरुषान्=प्रधानकर्मकारिपुरुषान्=शब्दयति=आह्वयति
शब्दयित्वा=आह्वय, एवं=वक्ष्यमाणम् अवदत्=आज्ञापयदिति ।

किमाज्ञापयत्? इत्याह—‘क्षिप्रमेवे’त्यादिना—भो देवानुम्रियाः!—हे कार्य-
करणप्रवीणाः ! यूयं धार्मिकं=धर्माय नियुक्तं धार्मिक, सात्यनेनेति यानं
रथादिकं, तत्र प्रवरं श्रेष्ठं शीघ्रगामित्वादिगुणोपेतम्, इत्युपलक्षणं तेन
‘चाउघटं, आसरहं’ इत्यनयोरपि ग्रहणम् । एतच्छाया-चतुर्घण्टम्, अश्वर-
थम् इति । चतुर्घण्टमिति-चतस्रः=पृष्ठतोऽग्रतः पार्श्वतश्च लम्बमाना घण्टा
यस्य यस्मिन् वा स चतुर्घण्टस्तम् ‘अश्वरथ’ मिति—अश्वयुक्तो रथोऽश्वरथः,
आकषार्थिवादित्वाः मध्यमपदलोपः, तस्-युक्तमेव=अश्वसारथ्यादिसहितमेव न तु
तद्रहितं, क्षिप्रं=शीघ्रमेव न तु विलम्बेन, उपस्थापयत्=प्रगुणीकुरुत, उपस्थाप्य=
प्रगुणीकृत्य यावच्छब्देन कौटुम्बिकपुरुषाः कालीदेव्याज्ञानुसारेण सर्वं कृत्वा
तदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति ॥ १६ ॥

क्या आज्ञा दी ? वह कहते हैं—हे चतुर कार्यकर्ताओं ! तुम लोग रथोंमें श्रेष्ठ-शीघ्र
गतिवाला रथ जिसके आगे पीछे और दोनों बाजुओंमें चार घण्टिकायें लगी हुई
हैं ऐसा धार्मिक अश्वरथ, सारथी आदिके सहित लाओ । कौटुम्बिक पुरुष काली
महारानीकी आज्ञा अनुसार रथ तैयार कर उनसे बोले—हे महारानी ! आपकी आज्ञानुसार
रथ तैयार है ॥ १६ ॥

हे चतुर कार्यकर्ताओं ! तमो लोको उत्तम रथ—शीघ्र गतिवाला रथ
नेनी आगण पाछण तथा जन्ने जानुओओ आर घंटाओ लगाउली ओवा धार्मिक
अश्वरथ, सारथी आदि सहित लई आवो. कौटुम्बिक पुरुषोओ काली महाराणीनी
आज्ञा प्रमाणे रथ तैयार करीने तेने कह्युं:—हे महाराणी ! आपकी आज्ञा प्रमाणे
रथ तैयार छे. (१६)

मूलम्—

तए णं सा काली देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घा-
मरणालंकेयसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगविंदपरिक्खिता अंतेउ-
राओ निग्गच्छइ, निग्गच्छिता जेणेव बाहिरिया उव्वाणसाला जेणेव
धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता धम्मियं जाणप्पवरं
दूरुइ, दूरुहिता नियगपरियालसंपरिवुडा चंपं नयरीं मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छइ,
निग्गच्छिता जेणेव पुन्नभदे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता छत्ताईए
जाव धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुइ,
पच्चोरुहिता बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगविंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं
महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो
वंदइ, वंदित्ता ठिया चैव सपरिवारा सुसुसमाणा नमंसमाणा अभिघुहा
विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासइ ॥ १७ ॥

छाया—

ततः खलु सा काली देवी स्नाता कृतबलिकर्मा यावत् अल्पमहावा-
मरणालङ्कृतशरीरा बहोभिः कुञ्जामिः यावन्महत्तरकट्टन्दपरिक्षिप्ता अन्तः-
पुराभिर्निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला, यत्रैव धार्मिको यानप्रवर-
स्तत्रोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं यानप्रवरं दूरोहति; दूरुश्च निजकपरिवार-
संपरिहृता चम्पां नगरीं मध्य-मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव पूर्णमद्रक्षेत्य-
स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य छत्रादिकं यावद् धार्मिकं यानप्रवरं स्थापयति
स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवराद् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुक्त्व बहोभिः कुञ्जामिः
यावत्-महत्तरकट्टन्दपरिक्षिप्ता यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरस्तत्रैवोपागच्छति,
उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिःकृतो वन्दते, वन्दित्वा स्थिता चैव
सपरिवारा शुश्रूषमाणा नमस्यन्ती अभिघृष्टी वित्तयेन प्राञ्जलिपुटा
पर्युपास्ते ॥ १७ ॥

टीका—

‘तएणं सा’ इत्यादि—ततः=तदनन्तरं सा पूर्वोक्ता काली देवी स्नाता=कृतस्नाना कृतबलिकर्मा=स्नाने कृते पशुपक्ष्याद्यर्थं कृताग्रभागा, जाव-
जन्देन—‘कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेस्साइं बत्थाइं पवरपरिहिया’ इत्येषां
सङ्ग्रहः । एतच्छाया च—‘कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता, शुद्धप्रवेश्यानि वस्त्राणि
प्रवरपरिधृता’ ‘कृतकौतुके’ति—कृतानि कौतुकानि मषीपुण्ड्रादीनि, मङ्गलानि=
सर्षपदध्यक्षतचन्दनदर्वादीनि च प्रायश्चित्तानीव दुःस्वप्नादिविनाशायाम्भयं-
कर्तव्यत्वात्प्रायश्चित्तानि यथा सा तथा, यथा पापविनाशार्थं प्रायश्चित्तमवश्यं
क्रियते तथैव दुःस्वप्नदोषशान्त्यर्थं दध्यक्षतादीनि मङ्गलान्यवश्यं ध्रियन्त इति
तात्पर्यम् । ‘अल्पमहर्घे’—ति—अल्पानि=स्तोकभारवन्ति महाघाणि=बहु-
मूल्यानि यानि आभरणानि=भूषणानि तैरलङ्कृतं=भूषितं शरीरं यस्याः सा—

‘तएणं सा’ इत्यादि—बाद रानीने स्नान किया और पशु पक्षी आदिके लिये
अन्नका भाग निकालनेरूप बलिकर्म किया और दृष्टिदोष (नजर) निवारणके
लिये मषी (काजल) का चिह्न किया और पाप नाश करनेके लिए जैसे प्रायश्चित्त
किया जाता है वैसे ही दुःस्वप्न आदि दोषोंके निवारणके लिए मङ्गलरूप सरसों,
वही, चावल, चन्दन और दूब आदिको धारण किया, तथा अल्प भार किन्तु बहु
मूल्य भूषणोंसे शरीरको भूषित किया और सेवापरायण कुबड़ी आदि १८ अठारह

‘तएणं सा’ इत्यादि. पक्षी राष्ट्रिओ स्नान कथुं तथा पशु पक्षी आदिने भाटे
अन्नको भाग काढवा इपी अलिकर्म कथुं तथा दृष्टिदोष (नजर) ना निवारणने
भाटे मषी (काजल)नु चिह्न कथुं तथा पापनाश करवा भाटे नेम प्रायश्चित्त
कराय छे तेवीज रीते दुःस्वप्न आदि दोषोना निवारणने भाटे भंजलरूप सरसव,
वही, चावल, चंदन तथा दूबा वबेरेने धारण कथा; तथा वजनभां अल्प पक्ष
किम्मतभां भारे ओवां धरेबांथी शरीरने शेषुगारु. सेवापरायण कुबड़ी

१२

निरुपल्लिकायम्

अल्पमहाघाभरणालङ्कृतशरीरा, बद्धीभिः=प्रचुराभिः, कुब्जाभिः=कुब्जशरीराभिः
 सेवापरायणदासीभिः 'जाव' शब्देन—“चिलाईहि वामणाहि १,
 बडहाहि २, बब्बरीहि ३, बउसियाहि ४, जौनयाहि ५, पल्हवियाहि ६,
 ईसिणियाहि ७, वासिणियाहि ८, लासियाहि ९, लउसियाहि १०, दवि-
 डीहि ११, सिहलीहि १२, आरबीहि १३, पकणीहि १४, बहलीहि १५,
 मुण्डीहि १६, सबरीहि १७, पारसीहि १८, पाणादेसाहि इगियचितिय-
 पत्थियवियाणियाहि,” इत्येषां सङ्ग्रहः ।

चिलातीभिः = अनार्यदेशोत्पन्नाभिः—वामनाभिः = ह्रस्वशरीराभिः १,
 बटभाभिः=मडहकोष्ठाभिः २, बर्बरीभिः=बर्बरदेशसंभवभिः ३, बकुशिकाभिः ४,
 यौनकाभिः ५, पल्हविकाभिः ६, इसिनिकाभिः ७, वासिनिकाभिः ८,

प्रकारकी दासियोंको साथ चलनेका हुक्म दिया । उन दासियोंके नाम इस प्रकार हैं—
 (१) 'चिलाती' चिलत नामके अनार्य देशमें उत्पन्न होनेवाली 'कुब्जा'-कूबडी तथा 'वामना'-
 ठिंगनी दासियाँ, (२) 'बटभा'—जिस देशमें छोटे-छोटे पेटवाले जन्मते हैं उस देशकी,
 (३) 'बर्बरी'—बर्बर देशकी, (४) 'बकुशिका'—बकुश देशकी, (५)
 'यौनका'—यौन देशकी, (६) 'पल्हविका'—पल्ह देशकी, (७) 'इसि-
 निका'—इसिनिक देशकी, (८) 'वासिनिका'—वासिनिक देशकी,

दासीओं, आदि १८ प्रकारकी दासीओंके साथे ब्यालवाने हुक्म किये तेनां नाम आ
 प्रकारे छेः—(१) चिलात नामका अनार्य देशमा उत्पन्न थनारी कुबडी अने ठिंगणी
 दासीओं, (२) के देशमा नाना नामा पेटवाणां जन्म के छे ते देशनी,
 (३) बर्बर देशनी, (४) बकुश देशनी, (५) यौन देशनी, (६) पल्ह देशनी,
 (७) इसिनिक देशनी, (८) वासिनिक देशनी, (९) वासिनिक देशनी, (१०) लकुश देशनी

सुहृत्सोचनी क्रोका १८-देशकी दासियां

असिकाभिः ९, लकुशिकाभिः १०, द्राविडीभिः ११, सिंहलीभिः १२, आरबीभिः १३, पक्कणीभिः १४, बहुलीभिः १५, मुसण्डीभिः १६, शबरीभिः १७, पारसीभिः १८, नानादेशाभिः=बहुविधदेशोत्पन्नाभिरित्यर्थः, इक्षितचिन्तितप्रार्थितविज्ञायिकाभिः, इक्षितेन=नेत्रवक्त्रहस्तांगुल्यादिवेषैः

(९) 'लासिका'—लासिक देशकी, (१०) 'लकुशिका'—लकुश देशकी, (११) 'द्राविडी'—द्रविड देशकी, (१२) 'सिंहली'—सिंहल देशकी, (१३) 'आरबी'—अरब देशकी, (१४) 'पक्कणी'—पक्कण देशकी, (१५) 'बहुली'—बहुल देशकी, (१६) 'मुसण्डी'—मुसण्ड देशकी, (१७) 'शबरी'—शबर देशकी, और (१८) 'पारसी'—पारस देशकी दासियाँ ।

इस प्रकारकी अनेक देशमें उत्पन्न होनेवाली दासियाँ, जो इक्षित, चिन्तित, प्रार्थितको जाननेवाली थीं ।

'इक्षित' का अर्थ—नेत्र, मुख, हाथ तथा अंगुली आदिके इशारेसे अभिप्रायको जानना ।

(११) द्रविड देशनी. (१२) सिंहल द्वीप देशनी (१३) अरब देशनी. (१४) पक्कण देशनी. (१५) बहुल देशनी. (१६) मुसण्ड देशनी. (१७) शबर देशनी. तथा (१८) पारस देशनी दासीयाँ.

आवी रीते अनेक देशमा उत्पन्न थनेारी दासीयाँ धिगित, चिन्तित, प्रार्थितने भाषुवा वाणी हुती.

'धिगित' नो अर्थ, नेत्र, मुख, हाथ तथा आंगुली आदिमा धिशारेसे अभिप्रायने भाषुवा.

૨૬.

શિરયાવલિકાસુત્ર

વિશેષેણ ચિન્તિતં=હદિ માવિતં, પ્રાર્થિતં ચ=અભિલષિતં ચ વિજાનન્તિ
 વાસ્તવા, તામિઃ=બુધ્યમાનામિઃ, યુક્તેતિ શેષઃ । તથા 'મહત્તરે'તિ-અતિ-
 કથૈન મહાન્=મહત્તરઃ સ એવ મહત્તરકઃ=અન્તઃપુરસ્કકઃ, તેષાં હૃન્દમ્=નાના-
 વેષોત્પન્નચેટકસમૂહસ્તેન 'પરિશિષ્ઠા' =પરિ=સર્વતઃ શિષ્ઠા=મધ્યેઃ સ્થાપિતા,
 વથા સતી અન્તઃપુરાત્ નિર્ગચ્છતિ=બહિર્નિઃસરતિ નિર્ગત્ય યત્રૈવ=યસ્મિન્નેવ
 સ્થાને વાહ્યા=બહિર્ભવા ઉપસ્થાનશાલા=ઉપવેશનમण्डपः યત્રૈવ=યસ્મિન્નેવ સ્થલે
 ધાર્મિકયાનપ્રવરઃ=રથાદિયાનોત્તમઃ, તત્રૈવ=તસ્મિન્નેવ સ્થાને ઉપાગચ્છતિ=સમુ-
 પૈતિ, ઉપાગત્ય=ધાર્મિકયાનપ્રવરસમીપમાગત્ય ધાર્મિક=ધર્માય નિયુક્તં યાનપ્ર-
 વરં દૂરોહતિ=આરોહતિ, દૂરુહ=ઉક્તયાનપ્રવરમારુહ 'નિજકે' તિ-નિજા એવ
 નિજકાઃ=સ્વકીયાઃ પરિવારાઃ=દાસ્યાદયઃ, તૈઃ સંપરિવૃતા=પરિવેષ્ટિતા, ચમ્પાં
 નગરીં મધ્યમધ્યેન=ચમ્પાનગર્યાં મધ્યભાગેન નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય યત્રૈવ પૂર્ણમદ્રે

‘ચિન્તિત’-હૃદયકે ભાવકો અનુમાનસે સમજના ।

‘પ્રાર્થિત’-અભિલષિતકો અનુમાનસે જાનના ।

ऐसी दासियोंके साथ अन्तःपुररक्षक पुरुषवृन्दसे तथा अनेक देशमें उत्पन्न
 होनेवाले दाससमूहसे घिरी हुई अन्तःपुरसे बारह निकलकर भवनके सभा-मण्डपमें
 जिस स्थलपर धार्मिक रथ था वहाँ आई और रथमें बैठी । बाद अपने सब परिवार
 के साथ चम्पा नगरीके बीच-रास्तेसे होकर जहाँ पूर्णभद्र चैत्य था वहाँ पहुँची ।

‘ચિન્તિત’-હૃદયના ભાવને અનુમાનથી સમજવો.

‘પ્રાર્થિત’-અભિલષિત (ઇચ્છા જેની હોય તે) અનુમાનથી જાણવું.

એવી દાસીઓની સાથે અંતઃપુરરક્ષક પુરુષવૃંદથી તથા અनेक देशના
 ઉત્પન્ન થનારા દાસસમૂહથી ઘેરાયેલી અંતઃપુરથી બહાર નીકળીને ભવનના સભા-
 મંડપમાં જે ઠેકાણે ધાર્મિક રથ હતો ત્યાં જઈ રથમાં બેઠી. પછી પોતાના સઘળા
 પરિવારની સાથે અંપા નગરીના મધ્ય રસ્તામાં મધ્યે જ્યાં પૂર્ણભદ્ર ચૈત્ય હતો

कुन्दरशोचिनी टीका धर्मकथा

चैत्यं तत्रैव उपागच्छति=समायाति, उपागत्य 'छत्राईए' छत्रादिकान्
 'यावत्'—शब्देन तीर्थकरातिशेषान् पश्यति, दृष्ट्वा धार्मिकं यानप्रवरं स्थापयति,
 स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवराद्=धार्मिकरथात् प्रत्यवरोहति=अधस्तादवत-
 रति, प्रत्यवरुह्य=अवतीर्थ बह्वीभिः कुब्जाभिः=पूर्वोक्तदासीभिर्युक्ता यावत्-
 महत्तरकवृन्दपरिक्षिप्ता पञ्चाभिगमपुरस्सरं यत्रैव=यस्मिन्नेव पूर्णभद्रोद्याम्ने
 भगवान् महावीरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिः-
 कृत्वो वन्दते, च=पुनः स्थितैव सपरिवारा शुश्रूषमाणा=सेवमाना नमस्यन्ती
 अभिमुखी=सम्मुखं स्थिता त्रिनयेन=नम्रभावेन प्राञ्जलिपुटा=ललाटतटसविनय-
 विन्यस्तकरकमला पर्युपास्ते=सेवते ॥ १७ ॥

मूलम्—

तए णं समणे भगवं जाव कालीए देवीए तीसे य महतिमहालयाए
 घम्मकहा भाणियव्वा जाव समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे
 आणाए आराहए भवइ ॥ १८ ॥

और तीर्थकरके छत्र आदि अतिशयोको देखकर अपने रथको स्थापित किया और
 रथसे नीचे उतरी। फिर अपने सब परिवारके साथ पांच अभिगम—पूर्वक जहाँ
 भगवान् विराजते हैं वहाँ पहुँचकर विधिपूर्वक वन्दना—नमस्कार किया, और सपरिवार
 भगवान्के सम्मुख नतमस्तक हो विनयके साथ अञ्जलिपुटको ललाटपर रखती हुई
 खड़ी होकर सेवा करने लगी ॥ १७ ॥

त्यां पडोंची. तथा तीर्थकरानां छत्रादि अतिशयोक्तेन जेधने पोताना रथने उठे राणी
 नीचे उतरी अने पछी पोताना सधजा परिवार साथे पांच अभिगम—पूर्वक
 जहाँ भगवान् विराजता हता त्यां पडोंचीने विधिपूर्वक वन्दना—नमस्कार कया
 तथा सपरिवार भगवान्को सम्मुख माथुं नमस्कीने विनयपूर्वक अञ्जलि पुटने
 (जेडेवा हाथने) ललाट पर राणी जहाँ रहने सेवा करवा लागी. (१७)



छाया—

ततः खलु श्रमणो भगवान् यावत् काल्यै देव्यै तस्यां च महाति-
महालयायां परिषदि धर्मकथा भणितव्या यावत् श्रमणोपासको वा श्रमणो-
पासिका वा विहरन् आज्ञाया आराधको भवति ॥ १८ ॥

टीका—

‘तएणं समणे’ इत्यादि-ततः=तदनन्तरं श्रमणो भगवान् महावीरः
यावत्-सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तुकामः, काल्यै देव्यै तस्यां=पूर्वोक्तायां
महाति-महालयायां=अतिविशालायां परिषदि धर्मकथा भणितव्या=कथयितव्या,
धर्मकथास्वरूपं विस्तरत उपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसंजीविन्याख्यायां
व्याख्यायां विलोकनीयं विशेषजिज्ञासुभिरिति ।

‘जाव’ शब्देन—‘एयस्स अगारधम्मस्स अणगार-
धम्मस्स सिक्खाए उट्ठिए’ इत्येषां सङ्ग्रहः । एतच्छाया च—

‘तएणं समणे’ इत्यादि । बाद मोक्षगामी श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने
काली महारानीको लक्ष्य करके विशाल परिषदमें धर्मकथा कही । धर्मकथाका विशेष
वर्णन जाननेके जिज्ञासुओंको हमारी बनाई हुई उपासकदशाङ्ग सूत्रकी अगारधर्म-
संजीवनी नामक टीकामें देखना चाहिये ।

‘तएण समणे’ इत्यादि. बाद मोक्षगामी श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने
काली महारानीने लक्ष्य करी विशाल परिषदमां धर्मकथा कही. धर्मकथानु विशेष
वर्णन जानुवा मोटे लुझासुओंके हमारी बनावेटी उपासकदशाङ्ग सूत्रकी अगार
धर्मसंजीवनी नामकी टीकामां लेख देखु लेखके.

सुन्दरबोधिनी टीका कालीपूछा

९७

‘एतस्य अगारधर्मस्य अनगारधर्मस्य शिक्षायाम् उत्थित’ इति । एतस्यागार-
धर्मस्यानगारधर्मस्य शिक्षायामुत्थितः=उद्यतः श्रमणोपासकः=श्रावकः श्रम-
णोपासिका=श्राविका वा द्वावपि विहरन्तौ आज्ञायाः=भगवदाज्ञायाः आराधकौ
भवतः ॥ १८ ॥

अथ कालीवक्तव्यमाह—‘तएणं सा’ इत्यादि ।

मूलम्—

तएणं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं
सोच्चा निसग्गम हट्ठ-जाव-हियया समणं भगवं महावीरं तिवसुत्तो जाव एवं
वयासी-एवं खल्ल भंते ! मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहि जाव
रहमुसलसंगामं ओयाए, से णं भंते किं जइस्सइ ? नो जइस्सइ ? जाव
काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा ? । कालीति समणे भगवं महा-
वीरे कालिं देविं एवं वयासी-एवं खल्ल काली ! तव पुत्ते काले कुमारे
तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव कूणिणं रत्ता सद्धिं रहमुसलं संगामं
संगामेमाणे हयमहियपवरवीरघाइयनिवडियचिंधज्झयपडागे निरालोयाओ
दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रत्तो सपक्खं सपडिदिसिं रहेणं पडिरहं
हव्वमाणए ॥ १९ ॥

छाया—

ततः खल्ल सा काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तिके
धर्मे श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावत्-हृदया श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिकूलो

‘जाव’ शब्दसे अगार अनगार धर्मकी शिक्षामें तत्पर श्रावक और श्राविका
को भगवानकी आज्ञाके आराधक जानना ॥ १८ ॥

‘जाव’ शब्दसे अगार अनगार धर्मकी शिक्षामें तत्पर श्रावक तथा
श्राविकाने भगवानकी आज्ञाका आराधक समझना ॥ १८ ॥

यावदेवमवादीत्-एवं खलु भदन्त ! मम पुत्रः कालः कुमारः त्रिभिर्दन्ति-
सहस्रैः यावत्-रथमुशलसङ्ग्रामम् अवयातः, स खलु भदन्त ! किं जेष्यति ?
नो जेष्यति ? यावत् कालं खलु कुमारमहं जीवन्तं द्रक्ष्यामि ? कालि !
इति श्रमणो भगवान् महावीरः कालीं देवीमेवमवादीत्-एवं खलु कालि !
तव पुत्रः कालः कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावत् कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं रथ-
मुशलं सङ्ग्रामं सङ्ग्रामयन् हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताकः
निरालोका दिशः कुर्वन् चेटकस्य राज्ञः सपक्षं सप्रतिदिक् रथेन प्रतिरथं
दृव्यमागतः ॥ १९ ॥

टीका—

ततः=धर्मकथाश्रवणानन्तरं, काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य
अन्तिके=समीपे धर्म=श्रुतचारित्रलक्षणं श्रुत्वा=कर्णविषयीकृत्य निश्चयः=हृदये-
नाश्वधार्यं दृष्ट-यावत्-हृदया-दृष्टतुष्टचित्तानन्दिता हर्षवशविसर्पद्दहदया सती
श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिःकलः=त्रिवारं यावत्-वन्दित्वा नमस्यित्वा एवं=

अब काली रानीके प्रश्नका वर्णन करते हैं—‘तएणं सा’ इत्यादि ।

श्रमण भगवान् महावीरके समीप श्रुतचारित्रलक्षण धर्म सुनकर और उसे
हृदयमें धारणकर प्रफुल्लित हो तीन बार वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार भगवानसे
पूछने लगी—

હવે કાલી રાણીના પ્રશ્નનું વર્ણન કરે છે.—‘તણં સા’ ઇત્યાદિ.

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસેથી શ્રુતચારિત્રલક્ષણ ધર્મ સાંભળીને
તથા તેને હૃદયમાં ધારણ કરી પ્રફુલ્લિત થઈ ત્રણ વાર વંદન-નમસ્કાર કરી આવી
રીતે ભગવાનને પૂછવા લાગી—

सुन्दरबीचिनी टीका कालकुमारवृत्तान्त

९२

वक्ष्यमाणम् अवादीत्=अवोचत्-हे भदन्त ! खलु=निश्चयेन एवम्=अनेन प्रकारेण मम पुत्रः कालः कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः=हस्तिसहस्रैः, 'जाव'शब्देन-त्रिभिस्त्रिभी रथाश्वसहस्रैर्मनुष्याणां तिसृभिः कोटिभियुक्तो रथमुशलं सङ्ग्रामम् अवयातः=समुपागतः, हे भदन्त ! सः=कालः कुमारः खलु=निश्चयेन किं जेष्यति ? वा नो जेष्यति ? यावच्छब्देन-जीविष्यति ? नो जीविष्यति ? पराजेष्यते ? नो पराजेष्यते ? अहं कालं कुमारं खलु=निश्चयेन जीवन्तं द्रक्ष्यामि ? । इति कालीदेवीप्रश्नं श्रुत्वा श्रमणो भगवान् महावीरः एवं=वक्ष्यमाणं प्रतिवचनम् अवादीत्=अवोचत्, हे कालि ! एवं खलु तव पुत्रः कालः कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावच्छब्देन युद्धसामग्रीयुक्तः, कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं रथमुशलं संग्रामं सङ्ग्रामयन्=संग्रामं कुर्वन् 'हतमथिते'-ति-

हे भगवन् ! मेरा पुत्र कालकुमार तीन २ हजार हाथी-घोड़े-रथ और तीन करोड़ पैदल सेनाके साथ रथमुशल संग्राममें गया है वह विजयी होगा या नहीं ?, वह जीवित रहेगा या नहीं ?, वह पराभवको पायेगा या जीतेगा ?, मैं उसे जिन्दा देखूँगी या नहीं ?,

ऐसे काली महारानीके प्रश्नोंको सुनकर, भगवान् बोले—

हे काली महारानी ! तेरा पुत्र कालकुमार तीन २ हजार हाथी-घोड़े-रथ और युद्धकी समस्त, सामग्री सहित कूणिक राजाके साथ रथमुशल संग्राममें युद्ध

हे भगवन् ! मेरे पुत्र कालकुमार त्रय त्रय हजार हाथी-घोड़ा-रथ तथा त्रय करोड़नी पायदल सेनानी साथे रथमुशल संग्रामभां गये छे ते विजयी थये के नहि ?, ते जिवतो रहये के नहि ?, ते हारी जये के जितये ?, हुं तेने जिवतो देखीश के नहि ?,

आवा काली महाराणीना प्रश्नो सांभलीने भगवान् बोल्या-हे काली महाराणी ! तारे पुत्र कालकुमार त्रय त्रय हजार हाथी-घोड़ा-रथ तथा युद्धभी तमात्र सामग्री साथे कूणिक राजानी साथे रथमुशल संग्रामभां युद्ध करतो भेडा सेना

१००

निर्यावलिक्काखम्

सैन्यगतहतत्वारोपात् हतः, मानगतमथितत्वारोपात् मथितः, प्रवरराश्वते वीराः प्रवरवीराः=सुभटाः, घातिताः=विनाशिता यस्य स प्रवरवीरघातितः आर्षत्वात् निष्ठान्तस्य पूर्वप्रयोगः, चिह्नस्य=सैन्यलक्षणस्य ध्वजाः=गरुडचिह्न-युक्ताः केतवः, पताकाश्च चिह्नध्वजपताकाः, निपातिताः चिह्नध्वजपताका यस्य स निपातितचिह्नध्वजपताकः, हतो मथितः प्रवरवीरघातितश्चासौ निपा-तितचिह्नध्वजपताकः=हतमथितप्रवरवीरघातितनिपातितचिह्नध्वजपताकः, तादृशः सन् निरालोकाः=हतप्रभाः दिशः कुर्वन्-सर्वदिशः प्रभारहिताः कुर्वन् चेटकस्य राज्ञः सपक्षं-समानौ पक्षौ=वामदक्षिणपार्श्वौ यस्य (आगमनस्य) तत् सपक्षं यथास्यात्तथा आगत इत्यनेनान्वयः, क्रियाविशेषणम्, अतः सामान्ये नपुंसकम्, एवं सप्रतिदिक्=समानाः प्रतिदिशो यस्य तत् सप्रति-दिक् समानप्रतिदिक्त्वेन परस्परमभिमुखं यथास्यात्तथा, इदमपि क्रियाविशेषणम्, रथेन प्रतिरथं-प्रतिगतः=संमुखः रथो यस्य तत् प्रतिरथं=रथाभिमुखं यथा-स्यात्तथा हव्यं=शीघ्रम् आगतः=आयातः, चेटकराजस्य सर्वथा सम्मुखं समागत इत्यर्थः ॥ १९ ॥

मूलम्—

तए णं से चेडए राया कालं कुमारं एजमाणं पासइ, कालं

करता हुआ वह अपनी सेना और सारी रणसामग्रीके नष्ट होजाने पर, बड़े २ वीरों के मारे जाने और घायल होने पर तथा ध्वजा पताका आदि चिन्होंके धराशायी होजानेसे अकेला ही अपने पराक्रमसे सभी दिशाओंको निस्तेज करता हुआ रथपर बैठकर चेटक राजाके रथके सामने महावेगसे आया ॥ १९ ॥

तथा रणसामग्री तमाभ नाश पाभवा पछी, मोटा मोटा वीरानां मरणथी अने घायल भवाथी तथा ध्वज पताका आदि चिन्हो जमीनहोस्त थछ भवाथी ओकेलो ज पोताना पराक्रमथी अभी हिसाओने निस्तेज ठरतो थछे रथमां ओसीने चेटक राजान्ना रथवी अने महावेगशी आओये. (१९)

सुन्दरबोधिनी टीका कालकुमारवृत्तान्त

१०१

एज्जमाणं पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उमुं परामुसइ, परामुसित्ता वइसाहं ठाणं ठाइ, ठाइत्ता आययकण्णाययं उमुं करेइ, करित्ता कालं कुमारं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ । तं कालगए णं काली ! काले कुमारे नो चेव णं तुमं कालं कुमारं जीवमाणं पासिहिसि ॥ २० ॥

छाया—

ततः खलु स चेटको राजा कालं कुमारम् एजमानं पश्यति । कालमेजमानं दृष्ट्वा आशुरुप्तः यावत् मिसमिसन् धनुः परामृशति, परामृश्य इषुं परामृशति, परामृश्य वैशाखं स्थानं तिष्ठति, स्थित्वा आयतकर्णायतमिषुं करोति, कृत्वा कालं कुमारमेकाहृत्यं कूटाहृत्यं जीविताद् व्यपरोपयति । तत् कालगतः खलु कालि ! कालः कुमारः नो चैव खलु त्वं कालं कुमारं जीवन्तं द्रक्ष्यसि ॥ २० ॥

टीका—

‘तएणं से चेडए’ इत्यादि—ततः=कूणिकस्य रणे चेटकसम्ममुखगमनान्तरं सः=पूर्वोक्तः प्रसिद्धो वा चेटको राजा एजमानम्=आयान्तं कालं कुमारं पश्यति, एजमानं कालं कुमारं दृष्ट्वा=अवलोक्य आशुरुप्तः=शीघ्रकोपाविष्टः, जाव शब्देन—‘रुडे, कुविए, चंडिकिए,’ एतेषां सङ्गोहः । एतच्छाया-रुष्टः, कुपितः, चाण्डिकियतः, इति ॥ रुष्टः=रोषयुक्तः, कुपितः=अन्तःस्मित-

‘तएणं से चेडए’ इत्यादि । तदनन्तर चेटक राजा कालकुमारको अपने सम्मुख आया हुआ देखकर तत्क्षण क्रुद्ध हो उठे, रुष्ट हुए और आन्तरिक कोपके कारण उनके होठ फडफडाने लगे, उन्होंने रौद्ररूप धारण किया एवं क्रोधकी

‘तएणं से चेडए’ इत्यादि तयार भाव चेटकराज कालकुमारने पोतानी सम्मुख आवेत्तो जेधने तत्क्षण केचित् यध गथा, इष्ट यथा तथा आन्तरिक क्रोध ने दीर्घ तेम डोढ इच्छन्वा छाया, तेमडे रौद्र (अयानक) रूप धारण कर्तुं जेव डोढकी

क्रोधेन प्रस्फुरदधरः, चाण्डिक्रियतः=चाण्डिक्रयं=रौद्ररूपत्वं संजातमस्येति चाण्डिक्रियतः=प्रकटितरौद्ररूपः, मिसमिसन्=देदीप्यमानः क्रोधज्वाल्या ज्वलन् इत्युपलक्षणम्, तेन 'तित्रलियं मिउडिं निडाले साहट्टु' इत्येषामपि ग्रहणम् । त्रिवलिकां=भ्रुकुटिं नेत्रविकारविशेषं ललाटे संहृत्य=विधाय धनुः=शरासनं परामृशति=सज्जीकरोति, इषुं=बाणं परामृशति=धनुषि संयोजयति, उपसर्गबलात्तत्तदर्थो धातूनामनेकार्थत्वाद्वा, परामृश्य=धनुः शरं च परस्परं संयोज्य वैशाखं स्थानं योधस्थानविशेषं तिष्ठति=आश्रयति, स्थिता=योधस्था-नमाश्रित्य इषुं=बाणं आयतकर्णायतम्=आकर्णान्तं करोति=कर्षयति कृत्वा=आकर्णान्तं बाणमाकृष्य कालं कुमारमेकाहृत्यम्-एकैवाऽऽहृत्या आहननं प्रहारो यत्र (जीवितव्यपरोपणे) तदेकाहृत्यं 'क्रियाविशेषणं' तत्, एवं कूटाहृत्यं कूटे इव तथाविधपाषाणसम्पुटादौ कालविलम्बाभावसाधर्म्याद् आहृत्या=हननं यत्र तत् कूटाहृत्यं, कूटस्येव पाषाणमयमहामारणयन्त्रस्येवाहृत्याऽऽहननं वा यत्र तत् कूटाहृत्यम्, इदमपि क्रियाविशेषणम्,—तद् यथास्यात्तथा जीविताद्

ज्वालासे जलने लगे । ललाटपर आवेशसे तीन सल चढ़ाते हुए धनुषको सज्ज किया और उसपर बाण चढ़ाकर युद्ध स्थलमें खड़े होगये और बाणको कान तक खींचा, अन्तमें चेटकने—कूट, अर्थात् बहुत बड़ा पथरका बनाया हुआ 'महाशस्त्रविशेष' जिसके एक वारके

ज्वालाथी भजवा बाज्या. आवेशथी कपाज उपर त्रशु रेभा यडावीने धनुष सज्ज करी तेना उपर बाण यडावीने युद्धनी जगोअे जिला रह्या अने बाणुने कान सुधी खे'यु'. आअरे चेटके 'कूट' अर्थात् अहु मोटा पथरतुं अनावेल 'महाशस्त्र-विशेष' तेना ओके वारना प्रहारथीअ बाण तीकरी अय तेनी चेटे बाणुने प्रणव

सुन्दरबोधिनी टीका काली रानीको पुत्रशोक

१०३

व्यपरोपयति=व्यपगमयति इन्तीति यावदिति, हे कालि ! तत्=तस्मात्
कारणात् खलु=निश्चयेन कालगतः=कालवशं प्राप्तः कालः कुमारः । नैव खलु
त्वं कालं कुमारं जीवन्तं द्रक्ष्यसि=अवलोकयिष्यसि ॥ २० ॥

मूलम्—

तएणं सा काली देवी श्रमणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा
निसम्म महया पुत्तसोएणं अप्फुन्ना समाणी परसुनियत्ताविव चंपगलया
धसत्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिया । तएणं सा काली देवी मुहुत्तं-
तरेणं आसत्था समाणी उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ
नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते !,
अवित्तहमेयं भंते !, असदिद्धमेयं भंते !, सच्चेणं एसमट्ठे से जहेव तुब्भे
वदह,—त्तिकट्ठु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता तमेव
धम्मियं जाणप्पवरं दूरुहइ दूरुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं
पडिगया ॥ २१ ॥

छाया—

ततः खलु सा काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके
एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य महता पुत्रशोकेन आक्रान्ता सती परशुनिकृतेव चम्पक-
लता 'धस' इति धरणीतले सर्वाङ्गः संनिपतिता । ततः खलु सा काली
देवी मुहूर्तान्तरेण आस्वस्था सती उत्थया उत्तिष्ठति, उत्थाय श्रमणं
भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—एवमेतद्

प्रहारसे ही प्राण निकल जाय, उसी प्रकार बाणके प्रबल प्रहारसे कालकुमारके प्राण
लेलिये, इस लिए हे काली ! तू कालकुमारको जीवित नहीं देखेगी ॥ २० ॥

प्रहार करी कालकुमारने। प्राण लई दीधो। आधी छे काली ! तू कालकुमारने
जीवित देखे नहि (२०)

भदन्त ! तथ्यमेतद् भदन्त ! अवितथमेतद् भदन्त ! असंदिग्धमेतद् भदन्त !, सत्यः खलु एषोऽर्थः तद् यथैतद् यूयं वदथ, इति कृत्वा श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा तमेव धार्मिकं यानप्रवरं दूरोहति, दूरुह्य यस्या दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता ॥२१॥

टीका—

‘तएणं सा’ इत्यादि—ततः=पुत्रवृत्तान्तश्रवणानन्तरं सा काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तिके=समीपे एतम्=‘कालं कुमारं जीवितं न द्रक्ष्यसी’ति अर्थ=वृत्तान्तं श्रुत्वा=आकर्ष्य निश्चिन्त्य=हृदयेनावधार्य महता=विशालेन पुत्रशोकेन=कालकुमारनामकनिजसुतमरणजन्यदुःखेन ‘अप्फुण्णा’ इति—आक्रान्ता व्याप्ता सती परशुनिकृतेव=कुठारच्छिन्ना चम्पकलता इव ‘धस’ इति धरणीतले सर्वाङ्गैः समूर्च्छं संनिपतिताः । ततः=वत्पश्चात् सा काली देवी मुहूर्तान्तरेण=अन्तर्मुहूर्तानन्तरम् आस्यस्था=लब्धवैतन्या सती उत्थया=कथमपि दास्यादिना उत्थानक्रियया उत्तिष्ठति, उत्थाय श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते, नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवं=वक्ष्यमाणम् अवादीत्—हे भदन्त ! एतत्=भवद्भाषितम्, एवम्=एवमेवाऽस्ति,

‘तएणं सा’ इत्यादि—भगवानके समीप अपने पुत्रका ऐसा वृत्तान्त सुनकर और उसे निश्चयस्वरूप समझकर काली महारानी पुत्रमरणके दुःखसे दुःखित होकर कुठारसे कटी हुई चम्पकलताके समान मूर्च्छित हो घड़ामसे भूमिपर गिर पड़ी । कुछ समय पश्चात् सचेष्ट होकर दासी आदिके द्वारा खड़ी हुई । बाद भगवानको वन्दन नमस्कार करके बोली—हे भदन्त ! जैसा आप कहते हैं, वैसा ही है,

‘तएणं सा’ इत्यादि. भगवाननी पासैथी पोताना पुत्रनुं ओवुं वृत्तांत सांलणीने तथा ते नञ्जी सभञ्जेने कादी मझारणी पुत्रमरणना दुःखथी दुःखित भवने नेम कुड़ाडीथी कषायेदी यंपकलता पडी जाय तेम मूर्च्छित थवने नमीन पर घडाके पडी गइ. थोडा वअत पछी येतना आनी तथा दासीओनी मददथी जिवी थर. पछी भगवानने वंदन नमस्कार करीने ओदी—हे भदन्त नेम आप

सुन्दरबोधिनी टीका गौतमप्रश्न

१०५

तथ्यम्=यथार्थम्, हे भदन्त ! अवितथम्=यथार्थस्वरूपनिरूपकम्, हे भदन्त ! असंदिग्धम्=संशयविपरीतानव्यवसायवर्जितम्, हे भदन्त ! एषः=भवदुक्तः अर्थः=भावः खलु=निश्चयेन सत्यः=सम्यग्निर्णायकः, तद् यथा=येन प्रकारेण यूयमेतद्वदथ, इति कृत्वा=इति भगवत्समीपे निवेद्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा तमेव=पूर्वोक्तमेव धार्मिकं यानप्रवरं दूरोहति, दूरुह्य यस्या दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता ॥२१॥

कालीराज्ञया गमनानन्तरं गौतमः पृच्छति-‘भंतेत्ति’ इत्यादि ।

मूलम्—

भंतेत्ति भगवं गोयमे जाव वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-कालेणं भंते ! कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव रहसुसलं संगामं संगामेमाणे चेंडणं रत्ता एगाहचं कूडाहचं जीवियाओ ववरोविण समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गण ? कहिं उववन्ने ? । गोयमाइ समणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव जीवियाओ ववरोविण समाणे कालमासे कालं किच्चा चउत्थीण पंकप्पभाण पुठवीण हेमाभे नरगे दससागरोवमद्विण्णसु नेरइण्णसु नेरइयत्ताण उववन्ने ॥ २२ ॥

छाया—

भदन्त ! इति भगवान् गौतमः यावद् वन्दते नमस्यति वन्दित्वा

यथार्थ है, सन्देह रहित है, सत्य है और सर्वथा सत्य है । ऐसा कहकर भगवान् को वन्दन-नमस्कार करके पूर्वोक्त धार्मिक रथमें बैठकर अपने स्थानपर गयी ॥२१॥

कहो छो तेमन् छे. यथार्थ छे. शंकरहित छे. सत्य छे तथा सर्वथा सत्य छे. ओम् कहो भगवानने वंदन नमस्कार करी अगाछि पशुवेदा धार्मिक रथमां ओसीने पोताना स्थाने भळ. (२१)

૬૦૬

નિર્યાવલિકાસૂત્ર

નમસ્યિત્વા એવમવાદીત્-કાલઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કુમારઃ ત્રિભિર્દન્તિસહસ્રૈ-
 ર્યાવદ્ રથમુશલં સંગ્રામં સંગ્રામયન્ ચેટકેન રાજ્ઞા એકાહત્યં કૂટાહત્યં જીવિ-
 તાદ્ વ્યપરોપિતઃ સન્ કાલમાસે કાલં કૃત્વા ક ગતઃ ? ક ઉપપન્નઃ ? ।
 ગૌતમ ! ઇતિ શ્રમણો ભગવાન્ મહાવીરઃ ગૌતમમેવમવાદીત્-એવં સ્વલુ
 ગૌતમ ! કાલઃ કુમારત્રિભિર્દન્તિસહસ્રૈર્યાવદ્ જીવિતાદ્ વ્યપરોપિતઃ સન્
 કાલમાસે કાલં કૃત્વા ચતુર્થ્યા પદ્મપ્રભાયાં પૃથિવ્યાં હેમાખે નરકે દશસા-
 ગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષુ નૈરયિકતયા ઉપપન્નઃ ॥ ૨૨ ॥

ટીકા—

હે ભદન્ત ! ઇતિ સંબોધ્ય-ભગવાન્ ગૌતમઃ યાવત્=મોક્ષગતિપ્રાપ્ત
 શ્રમણં ભગવન્તં મહાવીરં વન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એવમવાદીત્-
 હે ભદન્ત ! કાલઃ કુમારઃ સ્વલુ=નિશ્ચયેન ત્રિભિર્દન્તિસહસ્રૈઃ યાવદ્ રથ-
 મુશલં સઙ્ક્રામં સઙ્ક્રામયન્ ચેટકેન રાજ્ઞા વજ્રરૂપેણ એકેનૈવ વાણેન જીવિતાદ્
 વ્યપરોપિતો મૃતઃ સન્ કાલમાસે=કાલાવસરે કાલં કૃત્વા ક ગતઃ ? ક ઉપપન્નઃ ?

રાણીકે ચલે જાનેકે બાદ શ્રી ગૌતમ સ્વામી ભગવાનસે પૂછતે હૈં-‘મંતેત્તિ’
 ઇત્યાદિ ।

હે ભદન્ત ! કાલકુમાર ત્રીનર હજાર હાથી ઘોડે રથ ઓર અપને સમ્પૂર્ણ
 સૈન્ય વર્ગકે સાથ રથમુશલ સંગ્રામમે લડાઈ કરતા હુઆ ચેટક રાજાકે વજ્રસ્વરૂપ એક
 હી વાણસે મારા ગયા । વહ મૃત્યુકે સમય કાલપ્રાપ્ત હોકર કહાં ગયા ઓર કહાં
 ઉત્પન્ન હુઆ ? ।

રાણીના ગયા પછી શ્રી ગૌતમ સ્વામી ભગવાનને પુછે છે:-‘મંતેત્તિ’ ઇત્યાદિ.

હે ભદન્ત ! કાલકુમાર ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી-ઘોડા-રથ તથા પોતાના સૈન્ય
 સૈન્ય વર્ગ સાથે રથમુશલ સંગ્રામમાં લડાઈ કરતો થકો ચેટક રાજાના વજ્રસ્વ-
 રૂપ એકજ વાણથી માર્યો ગયો. તે મૃત્યુને અવસરે કાલ કરીને ક્યાં ગયો
 અને ક્યાં ઉત્પન્ન થયો ?.

सुन्दरबोधिनी टीका भगवानका उत्तर

१०७

हे गौतम ! इति संबोध्य श्रमणो भगवान् महावीरो भगवन्तं गौतमम्—एवम्=वक्ष्यमाणम् अवादीत्—हे गौतम ! खलु=निश्चयेन एवम्=उक्तकर्मकारकः कालकुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्युक्तो यावत् जीविताद् व्यपरोपितः सन् कालमासे कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यां हेमाभे नामके नरके=नरकावासे दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषु नैरयिकतया=नारकित्वेन उपपन्नः=समुत्पन्नः ॥ २२ ॥

गौतमस्वामी पुनः पृच्छति—‘कालेणं भंते’ इत्यादि ।

मूलम्—

कालेणं भंते ! कुमारे केरिसएहिं आरंभेहिं केरिसएहिं समारंभेहिं केरिसएहिं आरंभसमारंभेहिं केरिसएहिं भोगेहिं केरिसएहिं संभोगेहिं केरिसएहिं भोगसंभोगेहिं केरिसएण वा असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए जाव नेरइयत्ताए उववन्ने ? । एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे । तत्थणं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था, महया० । तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा नामं देवी होत्था, सोमाला जाव विहरति । तस्सणं सेणियस्स रन्नो पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था, सोमाले जाव सुखवे साम-दान-भेद-दंड-कुसले जहा चित्तो जाव रज्जधुराए चित्तए यावि होत्था ॥ २३ ॥

भगवान् कहते हैं—हे गौतम ! वह क्रूर कर्म करनेवाला कालकुमार अपनी सेना सहित लड़ता हुआ यहाँसे मरकर पङ्कप्रभा नामक चौथे नरकके अन्दर हेमाभ नामके नरकावासमें दस सागरोपम स्थितिवाला नैरयिक हुआ ॥ २२ ॥

भगवान् कहे छे—हे गौतम ! आवां क्रूर कर्म करनार ते झालकुमार पोतानी सेना सहित लड़तो थके अर्द्धांशी भरषु पाभी पंकप्रभा नामना थोथा नरकभां हेमाभ नामना नरकावासभां दस सागरोपमनी स्थितिवाजो नैरयिक (नारकी) थयो. २२

छाया—

कालः खलु भदन्त ! कुमारः कीदृशैरारम्भैः, कीदृशैः समारम्भैः, कीदृशैः आरम्भसमारम्भैः, कीदृशैर्भोगैः, कीदृशैः संभोगैः, कीदृशैः भोग-संभोगैः कीदृशेन वा अशुभकृतकर्मप्राग्भारेण कालमासे कालं कृत्वा चतुर्थ्या पङ्कप्रभायां पृथिव्यां यावत् नैरयिकतया उपपन्नः ? । एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमभूत् ऋद्धस्तिमितसमृद्धम् । तत्र खलु राजगृहे नगरे श्रेणिको नाम राजाऽभूत् महा० । तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञो नन्दा नाम देवी अभूत् सुकुमारा० यावत् विहरति । तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रो नन्दाया देव्या आत्मजः अभयो नाम कुमारोऽभूत् सुकुमारः यावत् सूरुपः साम-दान-भेद-दण्डकुशलः, यथा चित्तो यावद् राज्यधुरायाश्चिन्तकोऽभूत् ॥ २३ ॥

टीका—

कालकुमारः खलु हे भदन्त ! कीदृशैः आरम्भैः हिंसादिकसावधानुष्ठानैः, समारम्भैः=खड्गादिना प्राण्युपमर्दनरूपव्यापारैः, आरम्भसमारम्भैः=आरम्भ्यन्ते=विनाश्यन्ते जीवा यैर्हिंसादिव्यापारैरित्यारम्भास्तेषां समारम्भाः=

पुनः श्री गौतम स्वामी पूछते हैं—‘कालेणं भन्ते’ इत्यादि ।

हे भदन्त ! वह कालकुमार हिंसा झूठ आदि सावध अनुष्ठानरूप आरम्भसे तलवार आदि शस्त्रोंद्वारा प्राणियोंका उपमर्दनरूप समारम्भसे, जिससे प्राणियोंका संहार होता है ऐसे आरम्भके आचरण करनेसे, किस तरहके शब्दादि विषय भोगोंसे तथा

पुनः गौतम स्वामी पुछे छे—‘कालेण भन्ते’ इत्यादि.

हे भदन्त ! ते कालकुमार हिंसा, झूठ, आदि सावध अनुष्ठानरूप आरम्भथी, तलवार आदि शस्त्रोंकी प्राणियोंको नाश करवाइय, समारम्भथी, जेनाथी प्राणियोंको संहार थाय जेवा आरम्भनु आचरण करवाथी,

सम्पादनानि तैः, कीदृशैः भोगैः=शब्दादिविषयैः?, कीदृशैः सम्भोगैः=तीव्रा-
मिलाषजनकविषयैः?, कीदृशैः भोगसम्भोगैः=महारम्भपरिग्रहरूपविषया-
मिलाषैः?, कीदृशेन वा अशुभकर्मप्राग्भारेण=अशुभकर्मसमूहेन कालमासे=
कालावसरे कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पृथिन्यां यावत् नैरयिकतया उत्पन्नः?। हे
गौतम ! 'एवं खलु' इत्यादि निगदसिद्धम् ॥ २३ ॥

किस तरहके तीव्र अभिलाषजनक विषयोंके संभोगोंसे और किस तरहके महारम्भ
और महापरिग्रहरूप विषयोंके अभिलाषारूप भोगोपभोगोंसे और कौनसे अशुभ कर्मोंके
पुञ्जसे वह काल करके चौथे नरकमें गया?। भगवान कहते हैं—हे गौतम ! उस
काल उस समयमें राजगृह नामक नगर था जो ऋद्धि आदिसे समृद्ध था। उसमें
श्रेणिक राजा राज्य करते थे। उनकी रानीका नाम नन्दा था, जो अत्यन्त सुकुमार थी,
यावत् अपने पूर्वजन्म उपार्जित पुण्यसे प्राप्त मनुष्य-सम्बन्धी सुखोंका अनुभव करती
हुई विचरती थी। उनके अभयकुमार नामक पुत्र था, जो सुकुमार सुरूप तथा सभी
लक्षणोंसे युक्त था। साम, दान, दण्ड, भेद आदि नीतिमें निपुण था। चित्तप्रधानके
समान राजकार्य दक्षतासे करता था ॥ २३ ॥

કેવી જાતના શબ્દાદિ વિષયભોગથી, કેવી જાતની તીવ્ર અભિલાષા વડે ઉત્પન્ન થતા
વિષયોના સંભોગથી, તથા કેવી જાતના મહારંભ અને મહાપરિગ્રહરૂપ વિષયોની
અભિલાષારૂપ ભોગોપભોગોથી તથા કેવાં અશુભ કર્મોના પુંજથી તે કાલ કરીને
(મૃત્યુ પામીને) ચોથા નરકમાં ગયો? ભગવાન કહે છે—હે ગૌતમ ! તે કાલે તે
સમયે રાજગૃહ નામની નગરી હતી જે ઋદ્ધિ આદિથી સમૃદ્ધ હતી. તેમાં શ્રેણિક
રાજા રાજ્ય કરતા હતા. તેની રાણીનું નામ નંદા હતું જે બહુ સુકુમાર હતી.
પોતાનાં પૂર્વજન્મમાં કરેલાં પુણ્યથી પ્રાપ્ત થયેલાં મનુષ્ય-સંબંધી સુખોનો અનુભવ
કરતી વિચરતી હતી. તેને અભયકુમાર નામે પુત્ર હતો જે સુકુમાર રૂપવાન તથા
બધાં લક્ષણોથી યુક્ત હતો. સામ, દાન, દંડ, ભેદ આદિ નીતિમાં નિપુણ હતો. ચિત્ત
પ્રધાનની પેઠે રાજકાર્યને દક્ષતાપૂર્વક કરતો હતો. ૨૩

મૂલમ્—

તસ્સણં સેણિયસ્સ રાજો ચેલ્લના નામં દેવી હત્યા, સોમાલા જાવ વિહરઈ । તણં સા ચેલ્લના દેવી અન્નયા કયાઈ તંસિ તારિસગંસિ વાસઘરંસિ જાવ સીહં સુમિણે પાસિત્તા ણં પઢિબુદ્ધા, જહા પમાવઈ, જાવ સુમિણપાઠગા પઢિવિસજ્જિતા, જાવ ચેલ્લના સે વયણં પઢિચ્છિત્તા જેણેવ સણ ભવણે તેણેવ અણુપવિદ્ધા ॥ ૨૪ ॥

છાયા—

તસ્ય સ્વલુ શ્રેણિકસ્ય રાજશ્ચેલ્લના નામ દેવી અમૃત સુકુમારા યાવદ્ વિહરતિ । તતઃ સ્વલુ સા ચેલ્લના દેવી અન્યદા કદાચિત્ તસ્મિન્ તાદૃશકે વાસઘૃહે યાવત્ સિંહં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધા યથા પ્રભાવતી, યાવત્ સ્વપ્નપાઠકાઃ પ્રતિવિસર્જિતાઃ યાવત્ ચેલ્લના તસ્ય વચનં પ્રતીષ્ય યત્રૈવ સ્વકં ભવનં તત્રૈવાનુપ્રવિષ્ટા ॥ ૨૪ ॥

ટીકા—

‘તસ્સ ણં’ ‘ઇત્યાદિ । ‘તસ્ય સ્વલુ શ્રેણિકસ્ય રાજઃ’ ઇત્યારમ્ભ્ય ‘તત્રૈવાનુપ્રવિષ્ટા’ ઇત્યન્તસ્ય વ્યાખ્યાનં સુગમમ્ ॥ ૨૪ ॥

‘તસ્સ ણં’ ઇત્યાદિ ।

— ઉસ શ્રેણિક રાજાકી દૂસરી રાની ચેલના થી, જો સુકુમારતા (કોમલતા) આદિ નારીગુણોસં સમી તરહ યુક્ત થી । ઉસને સ્વપ્નમેં એક સમય સિંહ દેસ્તા ઉસી સમય જાગ ઉઠી ઓર પ્રભાવતીકે સમાન રાજાકો જાકર સ્વપ્ન કહા, રાજાને સ્વપ્નપાઠક બુલાયે । ઉન્હોને સ્વપ્નકા ફલ કહા ઓર રાજાને ઉન્હેં પ્રીતિદાન દેકર વિસર્જિત (વિદા) કિયે । સ્વપ્નફલ સુનનેકે પશ્ચાત્ રાની અપને મહલમેં ગયી ॥ ૨૪ ॥

‘તસ્સણં’ ઇત્યાદિ. તે શ્રેણિક રાજાની બીજી રાણી ચેલના હતી. જે સુકુમાર (કોમળતા) આદિ સ્ત્રીને લગતા ગુણોથી સર્વ પ્રકારે યુક્ત હતી. તેણે સ્વપ્નામાં એક વખત સિંહને જોયો અને બાગી ઉઠી. પ્રભાવતીની પેઠે રાજાને સ્વપ્ન કહ્યું જેથી રાજાએ સ્વપ્નપાઠકોને બોલાવ્યા, તેઓએ સ્વપ્નફલ કહ્યું. રાજાએ તેમને પ્રીતિદાન આપીને વિસર્જિત (વિદાય) કર્યા. સ્વપ્નફલ સાંભળ્યા પછી રાણી પોતાના મહેલમાં ગઈ. ૨૪

सुन्दरबोधिनो टीका चेल्लना रानीका दोहद

१११

मूलम्—

तएणं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइं तिण्हं मासाणं बहुपडि-
पुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए-धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव
जम्मजीवियफले जाओ णं णियस्स रन्नो उदरवलीमंसेहिं सोल्लेहि य तलि-
एहि य भज्जिएहि य सुरं च जाव पसन्नं च आसाएमाणीओ जाव परि-
भाएमाणीओ दोलहं पविणेंति ॥ २५ ॥

छाया—

ततः खलु तस्याश्चेल्लनाया देव्या अन्यदा कदाचित् त्रिषु मासेषु
बहुप्रतिपूर्णेणु अयमेतद्रूपो दोहदः प्रादुर्भूतः-धन्याः खलु ताः अम्बाः यावत्
(तासां) जन्म-जीवित-फलं याः खलु निजस्य राज्ञः उदरवलिमांसैः
शूलैश्च तलितैश्च भर्जितैश्च सुरां च यावत् प्रसन्नां च आस्वादयन्त्यो यावत्
परिभाजयन्त्यो दोहदं प्रविनयन्ति ॥ २५ ॥

टीका--

‘तएणं तीसे’ इत्यादि । ततः=तदनन्तरं खलु=निश्चयेन अन्यदा
कदाचित् चेल्लनाया देव्याः त्रिषु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेणु अयम्=वक्ष्य-
माणः, एतद्रूपः=एतदाकारकः दोहदः प्रादुर्भूतः=समुत्पन्नः-ताः अम्बाः=
जनन्यः धन्याः=प्रशंसनीयाः यावत् जन्मजीवितफलं=तासां जन्मनो जीवितस्य

‘तएणं तीसे’ इत्यादि ।

बाद रानी चेल्लनांको, गर्भके तीन महिने पूरे होनेपर ऐसा दोहद-(दोहला)
उत्पन्न हुआ कि-धन्य हैं वे माताएँ, यावत् उन्हीका जन्म और जीवित सफल है जो

‘तएणं तीसे’ इत्यादि. यही राणी चेल्लनाने त्रिषु महिना पुरा यथां ओवे डाहले
(तीन महिना) यथा हे धन्य ते माताओंने तेमनो जन्म तथा उपर सफल है

-११२

निर्यावलि का सत्र

च फलं=आनन्दरूपम् याः निजस्य राज्ञः=स्वामिनः खलु शूलैः=पक्वैः तलितः=स्नेहादिना पक्वैः भर्जितैः=केवलवह्निपक्वैः उदरवलिमांसैः दोहदं प्रविनयन्तीत्यनेन सम्बन्धः, सुरां=मदिरां च यावत् प्रसन्नां च तदाख्यं सुरा विशेषम् आस्वादयन्त्यो यावत् परिभाजयन्त्यः=अन्योन्यं ददत्यो दोहदं प्रविनयन्ति=पूरयन्ति, अहमपि स्वपतेः श्रेणिकस्य राज्ञः पक्वतलितभर्जितोदरवलिमांसैर्दोहदं प्रपूरयेयं तदा धन्या किंतु तादृक्करणेऽसमर्थाऽस्मि, इत्यादि ॥ २५ ॥

मूलम्—

तएणं सा चेळणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुइय-मुही ओमंथियनयणवयणकमला जहोचियं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं अपरिभुंज-माणी करतलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा जाव भियाइ ॥ २६ ॥

छाया—

ततः खलु सा चेळना देवी तस्मिन् दोहदे अविनीयमाने शुष्का

अपने पतिके उदरवलि (कलेजा)के मांसको शूलपर पकाकर और तेलमें तलकर एवं अग्निमें सेककर मदिराके साथ आस्वादन करती हुई यावत् परस्पर-आपसमें देती हुई अपने दोहद (दोहले)को पूरा करती हैं। यदि मैं भी अपने पति श्रेणिक राजाके पकाये हुवे तले हुवे सेके हुवे उदरवलि (कलेजा)के मांससे दोहदको पूरा करू तो मैं धन्य बूँ परन्तु ऐसा करनेमें मैं असमर्थ हूँ ॥ २५ ॥

કે જે પોતાના પતિના ઉદરવલિ (કલેજા)ના માંસને શૂળ ઉપર સેકીને તથા તેલમાં તળીને કે અગ્નિમાં સેકીને ફાડીને સાથે તેનો સ્વાદ લેતી અને અરસપરસ દેતાં પોતાના એ દોહદને પરિપૂર્ણ કરે છે. જે હું પણ મારા પતિ શ્રેણિક રાજાના પકાયેલાં તળેલાં અને સેકેલાં કલેજાનાં માંસથી મારો દોહદ પૂરો કરું તો ધન્ય બનું પણ તેમ કરનાર હું અસમર્થ છું. (૨૫)

सुन्दरबोधिनो टीका चेल्लना रानीका दोहद

बुभुक्षिता निर्मासा अवरुग्णा, अवरुग्णशरीरा निस्तेजाः दीनविमनोवदना
पाण्डुकितमुखी अवमन्थितनयनवदनकमला यथोचितं पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारम्
अपरिशुञ्जन्ती करतलमलितेव कमलमाला उपहतमनःसङ्कल्पा यावद्
ध्यायति ॥ २६ ॥

टीका—

‘तएणं सा’ इत्यादि—ततः=तदनु सा चेल्लना देवी तस्मिन् दोहदे
अविनीयमाने=अपूर्यमाणे सति शुष्का=शुष्कप्राया रुधिरपरिशोषणात्, बुभुक्षिता=
आहाराऽकरणेन बुभुक्षितेव, निर्मासा=मांसरहिता-मांसवृद्धयभावात्, अवरुग्णा=
रोगवतीव मनोवृत्तिभङ्गात्, अवरुग्णशरीरा=भग्नगात्रा, निस्तेजाः=शरीरद्युति-
रहिता, दीनविमनोवदना=दीनस्येव वि=विगतम्=उत्साहरहितं मनः, कान्ति
रहितं वदनं च यस्याः सा तथा—अकिञ्चनवदुत्साहहीनमनोनिष्प्रभमुखवतीति

‘तएणं सा’ इत्यादि—

उसके बाद वह चेल्लना रानी दोहद नहीं पूरा होनेसे रक्तके सूख जानेके
कारण सूख गयी। अरुचिसे आहार आदि नहीं करनेके कारण भूखी रहने लगी।
शरीरमें मांस नहीं रहनेके कारण क्षीणकाय हो गयी, मनको चोट पहुँचनेसे रोगी
के समान हो गयी, शरीरकी कान्ति हट जानेसे तेजरहित हो गयी, उसका मन
दीनके समान उत्साहरहित और मुख निस्तेज हो गया, अतएव रानीका चेहरा

‘तएणं सा’ इत्यादि.

त्यार पछी ते चेल्लना राणी पोताने दोहद (धृष्ट) पुरी न थवाथी वोही
सूझाथ जवाथी शुष्क थथ गथ. अशुचिथी आहार आदि न करवाथी भूखी रडेवा
भांडी. शरीरमां मांस न रडेवाथी शरीरे दुष्प्रणी थथ गथ. मनमां धा लागवाथी
रोगीसमान थथ गथ. शरीरमां कान्ति ओछी थतां तेजरहित थथ गथ. तेनु
मन दीन समान उत्साहरहित तथा मोहुं निस्तेज थथ गथ. आम राणीने

११४

निरयावलिकासूत्र

भावः । पाण्डुकितमुखी=पाण्डुवर्णयुक्तमुखवती, अवमथितनयनवदनकमला=अधः
 कृतनेत्रमुखकमला, यथोचितं=यथायोग्यं पुष्पवस्त्रगन्धमालालङ्कारम्-
 अपरिभुञ्जन्ती=असेवमाना, करतलमलिता=हस्ततलमर्दिता कमलमालेव
 कान्तिहीना, उपहतमनःसंकल्पा=कर्तव्याकर्तव्यविवेकविकला यावद् ध्यायति=
 आर्तध्यानं करोति ॥ २६ ॥

मूलम्—

तएणं तीसे चेळणाए देवीए अंगपडियारियाओ चेळणं देविं सुकं
 भुक्खं जाव भियायमाणीं पासंति, पासित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव
 उवागच्छंति उवागच्छित्ता करतलपरिगृहीयं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कहुं
 सेणियं रायं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! चेळणा देवी न याणामो
 केणइ कारणेणं सुक्का भुक्खा जाव भियायइ ॥ २७ ॥

छाया—

ततः खलु तस्याश्चेलनाया देव्या अङ्गप्रतिचारिकाश्चेलनां देवीं शुष्कां
 बुभुक्षितां यावद् ध्यायन्तीं पश्यन्ति, दृष्ट्वा यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैव उपा-
 गच्छन्ति, उपागत्य, करतलपरिगृहीतं शिरावर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा

फीका पड गया। इस कारण नेत्र और मुखकमलको नीचे किये हुए यथायोग्य
 पुष्प वस्त्रादिकको भी नहीं धारण करती थी, वह हाथसे मली हुई-कुचली हुई
 कमलकी मालाके समान कान्तिहीन दुःखित मनवाली कर्तव्याकर्तव्यके विवेकसे रहित
 होकर यावत् आर्तध्यान करती थी ॥ २६ ॥

अड्डेरो झीको पडी गयो. आथी नेत्र तथा भुभ नीचे जुकावीने पेडी गती यथायोग्य
 पुष्प-वस्त्रादि अलङ्कारो धारण करती नहोती. ते हाथना भईनथी करमायेली
 कमलानी भाणी लेवी कान्ति वगरनी दुःखित मन वाली कर्तव्य अकर्तव्य विवेकशी
 रहित अनी अधने सुधणो वभत आर्तध्यानमां वीतावती छती. (२६)

सुन्दरबोधिनी टीका चेळना रानोका दोहद

११५

श्रेणिकं राजानमेवमवादिषुः—एवं खलु स्वामिन् ! चेळना देवी न जानीमः
केनापि कारणेन शुष्का बुभुक्षिता यावद् ध्यायति ॥ २७ ॥

टीका—

‘तएणं तीसे’ इत्यादि—‘झियायइ’ इत्यन्तस्य व्याख्या
निगदसिद्धा ॥ २७ ॥

मूलम्—

तएणं से सेणिए राया तारिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं
सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे जेणेव चेळणा देवी तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता, चेळणं देविं सुकं शुक्खं जाव झियायमाणिं पासित्ता एवं
वयासो—किन्नं तुमं देवाणुप्पिये ! सुक्का शुक्खा जाव झियायसि ?

तएणं सा चेळणा देवी सेणियस्स रन्नो एयमट्ठं णो आढाइ णो
परिजाणाइ तुसिणीया संचिद्धइ ।

‘तएणं तीसे’ इत्यादि.

उसके बाद चेळना रानीकी सेवा करनेवाली दासियोंने अपनी रानीकी ऐसी
अवस्था देखकर श्रेणिक राजाके पास गयी, और हाथ जोडकर श्रेणिक राजासे कहने
लगीं—हे स्वामिन् ! चेळना महारानी न जाने किस कारण सूख गयी है और दुःखित
होकर आर्तध्यान करती है । ॥ २७ ॥

‘तएणं तीसे’ इत्यादि.

त्यार पछी चेळना राणीनी सेवा करवावाणी दासीओ पोतानी राणीनी
ओवी अवस्था ओधने श्रेणिक राजाणी पास ओध हाथ ओडी श्रेणिकराजने कडेवा
बागी—हे स्वामिन् ! ओभर नथी, के चेळना राणी शुं कारणुथी सुकाध गध छे तथा
दुःखित थधने आर्तध्यान करे छे. (२७)

तएणं से सेणिए राया चेळणं देवि दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी-
किं णं अहं देवाणुप्पिए ! एयमट्ठस्स नो अरिहे सवणयाए जं णं तुमं
एयमट्ठं रहस्सीकरेसि ? ।

तएणं सा चेळणा देवी सेणिएणं रत्ना दोच्चं पि तच्चं पि एवं
वुत्ता समाणी सेणियं रायं एवं वयासी-णत्थि णं सामी ! से केइ अट्ठे
जस्स णं तुब्भे अणरिहा सवणयाए, नो चेव णं इमस्स अट्ठस्स सवणयाए,
एवं खलु सामी ! ममं तस्स ओरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं
बहुपडिपुण्णाणं अयमेयात्थवे दोहले पाउब्भूए—‘धन्नाओ णं ताओ
अम्मयाओ जाओ णं णियस्स रत्तो उदरवल्लिमंसेहिं सोल्लएहिं य जाव
दोहलं विणेत्ति’ तएणं अहं सामी ! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि मुक्का
भुक्खा जाव भियायामि ॥ २८ ॥

छाया—

ततः खलु स श्रेणिको राजा तासामङ्गप्रतिचारिकानामन्तिके
एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य तथैव संभ्रान्तः सन् यत्रैव चेळना देवी तत्रैवोपाग-
च्छति, उपागत्य चेळनां देवीं शुष्कां बुभुक्षितां यावद् ध्यायन्तीं दृष्ट्वा
एवमवादीत्—किं खलु त्वं देवानुप्रिये ! शुष्का बुभुक्षिता यावद् ध्यायसि ? ।

ततः खलु सा चेळना देवी श्रेणिकस्य राज्ञः एतमर्थं नो आद्रियते
नो परिजानाति तूष्णीकाः संतिष्ठते ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा चेळनां देवीं द्वितीयमपि तृतीयमपि
(वारं) एवमवादीत्—किं खलु अहं देवानुप्रिये ! एतदर्थस्य नो अर्हः श्रव-
णाय यत्खलु त्वं एतमर्थं रहस्यीकरोषि ? ।

ततः खलु सा चेळना देवी श्रेणिकेन राज्ञा द्वितीयमपि तृतीयमपि
(वारं) एवमुक्ता सती श्रेणिकं राजानमेवमवादीत्—नास्ति खलु स्वामिन् !

सुनकर बोधिनी कीका चेलना रानीका दोहद

१२७

स कोऽप्यर्थः यस्य खलु यूयमनर्हाः श्रवणाय, नो चैव खलु अस्यार्थस्य श्रवणाय एवं खलु स्वामिन् ! मम तस्य उदारस्य यावत् महास्वप्नस्य (फल-स्वरूपगर्भस्य) त्रिषु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेण अयमेतद्रूपो दोहदः प्रादुर्भूतः—
‘धन्याः खलु ता अम्बाः याः खलु निजस्य राज्ञ उदरवलिमांसैः शूलकैश्च यावद् दोहदं विनयन्ति,’ (‘यद्यहमप्येवं करोमि तदा धन्या भवामि’) इति ।
ततः खलु अहं हे स्वामिन् ! तस्मिन् दोहदे अविनीयमाने शुष्का बुभुक्षिता यावद् ध्यायामि ॥ २८ ॥

टीका—

‘तएणं से’ इत्यादि । संभ्रान्तः सन्=आश्चर्यचकितः सन् । नो आद्रियते=न सम्मानयति, नो परिजानाति=न सम्यङ् नृपवचनं हृदये

‘तएणं से’ इत्यादि.

महाराज श्रेणिक दासियोंके मुखसे इस वृत्तान्तको सुनकर घबडाते हुए शीघ्र चेलना रानीके पास आये, और चेलना रानीकी दुरवस्थाको देखकर बोले—हे देवानु-प्रिये ! तुम्हारी इस तरहकी दुःखजनक अवस्था कैसे हो गयी ? और क्यों आर्तध्यान कर रही हो ?, यह सुनकर रानी कुछ नहीं बोली । पश्चात् राजाने दो तीन बार पुनः पूछा—हे देवानुप्रिये ! क्या तुम्हारी इस बातको सुनने लायक मैं नहीं हूँ जो मुझसे तुम अपनी बात छिपाती हो ? । इस प्रकार राजाद्वारा दो तीन बार पूछे जाने

‘तएणं से’ इत्यादि.

महाराज श्रेणिक, दासीओने मोढथी आ वृत्तांतने सांभजी, जलराता जलदी चेलना राणीनी पास आव्या, तथा चेलना राणीनी अराज अवस्थाने जेठने जाल्या—हे देवानुप्रिये ! तमारी आ प्रकारनी दुःखजनक अवस्था केवी रीते यर्ध गर्ध ? आ मोटे आर्तध्यान करे छे ? आ सांभजीने राणी कांछ में जाली. पछी राजाज्ये जे त्रिषु बार करीने पूछ्यु—हे देवानुप्रिये ! तुं तमारी आ बात सांभ जवा लायक हुं नथी जेथी माराथी तुं पोतानी बात छुपी राखे छे ? आ प्रकार

૧૧૮

નિર્યાવલિકાસુત્ર

નિદધાતિ । તૂળ્ણીકા=સમાલમ્બિતમૌનભાવા । દ્વિતીયમપિ=દ્વિતીયવારં તૃતીય-
મપિ=તૃતીયવારમ્ । શેષં સુગમમ્ ॥ ૨૮ ॥

મૂલમ્—

તણં સે સેણિય રાયા ચેલ્ણં દેવિં એવં વયાસી-માણં તુમં
દેવાણુપ્પિય ! ઓહયં જાવ મિયાયહ, અહં ણં તહા જહિસસામિ જહા ણં તવ
દોહલસસ સંપત્તી ભવિસસહિત્તિ કહુ ચેલ્ણં દેવિં તાહિં હિઠ્ઠાહિં કંતાહિં પિયાહિં
મણુન્નાહિં મણામાહિં ઓરાલાહિં કલ્લાણાહિં સિવાહિં ધન્નાહિં મંગલ્લાહિં

પર રાની બોલી-હે સ્વામિન્ ! એસી કોઈ વાત નહીં હૈ જો આપસે લુપાઈ જાય ઓર
આપ ઉસે મુનનેકે યોગ્ય નહીં હો, આપ ઉસે સર્વથા મુન સકતે હૈ, વહ વાત હિસ
પ્રકાર હૈ-ઉસ ઉદાર સ્વપ્રકે ફલ સ્વરૂપ ગર્ભકે તીસરે માસકે અન્તમેં મુઝે હિસ
પ્રકાર દોહદ (દોહલા) ઉત્પન્ન હુઆ હૈ કિ-વે માતાએ ધન્ય હૈ જો અપને પતિકે
ઉદરવાલકા માંસ પકાકરકે તલકરકે ઓર અગ્નિમેં સેક મૂનકર મદિરાકે સાથ એક
દુસરી સર્સીકો દેતી હુઈ-આસ્વાદન કરતી હુઈ અપના દોહદ પૂરા કરતી હૈ । મુઝે
મી એસા હી દોહદ ઉત્પન્ન હુઆ હૈ-લેકિન હે સ્વામિન્ ! વહ દોહદ પૂરા નહીં
હોનેસે આજ મેરી યહ દશા હુઈ હૈ ઓર મેં આર્તધ્યાન કરતી હૂં ॥ ૨૮ ॥

એ ત્રણ વાર રાજાએ પૂછવાથી રાણી બોલી-હે સ્વામી ! એવી કોઈ વાત નથી
જે આપથી છાની રખાય તથા આપ તે સાંભળવા યોગ્ય ન હો. આપ તે સર્વથા
સાંભળી શકો છો. એ વાત આમ છે-તે ઉદાર સ્વપ્નના ફલ સ્વરૂપ ગર્ભના ત્રીજા
મહિનાના અંતમાં મને એવા પ્રકારનો દોહદ (દોહલા) ઉત્પન્ન થયો કે તે માતાને
ધન્ય છે કે જે પોતાના પતિના ઉદર-વલિના માંસને પકાવી તળીને અગ્નિમાં સેકી
ભુંજી મદિરાની સાથે એક ખીણ સખીને આપતી આસ્વાદ લેતી પોતાને દોહદ
પૂરો કરે છે. મને પણ એવો જ દોહદ ઉત્પન્ન થયો છે પણ હે સ્વામિન્ ! તે
પૂરો નહિ થવાથી આજ મારી આવી દશા થઈ છે અને આર્તધ્યાન કરું છું. (૨૮)

सुन्दरबोधिनी टीका श्रेणिक राजाके विचार

११९

मियमधुरसस्सिसरीयाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता चेळणाए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिं उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य परिणामेमाणे२ तरस दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव भियायइ ॥ २९ ॥

छाया—

ततः खलु स श्रेणिको राजा चेळनां देवीमेवमवादीत्—मा खलु त्वं देवानुप्रिये ! अवहत० यावद् ध्याय, अहं खलु तथा यतिष्ये, यथा खलु तव दोहदस्य सम्पत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा चेळनां देवीं तामिरिष्टाभिः कान्ताभिः प्रियाभिर्मनोज्ञाभिर्मनोऽभाभिरुदाराभिः कल्याणाभिः शिवाभिर्धन्याभिर्माङ्गल्याभिर्मितमधुरसश्रीकाभिर्वल्गुभिः समाश्वसयति, समाश्वस्य चेळनाया देव्या अन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव सिंहासनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुखो निषीदति, निषद्य तस्य दोहदस्य सम्पत्तिनिमित्तं बहुभिरायैरुपायैश्च औत्पत्तिकीभिश्च वैयर्थिकीभिश्च कार्मिकी(कर्मजा)भिश्च पारिणामिकीभिश्च परिणामयन्२ तस्य दोहदस्य आयं वा उपायं वा स्थितिं वा अविन्दन् अपहतमनः संकल्पो यावद् ध्यायति ॥ २९ ॥

टीका—

‘तएणं से’ इत्यादि । ततः=तदनन्तरं स श्रेणिको राजा चेळना-मवादीत्—हे देवानुप्रिये ! त्वं आर्तध्यानं मा कुरु, अहं तथा यतिष्ये यथा

‘तएणं से’ इत्यादि ।

चेळना रानीकी ऐसी बात सुनकर राजा बोले—हे देवानुप्रिये ! तुम आर्त-

‘तएणं से’ इत्यादि.

चेळना राणीनी आवी बात सांभणी राजा बोल्या—‘हे देवानुप्रिये ! तुं

તવ દોહદસ્ય સમ્પત્તિઃ=સમ્પન્નતા મવિષ્યતીતિ કૃત્વા=ઇતિ કથયિત્વા ચેલ્લનાં
 દેવીં તામિઃ=વક્ષ્યમાણામિઃ ઇષ્ટામિઃ=અમિલ્ષણીયામિઃ, કાન્તામિઃ=
 વાંચ્છિતાર્થપૂરણીમિઃ, પ્રિયામિઃ=પ્રેમોત્પાદિકામિઃ, મનોજ્ઞામિઃ=
 શોભનામિઃ=મનોઽમામિઃ=પુનઃપુનઃમનોઽનુસ્મરણીયામિઃ, ઉદારામિઃ
 =અત્યદ્ભુતામિઃ, કલ્યાણીમિઃ=વાંચ્છિતાર્થપ્રાપ્તિકારિકામિઃ, શિવામિઃ=ઉપદ્રવ-
 રહિતામિઃ, ધન્યામિઃ=ગર્ભવાંચ્છાસમ્પાદિકામિઃ, માતૃલ્યામિઃ=કર્ણપ્રિયામિઃ,
 મિતમધુરસશ્રીકામિઃ=પ્રમિતમત્તકોકિલશબ્દવન્મનોહરસ્વરશોભામિઃ, વલ્ગુમિઃ=
 વાળોમિઃ સમાશ્વાસયતિ=સન્તોષયતિ । સમાશ્વાસ્ય ચેલ્લનાદેવીસમીપાત્
 પ્રતિનિષ્ક્રામતિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય યત્ર વાહ્યા ઉપસ્થાનશાલા આસ્થાનમણ્ડપઃ,
 યત્ર સિંહાસનં તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સિંહાસનવરે=શ્રેષ્ઠસિંહાસને પૌરસ્ત્યા-

ધ્યાનકો છોડો મૈં એસા હી પ્રયત્ન કરૂંગા જિસસે તુમ્હારા દોહદ પૂરા હો । એસા
 કહકર રાજાને મનકો બાહ્યાદ કરનેવાલી, વાંચ્છિત અર્થકો દેનેવાલી પ્રેમમયી, મનોજ્ઞ,
 વારંવાર મનકો અચ્છી લગનેવાલી, અદ્ભુત, મનોવાંચ્છિત ફલકો દેનેવાલી, સુખદાયી,
 ગર્ભવાંચ્છાકો પૂર્ણ કરનેવાલી, કાનોંકો પ્રિય લગનેવાલી, મત્ત કોકિલકે સ્વરકે સમાન
 મનોહર વાળી દ્વારા રાનીકો સન્તુષ્ટ કિયા । રાનીકો હસ પ્રકાર બાશ્વાસન દેકર
 રાજા સભામણ્ડપમેં આયે, ઔર પૂર્વ દિશાકી ઔર મુંહકર અપને સિંહાસનપર બૈઠે તથા
 હસ દોહદકો પૂરા કરનેકી ચિન્તા કરને લગે, પરન્તુ—

આર્તધ્યાન છોડી દે. હું એવોજ પ્રયત્ન કરીશ કે જેથી તારો દોહદ પુરો થાય.
 એમ કહી રાજાએ મનને આનંદ કરાવનારી, વાંચ્છિત અર્થ (ઇચ્છા પ્રમાણે)
 દેવાવાળી, પ્રેમમયી, મનોજ્ઞ, વારંવાર મનને સારી લાગનારી, અદ્ભુત, મનો-
 વાંચ્છિત ફળને દેવાવાળી, સુખદાયી, ગર્ભવાંચ્છાને પૂર્ણ કરવાવાળી, કાનને પ્રિય લા-
 ગવાવાલી, મત્ત બનેલ કોકિલના સ્વર જેવી મનોહર વાણી દ્વારા રાણીને સંતુષ્ટ કરી.
 રાણીને આ પ્રકારે આશ્વાસન દઇને રાજા સભામંડપમાં આવ્યા. તથા પૂર્વદિશા
 તરફ એાં રાખી પોતાના સિંહાસન પર બેઠા. તથા તે દોહદ (ઇચ્છા) પુરો કરવાની
 ચિન્તા કરવા લાગ્યા. પરંતુ—

सुन्दरबोधिनी टीका चेहना रानोका दोहद

१२१

मिमुखः=पूर्वाभिमुखः सन् निषीदति=उपविशति तस्य दोहदस्य सम्पत्तिनिमित्तं=सम्पादनार्थं बहुभिः=अनेकैः आयैः=साधनैः उपायैः=प्रयोगैः, तथा- औत्पत्तिकीभिः=शास्त्राभ्यासनिरपेक्षाऽदृष्टाऽश्रुताऽननुभूतविषयग्राहिकाभिः, च-पुनः बैनयिकीभिः=गुरुरत्नाधिकादिशुश्रूषासंजाताभिः, कार्मिकीभिः=कर्मजाभिः- अनिशं क्रियाकरणेन जायमानाभिः, पारिणामिकीभिः=वयआदिपरिणाम-जन्याभिः, परिणामः=दीर्घकालपूर्वापरपर्यालोचजन्य आत्मनो धर्मविशेषः, स प्रयोजनमस्याः सा पारिणामिकी, अवयवगतबहुत्वविवक्षायां ताभिः, चतुर्विधाभि बुद्धिभिः परिणामयन् २=दोहदसम्पादनरूपविचारं कुर्वन् २ तस्य दोहदस्य आयं=साधनम् वा उपायं=प्रयोगं वा स्थितिं=व्यवस्थां वा अकिन्दन्=अलभमानो भूपः अपहतमनःसंकल्पो यावद् ध्यायति=आर्तध्यानं करोति ॥ २९ ॥

(१) शास्त्रोके अभ्यास विना ही अनदेखे अनसुने और अनुभवमें भी न आये हुए विषयोको यथार्थ रूपसे ग्रहण करनेवाली औत्पत्तिकी बुद्धि,

(२) विनयसे उत्पन्न होनेवाली बैनयिकी बुद्धि,

(३) हमेशा कार्य करनेसे उत्पन्न होनेवाली कार्मिकी बुद्धि,

(४) वयके परिणामसे उत्पन्न होनेवाली पारिणामिकी बुद्धि,

इन चारों प्रकारकी बुद्धि द्वारा तथा अनेक साधन (सामग्री) एवम् अनेक प्रयोग द्वारा भी राजा उस दोहदको पूरा करनेमें समर्थ नहीं हो सके अतएव आर्तध्यान करने लगे ॥ २९ ॥

(१) शास्त्रोना अभ्यास विना न ज्ञेयता न सांख्येयता तथा अनुभवमां पण्य न आवेता विषयेने यथार्थज्ञेये ज्ञातुवा वाणी 'औत्पत्तिकी' बुद्धि, (२) विनयशी उत्पन्न थनारी 'बैनयिकी' बुद्धि, (३) हमेशां कार्य करवाथी उत्पन्न थनारी 'कार्मिकी' बुद्धि, (४) उभरना परिणामे उत्पन्न थनारी 'पारिणामिकी' बुद्धि. आ यारे प्रकारनी बुद्धि द्वारा तथा अनेक साधन-सामग्री ओटवे अनेक प्रयोग द्वारा पण्य राजा ते दोहदने पुरे करवामां समर्थ न थया तेथी आर्तध्यान करवा लाय्या. (२६)

मूलम्—

इमं च णं अभए कुमारे ण्हाए जाव शरीरे, सयाओ गिहाओ
 पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमिच्चा जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए
 राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ओहय० जाव क्रियाय-
 माणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-अन्नया णं ताओ ! तुब्भे मम पासित्ता
 इट्ठ जाव हियया भवह किन्नं ताओ ! अज्ज तुब्भे ओहय० जाव क्रियायह ?
 तं जइणं अहं ताओ ! एयस्स अट्ठस्स अरिहे सवणयाए तो णं तुब्भे मम एय-
 मट्ठं जहाभूयमवितहं असंदिद्धं परिकहेह, जाणं अहं तस्स अट्ठस्स अंतगमणं
 करोमि । तएणं से सेणिए राया अभयं कुमारं एवं वयासी-णात्थि णं पुत्ता !
 से केइ अं जस्स णं तुमं अणरिहे सवणयाए, एवं खलु पुत्ता ! तव
 चुल्लमाउयाए चेळ्ळणाए देवीए तस्स ओरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं
 मासाणं बहुपडिपुब्बाणं जाव उयरवल्लिमंसेहिं सोल्लेहि य जाव दोहलं
 विणेति ।

तएणं सा चेळ्ळणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का
 जाव क्रियायइ । तएणं अहं पुत्ता ! तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं
 आएहिं य जाव ठिइं वा अविंदमाणे ओहय० जाव क्रियामि । तएणं से
 अभए कुमारे सेणियं रायं एवं वयासी-माणं ताओ ! तुब्भे ओहय० जाव
 क्रियायह, अहं णं तह जत्तिहामि, जहाणं मम चुल्लमाउयाए चेळ्ळणाए देवीए
 तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ-त्ति कट्ठु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं जसव
 वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता जेणेव सए गिए तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता अब्भंतरए रहस्सिए ठाणिज्जे पुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एवं
 वयासी-गच्छइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुणाओ अल्लं मंसं रुहिरं वत्थिपुडणं
 च गिण्हइ । तएणं ते ठाणिज्जा पुरिसा अभयेणं कुमारेणं एवं वुत्ता
 समाणा इट्ठ० करतल० जाव पडिसुणेत्ता अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ-

सुन्दरबोधिनी टीका चेल्लना रानीका दोहद

१२३

पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमिच्चा जेणेव सूणा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, अल्लं मंसं रुहरं वत्थिपुडगं च गिण्हंति, गिण्हित्ता, जेणेव अभए कुमारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, करयल० तं अल्लं मंसं रुहरं वत्थिपुडगं च उवणेति ॥ ३० ॥

छाया—

इतश्च खलु अभयः कुमारः स्नातः यावत्-शरीरः स्वकात् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, श्रेणिकं राजानम् अवहत्० यावद् ध्यायन्तं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-अन्यदा खलु तात ! यूयं मां दृष्ट्वा हृष्ट० यावद्दहदयाः भवथ, किं खलु तात ! अथ यूयम् अवहत्० यावद् ध्यायथ, तद् यदि खल्वहं तात ! एतस्यार्थस्याऽहः श्रवणतायै तदा खलु यूयं मम एतमर्थं यथा-भूतमवितथमसंदिग्धं परिकथयत, यस्मात् खल्वहं तस्यार्थस्यान्तगमनं करोमि ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा अभयकुमारस्मेवमवादीत्-नास्ति खलु पुत्र ! स कोऽप्यर्थः यस्य खलु त्वमर्हः श्रवणतायै । एवं खलु पुत्र ! तव झुल्लमातुश्चेल्लनाया देव्यास्तस्योदारस्य यावत् महास्वप्नस्य त्रिषु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेपु यावत् उदरवलिमांसैः शूलकैश्च यावत् दोहदं विनयन्ति । ततः खलु सा चेल्लना देवी तस्मिन् दोहदे अविनीयमाने शुष्का यावद् ध्यायति । ततः खल्वहं पुत्र ! तस्य दोहदस्य सम्पत्तिनिमित्तं बहुभिरायै-रुपायैश्च यावत् स्थितिं वा अविन्दन् अपहत्० यावद् ध्यायामि ।

ततः खलु सः अभयः कुमारः श्रेणिकं राजानमेवमवादीत्-मा खलु तात ! यूयम् अवहत्० यावद् ध्यायत, अहं खलु तथा यतिष्ये यथा खलु मम झुल्लमातुश्चेल्लनाया देव्यास्तस्य दोहदस्य सपत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा श्रेणिकं राजानं ताभिरिष्टाभिर्यावद् वल्गुभिः समाश्वसयति, समाश्वस्य यत्रैव स्वकं

गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आभ्यन्तरान् राहस्यिकान् स्थानीयान् पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः ! स्नानात् आर्द्रं मांसं रुधिरं बस्तिपुटकं च गृहीत ।

ततः खलु ते स्थानीयाः पुरुषा अभयेन कुमारेण एवमुक्ताः सन्तः हृष्टाः करतल० यावद् प्रतिश्रुत्य अभयस्य कुमारस्यान्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव शूना तत्रैवोपागच्छन्ति, आर्द्रं मांसं रुधिरं बस्तिपुटकं च गृह्णन्ति, गृहीत्वा यत्रैव अभयः कुमारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतल० तमार्द्रं मांसं रुधिरं बस्तिपुटकं च उपनयन्ति ॥ ३० ॥

टीका—

‘इमं च णं’ इत्यादि—यथाभूतमवितथमसंदिग्धमित्येतानि पदानि पूर्वमेव व्याख्यातानि । राहस्यिकान्-गुप्तविचारकान् स्थानीयान्=गौरवशालिनः,

‘इमं च णं’ इत्यादि ।

इधर अभयकुमार स्नानकर यावत् सभी प्रकारके आभूषणोंसे सुसज्जित हो अपने महलसे निकलकर उसी सभा-मण्डपमें आए जहाँ श्रेणिक राजा बैठे थे । श्रेणिक राजाको आर्तध्यान करते हुए देखकर बोले—

हे तात ! और दिन जब मैं जाता था तो आप मुझे देखकर प्रसन्न होते थे, किन्तु आज क्या कारण है जो मेरी ओर देखते भी नहीं और आर्तध्यानमें

‘इमं च णं’ इत्यादि.

आ गान्धु अबयकुमार स्नान करी तमाम प्रकारनां आभूषणोंथी सज्ज यध महलमांथी नीकणी तेज सभामंडपमां आग्या के जथां श्रेणिक राजा भेठा हता. श्रेणिक राजाने आर्तध्यान करता जेध कहुं-हे तात ! हुं न्यारे गीन दिवसे आवतो त्यारे आप भने जेध पुशी थता हता पणु आव शं कारण छे के भारी आभुं जेता नथी तथा आर्तध्यानमां भेठा छे. जे हुं आ वातने

सुन्दरघोषिनी टोका चेलना रानीका दोहद

१२५

सूनातः=अमारिघोषितातिरिक्तवधस्थानात् आर्द्रमासं रुधिरं वस्तिष्ठटकं शोणित-

बैठे हैं। अगर इस बातको सुननेके योग्य मुझे समझते हैं तो जैसी हो वैसी यथार्थरूपसे निःसंकोच होकर मुझे कहिये, जिससे मैं उसके निराकरणका प्रयत्न करूँ।

अभयकुमारकी ऐसी विनययुक्त वाणी सुनकर राजा बोले—हे पुत्र ! ऐसी कोई बात नहीं है जो तुझसे छिपाई जाय—तेरी छोटी माता चेलना रानीको महा-स्वप्नके तीसरे महिनेके अन्तमें दोहद (दोहला) उत्पन्न हुआ है कि—‘आपके उदर-वल्किे मांसको शूला (पका) कर और तल-भूनकर मदिराके साथ आस्वादव करूँ।’

इस दोहद (दोहला)के पूर्ण न होनेके कारण वह महादुःखित और कृशकाय होकर आर्तध्यान कर रही है। हे पुत्र ! इस दोहद (दोहला)को पूर्ण करनेके लिए अनेक उपाय सोचे परन्तु कोई उपाय पूरा नहीं दिखायी देता एतदर्थ आर्तध्यान करता हुआ बैठा हूँ। अपने पिताके मुखसे ऐसे वचन सुनकर, अभय-

सांभलवा योग्य छुं ओम समजता डो तो ने डोय ते यथार्थ इपे निःसंकोच थध मने कडो नेथी हुं तेनु निराकरण करवा प्रयत्न करे.

अभयकुमारनी ओवी विनययुक्त वाणी सांभली राजा ओल्या—हे पुत्र ! ओवी डोय वात नथो डे ने ताराथी छानी रभाय—तारी नानी माता चेलना राणीने मडास्वप्नना त्रीन मासने अंते दोहद (दोहला) उत्पन्न थयो छे डे—‘तमारा उदरवल्किमांसने पकावी तणी लुं (सेकी) मदिरानी साथे आस्वाद करे’। आ दोहद पुरो न थवाना कारखे ते मडादुःखित तथा कृशकाय थध आर्तध्यान करी रही छे, हे पुत्र ! ते दोहदने पूर्ण करवा भाटे अनेक उपाय विचारि जेया पणु डोय उपाय पूरा थाय तेम देजातो नथी. ओ भाटे आर्तध्यान करतो जेछे छुं. पोताना पिताना भुजेथी ओवां वचन सांभली अभयकुमार ओल्या—हे तात ! आ

૧૨૬

નિર્યાવલિકાસત્ર

યુક્તમુદરાન્તર્ભર્ત્તિમાગં ('કલેજા' ઇતિ ભાષાયામ્) ગૃહીત=આનયતેત્યર્થઃ ।
શેષં સ્પષ્ટમ્ ॥ ૩૦ ॥

મૂલમ્—

તણં સે અમણ કુમારે તં અહ્લં મંસં રુહિરં કપ્પણીકપ્પિયં કરેઇ,
કરિત્તા જેણેવ સેણિણ રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છઇ, ઉવાગચ્છિત્તા, સેણિયં રાયં
રહસિગયં સયણિજ્જંસિ ઉત્તાણયં નિવજ્જાવેઇ, નિવજ્જાવિત્તા, સેણિયસ્સ
ઉદરવલીસુ તં અહ્લં મંસં રુહિરં વિરવેઇ, વિરવિત્તા, વત્થિપુડણં વેઢેઇ,
વઢિત્તા સવંતીકરણેણં કરેઇ, કરિત્તા ચેલ્લણં દેવિં ઉપ્પિપાસાણ અવલોયણ-

કુમાર બોલે—હે તાત ! આપ આર્તધ્યાનકો છોડેં, મેં શીઘ્ર એસા ઉપાય કરૂંગા જિસસે
મેરી માતાકા દોહદ (દોહલ) પૂર્ણ હોજાય ।

ઇસ તરહ વિનયયુક્ત મધુર વચનોસે અપને પિતાકા મન સતુષ્ટ કરકે
અમયકુમાર અપને મહલ આયે । મહલ આકર અપને ગુપ્ત પુરુષોંકો બુલાયે
ઔર કહા કિ—હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ અમારિ—વોષણાકી સીમાકે બાહરકે વધ-
સ્થાનસે બસ્તિપુટકે સાથ ગીલા માંસ લાઓ ।

ઇસકે બાદ અન રાજપુરુષોંને અનકી આજ્ઞાકા યથાવત્ પાલન કિયા ॥૩૦॥

આર્તધ્યાન છોડો, હું જલદી એવો ઉપાય કરીશ કે જેથી મારી માતાનો દોહદ પૂર્ણ
થઇ જશે.

આ પ્રમાણે વિનય વાણાં મધુર વચનોથી પોતાના પિતાનું મન સંતુષ્ટ
પ્રમાડી અમયકુમાર પોતાને મહેલ ગયા. ત્યાં આવીને તેણે અંગત શુપ્ત પુરુષોને
બોલાવીને કહ્યું કે—હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો અમારિવોષણા કરેલી સીમા
(રાજ્યની અમુક સીમાની અંદર હિંસા ન કરવી એવી વોષણા—બંહેરાતવાળી જગ્યા)
થી બહાર કસાઇખાનામાંથી બસ્તિપુટ સાથે લીધું (તાબું) માંસ લઇ આવો.

ત્યાર પછી તે રાજપુરુષોએ તેમની આજ્ઞાનું કહ્યા પ્રમાણે પાલન કર્યું. (૩૦)

सुन्दरबोधिनो टीका चेल्लना रानीका दोहइ

१२७

वरगयं ठवावेइ, ठवावित्ता चेल्लणाए देवीए अहे सपक्खं सपडिदिसिं
सेणियं रायं सयणिज्जंसि उत्ताणगं निवज्जावेइ, सेणियस्स रन्नो उदरवलि-
मंसाइं कप्पणीकप्पियाइं करेइ, करित्ता से य भायणंसि पक्खिवति ।

तएणं से सेणिए राया अलियमुच्छियं करेइ करित्ता मुहुत्तंतरेणं
अन्नमन्नेणं सद्धिं संलवमाणे चिट्ठइ ।

तएणं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो उदरवलिमंसाइं गिण्हेइ,
गिण्हित्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणाए
देवीए उवणेइ ।

तएणं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रन्नो तेहिं उदरवलिमंसेहिं सोल्लेहिं
जाव दोहलं विणेइ ।

तएणं सा चेल्लणा देवी संपुण्णदोहला एवं संमाणियदोहला विच्छिन्न-
दोहला तं गब्भं सुहं सुहेणं परिवहइ ॥ ३१ ॥

छाया—

ततः खलु सः अभयः कुमारस्तभार्द्रं मांसं रुधिरं कल्पनीकल्पितं
करोति, कृत्वा यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रेणिकं
राजानं रहसिगतं शयनीये उत्तानकं निषादयति, निषाद्य श्रेणिकस्योदरवलिषु
तदार्द्रं मांसं रुधिरं विरावयति, विराव्य, बस्तिपुटकेन वेष्टयति, वेष्टयित्वा
स्रवन्तीकरणेन करोति, कृत्वा चेल्लनां देवीमुपरिभासादे अवलोकनवरगतां
स्थापयति, स्थापयित्वा चेल्लनाया देव्या अधः सपक्षं सप्रतिदिक् श्रेणिकं
राजानं शयनीये उत्तानकं निषादयति, श्रेणिकस्य राज्ञ उदरवलिमांसानि कल्पनी-
कल्पितानि करोति, कृत्वा तच्च भाजने प्रक्षिपति ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा अलीकमूर्छां करोति, कृत्वा मुहूर्तान्तरेण
अन्योज्ञ्येन सार्द्धं संलपन् तिष्ठति ।

१२८

निरयावलिमांसत्र

ततः खलु सः अभयकुमारः श्रेणिकस्य राज्ञः उदरवलिमांसानि
गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चेष्टना देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चेष्टनाया
देव्या उपनयति ।

ततः खलु सा चेष्टना देवी श्रेणिकस्य राज्ञस्तैरुदरवलिमांसैः शूलै-
र्यावद् दोहदं विनयति ।

ततः खलु सा चेष्टना देवी सम्पूर्णदोहदा एवं संमानितदोहदा
विच्छिन्नदोहदा तं गर्भं सुखं-सुखेन परिवहति ॥ ३१ ॥

टीका—

‘तण्णं से’ इत्यादि—ततः=तदनन्तरं सः=अभयः कुमारः तद्=उप-
नीतम्—आर्द्रं मांसं रुधिरं कल्पनीकल्पितं—कल्पनी=कर्त्तरिका ‘कतरणी’
इति भाषायाम्, तथा कल्पितं=कर्तितं करोति, कल्पशब्दोऽत्र छेदनार्थकः,
उक्तञ्च—‘सामर्थ्ये वर्णनायां च, छेदने करणे तथा ।

औपम्ये चाधिवासे च, कल्प-शब्दं विदुर्बुधाः ॥ १ ॥’

कृत्वा यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रेणिकं राजानं
रहसिगतम्=एकान्तेस्थितं शयनीये=शय्यायाम् उत्तानकं=उत्तानं निषादयति=
शाययति, निषाद्य=शाययित्वा श्रेणिकस्योदरवलिषु=उदरभागेषु तद्=उपनीतम्
आर्द्रं मांसं रुधिरं च विरावयति=धातूनामनेकार्थत्वादुपसर्गबलाद्वा स्थापय-

‘तण्णं से’ इत्यादि—

उसके बाद अभयकुमारने एकान्त स्थानमें राजाको सीधा सुलाकर उनके
पेटपर उस मांस-लोथडेको रखवा, फिर उसे बस्तिचर्मसे बांधा, वह ऐसा प्रतीत

‘तण्णं से’ इत्यादि.

पछी अभयकुमारै अकान्त स्थानमां राजाने सीधा (सीता) सुपडावी तेना
चेष्ट उपर ते मांसना बाध ने राख्यो पछी तेने अस्तीअर्भथी बांध्यो, ते अयुं

सुन्दरबोधनी टीका चेलना रानीका दोहद

१२९

तीत्यर्थः, विराव्य=स्थापयित्वा बस्तिपुटकेन वेष्टयति, वेष्टयित्वा स्रवन्तीकरणेन करोति=स्यन्दमानीकरोति, कृत्वा उपरि प्रासादे चेलनां देवीम् अवलोकनवरगताम्=सम्यङ्निरीक्षणपरां स्थापयति, यथा सा सम्यग् द्रष्टुं शक्नुयात्तथा प्रासादोपर्युपवेशयति, स्थापयित्वा, चेलनाया देव्या अधः=नीचैः सपक्षं=समानवामदक्षिणपार्श्वं सप्रतिदिक्=समानप्रतिदिग्भागं सर्वथा चेलनासंमुखं यथा स्यात्तथा श्रेणिकं राजानं शयनीये उत्तानकं निषादयति=किञ्चिदन्धकारावृतप्रदेशे शाययति । श्रेणिकस्य राज्ञ उदरवलिमांसानि, कल्पनीकल्पितानि=शस्त्रकर्तितानीव करोति, कृत्वा तच्च=मांसं रुधिरं च भाजने प्रक्षिपति=निदधाति ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा अलीकमूर्च्छा=कपटमूर्च्छा करोति, कृत्वा मुहूर्तान्तरेण अन्योऽन्येन=परस्परेण सार्द्धं संलपन्=वार्तालापं कुर्वन् तिष्ठति ।

होता था जैसे उससे रक्त झरता हो । तत्पश्चात् रानीको ऊपर-महलमें बुलवाई और उस दृश्यको देख सके ऐसे योग्य सुविधाजनक स्थानपर बैठाई । बाद राजाको जिसे रानी ठीक तरहसे देख सके ऐसे तथा कुछ अन्धकारवाले स्थानपर सुलाया, फिर राजाके पेटपर बँधे हुए उस मांसको कतरनी (कैंची) से काट-काटकर बर्तनमें रख दिया, कुछ देर तक राजा झूठी मूर्छामें पड़े रहे, और बाद आपसमें बात-चीत करने लगे ।

वागतुं इतुं के जल्ले तेभांथी दोहदी अरतुं डोय. त्यार पछी राज्णीने उपर-महलभां जोलावी तथा ते आ देभां जेध शके ओवां थोअ सुविधाजनक स्थाने जेसाडी पछी राजने जेम राज्णी जराजर जेध शके तेवा अने थोडा अंधकारवाणा स्थाने सुवाडया. पछी राजना पेट उपर आंधेलां ते मांस कातरथी कापी-कापीने वासजुम शभी दीधुं.

थोडा बभत सुधी राज जोटी भूर्छाभां पड्या रह्या अने पछी आपसभ बात करवा लाग्या.

१३०

निर्यावलिकाखण्ड

ततः स खलु अभयकुमारः श्रेणिकस्य राज्ञः उदरवलिमांसानि गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी तत्रैवोपागच्छति; उपागत्य च चेल्लनाया देव्याः उपनयति=समीपे स्थापयति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी श्रेणिकस्य राज्ञस्तैरुदरवलिमांसैः शूलैः=पक्वैः, यावद् दोहदं विनयति=पूरयति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी सम्पूर्णदोहदा=सम्पूर्णमनोरथा एवं सम्मानितदोहदा=आदृतदोहदा, विच्छिन्नदोहदा=इष्टवस्तुमाप्त्याऽन्यवस्त्वभिलाष-रहिता तं गर्भं सुखं सुखेन परिवहति=धारयति ॥ ३१ ॥

मूलम्—

तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि अयमेयारूवे जाव समुपज्जित्था, जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उदरवलिमंसाणि खाइयाणि तं सेयं खलु मम एयं गब्भं साडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, एवं संपेहेइ संपेहित्ता तं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणेहि य गब्भपाडणेहि य गब्भगालणेहि य गब्भविद्धंसणेहि य इच्छइ साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा विद्धंसइ वा ॥ ३२ ॥

छाया—

ततः खलु तस्याश्चेल्लनाया देव्या अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्र

इस प्रकार अभयकुमारने रानीका दोहद पूरा किया । रानी अपने दोहदके पूर्ण होनेपर सुखपूर्वक गर्भको धारण करने लगी ॥ ३१ ॥

आवी रीते अभयकुमारे राज्ञीने दोहद (धन्धा) पुरे कथे. राज्ञी पोताने दोहद पुरे भवाथी गर्भने धारण करती सुख पूर्वक रहेवा लागी. (३१)

सुन्दरबोधिनो टीका चेल्लना रानीके विचार

१३१

कालसमये अयमेतद्रूपो यावत् समुदपद्यत—यदि तावत् अनेन दारकेण गर्भ-
गतेन चैव पितुरुदरवलिमांसानि खादितानि तत् श्रेयः खलु मम एतं गर्भं
शातयितुं वा पातयितुं वा गालयितुं वा विध्वंसयितुं वा । एवं संप्रेक्षते,
संप्रेक्ष्य तं गर्भं बहुभिर्गर्भशातनैश्च गर्भपातनैश्च गर्भगालनैश्च गर्भविध्वंसनैश्च
इच्छति शातयितुं वा पातयितुं वा गालयितुं वा विध्वंसयितुं वा, नो चैव
खलु स गर्भः शीर्यते वा पतति वा गलति वा विध्वंसते वा ॥ ३२ ॥

टीका—

‘तएणं तीसे’ इत्यादि—ततः=तदनन्तरम् शातयितुम्=औषधैर्विशीर्ण-
यितुं, पातयितुं=गर्भाशयाद्बहिष्कर्तुम्, गालयितुं=रुधिरादिरूपं कर्तुम्, विध्वंसयितुं=
सर्वथा नाशयितुम्, एवम्=उक्तप्रकारेण संप्रेक्षते=विचारयति, अन्यत् सर्वं
सुबोधम् ॥ ३२ ॥

‘तएणं तीसे’ इत्यादि—

एक समय रानी रातको सोचने लगी कि—इस बालकने गर्भमें आते ही
अपने पिताके कलेजेका मांस खाया, इस लिये मुझे उचित है कि इस गर्भको
सडानेके लिए, गिरानेके लिए, गलानेके लिए और विध्वंस करनेके लिए कुछ उपाय
करूं । ऐसा विचारकर रानीने औषधि आदिके द्वारा वैसा ही उपाय किया, परन्तु
वह गर्भ न सड सका, न गिर सका न गल सका और न उसका किसी प्रकार
नाश हो सका ॥ ३२ ॥

‘तएणं तीसे’ इत्यादि.

એક સમય રાણી રાતમાં વિચાર કરવા લાગી કે આ બાળકે ગર્ભમાં આવતાંજ
પોતાના બાપનાં કલેજાનું માંસ ખાધું. આથી માટે માટે યોગ્ય છે કે આ ગર્ભને
સડાવવા માટે—પાડી નાખવા માટે—ગાળવા માટે અને નાશ કરવા માટે કોઈ ઉપાય
કરું એવા વિચાર કરી રાણીએ ઔષધી આદિથી એવાજ ઉપાય કર્યા. પરંતુ તે
ગર્ભ ન સડ્યો, ન પડ્યો, ન ગળ્યો કે ન કોઈ પ્રકારે તેનો નાશ થઈ શક્યો. (૩૨)

मूलम्—

तए णं सा चेळणा देवी तं गब्भं जाहे नो संचाएइ बहूहिं गब्भ-
साडणेहि य जाव गब्भविद्धंसणेहि य साडित्तए वा जाव विद्धं-
सित्तए वा, ताहे संता तंता परितंता निव्विन्ना समाणा अकामिया अवसवसा
अट्टवसट्टदुहट्टा तं गब्भं परिवहइ ।

तए णं सा चेळणा देवी नवणं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव
सोमालं सुरुवं दारयं पयाया ॥ ३३ ॥

छाया—

ततः खलु सा चेळना देवी तं गर्भं यदा नो शक्नोति बहुभिर्गर्भ-
शातनैश्च यावद् गर्भविध्वंसनैश्च शातयितुं वा यावद् विध्वंसयितुं वा तदा
शान्ता तान्ता परितान्ता निर्विण्णा सती अकामिका अपस्ववशा आर्तवशार्त-
दुःखार्ता तं गर्भं परिवहति ।

ततः खलु सा चेळना देवी नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु यावत्
सुकुमारं सुरुपं दारकं प्रजाता ॥ ३३ ॥

टीका—

‘तएणं सा’ इत्यादि—ततः=गर्भविध्वंसनप्रयासवैफल्यानन्तरं सा
चेळना देवी यदा तं गर्भं नाशयितुं नो शक्नोति तदा श्रान्ता=ग्लानिं प्राप्ता,

‘तएणं सा’ इत्यादि—

बादमें रानी अपने प्रयासके विफल होनेके कारण ग्लानिको प्राप्त हुई,

‘तएणं सा’ इत्यादि.

पछी राखी पोताना प्रयासमें निष्फल नवाधी अइसोस करवा लागी भेद

तान्ता=खेदं प्राप्ता, परितान्ता=विशेषतः खिन्ना, निर्विण्णा=अतिशयितखेदापन्ना,
अकामिका=स्वकार्यसम्पादनाऽसमर्थतया वाञ्छारहिता, अत एव अपस्ववशा=
पराधीना आर्तवशादुःखार्ता=आर्तवशम्=आर्तध्यानवश्यताम् ऋता=गता
(प्राप्ता) इति आर्तवशाता सा चासौ दुःखेनार्ता=सा तथा-आर्तध्यानविवशी-
भूता दुःखिता सती तं गर्भं परिवहति ।

ततः खलु सा चेष्टना देवी नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेष्टु यावत्
सुकुमारं सुरुपं दारकं पुत्रं प्रजाता=प्रजनितवती ॥ ३३ ॥

मूलम्—

तएणं तीसे चेष्टणाए देवीए इमे एयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-जह
त्ताव इमेणं दारएणं गम्भगएणं चेव पिउणो उदरवलिमंसाइं खाइयाइं, तं न
नज्जइ णं एसदारए संवह्ममाणे अम्हं कुलस्स अंतकरे भविस्सइ, तं सेयं
खलु अम्हं एयं दारगं उकुरुडियाए, उज्झावित्ताए एवं संपेहेइ, संपेहित्ता
दासचेडिं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिए !
एयं दारगं एगते उकुरुडियाए उज्झाहि ।

तए णं सा दासचेडी चेष्टणाए देवीए एवं वुत्ता समाणी करयल०
जाव कटु चेष्टणाए देवीए एयमहं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता तं

खेदको प्राप्त हुई, अपने इच्छित कार्यके विफल होनेसे असमर्थ हुई और आर्तध्यान
वश दुःखी होकर गर्भका पालन करने लगी, और फिर नौ मास बीतनेपर सुकुमार
एवं सुन्दर पुत्रको जन्म दिया ॥ ३३ ॥

शुक्रतः थध अने धारेलुं कार्य आभ विहल थवाथी पोते असमर्थ थध अने आर्त-
ध्यानवश दुःखी थधने गर्भनु पालन करवा लागी. तथा नव मास बीतने
पछी सुकुमार अने सुन्दर पुत्रने जन्म आये. (३३)

दारगं करतलपुडेणं गिण्हइ गिण्हित्ता, जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं एगंते उकुरुडियाए उज्झाइ । तए णं तेणं दारएणं एगंते उकुरुडियाए उज्झितेणं समाणेणं सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्था ।

तएणं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धेट्ठे समाणे जेणेव असोग-वणिया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, तं दारगं एगंते उकुरुडियाए उज्झियं पासेइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तं दारगं करतलपुडेणं गिण्हइ गिण्हित्ता, जेणेव चेळणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेळणं देवि उच्चावयाहिं आओसणाहिं, आओसइ आओसित्ता उच्चावयाहिं निब्भच्छ-णाहिं निब्भच्छेइ, निब्भच्छित्ता एवं उद्धंसणाहिं उद्धंसेइ, उद्धंसित्ता एवं वयासी-किस्स णं तुमं मम पुत्तं एगंते उकुरुडियाए उज्झावेसि ? त्तिकट्ठे चेळणं देवि उच्चावयसवहसावियं करेइ करित्ता, एवं वयासी-तुमं णं देवा-णुप्पिए ! एयं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवद्धेहि ।

तएणं सा चेळणा देवी सेणिएणं रत्ता एवं वुत्ता समाणी लज्जिया विलिया विट्ठा करयलपरिगहियं० सेणियस्स रत्तो विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, तं दारय अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवद्धेइ ॥ ३४ ॥

छाया—

ततः खलु तस्याश्चेलुनाया देव्या अयमेतद्रूपो यावत् समुदपद्यत-
यदि तावद् अनेन दारकेण गर्भगतेन चैव पितुरुदरवलिमांसानि खादितानि
ब्रह्म ज्ञायते खलु एष दारकः संवर्द्धमानः अस्माकं कुलस्यान्तकरो भविष्यति
तच्छ्रेयः खलु अस्माकम् एनं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झितुम्, एवं

सुन्दरबोधिनी टोका चेल्लनाको श्रेणिकका उपाळम्भ

१३५

संभक्षते, संभक्ष्य दासचेटीं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं देवानुप्रिये ! एनं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झति ।

ततः खलु सा दासचेटी चेल्लनया देव्या एवमुक्ता सती करतल० यावत् कृत्वा चेल्लनाया देव्या एनमर्थं विनयेन प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य तं दारकं करतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैवाशोकवनिका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झति ।

ततः खलु तेन दारकेण एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झितेन सता साऽशोकवनिका उद्योतिता चाप्यभवत् ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् यत्रैवाशोकवनिका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झितं पश्यति, दृष्ट्वा आशुरक्तः यावत् मिसिमिसीकुर्वन् तं दारकं करतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चेल्लनां देवीमुच्चावचाभिराक्रोशनाभिराक्रोशति, आक्रुश्य उच्चावचाभिर्निर्भर्त्सनाभिर्निर्भर्त्सयति, निर्भर्त्स्य, एवमुद्धर्षणाभिरुद्धर्षयति, उद्धर्ष्य एवमवादीत्-किमर्थं खलु त्वं मम पुत्रमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झयसि ? इति कृत्वा चेल्लनां देवीमुच्चावचशपथशापितां करोति, कृत्वा एवमवादीत्-त्वं खलु देवानुप्रिये ! एनं दारकमनुपूर्वेण संरक्षन्ती, संगोपयन्ती संवर्द्धय ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी श्रेणिकेन राज्ञा एवमुक्ता सती लज्जिता व्रीडिता विड्ढा करतलपरिगृहीत० श्रेणिकस्य राज्ञो विनयेन एतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य तं दारकमनुपूर्वेण संरक्षन्ती संगोपयन्ती संवर्द्धयति ॥ ३६ ॥

टीका—

‘तएणं तीसे’ इत्यादि—ततः=तत्पश्चात् पुत्रजन्मानन्तरं तस्याः चेष्ट-
नाया देव्या अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणलक्षणः यावत् पदेन “अज्भत्थिए, चिं-
त्थिए, पत्थिए, कप्पिए, मणोगए संकप्पे” एतेषां संग्रहः । एतेषां व्याख्या
प्रागुक्ता, समुदपद्यत=जातः—यदि तावत् अनेन दारकेण=पुत्रेण गर्भगतेनैव
पितुरुदरवलिमांसानि खादितानि, मया तन्न ज्ञायते खलु एष दारकः
संवर्द्धमानः=वृद्धिं प्राप्तः सन् प्रौढावस्थायाम् अस्माकं कुलस्य=वंशस्य
अन्तर्करः=नाशको भविष्यति तत्=तस्मात्कारणात् खलु=निश्चयेन एकान्ते=निर्जने
स्थले एनं दारकम् उत्कुरुटिकायां=कचवरपुञ्जस्थाने ‘उकरडी’ इति
भाषायाम् उज्झितुं=त्यक्तुमस्माकं श्रेयः=कल्याणकारकम् ।

‘तएणं तीसे’ इत्यादि—

बाद रानीके मनमें ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि इस बालकने गर्भमें आते
ही पिताकी उदरवलिका मांस खाया । यदि यह बड़ा होकर समर्थ बनेगा तो न
जाने हमारे वंशका किस प्रकार नाश करेगा ? इस लिये उचित है कि इसे एकान्त
स्थान जहाँ कोई न देख सके ऐसी उकरडीपर फिकवा दूँ ।

‘तएणं तीसे’ इत्यादि.

पछी राणीना मनमां अवेो विचार उत्पन्न थयेो के—आ गणके गर्भमां
आवतांनूणापनी उदरवलीनुं मांस पाधुं जे मोटो थतां समर्थ बनशे तो न
आण्हे अमारा वंशनेो क्या प्रकारे नाश करशे. आथी भने उचित छे के आने
अेकांत स्थान जयां केाई जेअ न शके अेवा उकरडा उपर ईकावी देवेो.

अेवा पोताना मनमां विचार करी दासीने ओलावी, अने तेने कहुं—हे
देवानुप्रिये ! आने संताडीने लछ न अने अेकांत उकरडे नाभी दे.

सुन्दरबोधिनी टीका चेल्लनाको श्रेणिकका उपाद्धम्म

१३७

एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य दासचेटीं शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा एवम्=वक्ष्यमाणम् अवादीत्-हे देवानुप्रिये ! त्वं खलु गच्छ एनं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झ=प्रक्षिप ।

ततः=चेल्लनया देव्यैवमुक्ता सती सा दासचेटी 'तथाऽस्तु' इति-कृत्वा करतलपरिगृहीतमञ्जलिपुटं मस्तके कृत्वा=निधाय चेल्लनाया देव्या एनम्=अर्थम्=निदेशम् त्रिनयेन प्रतिशृणोति=स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य तं दारकं करतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव अशोकवनिका=अशोकवाटिका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झति=प्रक्षिपति ।

ततः खलु तेन दारकेण एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झितेन सता साऽशोकवनिका उद्योतिता=प्रकाशिता चाऽप्यभवत् ।

ततः=दारकप्रक्षेपणानन्तरं स श्रेणिको राजा अस्याः कथायाः=दारक-प्रक्षेपणवृत्तान्तस्य लब्धार्थः=ज्ञातसमाचारः सन् यत्रैवाशोकवनिका तत्रैवो-

एसा अपने मनमें विचारकर दासीको बुलवाया और उससे कहा-हे देवानुप्रिये ! इसको छिपाकर छेजा और एकान्त उकरडीपर डाल आ ।

इस तरह चेल्लना रानीकी आज्ञा पाकर दासीने उस बालकको हाथोंसे उठाया और अशोकवाटिकामें जाकर एकान्त स्थानमें उकरडीपर डाल दिया । वह बालक बड़ा तेजस्वी था इस कारण उससे अशोकवाटिका प्रकाशयुक्त हो गयी ।

पश्चात् राजा श्रेणिकको किसी तरह विदित हुआ कि रानी चेल्लनाने जन्मते

आवी रीते चेल्लना राष्ठीनी आज्ञा यतां दासीअे ते भाणकने हाथ पडे छिपाडीने अशोकवाटिकाभां भणने अेकांत स्थानभां उकरडे ईंकी दीधो. ते भाणक भहु तेजस्वी हते। आ कारखे तेनाथी अशोक-वाटिका प्रकाशयुक्त भनी गछ.

पछी राजा श्रेणिकना बखुवामां ईअ रीते आबुं के राष्ठी चेल्लनाअे

પાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય તં દારકમેકાન્તે ઉત્કુરુટિકાયામુઝ્મિતં પદ્યતિ, દૃષ્ટ્વા
 ચ-આશુરક્તઃ આશુ-શીઘ્રં રક્તઃ=કોપેનાઝ્રુણનયનઃ યાવત્ મિસિમિસન્=ક્રોધ-
 જ્વાલયા જ્વલન્ સન્ તં દારકં કરતલપુટેન ગૃહ્ણતિ ગૃહીતા યત્રૈવ ચેલ્લના
 દેવી તત્રૈવોપાગચ્છતિ ઉપાગત્ય ચેલ્લનાં દેવીમ્ ઉચ્ચાવચાભિઃ=નાનાપ્રકારાભિઃ
 આક્રોશનાભિઃ=માનસિકકોપૈઃ આક્રોશતિ=તિરસ્કારપૂર્વકં ક્રુધ્યતિ, આક્રુશ્ય=
 પ્રકુપ્ય ઉચ્ચાવચાભિઃ=નાનાવિધાભિઃ ભર્ત્સનાભિઃ=દુર્વચનાપમાનૈઃ નિર્ભર્ત્સયતિ=
 પરુષવચનૈરપમાનયતિ, નિર્ભર્ત્સ્ય એવમ્=અનેન પ્રકારેણ ઉદ્દર્ષણાભિઃ=તર્જન્યાદિ-
 દર્શનપૂર્વકતિરસ્કારૈઃ, ઉદ્દર્ષયતિ=તિરસ્કરોતિ, ઉદ્દર્ષ્ય એવમ્=અનુપદવક્ષ્ય-
 માણમ્ અવાદીત્-હે દેવિ ! ત્વં કિમર્થં સ્વલુ મમ પુત્રમેકાન્તે ઉત્કુરુટિકાયાં
 દાસચેઢ્યા સમુઝ્મયસિ ?, ઇતિ કૃત્વા=ઉક્તરીત્યા આક્રોશનાદિકં વિધાય

બાલક (નવજાત શિશુ)કો કહીં ફિકવા દિયા હૈ, તવ રાજા ઢૂંઢતે હુએ અચાનક
 અશોકવાટિકામેં આયે ઓર ઉકરડીપર પડે હુએ બાલકકો દેસા । ઉસે દેસકર
 રાજા ઉસી સમય બડે ક્રુદ્ધ હુએ ઓર ક્રોધસે જલતે હુએ વે ઉસ બાલકકો હાથમેં
 લેકર ચેલના રાનીકે પાસ પહુંચે, ઓર અનેક પ્રકારકે આક્રોશ શબ્દોસે રાનીકા
 તિરસ્કાર કિયા, અનેક પ્રકારકે કઠોર શબ્દોસે ભર્ત્સના કી, તર્જની આદિ અંગુલી
 દિસવાકર બહુત અપમાન કિયા ઓર બોલે-હે રાની ! કિસ લિયે તૂને મેરે ઇસ
 બાલકકો દાસી દ્વારા ઉકરડીપર ફિકવા દિયા । ઇસ તરહ ચેલના રાનીકો ઉલાહના

જન્મતા (નવજાત શિશુ) બાળકને ક્યાંક ફેંકાવી દીધો છે ત્યારે રાબા પોતે
 તપાસ કરવા માટે ગયા-કેમથી તપાસ કરતાં, અશોકવાટિકામાં આવ્યા અને
 ઉકરડા ઉપર પડેલા બાળકને દીડો. તેને જોઇને તેજ વખતે રાબા બહુ ગુસ્સે થયા
 અને ક્રોધમાં બળતાં થકા તેઓ તે બાળકને હાથમાં ઉપાડી લઇને ચેલના રાણીની
 પાસે પહોંચ્યા અને અનેક પ્રકારના આક્રોશ શબ્દોથી રાણીને તિરસ્કાર કર્યો.
 અનેક પ્રકારના કઠોર શબ્દોથી અનાદર કરી તર્જની આંગળી દેખાડી બહુ અપમાન
 કર્યું અને કહ્યું-હે રાણી ! શા માટે તેં મારા આ બાળકને દાસી દ્વારા ઉકરડીએ

सुन्दरबोधिनी टीका चेलना की श्रेणिकका उपाख्यम्

१३९

चेलनां देवीम् उच्चावचशपथशापितां=नानाप्रकारकदेवगुरुधर्मादिशपथैः
 शापितां=प्रतिज्ञापितां करोति, कृत्वा, एवम्=अमुना प्रकारेण अवादीत्-
 हे देवानुप्रिये ! त्वम् एनं दारकं अनुपूर्वेण=क्रमेण संरक्षन्ती आपद्भ्यः,
 संगोपयन्ती=वस्त्राच्छादनगर्भगृहप्रवेशनादिभिः क्षेमं प्रापयन्ती सर्वार्थं
 स्तन्यपानादिना वृद्धिं प्रापय । ततः=श्रेणिकराजनिदेशानन्तरं 'खलुः'
 वाक्यालङ्कारार्थः, सा=श्रेणिकराजमहिषी 'चेलना' देवी श्रेणिकेन राज्ञा
 एवम्=पूर्वोक्तप्रकारं प्रतिपालननिदेशम् उक्ता=निवेदिता सती 'लज्जिता,
 स्वतः, व्रीडिता परतः, विड्वा=उभयतो लज्जिता, देशी शब्दः, एते समाना-

देकर देव, गुरु, धर्म आदिकी शपथ देकर इस प्रकार बोले-हे देवानुप्रिये ! तुम
 इस बालककी आपत्तिसे रक्षा करो और वस्त्रसे ढाँककर प्रसूतिगृहमें ले जाओ. जिस
 प्रकार यह सुखी रहे वैसा प्रयत्न करो और स्तनपान आदि कराकर इसका अच्छी
 तरह पालन-पोषण करो ।

इस प्रकार राजाके कहनेपर रानी, अपने इस अकर्तव्यपर स्वतः लज्जित
 हुई, 'राजा मेरे इस अकर्तव्य कर्मसे अपने मनमें क्या समझे होंगे ?' ऐसा विचार
 कर राजासे लज्जित हुई, इस प्रकार रानी चेलना दोनों ही ओरसे बड़ी ही लज्जित हुई ।

इंकावी दीधो. आवी रीते चेलना राणीने ढपडो आपी देव, गुरु, धर्म आदिना
 सोगंड आपी-आपी आ प्रभाणु ओढ्या-डे देवानुप्रिये ! तमे आ पाण्डनी
 आपत्तिथी रक्षा करे अने वस्त्रथी ढांडी प्रसूतिगृहमां लध लओ. जेवी रीते
 आ सुभी रहे तेवा प्रयत्न करे तथा स्तन-पान आदि करावी तेनु सारी रीते
 पालन-पोषण करे.

आ प्रकारे राजना कडेवाथी राणी पोताना आ दुष्कृत्यथी स्वतः लज्जित
 थध, 'राज भास आ दुष्कृत्यथी पोतानां मनमां शुं समज्या हथे' ओम विचा-
 रीने राजथी लल पाभी, आ प्रभाणु जने प्रकारे जहु लज्जित थध.

ર્થકાઃ, યદ્વા-‘વ્યલીકે’ તિ છાયા વ્યલીકા=પતિપ્રતિકૂલાચરણેન સાપરાધા કરતલપરિગૃહીતં શિર આવર્તે દશનચં મસ્તકેઽઙ્ગલિં કૃત્વા શ્રેણિકસ્ય રાજ્ઞો=રાજસમ્બન્ધિનમ્ એતમ્=દારકપરિપાલનનિદેશરૂપમ્-અર્થમ્=પુત્રરક્ષણનિદેશં પ્રતિ-શ્રુણોતિ=સ્વીકરોતિ, સ્વીકૃત્ય તં દારકં=અનુપૂર્વેણ=યથાવત્ સંરક્ષન્તી સગો-પયન્તી સંવર્દયતિ=પાલનપોષણાદિના વૃદ્ધિં નયતિ ॥ ૩૪ ॥

મૂલ્ય—

તણ ણં તસ્સ દારગસ્સ ઇગંતે ઉકુરુડિયાણ ઉઙ્ગિઙ્ગમાણસ્સ અગ્ગં ગુલિયાણ કુકુડપિચ્છણં દૂમિયા યાવિ હોત્થા, અભિવ્વણં અભિવ્વણં પૂયં ચ સોણિયં ચ અભિનિસ્સવહ્ । તણ ણં સે દારણ વેયણાભિભૂણ સમાણે મહયા મહયા સદ્દેણં આરસહ્ । તણં સેણિણ રાયા તસ્સ દારગસ્સ આરસિત-સહં સોચ્છા નિસમ્મ જેણેવ સે દારણ તેણેવ ઉવાગચ્છહ્, ઉવાગચ્છિત્તા તં દારગં કરતલપુડેણં ગિણ્હહ્ ગિણ્હિત્તા તં અગ્ગંગુલિયં આસયંસિ પક્કિવ્વહ્, પક્કિવ્વિત્તા પૂયં ચ સોણિયં ચ આસણં આમુસહ્ । તણ ણં સે દારણ નિવ્વુણ નિવ્વેયણે તુસિણીણ સંચિટ્ઠહ્ । જાહે વિ ય ણં સે દારણ વેયણાણ અભિભૂણ સમાણે મહયા મહયા સદ્દેણં આરસહ્ તાહે વિ ય ણં સેણિણ રાયા જેણેવ સે દારણ તેણેવ ઉવાગચ્છહ્, ઉવાગચ્છિત્તા, તં દારગં કરતલપુડેણં ગિણ્હહ્, તં ચેવ જાવ નિવ્વેયણે તુસિણીણ સંચિટ્ઠહ્ ।

પતિકે પ્રતિકૂલ આચરણસે રાનીકો અતિશય ચેદ ઓર પશ્ચાત્તાપ હુઆ । વાદ વહ હાથ જોડકર સવિનય પુત્રપાલનરૂપ રાજાકી આજ્ઞાકો સ્વીકાર કર બાલકકા મલીમૈતિ પાલન કરને લગી ॥ ૩૪ ॥

પતિના વિરૂદ્ધ આચરણથી રાણીને અતિશય ખેદ અને પશ્ચાત્તાપ થયો । બાદ હાથ બેડીને સવિનય પુત્રપાલન રૂપ રાજાની આજ્ઞાનો સ્વીકાર કરી બાળકનું સારી રીતે પાલન કરવા લાગી. (૩૪)

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो तइए दिवसे चंदसूरदंसणियं
करेंति जाव संपत्ते बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गुणनिष्फन्नं नामधिज्जं करेंति,
जम्हाणं अम्हं इमस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अंगुलिया
कुक्कुडपिच्छएणं दूमिया, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं 'कूणिए' ।
तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं करेंति 'कूणिय'त्ति ॥ ३५ ॥

छाया—

ततः खलु तस्य दारकस्य एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्ज्यमानस्याऽग्रा-
ङ्गुलिका कुक्कुटपिच्छकेन दूना चाऽप्यभूत्, अभीक्ष्णमभीक्ष्णं पूयं च शोणितं
चाभिनिस्स्रवति । ततः खलु स दारको वेदनाभिभूतः सन् महता महता
शब्देन आरसति । ततः खलु श्रेणिको राजा तस्य दारकस्याऽऽरसितशब्दं
श्रुत्वा निशम्य यत्रैव स दारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, तं दारकं करतल-
पुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा तामग्राङ्गुलिकामास्ये प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य, पूयं च
शोणितं चास्येन आमृशति । ततः खलु स दारको निर्दुतो निर्वेदनस्तूष्णीकः
संतिष्ठते । यदापि च खलु स दारको वेदनयाऽभिभूतः सन् महता-महता
शब्देन आरसति तदाऽपि च खलु श्रेणिको राजा यत्रैव स दारकस्तत्रैवो-
पागच्छति, उपागत्य तं दारकं करतलपुटेन गृह्णाति, तदेव यावत् निर्वेदन-
स्तूष्णीकः संतिष्ठते ।

ततः खलु तस्य दारकस्याम्बापितरौ तृतीये दिवसे चन्द्रसूर्यदर्शनं
कारयतः यावत् संप्राप्ते द्वादशाहे दिवसे इममेतद्रूपं गुणनिष्पन्नं नामधेयं
कुरुतः, यस्मात् खलु अस्माकमस्य दारकस्य एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्ज्यमान-
स्याङ्गुलिका कुक्कुटपिच्छकेन दूमिता (कूणिता) तद् भवतु खलु अस्माकमस्य
दारकस्य नामधेयं 'कूणिकः' । ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ
नामधेयं कुरुतः 'कूणिकः' इति ॥ ३५ ॥

ટીકા—

‘તણં તસ્સ’ ઇત્યાદિ—તતઃ=ગૃહસમાનયનાનન્તરં તસ્ય દારકસ્ય
 એકાન્તે—ઉત્કુરટિકાયામ્ ઉજ્જ્યમાનસ્ય અગ્રાશુલિકા કુક્કુટપિચ્છકેન=પિચ્છ
 એવ પિચ્છકઃ=ચઠ્ઠુઃ, કુક્કુટસ્ય પિચ્છકઃ કુક્કુટપિચ્છકઃ, તેન=કુક્કુટ-
 ચઠ્ઠુના, દૂના=પરિતાપિતા દદ્ધેતિ યાવદિતિ ચ અભૂત્ । તેનાશુલિતોઽભીક્ષ્ણ-
 મભીક્ષ્ણં=પુનઃ પુનઃ પૂયં=દૂષિતદુર્ગન્ધશોણિતમ્—‘પીપ’—ઇતિ ભાષાયામ્—
 શોણિતં=રક્તં ચ અભિનિસ્રવતિ । તતઃ=તસ્માત્—પૂયશોણિતાભિસ્રાવાત્ સ દારકો
 વેદનાભિભૂતઃ=તીવ્રદુઃસ્વપીડિતઃ સન્ મહતા—મહતા=ઉચ્ચૈરુચ્ચૈઃ શબ્દેન=ચીત્કારેણ
 આરસતિ=વિલપતિ । તતઃ સ્વલુ શ્રેણિકો રાજા તસ્ય દારકસ્ય આરસિત-
 શબ્દમ્=આર્તનાદં શ્રુત્વા નિશમ્ય=હૃદયેનાવધાર્ય યત્રૈવ સ દારકસ્તત્રૈવો-
 પાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય તં દારકં કરતલપુટેન ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા તામ્=કુક્કુટ-

‘તણં તસ્સ’ ઇત્યાદિ—

એકાન્તઃ ઉકરડીપર ડાઢે હુણે ઉસ બાલકકી અંગુલીકે અગ્રભાગકો કુક્કુટ
 (મુઝે)ને કાટ સ્વાયા જિસસે ઉસકી અંગુલી પક ગયી ઓર ઉસસે બારબાર રક્ત
 ઓર પીપ બહને લગા, હિસસે ઉસકો બડી વેદના હોતી થી ઓર આર્તસ્વરસે રુદન
 કરતા થા । ઉસકા આર્તનાદ સુનકર રાજા ઉસકે પાસ આતા થા ઓર બાલકકો
 ઉઠાકર ઉસકી અંગુલી અપને મુંહમેં લેકર શરતે હુણે શોણિત ઓર પીપકો પૂસ ૨

‘તણં તસ્સ’ ઇત્યાદિ.

એકાન્ત ઉકરડી ઉપર નાખી દીધેલા તે છોકરાની આંગળીના આગલા ભાગને
 કુકડો કરડી ગયો જેથી તેની આંગળી પાકી ગઈ તથા તેમાંથી વારંવાર લોહી
 અને પડ વહેવા લાગ્યું. આથી તેને ખડુ વેદના થતી હતી અને આર્તસ્વરથી
 રૂદન કરતો હતો.

તેને આર્તનાદ સાંભળી રાજા તેની પાસે આવતો અને બાળકને ઉપાડીને
 તેની આંગળી પોતાના મોંમાં લઇને ઝરતાં લોહી અને પડને ચુસી-ચુસીને થુકી

सुन्दरबोधिनो टोका कृष्णिका नामकरण

१४३

दष्टमग्रामुलिकाम्=अङ्गुल्या अग्रभागम् आस्ये=स्वमुखे प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य-पूयं शोणितं च आस्येन आमृशति=चोषयति । ततः=तस्माच्चोषणात् खलु स दारको निर्वृतः=शान्तः निर्वेदनः=वेदनारहितः तूष्णीकः=समौनः संतिष्ठते=आस्ते । एवं यदा यदा स आर्चस्वरेण रौति तदा तदा श्रेणिक एवमेव करोति ।

ततः=अङ्गुलीपीडाशमनानन्तरं तस्य दारकस्य मातापितरौ तृतीये दिवसे चन्द्रसूर्यदर्शनं कारयतः यावत् सम्प्राप्ते द्वादशे दिवसे एतद्रूपं गुणनिष्पन्नं नामधेयं कुरुतः-यस्मात् खलु उत्कुरुटिकायां पतितस्यास्य दारकस्याङ्गुलिका कुक्कुटपिच्छकेन दूमिता=पीडिताऽतः कूणिता-संकुचिता जाता तत्=तस्मात्कारणाद् भवतु अस्य दारकस्य नाम 'कूणिक' इति, तदनु मातापितरौ तस्य दारकस्य नाम कुरुतः 'कूणिक' इति ॥ ३५ ॥

कर थूकतां था, जिससे उस बालककी वेदना कम होती थी और वह चुप होजाता था । जब कभी भी वह बालक वेदनासे छटपटाने लगता था तभी राजा श्रेणिक धाकर उसकी वेदना उसी प्रकारसे शान्त करता था ।

बाद माता पिताने तीसरे दिन उस बालकको चन्द्र सूर्यका दर्शन कराया । यावत् बारहवें दिन बड़े उत्सवके साथ उस बालकका नाम रखते हुए बोले कि-उकरडीपर डाढे हुए हमारे इस बालककी अंगुली मुर्गेके काट खानेसे कूणित-संकुचित होगई इस कारणसे इस बालकका गुण-निष्पन्न नाम 'कूणिक' रक्खा जाय, ऐसा सोचकर माता-पिताने उसका नाम 'कूणिक' रक्खा । ॥ ३५ ॥

नाभतो હતો જેથી તે બાળકની વેદના બોધી થતી હતી. અને તે શાંત (રડતો બંધ) થઈ જતો હતો. બ્યારે બ્યારે તે બાળક વેદનાથી તડકડવા લાગતો ત્યારે ત્યારે રાજા શ્રેણિક આવીને તેની વેદના તેજ રીતે શાંત કરતા હતા.

બાદ માતા પિતાએ ત્રીજે દિવસે તે બાળકને ચંદ્ર સૂર્યનાં દર્શન કરાવ્યાં. પછી બારમે દિવસ મોટા ઉત્સવથી તે બાળકનું નામ પાડતાં બોલ્યા કે-ઉકરડી ઉપર નાખી દીધેલા અમારા આ બાળકની આંગળી કુકડાના કરડી ખાવાથી કુણિત (સંકુચિત) થઈ ગઈ તેથી આ બાળકનું ગુણનિષ્પન્ન (ગુણ દર્શાવતું) નામ 'કૂણિક' રાખવું બોધ્યું. આવું વિચારી માતા પિતાએ તેનું નામ 'કૂણિક' રાખ્યું. (અ)

૨૪૬

નિર્યાવલિકાવજ્ર

મૂલમ્—

તણં તસ્ય કૂણિયસ્સ અણુપુન્નેણં ઠિંવહિયં ચ જહા મેહસ્ય જાતુ
ઉપિં પાસાયવરગણં વિહરઇ, અદ્દહો દાઓ ॥ ૩૬ ॥

છાયા—

તતઃ સ્વલુ તસ્ય કૂણિકસ્યાનુપૂર્વેણ સ્થિતિપતિતં ચ યથા મેઘસ્ય
યાવત્ ઉપરિ પ્રાસાદવરગતો વિહરતિ । અષ્ટ દાયાઃ ૩૬ ॥

ટીકા—

‘ તણં તસ્સ ’ इत्यादि । ततः=नामकरणानन्तरं तस्य कूणिकस्य
अनुपूर्वेण=अनुक्रमेण स्थितिपतितं=कुलक्रमागतम् उत्सवादिकम् यथा मेघस्य=
मेघकुमारस्येव करोति यावत् अष्टाष्ट दायः=अशुरेण जामात्रे दीयमानाः पदार्थाः
‘ दहेज ’ इति भाषायाम् ॥ ३६ ॥

‘ તણં તસ્સ ’ इत्यादि—

નામકરણકે બાદ કૂણિકકા કુલપરમ્પરાગત ઉત્સવ-વિવાહાદિ કાર્ય મેઘ
કુમારકે સમાન હુણે । અશુરકી ઓરસે આઠ-આઠ દહેજ વસ્તુએ આવી ઓર શ્રેષ્ઠ
પ્રાસાદપર પૂર્વપુણ્યોપાર્જિત મનુષ્યસમ્બન્ધી પાંચો ઇન્દ્રિયોકે સુસ્તકા અનુભવ કરને
છે ॥ ૩૬ ॥

‘ તણં તસ્સ ’ इत्यादि.

નામકરણ પછી કૂણિકના કુલપરંપરાનુસાર ઉત્સવ-વિવાહ આદિ કાર્ય
મેઘકુમાર સમાન થયાં. અશુરના તરફથી આઠ-આઠ દહેજ વસ્તુ આવી અને ઉત્તમ
મહેલમાં પૂર્વપુણ્યોપાર્જિત મનુષ્યસમ્બન્ધી પાંચે ઇન્દ્રિયોના સુખનો અનુભવ
કરના હતા. (૩૬)

मूलम्

तएणं तस्स कूणियस्स कुमारस्स अन्नया पुण्वरत्ता० जाव समुप्पज्जित्था-
एवं खलु अहं सेणियस्स रत्तो वाघाएणं नो संचाएमि सयमेव रज्जसिरिं करे-
माणे पालेमाणे विहरित्तए, तं सेयं मम खलु सेणियं रायं निलयबंधणं
करेत्ता अप्पाणं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तए त्तिकहुं एवं
संपेहेइ, संपेहित्ता सेणियस्स रत्तो अंतराणि य छिड्डाणि य विरहाणि य
पडिजागरमाणे२ विहरइ ।

तएणं से कूणिए कुमारे सेणियस्स रत्तो अंतरं वा जाव मम्मं वा
अलभमाणे अन्नया कयाइ कालादीए दस कुमारे नियघरे सहावेइ, सहावित्ता
एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे सेणियस्स रत्तो वाघाएणं नो
संचाएमो सयमेव रज्जसिरिं करेमाणा पालेमाणा विहरित्तए, तं सेयं देवाणु-
प्पिया ! अम्हं सेणियं रायं निलयबंधणं करेत्ता रज्जं च रट्ठं च बलं च
वाहणं च कोसं च कोट्टागारं च जणवयं च एकारसभाए विरिंचित्ता सयमेव
रज्जसिरिं करेमाणाणं जाव विहरित्तए ।

तएणं ते कालादीया दस कुमारा कूणियस्स कुमारस्स एयमट्ठं
विणएणं पडिसुणेंति । तएणं से कूणिए कुमारे अन्नया कयाइ सेणियस्स
रत्तो अंतरं जाणाइ, जाणित्ता सेणियं रायं निलयबंधणं करेइ, करित्ता
अप्पाणं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेइ । तएणं से कूणिए
कुमारे राया जाए महया० ॥ ३७ ॥

छाया—

ततः खलु तस्य कूणिकस्य कुमारस्य अन्वदा पूर्वरात्रा० यावत्स-
मुदपद्यत-एवं खलु अहं श्रेणिकस्य राज्ञो व्याघातेन न शक्नोमि स्वयमेव
राज्यश्रियं कुर्वन् पालयन् विहर्तुं, तच्छ्रेयो मम खलु श्रेणिकं राजानं निगड-

बन्धनं कृत्वा आत्मानं महता-महता राज्याभिषेकेणाभिषेचयितुम्,
कृत्वा एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तराणि च छिद्राणि च
हान् च प्रतिजाग्रद् विहरति ।

ततः खलु स कूणिकः श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तरं वा यावत् मर्म
अलभमानः अन्यदा कदाचित् कालादिकान् दश कुमारान् निजगृहे शब्दयति
शब्दयित्वा एवमवादीत्—एवं खलु देवानुप्रियाः ! वयं श्रेणिकस्य राज्ञो
व्याघातेन नो शक्नुमः स्वयमेव राज्यश्रियं कुर्वन्तः पालयन्तो विहर्तुम्,
तच्छ्रेयो देवानुप्रियाः ! अस्माकं श्रेणिकं राजानं निगडबन्धनं कृत्वा राज्यं
च राष्ट्रं च बलं च वाहनं च कोशं च कोष्ठागारं च जनपदं च एकादश-
भागान् विभज्य स्वयमेव राज्यश्रियं कुर्वाणानां पालयतां यावद् विहर्तुम् ।

ततः खलु ते कालादिका दश कुमारः कूणिकस्य कुमारस्यैतमर्थं
विनयेन प्रतिशृण्वन्ति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमारः अन्यदा कदाचित् श्रेणिकस्य राज्ञो-
ऽन्तरं जानाति, ज्ञात्वा श्रेणिकं राजानं निगडबन्धनं करोति, कृत्वा आत्मानं
महता महता राज्याभिषेकेणाभिषेचयति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमारो राजा जातो महा० ॥ ३७ ॥

टीका—

‘ततः खलु तस्ये’ त्यादि—अन्यदा तस्य कूणिक-कुमारस्य पूर्वरात्रा-

‘तएणं तस्स’ इत्यादि—

बाद एक समय कूणिककुमार रात्रिके पिछले पहरमें विचार करने लगे कि—

‘तएणं तस्स’ इत्यादि.

पछी ओक समय कूणिक कुमार रात्रिके पछला पहरमें विचार करवा

સુશ્વરબોધિની ટોકા શ્રેણિકબંધન

૧૪૭

પરરાત્રાવસરે યાવત્ વિચારો જાતઃ-એવં સ્વલ્પ શ્રેણિકરૂપસ્ય વ્યાધાતેન= પ્રતિબંધેન રાજ્યશ્રિયં કુર્વન્ પાલયન્ સ્વયમેવ=સ્વતન્ત્રઃ વિહર્તુ=વિચરિતું અંહ નો શક્નોમિ તત્=તસ્માત્ કારણાત્ 'શ્રેણિકરાજસ્ય નિગડબંધનં કૃત્વા વિશાલરાજ્યાભિષેકેનાત્માનમભિષેચયિતું મમ શ્રેયઃ' इति કૃત્વા=इति સંકલ્પં વિધાય એવમ્=અનેન પ્રકારેણ સંપ્રેક્ષતે=વિચારયતિ, સંપ્રેક્ષ્ય શ્રેણિકસ્ય રાજોઽન્તરાણિ=અવકાશાન્ છિદ્રાણિ=દૂષણાનિ વિરહાન્=एकान्तानि च પ્રતિ-

શ્રેણિક રાજાકા રાજ્યશાસનરૂપ પ્રતિબંધ હોનેકે કારણ મેં સુલ્પૂર્વક રાજ્યલક્ષ્મીકા ઉપભોગ નહીં કર સકતા હૂં. ઇસ લિએ મુજે ઉચિત હૈ કિ ઇસ શ્રેણિક રાજાકો કિસી તરહ બંધનમેં ઢાલ દૂં ઓર સ્વયં રાજા બનકર રાજ્યલક્ષ્મીકા ઉપભોગ કરું. એસા વિચાર કર રાજાકા છિદ્ર દેખને લગે. શ્રેણિક રાજાકા કોઈ છિદ્ર, દૂષણ ઓર મર્મ હાથ નહીં આનેપર એક સમય કાલ આદિ દસ કુમારોકો અપને ઘરમેં બુલાકર સલાહ કરને લગે-બોલે કિ-હમ લોગ રાજાકે કારણ હી રાજ્યશ્રીકા ઉપભોગ નહીં કર સકતે ઇસ લિએ કિસી તરહ રાજાકો બંધનમેં ઢાલકર હમ લોગ રાજ્ય-રાષ્ટ્ર, સેના, વાહન, કોશ, કોષ્ટાગાર ઓર સ્વદેશ ઇનકે ગ્યારહ ભાગ કરકે સ્વયં રાજ્યશ્રીકા ઉપભોગ કરેં. ઇસ વાતકો સમી કુમારોને સ્વીકાર કર લિયા.

લાગ્યા કે શ્રેણિક રાજાનું રાજ્ય શાસનરૂપ પ્રતિબંધ હોવાના કારણે સુખ-પૂર્વક રાજ્ય-લક્ષ્મીનો ઉપભોગ હું કરી શકતો નથી. માટે મને ઉચિત છે કે આ શ્રેણિક રાજાને કોઈ પણ રીતે બંધનમાં નાખી દઉં અને હું પોતે રાજા બનીને રાજ્ય લક્ષ્મીનો ઉપભોગ કરું. એમ વિચાર કરી રાજાનાં છિદ્ર જોવા મંડ્યાં. શ્રેણિક રાજાનું કોઈ છિદ્ર દૂષણ અને મર્મ હાથ ન આવવાથી એક સમય કાલ આદિ દશ કુમારોને પોતાના ઘરમાં બોલાવી સલાહ કરવા લાગ્યા. કહ્યું કે-આપણે રાજાના કારણથી જ રાજ્યશ્રીનો ઉપભોગ કરી શકતા નથી. આથી કોઈ પણ રીતે રાજાને બંધનમાં નાખી આપણે રાજ્ય, રાષ્ટ્ર, સેના, વાહન, ખજાનો, કોઠાર તથા દેશ એના અગીયાર ભાગ કરીને આપણે પોતે જ રાજ્યશ્રીનો ઉપભોગ કરીએ. આ વાતનો બધા કુમારોએ સ્વીકાર કરી લીધો. પછી એક સમય તક બેઠને કૃષિકે

૧૪૮

નિરયાચલિકાસુત્ર

જાગ્રત્=અન્વેષયન્ વિહરતિ । તદ્વન્તુ શ્રેણિકમૂપસ્ય મર્મ=ગુપ્તતુટિ રાજ્યં=શાસનં
રાજ્યલક્ષ્મીં વા રાષ્ટ્રં=દેશં બલં=સૈન્યં વાહનં=યાનં રથાદિકમ્ કોશં=
ખાણ્ડાગારં, કોષ્ઠાગારં=ધાન્યગરં, જનપદં=સ્વદેશમ્, અન્યત્સર્વં સુગમમ્ ॥૩૭॥

મૂલમ્—

તણે પં સે કૂળિણે રાયા અન્નયા કયાઈ પ્હાણે જાવ સર્વાલંકાર-
વિભૂસિણે ચેઝુનાણે દેવીણે પાયવંદણે હવ્યમાગચ્છતિ । તણે પં સે કૂળિણે રાયા
ચેઝુનાં દેવિં ઓહયં । જાવ ક્રિયાયમાર્ગિ પાસઈ, પાસિત્તા, ચેઝુનાણે દેવીણે
પાયગ્ગહણં કરેઈ, કરિત્તા ચેઝુનાં દેવિં એવં વયાસી-કિં પં અમ્મો ! તુમ્હે
ન તુડી વા ન ઝસણે વા ન હરિસે વા નાણંદે વા, જં પં અહં સયમેવ
રજ્જસિરિં જાવ વિહરામિ ? ॥ ૩૮ ॥

છાયા—

તતઃ સ્વલુ સ કૂળિકો રાજા અન્યદા કદાચિન્ સ્નાતઃ યાવત્
સર્વાલંકારવિભૂષિતશ્ચેઝુનાયા દેવ્યાઃ પાદવન્દકો હવ્યમાગચ્છતિ ।

તતઃ સ્વલુ સ કૂળિકો રાજા ચેઝુનાં દેવીમ્ અપહતં યાવત્
ધ્યાયન્તીં પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા ચેઝુનાયા દેવ્યાઃ પાદપ્રશ્નં કરોતિ, કૃત્વા, ચેઝુનાં
દેવીમેત્તમાદીન્-કિં સ્વલુ અમ્બ ! તવ ન તુષ્ટિર્મા નોત્સરો વા ન હર્ષો
વા નાનન્દો વા ? યત્સ્વલુ અહં સ્વયમેવ રાજ્યશ્રિયં યાવત્ વિહરામિ ॥૩૮॥

બાદ એક સમય મૌકા પાકર કૂળિકને રાજા શ્રેણિકને બન્વનમેં ડાઠ દિયા
ઔર રાજ્યાભિષેક કરાકર અપને આપ રાજા બન ગયે ॥ ૩૭ ॥

રાજા શ્રેણિકને બંધનમાં નાખી દીધો અને રાજ્યાભિષેક કરાવી પોતે રાજા
બની બેઠો. (૩૭)

सुन्दरबोधिनो टीका कूणिक को श्रेणिकका परिचय

१४९

टीका—

‘तएणं से’ इत्यादि—ततः=राज्यप्राप्त्यनन्तरं स कूणिको राजा जन्यदा कदाचित्=कस्मिंश्चित्समये स्नातः यावत् सर्वालङ्कारविभूषितः चेष्टनाया देव्याः=निजमातुः पादवन्दकः=चरणौ वन्दितुं सहर्षं ससम्भ्रमं हव्यं=शीघ्रम् आगच्छति ।

ततः=आगमनानन्तरं खलु=निश्चयेन स कूणिको राजा निजमातुर् चेष्टनां देवीम् अपहतमनःसंकल्पां यावत् ध्यायन्तीम्=आर्तध्यानं कुर्वन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा चेष्टनाया देव्याः पादग्रहणं करोति=चरणौ वन्दते, कृत्वा=चरणवन्दनं विधाय चेष्टनां देवीमेवमवादीत्—हे अम्ब ! किं खलु=किमर्थं तव न तुष्टिः=न सन्तोषः वा=अथवा नोत्सवः=न चित्तोल्लासः, वा न हर्षः=

‘तएणं से’ इत्यादि—

इसके अनन्तर एक दिन वह राजा कूणिक सभी प्रकारके वस्त्र और अलङ्कारोंसे सज्जित होकर अपनी माता चेष्टना देवीके चरण वन्दनके लिये हुई एवं उत्सुकताके साथ जल्दी-जल्दी आये, और उन्होंने अपनी माताको दीन होन अवस्थामें आर्तध्यान करती हुई देखा । वह आर्तध्यान करती हुई चेष्टना देवीको चरणवन्दन करके बोले—हे जननि ! मैं अपने तेज-प्रतापसे महाराज्याभिषेकके साथ इस

‘तएणं से’ इत्यादि.

त्यार पछी ओक द्विस ते राजा कूणिक तमास प्रकारना वस्त्र अने अलङ्कारेथी सज्जित थछ पोतानी माता चेष्टना देवीना अरखु-वन्दन भाटे दुई अने उत्सुकतानी साथे जल्दी-जल्दी आव्यो. अने तेबु पोतानी माताने दीन होन अवस्थाभां आर्तध्यान करती लेछ. ते आर्तध्यान करती चेष्टना देवीनां अरखु वन्दन करीने ओल्यो—हे जननी ! हुं पोताना तेज-प्रतापथी महाराज्याभिषेक

१५०

निरयावलिकावध

न प्रमोदः, नानन्दः=न सुखम्, यदहं खलु स्वयमेव महता राज्याभिषेकेण
विशालराज्यश्रियं कुर्वन्=पालयन् विहरामि=विचरामि ॥ ३८ ॥

मूलम्—

तएणं सा चेल्लणा देवी कूणियं रायं एवं वयासी-कहणं पुत्ता !
ममं तुट्ठी वा उस्सए वा हरिसे वा आणंदे वा भविस्सइ ? जं णं तुमं
सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलवंधणं करित्ता
अप्पाणं महया रायामिसेएणं अभिसिंचावेसि ।

तएणं से कूणिए राया चेल्लणं देवि एवं वयासी-घाएउकामेणं
अम्मो ! मम सेणिए राया, एवं मारेउं, बंधिउं, निच्छुभिउकामए णं
अम्मो ! मम सेणिए राया, तं कहणं अम्मो मम सेणिए राया अच्चंतने-
हाणुरागरत्ते ? ।

तएणं सा चेल्लणा देवी कूणियं कुमारं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता !
तुमंसि ममं गव्मे आभूए समाणे तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं ममं अय-
मेयारूवे दोहले प्राउब्भूए-धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव अंगपडि-
चारियाओ निरवसेसं भाणियव्वं जाव जाहे वि य णं तुमं वेयणाए अभि-
भूए महया जाव तुसिणीए संचिट्ठसि, एवं खलु तव पुत्ता ! सेणिए राया
अच्चंतनेहाणुरागरत्ते ।

विशाल राज्यश्रीका उपभोग करता हूं तो क्या इसे देखकर तुम्हे सन्तोष नहीं हो रहा
है, तुम्हारे चित्तमें न उल्लास है, न प्रमोद है और न सुख ही, इसका क्या
कारण है ? ॥ ३८ ॥

अभिषेकपूर्वक आ विशाल राज्यश्रीका उपयोग करी रहो छुं, तो थुं आ जेधनि तने
सन्तोष थतो नथी ? तारा मनमां नथी उल्लास, नथी प्रमोद के नथी सुख. आनु
थुं अरुथु छे ? (३८)

तएणं से कूणिए राया चेळणाए देवीए अंतिए एयमट्टं सोच्चा निसम्म चेळणं देविं एवं वयासी-दुट्ठं णं अम्मो ! मए कयं, सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं निलयबंधणं करंतेणं, तं गच्छामि णं सेणियस्स रत्तो सयमेव नियलाणि छिंदामि त्तिकट्ठु परसुहत्थगए जेणेव चारगसाला तेणेव पदारेत्थ गमणाए ।

तए णं सेणिए राया कूणियं कुमारं परसुहत्थगयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-एसणं कूणिए कुमारे अपत्थियपत्थिए जाव सिरि-हिरिपरिवाज्जिए परसुहत्थगए इह हव्वमागच्छइ । तं न नज्जइ णं मम केणइ कुमारेणं मारिस्सइ-त्तिकट्ठु भीए जाव संजायमए तालपुडगं विसं आसगंसि पक्खिवइ ।

तएणं से सेणिए राया तालपुडगविसे आसगंसि पक्खित्ते समाणे मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि निष्पाणे निच्छित्ते जीवविप्पजठे ओइन्ने । तएणं से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला तेणेव उवागए, सेणियं रायं निष्पाणं निच्छिट्ठं जीवविप्पजठं ओइन्नं पासइ, पासित्ता, महया पिइसोएणं अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चंपगवरपायवे धसत्ति धरणियलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए ।

तएणं से कूणिए कुमारे मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे रोयमाणे, कंदमाणे, सोयमाणे, विलवमाणे, एवं वयासी-अहो णं मए अधन्नेणं अपुन्नेणं अकयपुन्नेणं दुट्ठं कयं सेणियं रायं पियं देवयं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करंतेणं, मम मूलागं चेव णं सेणिए राया कालगए-त्तिकट्ठु ईसर-तलवर जाव संधिवाल-सद्धि संपरिवुडे रोयमाणे ३ इट्ठिं सक्कारसमुदएणं सेणियस्स रत्तो नीहरणं करेइ, करित्ता बहूइ लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ । तएणं से कूणिए कुमारे एएणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अन्नया कयाइ अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तो-वगणमायाए रायगिहाभी पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव चंपा

“नयरी तेणेव उवागच्छइ । तत्थवि णं विउलभोगसमिइसमन्नाणए कालेणं
अप्पसोए जाए यावि होत्था ।

तएणं से कूणिए राया अन्नया कयाइ कालादीए दसकुमारे सद्दा-
वेइ, सद्दावित्ता, रज्जं च जाव जणवयं च एकारसभाए विरिंचइ, विरिंचित्ता
सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥ ३९ ॥

छाया—

ततः खलु सा चेळना देवी कूणिकं राजानमेवमवादीत्—कथं खलु
पुत्र ! मम तुष्टिर्वा उत्सवो वा हर्षो वा आनन्दो वा भविष्यति यत्खलु त्वं
श्रेणिकं राजानं प्रियं दैवतं गुरुजनकमत्यन्तस्नेहानुरागरक्तं निगडबन्धनं कृत्वा
आत्मानं महताः राज्याभिषेकेण अभिषेचयसि ।

ततः खलु स कूणिको राजा चेळनां देवीमेवमवादीत्—
घातयितुकामः खलु अम्ब ! मम श्रेणिको राजा, एवं मारयितुं, बन्धयितुं,
निःक्षोभयितुकामः खलु अम्ब ! मम श्रेणिको राजा, तत्कथं खलु अम्ब !
मम श्रेणिको राजाऽत्यन्तस्नेहानुरागरक्तः ? ।

ततः खलु सा चेळना देवी कूणिकं कुमारमेवमवादीत्—एवं खलु
पुत्र ! त्वयि मम गर्भे आभूते सति त्रिषु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेणु ममाय-
मेतद्रूपो दोहदः प्रादुर्भूतः—धन्याः खलु ता अम्बाः यावत् अङ्गप्रतिचारिकाः,
निरवशेषं भणितव्यं यावत् यदापि च खलु त्वं वेदनयाऽभिभूतो महता यावत्
तूष्णीकः संतिष्ठसे, एवं खलु तव पुत्र ! श्रेणिको राजाऽत्यन्तस्नेहानुरागरक्तः ।

ततः खलु स कूणिको राजा चेळनाया देव्या अन्तिके एतमर्थं
श्रुत्वा निश्चय्य चेळनां देवीमेवमवादीत्—दुष्टु खलु अम्ब ! मया कृतं
श्रेणिकं राजानं प्रियं दैवतं गुरुजनकमत्यन्तरस्नेहानुरागरक्तं निगडबन्धनं
कुर्वता, तद् गच्छामि खलु श्रेणिकस्य राज्ञः स्वयमेव निगडानि छिनत्ति, इति
कृत्वा परशुहस्तगतो यत्रैव चारकशाला तत्रैव प्रधारयति गमनाय ।

कुम्हारबोधिनी टीका कूणिकको श्रेणिकका परिचय

१५३

ततः खलु श्रेणिको राजा कूणिकं कुमारं परशुहस्तगतमेजमानं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-एष खलु कूणिकः कुमारः अप्रार्थितमार्थितो यावत् श्रीद्वीपरिवर्जितः परशुहस्तगत इह हव्यमागच्छति, तन्न ज्ञायते खलु मां केनापि कुमारेण (कुत्सितमारेण) मारयिष्यतीति कृत्वा भीतो यावत् संजातभयस्तालपुटकं विषमास्ये प्रक्षिपति ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा तालपुटकविषे आस्ये प्रक्षिप्ते सति मुहूर्तान्तरेण परिणम्यमाने निष्प्राणो निश्चेष्टो जीवविप्रत्यक्तोऽवतीर्णः ।

ततः खलु स कूणिकः कुमारो यत्रैव चारकशाला तत्रैवोपागतः, उपागत्य श्रेणिकं राजानं निष्प्राणं निश्चेष्टं जीवविप्रत्यक्तमवतीर्णं पश्यति, दृष्ट्वा महता पितृशोकेन आक्रान्तः सन् परशुनिकृत्त इव चम्पकवरपादपः 'धस' इति धरणीतले सर्वाङ्गैः संनिपतितः ।

ततः खलु स कूणिकः कुमारो मुहूर्तान्तरेण आस्वस्थः सन् रुदन् क्रन्दन् शोचन् विलपन् एवमवादीत्-अहो ! खलु मया अधन्येन अपुण्येन अकृतपुण्येन दुष्टु कृतं श्रेणिकं राजानं प्रियं दैवतमत्यन्तस्नेहानुरागरक्तं निगडबन्धनं कुर्वता, मम मूलकं चैव खलु श्रेणिको राजा कालगतः, इति कृत्वा ईश्वर-तलवर-यावत्-सन्धिपालैः सार्द्धं संपरिवृतो रुदन् ४ (क्रन्दन् शोचन् विलपन्) महता ऋद्विसत्कारसमुदयेन श्रेणिकस्य राज्ञो नीहरणं करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमार एतेन महता मनोमानसिकेन दुःखेनाभिभूतः सन् अन्यदा कदाचित् अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतः समाण्डा-मन्त्रोपकरणमादाय राजगृहात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव चम्पा नगरी तत्रैवोपागच्छति । तत्रापि खलु विपुलभोगसमितिसमन्वामतः कालेन अल्पशोको जातश्चाप्यभूत् ।

તતઃ સ્વલુ સ કૂણિકો રાજા અન્યદા કદાચિત્ કાલાદિકાન્ દશ
કુમારાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા રાજ્યં ચ યાવજ્જનપદં ચ એકાદશ ભાગાન્
વિભજતિ, વિભજ્ય સ્વયમેવ રાજ્યશ્રિયં કુર્વન્ પાલયન્ વિહરતિ ॥ ૩૯ ॥

ટીકા—

‘તણં સા’ इत्यादि । प्रियं=सर्वथा हितकारकम् । दैवतम्=इष्टदेवता-
स्वरूपम् । गुरुजनकम्=गुरुजनवत् परमोपकारकम् । अत्यन्तस्नेहानुरागरक्तं=
विलक्षणप्रेमरागरञ्जितम् । प्रधारयति=निश्चिनोति गमनाय, गन्तुमुद्यत इत्यर्थः ।
अवतीर्णः=मनुष्यायुः समाप्तवान् । विपुलभोगसमितिसमन्वागतः=विपुल-
भोगानां समितिः=प्रवृत्तिः, तत्र समन्वागतः=समनुप्राप्तः विपुलभोगान्
भुञ्जानः कालेन=कियता कालेन विगतशोकोऽप्यभवत् । शेषं सुगमम् ।

‘તણં સા’ इत्यादि—

કૂણિકે એસે વચન સુનકર રાની ચેલનાને રાજા કૂણિકો હસ પ્રકાર
કહના પ્રારંભ ક્રિયા—હે પુત્ર ! તુમ્હારે હસ રાજ્યાભિષેકસે મુસે સન્તોષ, અથવા ચિત્તમેં
ઉલ્લાસ, પ્રમોદ એવં સુખ કિસ પ્રકાર હો ? જવ કિ તુમ અત્યંત સ્નેહ ઓર અનુરા-
ગસે યુક્ત, દેવ ગુરુજન સદૃશ અપને પિતા, પ્રિય રાજા શ્રેણિકો બંધનમેં ઢાલકર
વિશાલ સજ્ય સુખકા ઉપભોગ કરતે હો ।

‘તણં સા’ ઇત્યાદિ.

કૂણિકનાં એવાં વચન સાંભળીને રાણી ચેલનાએ રાબા કૂણિકને આવી રીતે
કહેલું તર કયું—હે પુત્ર ! તારા આ રાબ્યાભિષેકથી મને સંતોષ અથવા મનમાં
ઉલ્લાસ, પ્રમોદ એટલે સુખ કેવી રીતે થાય ? કેમકે તું અત્યંત સ્નેહ તથા
અનુરાગયુક્ત, દેવ અને ગુરુજન સમાન પોતાના પિતા પ્રિય રાબા શ્રેણિકને બંધનમાં
નાંખી આ વિશાલ રાબ્ય સખને ઉપભોગ કરે છે.

सुन्दरबोधिनो टीका कृणिक को श्रेणिकका परिचय

१५५

यह सुनकर राजा कृणिकने चेछना देवीसे इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—
हे माता ! यह राजा श्रेणिक जो मेरी घात चाहनेवाला है एवं मेरा मरण और
बन्धन चाहनेवाला है तथा मेरे मनको दुःख देनेवाला है वह मझपर अत्यन्त स्नेह
और अनुरागसे अनुरक्त कैसे हो सकता है ?

कृणिकके इस प्रकार कहनेपर चेछना देवीने उससे कहा—हे पुत्र ! सुन—जब तू
मेरे गर्भमें आया उसके तीन महीने पूर्ण होते मुझे इस प्रकारका दोहद (दोहला)
उत्पन्न हुआ कि—

“ वे माताएँ धन्य हैं जो अपने पतिके उदरवलिमांसको तल-भूनकर
मदिराके साथ खाती हुई यावत् अपने दोहद (दोहला)को पूर्ण करती हैं। मैं भी
यदि राजा श्रेणिकके उदरवलिका मांस खाऊँ तो बड़ा अच्छा हो। ” इस प्रकार
दोहद होनेपर मैं दिन-रात आर्तध्यान करने लगी और दोहदके पूरे न होनेके

आ सांभली राजा कृणिके चेछना देवीने आ प्रभाणे कडेवा भांड्यु—हे
माता ! आ राजा श्रेणिक ने भारो घात आडे छे अने भाई भरषु तथा बंधन
आडवावाणो छे तथा भारो मनने दुःख देनारे छे. ते भारो उपर अत्यंत स्नेह
तथा अनुरागथी अनुरक्त केम डोढ थके ?

कृणिकना आ प्रकारे कडेवाथी चेछना देवीअे तेने कछुः—

हे पुत्र ! सांभल-अन्यारे तुं भारो गर्भमां आयेो तयारथी त्रषु भडिना पूरा
अतां अने अेवी जतनेो डोहद (तीव्र छच्छा) उत्पन्न थयेो केः—

“ ते भाताने धन्य छे के ने पोताना पतिना उदरवलि भांसने तणी
भूँने मदिरानी साथे भातां पोतानो डोहद संपूर्ण रीते पूरा करे छे. हुं पछु
ने राजा श्रेणिकनु उदरवलिनु भांस आउं तो अहुं साईं थय ” आ प्रकारे
डोहद थवाथी हुं दिन-रात आर्तध्यान करवा लागी अने डोहद पूरा न थवाथी

कारण ससुकर पीली पड़ गई। जब तुम्हारे पिताको यह खबर दासियों द्वारा ज्ञात हुई तो उन्होंने मुझसे मेरे दोहदका वृत्तान्त सुनकर अभयकुमार द्वारा उसकी प्रति की। दोहद (दोहला) पूर्ण होनेके बाद मैंने विचार किया कि इस बालकने गर्भमें आते ही अपने पिताका मांस खाया तो जन्म लेकर न जाने क्या करेगा? इस लिए इस गर्भको किसी भी उपायसे नष्ट कर डालूं, परन्तु वह गर्भ नष्ट न होसका और तू पैदा हुआ, तेरा जन्म होनेपर मैंने तुझे दासीके द्वारा एकान्त स्थान—उकरडीपर फिकवा दिया। पश्चात् यह वृत्तान्त तेरे पिता राजा श्रेणिकको मालूम हुआ, उन्होंने तेरी खोज की और खोजकर तुझे मेरे पास ले आये। उन्होंने तेरा परित्याग करनेके कारण मेरी कड़ी भर्त्सना की और मुझे शपथ देकर कहा कि—तुम इस बच्चेका अच्छी तरह पालन पोषण करो। उकरडीपर पड़े हुए तेरी अंगुलीके अग्र भागको मुर्गेने काट लिया जिससे तुझे बड़ी वेदना होती थी, तू दिन—रात कष्टसे चिल्लाता रहस था, उस समय तेरे पिता तेरी कटी हुई अंगुलीको अपने मुँहमें लेकर पीप और

मुकाधने पीजी पडी गध. न्यारे तारा पिताने आ भयर दासीयो द्वारा लक्ष्मणां आवी त्यारे तेमछे मारा मोढेथी मारा दोहदनु वृत्तांत सांभजीने ते अभयकुमार द्वारा परिपूर्णी क्यो. दोहद पूरा थया पछी में विचार क्यो के आ भाणके गर्भमां आवतांन पोताना पितानु मांस भाधुं तो जन्म लधने तो भयर नहि के ते शुं करथे? माटे आ गर्भाने कोर्ष पछु उपायथी नाश करी नाधुं. पछु ते गर्भाने नाश न थध शक्यो अने तुं पेदा थयो. तारे जन्म थया पछी में तने दासी भारक्षत अंकांत स्थान—उकरडे ईंकावी दीयो. पछी आ डडीकतनी तारा पिता राजा श्रेणिकने भयर पडी. तेमछे तारी तपास करी अने तने गोतीने राजा मारी पासे लाव्या. तेमछे तारे परित्याग करवा माटे मने अहु ठपके आये अने मने सोअंढ आपीने कहुं के—‘आ भाणकनु सारी रीते पालन पोषण करे.’ तुं उकरडे पड्यो हतो त्यारे तारी आंगजीना आगला भागने कुकडे करड्यो हतो नेथी तने अहु वेदना थती हती अने तुं ते कष्टथी द्विच रात अहु रुखाज करतो हतो ते सभने तारा पिता तारी कपायेदी आंगजीने पोताना मोमां लध पडे अने दोही ने

कूणिकबोधिनी रीका श्रेणिकमरण

159

शोणितको चूसकर थूक देते थे, तब तुझे शांति होती थी और तू चुप होजाता था। जब कभी भी तुझे पीड़ा होती थी तब तेरे पिता इसी तरह किया करते थे, और तू शांति पानेके कारण चुप होजाता था। हे पुत्र ! इस कारण मैं कहती हूँ कि तेरे पिता राजा श्रेणिक तुझपर अत्यन्त स्नेह और अनुरागसे युक्त है।

वह कूणिक राजा चेछना रानीके मुँहसे इस प्रकार वृत्तान्त सुनकर कहने लगे—हे माता ! मैंने सभी प्रकारके हित करनेवाले इष्टदेवता स्वरूप परमोपकारक अत्यन्त स्नेह—अनुरागसे युक्त अपने पिता राजा श्रेणिकको बन्धनमें डाला यह उचित नहीं किया सो मैं स्वयं जाकर उनके बन्धनको काटता हूँ, ऐसा कहकर कुठार हाथमें लेकर जहाँ कारागार था वहाँ जानेके लिए चला।

उसके बाद राजा श्रेणिकने, हाथमें कुठार लिए हुए कूणिककुमारको आते हुए देखकर उनके मुँहसे सहसा ये शब्द निकल पड़े कि—यह कूणिककुमार अनुचितको चाहनेवाला कर्तव्यहीन यावत् लजावर्जित हाथमें कुठार लिए हुए जल्दीसे आ रहा है,

नीकणतुं इतुं ते यूसीने थुंकी देता इता. त्यारे तने शांति थती इती अने तुं छाने। रही आतो इतो. न्यारे वणी पाछी पीडा थती त्यारे तारा पिता अेनीर रीते करता इता. अने तुं शांति भणवाथी छाने। रही आतो इतो. हे पुत्र ! आ कारणथी हुं कहुं छुं के तारा पिता राजा श्रेणिक तारा पर अहुं स्नेह अने अकु-राग राभता इता.

ते कूणिक राजा येद्वाना राणीना मोढथी आ प्रभाणे इकीकत सांभणी कडेवा लाग्या—हे माता ! मैं सर्व प्रकारे हित करवावाणा, ईष्टदेव स्वरूप परमोपकारक, अहुं स्नेहभाव राभवावाणा भारा पिता राजा श्रेणिकने अंधनभां नाग्या ते वाजणी न कयुं तेथी हुं पोते जधने तेमनां अंधन कापी नांछुं छुं. अेम कही कुडाडी हाथमां लध जयां डेदभातुं इतुं त्यां जया.

त्यार पछी राजा श्रेणिके हाथमां कुडाडी लधने कूणिक कुमारने आवतो। जेयो. जेधने तेना मोढथी तुरत आवा शब्दो नीकणी पढया के—“आ कूणिक कुमार अनुचित आडवा वाजो कर्तव्यहीन निर्दोष थधने कुडाडी लध जल्दी अहो आवे छे,

न जाने किस प्रकार यह मुझे बुरी तरह मारेगा, इस बातसे डरकर राजा श्रेणिकने अपनी अंगूठीमें रहे हुए तालपुट विषको अपने मुखमें रख लिया। मुँहमें रखनेके बाद वह विष क्षणमात्रमें सारे शरीरमें फैल गया और राजा प्राण एवं चेष्टासे रहित हो मृत्युको प्राप्त हो गया।

इसके बाद कूणिककुमार कारागारमें आया और आकर प्राण एवं चेष्टासे रहित—मरेहुए—राजा श्रेणिकको देखा। देखकर पिताके मरणजन्य असहनीय कष्टसे आक्रान्त हो तीक्ष्ण कुठारसे कटे हुए कोमल चम्पक वृक्षकी तरह भूमिपर धड़ामसे गिर पड़ा।

इसके अनन्तर वह कूणिककुमार कुछ समय बाद मूर्छारहित हुआ, मूर्छाके हट जानेपर वह रोता हुआ करुण शब्दसे आर्तनाद और विलाप करता हुआ इस प्रकार बोला—मैं अभाग हूँ, पापी हूँ, पुण्यहीन हूँ, जो कि मैंने बुरा कार्य किया, देवगुरुजनके समान परम उपकारी और स्नेह—ममतासे अनुरक्त अपने पिता श्रेणिक

भयर नहीं पड़ती। ते ते भने डेवी रीते भराण रीते भारी नाभशे. आ पातथी डरी जधने राजा श्रेणिके पोतानी अंशुडीमां रडेव तालपुट ओर पोताना भोमां भूकथुं. भोमां भूकथा पछी ते ओर ओक पण मात्रमां आभा शरीरमां इलाध गथुं अने राजा प्राणुथी अने हलन—चलनथी रहित थध मृत्यु पाभ्या.

त्यार पछी कूणिक कुमार डेहभानाभां आभ्या अने आवीने राजा श्रेणिकने प्राणु अने हलन—चलनथी रहित—भरेला जेया, जेधने पिताना भरषुजन्य सहन न थाय जेवां दुःखथी इहन करता थका तीक्ष्णधार वाणी कुडाडीधी कापेला डोभण अंपक वृक्षनी पेडे जमीन उपर धडांग पडी पडया.

त्यार पछी ते कूणिक कुमार थोडा समय पछी मूर्छारहित थया मूर्छा हटी थया पछी ते इहन करता कइषु शब्दथी आर्तनाद करता थोक अने विलाप करता करता आ प्रभाषे जेह्या—हुं अभागी छुं, पापी छुं, पुण्यहीन छुं, जेथी मे भराण कार्य कथुं. देव गुरुजन समान परम उपकारी अने स्नेह भमताथी लागषी

सुन्दरबोधिनी टीका श्रेणिकके साथ कूणिकका पूर्वमवसरबन्ध

१५९

राजाको बन्धनमें डाला और मेरे ही कारण इनकी मृत्यु हुई। ऐसा कहकर अपने कुटुम्बके साथ रुदन करता हुआ बड़े समारोहके साथ राजाकी अन्तिम लौकिक क्रिया की। उसके बाद वह कूणिक राजगृहमें अपने पिताकी उपभोग सामग्रियोंको देख-देखकर अत्यन्त दुःखी होता था। कहीं वह पिताका सिंहासन देखता था तो कहीं उनकी शय्या, कहीं उनके आभूषण, तो कहीं उनके वस्त्र, ये सब देखते उसे पिताकी स्मृति अनवरत आती रहती थी, और उन्हें अपने किये हुए पाप कर्मोंका भी स्मरण होजाता था जिससे असीम कष्टको प्राप्त होता था। इस कारण वह वहाँ नहीं रह सका और एक समय अपने अन्तःपुर परिवार सहित अपनी समस्त सामग्री लेकर राजगृहसे बाहर निकला और चलकर जहाँ चम्पा नगरी थी वहाँ गया, और चम्पा नगरीको अपनी राजधानी बनाकर निवास करने लगा। कुछ समय व्यतीत होजानेपर वह पिताके शोकको भूल गया।

उसके बाद वह कूणिककुमार अपने भाई काल आदि दस कुमारोंको बुलाकर राज्यके ग्यारह भाग करके उन लोगोंको बांट दिया व अपने राज्यका पालन स्वयं करने लगा।

राजनार पोताना पिता श्रेणिक राजने जंधनमां (केटभानाभां) नाज्या अने भाराज कारणथी अने मृत्यु थयुं. अने कहीने पोताना कुटुंभीअोनी साथे इहन करता थका अहु समारोहपूर्क राज श्रेणिकनी अंतिम लौकिक क्रिया करी.

त्यार पछी ते कूणिक राजगृहमां पोताना पितानी उपभोग सामग्रीअो ने जेधने अहुज दुःखी था। हुता कथांक ते पितानु सिंहासन जेता हुता ते कथांक तेमनी शय्या; कथांक तेमनां आभूषण ते कथांक तेमनां वस्त्रो आ-सौ-जेध तेअोने पितानु स्मरण वारवार थया करतुं हुतुं अने तेमले पोते करेवां पाप कर्मोनु पण स्मरण थध आवतुं हुतु जेथी पारवगरनु कष्ट प्राप्त थतुं हुतुं. आ कारणथी ते त्यां रही शक्या नहि अने अेक समय पोतानां अंतःपुर कुटुंभ-सहित पोतानी तेमाम सामग्री लधने राजगृहथी अहार नीकज्या अने आलीने त्यां अंधानगरी हुती त्यां गया. अने पछी अंधानगरीने पोतानी राजधानी अनावीने त्यां रहेवा लाज्या थोडो समय व्यतीत थध गया पछी ते पिताना शोकने लुली गया

त्यार पछी ते कूणिक कुमार पोताना भाध काल आदि दश कुमारोने आला-वीने राज्यना अगीयार भाग करी ते लोकेने वेथी दीधुं तथा पोताना राज्यनु पालन पोते करवा लाज्या.

१६०

निर्यावलि काष्ठ

अत्र प्रसङ्गमाप्तं कूणिकस्य श्रेणिकघातकत्वे कारणं दर्शयते—

श्रेणिको भूपः प्राग् वीतरागवचनबहिर्बर्तितया सम्यक्त्वाभावाद् देवगुरुधर्मान् निर्णेतुं नाशकत् । चेष्टनापाणिपीडनानन्तरं तदीयप्रेरणयाऽनाधिमुनिसदुपदेशेन सम्यक्त्वमलभत ।

पुरा श्रेणिको राजा कदाचित् विमलपवनं सेवितुं शीतलमन्दसुगन्ध-गन्धवाहसनाथं मत्तकोकिलकलरवकूजितं वनमगमत् । तत्रैकस्तापसाश्रम

कूणिक श्रेणिककी मृत्युमें क्यों कारणभूत बना ? यह कथानक प्रासङ्गिक है एतदर्थ इसे नीचे दिखलाते हैं—

राजा श्रेणिक पहले वीतरागधर्मी नहीं होनेसे उसमें सम्यक्त्व नहीं था, अतएव वह देव गुरु और धर्मका निर्णय करनेमें असमर्थ था । परन्तु जब उसका विवाह चेष्टनाके साथ हुआ तब उसकी प्रेरणासे व अनाधि मुनिके सदुपदेश द्वारा उसे सम्यक्त्वका लाभ हुआ और वह वीतरागके धर्मको मानने लगा । पहले वह श्रेणिक राजा एक समय शुद्ध वायु सेवन करनेके लिए वनमें गया । वह वन शीतल, मन्द, सुगंध वायुसे युक्त एवं मत्त कोकिलके कलरवसे कूजित था । वहाँ एक

श्रेणिक था भाटे श्रेणिकना मृत्युमां कारणभूत अन्या ? आ कथानक प्रासङ्गिक छे भाटे ते नीचे अतावीये छीये:—

राजा श्रेणिक पड़ेलां वीतरागधर्मी न होवाथी तेनामां सम्यक्त्व नहोतुं आथी ते देव गुरु तथा धर्मना निर्णय करवामां असमर्थ छता। परन्तु अन्यारे तेना विवाह चेष्टनानी साथे थये त्यारे तेनी प्रेरणाथी अने अनाधि मुनीना सदुपदेशथी तेने सम्यक्त्वना लाभ थये अने ते वीतरागना धर्मने मानवा लाग्या। पड़ेलां ते श्रेणिक राजा ओक समय शुद्ध वायु सेवन करवा भाटे वनमां गया ते वन शीतल, मन्द, सुगंध वायुथी युक्त अने मत्त थयेदी केवलना कलरवथी

‘સુન્દરબોધિનો’ ટોકા કૃત્તિક-શ્રણિકા વૈરકારણ

૧૬૧

આસીત્ । તસ્મિન્નાશ્રમે કશ્ચિત્તાપસો માસં માસં તપસા સ્થપયન્ પારણાં
કુર્વાણ આસીત્ । રાજા તં તપસ્વિનં વિલોક્ય સમતુષ્યત્, તાપસં ચ
સ્વમવને પારણાં કર્તું પ્રાર્થયત્ । તાપસેનોક્તમ્-પારણાયાં પશ્ચ દિનાનિ
સામ્પ્રતમવશિષ્યન્તે પશ્ચદિવસાનન્તરં પારણાયૈ તવ રાજધાનીમાગમિષ્યામિ,
હે રાજન્ ! મમાયં નિયમો યત્ - ‘પારણાદિને એકસ્મિન્નેવ ગૃહે ભિક્ષા-

તાપસકા આશ્રમ થા । उस आश्रममें एक तापस मास-मासके उपवाससे पारणा
करता था । राजा उस तापसको देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ, और उससे प्रार्थना
की-हे महात्मन् ! आप मेरे यहाँ पारणा करनेके लिये पधारें । सजाकी ऐसी प्रार्थना
सुनकर तापस बोले—

હે રાજન્ ! અમી મેરે પારણેમેં પાંચ દિન ઘટતે (અવશિષ્ટ) હૈં ઉનકે પૂર્ણ
હોજાનેપર મૈં તુમ્હારે યહાં પારણેકે લિયે આઝંઝા, પરન્તુ મેરા એક નિયમ હૈં ઉસકો
ધ્યાનમેં રક્ષના—મેં પારણેકે દિન કેવલ એકહી ઘર ભિક્ષાકે લિયે જાતા હૂં । યદિ

કુન્નિત હંતું. ત્યાં એક તપસ્વીનો આશ્રમ હતો. તે આશ્રમમાં એક તાપસ
મહિનો મહિનો ઉપવાસ કરી પારણાં કરતો હતો. રાજા તે તાપસને જોઈને અત્યંત
ખુશી થયો અને તેઓને પ્રાર્થના કરી-હે મહાત્મન્ ! આપ મારે ત્યાં પારણાં
કરવાને પધારો. ’ રાજાની એવી પ્રાર્થના સાંભળી તાપસ બોલ્યો:—

હે રાજન્ ! હજી મારે પારણાં કરવાને પાંચ દિવસ અવશિષ્ટ (બાકી) છે.
તે પુરા થઈ ગયા પછી હું તારે ત્યાં પારણાં માટે આવીશ પરંતુ મારો એક
નિયમ છે તે ધ્યાનમાં રાખજો—હું પારણાંને દિવસ માત્ર એકજ ઘર ભિક્ષાને માટે

માચરામિ, યદ્યેકત્ર મૈક્ષ્યં ન લભે તદા માસં ક્ષપયામિ ' ઇતિ તાપસનિયમં શ્રુત્વા શ્રેણિકો રાજા નિજરાજધાનીમાગમત્ ।

તતઃ પશ્ચાદ્ દિવસેષુ વ્યતીતેષુ પારણાઽહે તાપસઃ શ્રેણિકરાજ- દ્વારમાગતઃ । તસ્મિન્ દિને રાજો મહત્યા શિરોવેદનયા રાજભવનં વ્યાકુલ- માસીદિતિ તાપસં સત્કર્તું કોઽપિ નાશક્ત્ । તાપસસ્તાદ્દશં રાજભવનં નિરીક્ષ્ય તતઃ પરાવૃત્તો દ્વિતીયં માસં ક્ષપયિતું પ્રારભત । શિરોવેદનાયાં શાન્તાયાં રાજા તાપસમ્પાગચ્છત્ । તાપસશ્ચ સ્વનિયમં રાજાનં શ્રાવિતવાન્ । ભૂપઃ પુનઃ

વહાં ભિક્ષા નહી મિલી તો ફિર માસક્ષપણ (સ્વમણ) કે બાદ હી પારણા કરતા હું । રાજા ઉસ તાપસકે હસ નિયમકો સુનકર અપની રાજધાનીકો લૌટ ગયા ।

ઉસકે પાંચ દિન બીત જાનેકે પશ્ચાત્ વહ તાપસ પારણેકે દિન, રાજા શ્રેણિકે દ્વારપર આયા । ઉસ દિન રાજાકે સિરમેં અસહ્ય વેદના થી જિસસે સમૂચા રાજભવન વ્યાકુલ થા, હસલિયે ઉસ તાપસકા કિસીને સત્કાર નહી કિયા । તાપસ હસ પ્રકાર રાજમહલકો વ્યાકુલ દેસકર લૌટ ગયા ઓર પુનઃ ઇક માસકા ઉપવાસ કરને લગા ।

જબ રાજાને શિરવેદનાસે છુટકારા પાયા તબ વહ પુનઃ ઉસી તાપસકે બાઉં છું. જો ત્યાં ભિક્ષા ન મળે તો વળી પાછો ફરીને માસ ખમણ પછીજ પારણાં કરું છું. રાજા તે તાપસનો આ નિયમ સાંભળીને પોતાની રાજધાનીએ પાછો ગયો.

તેને પાંચ દિવસ વીતી ગયા પછી તે તાપસ પારણાંને દિવસ રાજા શ્રેણિકના દ્વારે આવ્યો. તે દિવસ રાજાના માથામાં અસહ્ય વેદના હતી જેથી આખું રાજભવન વ્યાકુળ હતું. આથી તે તાપસને કોઈએ સત્કાર ન કર્યો. તાપસ આ પ્રમાણે રાજમહેલને અસ્થિર (વ્યસ્ત) જોઈ પાછો ફર્યો અને ફરી તે એક માસના ઉપવાસ કરવા લાગ્યો.

આરે રાજાને માથાનો દુઃખાવો મટી ગયો ત્યારે તે ફરીને તેજ તાપસની

सुन्दरबोधिनी टीका कृष्णक-श्रेणिकका वैरकारण

१६३

पारणार्थं तापसं प्रार्थितवान् न पारणादिने श्रेणिकराजधानीमसौ तापस आगतः । तस्मिन् दिने राजभवनं वह्निप्रदीप्तमासीदिति तापसागमनं राज्ञा विस्मृतम् अतस्तापसः परावृतत् । ततस्तृतीयं मासं स क्षपयितुं प्रारभत । बहौ शान्ते राजा तापसमुपगम्य क्षमां पुनः पारणां च प्रार्थयामास ।

पास गया, और उसे पारणेके लिए अपने यहाँ आनेकी सविनय प्रार्थना की । तापसने राजाकी प्रार्थनाको सुनकर फिर अपने उस नियमको दोहराया और बादमें राजाके यहाँ पारणाके लिये आना स्वीकार कर लिया । पारणाके दिन वह तापस फिर राजाके यहाँ आया, परन्तु संयोगसे उस दिन राजभवनमें आग लग गयी, और राजा 'आज तापसका पारणा दिन है' यह भूल गया । तापस राजभवनको आगकी लपटोंसे जलता हुआ देखकर लौट गया और फिर तीसरे महीनेका उपवास करने लगा । आगके शान्त होजानेपर राजाको स्मरण हुआ कि—मैंने तापसको पारणा के लिये आज बुलाया था परन्तु राजभवनमें आग लग जानेसे मैं उसे भूल गया, बेचारा तपस्वी इस मास भी मेरे ही कारण भूखा रहा । यह सोचकर राजाको

पासे गये। अने तेने पारणुं भाटे पोताने त्यां आववानी सविनय प्रार्थना करी। तापसे राजनी प्रार्थनाने सांभली इरीने पोताने। ते नियम भीण वार कइो अने पछी राजने त्यां पारणुं भाटे आववाने। स्वीकार कये।

पारणुंने दिवस ते तापस पाछे राजने त्यां आये। परंतु संयोगवशात् ते दिवस राजभवनमां आग लागी गध तथा राज 'आने तापसने पारणुंने दिवस छ' ओ भूझी गये। तापसे राजभवनने आगनी जवाणाओथी भणतुं ओथु अने ओधने पाछे इरी गये। अने पाछे त्रीन भट्टिनाना उपवास करवा लाये। आग शांत थध गया पछी राजने याह आओं के—मैं तापसने पारणुं भाटे आने ओलाव्या हता। परंतु राजभवनमां आग लागी जवाथी हु ते भूझी गये। भिआरा तपस्वी आ भट्टिनो पछु माराज कारणुथी भूझ्या रह्या। आ विआरथी राजने ओहु

तापसेनापराधं क्षमिता पारणार्थं राजभवनगमनं स्वीकृतम् ।

पारणादिने तापसो राजद्वारमागतः । तस्मिन् दिने शत्रुः श्रेणिक-
राजधानीमाक्राम्यत् । राजा योद्धुमुद्यतः सैन्यं सङ्गृहीतुं प्रवृत्तस्तापसं सत्कर्तुं न
क्षमोऽभूत् । तापसो राजद्वारभागत्य पुनः परावृत्तश्चतुर्थं मासं तपसा
क्षपयितुं प्रारभत ।

अत्यन्त कष्ट हुआ और वह उस तापसके पास गया तथा अपने अपराधकी क्षमा
याचना की, और फिर अपने यहाँ पारणाके लिये आनेकी प्रार्थना की । तापसने
अपराधको क्षमा कर दिया, और राजभवनमें पारणाके लिए आना स्वीकार
कर लिया ।

पारणाके दिन फिर वह तापस राजाके दरवाजेपर आया, परन्तु उसी दिन
दुर्भाग्यसे शत्रुने उसकी राजधानीपर चढ़ाई कर दी थी । राजा सेनाको व्यवस्थित
रूपसे एकत्रित करनेमें लगा हुआ था, इस लिये वह तीसरी बार भी सत्कार नही
कर सका । तापस राजाके दरवाजेसे उस दिन भी बिना पारणाके लौटा और चौथे
मासका उपवास प्रारम्भ कर दिया ।

कष्ट थयुं अने ते तापस पासे गये। अने पोताना अपराध भाटे क्षमानी
याचना करी, अने इरीने पोताने त्यां पारणुं भाटे आववानी प्रार्थना करी।
तापसे अपराधने भाटे क्षमा आपी दीधी अने राजभवनभां पारणुं भाटे आव-
वानो स्वीकार करी लीधो।

पारणुंने द्विसे पाछो ते तापस राजना दरवाजा पर आव्यो पणु ते
द्विसे दुर्भाग्यवशात् शत्रुअे तेनी राजधानी उपर अडार्छ करी डोनाथी राज
सैन्यने व्यवस्थित करी अेकठुं करवाभां रोकायेव डतो आथी ते त्रीण वअत पणु
सत्कार करी शक्यो नहि। तापस राजने घेरथी ते द्विसे पणु पारणुं कर्या वअर
पाछो इर्यो अने योथा मासना उपवास शइ कर्या।

छुन्दस्वोधिनी टोका कृणिक-श्रेणिकका घेरकारण

१६५

ततो युद्धे निवृत्ते राजा तापसमुपगम्याऽपराधक्षमां पारणां च प्रार्थयामास । तापसः क्षमां पारणां च स्वीकृत्य चतुर्थमासानन्तरं राजद्वारमागतः सर्वान् पुत्रजन्मोत्सवनिमग्नानवलोक्य पारणामकृत्वा पुनः परावृत्तः । उत्सवानन्तरं भूपः स्वभृत्यान् पृष्ठवान्-भो ! किं तापसः पारणार्थमागतवान् ? । भृत्यैः कथितम्-पारणामकृत्वैव गतवानसौ स्वाश्रमे ।

उसके बाद लडाईसे अवकाश मिलनेपर राजा तापसके पास आया और अपनी विपदा सुनाकर क्षमायाचना की तथा पारणा करनेके लिए पुनः प्रार्थना की । तापसने राजाको क्षमा कर दिया और पारणाके लिए उनके यहाँ आना स्वीकार कर लिया । चौथे मासके समाप्त होनेपर पारणाके लिये राजाके दरवाजेपर आया । संयोगसे उसी दिन राजाके घर लडका पैदा हुआ । अपने अन्तःपुरपरिजनके सहित राजा उसी समारोहमें संलग्न था इसलिये राजाको तापसके आनेका ध्यान बिलकुल नहीं रहा । तापस पारणाके लिये भिक्षा न पाकर लौट गया । उत्सव बीतनेपर राजाने अपने परिचारकोंसे पूछा-क्या तापस पारणाके लिए आया था ? उन्होंने कहा-देव ! एक तापस पारणाके लिये आया था किन्तु वह पारणा किये बिना ही अपने आश्रमको लौट गया ।

त्यार पछी लडाईथी कुरसठ भल्या पछी राजा तापसनी पास आओये अने पोतानी विपत संबणावी क्षमा मागी अने पारणुं करवा भाटे इरीने प्रार्थना करी. तापसे राजाने क्षमा करी दीधी तथा पारणुं भाटे तेने त्यां आववाने स्वीकार कये.

चौथे मास समाप्त थतां ते पारणुं भाटे राजाने द्वारे आओये. संयोगथी तेज दिवसे राजाने घेर छोकरे जनओये. पोताना अंतःपुरना परिजनो साथे राजा ते प्रसंगमां लागेला हुता आथी राजाने तापस आववानुं बिलकुल ध्यानमां न रह्युं. तापसने पारणुं भाटे भिक्षा न भजवाथी पाछा गया.

उत्सव बीती गया पछी राजाओ पोताना परियारको (नोकरे) ने पूछ्युं- 'तापस पारणुं भाटे आओया हुता ?' तेओओे कह्युं- 'हे देव ! एक तापस पारणुं भाटे आओया हुता पणु ते पारणुं कया बिनाज पोताने आश्रमे पाछा गये.

तत्र गत्वा वीतरागवचनामृतपानाभावात् तापसः क्रोधाग्निना प्रज्वलितः शुद्धधर्मश्रद्धारहितोऽसौ श्रेणिकं द्विषन् आर्तरौद्रध्यानपूर्वकं मनस्येव चिन्तयति—‘तिलतुषमात्रमपि यदि मे तपःफलं तदाऽहं जन्मान्तरेऽस्य राज्ञो दुःखदो भवेयम्’ इति विचार्य परभवदुःखदायकनिदानं कृतवान् ।

ततो राजा तापसनिःकटमागतः । तत्र तापस उवाच—हे राजन् ! भूयो भूयो मां निमन्त्र्यत्वं विस्मरसि, ‘अथ सर्वथा यावज्जीवं चतुर्विधा-ऽऽहारं परित्यज्य परभवे तव दुःखदो भवेयम्’ एतादृशं प्रतिज्ञातवानस्मि ।

तापस अपने आश्रममें आकर, वीतरागके वचनरूपी अमृतपानके बिना क्रोधाग्निसे जलता हुआ शुद्ध धर्मकी श्रद्धासे रहित होनेके कारण, श्रेणिक राजासे द्वेष करता हुआ आर्त-रौद्र-ध्यानपूर्वक इस प्रकार अपने मनमें विचारने लगा—‘यदि तिलतुषके बराबर भी मेरी तपश्चर्याका फल हो तो मैं चाहता हूँ कि—इस राजा श्रेणिकको अगले जन्ममें दुःखदायी होऊँ’ ऐसा विचारकर जन्मान्तरमें दुःख देनेवाला निदान (नियाना) किया ।

उसके बाद राजा तापसके पास आया । तापसने राजासे कहा—हे राजन् ! तू मुझे बार-बार न्यौता देकर भूल जाता है, आज मैंने ऐसी प्रतिज्ञा करली है कि—‘यावज्जीव चारों प्रकारके आहारको त्याग कर परभवमें तुम्हारे लिये दुःख-दायी बनूँ’ ।

तापस पोताना आश्रमभां आवी वीतरागना वचनरूपी अमृतपान वगैरने क्रोधरूपी अग्निथी जलतो! जलतो शुद्ध धर्मनी श्रद्धाथी रहित होवाना कारणे श्रेणिक राजाने द्वेष करतो आर्त-रौद्र-ध्यानपूर्वक आ प्रकारे पोताना मनभां विचारवा लाग्यो.

जे तिलतुष (तिलनां दैतारां) नी अरागर पक्षु भारी तपश्चर्यानु कृण होय तो हुं धृष्टं धुं के—‘हुं आ राज श्रेणिकने जन्मांतरभां दुःखदायी थाऊँ’ आम विचार करी जन्मांतरभां दुःख देवावाणे थावा निदान (नियानु) कर्तुं.

त्यार पछी राज तापसनी पासे आव्या तापसे राजाने कहुं—हे राजन् ! तू भने वारे वारे निमंत्रण दधने लूळी जाय छे आज में आवी प्रतिज्ञा करी छे के—‘ज्यां सुधी एवं त्यां सुधी वारे प्रकारना अहारने त्याग करी परभवभां तभने दुःखदायी थाऊँ’.

કુનુરબોધીની ટીકા કૃણિક-શ્રેણિકા વૈરકારણ

૨૬૭

રાજા શ્રુશં પ્રાર્થયામાસ પરશ્ચ તાપસો ન શાન્તકોપોઽભવત્ । રાજા વિવશતયા તાપસાશ્રમાભિવૃત્ય સ્વમવનમુપાગતો રાજ્યકાર્યે લગ્નઃ । અસૌ તાપસઃ કાલાવસરે કાલં કૃત્વા તસ્યૈવ રાણશ્ચેલ્લનાદેવીર્ગર્ભતઃ પુત્રત્વેનોદપદ્યત । પ્રાદુર્ભૂય 'કૃણિકકુમાર' ઇતિ વિરુયાતઃ । નિદાનપ્રભાવાત્ શ્રેણિકરાજસ્ય ઘાતકોઽશ્રૂત ।

इदं च कुगुरुसेवाफलम् अतः कुगुरुं विहाय सुगुरुः सेवनीयः । कुगुरुसेवनेन न मोक्षमार्गज्ञानं न वा भवभ्रमणनिवृत्तिः । कुगुरोः सम्यक् सेवनेऽपि नाऽऽत्मकल्याणम् । उक्तञ्च—

રાજાને તાપસસે બહુત પ્રાર્થના કી પરન્તુ ઉસકા કોપ શાન્ત નહીં હુઆ । રાજા હારકર તાપસકે આશ્રમસે અપની રાજધાનીમેં આયા ઓર રાજકાજમેં સંલગ્ન હો ગયા । વહ તાપસ કાલાન્તરસે મરકર ઉસકી રાની ચેલ્લનાકે ગર્ભમેં આયા ઓર ઉસકા પુત્ર હોકર પૈદા હુઆ ઓર 'કૃણિકકુમાર' કે નામસે પ્રસિદ્ધ હુઆ । નિદાન (નિયાણા)કે પ્રભાવસે વહ શ્રેણિકા ઘાતક હુઆ ।

यह कुगुरुसेवाका फल है, इस लिए कुगुरुको छोडकर सदगुरुकी सेवा करनी चाहिए । कुगुरुकी सेवासे न मोक्षमार्गका ज्ञान होता है और न भवभ्रमण ही मिटता है । कुगुरुकी अच्छीतरह सेवा करे तो भी आत्मकल्याण नहीं हो सकता । कहा भी है:—

રાજાએ તાપસને બહુ પ્રાર્થના કરી પણ તેનો કોપ શાંત થયો નહિ રાજા હારી જઈને તાપસના આશ્રમેથી પોતાની રાજધાનીમાં આવીને રાજકાર્યમાં કામે લાગી ગયો. તે તાપસ કાલાંતરે મરી ગયા પછી તેની રાણી ચેલ્લનાના ગર્ભમાં આવ્યો, તથા તેનો પુત્ર થઈને જન્મ્યો અને 'કૃણિક કુમાર' ના નામથી પ્રસિદ્ધ થયો. નિદાન (નિયાણા) ના પ્રભાવથી તે શ્રેણિકને ઘાતક થયો.

આ કુશુરસેવાનું ફલ છે. આથી કુશુરને છોડીને સદ્ગુરુની સેવા કરવી જોઈએ. કુશુરની સેવાથી નથી મોક્ષમાર્ગનું જ્ઞાન થતું કે નથી ભવભ્રમણ પૂર્ણ થતું. કુશુરની સારી રીતે સેવા કરીએ તો પણ આત્મકલ્યાણ થઈ શકતું નથી કહ્યું પણ છે કે:—

१६८

निरयावलिकासूत्र

नाऽऽम्रं सुषिक्तोऽपि ददाति निम्बकः,

पुष्टा रसैर्बन्ध्यगवी पयो न च ।

दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रियं,

धर्मं शिवं वा कुगुरुर्न संश्रितः ॥ १ ॥

इति कूणिकस्य श्रेणिकघातकत्वे कारणविवरणम् ॥ सू० ३९ ॥

“ नाऽऽम्रं सुषिक्तोऽपि ददाति निम्बकः,

पुष्टा रसैर्बन्ध्यगवी पयो न च ।

दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रियं,

धर्मं शिवं वा कुगुरुर्न संश्रितः ॥ १ ॥

अर्थात्—नीमको चाहे कितना भी सोंचो तोभी उसमें आमका फल नहीं आसकता । अच्छीसे अच्छी वस्तु खिलानेपर भी बन्ध्या गौ दूध नहीं देसकती । दरिद्र राजाकी चाहे कितनी भी सेवा की जाय किन्तु वह धन नहीं देसकता, वैसे ही कुत्सित गुरुकी सेवामें न श्रुतचारित्र्यरक्षण धर्मकी प्राप्ति होती है और न मोक्षकी प्राप्ति हो सकती है ।

‘कूणिक, श्रेणिकका घातक क्यों हुआ?’ इसका विवरण उपरोक्त लिखे अनुसार है ॥ सू० ३९ ॥

नाऽऽम्रं सुषिक्तोऽपि ददाति निम्बकः,

पुष्टा रसैर्बन्ध्यगवी पयो न च ।

दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रियं,

धर्मं शिवं वा कुगुरुर्न संश्रितः ॥ १ ॥

अर्थात्—लीमडाने गमे तेटलुं पाण्णी पाओ तो पणु तेमां आंणानुं इह न आवी शके. साराभां सारी वस्तु अवराववाधी पणु बन्ध्या गाय दूध न आवी शके. दरिद्र राजानी गमे तेटली पणु सेवा करवाभां आवे तो पणु ते धन न आवी शके. बेबीन रीते कुत्सित (अथोअथ) गुइनी सेवाधी नथी तो श्रुतचारित्र्यरक्षण धर्मनी प्राप्ति आती के नथी मोक्षनी प्राप्ति भइ शकती.

‘इणिक, श्रेणिकेना घातक केम थयो ? तेनु विवरणु उपर कइया प्रभाणु छे. (सू० ३९)

सुन्दरबोधिनी टीका वैदल्यकी गन्धहाथीसे कीडा

१६९

मूलम्—

तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रत्तो पुत्ते चेळणाए देवीए
अत्तए कूणियस्स रत्तो सहोयरे कणीयसे भाया वेहळे नामं कुमारे होत्था
सोमाले जाव सुरुवे । तएणं तस्स वेहलस्स कुमारस्स सेणिएणं रत्ता
जीवंतएणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्टारसवंके य हारे पुच्चदिने ।

तएणं से वेहळे कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा अंतेउरपरियाल-
संपरिवुडे चंपं नगरिं मज्झमज्झेणं निगगच्छइ निगगच्छित्ता अभिक्खणं २
गंगं महानइं मज्जणयं ओयरइ ।

तएणं सेयणए गंधहत्थी देवीओ सोंडाए गिण्हइ, गिण्हित्ता अप्पे-
गइयाओ पुट्टे ठवेइ, अप्पेगइयाओ खंधे ठवेइ, एवं अप्पेगइयाओ कुंभे ठवेइ,
अप्पेगइयाओ सीसे ठवेइ, अप्पेगइयाओ दंतमुसले ठवेइ, अप्पेगइयाओ
सोंडाए गहाय उड्डं वेहासं उच्चिहइ, अप्पेगइयाओ सोंडागयाओ अंदोलावेइ,
अप्पेगइयाओ दंतंतरेसु नीणेइ, अप्पेगइयाओ सीभरेणं ण्हाणेइ, अप्पेगइयाओ
अणेगेहिं कीलावणेहिं कीलावेइ ।

तएणं चंपाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कच्चरमहापहपहेसु बहुजणो
अन्नमन्नस्स एवमाइवस्वइ जाव परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहळे कुमारे
सेयणएणं गंधहत्थिणा अंतेउर० तं चेव जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं
कीलावेइ, तं एस णं वेहळे कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, नो
कूणिए राया ।

तएणं तीसे पउमावईए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्टाए समाणीए
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—‘एवं खलु वेहळे कुमारे सेयणएणं गंध-
हत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ, तं एस णं वेहळे कुमारे

रज्जसिरिफलं पञ्चणुब्भवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया, तं किं अम्हं रज्जेण वा जाव जणवएण वा जइ ण अम्हं सेयणगे गंधहत्थी नत्थि ? तं सेयं खलु ममं कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवित्तए' त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहिता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० जाव एवं वयासी-एवं खलु सामी ! वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ, तं किण्णं सामी ! अम्हं रज्जेण वा जाव जणवएण वा जइणं अम्हं सेयणए गंधहत्थी नत्थि ? ।

तएणं से कूणिए राया पउमावईए देवीए एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए संचिठ्ठइ । तएणं सा पउमावई देवी अभिक्खणं२ कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवेइ ।

तएणं से कूणिए राया पउमावईए देवीए अभिक्खणं२ एयमट्ठं विन्नविज्जमाणे अन्नया कयाइ वेहल्लं कुमारं सदावेइ सदावित्ता सेयणं गंधहत्थि अट्ठारसवकं च हारं जायइ ।

तएणं से वेहल्ले कुमारे कूणियं रायं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! सेणिएणं रत्ता जीवतेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवके य हारे दिक्के, तं जइ णं सामी ! तुब्भे ममं रज्जस्स य रट्ठस्स य जगवयस्स य अद्धं दलह तो णं अहं तुब्भं सेयणं गंधहत्थि अट्ठारसवकं च हारं दलयामि ।

तएणं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, अभिक्खणं२ सेयणं गंधहत्थि अट्ठारसवकं च हारं जायइ ।

तएणं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रत्ता अभिक्खणं२ सेयणं गंधहत्थि अट्ठारसवकं च हारं [जाएमागस्स समागस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पज्जित्था] एवं खलु अक्खिविउकामे णं गिण्हिउकामे णं उप्पाळेउकामे णं ममं कूणिए राया सेयणं गंधहत्थि अट्ठारसवकं च हारं,

सुन्दरबोधिनी टीका वैहल्ल्यकी गन्धहायीसे कीडा

१७१

तं जाव ममं कूणिए राया [नो जाणइ] ताव [सेयं मे] सेयणगं गंध-
हत्थि अट्टारसवंकं च हारं गहाए अंतेउरपरियालसंपरिबुडस्स समंडमत्तो-
वगरणमायाए चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं
चेडयरायं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्ताए । एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कूणियस्स
रत्तो अंतराणि जाव पडिजागरमाणेऽ विहरइ ।

तएणं से वेहल्ले कुमारे अन्नया कयाइ कूणियस्स रत्तो अंतरं जाणइ
जाणित्ता, सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियाल-
संपरिबुडे समंडमत्तोवगरणमायाए चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमइ पडि-
निक्खमित्ता जेणेव वेसाली नयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वेसालीए
नयरीए अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥ ४० ॥

छाया—

तत्र खलु चम्पायां नगर्यां श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रश्चेल्लनाया देव्या
आत्मजः कूणिकस्य राज्ञः सहोदरः कनीयान् भ्राता वैहल्ल्यो नाम कुमार
आसीत् सुकुमारयावत्सुरूपः ।

ततः खलु तस्य वैहल्ल्यस्य कुमारस्य श्रेणिकेन राज्ञा जीवता चैव
सेचनको गन्धहस्ती अष्टादशवक्रो हारश्च पूर्वदत्तः । ततः खलु स वैहल्ल्यः
कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिना अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतश्चम्पाया नगर्यां
मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य अमीक्ष्यं गङ्गां महानदीं मज्जनकम् अव-
तरति । ततः खलु सेचनको गन्धहस्ती देवीः शुण्डया गृह्णाति, गृहीत्वा
अप्येकिकाः पृष्ठे स्थापयति, अप्येकिकाः स्कन्धे स्थापयति, अप्येकिकाः
कुम्भे स्थापयति अप्येकिकाः शीर्षे स्थापयति; अप्येकिकाः दन्तमुत्तले स्थाप-
यति, अप्येकिकाः शुण्डया गृहीत्वा उर्ध्वं वैहायसमुद्रहते, अप्येकिकाः शुण्डा-

११२

निर्यावलि काण्ड

गता आन्दोलयति, अप्येकिकाः दन्तान्तरेषु नयति, अप्येकिकाः शीकरेण रूपयति, अप्येकिका अनेकैः क्रीडनकैः क्रीडयति ।

ततः खलु चम्पायां नगर्यां शृङ्गाटक-त्रिक-चतुष्क-चत्वर-महापथ-पथेषु बहुजनोऽन्योऽन्यस्य एवमाख्याति यावत् प्ररूपयति-एवं खलु देवानुप्रियाः ! वैहल्लयः कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिनाऽन्तःपुरं तदेव यावद् अनेकैः क्रीडनकैः क्रीडयति तदेष खलु वैहल्लयः कुमारो राज्यश्रीफलं प्रत्यनुभवन् विहरति, नो कूणिको राजा ।

ततः खलु तस्याः पद्मावत्या देव्या अस्याः कथायाः लब्धार्थायाः सत्या अयमेतद्रूपो यावत् समुदपद्यत-‘एवं खलु वैहल्लयः कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिना यावद् अनेकैः क्रीडनकैः क्रीडयति तदेष खलु वैहल्लयः कुमारो राज्यश्रीफलं प्रत्यनुभवन् विहरति नो कूणिको राजा, तत्किमस्माकं राज्येन वा यावज्जनपदेन वा यदि खलु अस्माकं सेचनको गन्धहस्ती नास्ति ?, तच्छ्रेयः खलु मम कूणिकं राजानमेतमर्थं विज्ञपयितुम्’ ।

इति कृत्वा एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य यत्रैव कूणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलं यावदेवमवादीत-एवं खलु स्वामिन् ! वैहल्लयः कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिना यावद् अनेकैः क्रीडनकैः क्रीडयति, तत्किं खलु स्वामिन् ! अस्माकं राज्येन वा यावत् जनपदेन वा, यदि खलु अस्माकं सेचनको गन्धहस्ती नास्ति ? ।

ततः खलु स कूणिको राजा पद्मावत्या देव्या एतमर्थं नो आद्रियते, नो परिजानाति, तूष्णीकः संतिष्ठते ।

ततः खलु सा पद्मावती देवी अमोक्ष्णं कूणिकं राजानमेतमर्थं विज्ञपयति ।

सुन्दरबीधिनो मेका वैहल्ल्यको गन्धहायीसे कोडा

१७३

ततः खलु स कूणिको राजा पक्कावत्था देव्या अभीक्ष्णं २ एतमर्थं विज्ञाप्यमानः अन्यदा कदाचित् वैहल्ल्यं कुमारं शब्दयति शब्दयित्वा सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च हारं याचते ।

ततः खलु स वैहल्ल्यः कुमारः कूणिकं राजानमेवमवादीत्-एवं खलु स्वामिन् ! श्रेणिकेन राज्ञा जीवता चैव सेचनको गन्धहस्ती अष्टादशवक्रश्च हारो दत्तः, तद् यदि खलु स्वामिन् ! यूयं मह्यं राज्यस्य च यावत् जनपदस्य च अर्द्धं दत्तं तदा खल्वहं युष्मभ्यं सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च हारं ददामि ।

ततः खलु स कूणिको राजा वैहल्ल्यस्य कुमारस्य एतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति, अभीक्ष्णं २ सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च हारं याचते ।

ततः खलु तस्य वैहल्ल्यस्य कुमारस्य कूणिकेन राज्ञा अभीक्ष्णं २ सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च हारं [याच्यमानस्य सतोऽयमेतद्रूप आध्यात्मिकः ४ समुदपद्यत] एवं खलु आक्षेप्तुकामः खलु, ग्रहीतुकामः खलु, आच्छेत्तुकामः खलु मां कूणिको राजा सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च हारम् तद् यावन्मां कूणिको राजा [नो जानाति] तावत् [श्रेयो मम] सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वान्तःपुरपरिवारसंपरिवृतस्य सभाण्डामत्रोपकरणमादाय चम्पाया नगर्याः प्रतिनिष्क्रम्य वैशाल्यां नगर्यामार्यकं चेटकराजमुपसम्पद्य विहर्तुम् । एवं सम्प्रेक्षते, सम्प्रेक्ष्य कूणिकस्य राज्ञोऽन्तराणि यावत् प्रतिजाग्रत् २ विहरति ।

ततः खलु स वैहल्ल्यः कुमारः अन्यदा कदाचित् कूणिकस्य राज्ञोऽन्तरं जानाति, ज्ञात्वा सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वा अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतः सभाण्डामत्रोपकरणमादाय चम्पातो नगरीतः शक्ति-

१७४

निर्यावलिकासूत्र

निष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव वैशाली नगरी सत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वैशाल्यां नगर्यामार्यकं चेटकमुपसंपद्य विहरति ॥ ४० ॥

टीका—

‘तत्थणं चंपाए’ इत्यादि—सहोदर=एकमातृकः। कनीयान्=लघुभ्राता।

‘तत्थणं चंपाए’ इत्यादि—

उस चम्पानगरीमें श्रेणिक राजाका पुत्र, रानी चेछनाका आत्मज, राजा कृणिकका सहोदर छोटा भाई वैहल्ल्य नामका कुमार था, जो कि सुकुमार यावत् स्वरूप था।

उस वैहल्ल्य कुमारको राजा श्रेणिकने अपनी जीवितावस्थामें ही सेचनक नामका गन्ध हाथी और अठारह लडीवाला हार दिया। एक दिन वह वैहल्ल्य कुमार सेचनक गंधहाथीपर चढ़कर अपने अन्तःपुर परिवारके साथ चम्पानगरीके मध्यसे निकला, निकलकर गंगानदीमें बारबार स्नान करनेके लिए अवतरित हुआ। तत्पश्चात् वह सेचनक हाथी वैहल्ल्यको रानियोंको अपनी सूंडसे पकड़कर उनमेंसे किसी एकको

‘तत्थण चंपाए’ इत्यादि.

ते चंपानगरीमां श्रेणिक राजानो पुत्र, राणी चेछनानो आत्मज (दीकरो) राजा कृणिकका सहोदर नानासाध वैहल्ल्य नामे कुमार हतो के ने सुकुमार अने स्वरूप हतो.

ते वैहल्ल्य कुमारने राजा श्रेणिके पोतानी एवित अवस्थामां सेचनक नामको गंधहाथी तथा अठार सरवाणो हार दीधो हतो. ओक द्विस ते वैहल्ल्य-कुमार सेचनक गंधहाथी, उपर यडीने पोताना अंतःपुर परिवार साथे चंपानगरीना मध्यभागमां यधने नीकल्यो, नीकलीने बारबार गंगानदीमां स्नान करवा भाटे हतो। त्थार पछी ते सेचनक हाथी वैहल्ल्यनी राणीअने पोतानी सूंडमां पकड़ने

સુન્દરબોધિની દોઢા વૈહલ્યકો ગન્ધહાથોસે ક્રીડા

૧૭૩

અન્તઃપુરપરિવારસંપરિવૃત્તઃ=અન્તઃપુરં=રાણી, પરિવારઃ=લગ્નસ્નાદિકોશો

પીઠપર રખતા હૈ.તો કિસીકો અપને કંધેપર; કિસીકો કુમ્ભસ્થલપર રખતા હૈ તો કિસીકો અપને સિરપર, एवं કિસીકો અપને દન્તાશૂલપર રખતા હૈ, ઓર કિસીકો મૂંડસે પકડકર ડપર આકાશમેં લેજાતા હૈ । ઇસી તરહ કિસી ઇકઠો મૂંડમેં દવાકર છુલાતા હૈ, કિસી ઇકઠો અપને દન્તાશૂલકે બીચમેં અધરસે રખેતા હૈ । તથા કિસી ઇકઠો અપની મૂંડસે નિકરતે હુએ ફુહારોસે સ્નાન કરાતા હૈ । एवं કિસી ઇકઠો અનેક પ્રકારકી ક્રીડાઓસે સન્તુષ્ટ કરતા હૈ ।

યહ વૃત્તાન્ત નગર ભરમેં ફેલ ગયા, તથા બહુતસે મનુષ્ય ગણિયો, સડકો આદિ સ્થાન-સ્થાનપર આપસમેં ઇસ પ્રકાર વાર્તાલાપ કરને લો-હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્યકુમાર સેચનક ગંધહસ્તીકે દ્વારા અન્તઃપુર પરિવારકે સાથ અનેક પ્રકારકી ક્રીડા કરતા હૈ । વાસ્તવિક રાજ્યશ્રીકા ઉપભોગ તો વૈહલ્યકુમાર હી કરતા હૈ, ન કિ રાજા કૃણિક ।

તેમાંથી કોઈ-એકને પોતાની પીઠ ઉપર રાખે તો કોઈને કાંધ ઉપર, કોઈને કુમ્ભ સ્થળ ઉપર રાખે તો કોઈને પોતાના માથા ઉપર, અને એ પ્રમાણે કોઈને પોતાના દંતશૂળ ઉપર રાખે તો કોઈને સૂંઢથી પકડીને ઉપર આકાશમાં લઈ બાંધ આવી રીતે કોઈ-એકને સૂંઢમાં ઘણાવીને હીંચકો ખવરાવે, કોઈને પોતાની દંતશૂળની વચમાં અધરથી રાખી લે તથા કોઈ-એકને પોતાની સૂંઢમાંથી નીકળતા કુંવારા વડે સ્નાન કરાવે, એમ કોઈને અનેક પ્રકારની ક્રીડાઓથી સંતુષ્ટ કરે છે.

આ હકીકત આખા ગામમાં ફેલાઈ ગઈ તથા ઘણાં મનુષ્યો ગલિઓ સડકો આદિ અનેક ઠેકાણે ઠેકાણે પોત પોતામાં આવી રીતે વાર્તાલાપ કરવા લાગ્યા-હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્ય કુમાર સેચનક ગંધ હાથી દ્વારા અન્તઃપુર પરિવાર સહિત અનેક પ્રકારની ક્રીડા કરે છે. ખરી રીતે રાજ્યશ્રીનો ઉપભોગ તો વૈહલ્ય કુમાર કરે છે-નહિ કે રાજા કૃણિક ।

દાસદાસ્યાદિસેવકવર્ગશ્ર, તૈઃ સંપરિવૃત્તઃ=યુક્તઃ વૈહાયસં-વિહાય ઇવ
વૈહાયસમ્=ગગનમ્, શીકરૈઃ=પવનમક્ષિત્સજલકર્ણૈઃ 'ફુહારા' ઇતિ માષાયમ્,

उसके बाद जब यह वृत्तान्त रानी पद्मावतीको मिला तो उसके मनमें ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि—'वैहल्ल्यकुमार सेचनक हाथीके द्वारा अनेक प्रकारकी क्रीडा करता है इसलिए वही राज्यलक्ष्मीके फलका उपभोग करता हुआ रहता है, न कि कूणिक राजा, इस लिये हमें इस राज्यसे और जनपदसे क्या लाभ ? यदि हमारे पास सेचनक हाथी नहीं है, इसलिए यही अच्छा है कि कूणिक राजासे कहूँ कि वे वैहल्ल्यसे वह सेचनक हाथी लेलें'। ऐसा विचारकर जहाँ कूणिक राजा था वहाँ गयी, और जाकर हाथ जोड़कर इस प्रकार बोली—हे स्वामिन् ! वैहल्ल्यकुमार सेचनक गन्धहस्तीके द्वारा अनेक प्रकारकी क्रीडा करता है, हे स्वामिन् ! यदि हमारे पास सेचनक गन्ध हाथी नहीं है तो इस राज्य और जनपदसे क्या लाभ ?

यह सुनकर राजा कूणिकने पद्मावती देवीके इस विचारका आदर नहीं किया और न उस बातकी ओर ध्यान दिया, केवल चुपचाप रह गया ।

ત્યાર પછી જ્યારે આ હકીકત રાણી પદ્માવતીના જાણવામાં આવી ત્યારે તેના મનમાં એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે—'વૈહલ્લ્યકુમાર સેચનક હાથી દ્વારા અનેક પ્રકારની ક્રીડા કરે છે માટે તેજ રાજ્યલક્ષ્મીના ફલનો ઉપભોગ કરતો રહે છે નહિ કે કૂણિક રાજા, માટે અમને આ રાજ્યથી કે જનપદથી શું લાભ જો અમારી પાસે સેચનક હાથી ન હોય તો ?, તેથી કૂણિક રાજાને કહું કે વૈહલ્લ્ય પાસેથી તે સેચનક હાથી લઈ લે એજ સાફ છે. એમ વિચાર કરી જ્યાં કૂણિક રાજા હતા ત્યાં ગઈ અને જઈને હાથ જોડી આ પ્રકારે બોલી—હે સ્વામી ! વૈહલ્લ્યકુમાર સેચનક ગંધ હાથી દ્વારા અનેક પ્રકારની ક્રીડા કરે છે. હે સ્વામી ! જો આપણી પાસે સેચનક ગંધ હાથી ન હોય તો આ રાજ્ય અને જનપદથી શું લાભ ?

આ સાંભળી રાજા કૂણિકે પદ્માવતી દેવીના આ વિચારનો આદર કર્યો નહિ કે ન તે વાત તરફ ધ્યાન દીધું. માત્ર ચુપચાપ રહ્યા.

कुण्डलकीर्ति टीका वैद्वत्स्यका वेशालोनगरी जाना

१७७

शृङ्गाटक-त्रिक-चतुष्क-चत्वर-महापथ-पथेषु-शृङ्गाटकं=जलफलं 'सिंगाडा' इति भाषायाम्, तद्वत् त्रिकोणस्थानं, त्रिकं=त्रिपथम्, चतुष्कम्=चतुष्पथम्, महापथो=राजमार्गः, पन्थाः=सामान्यमार्गः, तेषु । एष कूणिको राजा माम्

परन्तु उस राजा कूणिकने रानी पद्मावतीके द्वारा बारबार विज्ञापित होनेके कारण एक समय कुमार वैहल्लको अपने यहाँ बुलाया, बुलाकर उससे सेचनक गन्ध हाथी और अठारह लडीवाला हार माँगा ।

कूणिकका ऐसा अभिप्राय जानकर वैहल्लकुमारने इस प्रकार कहता आरम्भ किया—हे स्वामिन् ! राजा श्रेणिकने अपनी जीवितावस्थामें ही मुझे सेचनक गन्ध हाथी और अठारह लडीवाला हार दिया है, सो यदि आप उसे लेना चाहते हैं तो मुझे भी राज्य और जनपदका आधा भाग दीजिये, फिर मैं भी आपके लिये इन दोनोंको देदूँगा । परन्तु राजा कूणिकने वैहल्लकुमारकी इस बातको पसन्द नहीं किया, न कभी इसको अच्छी तरह सोचाही, परन्तु बार-बार अपनी माँगको ही दोहराता रहा ।

त्यारपणी तेशब्ब कूणिके राणी पद्मावतीना भारकृत वारंवार विज्ञापन करवाभां आवतुं तेथी ओक वभत वैहल्ल कुमारने पोताने त्यां ओलाव्यो अने तेनी पासेशी सेचनक गंध हाथी तथा अठार सरवाणो हार माग्यो.

कूणिकने ओयो अभिप्राय ज्ञाणीने वैहल्ल कुमारे आ प्रकारे कडेवा मांडयुं—हे स्वामिन् ! श्रेणिक राणी पोतानी लुवित अवस्थाभां अने सेचनक गंध हाथी तथा अठार सरवाणो हार दीधो छे. जे ते आप देवा चाडो छे तो अने पखु राज्य तथा जन पदना अरधो भाग आपो. पछी हुं पखु आपने भाटे आ छे आपीश. परंतु राजा कूणिके वैहल्ल कुमारनी आ बात पसंद करी नहि. न तो कही ओ बातने ठीक रीते विचार करी जेथो. मात्र वारंवार पोतानी भागशील करी करी.

આક્ષેપ્તુકામઃ=રાજ્યભાગસ્યાઽદિત્સયા મયિ મૃષાદોષમારોપયિતુકામઃ ।
 સેચનકં ગન્ધહસ્તિનં ગ્રહીતુકામઃ=બલાદાદાતુકામઃ । અષ્ટાદશવક્રં હારં ચ
 'ઉદાલેઉકામે' આચ્છેતુકામઃ=મમ હસ્તાદાક્રષ્ટકામઃ અસ્તિ । શેષં
 મુગમ્ ॥ ૪૦ ॥

તદનન્તર કૂળિક રાજા દ્વારા વાર ૨ હાથી ઓર હાર માંગનેપર વૈહલ્લ્ય અપને મનમેં સોચતા હૈ કિં યહ કૂળિક રાજા મેરે પર મિથ્યાદોષ લગા કર મેરા સેચનક ગંધહાથી ઓર હાર મુઝસે છીન લેના ચાહતા હૈ, ઇસલિયે ઉચિત હૈ કિં જબતક કૂળિક મુઝસે હાથી ઓર હાર ન છીને ડસકે પહેલે હી સેચનક ગંધ-હાથી ઓર અઠારહ લડીવાલા હાર તથા અન્ત:પુર પરિવારકે સાથ સમી ગૃહોપકરણ લેકર ચમ્પાનગરીસે નિકલકર અપને નાના ચેટક રાજાકે પાસ વૈશાલીનગરીમેં જાકર રહું । એસા વિચાર કરનેકે પશ્ચાત્ વહ વૈહલકુમાર રાજા કૂળિકકી અનુપસ્થિતિકી તાકમેં રહતા હૈ ।

ડસકે બાદ વહ વૈહલકુમાર ઇક સમય કૂળિક રાજાકી અનુપસ્થિતિકા મોકા પાકર અપને અન્ત:પુર પરિવારકે સાથ સેચનક હાથી, અઠારહ લડીવાલા હાર ઓર સમી પ્રકારકી ગૃહસામગ્રી લેકર ચમ્પાનગરીસે નિકલ વૈશાલીનગરીમેં આર્ય ચેટકકે પાસ પહુંચકર રહને લગા ॥ ૪૦ ॥

ત્યાર પછી કૂણિક રાજા તરફથી વારંવાર હાથી તથા હારની માગણી થતાં વૈહલ્લ્ય પોતાના મનમાં વિચાર કરે છે કે આ કૂણિક રાજા મારા ઉપર ખોટો દોષ લગાડીને મારો સેચનક ગંધ હાથી અને હાર મારી પાસેથી પડાવી લેવા માગે છે. મારે એજ વાજબી છે કે જ્યાં સુધી કૂણિક મારી પાસેથી તે હાથી અને હાર ન પડાવી લીએ તે પહેલાંજ સેચનક ગંધ હાથી તથા અઠાર સરવાળો હાર તથા અન્ત:પુર પરિવાર સહિત ઘરની તમામ વસ્તુઓ લઇને ચંપાનગરીથી નીકળીને મારા નાના ચેટક રાજાની પાસે વૈશાલી નગરીમાં જઇને રહું. એમ વિચારી કરીને પછી તે વૈહલ્લ્ય-કુમાર રાજા કૂણિકની અનુપસ્થિતિ-ગેર હાજરીની રાહ જોતો રહ્યા કરે છે.

ત્યાર પછી તે વૈહલ્લ્ય કુમાર એક સમય કૂણિક રાજાની ગેરહાજરી જોઇ પોતાના અન્ત:પુર પરિવારની સાથે સેચનક હાથી, અઠાર સરવાળો હાર અને તમામ પ્રકારની ગૃહ સામગ્રી લઇને ચંપાનગરીથી નીકળી વૈશાલી નગરીમાં આર્ય ચેટકની પાસે પહોંચી રહેવા લાગ્યા. (૪૦)

मूलम्—

तएणं से कूणिए राया इमीसे कहाए लब्धे समाणे-एवं खलु वेहल्ले कुमारे मम असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जाव अज्जयं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं सेयं खलु मम सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवकं च हारं आणेउं दूयं पेसित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता दूयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालिं नयरिं, तत्थ णं तुमं मम अज्जं चेडगं रायं करतल० वद्धावेत्ता एवं वयाहि-एवं खलु सामी ! कूणिए राया विन्नवेइ-एस णं वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवकं च हारं गहाय इह हव्व-मागए, तए णं तुम्हे सामी ! कूणियं रायं अणुगिण्हमाणा सेयणगं गंध-हत्थि अट्टारसवकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह. वेहल्लं कुमारं च पेसेह ।

छाया—

ततः खलु स कूणिको राजा अस्याः कथाया लब्धार्थः सन्-‘एवं खलु वैहल्लयः कुमारो मम असंविदितेन सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वा अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतो यावद् आर्यकं चेटकं राजानमुप-संपद्य खलु विहरति, तच्छ्रेयः खलु मम सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारम् आनेतुं दूतं प्रेषयितुम्, एवं संप्रेक्षते संप्रेक्ष्य दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत-गच्छ खलु त्वं देवाणुप्रिय ! वैशालीं नगरीं, तत्र खलु त्वं मम आर्यं चेटकं राजानं करतल० वर्द्धयित्वा एवं वद-‘एवं खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विज्ञपयति-एष खलु वैहल्लयः कुमारः कूणिकस्य राज्ञः असंविदितेन सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वा इह हव्य-

तए णं से दूए कूणिणं० करतल० जाव पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ. उवागच्छित्ता जहा चित्तो जाव वद्धावित्ता एवं वयासी-एवं खलु सामी ! कूणिए राया विन्नवेइ-एस णं वेहले कुमारे तहेव भाणियव्वं जाव वेहलं कुमारं च पेसेह ।

तए णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी-जह चेव णं देवाणु प्पिया ! कूणिए राया सेणियस्स रत्तो पुत्ते चेळणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए तहेव णं वेहले वि कुमारे सेणियस्स रत्तो पुत्ते चेळणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए, सेणिएणं रत्ता जीवतेणं चेव वेहलस्स कुमारस्स सेयणमे गंधहत्थी अट्टारसवंके हारे पुव्वविदिन्ने, तं जइ णं कूणिए राया वेहलस्स रज्जस्स य रट्ठस्स य जणवयस्स य अद्दं दलयइ तो णं सेयणं गंधहत्थि अट्टारसवंक च हारं कूणियस्स रत्तो पच्चप्पिणामि, वेहलं च कुमारं पेसेमि । तं दूयं सक्कारेइ संमाणेइ पडिविसज्जेइ ।

मागतः, ततः खलु यूयं स्वामिन् ! कूणिकं राजानमनुगृह्णन्तः सेवनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं कूणिकस्य राज्ञः प्रत्यर्पयत, वैहल्यं कुमारं च प्रेषयत ।

ततः खलु स दूतः कूणिकेन० करतल० यावत् प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यथा चित्तो यावद् वर्द्धयित्वा एवमवादीन्-एवं खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विज्ञपयति-एष खलु वैहल्यः कुमारस्तथैव भणितव्यं यावद् वैहल्यं कुमारं प्रेषयत ।

ततः खलु स चेटको राजा तं दूतमेवमवादीत्-यथैव खलु देवाणु प्रिय ! कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः, चेळनायाः देव्या आत्मजः, मम नप्तकः, तथैव खलु वैहल्योऽपि कुमारः श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः, चेळनायाः देव्या आत्मजः, मम नप्तकः, श्रेणिकेन राज्ञा जीवता चैव

कुम्भारबोझिनी लोका चेटक-कूणिकका दूतद्वारा संवाद

३८३

तएणं से दूए चेटणं रत्ना पतिविसज्जिए समाणे जेणेव चाउग्यंटे
आसरहे तेणेव उवागच्छ, उवागच्छिता चाउग्यंटे आसरहं दूरुहइ, दूरुहिता
वेसालीं नगरिं मज्झं-मज्झेणं निर्गच्छइ, निर्गच्छिता सुदेहिं वसहिपाय-
रासेहिं जाव वद्धावित्ता एवं वयासी-एवं खलु सामी ! खेडण्ण राया आण-
वेइ-जइ चेव णं कूणिए राया सेणियस्स रत्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए
मम नत्तुए तं चेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं च कुमारं पेसेमि, तं न देह
सामी ! चेटए राया सेयणगं गंधहत्थि अष्टादशवक्कं च हारं, वेहल्लं च
नो पेसेइ ॥ ४१ ॥

वैहल्लयाय कुमाराय सेचनको गन्धहस्ती अष्टादशवक्को हारः पूर्वविदत्तः, तद्
यदि खलु कूणिको राजा वैहल्लयाय राज्यस्य च राष्ट्रस्य च जनपदस्य चार्द्धं
ददाति तदा खलु सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्कं च हारं कूणिकाय राज्ञे
प्रत्यर्पयामि, वैहल्ल्यं च कुमारं प्रेषयामि । तं दूतं सत्करोति सम्मानयति
प्रतिविसर्जयति ।

ततः खलु स दूतः चेटकेन राज्ञां प्रतिविसर्जितः सन् यत्रैव चतु-
र्घण्टः अश्वरथस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चतुर्घण्टमश्वरथं दूरोहति, दूरुह्य
वैशालीं नगरिं मध्यमंमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य शुभैर्बसतिप्रातराशैर्यावद्
वर्धयित्वा एवमवादीत्-एवं खलु स्वामिन् ! चेटको राजा आज्ञापयति-यत्रैव
खलु कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः, चेल्लनाया देव्या आत्मजः मम
नप्तकः, तदेव भणितव्यं यावद् वैहल्ल्यं च कुमारं प्रेषयामि । तन्न ददाति
खलु स्वामिन् ! चेटको राजा सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्कं च हारं,
वैहल्ल्यं च नो प्रेषयति ॥ ४१ ॥

ટીકા—

‘તપ્પણં સે કૂણિપ્પ’ इत्यादि-शुभैः=प्रशस्तेः, वसतिपातराशेः-मार्ग-

‘તપ્પણં સે કૂણિપ્પ’ इत्यादि—

उसके बाद जब यह समाचार राजा कूणिकको ज्ञात हुआ तो उसने विचार किया कि वैदलकुमार मुझसे बिना कुछ कहे—मुने अपने अन्तःपुर परिवारके सहित, सेचनक गंधहस्ती, अठारह लडीवाला हार और सभी प्रकारकी गृहसामग्रियों को लेकर राजा आर्य चेटकके पास जाकर रहने लगा है, इस कारण मुझे उचित है कि दूत भेजकर सेचनक गंध हाथी और अठारह लडीवाला हार मंगाऊँ, ऐसा विचारकर दूतको बुलाता है और बुलाकर इस प्रकार कहता है:—

हे देवानुप्रिय ! वैशालीनगरीमें मेरे नाना चेटकके पास तुम जाओ उनके पास जाकर हाथ जोड़ जय-विजय शब्दके साथ राजाको बधाकर इस प्रकारसे कहा—हे स्वामिन् ! राजा कूणिक इस प्रकार विज्ञप्ति करते हैं कि—मुझसे बिना कुछ कहे

‘તપ્પણં સે કૂણિપ્પ’ ઇત્યાદિ.

ત્યાર પછી જ્યારે આ સમાચારની રાજા કૂણિકને ખબર પડી ત્યારે તેણે વિચાર કર્યો કે વૈદલ્ય કુમાર મને કંઈ પણ કદા—સાંભળ્યા વગરજ પોતાના અંતઃપુર પરિવાર સહિત સેચનક ગંધ હાથી, અઠાર સરનો હાર અને તમામ પ્રકારની ગૃહસામગ્રી લઈને રાજા આર્ય ચેટકની પાસે જઈને રહ્યો છે. આ કારણથી મારે માટે યોગ્ય છે કે દૂત મોકલીને સેચનક ગંધ હાથી અને અઠાર સરનો હાર મંગાવી લઉં. એવો વિચાર કરી દૂતને બોલાવી આમ તેને કહે છે—હે દેવાનુપ્રિય ! વૈશાલી નગરીમાં મારા નાના ચેટકની પાસે તું જા. તેની પાસે જઈ હાથ ભેડીને જય-વિજય શબ્દથી રાજાને વધાવીને આ પ્રકારે કહે જે—હે સ્વામિન્ ! રાજા કૂણિક આ પ્રકારે વિજ્ઞપ્તિ કરે છે કે—મને કંઈ પણ કદા વગરજ

सुन्दरबोधिनी टोका वैहल्ल्यकी गन्धहाथीसे कीडा

१६३

विश्रामस्थानैः पूर्वाह्नवर्तिलघुसोजनैश्च प्रागे सुखपूर्वकं निवसन्तं यामद्वयं

ही वैहल्ल्य कुमार सेचनक गन्ध हाथी और अठारह लडीवाला हार लेकर आपके यहाँ जल्दीसे चला आया है; सो आप वैहल्ल्यकुमारको सेचनक हाथी और अठारह लडीवाले हारके सहित कृपा करके हमारे पास भेज दें। इसके बाद वह दूत राजा कूणिकके द्वारा कहे हुए वचनोंको स्वीकारकर अपने घर आया और चार घंटावाले रथमें बैठ रवाना हुवा। वह वैशाली पहुँचकर आर्य चेटकको हाथ जोड़ नम्र विजयके साथ बधाकर, परदेशी राजाके चित्त प्रधानके समान। इस प्रकार कहता है:—

हे स्वामिन् ! राजा कूणिक इस प्रकार विज्ञप्ति करते हैं कि—मेरा छोटा भाई वैहल्ल्यकुमार मुझसे बिना कुछ कहे ही सेचनक गन्धहाथी और अठारह लडीवाला हार लेकर आपके पास चला आया है इसलिये आप उसे हाथी और हारके साथ मेरे पास भेज दें।

कुमार वैहल्ल्य सेचनक गन्ध हाथी अने अठार सरवाणो हार लधने आपनी पासे बन्दी थी यादयो आवेयो छे। भाटे आप वैहल्ल्य कुमारने सेचनक गन्ध हाथी अने अठार सरना हार सहित कृपा करीने भारी पासे भोकली आपो। तयार पथी ते इत राजा कूणिक द्वारा कहेलां वचनोनो स्वीकार करी पोताने घर आये अने चार घंटावाणा रथभां ओसी रवाना थयो। ते वैशाली पडोन्थी ने आर्य चेटकने हाथ जोडी नम्र-विजय पूर्वक बधावीने परदेशी राजाना प्रधान चित्तनी पेठे आ प्रकारे कहे छे:—

हे स्वामिन् ! राजा कूणिक आ प्रकारे विज्ञप्ति करे छे हे—मारे नानो भाई वैहल्ल्य कुमार अने कर्ष पणु कदम वगर न सेचनक गन्ध हाथी अने अठार सरवाणो हार लध आपनी पासे यादयो आवेयो छे भाटे आप तेने हाथी अने हार साथे भारी पासे भोकली आपो।

૧૦૪

વિરવાસ્થિતિવાચક

**મોજનં ચેત્યેવદ્યં પશિકાય પરપ્રહિતકારકય, અન્યત્ સર્વ
યુગમમ્ ॥ ૪૧ ॥**

યહ મુનકર ચેટક, રાજાને उस दूतको इस प्रकार उत्तर दिया—हे देवानु-
ग्रिय ! जिस प्रकार राजा कूणिक, श्रेणिक राजाका पुत्र, चेळना रानीका आत्मज
और मेरा दौहित्र है उसी प्रकार कुमार वैहल्ल्य भी श्रेणिक राजाका पुत्र, रानी
चेळनाका आत्मज और मेरा दौहित्र है ।

श्रेणिक राजाને अपनी जीवितावस्थामें ही कुमार वैहल्ल्यको सेचनक गंधहाथी
और अदारह लडीवाला हार दिया था । तो भी यदि राजा कूणिक हाथी और
कुमार लेना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह भी वैहल्ल्यकुमारको राज्य राष्ट्र और
जनपदका आधा भाग देदे । ऐसा होनेपर मैं हाथी और हारके साथ कुमार
वैहल्ल्यको भेज सकता हूँ । इस प्रकार कहनेके बाद राजा चेटकने उस दूतका आदर
सकारकर उसे विसर्जित (विदा) किया । चेटक राजासे विसर्जित वह दूत जहाँपर
चार घण्टावाला रथ था वहाँ आया, आकर उस रथपर चढ़ा और वैशाली

આ સાંજની ચેટક રાબાએ તે દૂતને આ પ્રકારે ઉત્તર દીધો—હે દેવદુ-
ગ્રિય ! જે પ્રકારે રાબા કૂણિક શ્રેણિક રાબાનો પુત્ર ચેલના રાણીનો આત્મજ તથા
મારો દોહિત્ર છે તેજ પ્રકારે કુમાર વૈહલ્લ્ય પણ શ્રેણિક રાબાનો પુત્ર રાણી ચેલ-
નાનો દીકરો અને મારો દોહિત્ર છે.

શ્રેણિક રાબાએ મોતાની છવિત અવસ્થામાંજ કુમાર વૈહલ્લ્યને સેચનક ગંધ
હાથી તથા અદાર સરનો હાર દીધો હતો છતાં પણ જો રાબા કૂણિક હાથી તથા
હાર લેવા આહતા હોય તો તેણે પણ વૈહલ્લ્ય કુમારને રાબ્ય રાષ્ટ્ર અને જનપદમાં
અરધો ભાગ દેવો જોઈએ. અને એમ થાય તો હું હાથી તથા હારની સાથે કુમાર
વૈહલ્લ્યને મોકલી શકું છું. આ પ્રકારે કહ્યા પછી રાબા ચેટકે તે દૂતનો આદર
સત્કાર કરી તેને વિદાય આપી. ચેટક રાબા પાસેથી વિદાય લઈ તે દૂત જ્યાં ચાર
ઘંટવાળો રથ હતો ત્યાં આવ્યો. આવીને તે રથ ઉપર ચડીને વૈશાલી નગરીની
મધ્યમાં થઈને નીકળ્યો. સારી સારી વસ્તીમાં વિશ્રામ તથા સવારનું લોજન કરતો ચડે

कुमारबोधिनी टीका चेटक-कूणिकका वृत्तद्वारा संवाद

१८५

नगरीके मध्यसे निकला । निकलकर अच्छी २ वस्तियोंमें विश्राम तथा प्रातःकालिक भोजन करता हुआ सुख-शांतिपूर्वक चम्पानगरीमें पहुँचा । पहुँचकर राजा कूणिकके पास जा हाथ जोड़ जय-विजय शब्दके साथ राजाको बधाकर इस प्रकार बोला:—

हे स्वामिन् ! चेटक राजा इस प्रकार सूचित करते हैं कि जिस प्रकार राजा कूणिक, श्रेणिक राजाका पुत्र, चेल्लनाका आत्मज और मेरा दौहित्र है उसी प्रकार कुमार वैहल्ल्य भी श्रेणिकका पुत्र, चेल्लनाका आत्मज और मेरा दौहित्र है । सेचनक गंधहाथी एवं अठारह लड़ीवाला हार राजा श्रेणिकने कुमार वैहल्ल्यको अपनी जीवितावस्थामें ही दिया था, तो भी यदि कूणिक हाथी और हार चाहता है तो उसे चाहिये कि अपने राज्य राष् और जनपदका आधा भाग वैहल्ल्यको देदे । यदि वह इस प्रकार करे तो मैं भी हाथी और हारके साथ वैहल्ल्यकुमारको भेज दूँगा । इस लिये हे स्वामिन् ! राजा चेटकने न तो हाथी और हार ही दिया न कुमार वैहल्ल्यको ही भेजा ॥ ४१ ॥

सुभ शांतिपूर्वक चम्पानगरीमां पड़ोन्थो. पछी राजा कुण्डिक पासे न्छ पड़ोन्थी हाथ नेडी नय विजय शब्दनी साथे राजा कुण्डिकने वधावीने आ प्रकारे कहुं:—

हे स्वामिन् ! चेटक राजा येम सूचना करे छे के—“जे प्रकारे राजा कुण्डिक श्रेणिक राजानो पुत्र चेल्लनानो आत्मज तथा भारो दोहेत्रो छे तेवीन रीते कुमार वैहल्ल्य पणु श्रेणिकनो पुत्र, चेल्लनानो आत्मज तथा भारो दोहेत्रो छे. सेचनक गंधहाथी अने अठार सरवाणो हार राजा श्रेणिके कुमार वैहल्ल्यने पोतानी अचित अवस्थाभांज दीधा छता तेम छतां जे कुण्डिक हाथी अने हार चाहतो होय तो पोताना राज्य राष्ट्र तथा जनपदनो अरपो भाग वैहल्ल्यने तेणे आपयो नेछथे. जे ते आ प्रकारे करे तो हुं पणु हाथी अने हार साथे वैहल्ल्य कुमारने भोक्की आपुं.” भाटे हे स्वामी ! राजा चेटके तो नथी हाथी आप्यो, के नथी हार दीधो, तेम नथी वैहल्ल्य कुमारने भोक्क्या. (४१)

मूलम्—

तएणं से कूणिण राया दुच्चं पि दूयं सद्दावित्ता एवं वयासी-
गच्छह णं तुमं देवानुप्पिया ! वेसालिं नयरिं, तत्थ णं तुमं मम अज्जगं
चेडगं रायं जाव एवं वदाहि-एवं खलु सामी ! कूणिण राया विन्नवेइ-
जाणि काणि रयणाणि समुप्पज्जंति सव्वानि तानि रायकुलगामीणि, सेणि-
यस्स रत्नो रज्जसिरिं करेमाणस्स पाळेमाणस्स दुवे रयणा समुप्पन्ना, तं
जहा-सेयणए गंधहत्थी, अट्टारसवंकं हारे, तण्णं तुड्ढे सामी ! रायकुल-
परंपरागयं ठिइयं अलोवेमाणा सेयणगं गन्धहत्थि अट्टारसवंकं हारं कूणि-
यस्स रत्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं पेसेह ।

तए णं से दूए कूणियस्स रत्नो तहेव जाव वद्दावित्ता एवं वयासी-
एवं खलु सामी ! कूणिण राया विन्नवेइ-जाणि काणित्ति जाव वेहल्लं
कुमारं पेसेह ।

छाया—

ततः खलु स कूणिको राजा द्वितीयमपि दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-
गच्छ खलु त्वं देवानुप्रिय ! वैशालीं नगरीं, तत्र खलु त्वं मम आर्यकं
चेटकं राजानं यावद् एवं वद-एवं खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विश-
पयति-यानि कानि रत्नानि समुत्पद्यन्ते सर्वाणि तानि राजकुलगामीनि,
श्रेणिकस्य राज्ञो राज्यश्रियं कुर्वतः पालयतो द्वे रत्ने समुत्पन्ने, तद्यथा-सेच-
नको गन्धहस्ती, अष्टादशवक्रो हारः, तत्खलु यूयं स्वामिन् ! राजकुल-
परम्परागतां स्थितिमलोपयन्तः सेचनकं गन्धहस्तिनम्, अष्टादशवक्रं च हारं
कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्पयत, वैहल्ल्यं कुमारं प्रेषयत ।

छुम्बरबोधिनो टोका चेटक-कूणिकका वृत्तद्वारा संवाद

१८७

तएणं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी जह चेव णं देवाणु-
प्पिया ! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेळणाए देवीए अत्तए जहा
पढमं जाव वेहल्लं च कुमारं पेसेमि, तं दूयं सकारेइ संमाणेइ पडिविस-
ज्जेइ । तए णं से दूए जाव कूणियस्स रन्नो वद्धावित्ता एवं वयासी-चेडए
राया आणवेइ-जह चेव णं देवाणुप्पिया ! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो
पुत्ते चेळणाए देवीए अत्तए जाव वेहल्लं कुमारं पेसेमि, तं न देइ णं
सामी ! चेडए राया सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवकं च हारं, वेहल्लं कुमारं
नो पेसेइ ।

तएणं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

ततः खलु स दूतः कूणिकस्य राज्ञस्तथैव यावद् वर्धयित्वा एवमवा-
दीत्-एवं खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विज्ञपयति-यानि कानीति यावद्
वैहल्ल्यं कुमारं प्रेषयत ।

ततः खलु स चेटको राजा तं दूतमेवमवादीत्-यथा चैव खलु
देवानुप्रिय ! कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः चेळनाया देव्या
आत्मजः, यथा प्रथमं यावद् वैहल्ल्यं च कुमारं प्रेषयामि । तं दूतं सत्करोमि
सम्मानयति प्रतिविसर्जयति ।

ततः खलु स दूतो यावत् कूणिकस्य राज्ञो० वर्धयित्वा एवमवादीत्-
चेटको राजा आज्ञापयति-यथा चैव खलु देवानुप्रिय ! कूणिको राजा
श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः चेळनाया देव्या आत्मजः यावद् वैहल्ल्यं कुमारं
प्रेषयामि, तन्न ददाति खलु स्वामिन् ! चेटको राजा सेचनकं गन्धहस्तिनम्
अष्टादशवक्रं च हारं, वैहल्ल्यं कुमारं नो प्रेषयति ।

ततः खलु स कूणिको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा

१८८

निरयावलिकासूत्र

आसुरस्ते जाव मिसिमिसेमाणे तच्चं दूयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-
गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालीए नयरीए चेडगस्स रन्नो वामेणं
पाएणं पायपीढं अक्कमाहि, अक्कमित्ता कुंतगणेणं लेहं पणावेहि, पणावित्ता
आसुरस्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं मिउडिं निडाळे साहइ चेडगं रायं
एवं वदाहि-हं भो चेडगराया ! अपत्थियपत्थया ! दुरंत-जाव-परिव-
ज्जिया ! एस णं कूणिए राया आणवेइ-पच्चप्पिणाहि णं कूणियस्स रन्नो
सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवंकं च हारं वेहल्लं च कुमारं पेसेहि, अहवा जुद्ध-
सज्जा चिट्ठाहि, एस णं कूणिए राया सबले सवाहणे सखंधावारे णं जुद्ध-
सज्जे इह हव्वमागच्छइ ॥ ४२ ॥

निशम्य आशुरक्तः यावन्मिसिमिसी-कुर्वन् तृतीयं दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा
एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं देवानुप्रिय ! वैशाल्यां नगर्यां चेटकस्य राज्ञो
वामेन पादेन पादपीठमाक्राम, आक्रम्य कुन्ताप्रेण लेखं प्रणायय, प्रणाय्य
आशुरक्तो यावत् मिसिमिसीकुर्वन् त्रिवलिकां भुकुटिं ललाटे संहत्य चेटकं
राजानमेवं वद-हं भो चेटकराजाः ! अप्रार्थितपार्थकाः ! दुरन्त-यावत्-
परिवर्जिताः ! एष खलु कूणिको राजा आज्ञापयति-प्रत्यर्पयत खलु कूणि-
कस्य राज्ञः सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं वैहल्लयं च कुमारं
प्रेषयतं, अथवा युद्धसज्जाः तिष्ठत । एष खलु कूणिको राजा सबलः सवाहनः
सस्कन्धावारः खलु युद्धसज्ज इह हव्यमाच्छति ॥ ४२ ॥

टीका—

‘तएणं से कूणिए’ इत्यादि-सबलः=सेनायुक्तः, सवाहनः=रथादि-

‘तएणं से कूणिए’ इत्यादि—

इसके बाद कूणिक राजाने दूसरी बार फिर दूतको बुलाया और कहा—

‘तएणं तस्स’ इत्यादि.

आ पछी कुणिक राजाको भीछ वार पाछो इतने जेलाओये अने कहुं-

सुन्दरबोधिनो श्लोका चेटक-कूणिकका दूतद्वारा संवाद

१६३

यानसहितः, सस्कन्धाकारः=सशिविरः, 'छाउनी' इति भाषायाम् । श्रेषं सुगमम् ॥ ४२ ॥

हे देवानुप्रिय ! वैशालीनगरीमें जाओ, वहाँ जाकर मेरे नाना राजा चेटकको हाथ जोड़ कर जय विजय शब्दके साथ उन्हें बधाकर इस प्रकार कहो कि—हे स्वामिन् ! राजा कूणिक की यह विज्ञापना है कि जो कुछ भी रत्न पैदा होता है उसपर राज-कुलका ही अधिकार है । श्रेणिक राजाके राज्यकालमें दो रत्न उत्पन्न हुए, एक सेचनक गन्धहाथी, दूसरा अठारह लड़ीवाला हार । हे स्वामिन् ! राजकुलकी परम्परागत स्थितिका नाश जिससे न हो इसलिये आप हाथी और हार मुझे अर्पित कर दें और वैहल्ल्य कुमारको भेज दें ।

उसके बाद वह दूत कूणिक राजाकी इस विज्ञप्तिको स्वीकार कर अपने घर आया, और वहाँसे वैशालीनगरीमें जाकर राजा चेटकके सम्मुख उपस्थित हुआ । तथा उन्हें हाथ जोड़ जय विजय शब्दके साथ बधाकर, राजा कूणिककी विज्ञापना को इस प्रकार सुनायी—हे स्वामिन् ! राजा कूणिककी यह विज्ञापना है कि—जो कुछ

हे देवानुप्रिय ! वैशाली नगरीमां जधने मारा नाना राजा चेटकने हाथ जोडीने जय विजय शब्दो साथे वधावी आ प्रकारे कडेने के—हे स्वामिन् ! राजा कूणिकनी ऐवी विज्ञापना छे के के कंध पणु रत्न पैदा थाय छे तेना उपर राजकुलनोअ अधिकार छे. श्रेणिक राजाना राज्य कालमां जे रत्न उत्पन्न थयां छे—जेक सेचनक गंधहाथी अने नीलुं अठारसरनो हार, हे स्वामिन् ! राजकुलनी परंपरागत स्थितिने नाश जेथी न थाय ते माटे आप हाथी अने हार मने अर्पित करे अने वैहल्ल्य कुमारने भेकली हो.

त्यार पछी ते दूत कूणिक राजानी आ विज्ञप्तिने स्वीकार करी पोताने घर आय्यो अने त्यांथी वैशाली नगरीमां जध राजा चेटकनी संमुख उपस्थित थयो, अने तेमने हाथ जोडी जय विजय शब्दथी वधावी राजा कूणिकनी विज्ञापनाने आ प्रकारे संभलावी—हे स्वामिन् ! राजा कूणिकनी ऐम विज्ञापना छे के के कंध

મી રત્ન ઉત્પન્ન હોતા હૈં ઉસપર રાજકુલકા અધિકાર હોતા હૈં । યે દોનો રત્ન શ્રેણિક રાજાકે રાજ્યકાલમેં ઉત્પન્ન હુએ હૈં, ઇસલિયે હે સ્વામિન્ ! જિસસે રાજકુલકી પરંપરાગત સ્થિતિ વિનષ્ટ ન હો યહ ધ્યાનમેં લેકર હાથી ઓર હારકો દેદેં તથા વૈહલ્લ્યકુમારકો મી કૂળિક રાજાકે પાસ મેજદેં ।

દૂત દ્વારા રાજા કૂળિકકી એસી વિજ્ઞપ્તિ મુનકર રાજા ચેટકને દૂતસે ઇસ પ્રકાર કહના પ્રારંભ કિયા—હે દેવાનુપ્રિય ! જિસ પ્રકાર રાજા કૂળિક શ્રેણિક રાજાકા પુત્ર હૈ, ચેલ્લના દેવીકા આત્મજ હૈ ઓર મેરા દૌહિત્ર હૈ ઉસી પ્રકાર કુમાર વૈહલ્લ્ય મી શ્રેણિક રાજાકા પુત્ર—ચેલ્લના દેવીકા આત્મજ ઓર મેરા દૌહિત્ર હૈ, રાજા શ્રેણિકને અપની જીવિતાવસ્થામેં હી સેચનક ગન્ધહાથી ઓર અઠારહ લડી-વાલા હાર કુમાર વૈહલ્લ્યકો પ્રેમસે દિયા હૈ અતઃ ઇનપર રાજકુલકા અધિકાર નહીં હૈ તો મી યદિ રાજા કૂળિક હાથી ઓર હાર લેના ચાહતા હૈ તો ઉસે ચાહિયે કિ રાજ્ય રાષ્ટ્ર ઓર જનપદકા આઘા ભાગ કુમાર વૈહલ્લ્યકો દેદે । એસા કરનેપર મેં હાથી

પણ રત્ન ઉત્પન્ન થાય છે તેના ઉપર રાજકુલનો અધિકાર હોય છે. આ બે રત્નો શ્રેણિક રાજાના રાજ્ય કાલમાં ઉત્પન્ન થયાં છે. માટે હે સ્વામિન્ ! જેવી રાજકુલની પરંપરાગત સ્થિતિ વિનષ્ટ ન થાય તે ધ્યાનમાં લઈ હાથી તથા હારને અર્પણ કરો અને વૈહલ્લ્ય કુમારને પણ કૂળિક રાજાની પાસે મોકલી આપો.

દૂત દ્વારા રાજા કૂળિકની એવી વિજ્ઞપ્તિ સાંભળી રાજા ચેટકે દૂતને આ પ્રકારે કહેવાનું શરૂ કર્યું:—હે દેવાનુપ્રિય ! જેવી રીતે રાજા કૂળિક શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર છે ચેલ્લના દેવીનો આત્મજ છે તથા મારો દૌહિત્ર છે તેજ પ્રકારે કુમાર વૈહલ્લ્ય પણ શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર છે ચેલ્લના દેવીનો આત્મજ તથા મારો દૌહિત્ર છે. રાજા શ્રેણિકે પોતાની જીવિત અવસ્થામાંજ સેચનક ગંધહાથી તથા અઠાર સરવાળો હાર કુમાર વૈહલ્લ્યને પ્રેમથી દીધેલો હોવાથી તેના ઉપર રાજકુલનો અધિકાર નથી તેમ છતાં પણ જો રાજા કૂળિક હાથી અને હાર લેવા ચાહતા હોય તો તેમણે પણ રાજ્ય રાષ્ટ્ર તથા જનપદમાં અરધો ભાગ કુમાર વૈહલ્લ્યને આપવો.

सुन्दरबोधिनी टोका चेटक-कूणिकका दूतद्वारा संवाद

१९१

और हारके साथ कुमार वैहल्ल्यको भेज दूँगा। ऐसा कहकर राजा चेटकने उस दूतका आदर सत्कार किया और उसे विसर्जित कर दिया। वह दूत वैशालीनगरीसे चलकर राजा कूणिकके पास आया और हाथ जोड़ जय विजय शब्दके साथ उन्हें बधाकर इस प्रकार कहना आरम्भ किया—हे स्वामिन् ! राजा चेटकने इस प्रकार उत्तर दिया कि—जिस प्रकार राजा कूणिक राजा श्रेणिकके पुत्र चेल्लना देवीके आत्मज और मेरा दौहित्र है उसी प्रकार कुमार वैहल्ल्य भी है। राजा श्रेणिकने अपनी जीवितावस्थामें ही सेचनक गंधहाथी और अठारह लडीवाला हार वैहल्ल्य कुमारको प्रेमसे दिया है अतः इसपर राजकुलका अधिकार नहीं है, फिर भी यदि वह कुमार वैहल्ल्यके लिये अपने राज्य राष्ट्र और जनपदका आधा भाग देदे तो मैं हाथी और हार उसको देदूँगा तथा वैहल्ल्य कुमारको भी भेज दूँगा। इसलिये हे स्वामिन् ! राजा चेटकने न तो सेचनक गंधहाथी और अठारह लडीवाला हार ही दिया और न कुमार वैहल्ल्यको भेजा।

नेधये. એવું કરવાથી હું હાથી તથા હારની સાથે કુમાર વૈહલ્લ્યને મોકલી આપીશ. એમ કહીને રાજા ચેટકે તે દૂતનો આદર સત્કાર કર્યો તથા તેને વિદાલ આપી. આ દૂત વૈશાલી નગરીથી નીકળી રાજા કૂણિકની પાસે આવ્યો અને હાથ નેડી જય વિજય શબ્દથી તેને વધાવી આમ કહેવા લાગ્યો:—

હો સ્વામિન્ ! રાજા ચેટકે એવા પ્રકારનો જવાબ દીધો કે જે પ્રકારે રાજા કૂણિક રાજા શ્રેણિકનો પુત્ર ચેલ્લના દેવીનો આત્મજ તથા મારો દોહિત્રો છે તે જ પ્રકારે વૈહલ્લ્ય પણ છે. રાજા શ્રેણિકે પોતાની હૈયાતીમાંજ સેચનક ગંધહાથી અને અઠાર સરનો હાર વૈહલ્લ્ય કુમારને પ્રેમથી આપેલ હોવાથી તેના ઉપર રાજકુલનો અધિકાર નથી. તેમ છતાં પણ જો કુમાર વૈહલ્લ્ય માટે પોતાના રાજ્ય રાષ્ટ્ર તથા જનપદનો અરધો ભાગ તે આપે તો હું સેચનક ગંધહાથી તથા અઠાર સરનો હાર તેને આપી દઇશ તથા વૈહલ્લ્ય કુમારને પણ મોકલી દઇશ. માટે હે સ્વામિન્ ! રાજા ચેટકે નથી દીધો સેચનક ગંધહાથી કે નથી દીધો અઠાર સરનો હાર અને નથી મોકલ્યા કુમાર વૈહલ્લ્યને.

उस दूतके मुखसे इस प्रकारका वचन सुनकर राजा कूणिक सहसा क्रोधसे जलने लगा और उसने तीसरी बार दूतको बुलाकर फिर कहा—हे देवानुप्रिय ! वैशालीनगरीमें जाओ, वहाँ जाकर राजा चेटकके पादपीठको अपने बायें पैरसे ठोकर मारकर भालेकी नोकसे इस पत्रको देना । पत्र देकर शीघ्र ही क्रोधित होजाना, एवं क्रोधसे धगधगाते हुए त्रिवली और भुकुटिको अपने ललाटपर खींचकर चेटक राजासे इस प्रकार कहो—रे मृत्युको चाहनेवाले—निर्लेज ! बुरे परिणामवाले मूर्ख राजा चेटक ! वह कूणिक राजा तुझे आज्ञा देता है कि—सेचनक गंधहाथी और अठारह लडीवाला हार मुझे अर्पित करदे और कुमार वैहल्ल्यको मेरे पास भेजदे, नहीं तो संग्रामके लिए तैयार होजा, राजा कूणिक सेना, वाहन और शिविरके साथ युद्धके लिए तत्पर होकर शीघ्र आ रहा है ॥ ४२ ॥

ते इतना भोढेथी जेवां नयन सांभणीने राजा कूणिक तरत कोधथी आगनी जेम गरम थछ गये। अने तेछे त्रील वार इतने भोलावीने कहुं—हे देवानुप्रिय ! वैशाली नगरी न अने त्यां नछ राजा चेटकना पादपीठने तारा डागा पगेथी ठोकर भारीने बालानी अछीथी आ पत्र देजे। पत्र छने तुरत कोधित थछ नजे अने कोधथी आगनी पेछे गरम थछ त्रिवली तथा भ्रमरने कपाल छपर जेथी राजा चेटकने आम कहेजे—‘रे मृत्युने चाहनारा—निर्लेज ! अराज परिणामवाला मूर्ख राजा चेटक ! तने कूणिक राजा आज्ञा दे छे के—सेचनक गंधहाथी अने अठार सरवाजा हार भने आपी दे अने कुमार वैहल्ल्यने भारी पास भेजली दे। अगर जे तेम नछि तो संग्राम माटे तैयार थछ न। राजा कूणिक सेना, वाहन तथा शिविरनी साथे युद्ध माटे तत्पर थछ तुरत आवी रह्या छे। (४२)

मूलम्—

तएणं से दूए करयल० तहेव जाव जेणेव चेडए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता करयल० जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी—एस णं सामी ! ममं विणयपडिवत्ती, इयारिणं कूणियस्स रत्तो आणत्तो—चेडगस्स रत्तो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमइ, अक्कमित्ता, आसुरुत्ते कुंतगणेण लेहं पणावेइ त चेव सबलखंधावारे णं इह हव्वमागच्छइ ।

तएणं से चेडए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव साहट्ठु एवं वयासी—न अप्पिणामि णं कूणियस्स रत्तो सेयणं अट्टारसवंकं हारं, वेहल्लं च कुमारं नो पेसेमि, एस णं जुद्धसज्जे चिट्ठामि । तं दूयं असक्कारियं असंमाणियं अवहारेणं निच्छुहावेइ ।

तएणं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

छाया—

ततः खलु स दूतः करतल० तथैव यावद् यत्रैव चेटको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतल० यावद् वर्धयति, वर्धयित्वा एवमवादीत्—एषा खलु स्वामिन् ! मम विनयप्रतिपत्तिः, इदानीं कूणिकस्य राज्ञः आज्ञप्तिः—चेटकस्य राज्ञो वामेन पादेन पादपीठमाक्रामति, आक्रम्य आशुरक्तः कुन्ताग्रेण लेखं प्रणाययति तदेव सबलस्कन्धावारः खलु इह हव्यमागच्छति ।

ततः खलु स चेटको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चम्य आशुरक्तः यावत् संहत्य एवमवादीत्—नार्पयामि खलु कूणिकस्य राज्ञः सेचनकमष्टादशवक्रं हारं वैहल्यं च कुमारं नो प्रेषयामि, एष खलु युद्धसज्जस्तिष्ठामि । तं दूतमसत्कारितमसम्मानितमपद्वारेण निष्कासयति ।

ततः खलु स कूणिको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा

आसुरुत्ते कालादीए दस कुमारे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणु-
प्पिया ! वेहल्ले कुमारे ममं असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवंकं हारं
अंतेउरं समंडं च गहाय चंपातो पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वेसालिं
अज्जगं चेडगरायं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

तए णं मए सेयणगस्स गंधहत्थिस्स अट्टारसवंकस्स हारस्स अट्टाए
दूया पेसिया, ते य चेडएण रण्णा इमेणं कारणेणं पडिसेहिया अदुत्तरं च
णं ममं तच्चे दूए असकारिए, तं अवहारेणं निच्छुहावेइ तं सेयं खलु
देवाणुप्पिया ! अम्हं चेडगस्स रन्नो जुत्तं गिण्हित्तए । तए णं कालाईया
दस कुमारा कूणियस्स रन्नो एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ।

तएणं से कूणिए राया कालादीए दस कुमारे एवं वयासी-गच्छह
णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेयं पत्तेयं ण्हाया जाव

निश्चम्य आशुरक्तः कालादीन् दश कुमारान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवा-
दीत्-एवं खलु देवानुप्रियाः ! वैहल्यः कुमारो मम असंविदितः खलु सेच-
नकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं हारम् अन्तःपुरं सभाण्डं च गृहीत्वा चम्पातो
निष्क्रामति, निष्क्रम्य वैशालीम् आर्यकं चेटकराजम् उपसंपद्य विहरति ।
ततः खलु मया सेचनकस्य गन्धहस्तिनः अष्टादशवक्रस्य हारस्य अर्थाय दूताः
प्रेषिताः, ते च चेटकेन राज्ञा अनेन कारणेन प्रतिषिद्धाः, अथोत्तरं च
खलु मम तृतीयो दूतः असत्कारितः, तम् अपद्वारेण निष्कासयति, तच्छ्रेयः
खलु देवानुप्रियाः ! अस्माकं चेटकस्य राज्ञः युक्तं ग्रहीतुम् ।

ततः खलु कालादिकाः दश कुमाराः कूणिकस्य राज्ञः एतमर्थं
विनयेन प्रतिशृण्वन्ति ।

ततः खलु स कूणिको राजा कालादीन् दश कुमारान् एवमवादीत्-
गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः ! स्वकेषु स्वकेषु राज्येषु प्रत्येकं प्रत्येकं

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कूणिकको दश कुमारोंसे मन्त्रणा

१९५

पायच्छित्ता हस्तिखन्धवरगया पत्तेयं-पत्तवं तिहिं दतिसहस्सेहिं, एवं तिहिं रहसहस्सेहिं, तिहिं आससहस्सेहिं, तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सन्विट्ठीए जाव रवेणं सएहिंतो २ नयरेहिंतो पडिनिक्खमह, पडिनिक्खमित्ता ममं अंतियं पाउब्भवह ।

तए णं ते कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रत्तो एयमं सोच्चा सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेयं२ ण्हाया जाव तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सन्विट्ठीए जाव रवेणं सएहिंतो२ नयरेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडि-निक्खमित्ता जेणेव अंगा जणवए जेणेव चंपा नयरी जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागया करयल० जाव वद्धावेति ।

तएणं से कूणिए राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हस्तिरयणं पडिकप्पेह, हय-गय-

स्नाता यावत् प्रायश्चित्ताः हस्तिस्कन्धवरगताः प्रत्येकं प्रत्येकं त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः, एवं त्रिभी रथसहस्रैः, त्रिभिरश्वसहस्रैः, तिसृभिर्मनुष्यकोटिभिः सार्द्धं संपरिवृताः सर्वद्धर्था यावद्-रवेण स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो नगरेभ्यः प्रतिनिष्क्रामत, प्रति-निष्क्रम्य ममान्तिकं प्रादुर्भवत ।

ततः खलु ते कालादिका दश कुमाराः कूणिकस्य राज्ञ एतमर्थं श्रुत्वा स्वकेषु स्वकेषु राज्येषु प्रत्येकं प्रत्येकं स्नाता यावत् तिसृभिर्मनुष्य-कोटिभिः सार्द्धं संपरिवृताः सर्वद्धर्था यावद् रवेण स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो नगरेभ्यः प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव अङ्गा जनपदाः, यत्रैव चम्पा-नगरी, यत्रैव कूणिको राजा तत्रैवोपागताः करतल० यावद् वर्धयन्ति ।

ततः खलु स कूणिको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्द-यित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्पियाः ! आभिषेक्यं हस्तिरत्नं प्रति-

१९६

निरयावल्लिकासूत्र

रह—चाउरंगिणि सेणं संनाहेह, ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, जाव पच्चप्पिणंति ।

तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ जाव पडिनिग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव नरवई दुरुढे ।

तए णं से कूणिए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव रवेणं चंपं नयरिं मज्झं—मज्झणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कालादीया दस कुमारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कालाइएहिं दसहिं कुमारेहिं सद्धिं एगओ मेलायंति ।

तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं, तेत्तीसाए आस-सहस्सेहिं, तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं, तेत्तीसाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सच्चिद्धीए जाव रवेणं सुभेहिं वसहिपायरासेहिं नाइविप्पगिट्ठेहिं अंतरानासेहिं

कल्पयत, हय—गज—रथ—चतुरङ्गिणीं सेनां संनह्यत ममेतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।

ततः खलु स कूणिको राजा यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति यावत् प्रतिनिर्गत्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यावत् नरपतिर्दूरुढः ।

ततः खलु स कूणिको राजा त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावत् रवेण चम्पां नगरीं मध्यं—मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव कालादिका दश कुमारास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कालादिकैर्दशभिः कुमारैः सार्द्धमेकतो मिलति ।

ततः खलु स कूणिको राजा त्रयस्त्रिंशता दन्तिसहस्रैः, त्रयस्त्रिंशता-श्वसहस्रैः, त्रयस्त्रिंशता रथसहस्रैः, त्रयस्त्रिंशता मनुष्यकोटिभिः सार्द्धं संपरिवृतः सर्वद्वर्चा यावद् रवेण शुभैर्वसतिप्रातराशैः=नातिविप्रकृष्टैरन्तरावाशैः

सुन्दरबोधिनी टोका राजा कूणिककी दश कुमारों से मन्त्रणा

१९७

वसमाणेर अंगजणवयस्स मज्झं-मज्झेणं जेणेव विदेहे जणवण जेणेव
वेसाली नयरी तेणेव पहारिस्थ गमणाए ॥ ४३ ॥

वसन् २ अङ्गजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव विदेहो जनपदः, यत्रैव
वैशाली नगरी तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ॥ ४३ ॥

टीका—

‘तएणं से दूए’ इत्यादि—अपद्वारेण लघुद्वारेण, गुप्तद्वारेण वा गृह-

‘तएणं से दूए’ इत्यादि—

राजा कूणिकके ऐसा कहनेपर उस दूतने राजाकी आज्ञाको हाथ जोड़कर
स्वीकार की और पहिलेके ही समान राजा चेटकके पास आया, आकर हाथ जोड़
जय विजय शब्दके साथ वधाकर इस प्रकार कहा कि—हे स्वामिन् ! यह मेरा
विनय है, और अब जो राजा कूणिककी आज्ञा है वह कहता हूँ, ऐसा कहकर
अपने बाये पैरसे राजा चेटकके सिंहासनके पादपीठको ठोकर लगाता है और कोपसे
आरक्त हो भालेकी नोकसे पत्र देकर कूणिकका सन्देश सुनाता है ।

रे मृत्युको चाहनेवाले—निर्लज्ज ! बुरे परिणामवाले मूर्ख राजा चेटक ! वह

‘तएणं से दूए’ इत्यादि.

राजा कूणिकना कडेवा पछी ते दूत राजाणी आज्ञाने हाथ नेडी स्वीकार
करी अने पडेलांनी पेठेवर राजा चेटकनी पासे आये. आवीने हाथ नेडी नय
वि नय शब्दथी वधावी आ प्रकारे कहुं डे-डे स्वामिन् ! आ भारी तरङ्गना विनय
छे. अने डवे ने राजा कूणिकनी आज्ञा छे ते कहुं छुं. ओम कहीने पोताना उभा
पगथी राजा चेटकना सिंहासननी पासे रडेला पादपीठने ठोकर भारी डे छे तथा कोपथी
लादयेण थछ नछ लादानी आणीथी पत्र आपीने कूणिकना सन्देशा संलणावे छे-रे
मृत्युने आह्वाना निर्लज्ज, अराण परिणामवाणा मूर्ख राजा चेटक ! तने कूणिक राजा

પથ્યાદ્વાગેનેત્યર્થઃ । દૂરુઢ=આરુઢઃ, . યુક્તમ્=ઉચિતં યોગ્યમિતિ યાવત્, શેષં સુગમમ્ ॥ ૪૩ ॥

કૂળિક રાજા તુझे आज्ञा देता है कि सेचनक गंधहाथी और अठारह लडीवाला हार मुझे अर्पित करे, व कुमार वैहल्ल्यको मेरे पास भेजदे, नहीं तो संग्रामके लिए तैयार होजा, राजा कूणिक सेना वाहन और शिविरके साथ युद्धके लिए तत्पर होकर शीघ्र आरहा है ।

વહ ચેટક રાજા ઉસ દૂતકે મુંહસે ઇસ પ્રકારકા સન્દેશ સુનકર કોપસે આરુઢ્ઠ હો ઊઠા ઔરે આંચે તઢેરકર ઇસ પ્રકાર કહને લગા-રે દૂત ! મેં કૂળિકકો ન તો સેચનક ગંધહાથી ઔર અઠારહ લડીવાલા હાર હી દે સકતા હૂં, ઔર ન કુમાર વૈહલ્લ્યકો હી ભેજ સકતા હૂ, તૂ જા ઔર કહ દે જો કૂળિકકો કરના હો સો કરે, યુદ્ધકે લિખ મેં તૈયાર હૂં । એસા કહકર વહ ઉસ દૂતકો અપમાનિત (કાલા મુંહકર ગધેપર વૈઠા) કર નગરકે પિંછલે દ્વારસે નિકાલ દેતા હૈ ।

આજ્ઞા દે છે કે-સેચનક ગંધહાથી અને અઠાર સરવાળો હાર મને આપીદે અને કુમાર વૈહલ્લ્યને મારી પાસે મોકલી દે. અગર જો તેમ નહિ તો સંગ્રામ માટે તૈયાર થઈ જા. રાજા કૂળિક સેના, વાહન તથા શિબિરની સાથે યુદ્ધ માટે તત્પર થઈ તુરંત આવી રહ્યા છે.

તે ચેટક રાજા તે દૂતના મોઢથી આ પ્રકારનો સંદેશો સાંભળીને ક્રોધથી લાલચોળ થઈ ગયો તથા આંખો કાઢી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો-રે દૂત ! હું કૂળિકને ન તો સેચનક ગંધહાથી કે અઠાર સરવાળો હાર કંઈ શકીશ કે ન તો કુમાર વૈહલ્લ્યને પણ મોકલી શકીશ. માટે તું જા અને કહી દે કૂળિકને જે કરવું હોય તે કરે. યુદ્ધ માટે હું તૈયાર છું. એમ કહીને તે દૂતને અપમાનિત કરી (મોઢું કાળું કરી ગધેડા પર બેસાડી) નગરના પાછલા દરવાજેથી કાઢી મૂકે છે.

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कूणिककी दश कुमारों से मन्त्रणा

१९९

दूत वहाँसे चलकर वापस अपने राजा कूणिकके पास आया और उनको सारा वृत्तान्त सुनाया ।

कूणिक, दूतके मुखसे राजा चेटकका संवाद सुन कोपारक्त हो काल आदि दस कुमारोंको बुलवाता है और उन्हें बुलवाकर इस प्रकार कहता है—हे देवानु-प्रियों ! वैहल्ल्य कुमार मुझसे बिना कुछ कहे ही सेचनक गंधहाथी, अठारह लड़ी-वाला हार, एव अपने अन्तःपुर परिवारके सहित सभी प्रकारकी गृहसामग्रियाँ लेकर चम्पानगरीसे निकल गया और निकलकर वैशालीनगरीमें राजा चेटकके पास जाकर रहने लगा है । इस समाचारको पाकर मैंने हाथी और हारके लिए अपने दो दूतों को दो बार भेजे लेकिन राजा चेटकने हमारी बातको स्वीकार नहीं किया, फिर मैंने तीसरे दूतको भेजा; परन्तु राजा चेटकने उसका अपमान कर उसे अपद्वारसे निकाल दिया । इसलिये हे—देवानुप्रियों ! हम लोगोंको चाहिये कि हम राजा चेटकका निग्रह करें ।

इत त्यांथी आदीने पाछे पोताना राजा कूणिकनी पासे आब्यो अने तेने सर्व छुकीकत संभजानी.

कूणिक इतना मोठेथी राजा चेटकने संवाद सांभली डोपथी रक्त थर्छ काल आदि दश कुमारने बोलावे छे. तथा तेभने बोलावीने आ प्रकारे कडे छे—हे देवानुप्रियो ! वैहल्ल्य कुमार भने कांछि पणु कहा वगरज सेचनक गंधहाथी अने अठार सरने हार अने पोताना अंतःपुर परिवार सहित तमाम नतनी गृहसामग्री लधने चंपानगरीथी नीकणी गयो अने जधने वैशाली नगरीभां राजा चेटकनी पासे रहवा लाब्यो. आ समाचार बाणीने हाथी तथा हार भाटे में मारा जे इतोने जे वार मोकवा पणु राजा चेटके भारी वातने स्वीकार क्यो नथी. पछी में त्रीन इतने मोकवाब्यो पणु राजा चेटके तेनु अपमान करी तेने पाछवे हरवाबेथी काढी भूक्यो. भाटे छे देवानुप्रियो ! आपणा भाटे आवश्यक छे के राजा चेटकने निग्रह करवो.

यह सुनकर वे काल आदि दस कुमारोंने राजा कूणिककी इस बातको स्वीकार किया ।

उसके बाद वह कूणिक राजा काल आदि दस कुमारोंको इस प्रकार कहता है—हे देवानुप्रियो ! तुम लोग अपने २ राज्यमें जाओ । वहाँ जाकर स्नान और मांगलिक कृत्यकर हाथीपर चढ़, तुममेंसे हरेक कुमार तीन २ हजार हाथी, तीन २ हजार रथ, तीन २ हजार घोड़े, एवं तीन २ करोड़ सैनिकोंके सहित सभी प्रकारकी सामग्रियोंसे युक्त हो सज-धजकर बाजे-गाजे सहित अपने २ नगरोंसे निकलो और मेरे पास आओ ।

यह सुनकर वे काल आदि दस कुमार अपने २ राज्यमें गये वहाँ जाकर कूणिकके निर्देशानुसार सभी तरहकी तैयारी एवं सभी प्रकारकी सामग्रियोंसे युक्त हो अपने २ नगरसे निकले । और अंग देश चम्पानगरीमें राजा कूणिकके पास आए और हाथ जोड़ जय विजय शब्दके साथ राजाको बधाये ।

आ सांभली ते काल आदि दश कुमारोअे राजा कूणिकनी आ वातने स्वीकार कर्यो.

त्यार पछी ते कूणिक राजा काल आदि दश कुमारोने आ प्रभाणे कहे छे— हे देवानुप्रियो ! तमे ढोडो पोत-पोताना राज्यमां जाओ. त्यां जधने स्नान तथा मांगलिक कर्म करी हाथी उपर चडी तमाराभांन हरेक कुमार त्रणु त्रणु हज्जर हाथी, त्रणु-त्रणु हज्जर रथ, त्रणु-त्रणु हज्जर घोडा अने त्रणु त्रणु करोड सैनिको साथे तमाम प्रकारनी सामग्री लध तैयार थध वाजते गाजते पोतपोताना नगरोमांथी नीकणी भारी पासे आवो.

आ सांभली ते काल आदि दश कुमारो पोतपोताना राज्यमां गया. त्यां जधने कूणिकना कहे प्रभाणे तमाम प्रकारनी तैयारी करी एवं सर्वे प्रकारनी सामग्री लधने पोतपोताना नगरोमांथी नीकल्या. अने अंग देश चंपा नगरीमां राजा कूणिकनी पासे आव्या. त्यां आवीने हाथ जोडी जय विजय शब्दोथी राजने बधाव्या.

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कूणिक-चेटककी युद्ध तैयारियां

२०१

काल आदि दस कुमारोंके आनेके बाद वह कूणिक राजा अपने कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाता है और बुलाकर इस प्रकार कहता है—हे देवानुप्रियों ! शीघ्रातिशीघ्र अभिषेक्य (पट्ट) हाथीको सजाओ तथा घोड़े, हाथी, रथ और चतुरङ्गिणी सेनाको संनद्ध करो । मेरी आज्ञानुसार तैयारी कर मुझे सूचित करो । राजा कूणिककी इस आज्ञाको सुनकर उन्होंने राजाके कथनानुसार सभी कार्य करके राजाको सूचित किया ।

उसके बाद वह कूणिक राजा जहाँ स्नानगृह था वहाँ आया, और स्नानादि कृत्योंसे निवृत्त हो, वहाँसे निकलकर जहाँ बाहरी सभामण्डप था वहाँ पहुँचा । और वहाँ आकर वह राजा सभी प्रकारसे सुसज्जित हो अपने अभिषेक्य हाथी पर चढ़ा ।

उसके बाद वह कूणिक राजा तीन २ हजार हाथी घोड़े रथ और तीन करोड़ सैनिकोंके सहित सभी रणसामग्रियोंके साथ चम्पानगरीके मध्यसे होकर निकला,

काल आदि दस कुमारों आये पछी कूणिक राजा पोताना कौटुम्बिक पुरुषोंने जोलावीने आ प्रभाण्डे कडेवा लाया—हे देवानुप्रियों ! ओकदम जलदीथी अभिषेक्य (पट्ट) हाथीने सज्जो तथा घोडा हाथी रथ अने चतुरङ्गिणी सेनाने तैयार करो. मारी आज्ञा प्रभाण्डे तैयारी करी मने भयर आयो. राजा कूणिकनी आ आज्ञाने सांलणी तेओओ राजाना कडेवा प्रभाण्डे अथां कार्य करी राजाने भयर आयी.

त्यार पछी ते कूणिक राजा ज्यां स्नानगृह छतुं त्यां आया अने स्नान आदि कृत्योथी निवृत्त थछ त्यांथी नीकणी ज्यां अहारने सभामण्डप छतो त्यां पडोआ अने त्यां आवीने ते राजा तमाम प्रकारे सुसज्जित थछने पोताना अभिषेक्य हाथी उपर ओठा.

त्यार पछी ते कूणिक राजा त्रण त्रण अजर हाथी घोडा रथ तथा त्रण करोड सैनिको सहित तमाम युद्धनी सामग्रीओ साथे यंया नगरीना मध्यभागमां

मूलम्—

तएणं से चेडए राया इमीसे कहाए लद्धे समाणे नवमल्लइ-नवले-
च्छइ-कासी-कोसलगा अट्टारस वि गणरायाणो सहावेइ, सहावित्ता एवं
वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रत्तो असंविदिते

छाया—

ततः खलु स चेटको राजा अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् नव-
मल्लकि-नवलेच्छकि-काशी-कौशलकान् अष्टादशापि गणराजान् शब्दयति, शब्द-
यित्वा एवमवादीत्-एवं खलु देवानुप्रियाः ! वैहल्यः कुमारः कूणिकस्य

निकलकर जहाँ काल आदि दस कुमार थे वहाँ आया, और काल आदि दस
कुमारोंसे मिला ।

उसके बाद वह कूणिक राजा तेतीस हजार हाथी, तेतीस हजार घोड़े,
तेतीस हजार रथ और तेतीस करोड़ सैनिकोंसे घिरा हुआ सभी तरहकी सामग्री
सहित बाजे-गाजेके साथ शुभ स्थानोंमें स्नान-पान करता हुआ थोड़ी २ दूर पर डेरा
ढालकर विश्राम करता हुआ अङ्ग देशके बीचो-बीचसे जहाँ विदेह देश था, जहाँ
वैशाली नगरी थी, वहाँ पर जानेका निश्चय किया ॥ ४३ ॥

थधने नीकल्या. अने त्यांथी नीकणी ज्यां काल आदि दस कुमारे हुता त्यां आव्या
अने काल आदि दस कुमारेने मल्या.

त्यार पछी ते कूणिक राजा तेतीस हजार हाथी, तेतीस हजार घोडा तेतीस
हजार रथ तथा तेतीस करोड सैनिकोथी घेरायेला अने तमाम नतनी युद्ध सामग्री
युक्त भध वाजते गाजते शुभ स्थानोभां भान-पान करता करता थोडे थोडे दूर
पर मुकाम करता करता विश्राम बेता थका अंग देशनी वच्चो-वच्च थधने ज्यां
विदेह देश हुतो ज्यां वैशाली नगरी हुती त्यां नवानो निश्चय कर्यो. (४३)

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कूणिक-चेटककी युद्ध तैयारियां

२०३

णं सेयणगं गंधहर्त्ति अट्टारसवंकं च हारं गहाय इहं हव्वमागए, तए णं कूणिणं सेयणगस्स अट्टारसवंकस्स य अट्टाए तओ दूया पेसिया, ते य मए इमेणं कारणेणं पडिसेहिया ।

तए णं से कूणिण ममं एयमट्ठं अपडिमुणमाणे चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुज्झसज्जे इहं हव्वमागच्छइ, तं किं नु देवाणुप्पिया ! सेयणगं अट्टारसवंकं च कूणियस्स रत्तो पच्चप्पिणामो ? वेहल्लं कुमारं पेसेमो ? उदाहु जुज्झित्था ? तए णं नवमल्लइ-नवलेच्छइ-कासी-कोसलगा अट्टारस वि गणरायाणो चेडगं रायं एवं वयासी-न एयं सामी ! जुत्तं वा पत्तं वा रायसरिसं वा जन्नं सेयणगं अट्टारसवंकं कूणियस्स रत्तो पच्चप्पिणज्जइ, वेहल्ले य कुमारे सरणागए पेसिज्जइ, तं जइ णं कूणिण राया चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुज्झसज्जे इहं हव्वमागच्छइ । तों णं अम्हे कूणिणं रण्णा सद्धिं जुज्झामो ।

राज्ञः असंविदितेन सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वा इह हव्यमागतः, ततः खलु कूणिकेन सेचनकस्य अष्टादशवक्रस्य चार्थाय त्रयो दूताः प्रेषित्तः, ते च मयाऽनेन कारणेन प्रतिषिद्धाः । ततः खलु स कूणिको मम एतमर्थम-प्रतिशृण्वन् चातुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं संपरिवृतः युद्धसज्ज इह हव्यमागच्छति तत् किं नु देवानुप्रियाः ! सेचनकमष्टादशवक्रं च कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्पयामः, वैहल्ल्यं कुमारं प्रेषयामः, उताहो ! युध्यामहे ? ।

ततः खलु नवमल्लकि-नवलेच्छकि-काशी-कोशलका अष्टादशापि गणराजाश्चेटकं राजानमेवमवादिषुः-नैतत् स्वामिन् ! युक्तं वा, प्राप्तं वा राजसदृशं वा यत्खलु सेचनकमष्टादशवक्रं कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्प्यते, वैहल्ल्यश्च कुमारः शरणागतः प्रेष्यते, तद् यदि खलु कूणिको राजा चातुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं संपरिवृतो युद्धसज्ज इह हव्यमागच्छति तदा खलु वयं कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं युध्यामहे ।

तए णं से चेडए राया ते नवमल्लइ-नवलेच्छइ-कासी-कोसलगा
अट्टारस वि गणरायाणो एवं वयासी-जइणं देवाणुप्पिया ! तुम्हे कूणिणं
रत्ना सद्धि जुम्भइ, तं गच्छइ णं देवाणुप्पिया ! । सएसु २ रज्जेसु ण्हाया जहा
कालादीया जाव जएणं विजएणं वद्धावेति ।

तए णं से चेडए राया कोडुंवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं
वयासी-आभिसेकं जहा कूणिणं जाव दुरूढे ।

तएणं से चेडए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं जहा कूणिणं जाव वेसालिं
नयरिं मज्झं-मज्जेणं निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव ते नवमल्लइ-नवलेच्छइ-
कासी-कोसलगा अट्टारस वि गणरायाणो तेणेव उवागच्छइ ।

ततः खलु स चेटको राजा तान् नवमल्लकि-नवलेच्छकि-काशी-
कौशलकान् अष्टादशापि गणराजान् एवमवादीत्-यदि खलु देवानुमियाः !
यूयं कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं युध्यध्वं, तद्गच्छत खलु देवानुमियाः ! स्वकेषु
स्वकेषु राज्येषु, स्नाता यथा कालादिका यावद् जयेन विजयेन वर्द्धयन्ति ।

ततः खलु स चेटको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा
एवमवादीत्-आभिषेक्यं यथा कूणिको यावद् दूरूढः ।

ततः खलु स चेटको राजा त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यथा कणिको यावद्
वैशालीं नगरीं मध्य-मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ते नवमल्लकी-नवले-
च्छकी-काशी-कौशलका अष्टादशापि गणराजास्तत्रैवोपागच्छति ।

ततः खलु स चेटको राजा सप्तपञ्चाशता दन्तिसहस्रैः, सप्तपञ्चाशता
अश्वसहस्रैः, सप्तपञ्चाशता रथसहस्रैः, सप्तपञ्चाशता मनुष्यकोटिभिः, सार्द्धं
संपरिवृतः सर्वद्वर्चा यावद् रवेण शुभैर्बसति प्रातराशैर्नातिविप्रकृष्टैरन्तरै-

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कूणिक-चेटककी युद्ध तैयारियां.

२०५

तएणं से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं, सत्तावन्नाए आस-
सहस्सेहिं, सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीएहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विद्धीए जाव रवेणं
सुभेहिं वसहिपायरासेहिं नातिविप्पगिट्ठेहिं अंतरेहिं वसमाणे२ विदेहं जणवयं
मज्झं-मज्झेणं जेणेव देसपंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंधावारनिवेशणं
करेइ, कूणियं रायं षडिवालेमाणे जुज्झसज्जे चिट्ठइ ।

तएणं से कूणिए राया सव्विद्धीए जाव रवेणं जेणेव देसपंते तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेडयस्स रत्तो जोयणंतरियं खंधावारनिवेशं करेइ ।

तए णं से दोन्नि वि रायाणो रणभूमिं सज्जावेति, सज्जावित्ता रणभूमिं
जयंति ॥ ४४ ॥

वसन् २ विदेहं जनपदं मध्य-मध्येन यत्रैव देशप्रान्तस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य
स्कन्धावारनिवेशनं करोति, कृत्वा कूणिकं राजानं प्रतिपालयन् युद्धसज्ज-
स्तिष्ठति ।

ततः खलु स कूणिको राजा सर्वद्वयां यावद् रवेण यत्रैव देश-
प्रान्तस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चेटकस्य राज्ञो योजनान्तरितं स्कन्धावारनिवेशं
करोति ।

ततः खलु तौ द्वावपि राजानौ रणभूमिं सज्जयतः, सज्जयित्वा
रणभूमिं यातः ॥ ४४ ॥

टीका—

‘तएणं से चेडए’ इत्यादि-नवमल्लकिनः=काशीदेशस्थगणराजाः,
नवलेच्छकिनः=कोशलदेशस्थगणराजाः, तान् । युक्तम्=योग्यमिति, प्राप्तम्=
अधिकारोचितं, राजसदृशम्=राजवंशीयानुरूपं यत्=यन्निश्चयेन । पतिपालयन्=
प्रतीक्षमाणः । शेषं सुगमम् ॥ ४४ ॥

‘तपणं से चेडण’ इत्यादि—

उसके बाद उस चेटक राजाने कूणिककी चढाईके समाचार सुनकर काशी और कोशल देशके नौ मल्लकी-नौ लेच्छकी इन अठारहों गणराजाओंको बुलाकर उनसे इस प्रकार कहना आरम्भ किया—

हे देवानुप्रियो ! वैहल्ल्यकुमार राजा कूणिकसे डरकर सेचनक गन्धहाथी और अठारह लडीवाला हार लेकर मेरे पास चला आया । इसका समाचार पाकर कूणिकने मेरे पास तीन दूत भेजे, परन्तु मैंने उन दूतोंको कारण बताकर मना कर दिया । उसके बाद कूणिकने मेरी बातको न मानकर चतुरङ्गिणी सेनाके साथ लडाईके लिये तैयार होकर यहाँ आ रहा है । तो क्या हे देवानुप्रियो ! सेचनक गन्धहाथी और अठारह लडीवाला हार राजा कूणिकको देदें और वैहल्ल्यकुमारको उसके पास भेजदें अथवा उससे लड़ें ?

उसके बाद वे अठारहों गणराजाओंने हाथ जोडकर इस प्रकार कहा—

‘तपण से चेडण’ इत्यादि.

त्यार पछी ते चेटक राजाये कूणिकनी चढाईना समाचार सांभणी तेणे काशी तथा कोशल देशना नव मल्लकी अने नव लेच्छकी येम अठार गणराजायेने जोलावी तेमने आ प्रभाणे कडेना लाग्या.

हे देवानुप्रियो ! वैहल्ल्य कुमार राजा कूणिकथी डरीने सेचनक गन्धहाथी तथा अठार सरवाणो हार लधने भारी पासे आह्यो आये छे. येना समाचार भणतां कूणिके भारी पासे त्रणु इत मोकल्या पणु में ते हतोने कारण अतानी ना पाडी दीधी. त्यार पछी कूणिके भारी बात ने नहि मानीने अतुरंगिणी सेना साथे लडाई भाटे तैयार थधने अही आवी रह्यो छे. तो शुं हे देवानुप्रियो ! सेचनक गन्धहाथी अने अठार सरवाणो हार राजा कूणिकने आपी देवो अने वैहल्ल्य कुमारने तेनी पासे मोकली देवो के तेनी साथे लडाई करवी ?

त्यार पछी ते अठार गण राजायेने हाथ जोडीने आ प्रभाणे कहुं—

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कूणिक-चेटककी युद्ध तैयारियां

२०७

हे स्वामिन् ! न यह युक्त है ; न ऐसा करनेकी आवश्यकता है; न यह राजकुलको उचित ही है, जो आप सेचनक गन्धहाथी और अठारह लडीवाला हार राजा कूणिकको अर्पित करें और शरणमें आए हुए कुमार वैहल्ल्यको लौटा दें। हे स्वामिन् ! यदि राजा कूणिक चतुरङ्गिणी सेनाके साथ लड़ाईके लिये तैयार हो आ रहा है तो हम लोग भी लड़नेके लिए तैयार हैं।

उन राजाओंकी ऐसी बातें सुनकर राजा चेटकने उन अठारहों राजाओंसे इस प्रकार कहा—यदि हे देवानुप्रियों ! तुम लोग कूणिकसे लड़ना चाहते हो तो अपने २ राज्यमें जाओ और वहाँ जाकर स्नान आदि क्रिया करके लड़नेके लिए काल आदि कुमारोंके समान तुम भी सेना आदिसे सज्ज हो यहाँ आओ। राजा चेटककी आज्ञा पाकर वे गणराजा अपने २ राज्यमें जाकर वहाँसे सभी प्रकारकी सैन्य सामग्रियोंसे युक्त हो राजा चेटककी सहायताके लिये वैशालीनगरीमें आते हैं और राजा चेटकको जय विजयके साथ बघाते हैं।

हे स्वामिन् ! नथी तो आ वाज्जणी के नथी आनी रीते करवानी आवश्यकता वणी आ प्रभाणु करवुं राजकुलने उचित पणु नथी के आप सेचनक गंध हाथी तथा अठार सरवाणो हार राजा कूणिकने अर्पणु करी दीओ अने शरणु आवेला कुमार वैहल्ल्यने पाछो भोकली दीओ। हे स्वामिन् ! जे राजा कूणिक चतुर-
ङ्गिणी सेना लधने लडाई माटे तैयार करीने आवे छे तो अमे लोडो पणु लडवा माटे तैयार छीओ।

ते राजाओंनी ओ प्रभाणु वातो सांभणी राजा चेटके ते अठारे राजाओंने आ प्रकारे कहुं—हे देवानुप्रियो ! जे तमे लोडो कूणिक साथे लडवा चाहता हो तो पोतपोताना राजन्धमां नओ अने त्यां नर्ध स्नान आदि वगेरे किया करी लडवा माटे काल आदि कुमारोंने समान तमे पणु सेना आदिथी सज्ज यर्ध अहाँ आवो। राजा चेटकनी आज्ञा सांभणी ते गणराज्यो पोतपोताना राजन्धमां नर्ध अने त्यांथी सर्व प्रकारनी सैन्यसामग्रीथी युक्त यर्ध राजा चेटकने सहायता करवा माटे वैशाली नगरीमां आवे छे अने राजा चेटकने नय विजय शब्द साथे वधावे छे।

उसके बाद वह चेटक राजा अपने कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलवाता है और उनसे अपना अभिषेक्य हाथीको सज्जित करके खानेकी आज्ञा देता है । कूणिकके समान वह भी अपने पट्ट हाथीपर चढ़ता है ।

वहाँसे वह चेटक राजा तीन २ हजार हाथी, घोड़े, रथ और तीन करोड़ सैनिकोंके साथ कूणिकके समान ही अपनी वैशालीनगरीके बीचो-बीच होकर जहाँ वे अठारहों गणराजा थे वहाँ आया ।

और वहाँ वह चेटक राजा सत्तावन हजार हाथी, सत्तावन हजार घोड़े, सत्तावन हजार रथ, और सत्तावन कोटि सैनिकोंसे परिवेष्टित हो सभी प्रकारके साज-बाज और बाजे-गाजेके साथ अच्छे स्थानोंमें प्रातःकालिक भोजन करते हुए थोड़ी २ दूरपर डेरा डालकर विश्राम करते हुए विदेह देशके बीचो-बीचसे होते हुए जहाँ देशका प्रान्त-सीमाभाग था वहाँ आया । वहाँ आकर अपने शिविर तैयार करवाया और लड़ाईके लिये राजा कूणिककी प्रतीक्षा करने लगा ।

ત્યાર પછી તે ચેટક રાજા પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવે છે અને તેમને પોતાનો આભિષેક્ય (પટ્ટ) હાથી સજ્જ કરી લાવવા આજ્ઞા આપે છે કૂણિકની પેઠે તે પણ પોતાના પટ્ટ હાથી પર બેસે છે.

ત્યાંથી તે ચેટક રાજા ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી ઘોડા રથ અને ત્રણ કરોડ સૈનિકો સાથે કૂણિકની પેઠેજ પોતાની વૈશાલી નગરીની વચ્ચમાં થઈને જ્યાં તે અઠાર ગણરાજાઓ હતા ત્યાં આવ્યા.

અને ત્યાં તે ચેટક રાજા સત્તાવન હજાર હાથી, સત્તાવન હજાર ઘોડા સત્તાવન હજાર રથ તથા સત્તાવન કરોડ સૈનિકોથી ઘેરાઈને તમામ પ્રકારના સાજ આજ અને વાજાં ગાજાંની સાથે સારાં સારાં સ્થાનોમાં પ્રાતઃ કાલિક ભોજન કરતા થકા, થોડે થોડે દૂર મુકામ કરતા થકા, વિશ્રામ લેતા થકા, વિદેહ દેશની વચ્ચો-વચ્ચ થઈને જ્યાં દેશની સરહદ હતી ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને પોતાની છાવણી તૈયાર કરાવી અને લડાઈ માટે રાજા કૂણિકની રાહ જોવા લાગ્યા.

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कूणिक-चेटकका युद्ध

२०९

मूलम्—

तएणं से कूणिण तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहिं गरुलवूहं रएइ, रइत्ता गरुलवूहेणं रहमुसलं संगमं उवायाए । तएणं से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं जाव सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीहिं सगडवूहं रएइ, रइत्ता सगडवूहेणं रहमुसलं संगमं उवायाए । तएणं ते दोण्ह वि राईणं अणीया सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा मंगतिएहिं फलएहिं

छाया—

ततः खलु स कूणिकस्त्रयस्त्रिंशता दन्तिसहस्रैर्यावन्मनुष्यकोटिभिर्गरुडव्यूहं रचयति, रचयित्वा गरुडव्यूहेन रथमुशलं सङ्गममुपायातः ।

ततः खलु स चेटको राजा सप्तपञ्चाशता दान्तसहस्रैर्यावत् सप्तपञ्चाशता मनुष्यकोटिभिः शकटव्यूहं रचयति, रचयित्वा शकटव्यूहेन रथमुशलं संग्राममुपायातः ।

उसके बाद वह कूणिक राजा भी उसी तरह वहाँ आया जहाँ देशका अंतिम भाग था । और महाराजा चेटकके शिविरसे एक योजन दूर अपना शिविर बनवाया ।

उसके बाद उन दोनों राजाओंने रणभूमिको सज्जित की और लड़ाईके लिए वहाँ आये । ॥ ४४ ॥

त्यार पछी ते कूणिक राजा पणु तेज रीते त्यां आव्या के ज्यो देशना प्रदेशना अंतिम छेडे हतो, अने महाराजा चेटकनी छावणीथी ओक योजन छे पोतानी छावणी नभावी.

त्यार पछी ते ओह राजाओओ रणभूमि सज्जित करी अने युद्ध करवा त्यां आव्या. (४४)

२१०

निरयाबलिकासूत्र

निकटार्हिं असीर्हि, अंसगर्हिं तोणेर्हि, सजीवेर्हि धणूर्हि, समुक्खित्तेर्हि सरेर्हि, समुल्लालितार्हिं डावार्हि, ओसारियार्हिं उरुघटार्हि, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं, महया उक्किट्टसीहनायबोलकलकलरवेणं समुहरवभूयं पिव करेमाणा सन्विट्ठीए जाव रवेणं हयगया हयगर्हि, गयगया गयगर्हि, रहगया रहगर्हि, पायत्तिया पायत्तिर्हि, अन्नमन्नेर्हि सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।

तएणं ते दोण्ह वि रायाणं अणीया णियगसामीसासणाणुरत्ता महंतं जणक्खयं जणवहं जणप्पमहं जणसंवट्ठकप्पं नच्चंतकबंधवारभीमं रुहरिक-
हमं करेमाणा अन्नमन्नेणं सद्धिं जुज्झंति ।

तए णं से काले कुमारे तिर्हिं दंतिसहस्सेर्हिं जाव मणुस्सकोडीर्हिं गरुलवूहेणं एक्कारसमेणं खंधेणं कूणियरहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहिय-
जहा भगवया कालीए देवीए परिकहियं जाव जीवियाओ ववरोविए ।

ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोरनीके सन्नद्ध-यावद्-गृहीतायुधप्रहरणे मङ्गतिकैः फलकैः, निष्कासितैरसिभिः, अंशगतैस्तूणैः, सजीवैर्धनुर्भिः, समु-
त्क्षिप्तैः शरैः, समुल्लालिताभिः डावाभिः, अवसारिताभिः उरुघण्टाभिः, क्षिप्ततूरेण वाद्यमानेन महता उत्कृष्टसिंहनादबोलकलकलरवेणं समुद्ररवभूत-
मिव कुर्वाणे सर्वऋद्ध्या यावद् रवेण हयगता हयगतैः, गजगता गजगतैः, रथगता रथगतैः, पदातिकाः पदातिकैः, अन्योन्यैः सार्द्धं संपलग्नाश्चाऽप्य-
भूवन् ।

ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोरनीके निजकस्वामिशासनानुरक्ते महान्तं जनक्षयं जनवधं जनप्रमर्दं जनसंवर्तकल्पं नृत्यत्कबन्धवारभीमं रुधिर-
कर्दमं कुर्वाणे अन्योऽन्येन सार्द्धं युध्येते ।

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कृणिक-चेटकका युद्ध

२२१

तं एयं खलु गोयमा ! काले कुमारे एसिसएहिं आरंभेहिं जाव
एसिसएणं असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किञ्चा चउत्थीए पंकप्पभाए
पुढवीए हेमाभे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने ।

काले णं भंते ! कुमारे चउत्थीए पुढवीए अणंतरं उवट्ठित्ता कहिं गच्छहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? । गोयमा ! महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवन्ति अड्डां जहा द्दट्ठप्पइओ जाव सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ जाव अंतं काहिइ । तं एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं निरयावलि-
बाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ४५ ॥

॥ पठमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

ततः खलु स कालः कुमारस्त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावन्मनुष्यकोटिभि-
र्गरुडव्यूहेन एकादशेन स्कन्धेन कूणिकरथमुशलं संग्रामं संग्रामयन् हतमथित-
यथा भगवता काल्यै देव्यै परिकथितं यावज्जीविताद् व्यपरोपितः ।

तदेतत् खलु गौतम ! कालः कुमार ईदृशैरारम्भै र्यावद् ईदृशेन
अभ्युक्तकर्मप्राग्भारेण कालमासे कालं कृत्वा चतुर्थ्या पङ्कप्रभायां पृथिव्यां
इमाभे नरके नैरयिकतयोपपन्नः ।

कालः खलु भदन्त ! कुमारश्चतुर्ध्याः पृथिव्या अनन्तरमुद्वर्त्य कुत्र गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे यानि कुलानि भवन्ति आढ्यानि यथा दृढप्रतिज्ञो यावत् सेत्स्यति भोत्स्यते यावद् अन्तं करिष्यति ।

तदेवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन भगवता यावत्संप्राप्तेन निरयावलि-
कानां प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः । इति ब्रवीमि ॥ ४५ ॥

॥ प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥१॥

ટીકા—

‘તણં સે કૂણિણ’ ઇત્યાદિ—તતઃ સ્વલુ તે દ્વયોરપિ રાજ્ઞોઃ અનીકે=સૈન્યે સન્નદ્ર૦=સુસજ્જિત૦ યાવત્-ગૃહીતાયુધપ્રહરણે=ધૃતશસ્ત્રાસ્ત્રે મજ્જતિકૈઃ=હસ્તપાશિફલકવિશેષૈઃ ‘ઢાલ’ ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધૈઃ, અંશગતૈઃ=સ્કન્ધ-

‘તણં સે કૂણિણ’ ઇત્યાદિ—

અસકે બાદ વહ કણિક તેંતીસ ૨ હજાર હાથી, ઘોડે, ઓર રથ તથા તેંતીસ કરોડ (અસ સમયકી ંક સંલ્યા) સૈનિકોંકા ગરુડવ્યૂહ બનાયા ંર ગરુડવ્યૂહકે સાથ રણભૂમિમેં રથમુશલ સંગ્રામ કરનેકે લિણ આયા ।

ચેટક રાજા ભી સતાવન ૨ હજાર હાથી, ઘોડે, રથ ંવં સતાવન કરોડ (અસ કાલકી ંક સંલ્યા) સૈનિકોંકા શકટવ્યૂહ બનાયા ંર અસકે સાથ રથમુશલ સંગ્રામમેં આયા ।

અસકે બાદ ઢોનોં રાજાઓંકી સેના અલ્પ શસ્ત્રસે સજ્જિત હો અપને ૨ હાથોમેં થામી હુઈ ઢાલોસે, સ્ત્રીંચો હુઈ તલવારોસે, કંઘોપર રલે હુણ તૂળીરોસે, ચઢે હુણ

‘તણં સે કૂણિણ’ ઇત્યાદિ.

ત્યાર પછી તે કૂણિકે તેત્રીસે હજાર હાથી, ઘોડા અને રથ તથા તેત્રીસ કરોડ (તે સમયની ંક સંખ્યા) સૈનિકોના ગરુડવ્યૂહ બનાવેા અને ગરુડવ્યૂહ સાથે રણભૂમિમાં રથમુશલ સંગ્રામ કરવા માટે આવ્યા.

ચેટક રાજા પણ સતાવન સતાવન હજાર હાથી, ઘોડા, રથ અને સતાવન કરોડ (તે સમયની ંક સંખ્યા) સૈનિકોના શકટવ્યૂહ બનાવી તેની સાથે રથમુશલ સંગ્રામમાં આવ્યા.

ત્યાર પછી બન્ને રાજાઓની સેના અલ્પ શસ્ત્રથી સજ્જિત થઈ પોત પોતાના હાથમાં પકડેલી ઢાલોથી, ખેંચેલી તલવારોથી, કંધ ઉપર રાખેલા તૂળી-

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कृष्णिक-चेटकका युद्ध

२१३

स्थितैः तूणैः=शरधानीभिः 'भाता' इति भाषायाम् सजीवैः=ज्यासहितैः
 समत्यञ्चैः धनुर्भिः=चापैः, समुत्क्षिप्तैः=प्रक्षिप्तैः शरैः=बाणैः, समुल्लालिताभिः=
 आस्फालिताभिः डावाभिः=वामभुजाभिः, अवसारिताभिः=दूरीकृताभिः
 उरुघण्टाभिः=विशालघण्टाभिः क्षिप्रतूरेण=अतिशीघ्रेण वाद्यमानेन तूर्येण
 महता=विशालेन उत्कृष्टसिंहनाद-बोल-कलकल-रवेण उत्कृष्टः=भयङ्करः
 सिंहनादः=सिंहगर्जनवत् बोलः=कोलाहलः कलकलः=व्याकुलः श्रोतुर्महाभय-
 जनको यो रवः=शब्दस्तेन समुद्ररवभूतमिव=वेलाकुलजलनिधिप्रचण्डभूतसदृशं शब्दं
 कुर्वाणे सर्वऋद्ध्या=सकलयुद्धसामग्र्या युक्ते आस्तां, तत्र यावत् रवेण चीत्कारा-
 दिभयानकशब्देन ह्यगताः=अश्वारूढाः ह्यगतैः=अश्वारूढैः सह, गजगताः=
 गजारूढाः गजगतैः=गजारूढैः सह, रथगताः=रथारूढाः रथगतैः=रथारूढैः

धनुषोंसे, छोड़े हुए बाणोंसे, अच्छी तरह फटकारते हुए डाबी भुजाओंसे, दूरपर टांगों
 हुई विशाल घण्टाओंसे, अत्यन्त शीघ्रतासे बजाये जाते हुए भेरी आदि बाजोंसे,
 भयंकर सिंह नादके सदृश कोलाहलसे, समुद्रकी वेलाकी आवाजके समान आवाज करती
 हुई, तथा सभी युद्ध सामग्रियोंसे युक्त थी, वहाँ भीषण हुंकार करते हुए घुड़सवार घुड़सवा-
 रोंसे, हाथीवाले हाथीवालोंसे, रथी रथिकोंसे, पैदल पैदलसे, इस प्रकार एक दूसरेके
 साथ युद्ध करनेके लिये संनद्ध हो गये।

शस्त्री, अडावेला धनुष्योश्री, छोडेला आण्योश्री, सारी रीते इटकारता डाणी लुन्ग्योश्री,
 छोटे टांगेदी विशाल घंटाओश्री, अत्यंत शीघ्रताथी जलवाता भेरी आदि वाज्यो-
 ओश्री, सिंहनाद जेवा कोलाहलथी समुद्रनी छेणोना जेवा आवाज करती, तथा तमाम
 युद्धसामग्र्योथी युक्त हती. त्यां भीषण हुंकार करता करता घोडेसवारो घोडेसवारानी
 साथे, हाथीवालाओ हाथीवालाओनी साथे, रथीओ रथीओ साथे, पैदल पैदल
 पैदलनी साथे, आ प्रकारे ओक जीन साथे युद्ध करवा मोठे तैयार थप गया.

३१४

निरयावलिकासूत्र

सह, पदातिकाः=पादचारिणः पदातिकैः=पादचारिभिः सह, अन्योऽन्यैः=परस्परैः सार्द्धं=सह संप्रलया=योद्धुं सम्मिलिताः चकारः शस्त्रादिजनितप्रहारादिसमुच्चायकः अपि=निश्चयेन अभूवन्=जाताः ।

ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोरनीके निजकस्वामिशासनानुरक्ते=स्वस्वामिनिदेशपरायणे महान्तं विशालं जनक्षयं=जननाशं जनवधं=जनताडनं मुशलादिना, जनप्रमर्दं=गदादिना भटानां चूर्णीकरणम् जनसंवर्तकल्पं=प्रजा-संहारसदृशं नृत्यत्कबन्धवारभीमं=नटच्छिरोरहितशरीरसमूहभयानकं रुधिर-

उसके बाद उन दोनों राजाओंके योद्धा अपने २ स्वामीकी आज्ञामें अनुरक्त हो अत्यधिक मनुष्योंका क्षय, मनुष्योंका वध, मनुष्योंका मर्दन, एवं मनुष्योंका संहार करते हुए तथा नाचते हुए घड़ोंके समूहसे भयंकर और शोणितसे भूमिको कीचड़-मयी बनाते हुए एक दूसरेके साथ लड़ने लगे ।

उसके बाद वह काल कुमार तीन २ हजार हाथी, घोड़े और रथ, तथा तीन करोड़ मनुष्योंके साथ गरुडव्यूहके अपने ग्यारहवें स्कन्ध अर्थात् भागके द्वारा रथ-मुशल संप्राम करता हुआ सैनिकोंका संहार हो जानेके बाद जिस प्रकार भगवानने काली देवीको कहा है उसी प्रकार वह मारा गया ।

त्यार पछी ते जन्ने राज्ञेयाना योद्धाणो पोतपोताना स्वाभीनी आज्ञाभां अनुरक्त थधने धञ्जा मनुष्येनो नाश, मनुष्येनो वध, मनुष्येनां मर्दन अर्थात् मनुष्येनो संहार करता करता तथा नाचता थका घड़ाना समूहथी लयंकर अने दोहीथी रणभूमिने डीयडवाणी अनावता अनावता अेकधीन साथे लडवा लाग्या.

त्यार पछी ते शलकुमार त्रणु त्रणु डल्लर हाथी घोडा अने रथ तथा त्रणु कशेड मनुष्येनी साथे गरुडव्यूहना पोताना अगीयारभां स्कंध अर्थात् भाग द्वारा रथ मुशल संप्राम करता करता, सैनिकेनो संहार थध गया पछी, नेवी रीते भगवाने मली देवीने कहुं, ते प्रकारे ते मार्या गया.

सुन्दरबोधिनी टीका राजा कृष्णिक-चेष्टकका युद्ध

२१५

कर्दमं=शोणितपङ्कं कुर्वाणे अन्योऽन्येन=परस्परेण सार्द्धं=सह युध्येते संग्रामं कुर्वाते स्म । अशुभकृतकर्मप्राग्भारेण=प्राणिगणसंहाररूपपापसम्पादितनरकयोग्य-कर्मपुञ्जेन, शेषं सुगमम् 'इति ब्रवीमि' इति पूर्ववत् ॥ ४५ ॥

॥ इति निरयावलिकासूत्रे प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥

हे गौतम ! वह काल कुमार इस प्रकारके आरम्भोंसे तथा इस प्रकारके अशुभ कर्मोंके संचयसे कालमासमें काल करके चौथी पङ्कप्रभा नामक पृथ्वी (नरक) में हेमाम नामक नरकावासमें नैरयिक होकर उत्पन्न हुआ ।

हे भदन्त ! काल कुमार चौथी पृथ्वी (नरक) से निकलकर कहाँ जायगा ? और कहाँ उत्पन्न होगा ? हे गौतम ! काल कुमार महाविदेह क्षेत्रमें जाकर आढ्य (ऋद्धि-सम्पत्तिसे भरपूर) कुलमें उत्पन्न होगा । और दृढप्रतिज्ञके समान ही सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, मुक्त होगा और सब दुःखोंका अन्त करेगा ।

हे जम्बू ! इस प्रकार सिद्धगति स्थानको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने निरयावलिकाके प्रथम अध्ययनका यह भाव प्ररूपित किया है, अर्थात् भगवानके मुखसे जैसा मैंने सुना वैसा ही तुम्हें कहता हूँ ॥ ४५ ॥

॥ श्री निरयावलिका सूत्रका प्रथम अध्ययन समाप्त ॥१॥

हे गौतम ! ते कालकुमार आवा प्रकारना आरंभोत्थी तथा आवा प्रकारना अशुभ कार्योना संचयथी कालने वपते काल करीने चौथी पङ्कप्रभा नामनी पृथ्वी (नरक) मां हेमाल नामे नरकावासमां नैरयिक थध उत्पन्न थया.

हे भदन्त ! कालकुमार चौथी पृथ्वी (नरक) मांथी नीकणी क्यां जशे ? अने क्यां उत्पन्न थशे ? हे गौतम ! कालकुमार महाविदेह क्षेत्रमां जध आढ्य (ऋद्धि-सम्पत्तिथी भरपूर) कुलमां उत्पन्न थशे, अने दृढप्रतिज्ञनी पेठेज सिद्ध थशे, बुद्ध थशे, मुक्त थशे अने तमाम दुःखोना अंत करशे.

हे जम्बू ! आ प्रकारे सिद्धगति स्थानने प्राप्त करेला जेवा श्रमण भगवान महावीर निरयावलिकाना प्रथम अध्ययनने आ भाव प्ररूपित क्यो छे अर्थात् भगवानना मुखेथी जेम मे सांख्युं तेम मे तमने कह्युं छे. (४५)

श्री निरयावलिका सूत्रनु प्रथम अध्ययन समाप्त. (१)

मूलम्—

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी होत्था । पुन्नभदे चेइए । कोणिए राया । पउमावई देवी । तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कोणियस्य रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था, सुकुमाला । तीसे णं सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे हीत्था, सुकुमाले । तएणं से सुकाले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं जहा कालो कुमारो निरवसेसं तं चेव जाव महाविदेहे वासे अंतं काहिइ ॥१॥

॥ वीयं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

छाया—

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन निरयावलिकानां प्रथमस्याध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य निरयावलिकानां श्रमणेन भगवता यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी अभूत् । पूर्णभद्रश्चैत्यः । कूणिको राजा । पद्मावती देवी । तत्र खलु चम्पायां नगर्या श्रेणिकस्य राज्ञो भार्या कूणिकस्य राज्ञः शुल्लमाता सुकाली नाम देव्यभूत्, सुकुमारा । तस्याः खलु सुकाल्या देव्याः पुत्रः सुकालो नाम कुमारोऽभूत्, सुकुमारः । ततः खलु स सुकालः कुमारः अन्यदा कदाचित् त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यथा कालः कुमारः, निरवशेषं तदेव यावन्महाविदेहे वर्षेऽन्तं करिष्यति ॥ १ ॥

॥ द्वितीयमध्ययनं समाप्तम् ॥ २ ॥

सुन्दरबोधिनी टीका अध्या. २ सुकालकुमार

२१७

एवं सेसा वि अट्ट अज्झयणा नेयव्वा पढमसरिसा, णवरं मायाओ सरिसणामाओ ॥ १० ॥ निक्खेवो सव्वेसिं जाणियव्वो तहा ॥

निरयावलियाओ समत्ताओ ।

॥ पढमो वर्गो समत्तो ॥ १ ॥

एवं शेषाण्यप्यष्टाध्ययनानि ज्ञातव्यानि प्रथमसदृशानि । नवरं मातरः सदृशनाम्न्यः ॥ १० ॥ निक्षेपः सर्वेषां भणितव्यस्तथा ॥

निरयावलिकाः समाप्ताः । ॥ प्रथमो वर्गः समाप्तः ॥ १ ॥

टीका—

‘जइणं भंते’ इत्यादि । सदृशनाम्न्यः=पुत्रसदृशनाम्न्यः । शेषं निगदसिद्धम् ॥

॥ इति निरयावलिकासूत्रे टीकायां प्रथमो वर्गः समाप्तः ॥ १ ॥

निरयावलिका सूत्रका द्वितीय अध्ययन

‘जइणं भंते’ इत्यादि—

भदन्त ! सिद्धि स्थानको प्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने निरयावलिकाके प्रथम अध्ययनका पूर्वोक्त अर्थ बतलाया है ।

तो हे भगवन् ! फिर द्वितीय अध्ययनमें उन्होंने किस भावका निरूपण किया है ?

निरयावलिका सूत्रनुं द्वितीय अध्ययन

‘जइणं भंते’ इत्यादि.

हे भदन्त ! सिद्धि स्थानने प्राप्त थयेला श्रमण भगवान् महावीरने निरयावलिकाना प्रथम अध्ययननेा पूर्वोक्त अर्थ बतलाये छे. तो हे भगवन् ! पछी द्वितीय अध्ययनमां तेमण्णे कथा बावनुं निरूपण कथुं छे ?

હે જમ્બૂ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં ચમ્પા નામકી નગરી થી । ઉસ નગરીમેં પૂર્ણભદ્ર નામકા ચૈત્ય થા । ઔર ઉસ નગરીકા રાજા કૂણિક થા । ઉસકી રાની પદ્માવતી થી । ઉસ ચમ્પાનગરીમેં શ્રેણિક રાજાકી પત્ની રાજા કૂણિકકી છોટી માતા સુકાલી નામકી રાની થી, જો અત્યન્ત સુકુમાર થી । ઉસ સુકાલી દેવીકા પુત્ર સુકાલ નામક કુમાર થા જો અત્યન્ત સુકુમાર થા । ઉસકે બાદ વહ સુકાલ કુમાર કિસી એક સમયમેં તોન ૨ હજાર હાથી, ઘોડે, રથ તથા તોન કરોડ પૈદલ સૈનિકોંકે સાથ રાજા કૂણિકકે રથમુશલ સંગ્રામમેં લડનેકે લિયે ગયા ઔર વહ કાલ કુમારકે સમાન હી અપની સમી સેનાકે નષ્ટ હો જાનેકે બાદ મારા ગયા । મરકર કાલ કુમારકે સમાન હી નરકમેં ગયા ઔર વહાંસે નિકલકર મહાવિદેહ ક્ષેત્રમેં જન્મ લેકર કાલ કુમારકે સમાન સિદ્ધ હોગા યાવત્ સબ દુઃસ્વોંકા અન્ત કરેગા ।

। દ્વિતીય અધ્યયન સમાપ્ત હુઆ ।

હે જમ્બૂ ! તે કાલ તે સમયે ચંપા નામની નગરી હતી, તે નગરીમાં પૂર્ણભદ્ર નામનો ચૈત્ય હતો. અને તે નગરનો રાજા કૂણિક હતો. તેની રાણી પદ્માવતી હતી. તે ચંપા નગરીમાં શ્રેણિક રાજાની પત્ની રાજા કૂણિકની નાની માતા સુકાલી નામની રાણી હતી જે અત્યંત સુકુમાર હતી. તે સુકાલી દેવીનો પુત્ર સુકાલ નામનો કુમાર હતો જે અત્યંત સુકુમાર હતો. ત્યાર પછી તે સુકાલ કુમાર કોઈ એક સમયમાં ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી ઘોડા રથ તથા ત્રણ કરોડ પાયદળ સૈનિકો સાથે રાજા કૂણિકના રથમુશલ સંગ્રામમાં લડવા માટે ગયો. અને તે કાલકુમારની સમાન જ પોતાની તમામ સેના નષ્ટ થઈ ગયા બાદ માર્યો ગયો. મરીને કાલકુમારની પેઠે જ નરકમાં ગયો અને ત્યાંથી નીકળી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઈ કાલકુમારની જેમ સિદ્ધ થશે અને તમામ દુઃખનો અંત કરશે.

દ્વિતીય અધ્યયન સમાપ્ત થયું.

सुन्दरबोधिनी टीका अध. ३-१० महाकालादि आठ कुमार

२१९

इसी प्रकार—प्रथम अध्ययनके सदृश शेष आठ अध्ययनोंको भी जानना चाहिये । विशेष इतना ही है कि माताओंका नाम कुमारोंके नामके समान है ॥१०॥

सभीका निक्षेप अर्थात् उपसंहार पहिले अध्ययनके समान ही समझना चाहिये । इति । निरयावलिका समाप्त हुई ।

निरयावलिकानामक प्रथम वर्ग समाप्त ॥१॥

આ પ્રકારે—પ્રથમ અધ્યયનના જેમ બાકીનાં આઠ અધ્યયનોને પણ બાણવા બોધવું. વિશેષ એટલું જ છે કે માતાઓનાં નામ કુમારોના નામના જેવાં જ છે.

મધ્યાનો નિક્ષેપ અર્થાત્ ઉપસંહાર પહેલા અધ્યયનના સમાનજ સમજી લેવો બોધવું. ઇતિ. નિરયાવલિકા સમાપ્ત થઈ ।

નિરયાવલિકા નામક પ્રથમ વર્ગ સમાપ્ત. (૧)



॥ अथ कल्पावतंसिका नाम द्वितीयो वर्गः ॥

मूलम्—

जइणं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स कप्पवडिसियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ? ।

एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कप्पवडिसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा-पउमे १ महापउमे २ भदे ३ सुभदे ४ पउमभदे ५ पउमसेणे ६ पउमगुम्मे ७ नलिणिगुम्मे ८ आणंदे ९ नंदणे १० । जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स कप्पवडिसियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? । एवं खलु जंबू ! तेणं

छाया—

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् संप्राप्तेन उपाङ्गानां प्रथमस्य वर्गस्य निरयावलिकानामयमर्थः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! वगस्य कल्पावतंसिकानां श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ?

एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता यावत् संप्राप्तेन कल्पावतंसिकानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-पद्मः १ महापद्मः २ भद्रः ३ सुभद्रः ४ पद्मभद्रः ५ पद्मसेनः ६ पद्मगुल्मः ७ नलिनीगुल्मः ८ आनन्दः ९ नन्दनः १० । यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कल्पावतंसिकानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य कल्पावतंसिकानां श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी

कालेणं तेणं समणं चंपा नामं नयरी होत्था । पुत्रभदे चेइए । कूणिए राया । पउमावई देवी । तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रत्तो भज्जा कूणियस्स रत्तो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, सुकुमाल० । तीसेणं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सुकुमाल० । तस्स णं कालस्स पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाल० जाव विहरइ ।

तए णं सा पउमावई देवी अन्नया कयाइं तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अर्द्धितरओ सचित्तकम्मे जाव सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा । एवं जम्मणं जहा महाबलस्स, जाव नामधिज्जं, जम्हाणं अम्हं इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं पउमे सेसं जहा महबलस्स अट्टओ दाओ जाव उप्पि पासायवरगए विहरइ ॥ १ ॥

अभवत् । पूर्णभद्रं चैत्यं, कूणिको राजा, पद्मावती देवी । तत्र खलु चम्पायां नगर्यां श्रेणिकस्य राज्ञो भार्या कूणिकस्य राज्ञो लघुमाता काली नाम देवी अभवत् । सुकुमार० । तस्याः खलु देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमारोऽभवत् । सुकुमार० । तस्य खलु कालस्य कुमारस्य पद्मावती नाम देवी अभवत् । सुकुमार० यावत् विहरति ।

ततः खलु सा पद्मावती देवी अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशे वासगृहे अभ्यन्तरतः सचित्रकर्मणि यावत् सिंहं स्वप्ने दृष्ट्वा खलु प्रतिबुद्धा । एवं जन्म यथा महाबलस्य यावत् नामधेयं, यस्मात् खलु अस्माकमयं दारकः कालस्य कुमारस्य पुत्रः पद्मावत्या देव्या आत्मजः तद् भवतु खलु अस्माकम् अस्य दारकस्य नामधेयं पद्मः । शेषं यथा महाबलस्य अष्टदायाः यावत् उपरि प्रासादवरगतो विहरति ॥ १ ॥

ટીકા—

‘જડ્ઞં મંતે’ ઇત્યાદિ—કૂળિકરાજલઘુભ્રાતુઃ કાલકુમારસ્ય પદ્મા-
વતી નામ ભાર્યા અન્યદા કદાચિત્ અભ્યન્તરતઃ અભ્યન્તરભાગે સચિત્ર-
કર્મણિ=વિચિત્રચિત્રકર્મયુક્તે તસ્મિન્ તાદૃશે વાસગૃહે=નિજપ્રાસાદે સુપ્તજાગ્રદ-
વસ્થાયાં તન્દ્રાયાં સ્વપ્ને સિંહં દૃષ્ટ્વા પ્રતિબુદ્ધા=જાગરિતા । શેષં સુગમમ્ ॥૧॥

કલ્પાવતંસિકા નામક દ્વિતીય વર્ગ.

‘જડ્ઞં મંતે’ ઇત્યાદિ—

હે ભદ્રન્ત ! યદિ મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને નિરયાવલિકા નામક
ઉપાઙ્ગકે પ્રથમ વર્ગમાં પૂર્વોક્ત અભિપ્રાયકા વર્ણન ક્રિયા છે તો ઇસકે બાદ ભગવાને
દ્વિતીય વર્ગ—કલ્પાવતંસિકામાં કિતને અધ્યયનોંકા વર્ણન ક્રિયા છે ?

સુધર્મા સ્વામી કહતે છે—

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને કલ્પાવતંસિકામાં દસ અધ્યયનોંકા
નિરૂપણ ક્રિયા છે અનેક નામ ઇસ પ્રકાર છે—

કલ્પાવતંસિકા નામનો દ્વિતીય વર્ગ

‘જડ્ઞં મંતે’ ઇત્યાદિ.

હે ભદ્રન્ત ! જો મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રવણભગવાન મહાવીરે નિરયાવલિકા નામે
ઉપાંગના પ્રથમ વર્ગમાં પૂર્વોક્ત અભિપ્રાયનું વર્ણન કર્યું છે તો ત્યાર પછી
તેમણે બીજા વર્ગ કલ્પાવતંસિકામાં કેટલા અધ્યયનોનું વર્ણન કર્યું છે ?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતંસિકામાં દસ અધ્યયનોનું
નિરૂપણ કર્યું છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૨ અબ્ધ.૧પદ્મકુમાર

૨૨૩

(૧) પદ્મ (૨) મહાપદ્મ (૩) ભદ્ર (૪) સુભદ્ર (૫) પદ્મભદ્ર
(૬) પદ્મસેન (૭) પદ્મગુલ્મ (૮) નલિનીગુલ્મ (૯) આનન્દ ઓર (૧૦) નન્દન ।

શ્રી જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં:—

હે ભગવન્ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને કલ્પાવતંસિકામેં દસ અધ્યયનોંકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ । ઉસકે પ્રથમ અધ્યયનમેં કિસ ભાવકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ?

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈં:—

હે જમ્બૂ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં ચમ્પા નામકી નગરી થી । વહાં પૂર્ણમદ્ર ચૈત્ય થા । ઉસનગરીમેં કૂણિક રાજા રાજ્ય કરતા થા ઉસકે પદ્માવતી નામકી રાની થી । ઉસ ચમ્પાનગરીમેં રાજા શ્રેણિકકી પત્ની મહારાજ કૂણિકકી છોટી માતા કાલી નામકી રાની થી જો અત્યન્ત સુકુમાર થી । ઉસ રાનીકે એક કાલકુમાર નામકા

(૧) પદ્મ (૨) મહાપદ્મ (૩) ભદ્ર (૪) સુભદ્ર (૫) પદ્મભદ્ર (૬) પદ્મસેન
(૭) પદ્મગુલ્મ (૮) નલિનીગુલ્મ (૯) આનંદ અને (૧૦) નંદન.

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે:—

હે ભગવન્ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતંસિકામાં દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે. તેના પ્રથમ અધ્યયનમાં કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે:—

હે જમ્બૂ ! તે કાલે તે સમયે ચંપા નામની નગરી હતી, તેમાં પૂર્ણભદ્ર ચૈત્ય હતો. તે નગરીમાં કૂણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા. તેમને પદ્માવતી નામની રાણી હતી, તે ચંપાનગરીમાં રાજા શ્રેણિકની પત્ની મહારાજ કૂણિકની નાની માતા કાલી નામની રાણી હતી જે અત્યંત સુકુમાર હતી. તે રાણીને એક કાલકુમાર નામનો પુત્ર હતો, તે કાલકુમારની પત્ની પદ્માવતી દેવી જે બહુ સ્વરૂપ

પુત્ર થા । ઉસ કાલકુમારકી પત્ની પદ્માવતી દેવી જો અત્યન્ત સુરૂપા થી, વહ પૂર્વોપાર્જિત પુણ્યસે મિલે હુણ મનુષ્ય સુખકા અનુભવ કરતી રહતી થી ।

ઉસકે બાદ એક દિન વહ પદ્માવતી દેવી અપને અત્યુત્તમ વાસગૃહમેં સોયી હુઈ થી । ઉસકે વાસગૃહકી દિવાલેં અત્યન્ત મનોહર ચિત્રોસે ચિત્રિત થીં । ઉસ ઘરમેં અપની કોમલ શય્યાપર સોતી હુઈ ઉસ રાનીને સ્વપ્નમેં સિંહકો, દેસા । સ્વપ્ન દેસનેકે બાદ વહ જાગ ગયી । બાદમેં ઉસે સ્વપ્ન દર્શનકે અનુસાર શુભ લક્ષણવાલા પુત્ર હુઆ । ઉસકા જન્મસે લેકર નામકરણ પર્યન્ત સમી કૃત્ય મહાબલ કુમારકે સદશ જાનના । વહ કાલ કુમારકા પુત્ર ઓર પદ્માવતી દેવીકા અજ્ઞજાત હોનેસે ઉસકા નામ પદ્મ રસા ગયા । ઇસકે બાદકા સમી વૃત્તાન્ત મહાબલકે સદશ જાનના ચાહિયે । ઉસે આઠ ૨ દહેજ મિલ્યા । વહ અપને ઊપરી મહલમેં સમી પ્રકારકે મનુષ્યસમ્બન્ધી સુખોંકા અનુભવ કરતા હુઆ નિવાસ કરતા થા ॥ ૧ ॥

વાન હતી. તે પૂર્વ ઉપાર્જિત પુણ્યથી મળેલા મનુષ્ય સુખનો અનુભવ કરતી રહેતી હતી.

ત્યાર પછી એક દિવસ તે પદ્માવતી દેવી પોતાના અતિ ઉત્તમ વાસ-ગૃહમાં સુતી હતી. તે વાસગૃહની ભીંતો અત્યંત મનોહર ચિત્રોથી ચીતરાયેલી હતી. તે ઘરમાં પોતાની કોમલ શય્યામાં સુતેલી તે રાણીએ સ્વપ્નામાં સિંહને જોયો. સ્વપ્ન દીઠા પછી તે જાગી ગઈ. પછી તેને સ્વપ્નદર્શનને અનુસરીને શુભ લક્ષણવાળો પુત્ર થયો. તેના જન્મથી માંડી નામકરણ સુધીનાં કર્મો મહાબલ કુમારના જેવાં જ બહુવાં. તે શાલકુમારનો પુત્ર તથા પદ્માવતી દેવીની કુખે જન્મેલો હોવાથી તેનું નામ પદ્મ રાખવામાં આવ્યું. ત્યાર પછીનો સર્વ વૃત્તાન્ત મહાબલની પેઠે બહુવો જોઈએ. તેને આઠ આઠ દહેજ મળ્યા અને તે પોતાના ઉપલા મહેલમાં તમામ પ્રકારનાં મનુષ્યસંબંધી સુખો ભોગવતો તેમાં રહેતો હતો. ॥ ૧ ॥

मूलम्—

सामी समोसरिण । कूणिण निगण । पउमेवि जहा महब्बले
निगण तहेव अम्मापिइ—आपुच्छणा जाव पव्वइए अणगारे जाए जाव
गुत्तबंभयारी ।

तएणं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं
अंतिए सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-
छट्ठम जाव विहरइ । तएणं से पउमे अणगारे तेणं ओराळेणं जहा मेहो तहेव
धम्मजागरिया चिंता एवं जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छित्ता विउले
जाव पाओवगए समाणे तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एका-
रस अंगाइ, बहुपडिपुण्णाइं पंच वासाइं सामन्नपरियाए, मासियाए संलेह-
णाए सट्ठिं भत्ताइं० आणुपुव्वीए कालगए । येरा ओइन्ना भगवं गोयमो

छाया—

स्वामी समवसृतः । परिषत् निर्गता । कूणिको निर्गतः । पद्मोऽपि
यथा महाबलो निर्गतस्तथैव अम्बापित्रापृच्छना यावत् प्रव्रजितोऽनगारो
जातो यावत् गुप्तब्रह्मचारी ।

ततः खलु स पद्मोऽनगारः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि अधीते । अधीत्य बहुभिः चतुर्थषष्ठाष्टम० यावद् विहरति । ततः स पद्मोऽनगारो तेन उदारेण यथा मेघस्तथैव धर्मजागरिका, चिन्ता, एवं यथैव मेघस्तथैव श्रमणं भगवन्तमापृच्छ्य विपुले यावत् पादपोषगतः सन् तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि, बहुप्रतिपूर्णानि पञ्च वर्षाणि श्रामण्यपर्यायः । मासिक्या संलेखनया षट्ठिं भक्तानि० आनुपूर्व्या कालगतः ।

२२६

कल्पावतंसिकासूत्र

पुच्छइ, सामी कहेइ जाव सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदिता आलोइय० उड्डं चंदिम० सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, दो सागराइं । से णं भंते ! पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं पुच्छा, गोयमा ! महाविदेहे वासे जहा दढपइन्नो जाव अंतं काहिइ । तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिवेमि ॥२॥

॥ पढममज्झयणं समत्तं ॥

स्थविरा अवतीर्णा भगवान् गौतमः पृच्छति; स्वामी कथयति यावत् षट्ठिं भक्तानि अनशनेन छित्वा आलोचित० ऊर्ध्वं चन्द्रमः० सौधर्मे कल्पे देवत्वेन उपपन्नः । द्वौ सागरौ । स खलु भदन्त ! पद्मो देवस्ततो देवलोकाद् आयुःक्षयेण पृच्छा गौतम ! महाविदेहे वर्षे यथा दृढप्रतिज्ञो यावदन्तं करिष्यति । तदेवं खलु जम्बू ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कल्पावतंसिकानां प्रथमस्याध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । इति ब्रवीमि ॥ २ ॥

॥ प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥

टीका—

‘सामी’ इत्यादि—स्थविरा अवतीर्णाः=विपुलगिरितोऽधस्तादागताः । शेषं सुगमम् ॥ २ ॥

॥ प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥

‘सामी समोसरिण्’ इत्यादि—

भगवान् महावीर प्रभु पधारे, परिषद् धर्म श्रवण करनेके लिये निकली । कूणिक राजा भी धर्मोपदेश सुननेके लिए निकला, कुमार पद्म भी महाबलके समान

‘सामी समोसरिण्’ इत्यादि.

भगवान् महावीर प्रभु पधार्था. परिषद् धर्म श्रवण करवा भाटे निकली. कूणिक राजा पद्म धर्मोपदेश सांभलवा भाटे निकला. कुमार पद्म पद्म महाबलकी पेठे

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग २ अध्या. १ पद्मअनगार

२२७

भगवानके पास गया। वहाँ भगवानके उपदेशसे उसे वैराग्य हो गया। उसने महाबलके समान ही माता पितासे प्रव्रज्याकी अनुमति माँगी। तथा अन्तमें उसने प्रव्रज्या लेली और अनगार हो गया यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हो गया।

उसके बाद वे पद्म अनगार श्रमण भगवान महावीरके तथारूप स्थविरोके समीप सामायिक आदि ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया। और बहुत सी चतुर्थ षष्ठ आदि तपस्या की। अनन्तर वे पद्म अनगार उदार-कठिन तपश्चर्या करनेसे तपः कर्मके आराधनके कारण उनका शरीर शुष्क-रूक्ष हो गया। मांस शोणितके सूख जानेके कारण इतने कृश हो गये कि उनके शरीरमें हड्डी और चमड़ा मात्र रह गया और उनकी सभी नसें दिखाई देने लगी। इसका विशेष वर्णन मेघ कुमारके समान जानना। मेघ कुमारके समान ही इनने धर्मजागरणा की और विपुल गिरि पर जाने आदिका विचार किया और मेघ कुमारके समान ही विपुल गिरिपर जानेके लिये भगवानसे पूछा। पूछकर स्वयं पुनः पञ्च महाव्रत ग्रहण किया। गौतम आदि

भगवाननी पास गया। त्यां भगवानना उपदेशथी तेने वैराग्य थछ गयो। तेणे महाबलनी पेठेज माता पिता पास प्रव्रज्यानी रज मागी तथा छेवटे तेणे प्रव्रज्या (दीक्षा) लीधी अने अनगार (गुह्यागी) थछ गुप्त ब्रह्मचारी भछ गया

त्यार पछी ते पद्म अनगारे (गुह्यागी) श्रमण भगवान महावीरना तथाइय स्थविरोनी पास सामायिक आदि अगीयार अंगोनु अध्ययन कथुं अने अहु रीतनी चतुर्थ तथा छठ आदि (१-२ उपवास) तपस्या करी। पछी ते पद्म अनगारे उदार कठिन तपस्या करवाथी तपः कर्मनु आराधन करवाना कारणे तेमनु शरीर सुकाथ गथुं, रूक्ष थछ गथुं। लोही मांस सुकाथ जवाना कारणे अटला कृश (नभजा) थछ गया के तेमना शरीरमां हाडकां तथा चामडां मात्र रही गमां अने तेमनी अधी नसे देखावा लागी। आनु विशेष वर्णन मेघकुमारना जेवुं जणवुं। मेघकुमारनी पेठेज तेमणे धर्म जागरणा करी तथा विपुलगिरि उपर जवा आदिने विचार कथी तथा मेघकुमारनी पेठेज विपुल गिरिपर जवा भाटे भगवानने पूछथुं। पछीने पोते करीने पंच महाव्रत ग्रहण कथा गौतम आदि श्रमण निमन्त्रोना

શ્રમણ નિર્ગ્રન્થોકો તથા નિર્ગ્રન્થિયોકો સ્માકર સ્થવિરોકે સાથ ધીરે ૨ વિપુલ ગિરિ પર ચઢે । ઓર વહાં સવિધિ પાદપોષગમન સંથારા સ્વીકારકર કાલકી ઇચ્છા નહી કરતે હુણ રહને લો । ઓર વે પદ્મ અનગાર સ્થવિરોકે સમીપ ગ્યારહ અઙ્ગોકા અધ્યયન ક્રિયા ઓર પૂરે પાંચ વર્ષકી દીક્ષાપર્યાય પાલી ।

એક માસકી સંલેખનાસે સાઠ મત્તકા હેદનકર અનુક્રમસે કાલકો પ્રાપ્ત હો ગયે । ઁનકે કાલપ્રાપ્ત કરનેકે બાદ સ્થવિર લોગ ઁન પદ્મ અનગારકે માળ્ડોપ-કરણ લેકર ભગવાનકે પાસ આયે ઁનકે આનેકે બાદ ગૌતમને ભગવાનસે પૂછા—હે ભગવન્ ! યે પદ્મ અનગાર કાલ કરકે કહાં ગયે ?

ભગવાનને કહા—હે ગૌતમ ! પદ્મ અનગાર પૂર્વોક્ત પ્રકારસે એક મહીનેકા સંથારા કર ઓર આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત હોકર અર્થાત્ આત્મશુદ્ધિ કરકે કાલ અવસર કાલ પ્રાપ્ત હોકર ચન્દ્રમાસે ઁપર સૌધર્મ કલ્પમેં દો સાગરકી સ્થિતિવાલે દેવપનેમેં ઉત્પન્ન હુણ ।

તથા નિર્ગ્રન્થીઓને ખમાવીને સ્થવિરોની સાથે ધીરે ધીરે વિપુલગિરિ પર ચડ્યા અને ત્યાં વિધીસર પાદપોષગમન સંથારે સ્વીકાર કરી મરણની ઇચ્છા વગર રહેવા લાગ્યા, તથા તે પદ્મ અનગાર સ્થવિરોની પાસે અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું અને પૂરા પાંચ વર્ષની દીક્ષા પર્યાય પાળી.

એક મહિનાની સંલેખનાથી સાઠ ભક્તનું હેદન કરી અનુક્રમે કાલને પ્રાપ્ત થયા. તેમના કાલ પ્રાપ્ત કર્યા પછી સ્થવિર લોક તે પદ્મ અનગારના ભાંડોપકરણ લઈને ભગવાનની પાસે આવ્યા. તેના આવ્યા પછી ગૌતમે ભગવાનને પૂછ્યું—હે ભગવન્ ! આ પદ્મ અનગાર કાલ કરીને ક્યાં ગયા ?

ભગવાને કહ્યું—હે ગૌતમ ! પદ્મ અનગાર પૂર્વોક્ત પ્રકારે એક મહિનાનો સંથારો કરી તથા આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત થઈ અર્થાત્ આત્મશુદ્ધિ કરી કાલને અવસરે કાલ પ્રાપ્ત થઈ ચન્દ્રમાની ઉપર સૌધર્મ કલ્પમાં બે સાગરની સ્થિતિવાળા દેવપણે ઉત્પન્ન થયા.

मूलम्—

जड़णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कप्पवडिसियाणं
पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स
के अट्ठे पणत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नामं

छाया—

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् संप्राप्तेन कल्पावतं-
सिकानां प्रथमस्याध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । द्वितीयस्य खलु भदन्त !
अध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्त ? एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी अभवत्, पूर्णभद्रं चैतयं, कृष्णिको

हे भदन्त ! वह पद्म देव देवसम्बन्धी आयु भव स्थितिके क्षय होजानेके
बाद, देवलोकसे चवकर कहाँ जायगा ।

हे गौतम ! वह देवलोकसे चवकर महाविदेह क्षेत्रमें दृढ प्रतिज्ञके समान
समृद्ध कुलमें जन्म लेकर सिद्ध होगा और सब दुःखोंका अन्त करेगा ।

हे जम्बू ! इस प्रकार मोक्षप्राप्त श्रमण भगवान महावीरने कल्पावतंसिकाके
प्रथम अध्ययनका यह भाव निरूपण किया है । ॥ २ ॥

। प्रथम अध्ययन समाप्त ।

हे भदन्त ! ते पद्मदेव देवसम्बन्धी आयु, भव स्थितिना क्षय थछ गम्भा
पछी देवलोकाथी न्यवीने कथां नशे ?

हे गौतम ! ते देवलोकाथी न्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां दृढप्रतिज्ञानी रीते
समृद्ध कुलमां जन्म लछ सिद्ध थशे अने तमाम दुःखना अंत करशे.

हे जम्बू ! आ प्रकारे मोक्षप्राप्त श्रमण भगवान महावीरे कल्पावतंसिकाना
प्रथम अध्ययननु आ भाव निरूपण कथुं छे. ॥ २ ॥

प्रथम अध्ययन समाप्त.

२३०

निरयावलिकासूत्र

नयरी होत्था, पुन्नभदे चेइए, कूणिए राया, पउमावईदेवी । तत्थ णं चंपोए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था । तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे । तस्स णं सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था, सुकुमाला ।

तए णं सा महापउमा देवी अन्नया कयाइं तंसि तारिसगंसि एवं तहेव महापउमे नामं दारए, जाव सिज्झिहिइ, नवरं ईसाणे कप्पे उववाओ उकोसट्ठिओ । तं एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं । एवं सेसा वि अट्ठ नेयव्वा । मायाओ सरिसनामाओ । कालादीणं दसण्हं पुत्ताणं आणुपुव्वीए-दोण्हं च पंच चत्तारि, तिण्हं तिण्हं च होंति तिन्नेव । दोण्हं च दोण्णि वासा, सेणियनत्तूण परियाओ ॥ १ ॥

राजा, पद्मावती देवी । तत्र खलु चम्पायां नगर्यां श्रेणिकस्य राज्ञो भार्या कूणिकस्य राज्ञो लघुमाता सुकाली नाम देवी अभवत् । तस्याः खलु सुकाल्याः पुत्रः सुकालो नाम कुमारः, तस्य खलु सुकालस्य कुमारस्य महापद्मा नाम देवी अभवत्, सुकुमारा ।

ततः खलु सा महापद्मा देवी अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशे एवं तथैव महापद्मो नाम दारकः यावत् सेत्स्यति नवरमीशानकल्पे उपपातः उत्कृष्टस्थितिकः । एवं खलु जम्बु ! श्रमणेन भगवता यावत् संप्राप्तेन । एवं शेषाण्यपि अष्टौ ज्ञातव्यानि, मातरः सदृशनाम्न्यः कालादीनां दशानां पुत्राणामानुपूर्व्या—(व्रतपर्यायः)—

द्वयोश्च पञ्च चत्तारि, त्रयाणां त्रयाणां च भवन्ति त्रीण्येव । द्वयोश्च द्वे वर्षे, श्रेणिकनप्तृणां पर्यायः ॥ १ ॥

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૨ અવ્ય. ૩-૧૦ મદ્રકુમારાદિ ૮

૨૩૧

ઉવવાઓ આણુપુવ્વીએ, પદમો સોહમ્મે વિતિઓ ઈસાણે, તડઓ સળ-
કુમારે, ચડત્થો માર્હિદે, પંચમઓ વંમલોએ, છટ્ટો લંતએ, સત્તમઓ મહાસુકે,
અટ્ટમઓ સહસારે, નવમઓ પાણએ, દસમઓ અચ્ચુએ । સવ્વત્થ ઉકોસદ્ધિઈ
માણિયવ્વા, મહાવિદેહે સિજ્ઞિહિઈ ૧૦ ॥ ૩ ॥

ઉપપાત આણુપૂર્વ્યા-પ્રથમઃ સૌધર્મે, દ્વિતીય ઈશાને, તૃતીયઃ સન-
ત્કુમારે, ચતુર્થો માહેન્દ્રે, પશ્ચમો વ્રહ્મલોકે, ષષ્ઠો લાન્તકે, સપ્તમો મહાશુક્રે,
અષ્ટમઃ સહસારે, નવમઃ પ્રાણતે, દશમોઽચ્યુતે । સર્વત્ર ઉત્કૃષ્ટા સ્થિતિર્ભણિ-
તવ્યા, મહાવિદેહે સેત્સ્યતિ ૧૦ ॥ ૩ ॥

ટીકા—

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ । માતૃનામસદ્દશનામાનઃ કાલાદીનાં દશાનાં

દ્વિતીય અધ્યયન પ્રારંભ ।

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ—

જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં—

હે મદન્ત ! મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ મગવાન મહાવીરને કલ્પાવતંસિકાકે પ્રથમ
અધ્યયનકે ભાવોંકો પૂર્વોક્ત પ્રકારસે નિરૂપણ ક્રિયા હૈ તો ઇસકે બાદ હે મગવન્ !
દ્વિતીય અધ્યયનમેં મગવાન કિન ભાવોંકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ !

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ.

દ્વિતીય (બીજે) અધ્યયન પ્રારંભ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે:—

હે ભદન્ત ! મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતંસિકાના પ્રથમ
અધ્યયનના ભાવોંને પૂર્વોક્ત પ્રકારે નિરૂપણ કર્યા છે. તો ત્યાર પછી હે ભગવન્ !
બીજા અધ્યયનમાં તેઓએ કયા ભાવોંનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

पुत्राः श्रेणिकपौत्राः पद्मादयः कियन्ति २ वर्षाणि संयमपर्यायं पालयामा-
मुरिति क्रमेण व्रतपर्यायप्रतिपादिका तद्गाथा निगद्यते—‘द्वयोश्चे’—त्यादि ।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें चम्पा नामकी नगरी थी । वहाँ पूर्णभद्र
चैत्य था । वहाँका राजा कूणिक था । उसकी रानीका नाम पद्मावती था । उस
चम्पानगरीमें राजा श्रेणिककी रानी महाराजा कूणिककी छोटी माता सुकाली नामकी
रानी थी । उस सुकाली रानीका पुत्र सुकाल कुमार था । उस सुकाल कुमारकी पत्नी
का नाम महापद्मा था, वह अत्यन्त सुकुमार थी ।

उसके बाद वह महापद्मा देवी किसी समय एक रातमें शय्यापर सोयी
हुई थी । उसने स्वप्नमें सिंहको देखा ! और नौ महीनेके बाद उसे एक पुत्र उत्पन्न
हुआ जिसका नाम महापद्म रखा गया । इन महापद्म अनगरका उत्पत्तिसे लेकर
सिद्धि तकका वृत्तान्त पद्म अनगरके समान ही जानना चाहिये । अर्थात्

श्री सुधर्मा स्वामी कहे छेः—

हे जम्बू ! ते काले ते समये चंपा नामे ओक नगरी હતી. તે નગરીમાં
પૂર્ણભદ્ર ચૈત્ય હતો, ત્યાંનો રાજા કૂણિક હતો. તેનો રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું.
તે ચંપાનગરીમાં રાજા શ્રેણિકની રાણી—મહારાજા કૂણિકની નાની માતા—સુકાલી
નામે રાણી હતી. તે સુકાલી રાણીનો પુત્ર કુમાર સુકાલ હતો. તે સુકાલ કુમારની
પત્નીનું નામ મહાપદ્મા હતું. તે બહુ સુકુમાર હતી.

ત્યાર પછી તે મહાપદ્મા દેવી કોઈ સમયે એક રાત્રિમાં જ્યારે શય્યા પર
સુતી હતી ત્યારે તેણે સ્વપ્નામાં સિંહને જોયો. અને નવ મહિના પછી તેને
એક પુત્ર ઉત્પન્ન થયો જેનું નામ મહાપદ્મ રાખવામાં આવ્યું. આ મહાપદ્મ
અનગારની ઉત્પત્તિથી માંડીને સિદ્ધિ સુધીનું વૃત્તાન્ત પદ્મ અનગારના જેવુંજ બાણી
સેવું જોઈએ. અર્થાત્ દેવલોકથી અવીને મહાવિદેહક્ષેત્રમાં સિદ્ધ થયે. એટલું

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૨ અધ્ય. ૩-૧૦ મદ્રકુમારાદિ ૮

૨૩૩

અસ્યા અયમભિમાયઃ-દ્વયોઃ-કાલ-સુકાલ-પુત્રયોઃ પદ્મ-મહાપદ્મકુમારયો-
વ્રતપર્યાયઃ પદ્મ પદ્મ વર્ષાણિ, ત્રયાણાં=મહાકાલ-કૃષ્ણ-સુકૃષ્ણપુત્રાણાં-મદ્ર-
સુમદ્ર-પદ્મમદ્રકુમારાણાં ચત્તારિ ચત્તારિ વર્ષાણિ વ્રતપર્યાયઃ, પુનસ્ત્રયાણાં=મહા-

દેવલોકે ચ્યવકર મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં સિદ્ધ હોગે । ઇતના વિશેષ છે કે યે મહાપદ્મ
અનગાર ઈશાન દેવલોકમાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળે દેવ હુએ ।

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુને ઇસ પ્રકાર દ્વિતીય અધ્યયનકા
નિરૂપણ ક્રિયા છે । વહ જૈસા ભગવાનને સુના છે વૈસા તુમ્હે કહા છે ॥ ૨ ॥

હે જમ્બૂ ! ઇસી પ્રકાર શેષ આઠ અધ્યયનોનો જાનના ચાહિયે । કાલ
આદિ દસ કુમારોને પુત્રોની માતાઓને નામ ડન પુત્રોને સદશ હૈ । ઇન સબકા
ચારિત્રપર્યાય અનુક્રમને ઇસ પ્રકાર હૈ- કાલ સુકાલને પુત્ર પદ્મ મહાપદ્મ અનગારને
પાંચ ૨ વર્ષ દીક્ષા પર્યાય પાળી ।

મહાકાલ, કૃષ્ણ ઓર સુકૃષ્ણને પુત્ર મદ્ર, સુમદ્ર ઓર પદ્મમદ્રને ચાર ૨
વર્ષ, મહાકૃષ્ણ, વીરકૃષ્ણ, રામકૃષ્ણના પુત્ર પદ્મસેન પદ્મગુલ્મ ઓર નલિનીગુલ્મ અન-

વિશેષ છે કે તે મહાપદ્મ અનગાર ઇશાન દેવલોકમાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા દેવ થયા.

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ આ પ્રકારે બીજા અધ્યયનનું
નિરૂપણ કર્યું છે. તે જેવું ભગવાન પાસેથી સાંભળ્યું છે તેવુંજ મેં તને કહ્યું છે. (૨)

હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે બાકીનાં આઠ અધ્યયનોને બાણી લેવાં બોલ્યો.
કાલ આદિ દશ કુમારોના પુત્રોની માતાઓના નામ તે પુત્રોના જેવાં છે. તે
બધાનાં ચારિત્રપર્યાય અનુક્રમથી આ પ્રકારે છે:—

કાલ સુકાલના પુત્ર પદ્મ મહાપદ્મ અનગારે પાંચ પાંચ વર્ષ દીક્ષાપર્યાય
પાળી. મહાકાલ, કૃષ્ણ તથા સુકૃષ્ણના પુત્ર મદ્ર, સુમદ્ર અને પદ્મમદ્રે ચાર ચાર
વર્ષ; મહાકૃષ્ણ, વીરકૃષ્ણ, રામકૃષ્ણના પુત્ર પદ્મસેન, પદ્મગુલ્મ અને નલિનીગુલ્મ

૨૩૪

૨ કલ્પાવતંસિકાસુત્ર

કૃષ્ણ-વીરકૃષ્ણ-રામકૃષ્ણપુત્રાણાં પદ્મસેન-પદ્મગુલ્મ-નલિનીગુલ્મકુમારાણાં ત્રીણિ ત્રીણિ વર્ષાણિ વ્રતપર્યાયઃ, પુનર્દ્વયોઃ=પિતૃસેનકૃષ્ણ-મહાસેનકૃષ્ણપુત્રયોઃ આનન્દ-નન્દનકુમારયોઃ દ્વે દ્વે વર્ષે । इत्थं श्रेणिकनप्तृणां=श्रेणिकपौत्राणां दशानामपि पर्यायः=संयमपर्यायो ज्ञातव्यः । आनुपूर्व्या=क्रमेण उपपातः= देवलोकेषु जन्म प्रोच्यते-प्रथमः=पद्मः १ सौधर्मे=सौधर्माख्यप्रथमदेवलोके उत्कृष्टद्विसागरोपमस्थितिको देवो जातः । एवं द्वितीयः=महापद्मः २ ईशाने द्वितीये देवलोके उत्कृष्टेन किंचिदधिकद्विसागरोपमस्थितिकोऽभूत् । तृतीयः= भद्रो मुनिः ३ सनत्कुमारे तृतीये देवलोके उत्कृष्टसप्तसागरोपमस्थितिकः, चतुर्थः=सुभद्रो मुनिः ४ माहेन्द्रे चतुर्थे देवलोके उत्कृष्टेन किंचिदधिकसप्त-

ગારોને ત્રીણ ૨ વર્ષ, પિતૃસેનકૃષ્ણ મહાસેનકૃષ્ણકે પુત્ર આનન્દ ઔર નન્દનને દો-દો વર્ષ સંયમ પાલ । યે દસો શ્રેણિક રાજાકે પોતે થે ।

અબ કૌન કિસ દેવલોકમેં ગયે યહ ક્રમસે બતલાતે હૈં ।

(૧) પદ્મ-સૌધર્મ નામક પ્રથમ દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ દો સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે, (૨) મહાપદ્મ-ઈશાન નામક દૂસરે દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ દો સાગરોપમ જ્ઞાણેરી (કુલ અધિક) સ્થિતિવાલે, (૩) ભદ્ર-સનત્કુમાર નામક ત્રીસરે દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ સાત સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે, (૪) સુભદ્ર મુનિ-માહેન્દ્ર નામક ચતુર્થ

અનગારોએ ત્રણ ત્રણ વર્ષ; પિતૃસેનકૃષ્ણ, અને મહાસેનકૃષ્ણના પુત્ર આનંદ અને નંદને બે બે વર્ષ સંયમ પાડ્યો. આ દશેય શ્રેણિક રાજાના પોત્ર હતા.

હવે કોણ કયા દેવલોકમાં ગયા તે ક્રમથી બતાવીએ છીએ:—

(૧) પદ્મ-સૌધર્મ નામે પ્રથમ દેવલોકમાં ગયા. (૨) મહાપદ્મ-ઈશાન નામે બીજા દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થયા. (૩) ભદ્ર-સનત્કુમાર નામે ત્રીજા દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થયા. (૪) સુભદ્રમુનિ માહેન્દ્ર નામે ચોથા દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થયા.

સુન્દરબોધિની ટીકા વર્ગ ૨ અધ્ય. ૩-૧૦ મદ્રબાદિ દેવોંકી સ્થિતિ

૨૩૫

સાગરોપમસ્થિતિકઃ, પચ્ચમઃ=પચ્ચમદ્રો મુનિઃ ૫ બ્રહ્મલોકે પચ્ચમે દેવલોકે, ઉત્કૃષ્ટદશસાગરોપમસ્થિતિકઃ, પષ્ટઃ=પચ્ચસેનો મુનિઃ ૬ લાન્તકે=તદાચ્ચે પષ્ટે દેવલોકે, ઉત્કૃષ્ટચતુર્દશસાગરોપમસ્થિતિકઃ, સપ્તમઃ=પચ્ચગુલ્મો મુનિઃ ૭ મહાશુક્રે સપ્તમે દેવલોકે, ઉત્કૃષ્ટસપ્તદશસાગરોપમસ્થિતિકઃ, અષ્ટમઃ=નલિનીગુલ્મો મુનિઃ ૮ સહસ્રારેષ્ટમે દેવલોકે, ઉત્કૃષ્ટદશસાગરોપમસ્થિતિકઃ, નવમઃ=આનન્દો મુનિઃ ૯ પ્રાણતે દશમે દેવલોકે ઉત્કૃષ્ટવિંશતિસાગરોપમસ્થિતિકઃ, દશમઃ=નન્દનો મુનિઃ ૧૦ દ્વાદશેષ્ચ્યુતે દેવલોકે,

દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ સાત સાગરોપમ જ્ઞાણેરી સ્થિતિવાલે, (૫) પચ્ચમદ્રમુનિ—બ્રહ્મ નામક પચ્ચમ દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ દસ સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે, (૬) પચ્ચસેન મુનિ—લાન્તક નામક છઠે દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ ચૌદહ સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે, (૭) પચ્ચગુલ્મ મુનિ મહાશુક્ર નામક સાતવેં દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ સતરહ ૧૭ સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે, (૮) નલિનીગુલ્મ મુનિ—સહસ્રાર નામક અષ્ટમ દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ ૧૯ સાગરોપમ સ્થિતિવાલે તથા (૯) આનન્દ મુનિ—પ્રાણત નામક નવમેં દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ ૨૦ સાગરોપમ સ્થિતિવાલે દેવપને ઉત્પન્ન હુણ (૧૦) નન્દન મુનિ—બારહવેં અચ્યુત નામક દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ ૨૨ સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે દેવપને ઉત્પન્ન હુણ ।

(૫) પચ્ચમદ્ર મુનિ—બ્રહ્મ નામે પાંચમા દેવલોકમાં, (૬) પચ્ચસેન મુનિ—લાન્તક નામે છઠ્ઠા દેવલોકમાં, (૭) પચ્ચગુલ્મ મુનિ—મહાશુક્ર નામે સાતમા દેવલોકમાં ગયા. (૮) નલિનીગુલ્મ મુનિ—સહસ્રાર નામના આઠમા દેવલોકમાં જઈ દેવપણે ઉત્પન્ન થયાં. (૯) આનન્દ મુનિ પ્રાણત નામે દેવલોકમાં ગયા. (૧૦) નન્દન મુનિ—બારમા અચ્યુત નામે દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થયા.

તેમની સ્થિતિ નીચે લખ્યા પ્રકારની છે:—

પચ્ચદેવની ઉત્કૃષ્ટ બે સાગરોપમ સ્થિતિ છે. મહાપચ્ચની બે સાગરોપમ ઝાંઝેરી (કાંધકઅધિક) છે. ભદ્રની સાતસાગરોપમ, મુભદ્રની સાત સાગરોપમ ઝાંઝેરી. પચ્ચમદ્રની

૨૩૬

૨ કલ્પાવતંસિકાસુત્ર

ઉત્કૃષ્ટદ્વાવિંશતિસાગરોપમસ્થિતિક્ષ્ણ દેવત્વેનોત્પન્નઃ । સર્વત્ર=સર્વેષુ દેવલોકેષુ
સર્વેષાં દેવતયોપપન્નાનામુત્કૃષ્ટસ્થિતિર્મણિતવ્યા । સર્વે મહાવિદેહે સિદ્ધા
ભવિષ્યન્તિ ।

॥ ઇતિ કલ્પાવતંસિકા નામ દ્વિતીયો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥

ये सब उत्कृष्ट स्थितिवाले देव हैं और महाविदेह क्षेत्रमें सिद्ध होंगे ।

। કલ્પાવતંસિકા નામક દ્વિતીય વર્ગ સમાપ્ત ।

દશ સાગરોપમ. પદ્મસેનની ચૌદ સાગરોપમ. પદ્મગુહમની સત્તર સાગરોપમ. નલિની-
ગુહમની અઠાર સાગરોપમ. આનંદની વીસ સાગરોપમ અને નંદનદેવની બાવીસ
સાગરોપમ સ્થિતિ છે.

એ બધા ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા દેવ છે અને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં સિદ્ધ થશે.

કલ્પાવતંસિકા નામક દ્વિતીય વર્ગ સમાપ્ત.



अथ पुष्पितारूप्यस्तृतीयो वर्गः—

मूलम्—

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं दोच्चस्स वग्गस्स कप्पवडिंसियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं पुप्फियाणं के अट्ठे पणत्ते ? । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं तच्चस्स वग्गस्स पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—

‘१ चंदे २ सूर ३ सुक्के ४ बहुपुत्तिय ५ पुन्न ६ माणभदे य ।

७ दत्ते ८ सिवे ९ वलेया, १० अणाढए चैव बोद्धव्वे ॥ १ ॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

छाया—

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् संप्राप्तेन उपाङ्गानां द्वितीयस्य वर्गस्य कल्पावर्तसिकानामयमर्थः प्रज्ञप्तः, तृतीयस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य उपाङ्गानां पुष्पितानां कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?

एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन उपाङ्गानां तृतीयस्य वर्गस्य पुष्पितानां दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—चन्द्रः (१) सूरः (२) शुक्रः (३) बहुपुत्रिकः (४) पूर्णः (५) मानभद्रश्च (६) दत्तः (७) शिवः (८) वलेपकः (९) अनाहतः (१०) चैव बोद्धव्यः ।

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन पुष्पितानां दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य पुष्पितानां श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नयरे,
 गुणसिलए चेइए, सेणिए राया । तेणं कालेणं २ सामी समोसदे, परिसा
 निग्गया । तेणं कालेणं २ चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिसए विमाने
 सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव
 विहरइ । इमं च णं केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोए-
 माणे २ पासइ, पासित्ता समणं भगवं महावीरं जहा सूरियाभे आभिओणे
 देवे सदावित्ता जाव सुरिंदाभिगमणजोगं करेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ।
 सूसरा घंटा, जाव विउव्वणा, नवरं (जाणविमाणं) जोयणसहस्सवित्थिणं
 अद्धतेवट्ठिजोयणसमूसियं, महिंदज्झओ पणुवीसं जोयणमूसिओ, सेसं
 जहा सूरियाभस्स जाव आगओ नट्टविही तहेव पडिगओ । भंते त्ति भगवं
 जोयमे समणं भगवं महावीरं, पुच्छा, कूडागारसाला, सरीरं अणुपविट्ठा, पुव्वभवो ।

एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम
 नगरं, गुणशिलं चैत्यं, श्रेणिको राजा । तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्वामी
 समवसृतः । परिषत् निर्गता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये चन्द्रो ज्योति-
 ष्केन्द्रः ज्योतीराजः चन्द्रावतंसके विमाने सभायां सुधर्मायां चन्द्रे सिंहासने
 चतसृभिः सामानिकसाहस्रीभिः यावद् विहरति । इमं च खलु केवलकल्पं जम्बू-
 द्वीपं द्वीपं विपुलेन अवधिना आभोगयमानः २ पश्यति, दृष्ट्वा श्रमणं भग-
 वन्तं महावीरं यथा सूर्याभः आभियोग्यान् देवान् शब्दयित्वा यावत् सुरेन्द्रादि-
 गमनयोग्यं कृत्वा तामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयति । सुस्वरा घण्टा यावत् विकुर्वणा
 नवरं (यानविमानं) योजनसहस्रविस्तीर्णम् अर्धत्रिषष्टियोजनसमुच्छ्रितम्,
 महेन्द्रध्वजः पञ्चविंशतियोजनमुच्छ्रितः, शेषं यथा सूर्याभस्य यावदागतो
 नाव्यविधिस्तथैव प्रतिगतः । भदन्त इति भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं
 महावीरं, पृच्छा, कूटागारशाला, शरीरमनुप्रविष्टा, पूर्वभवः ।

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૧ ચપ્રદેવકા પૂર્વમ્

૨૩૯

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ सावत्थी नाम नयरी
होत्या, कोट्ठए चेइए । तत्थणं सावत्थीए नयरीए अंगई नामं गाहावई होत्या,
अट्ठे जाव अपरिभूए । तएणं से अंगई गाहावई सावत्थीए नयरीए बहूणं
नयरनिगमं जहा आणंदो ॥ १ ॥

एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'श्रावस्तिः' नाम
नगरी अभवत्, कोष्ठकं चैत्यम् । तत्र खलु श्रावस्त्यां नगर्याम् अङ्गतिर्नाम
गाथापतिरभवत् आढ्यो यावदपरिभूतः । ततः खलु सः अङ्गतिर्गाथापतिः
श्रावस्त्यां नगर्यां बहूनां नगरनिगमं यथा आनन्दः ॥ १ ॥

टीका—

‘જઈણં મંતે’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ज्योति-

। अथ पुष्पिता नामक तृतीय वर्ग ।

‘જઈણં મંતે’ इत्यादि—

जम्बू स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! मोक्षको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने कल्पावतंसिका नामक
द्वितीय वर्ग स्वरूप उपाङ्गमें पूर्वोक्त भावोंका निरूपण किया है उसके बाद तृतीय

अथ पुष्पिता नामक तृतीय वर्ग

‘જઈણં મંતે’ इत्यादि.

જમ્બૂ સ્વામી પુછે છે:—

હે ભદન્ત ! મોક્ષ ગયેલ એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતંસિકા
નામે દ્વિતીય વર્ગ સ્વરૂપ ઉપાંગમાં પૂર્વોક્ત ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે. ત્યાર પછી

૨૪૦

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

ષ્કેન્દ્રઃ=જ્યોતિર્દેવાધિપતિઃ, જ્યોતીરાજઃ ચન્દ્રે સિંહાસને ચતસ્રભિઃ સામાનિક-
સાહસ્રીભિઃ યાવત્ વિહરતિ=અવતિષ્ઠતે । ઇમં=પ્રત્યક્ષં સ્વલ્પ કેવલકલ્પં=સમ્પૂર્ણ
જમ્બૂદ્વીપમ્=પ્રત્યક્ષામકં દ્વીપં=મધ્યજમ્બૂદ્વીપં વિપુલેન=વિશાલેન અવધિના=
અવધિજ્ઞાનેન આભોગયમાનઃ=અવલોકયન્ શ્રમણં ભગવન્તં મહાવીરં પश्यति,
દૃષ્ટ્વા યથા સૂર્યાભઃ આભિયોગ્યાન્=અભિ=મનોઽનુકૂલં યુજ્યન્તે=પ્રેષ્યકાર્યે
વ્યાપાર્યન્તે इत्याभियोग्यास्तान् देवान् शब्दयित्वा=આહૂય યાવત્ સુરેન્દ્રાદિ

વર્ગ સ્વરૂપ પુષ્પિતા નામક ઉપાજ્ઞમેં ભગવાને કૌનસે ભાવ નિરૂપણ કિયે હૈં ?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈં—

હે જમ્બૂ ! મોક્ષકો પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને તૃતીય વર્ગ સ્વરૂપ
પુષ્પિતા નામક ઉપાજ્ઞકે દસ અધ્યયન નિરૂપણ કિયે હૈં । વે ઇસ પ્રકાર હૈં—(૧)
ચન્દ્ર (૨) સૂર (૩) શુક્ર (૪) બહુપુત્રિક (૫) પૂર્ણ (૬) માનભદ્ર
(૭) દત્ત (૮) શિવ (૯) વલેપક ઓર (૧૦) અનાદત્ત યે દસ
અધ્યયન હૈં ।

જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં—

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને પુષ્પિતા નામક ઉપાજ્ઞમેં દસ અધ્ય-

તૃતીય વર્ગ સ્વરૂપ પુષ્પિતા નામના ઉપાંગમાં ભગવાને કયા કયા ભાવ નિરૂપણ
કર્યા છે ?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે:—

હે જમ્બૂ ! મોક્ષપ્રાપ્ત એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે તૃતીય વર્ગ સ્વરૂપ
પુષ્પિતા નામે ઉપાંગના દશ અધ્યયન નિરૂપણ કર્યા છે. તે આ પ્રકારે છે:—
(૧) ચન્દ્ર (૨) સૂર (૩) શુક્ર (૪) બહુપુત્રિક (૫) પૂર્ણ (૬) માનભદ્ર (૭) દત્ત
(૮) શિવ (૯) વલેપક અને (૧૦) અનાદત્ત એ દશ અધ્યયન છે.

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે:—

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતા નામે ઉપાંગમાં દશ

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. १ चन्द्रदेवका वर्णन

२४१

यनोंका जो निरूपण किया है उन अध्ययनोंमें प्रथम अध्ययनके भावको भगवानने किस प्रकार वर्णन किया है।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें राजगृह नामका नगर था। उसमें गुणशिलक नामका चैत्य था। उस नगरका राजा श्रेणिक था। उस काल उस समयमें भगवान महावीर प्रभु वहां पधारे। जनसमुदायरूप परिषद धर्मकथा सुननेके लिए निकली। उस काल उस समयमें ज्योतिष्कोके इन्द्र, ज्योतिषियोंके राजा चन्द्र, चन्द्रावतंसक विमानके अन्दर सुधर्मा सभामें चन्द्र सिंहासनपर बैठे हुए चार हजार सामानिकोंके साथ यावत् विराजे हुए हैं।

ज्योतिषियोंके इन्द्र चन्द्रमाने इस जम्बूद्वीप नामक सम्पूर्ण मध्य जम्बू द्वीपको विशाल अवधिज्ञानसे अवलोकन करते हुए भगवान महावीरको मध्य जम्बू द्वीपमें देखा और उनका दर्शन करनेके लिए जानेकी इच्छा की, और उन्होंने

અધ્યયનોનાં જે નિરૂપણ કર્યું છે તે અધ્યયનોમાં પ્રથમ અધ્યયનના ભાવનું તેમણે કયા પ્રકારે વર્ણન કર્યું છે ?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે:—

હે જમ્બૂ ! તે કાલે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તેમાં ગુણશિલક નામે ચૈત્ય હતું. તે નગરનો રાજા શ્રેણિક હતો. તે કાલે તે સમયે ભગવાન મહાવીર પ્રભુ ત્યાં પધાર્યા. જનસમુદાયરૂપ પરિષદ્ ધર્મકથા સાંભળવા નીકળી. તે કાળે તે સમયે જ્યોતિષકોના ઇન્દ્ર, જ્યોતિષિઓના રાજા ચન્દ્ર, ચન્દ્રાવતંસક વિમાનની અંદર સુધર્મા સભામાં ચન્દ્રસિંહાસન પર બેઠેલા ચાર હજાર સામાનિકોની સાથે બિરાજેલા છે.

તે જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર ચન્દ્રમાએ આ જમ્બૂદ્વીપ નામના સંપૂર્ણ મધ્ય જમ્બૂદ્વીપનું વિશાળ અવધિજ્ઞાનથી અવલોકન કરતાં થકાં ભગવાન મહાવીરને મધ્ય જમ્બૂદ્વીપમાં જોયા અને તેમના દર્શન કરવા માટે જવાની ઇચ્છા કરી.

૨૪૨

૩ પુણ્નિતાસુત્ર

ગમનયોગ્યં કૃત્વા તામાઙ્ગતિકાં પ્રત્યર્પયન્તિ । સુસ્વરા ઘન્ટા યાવત્ વિકુર્વણા
નવરં (યાનવિમાનં) યોજનસહસ્રવિસ્તીર્ણં અર્ધત્રિષષ્ઠિયોજનસમુચ્છિતમ્ ,

સૂર્યાભ દેવકે સમાન હી આભિયોગ્ય (મૃત્ય) દેવોંકો બુલાયે ઓર ઉનસે કહા—
હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ મધ્ય જમ્બૂદ્વીપમેં ભગવાનકે સમીપ જાઓ ઓર વહાં જાકર
સંવર્તક વાત આદિકી વિકુર્વણા કરકે કૂડા કચડા આદિ સાફ કર સુગન્ધ દ્રવ્યોસે
સુગંધિત કર યાવત્ યોજન પરિમિત ભૂમણ્ડલકો સુરેન્દ્ર આદિ દેવોંકે જાને આને
બૈઠને આદિકે યોગ્ય બનાકર સ્વર દો । વે આભિયોગ્ય દેવ ઉપરોક્ત આજ્ઞાનુસાર
ભૂમણ્ડલ તૈયાર કર સ્વર દેતે હૈં । ફિર ચન્દ્રદેવને પદાતિસેનાનાયક દેવકો કહા
કિ—જાઓ ઓર સુસ્વરા નામકી ઘન્ટાકો બજાકર સબ દેવી દેવોંકો ભગવાનકે પાસ
વન્દનાર્થ ચલનેકે લિયે સૂચિત કરો । ફિર ઉસ દેવને વૈસે હી કિયા ।

સૂર્યાભકે વર્ણનસે વિશેષ કેવલ ઇતના હી હૈ કિ ઇસકા યાનવિમાન ઇક
હજાર યોજન વિસ્તીર્ણ થા ઓર સાઢે તીરસઠ યોજન ઊંચા થા ।

અને ત્યારે તેમણે સૂર્યાભદેવની પેઠેજ આભિયોગ્ય (ભૂત્ય) દેવોને બોલાવીને
કહ્યું—હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે મધ્ય જમ્બૂદ્વીપમાં ભગવાનની પાસે જાઓ અને ત્યાં
જ્યાં સંવર્તક પવન આદિની વિકુર્વણા કરી કચરો પુણે વગેરે સાફ કરી સુગન્ધ
દ્રવ્યોથી સુગંધિત કરી યાવત્ યોજનના વિસ્તારમાં ભૂમંડલને સુરેન્દ્ર આદિ દેવોને
આવવા જવા બેસવા આદિ માટે યોગ્ય બનાવીને ખખર આપો. તે આભિયોગ્ય
દેવ ઉપરોક્ત આજ્ઞા અનુસાર મંડલ તૈયાર કરી ખખર દે છે. પછી ચન્દ્રદેવે
પદાતિસેનાના નાયક દેવને કહ્યું કે—જાઓ અને સુસ્વરા નામની ઘંટા બજાવીને
સર્વ દેવ દેવીઓને ભગવાનની પાસે વંદના માટે ચાલવા સાડૂ સૂચના કરો. પછી
તે દેવે તે પ્રમાણે જ કયું.

સૂર્યાભના વર્ણનથી વિશેષ કેવળ એટલું જ છે કે આનો યાનવિમાન
એક હજાર યોજન વિસ્તારવાળું હતું અને સાડા ત્રેસઠ યોજન ઊંચું હતું

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. १ चन्द्रदेवका वर्णन

२४३

महेन्द्रध्वजः पञ्चविंशतियोजनमुच्छ्रितः, शेषं यथा-सूर्याभदेवस्य भगवदन्तिके समागमनमभूत् तद्वत् यावत्-चन्द्रोऽप्यागतः, नाट्यविधिस्तथैव प्रतिगतः । तदनु भदन्त ! इति संबोध्य भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं प्रति 'हे भदन्त !' इति प्राहेत्यादिना गौतमस्य पृच्छा । कूटाकारशाला=कूटस्येव-पर्वतशिखरस्येव आकारो यस्याः शालायाः सा कूटाकारशाला, एतद्दृष्टान्तेन सा दिव्या देवर्द्धिः शरीरं=देवशरीरम् अनुप्रविष्टा=अन्तर्हिता । यथा कस्मिंश्चि-

तथा महेन्द्र ध्वज पञ्चीस योजन ऊँचा था, और इसके अतिरिक्त सभी वर्णन सूर्याभके समान समझना चाहिये । जिस प्रकार सूर्याभ देव भगवानके समीप आये, नाट्यविधि की और वापस लौट गये, वैसे ही चन्द्र देवके विषयमें जानना चाहिये । उनके चले जानेके बाद गौतम स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! यह चन्द्रदेव अपनी देवशक्ति देवप्रभावसे सभी देवताओंके द्वारा नाट्य दिखाकर फिर सबको अन्तर्हित कर केवल अकेला ही रह गया यह बड़े आश्चर्यकी बात है ।

तथा महेन्द्र ध्वज पञ्चीस योजन उँचा હતો. અને તે સિવાય અધુ વર્ણન સૂર્યાભના જેવું જ સમજવું જોઇએ.

જે પ્રકારે સૂર્યાભ દેવ ભગવાનની પાસે આવ્યા, નાટ્યવિધિ કરી તથા પાછા ગયા એવી જ રીતે ચન્દ્રદેવના વિષયમાં જાણવું જોઇએ

તેમના આવ્યા ગયા પછી ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે :—

હે ભદન્ત ! આ ચન્દ્રદેવ પોતાની દેવશક્તિના પ્રભાવથી સર્વે દેવતાઓ દ્વારા નાટક દેખાડીને પછી અધાને અન્તર્હિત કરી કેવળ એકલા જ રહી ગયા આ મોટા આશ્ચર્યની વાત છે !

દુત્સવે જનસમુદાયવાસયોગ્યાં શાલાં ઘૃષ્ટ્યાદિભયમીતો વિશાલો જનસમૂહોઽનુ-
પ્રવિશતિ તથૈવ વૈક્રિયક્રિયયા ચન્દ્રદેવેન વિરચિતો દેવગણો નાટ્યકાર્યં દર્શ-
યિત્વા સ્વકીયં ચન્દ્રદેવશરીરમેવાનુપવિષ્ટઃ । હે ભદન્ત ! પૂર્વભવઃ=ચન્દ્રસ્ય
પ્રાક્તનં જન્મ કોદશમ્ આસીત્ ? , ઇતિ ગૌતમપૃચ્છાં શ્રુત્વા ભગવાનાહ-
હે ગૌતમ ! એવં=વક્ષ્યમાણરીત્યા સ્વલુ=નિશ્ચયેન તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે
'શ્રાવસ્તી' નામ નગર્યંભવત્ , કોષ્ઠકં ચૈત્યમ્ । તત્ર સ્વલુ શ્રાવસ્ત્યાં નગર્યામ્
અઙ્ગતિર્નામ ગાથાપતિરભવત્-આલ્યો=મહાન , ઋદ્ધ્યાદિપૂર્ણો વા 'જાવ'

ભગવાને કહા-હે ગૌતમ ! જૈસે કિસી ઉત્સવમેં ફેલા હુવા જનસમૂહ
વૃષ્ટિ આદિ કે ભયસે કિસી એક વિશાલ ઘરમેં પ્રવેશ કરતા હૈં उसी प्रकार
चन्द्रदेव अपनी वैक्रिय शक्तिसे देवताओंकी रचना कर नाटक दिखा उनको समेट कर
अपने ही देवशरीरमें प्रविष्ट कर लिया ।

ફિર ગૌતમ સ્વામીને પૂછા-હે ભદન્ત ! ચન્દ્રદેવ પૂર્વજન્મમેં કૌન થે ?

ગૌતમકા એસા પ્રશ્ન સુનકર ભગવાને કહા-હે ગૌતમ ! उस काल उस
समयमें श्रावस्ती नामकी नगरी थी । उस नगरीमें कोष्ठक नामक चैत्य था । उस
श्रावस्ती नगरीमें अङ्गति नामक एक गाथापति था । वह गाथापति बहुत बड़ी ऋद्धि

ભગવાને કહ્યું-હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ ઉત્સવમાં વિખરેલો જનસમૂહ
વરસાદ આદિના ભયથી કોઈ એક વિશાલ ઘરમાં પ્રવેશ કરે છે તેવી જ રીતે
ચન્દ્રદેવ પોતાની વૈક્રિય શક્તિથી દેવતાઓની રચના કરી નાટક દેખાડી તેઓને
સકેલી લઈ પોતાના દેવશરીરમાં પ્રવેશ કરી લીધા.

ફરી ગૌતમ સ્વામીએ પુછ્યું-હે ભદન્ત ! ચન્દ્રદેવ પૂર્વ જન્મમાં કોણ
હતા ?

ગૌતમને એવો પ્રશ્ન સાંભળી ભગવાને કહ્યું-હે ગૌતમ ! તે કાલે તે સમયે
શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી. તે નગરીમાં કોષ્ઠક નામે ચૈત્ય હતું. તે
શ્રાવસ્તી નગરીમાં અંગતિ નામે એક ગાથાપતિ હતો તે ગાથાપતિ બહુ મોટી

यावत्-‘अट्टे’ आढ्यः, इत्यारभ्य ‘अपरिभूए’-अपरिभूतः, इत्येतत्पर्यन्तोक्तसमस्त-
विशेषणविशिष्ट इत्यर्थस्तेन-‘दित्ते, वित्थिन्न-विउल-भवन-सयणा-SSसण-
जाण-वाहणाइण्णे, बहुधन-बहुजायरूव-रयए, आओग-पओग-संपउत्ते,
विच्छड्डियविउलभत्तपाणे, बहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलयप्पभूए, बहुजणस्स’
इत्येषां समन्वयः कर्तव्यः । एतच्छाया च-‘दीप्तो विस्तीर्ण-विपुल-भवन-
शयना-सन-यान-वाहनाSSकीर्णो बहुधन-बहुजातरूप-रजत आयोगप्रयोग-
संपयुक्तो विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानो बहुदासी-दास-गो-महिष-गवेलकप्रभूतो बहु-
जनस्य’ इति ।

तत्र दीप्तः=कीर्त्या उज्ज्वलः, विस्तीर्णानि=विस्वृतानि विपुलानि=
बहूनि, भवनानि=गेहानि, शयनानि=तल्पानि, आसनानि=पीठकादीनि,
यानानि=गाडीप्रभृतीनि, वाहनानि=अश्वादीनि, तैराकीर्णः=व्याप्तः समुपेतो वा ।
बहु=विपुलं धनं=मणिप्रभृति यस्य स बहुधनः, स चासौ, बहु=विपुलं जातरूपं=
सुवर्णं, रजतं=रूप्यं यस्य स बहुजातरूपरजतश्च । आ=समन्ताद् योजनं=द्विगुणा-

आदिसे युक्त था । कीर्तिसे उज्ज्वल था । उसके पास बहुतसे घर, शय्या, आसन,
गाडी, घोडे आदि थे । और वह बहुतसा धन तथा बहुत सोना चाँदी आदिका
लेन देन करता था । उसके घरमें खाने पीनेके बाद बहुतसा अन्न पान आदि
खाने पीनेका सामान रहता था जो अनाथ-गरीब मनुष्योंको व पशु पक्षियोंको दिया

समृद्धिवाणो હતો. કીર્તિથી ઉજ્જવળ હતો. તેની ખાસે ઘણાં ઘર, શય્યા, આસન
ગાડી, ઘોડા આદિ હતાં. અને તે બહુ ધન, તથા બહુ સોના ચાંદી આદિનું લેણ
દેણ કરતો હતો. તેના ઘરમાં ખાવા પીવા પછી પણ ઘણું અન્ન પાન અને ઘણો
ખાવા પીવાનો સામાન રહેતો હતો, જે અનાથ-ગરીબ મનુષ્યો તથા પશુ પક્ષીઓને

दिलाभार्थं रूप्यादीनामधमर्णादिभ्यो नियोजनमायोगस्तस्य, प्र=प्रकर्षेण
 बोजनम्=उपायचिन्तनं प्रयोगः, यद्वा-आयोगेन द्विगुणादिलिप्सया प्रयोगः=
 अधमर्णानां सविधे द्रव्यस्य वितरणमायोगप्रयोगः, स संप्रयुक्तः=प्रवर्तितो येन,
 तस्मिन् वा संप्रयुक्तः=संलग्नो यः स आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तः=नीत्या द्रव्योपा-
 र्जनप्रवृत्त इत्यर्थः । भक्तं च पानं च भक्तपाने, विपुले च ते भक्तपाने
 विपुलभक्तपाने, वि=विशेषेण छर्दिते=भोजनावशिष्टे भक्तपाने यस्य स
 विच्छर्दितविपुलभक्तपानः, दीनेभ्यो दीयमानविपुलभक्तपान इत्यर्थः ।
 दास्यश्च दासाश्च गावश्च महिषाश्च गवेलकाः=उरभ्राश्चेति दासीदासगोम-
 हिषगवेलकाः, बहवश्च ते दासीदासगोमहिषगवेलका इति बहुदासीदासगोम-
 हिषगवेलकास्ते प्रभूताः=प्रचुरा यस्य स बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतः,
 अत्र गवादिपदं स्त्रीगवादीनामप्युपलक्षकं, यद्वा-गोपदस्य=स्त्रीपुंगवयोरविशेषेण
 वाचकत्वादविरोध एव, महिष-गवेलक-शब्दयोश्च 'पुमान् स्त्रिया' इत्येक-
 शेषान्महिष्यादीनामपि ग्रहणम् । बहुजनस्येति जातिविवक्षयैकवचनं, संबन्ध-
 सामान्ये च षष्ठी, 'तेन 'बहुजनै'-रित्यर्थो बोद्धव्यः, अत्र 'अपी'
 त्यस्याध्याहाराद्बहुजनैरपीति तत्त्वम्, अपरिभूतः=तत्पराभवरहितः, यद्वा-क्त
 प्रत्ययार्थस्याऽविवक्षितत्वादपरिभवनीयः-बहुजनैरपि पराभवितुमशक्य इत्यर्थः ।

जाता था । उसके यहाँ दास दासियाँ बहुतसी थीं और बहुतसे गाय, भैंस, भेड़ें
 थीं । तथा वह अपरिभूत-प्रभावशाली था, यानी उसका कोई पराभव नहीं कर
 सकता था ।

अपी देवातो હતો. તેને ત્યાં દાસ દાસીઓ ઘણાં હતાં. તથા ગાય ભેંસ ભેડાં
 ઘણાં બહુ હતાં. વળી તે અપરિભૂત-પ્રભાવશાળી હતો અર્થાત્ તેનો કોઈ પરાભવ
 કરી શકતો નહોતો.

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૧ અઙ્ગતિ ગાથાપતિ

૨૪૭

પૃથક્તવિશેષણેષુ “ અદ્ધે, દિત્તે, અપરિભૂપ ” એમિત્થિભિર્વિશેષણૈરઙ્ગતિગાથા-
પતૌ પ્રદીપદૃષ્ટાન્તોઽભિપ્રેતસ્તથાહિ-યથા પ્રદીપસ્તૈલવર્તિભ્યાં શિખયા ચ
સંપન્નો નિર્વાતે સ્થાને સુરક્ષિતઃ પ્રકાશમાસાદયતિ, એવમયમપિ તૈલવર્તિ-
સ્થાનીયયા આઢ્યતાઽપરપર્યાયદ્વર્ચા શિખાસ્થાનીયયોદારતા-ગંભીરતાદિ-
રૂપયા દીપ્તયા ચ સંપન્નો નિર્વાતસ્થાનસ્થાનીયયા સદાચારમર્યાદા-
પાલનાદિરૂપયાઽપરિભૂતતયા ચ સંપન્નઃ સમુજ્જ્વલતિ-જગત્પ્રસિદ્ધો
ભવતીતિ હેતુતાઽવચ્છેદકધર્મસ્યાઽઙ્ગતિ-દોષ્ટ્યપરિભૂતતૈત્ત્રિતયસમુદાયનિષ્ઠ-
સ્યૈકધર્મસ્ય સત્ત્વાન્ન તૃણારણિમણિ-ન્યાયેન પ્રત્યક્ષાનુમાનાઽઙ્ગમશબ્દેષુ

‘ આઢ્ય, દીપ્ત, ઓર અપરિભૂત ’ ઇન ત્રીન વિશેષણોસે અંગતિ ગાથાપતિકે લિયે
દીપકકા દૃષ્ટાન્ત દિયા જાતા હૈ, વહ ઇસ પ્રકાર હૈ-જૈસે દીપક, તેલ, બત્તી ઓર શિખા
(લૌ) સે યુક્ત હોકર વાયુરહિત સ્થાનમેં સુરક્ષિત રહકર પ્રકાશિત હોતા હૈ, વૈસે
હી અંગતિ ગાથાપતિ મી તેલ ઓર બત્તીકે સમાન આઢ્યતા અર્થાત્ ઋદ્ધિસે, શિખાકી
જગહ ઉદારતા ગંભીરતા આદિસે ઓર દીપ્તિસે યુક્ત હોકર, વાયુ રહિત સ્થાનકે
સમાન મર્યાદાકા પાલન આદિ રૂપ સદાચારસે તથા પરાભવરહિતપનસે સંયુક્ત
હોકર તેજસ્વિતા ધારણ કરતા થા । અતઃ આઢ્યતા દીપ્તિ ઓર અપરિભૂતતા, ઇન
ત્રીનોમેં રહનેવાલા હેતુતાઽવચ્છેદક ધર્મ એક હી હૈ, ઇસ કારણ તૃણારણિમણિ-ન્યાયસે

‘ આઢ્ય, દીપ્ત અને અપરિભૂત ’ એ ત્રણ વિશેષણોથી અંગતિ ગાથાપતિને માટે
દીપકનું દૃષ્ટાન્ત કહે છે; તે આ પ્રમાણે:—જેમ દીપક, તેલ, દીવેટ અને શિખા (આળ)
થી યુક્ત થઈને વાયુરહિત સ્થાનમાં સુરક્ષિત રહી પ્રકાશિત થાય છે, તેમ અંગતિ ગાથા-
પતિ પણ, તેલ અને દીવેટની પેઠે આઢ્યતા અર્થાત્ ઋદ્ધિથી, શિખાની જગ્યાએ ઉદાર-
તા ગંભીરતા આદિથી અને દીપ્તિથી યુક્ત થઈને વાયુરહિત સ્થાનની સમાન મર્યાદાના
પાલન આદિ રૂપ સદાચારથી તથા પરાભવરહિત પણાથી સંયુક્ત થઈને તેજસ્વિતા
ધારણ કરતો હોતો. એ રીતે આઢ્યતા દીપ્તિ અને અપરિભૂતતા, એ ત્રણમાં રહેલા
હેતુતાવચ્છેદક ધર્મ એક છે, તે કારણથી તૃણારણિમણિ ન્યાયે પ્રત્યક્ષ, અનુમાન અને

प्रत्येकं प्रमाजनकत्वमिव प्रत्येकमाढ्यतादीनां त्रयाणां समुज्ज्वलनहेतुता, किन्तु प्रकाशं प्रति तैलवर्त्यादिसमुदायवत् समुज्ज्वलनं प्रति आढ्यतादि-समुदायस्यैव हेतुतेति बोध्यम् ।

ततः खलु सोऽङ्गतिर्गाथापतिः श्रावस्त्यां नगर्यां यथा वाणिज्यग्रामे आनन्दो नाम गाथापतिः परिवसति तथैवायमपीत्यर्थः ।

तदेव स्पष्टयति—“नगर-निगम-राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इन्म-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य कुडुंबेसु य गुज्जेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारे सु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी पमाणं आहारे, आलंघणं, चक्खु, मेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था” एतच्छाया-नगर निगम-राजे-श्वर-तलवर-माण्डविक-कौटुम्बिकेभ्यः श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाहानां

प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम शब्दोंमें प्रमाणताके समान प्रत्येक (सिर्फ आढ्यता, सिर्फ दीप्ति, या सिर्फ अपरिभूतता) को हेतु नहीं मानना चाहिए ।

जिस प्रकार आनन्द गाथापति धन धान्य आदिसे युक्त वाणिज्य ग्राममें निवास करता था । उसी प्रकार अङ्गति गाथापति भी श्रावस्ती नगरीमें निवास करता था ।

आगम शब्दोंमें प्रमाणतानी पेठे प्रत्येकने (मात्र आढ्यता, मात्र दीप्ति, अथवा मात्र अपरिभूतता—ये एक एकने) हेतु मानवे। नहि.

ये प्रकारे आनन्द गाथापति धनधान्य आदिथी युक्त वाणिज्य ग्राममें निवास करता होता तेवींरीते अङ्गति गाथापति पशु श्रावस्ती नगरीमें निवास करता होता.

इश्वरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. १ अङ्गति गाथापति

२४९

बहुषु कार्येषु च कारणेषु च मन्त्रेषु च कुटुम्बेषु च गुह्येषु च रहस्येषु च निश्चयेषु च व्यवहारेषु च आपृच्छनीयः प्रतिपृच्छनीयः, स्वस्यापि च खलु कुटुम्बस्य मेधिः, प्रमाणम्, आधारः, आलम्बनं, चक्षुः, मेधिभूतः, यावत् सर्वकार्यवर्द्धकः चापि अभवत् । तत्र-नगरम्=

“पुण्यपापक्रियाविज्ञैः—र्दयादानप्रवर्तकैः ।

कलाकलापकुशलैः, सर्ववर्णैः समाकुलम् ॥

भाषामिर्विविधाभिश्च, युक्तं नगरमुच्यते ।”

निगमो=व्यापारप्रधानस्थानम्, ईश्वराः=ऐश्वर्यसम्पन्नाः, तलवराः=

वह अङ्गति गाथापति राजा ईश्वर यावत् सार्थवाहोके द्वारा बहुतसे कार्योंमें, कारणों (उपायों) में, मन्त्र (सलाह) में, कुटुम्बोंमें, गुह्योंमें, रहस्योंमें, निश्चयोंमें और व्यवहारोंमें एक वार पूछा जाता था, और वार २ पूछा जाता था । और वह अपने कुटुम्बका भी मेधि, प्रमाण, आधार आलम्बन चक्षु, मेधिभूत यावत् समस्त कार्योंको बढ़ाने वाला था । यहाँ यावत् शब्दसे राजा, ईश्वर, तलवर, माण्डविक, कौटुम्बिक, इन्ध, श्रेष्ठी सेनापति और सार्थवाहका ग्रहण होता है । माण्डलिक नरेशको राजा, और ऐश्वर्य वालोंको ईश्वर कहते हैं । राजा संतुष्ट होकर जिन्हें पट्टबन्ध देता है,

ये अङ्गति गाथापतिने, राजा, धधिर यावत् सार्थवाहो तरङ्गिणी अणुं कार्योभां, कारणो (उपायो) भां, मन्त्र (सलाह) भां, कुटुम्बोभां, गुह्योभां, रहस्योभां, निश्चयोभां अने व्यवहारोभां एक वार पूछनाभां आवतुं हतुं, वारंवार पण्य पूछनाभां आवतुं हतुं अने ते पोताना कुटुम्बोभां पण्य मेधि, प्रमाण, आधार, आलम्बन, चक्षु, मेधिभूत, यावत् जथां कार्योने आगण वधारनारो हतो।

अहाँ ' जाव ' शब्दशी राजा, धधिर, तलवर, माण्डविक अथवा माण्डलिक, कौटुम्बिक, इन्ध, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्थवाह, ऐटवा शब्दोनुं ग्रहण थाय छे. माण्डलिक नरेशने राजा अने ऐश्वर्यवालाओने धधिर कहे छे. राजा संतुष्ट

સન્તુષ્ટભૂપાલદત્તપટ્ટબન્ધપરિભૂષિતરાજકલ્પાઃ માણ્ડવિકાઃ=છિન્નમિન્ન-
જનાશ્રયવિશેષો મણ્ડવસ્ત્રાધિકૃતાઃ, 'માડમ્બિકાઃ' ઇતિ છાયાપક્ષે તુ
ગ્રામપશ્ચશતીપતય इत्यर्थः, यद्वा-सार्धक्रोशद्वयपरिमितप्रान्तरैर्विच्छिद्य
विच्छिद्य स्थितानां ग्रामाणामधिपतयः, कौटुम्बिकाः=बहुकुटुम्बप्रतिपालकाः,
इभ्याः=इभो=हस्ती तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हन्तीति, तथा ते च-जघन्य-मध्यमो-त्कृष्ट-
भेदात् त्रिप्रकाराः तत्र हस्तिपरिमितमणि-मुक्ता-प्रवाल-सुवर्ण-रजतादिद्रव्य-
राशिस्वामिनो जघन्याः, हस्तिपरिमितवज्र-मणि-माणिक्य-राशिस्वामिनो

વે રાજાકે સમાન પટ્ટબન્ધસે વિભૂષિત લોગ તલવર કહલાતે હૈં । જો વસ્તી છિન્ન
મિન્ન હો ઉસે મણ્ડવ ઓર ઉસકે અધિકારીકો માણ્ડવિક કહતે હૈં । 'માડંબિય'
કી છાયા યદિ 'માડમ્બિક' કી જાય તો માડમ્બિકકા અર્થ 'પાંચ સૌ ગાંવોંકા સ્વામી'
હોતા હૈ । અથવા ઢાઈ ઢાઈ કોસકી દૂરીપર જો અલગ અલગ ગાંવ વસે હોં,
उनके स्वामीको ' माडम्बिक ' कहते हैं । जो कुटुम्बका पालन पोषण करते हैं, या
जिनके द्वारा बहुतसे कुटुम्बोंका पालन होता है, उन्हें ' कौटुम्बिक ' कहते हैं ।
इभका अर्थ है हाथी, और हाथीके बराबर द्रव्य जिसके पास हो उसे ' इभ्य कहते
हैं । जघन्य मध्यम और उत्कृष्टके भेदसे इभ्य तीन प्रकारके हैं । जो हाथीके
बराबर मणि, मुक्ता, प्रवाल (मूँगा) सोना, चाँदी आदि द्रव्य-राशिके स्वामी हों

થધને જેને પટ્ટબન્ધ આપે છે તે રાજાઓના જેવા પટ્ટબન્ધથી વિભૂષિત લોકો તલ-
વર કહેવાય છે. જેની વસતી છિન્ન ભિન્ન હોય તેને માંડવ અને તેના અધિકારીને
માંડવિક કહે છે. 'માડંબિય' ની છાયા જે 'માડમ્બિક' કરવામાં આવે તો
'માડમ્બિક' નો 'પાંચસો ગામોનો ધણી' એવો અર્થ થાય છે. અથવા અઢી
અઢી ગાઉને અંતરે ૨ જૂઠાં જુઠાં ગામો વચ્ચે હોય તેના ધણીને માડમ્બિક કહે
છે. જે કુટુમ્બનું પાલન-પોષણ કરે છે અથવા જેની દ્વારા ધણું કુટુમ્બનું પાલન
થાય છે, તેને કૌટુમ્બિક કહે છે. 'ઇમ' નો અર્થ 'હાથી' છે, અને હાથીના
જેટલું દ્રવ્ય જેની પાસે હોય, તેને 'ઇમ્ય' કહે છે. જઘન્ય, મધ્યમ અને ઉત્કૃષ્ટના
ભેદ કરીને ઇમ્ય ત્રણ પ્રકારના છે. હાથીની ગરાબર મણિ, મોતી, પરવાળાં, સોનું

મધ્યમાઃ, હસ્તિપરિમિતકેવલવજ્રરાશિસ્વામિન ઉત્કૃષ્ટાઃ, શ્રેષ્ઠિનો=લક્ષ્મીકૃપા-
કટાક્ષપત્યક્ષલક્ષ્યમાણ—દ્રવિજલક્ષલક્ષણવિલક્ષણહિરણ્યપટ્ટસમલક્ષ્મૃતમૂર્ધાનો નગર-
પ્રધાનવ્યવહર્તારઃ, સેનાપતયઃ=ચતુરંગસેનાનાયકાઃ, સાર્થવાહાઃ=ગણિમ-
ધરિમ—મેય—પરિચ્છેદ—રૂપ—ક્રેયવિક્રેયવસ્તુજાતમાદાય લાભેચ્છયા દેશાન્ત-
રાણિ વ્રજતાં સાર્થં વાહ્યન્તિ=યોગક્ષેમાભ્યાં પરિપાલયન્તિ, દીનજનોપકારાય

વે જઘન્ય ઇમ્ય હૈં । જો હાથોકે બરાબર હીરા ઓર માણિક્કી રાશિકે સ્વામી હૈં
વે મધ્યમ ઇમ્ય હૈં । જો હાથીકે બરાબર કેવલ હીરોંકી રાશિકે સ્વામી હૈં વે ઉત્કૃષ્ટ
ઇમ્ય હૈં । લક્ષ્મીકી જિસપર પૂરી ૨ કૃપા હો ઓર ઉસ કૃપાકોરકે કારણ જિનકે
લાલોંકે સ્વજાને હો, તથા જિનકે સિરપર ઉન્હીંકો સૂચિત કરને વાલા ચાન્દીકા
વિલક્ષણ પટ્ટ શોભાયમાન હો રહા હો, જો નગરકે પ્રધાન વ્યાપારી હો, ઉન્હેં શ્રેષ્ઠી
કહતે હૈં । ચતુરંગ સેનાકે સ્વામીકો સેનાપતિ કહતે હૈં । જો ગણિમ, ધરિમ, મેય
ઓર પરિચ્છેદ રૂપ સ્ત્રીદને—વેચનેકે યોગ્ય વસ્તુઓંકો લેકર નફાકે લિયે દેશાન્તર
જાને વાલેકો સાથ લે જાતે હૈં, યોગ (નવી વસ્તુકી પ્રાપ્તિ) ઓર ક્ષેમ (પ્રાપ્ત
વસ્તુકી રક્ષા) કે દ્વારા ઉનકા પાલન કરતે હૈં, ગરીબોંકી મલાઈકે લિયે ઉન્હેં પૂંજી

ચાંદી આદિ દ્રવ્યના ઢગલાના જે સ્વામી હોય તેઓ જઘન્ય ઇમ્ય છે. હાથીની
ખરાબર હીરા અને માણિકના ઢગલાના જે સ્વામી હોય તેઓ મધ્યમ ઇમ્ય છે.
હાથીની ખરાબર કેવળ હીરાના ઢગલાના જે સ્વામી હોય તેઓ ઉત્કૃષ્ટ ઇમ્ય છે.
જેમની ઉપર લક્ષ્મીની પૂરેપૂરી કૃપા હોય અને એ કૃપાને કારણે જેમની પાસે
લાખોના ખજાના હોય તથા જેમને માથે તેમનું સૂચન કરનારો ચાંદીનો વિલક્ષણ
પટ્ટ શોભાયમાન થઈ રહ્યો હોય, જે નગરના મુખ્ય વ્યાપારી હોય, તેને ‘શ્રેષ્ઠી’
કહે છે. ચતુરંગ સેનાના સ્વામીને ‘સેનાપતિ’ કહે છે. ગણિમ, ધરિમ, મેય અને
પરિચ્છેદ રૂપ ખરીદવા-વેચવા યોગ્ય વસ્તુઓ લઈને નફાને માટે દેશાંતર જનારા-
ઓને જે સાથે લઈ જાય છે. યોગ (નવી વસ્તુની પ્રાપ્તિ) અને ક્ષેમ (પ્રાપ્ત
વસ્તુનું રક્ષણ) ની દ્વારા તેમનું પાલન કરે છે, ગરીબોના બદલા માટે તેમને

મૂલધનં દત્વા તાન્ સમર્ઢ્યન્તીતિ તથા, તત્ર ગણિમમ્=અક-દ્વિ-ત્રિ-ચતુરાદિ-સંખ્યાક્રમેણ યદીયતે, યથા-નાલિકેર-પૂર્ણીફલ-કદલીફલાદિકમ્, ધરિમ્=તુલામૂત્રેણોત્તોલ્ય યદીયતે, યથા-ત્રીહિ-યવ-લવણ-સિતાદિ, મેયં=શરાવ-લઘુભાષ્ટાદિનોત્તોલ્ય યદીયતે, યથા-દુગ્ધ-ઘૃત-તૈલ-પ્રમૃતિ, પરિચ્છેદ્યં ચ પ્રત્યક્ષતો નિકષાદિપરીક્ષયા યદીયતે, યથા-મણિ-મુક્તા-પ્રવાલા-સમરણાદિ ।

‘સાર્થવાહાના’ મિત્યત્ર ‘કૃત્યાનાં કર્તારિ વે’ તિ કર્તારિ ષષ્ટી,

દેકર વ્યાપાર દ્વારા ધનવાન બનાતે હૈં ઉન્હેં સાર્થવાહ કહતે હૈં । અક, દો, ત્રીન, ચાર આદિ સંખ્યાકે હિસાબસે જિનકા લેન દેન હોતા હૈ, ઉસે ‘ગણિમ’ કહતે હૈં, જૈસે-નારિયલ, સુપારી, કેલા આદિ । તરાજૂ પર તોલકર જિસકા લેન દેન હો, ઉસે ‘ધરિમ’ કહતે હૈં, જૈસે-ધાન, જૌ, નમક, શકર આદિ । સરાવા છોટે ૨ વર્તન આદિસે નાપ કર જિસકા લેન દેન હોતા હૈ, ઉસે મેય કહતે હૈં, જૈસે-દૂધ, ઘી, તૈલ આદિ । સામને કસૌટી આદિ પર પરીક્ષા કરકે જિસકા લેન દેન હોતા હૈ, ઉસે પરિચ્છેદ્ય કહતે હૈં । જૈસે મણિ, મોતી, મૂંગા, ગહના આદિ ।

વહ અજ્ઞતિ ગાથાપતિ, ઇન રાજા, ઈશ્વર આદિકે દ્વારા બહુતસે કાર્યોમેં કાર્યકો સિદ્ધ કરનેકે ઉપાયોમેં, કર્તવ્યકો નિશ્ચિત કરનેકે ગુપ્ત વિચારોમેં, બાન્ધવોમેં,

પૂં આપીને વેપાર દ્વારા ધનવાન બનાવે છે, તેમને ‘સાર્થવાહ’ કહે છે, એક, બે, ત્રણ, ચાર આદિ સંખ્યાના હિસાબે જેની લેણુ-દેણુ થાય છે તેને ગણિમ કહે છે, જેમકે નાળીએર, સોપારી ઇત્યાદિ, ત્રાજવાથી તોલીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં આવે છે તેને ધરિમ કહે છે, જેમકે ધાન્ય, જવ, મીકું, સાકર ઇત્યાદિ, પાલી કે પવાલું જેવાં માપનાં વાસણથી માપીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં આવે છે તેને મેય કહે છે, જેમકે દૂધ, ઘી, તેલ વગેરે. કસોટી આદિથી પરીક્ષા કરીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં આવે છે તેને પરિચ્છેદ્ય કહે છે, જેમકે મણિ, મોતી, પરવાણાં,

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. १ अङ्गति गाथापति

२५३

अग्रेतनस्य 'आप्रच्छनीयः, परिप्रच्छनीयः' इत्यनीयर् प्रत्ययस्य योगात्, सार्थवाहैरित्यपि तृतीयान्तेन कर्त्रा व्याख्येयम् ।

बहुषु=प्रचुरेषु, अस्य सर्वैरेव सप्तम्यन्तैः सम्बन्धः । कार्येषु=कर्तव्येषु प्रयोजनेष्विति यावत्, कारणेषु=कार्यजातसम्पादकहेतुषु च, मन्त्रेषु=कर्तव्यनिश्चयार्थं गुप्तविचारेषु । कुटुम्बेषु=बान्धवेषु, गुह्येषु=लज्जया गोपनीयेषु व्यवहारेषु, रहस्येषु=रहसि=एकान्ते भवा रहस्यास्तेषु प्रच्छन्नव्यवहारेष्विति यावत् । निश्चयेषु=पूर्णनिर्णयेषु, व्यवहारेषु=व्यवहारप्रवृत्तयेषु, यद्वा-बान्धवादिसमाचरितलोकविपरीतादिक्रियाप्रायश्चित्तेषु, विषयसप्तम्या 'एतेषु

लज्जाके कारण गुप्त रखे जाने वाले विषयोंमें, एकान्तमें होने वाले कार्योंमें, पूर्ण निश्चयोंमें, व्यवहारके लिये पूछे जाने योग्य कार्योंमें, अथवा बान्धवों द्वारा किये गये लोकाचारसे विरुद्ध कार्योंके प्रायश्चित्तों (दंडों) में, अर्थात् उल्लिखित सब मामलोंमें एकबार और बार-बार पूछा जाता था—इन सब बातोंमें राजा आदि समस्त बड़े बड़े आदमी अङ्गतिकी सम्मति लेते थे ।

इन सब विशेषणोंसे सूत्रकारने यह प्रकट किया है कि अंगति गाथापतिको सभी लोग मानते थे, वह अत्यन्त विश्वासपात्र था, विशालबुद्धिशाली था और सबको उचित सम्मति देता था ।

आंधवोभां, लज्जने कारणे गुप्त राखवोभां आवता विषयोभां, ऐकांतभां करवोभां आवता कार्योभां, पूर्ण निश्चयोभां, व्यवहारने भाटे पूछवा योग्य कार्योभां, अथवा आंधवो तरक्षी करवोभां आवता लोकाचारशी विपरीत कार्योनां प्रायश्चित्तो (दंडो) भां अर्थात् जेवां जधां प्रकरणेभां ऐकवार तथा वारवार पूछवोभां आवतुं हतुं—जे जधी वातोभां राज वगेरे मोटा मोटा भाणुसो पणु अंगतिनी संभति देता होता.

जे जधां विशेषणोवडे सूत्रकारे जेभ प्रकट कथुं छे के अंगति गाथापतिने जधा लोको मानता होता, ते अत्यंत विश्वासपात्र होता, विशाल बुद्धिशी युक्त होता अने जधाने वाजणीज संवाद-संभति आपतो होता.

વિષયે' इत्यर्थः । आ=ईषत् सकृदिति यावत्, प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, परि=सर्वतोभावेन असकृदिति यावत् प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, स्वस्यापि=स्वकीय-स्यापि, च-कारो विषयान्तरपरिग्रहार्थः । खलु=निश्चयेन कुटुम्बस्य=परिवार-जनस्य मेधिः=व्रीहि-यव-गोधूमादिकणमर्दनार्थं खले निखाय स्थापितो दार्वાદિમયઃ પશુબન્ધનસ્તમ્ભઃ, यत्र पङ्क्तिशोबद्धा बलीवर्दादयो व्रीह्यादिकण-मर्दनाय परितो आम्यन्ति तत्सादृश्यादयमपि मेधिः, અર્થાદેતદવલમ્બનેનૈવ સર્વસ્યાપિ કુટુમ્બસ્યાવસ્થાનમિતિ । કુટુમ્બસ્યાપીત્યત્રાપિશબ્દબલાન્ન કેવલં

ધાન જૌ ગેહૂં આદિકો દાંય કરને (લાટા-દાને-નિકાલને) કે લિયે ગઢા સોદકર એક લકડી યા બાંસકા સ્તમ્ભ ગાડા જાતા હૈ, ઉસકે ચારોં ઓર એક પંક્તિમે લાંક (ધાન) કો કુચલનેકે લિયે વૈલ ઘૂમતે હૈં ઉસ સ્તમ્ભકો મેધિ-મેદી-કહતે હૈં । વૈલ આદિ ઉસ સમય ઉસીપર નિર્ભર રહતે હૈં । યદિ વહ સ્તમ્ભ ન હો તો કોઈ વૈલ કહીં ચલા જાય, કોઈ કહીં-સબ વ્યવસ્થા મજૂ હો જાય । ગાથાપતિ અજ્ઞતિ અપને કુટુમ્બકી મેધિ-મેદીકે સમાન થે, અર્થાત્ કુટુમ્બ ઉન્હીકે સહારે થા-વેહી ઉસકે વ્યવસ્થાપક થે । મૂલ-પાઠમેં ' વિ ' (અપિ) શબ્દ હૈ, ઉસકા તાત્પર્ય યહ હૈ કિ વે કેવલ કુટુમ્બકે હી આશ્રય નહીં થે, અપિતુ સમસ્ત

ધાન્ય, જવ, ઘઉં વગેરેને કણસલામાંથી છૂટાં કરવાને એક ખાડો ખોદી તેમાં એક લાકડાનો ખાંભો ખોડવામાં આવે છે અને પછી તેની ચારે બાજુએ એક સાથે કણસલાને કચરવા માટે બળદ વગેરે રૂંધા કરે છે, એ ખાંભાને મેધિ કહે છે. બળદ વગેરે એ વખતે એ ખાંભાને આધારેજ રૂંધા કરે છે. જો એ ખાંભો ન હોય તો એક બળદ એક બાજુએ ચાલ્યો જાય અને બીજો બીજી બાજુએ ફરે, એ રીતે વ્યવસ્થા ભંગ થઈ જાય. ગાથાપતિ અજ્ઞતિ પોતાના કુટુમ્બની મેધિ-મધ્યસ્થ સ્તંભ જેવો હતો; અર્થાત્ કુટુમ્બ એને આધારે હતું, તેજ કુટુમ્બનો વ્યવસ્થાપક હતો. મૂળ પાઠમાં 'વિ' (અપિ) શબ્દ છે, તેનું તાત્પર્ય એ છે કે તે કેવળ કુટુમ્બનાજ આધાર રૂપ નહોતો, પરંતુ બધા લોકોના પણ આશ્રય

સુન્દરબોધિની ટીકા વર્ગ ૩ અભ્ય. ૧ અઙ્ગતિ ગાથાપતિ

૨૫૬

કુટુમ્બસ્યૈવ, અપિતુ સર્વસ્યાપિ જનસ્યેત્યવધેયમ્ । પ્રમાણં=પ્રત્યક્ષાદિપ્રમાણ-
વદ્દેયોપાદેયપ્રવૃત્તિનિવૃત્તિરૂપતયા સંશયરાહિત્યેન પદાર્થસાર્થપરિચ્છેદકઃ,
આધારઃ=આધારવત્ સર્વેષામાશ્રયભૂતઃ, આલમ્બનં=રજ્જુસ્તમ્માદિવદ્વિપત્કૂપ-
પતજ્જનોદ્ધારકતયાઽલમ્બનમ્, આધારો નામ-યમધિષ્ઠાય જન ઉન્નતિં ગચ્છતિ,
સ્વરૂપાઽવસ્થો વા વર્તતે સઃ, યદલમ્બનેન ચ વિપદો વિનિવર્તન્તે તદાલમ્બ-
નમિતિ તયોર્મેદઃ, ચક્ષુઃ=નેત્રં તદ્વત્ સર્વેષાં સકલાર્થપ્રદર્શકઃ, યદુક્તં-
મેધિઃ, પ્રમાણમ્, આધારઃ, આલમ્બનં, ચક્ષુરિતિ । તદેવ સ્પષ્ટપ્રતિપત્તયે
ઔપમ્યવાચિભૂતશબ્દસમ્મેલનેન પુનરાવર્તયતિ-મેધીભૂત ઇત્યાદિ, યાવદિતિ

લોગોકે મી આશ્રય થે, જૈસા કી ઉપર બતાયા જા ચુકા હૈ । આગે જહાં-જહાં
'વિ' (અપિ-મી) આયા હૈ વહાં સર્વત્ર યહી તાત્પર્ય સમજના ચાહિયે । અઙ્ગતિ
ગાથાપતિ અપને કુટુમ્બકે મી પ્રમાણ થે । અર્થાત્ જૈસે પ્રત્યક્ષ અનુમાન આદિ પ્રમાણ
સંદેહ આદિકો દૂર કરકે હેય (ત્યાગ કરને યોગ્ય) પદાર્થોસે નિવૃત્તિ ઓર ઉપાદેય
(પ્રહણ કરને યોગ્ય) પદાર્થોં પ્રવૃત્તિ કરાતે હુયે પદાર્થોંકો જનાતે હૈં, ઉસી પ્રકાર
અઙ્ગતિ મી અપને કુટુમ્બિયોંકો બતાતે થે કિ-અમુક કાર્ય કરને યોગ્ય હૈ, અમુક
કાર્ય કરને યોગ્ય નહીં હૈ, યહ પદાર્થ ગ્રાહ્ય હૈ, યહ અગ્રાહ્ય હૈ ।

રૂપ હતો, કે જેમ ઉપર દર્શાવવામાં આવેલ છે આગળ પણ બધાં બધાં 'વિ' (અપિ-
પણ) આવ્યો છે, ત્યાં ત્યાં બધે એજ તાત્પર્ય સમજવાનું છે.

અંગતિ ગાથાપતિ પોતાના કુટુમ્બના પણ પ્રમાણ રૂપ હતો, અર્થાત્ જેમ
પ્રત્યક્ષ અનુમાન આદિ પ્રમાણ, સંદેહ આદિને દૂર કરીને હેય (ત્યજવા યોગ્ય)
પદાર્થોથી નિવૃત્તિ અને ઉપાદેય (ગ્રહણ કરવા યોગ્ય) પદાર્થોમાં પ્રવૃત્તિ કરાવતા
તે, પદાર્થોને દર્શાવે છે, તેમ અંગતિ પણ પોતાના કુટુમ્બિયોને બતાવતો હતો કે
-અમુક કાર્ય કરવું યોગ્ય છે, અમુક કાર્ય કરવું યોગ્ય નથી, અમુક પદાર્થ ગ્રાહ્ય
છે, અમુક પદાર્થ અગ્રાહ્ય છે, ઇત્યાદિ.

૩૫૬

૩ પુષ્પિતાસત્ર

ચાવચ્છબ્દેન 'પમાણભૂત, આહારભૂત, આલંબનભૂત' इत्येषां संग्रहो बोध्य-
स्तत्र-प्रमाणभूतः, आधारभूतः, आलम्बनभूतः, चक्षुर्भूतः, इतिच्छाया,
चैनरुक्त्यवारणं तु मेधिरर्थान्मेधीभूतो मेधिसदृश इति यावत् । प्रमाणमर्थात्
प्रमाणभूतः प्रमाणसदृश इति यावत्, आधारोऽर्थादाधारभूत आधारसदृश
इति यावत् । आलम्बनमर्थादालम्बनभूत आलम्बनसदृश इति यावत् । चक्षुरर्था-
च्चक्षुर्भूतश्चक्षुःसदृश इति यावत् इति रीत्या समन्वयाद्भवतीति सूक्ष्मचक्षुषाऽवे-

તથા અજ્ઞતિ ગાથાપતિ અપને કુટુમ્બકે મી આધાર (આશ્રય) થે, તથા આલંબન
થે, અર્થાત્ વિપત્તિમે પડનેવાલે મનુષ્યકો રસ્તી યા સ્તમ્બકે સમાન સહારે થે ।

અજ્ઞતિ અપને કુટુમ્બકે ચક્ષુ થે, અર્થાત્ જૈસે ચક્ષુ માર્ગિકો પ્રકાશિત કરતા
હે વૈસે હી અજ્ઞતિ કુટુમ્બિકાકે મી સમસ્ત અર્થોકે પ્રદર્શક (સન્માર્ગદર્શક) થે ।

દૂસરી વાર મેધિભૂત આદિ વિશેષણ સ્પષ્ટ બોધકે લિયે દિયે હૈં । ' જાવ ' શબ્દસે પ્રમાણભૂત, આધારભૂત, આલંબનભૂત, ચક્ષુર્ભૂત, इनका संग्रह होता है । यहाँ स्पष्टताके लिये ' भूत ' शब्द अधिक दिया है, इसका तात्पर्य यह है कि अज्ञति गाथापति मेढी अर्थात् मेढीके सदृश थे, प्रमाण अर्थात् प्रमाणके सदृश थे, आधार

અંગતિ પોતાના કુટુમ્બના પણ આધાર (આશ્રય) હતો, તથા આલંબન
હતો, અર્થાત્ વિપત્તિમાં પડેલા મનુષ્યને ઘોરડું અથવા થાંભલાના જેવા આધાર
રૂપ હતો.

અંગતિ પોતાના કુટુમ્બના ચક્ષુરૂપ હતો, અર્થાત્ જેમ ચક્ષુ માર્ગને પ્રકાશિત
કરે છે તેમ અંગતિ સ્વકુટુમ્બિકાના પણ બધા અર્થોનો પ્રકાશક (સન્માર્ગ
દર્શક) હતો.

બીજીવાર મેધિભૂત આદિ વિશેષણ સ્પષ્ટ બોધને માટે આપેલાં છે. ' જાવ ' શબ્દથી પ્રમાણભૂત, આધારભૂત, આલંબનભૂત, ચક્ષુર્ભૂત, એ બધાનો સંગ્રહ થાય છે, અહીં સ્પષ્ટતાને માટે ' ભૂત ' શબ્દ વધારે આપ્યો છે. એનું તાત્પર્ય એ છે કે અંગતિ મેધિ અર્થાત્ મેધિની સમાન હતો, પ્રમાણ અર્થાત્ પ્રમાણની સમાન

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૧ અઙ્ગતિ ગાથાપતિ

૨૫૭

ક્ષણીયમ્ , ચ=ચકારો કિञ્ચેત્યર્થે સર્વકાર્યવર્ધકઃ=સર્વેષાં કાર્યાણાં સમ્પાદકો-
ઽપિ, (एतादृशोऽङ्गतिर्गाथापतिः) અભવત્=આસીત્ ॥ ૧ ॥

મૂલમ્—

તેણં કાલેણં ૨ પાસેણં અરહા પુરિસાદાણીય આદિગરે જહા મહા-
વીરો, નવુસ્સેહે સોલસેહિં સમણસાહસીહિં, અટ્ટતીસા જાવ કોટ્ટણ સમોસઢે,
પરિસા નિગ્ગયા ।

તણ જં સે અંગઈ ગાહાવઈ ઇમીસે કહાણ લલ્લઢે સમાણે હઢે જહા
કત્તિઓ સેટ્ટી તહા નિગ્ગચ્છઈ જાવ પજ્જુવાસઈ, ધમ્મં સોચ્છા નિસમ્મં જં
નવરં દેવાણુપ્પિયા ! જેટ્ટપુત્તં કુડુંબે ઠાવેમિ, તણ જં અહં દેવાણુપ્પિયાણં

છાયા—

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે પાર્શ્વઃ સ્વલ્પ અર્હન્ પુરુષાદાનીયઃ
આદિકરો યથા મહાવીરઃ, નવહસ્તોચ્છ્રાયઃ ષોડશભિઃ શ્રમણસાહસીભિઃ,
અષ્ટાત્રિંશદ્ યાવત્ કોષ્ઠકે સમવસૃતઃ, પરિષત્ નિર્ગતા ।

તતઃ સ્વલ્પ સઃ અઙ્ગતિર્ગાથાપતિઃ અસ્યાઃ કથાયા લબ્ધાર્થઃ સન્
હૃષ્ટો યથા કાર્તિકશ્રેષ્ઠી તથા નિર્ગચ્છતિ યાવત્ પર્યુપાસ્તે, ધર્મં શ્રુત્વા નિશમ્યં
યત્ નવરં દેવાનુમિય ! જ્યેષ્ઠપુત્રં કુડુમ્બે સ્થાપયામિ, તતઃ સ્વલ્પ અહં દેવાનુ-

અર્થાત્ આધારકે સદશ થે, આલમ્બન અર્થાત્ આલમ્બનકે સદશ થે, ચક્ષુ અર્થાત્
ચક્ષુકે સદશ થે । અઙ્ગતિ સમસ્ત કાર્યોંકે સમ્પાદન કરનેવાલે મી થે ॥ ૧ ॥

હતો, આધાર અર્થાત્ આધારની સમાન હતો, આલંબન અર્થાત્ આલંબનની
સમાન હતો અને ચક્ષુ અર્થાત્ ચક્ષુની સમાન હતો. અંગતિ બધાં કાર્યોંતું સંપાદન
કરનારો પણ હતો. (૧)

जाव पव्वयामि, जहा गंगदत्तो तहा पव्वइए जाव गुत्तबंभयारी । तए णं से अंगई अणगारे पासस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइय-माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणेः बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणिच्चा अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता विराहियसामन्ने कालमासे कालं किच्चा चंदवडिसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए चंदे जोइ-सिंदत्ताए उववन्ने ।

तए णं से चंदे जोइसिंदे जोइसरया अहुणोववन्ने समाणे पंच-विहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तंजहा-आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए सासोसासपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए ।

चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! पलिओवमं वाससयसइस्समब्भहियं । एवं खलु

प्रियाणां यावत् प्रव्रजामि यथा गङ्गदत्तस्तथा प्रव्रजितो यावद् गुप्तब्रह्मचारी । ततः खलु सः अङ्गतिः अनगारः पार्श्वस्य अर्हतः तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहुमिश्रतुर्थं यावद् भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति पालयित्वा अर्धमासिक्या संलेखनया त्रिशद् भक्तानि अनशनया छित्वा विराधितश्रामण्यः कालमासे कालं कृत्वा चन्द्रावतंसके विमाने उपपातसभायां देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते चन्द्रो ज्योतिरिन्द्रतया उपपन्नः ।

ततः खलु स चन्द्रो ज्योतिरिन्द्रो ज्योतीराजः अधुनोपपन्नः सन् पञ्चविधया पर्याप्त्या पर्याप्तिभावं गच्छति, तद्यथा-आहारपर्याप्त्या शरीर-पर्याप्त्या इन्द्रियपर्याप्त्या श्वासोच्छ्वासपर्याप्त्या भाषामनःपर्याप्त्या ।

चन्द्रस्य खलु भदन्त ! ज्योतिरिन्द्रस्य ज्योतीराजस्य कियत्कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! पल्योपमं वर्षशतसहस्राभ्यधिकम् । एवं खलु

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अन्ध. १ अङ्कति गाथापति

२५९

गोयमा ! चंदस्स जाव जोइसरन्नो सा दिव्वा देविह्मी० । चंदेणं भंते !
जोइसिंदे जोइसराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ चइत्ता कहिं
गच्छिहिइ २ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिहिइ५ एवं खलु जम्बू !
समणेणं० निक्खेवओ ॥ २ ॥

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

गौतम ! चन्द्रस्य यावत् ज्योतीराजस्य सा दिव्या देवक्रद्धिः० । चन्द्रः
खलु भदन्त ! ज्योतिरिन्द्रो ज्योतीराजस्तस्माद्देवलोकादायुःक्षयेण ३ च्युत्वा
कुत्र गमिष्यति २ ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति५ । एवं खलु जम्बू !
श्रमणेन० निक्षेपकः ॥ २ ॥

॥ इति प्रथमाध्ययनम् ॥

टीका—

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वः=
त्रिविंशः पार्श्वनामा तीर्थङ्करः, अर्हन्=चतुर्विधघातिकर्मनिवारकः केवलज्ञान-
केवलदर्शनसम्पन्नः, पुरुषादानीयः=पुरुषैः=मुमुक्षुभिर्जनैः स्वकल्याणार्थमादीयत

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि—

उस काल उस समयमें पार्श्व प्रभु तेवीसवें तीर्थङ्कर ज्ञानावरणीय, दर्शना-
वरणीय, मोहनीय और अन्तराय इन चार घाति कर्मों के निवारक केवलज्ञान, केवल-
दर्शनसे युक्त, मुमुक्षुजनोंसे सेव्य अथवा पुरुषोंके बीचमें उनका वचन आदानीय=

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि.

ते काले ते सभये पार्श्व प्रभु तेवीसमा तीर्थङ्कर ज्ञानावरणीय दर्शना-
वरणीय, मोहनीय तथा अन्तराय अे चार घाती कर्मोंना निवारक, केवलज्ञान
केवलदर्शनशी युक्त, मुमुक्षु जनोशी सेव्य, अथवा पुरुषोनी वचनं तेभन्तु वचन

इति पुरुषादानीयः, यद्वा-पुरुषाणां मध्ये आदेयवचनत्वात् पुरुषादानीयः, आदिकरः=धर्मस्य आदिकरः, यथा-महावीरः=चतुर्विंशस्तीर्थङ्करः, तथैव सर्व-गुणसम्पन्नः, किन्तु पार्श्वप्रभुः नवहस्तोच्छ्रायः=नवहस्तपरिमितशरीरः षोड-शभिः श्रमणसाहस्रीभिः, अष्टात्रिंशद्भिः श्रमणीसहस्रैश्च युक्तः यावद् ग्रामानु-ग्रामं विहरन् कोष्ठके=कोष्ठनामोद्याने समवसतः=समागतः, परिषत् निर्गता, पार्श्वतीर्थङ्करस्य धर्मदेशनां श्रुत्वा स्वस्थानं गता ।

ततः खलु सोऽङ्गतिर्गाथापतिः अस्याः कथायाः=‘पुरुषादानीयः पार्श्वनाथः प्रभुश्च कोष्ठके समवसतः’ इति वार्तायाः लब्धार्थः=ज्ञातवृत्तान्तः

ग्राह्य था इसलिये पुरुषादानीय, धर्मके आदिकर भगवान महावीरके समान सभी गुणोंसे युक्त, नौ हाथ ऊँचे शरीरवाले सोलह हजार श्रमण और अड़तीस हजार श्रमणियोंसे युक्त एक ग्रामसे दूसरे ग्राम तीर्थङ्कर परम्परासे विचरते हुए कोष्ठक नामक उद्यानमें पधारे । जनसमुदायरूप परिषद् अपने २ स्थानसे धर्म श्रवणके लिये निकली । पार्श्वनाथ भगवानकी धर्मदेशना सुनकर अपने २ स्थान गयी ।

उसके बाद वह अङ्गति गाथापति भगवान पार्श्वनाथके आनेका वृत्तान्त सुनकर दृष्ट होकर कार्तिक सेठके समान निकला । पार्श्वनाथ प्रभुके पास जाकर

आदानीय=ग्राह्य હતું. આથી પુરુષાદાનીય, ધર્મના આદિ કરવાવાળા ભગવાન મહાવીર સમાન સર્વે ગુણોથી યુક્ત, નવ હાથ ઊંચા શરીરવાળા, સોળ હજાર શ્રમણ તથા આઠત્રીસ હજાર શ્રમણિયોથી યુક્ત એક ગામથી બીજે ગામ તીર્થંકર પરંપરાથી વિચરતા વિચરતા કોષ્ઠક નામના ઉદ્યાન (બગ) માં પધાર્યા. જન સમુદાય રૂપ પરિષદ પોતપોતાના સ્થાનથી ધર્મ સાંભળવા માટે નીકળી, પાર્શ્વનાથ ભગવાનની ધર્મદેશના સાંભળી પોતપોતાને સ્થાને ગઈ.

ત્યાર પછી તે અંગતિ ગાથાપતિ ભગવાન પાર્શ્વનાથના આવવાના વૃત્તાન્ત સાંભળી દૃષ્ટ થઈ કાર્તિક શેઠની પેઠે નિકળ્યો. પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે જઈ તેણે

सन् हृष्टः प्रमुदितः यथा कार्तिकश्रेष्ठी तथा निर्गच्छति, यावत् पर्युपास्ते=
पार्श्वनाथं प्रभुं सेवते स्म । धर्म=श्रुतचारित्रलक्षणं श्रुत्वा=कर्णपथे कृत्वा,
निशम्य=हृदि समवधार्य देवानुप्रिय ! =हे भगवन् ! यत् नवरं=केवलं ज्येष्ठ-
पुत्रं रक्षकतया कुटुम्बे स्थापयामि, ततः खलु अहं देवानुप्रियाणामन्तिके
यावत् प्रव्रजामि=संयमं गृह्णामि, यथा भगवत्यङ्गोक्तो गङ्गदत्तस्तथा प्रव्रजितो
यावच्छब्देन-स हि-‘ किंपाकफलोवमं मुणियविसयसोक्खं जलबुब्बुयसमाणं
कुसग्गविंदुचंचलं जीवियं नाऊणमधुवं चइत्ता हिरणं विउलधणकणगरयण-
मणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमाइयं विच्छड्डइत्ता दाणं दाइयाणं परि-

उसने उनकी सेवा की, और भगवान् पार्श्वनाथके द्वारा उपदिष्ट श्रुत चारित्र लक्षण
धर्मको सुना, और उसे अपने हृदयमें अवधारित किया । उसके बाद उसने हाथ
जोड़कर प्रार्थना की-हे भगवन् ! मैं अपने बड़े लड़केको कुटुम्बका भार देकर बादमें
आपके पास संयम ग्रहण करना चाहता हूँ । अनन्तर वह भगवती अङ्गमें उक्त
गङ्गदत्तके समान ही विषय सुखको किंपाक फलके सदृश जानकर जीवनको जल
बुदबुद तथा कुशके अग्र भागमें स्थित जलबिन्दुके समान चंचल एवं अनित्य सम-
झकर और बहुतसा चांदी धन कनक रत्न मणि मौक्तिक शंख रत्न शिला प्रवाल
रत्नरत्न आदिको छोड़कर और दान देकर तथा सम्पत्तिके भागियोंको सम्पत्तिका

तेभन्नी सेवा करी. तथा भगवान् पार्श्वनाथ द्वारा उपदिष्ट श्रुतचारित्र लक्षण धर्म-
सांभाल्यो; अने ते पोताना हृदयमां धारण कर्यो. त्थार पछी तेणे हाथ जोडीने
प्रार्थना करी-हे भगवन् ! हुं माश भोटा दीकराने कुटुंभने। भार सोंपी छने
आपनी पासे संयम ग्रहण करवा छम्मा राखुं छुं. त्थार पछी ते भगवती सूत्रमां
कहेल गङ्गदत्तनी चेठेन विषय सुणने किंपाक फलनी जेभ समल लवनने पाछीना
परपोटा तथा कुशना अथ भागमां रहेलां जलबिंदु समान चंचल अने अनित्य
समलने तथा धणुं खांदी, धन, सोनुं, रत्न, मणि (अवेशत), मोती, शंख, शिला,
प्रवाल, रत्न रत्न (माछुक) आदि छोडी छने अने दान छने तथा सम्पत्तिना

भाइत्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइओ जहा तहा अंगईवि गिहनायगो परिच्चइय सव्वं पव्वइओ जाओ य पंचसमिओ तिगुत्तो अममो अकिंचणो गुत्तिदिओ' इत्येवं संग्राह्यम् । एतच्छाया च-स किंपाकफलोपमं ज्ञात्वा विषयसौख्यं जलबुद्बुदसमानं कुशाग्रबिन्दुचञ्चलं जीवितं च ज्ञात्वाऽध्रुवं त्यक्त्वा हिरण्यं विपुल-धन-कनक-रत्न-मणि-मौक्तिक-शङ्ख-शिला-प्रवाल-रक्त-रत्नादिकं विमुच्य दानं दायिकानां परिभाज्य अगारतः अनगारितां प्रव्रजितः यथा तथा अङ्गतिरपि गृहनायकः परित्यज्य सर्वं प्रव्रजितो जातश्च पञ्च-समितः, त्रिगुप्तः, अममः, अकिञ्चनः गुप्तेन्द्रियः, इति । गुप्तब्रह्मचारी बभूव, ततः खलु अङ्गतिरनगारः पार्श्वस्यार्हतस्तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते स्म, अधीत्य च बहुभिः चतुर्थषष्ठा-ऽष्टम-दशमद्वादशमासार्धमासक्षपणैरात्मानं भावयन्=वासयन् बहूनि वर्षाणि

भाग देकर घरसे निकल गङ्गदत्तके समान प्रव्रजित हो गये । प्रव्रज्या लेने पर वे अङ्गति अनगार ईर्या आदि पाँच समितियोंसे समित मन आदि तीन गुप्तिसे गुप्त और ममत्व रहित एवं अकिञ्चन-ब्रह्माभ्यन्तर परिग्रहसे रहित और पाँचों इन्द्रियोंको दमन करनेवाले अनगार हो गये, और गुप्त ब्रह्मचारी बने । उसके बाद अङ्गति अनगारने अर्हत पार्श्व प्रभुके तथारूप-बहुश्रुत-स्थविरोके समीप सामायिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन किया । अध्ययनके बाद बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम दशम द्वादश

भागोद्धारने संपत्तिने भाग आपी पोताना घरथी नीकणी जंगदत्तनी पेठे प्रव्र-जित थछ गया. प्रव्रज्या लधने ते अंगति अनगार धर्या आदि पांच समिति-ओथी समित. मन आदि त्रय गुप्तिथी गुप्त तथा ममत्व रहित अने अकिञ्चन-आद्य-अभ्यन्तर परिग्रहथी रहित तथा पांचे धन्द्रियोनु दमन करवावाणा अनगार थछ गया. तथा गुप्त ब्रह्मचारी भन्था. तयार पछी अंगति अनगारे अर्हत पार्श्व प्रभुना तथारूप-अहुश्रुत-स्थविरोनी पासे सामायिक आदि अगीयार अंगोनु अध्ययन कथुं अध्ययन पछी धधु अतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, भासार्ध (११ मास)

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. १ अङ्गति गाथापति

२६३

श्रामण्यपर्यायं=मुनिव्रतं पालयति पालयित्वा विराधितश्रामण्यं=विराधित-
मुनिव्रतः, विराधना द्विधा-मूलगुणविषया उत्तरगुणविषया च, अत्रोत्तरगुण-
विषया विराधना पिण्डविशुद्ध्यादयो विज्ञेयाः, न तु प्रथमा, तत्र कदाचित्
द्विचत्वारिंशदोषविशुद्धाहारस्य न ग्रहणं कृतम्, कदाचित् ईर्यासमित्यादि-

मासार्ध मास क्षपण रूप तपसे अपनी आत्माको भावित करते हुए बहुत वर्षों तक
चारित्र पालन किया। परन्तु उत्तरगुणकी विराधनाके कारण विराधितचारित्र हो,
अर्धमासिकी संलेखनासे अनशनद्वारा तीस भक्तोंका छेदन कर काल मासमें काल
करके चन्द्रावतंसक विमानमें उपपात सभामें देवदूष्य वस्त्रोंसे आच्छादित देवशय्यामें
वह अङ्गति अनगार (१) आहार-पर्याप्ति (२) शरीर-पर्याप्ति (३) इन्द्रिय-
पर्याप्ति (४) आसोच्छ्वास-पर्याप्ति भाषामनःपर्याप्ति भावको प्राप्त करके ज्योतिषिषोके
इन्द्र चन्द्र होकर उत्पन्न हुए।

विराधना दो प्रकारकी है-मूलगुणविराधना और उत्तरगुणविराधना।
उनमें पांच महाव्रतमें दोष लगाना मूलगुणविराधना है। और पिण्डविशुद्धि
आदिमें दोष लगाना जैसे-कभी बयालीस दोष सहित आहार पानीका ग्रहण करना

मास क्षमणु ३५ अनेक तपथी पोताना आत्माने भावित करतां धनुं वर्षां सुधी
चारित्र पालन कथुं पणु उत्तर गुणनी विराधनाने कारणे विराधितचारित्रवाणा
थध अर्धमासिकी संलेखनामां अनशन द्वारा त्रीश भक्तनुं छेदन करी काल
मासमां काल करीने चन्द्रावतंसक विमानमां उपपात सभामां देवदूष्य वस्त्रोथी
आच्छादित (ढंकायेदी) देवशय्यामां ते अंगति अनगार (१) आहार-पर्याप्ति
(२) शरीर-पर्याप्ति (३) इन्द्रिय-पर्याप्ति (४) आसोच्छ्वास-पर्याप्ति-भाषामनः
-पर्याप्ति भावने प्राप्त करीने ज्योतिषोना इन्द्र चन्द्र जनीने उत्पन्न थया।

विराधना जे प्रकारनी छे-मूलगुणविराधना अने उत्तरगुणविराधना
तेमां पांच महाव्रतमां दोष लगाडवे जे मूलगुणविराधना छे. अने पिंड
विशुद्धि आदिमां दोष लगाडवे जेभडे-कोष्ठवार जेतादीश दोष सहित आहार

૨૬૪

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

સમારાધનેઽનાદરઃ કૃતઃ, કદાચિત્ અભિગ્રહાશ્ચ ગૃહીતા અપિ ન સમ્યક્ પાલિતાઃ, વિભૂષાર્થમન્નપાદક્ષાલનાદિ ચ કૃતમ્, ઇત્યાદિરૂપેણ વ્રતવિરાધના કૃતા, સા ચ ન ગુરુસમીપે સમાલોચિતા, ઇત્યુક્તરૂપેણાનાલોચિતાતિચારઃ સન્ કૃતાનશનોઽપિ અર્ધમાસિક્યાં સંલેખનાયામનશનયા ત્રિશદ્ ભક્તાનિ છિત્વા કાલાવસરે કાલં કૃત્વા=મૃત્વા ચન્દ્રાવતંસકે વિમાને ઉપપાતસભાયાં દેવશયનીયે=દેવશય્યાયાં દેવદૂષ્યાન્તરિતે દેવદૂષ્યવસ્ત્રાઞ્છાદિતેઽયં ચન્દ્રો જ્યોતિરિન્દ્રતયોપપન્નઃ=સમુદપદ્યત-તસ્ય જ્યોતિર્દેવે જન્મ જાતમિત્યર્થઃ । નિક્ષેપો=નિગમનમ્ । શેષં સુગમમ્ ॥ ૨ ॥

॥ ઇતિ પ્રથમમધ્યયનં સમાપ્તમ્ ॥ ૧ ॥

કમી ર્ઘ્યા આદિ સમિતિયોકે આરાધનમેં પ્રમાદ કરના કમી અભિગ્રહ લેના કિન્તુ સમ્યક્ નહીં પાલના તથા વિભૂષાકે લિયે શરીર ચરણ આદિકા ક્ષાલન કરના, આદિ ૨ ઉત્તરગુણ વિષયક વિરાધના દેશવિરાધના હૈ । અન્ગતિ અનગારને મૂલ ગુણકી વિરાધના નહીં કી, કિન્તુ ઉત્તરગુણકી વિરાધનાકર આલોચના નહીં કી । ઇસલિયે યહ જ્યોતિષી દેવ હુઆ ।

ગોતમ સ્વામી પૂછતે હૈ—

હે ભદ્રન્ત ! જ્યોતિષિયોકે ઇન્દ્ર, જ્યોતિષિયોકે રાજા ચન્દ્રકી સ્થિતિ કિતને કાલકી હૈ ?

પાણ્ડુ દેવા, કોઈવાર ધર્મા વગેરે સમિતિઓના આરાધનમાં પ્રમાદ કરવો, કોઈવાર અભિગ્રહ લેવો પરંતુ સમ્યક્ (સારી રીતે) ન પાળવો, તથા વિભૂષા માટે શરીર ચરણ આદિ ધોવાં આદિ આદિ ઉત્તરગુણ વિષયક વિરાધના દેશવિરાધના છે. અંગતિ અનગારે મૂલ ગુણની વિરાધના કરી નહોતી પણ ઉત્તર ગુણની વિરાધના કરી આલોચના કરી નહોતી તે માટે તે જ્યોતિષી દેવ થયા.

ગોતમ સ્વામી પૂછે છે—

હે ભદ્રન્ત ! જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર જ્યોતિષોના રાજા ચન્દ્રની સ્થિતિ કેટલા કાલની છે ?

હુન્દ્રબોધિની ટોકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૧ અઙ્ગતિ ગાથાપતિ

૨૬૫

ભગવાન કહતે હૈં—

હે ગૌતમ ! જ્યોતિષોકે હન્દ્ર ચન્દ્રકી સ્થિતિ એક પલ્યોપમ ઓર એક લાઘ વર્ષકી હૈ . હે ગૌતમ ! જ્યોતિષોકે હન્દ્ર જ્યોતિષોકે રાજા ચન્દ્રકો યહ દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિ પૂર્વ ભવમેં ઉપાર્જિત તપ ઓર સંયમકે કારણ મિલી હૈ .

હે ભદન્ત ! ચન્દ્ર દેવ અપના આયુષ્યભવ તથા અપની સ્થિતિકે ક્ષય હોજાનેકે બાદ વ્યવકર કહૌં જાયગે ?

હે ગૌતમ ! આયુ આદિ ક્ષયકે બાદ યહ ચન્દ્ર દેવ મહાવિદેહક્ષેત્રમેં જન્મ લેકર સિદ્ધ હોગે .

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈં—

હે જમ્બૂ ! હસ પ્રકાર મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને પુષ્પિતાકે પ્રથમ અધ્યયનકા નિરૂપણ કિયા હૈ .

ઇતિ પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત હુઆ .

ભગવાન કહે છે—

હે ગૌતમ ! જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર ચન્દ્રની સ્થિતિ એક પલ્યોપમ અને એક લાઘ વર્ષની છે. હે ગૌતમ ! જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર જ્યોતિષોના રાજા ચન્દ્રને આ દિવ્ય દેવઋદ્ધિ પૂર્વભવમાં ઉપાર્જિત તપ અને સંયમના કારણથી મળી છે.

હે ભદન્ત ! ચન્દ્ર દેવ પોતાનું આયુષ્ય ભવ તથા પોતાની સ્થિતિના ક્ષય થઈ ગયા પછી ચ્યવીને કયાં જશે.

હે ગૌતમ ! આયુ આદિ ક્ષય થઈ ગયા પછી આ ચન્દ્ર દેવ મહા વિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઈને સિદ્ધ થશે.

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના પ્રથમ અધ્યયનનું નિરૂપણ કર્યું છે.

ઇતિ પુષ્પિતાનું પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત.

मूलम्—

जइणं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुष्फियाणं पढमस्स अज्झ-
यणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुष्फियाणं
समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं
कालेणं २ रायगिहे नामं नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिये राया, समो-
सरणं जहा चंदो तहा सूरुओवि आगओ जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ ।
पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी नगरी, सुपइट्ठे नामं गाहावई होत्था, अड्ढे, जहेव
अंगती जाव विहरति, पासो समोसडे, जहा अंगती तहेव पव्वइए, तहेव
विराहियसामन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतंकाहिति, एवं
खलु जंबू ! समणेणं० निक्खेवओ ॥ २ ॥

॥ वीयं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

छाया—

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् पुष्पितानां प्रथमस्य
अध्ययनस्य यावत् अयमर्थः प्रज्ञप्तः द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य
पुष्पितानां श्रमणेन भगवता यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एवं खलु
जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरं, गुणशिलकं
चैत्यं, श्रेणिको राजा, समवसरणं यथा चन्द्रः तथा सूरुओपि आगतो यावत्
नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगतः । पूर्वभवपृच्छा-श्रावस्ती नगरी सुप्रतिष्ठो नाम
गाथापतिरभवत् आढ्यः यथैव अङ्गतिर्यावद् विहरति, पार्श्वः समवसृतः,
यथा अङ्गतिस्तथैव प्रव्रजितः तथैव विराधितश्रामण्यो यावत् महाविदेहे
वर्षे सेत्स्यति यावत् अन्तं करिष्यति, एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन०
निक्षेपकः ॥ २ ॥

ટીકા—

‘જઇણં મંતે’ ઇત્યાદિ સુગમમ્ ॥ ૨ ॥

॥ ઇતિ દ્વિતીયમધ્યયનં સમાપ્તમ્ ॥

દ્વિતીય અધ્યયન.

‘જઇણં મંતે’ ઇત્યાદિ—

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને પુષ્પિતાકે પ્રથમ અધ્યયનમેં પૂર્વોક્ત ભાવોંકા નિરૂપણ કિયા હૈ તો ફિર હે ભદન્ત ! પુષ્પિતાકે દ્વિતીય અધ્યયનમેં उन्होने किस भावका निरूपण किया है ? हे जम्बू ! उस काल उस समयमें राजगृह नामकी नगरी थी । उस नगरीमें गुणशिलक नामका चैत्य था । उस नगरीमें श्रेणिक नामके राजा थे । वहाँ श्रमण भगवान महावीर पधारे । जिस प्रकार चन्द्रमा आये उसी प्रकार सूर्य भी आये और यावत् नाट्य विधि दिखाकर चले गये ।

ગૌતમને ભગવાનસે પૂછા—

હે ભદન્ત ! સૂર્ય પૂર્વ જન્મમેં કૌન થે ?

દ્વિતીયઅધ્યયન.

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના પ્રથમ અધ્યયનમાં પૂર્વોક્ત ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે. પછી હે ભદન્ત ! પુષ્પિતાના બીજા અધ્યયનમાં તેમણે કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

હે જમ્બૂ ! તે કાલે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગરી હતી. તે નગરીમાં ગુણ શિલક નામે ચૈત્ય (ખગીચા) હતો. તે નગરીમાં શ્રેણિક નામે રાજા હતા. ત્યાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પધાર્યા. જેવી રીતે ચન્દ્રમા આવ્યા તેવી રીતે સૂર્ય પણ આવ્યા અને સઘળી નાટક વિધિ બતાવી આપ્યા ગયા.

ગૌતમે ભગવાનને પૂછ્યું—

હે ભદન્ત ! સૂર્ય પૂર્વ જન્મમાં કોણ હતા ?

ભગવાને કહા—

હે ગૌતમ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં શ્રાવસ્તી નામકી નગરી થી । ઉસ નગરીમેં સુપ્રતિષ્ઠ નામકે ગાથાપતિ થે । જો અઙ્ગતિકે સમાન હો આઢ્ય યાવત્ અપરિભૂત હોકર વિચરતે થે । ઉસ નગરીમેં ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુ પધારે । જૈસે અઙ્ગતિ ગાથાપતિ પ્રવ્રજિત હુએ, ઉસી પ્રકાર સુપ્રતિષ્ઠ ગાથાપતિ ભી પ્રવ્રજિત હુએ । ઉસી પ્રકાર શ્રામણ્યકો વિરાધિત કર કાલ અવસર કાલ કરકે જ્યોતિષોકે ઇન્દ્ર સૂર્ય દેવપનેમેં ઉત્પન્ન હુએ । ઔર આયુ ભવ સ્થિતિ ક્ષય કરનેકે વાદ યહ સૂર્ય દેવ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમેં જન્મ લેકર સિદ્ધ હોગે । ઔર સબ દુઃસ્વોકા અન્ત કરેંગે । હે જમ્બૂ ! ઇસ પ્રકાર શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને દ્વિતીય અધ્યયનકે ભાવોંકો નિરૂપિત કિયા હૈ ।

इति द्वितीय अध्ययन समाप्त हुआ ।

ભગવાને કહ્યું—

હે ગૌતમ ! તે કાલે તે સમયે શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી. તે નગરીમાં સુપ્રતિષ્ઠ નામે ગાથાપતિ હતા. જે અંગતિના જેવાજ આઢ્ય અને અપરિભૂત થઈને વિચરતા હતા. તે નગરીમાં ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુ પધાર્યા, જેમ અંગતિ ગાથાપતિ પ્રવ્રજિત થયા તેવીજ રીતે સુપ્રતિષ્ઠ ગાથાપતિ પણ દીક્ષિત થયા. તેજ પ્રકારે સાધુપણાને વિરાધિત કરી કાલ અવસર કાલ કરીને જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર સૂર્ય દેવપણામાં ઉત્પન્ન થયા તથા આયુ ભવસ્થિતિ ક્ષય કરીને પછી આ સૂર્ય દેવ મહા વિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઈને સિદ્ધ થશે અને સર્વે દુઃખનો અંત લાવશે. હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના દ્વિતીય અધ્યયનના ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે.

આ પુષ્પિતાનું બીજું અધ્યયન પુરું થયું ૨

मूलम्—

जइणं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उक्खेवओ भाणि-
यव्वो, रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसढे,
परिसा निग्गया । तेणं कालेणं २ सुक्के महग्गहे सुक्कवडिसिए विमाणे
सुक्कंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहेव चंदो तहेव आगओ,
नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ । भंते त्ति कूडागारशाला । पुव्वभवपुच्छा ।

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ वाणारसी नामं नयरी
होत्था । तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसइ,
अड्डे जाव अपरिभूए रिउव्वेय-जाव सुपरिनिट्ठिए । पासे समोसढे । परिसा
पज्जुवासइ । तएणं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धस्स
समाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए० जाव समुप्फज्जित्था-एवं खलु पासे

छाया—

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन उत्क्षेपको
भणितव्यः । राजगृहं नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । श्रेणिको राजा ।
स्वामी समवसृतः । परिषत् निर्गता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुक्रो
महाग्रहः शुक्रावतंसके विमाने शुक्रे सिंहासने चतसृभिः सामानिकसाहस्रीभिः,
यथैव चन्द्रस्तथैवागतः, नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगतः । भदन्त ! इति
कूटाकारशाला । पूर्वभवपृच्छा ।

एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये वाराणसी नाम
नगरी अभवत् । तत्र खलु वाराणास्यां नगर्यां सोमिलो नाम ब्राह्मणः
परिवसति, आढ्यो यावत् अपरिभूतः ऋग्वेद० यावत् सुप्रतिष्ठितः । पार्श्वः
समवसृतः । परिषत् पर्युपास्ते । ततः खलु तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य

अरहा पुरिसादाणीए पुब्बाणुपुब्बि जाव अंबसालवणे विहरइ, तं गच्छामि णं पासस्स अरहओ अंतिए पाउब्भवामि । इमाइं च णं एयाव्वाइं अट्ठाइं हेऊइं जहा पण्णत्तीए ।

सोमिलो निग्गओ खंडियविहूणो जाव एवं वयासी-जत्ता ते भंते ! ? जवणिज्जं च ते ? पुच्छा, सरिसवया, मासा, कुलत्था, एगे भवं, जाव संबुद्धे सावगधम्मं पडिवज्जित्ता पडिगए । तए णं पासे अरहा अण्णया कयाइ वाणारसीओ नयरीओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

तएणं से सोमिले माहणे अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणयाए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवर्द्धमाणेहिं २, सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २, मिच्छत्तं च पडिवज्जे ।

अस्याः कथायाः लब्धार्थस्य सतः अयमेतद्रूपः आध्यात्मिक ४, यावत् समुदपद्यत-एवं खलु पार्श्वः अर्हन् पुरुषादानीयः पूर्वानुपूर्व्या यावत् आम्रशालवने विहरति, तद् गच्छामि खलु पार्श्वस्य अर्हतोऽन्तिके प्रादुर्भवामि, इमान् च खलु एतद्रूपान् अर्थान् हेतून् यथा प्रज्ञप्त्याम् ।

सोमिलो निर्गतः खण्डिकविहीनो यावत् एवमवादीत्-यात्रा ते भदन्त ! ?, यापनीयं च ते ? पृच्छा, सदृशवयसः, माषाः, कुलत्थाः, एको भवान्, यावत् संबुद्धः श्रावकधर्मं प्रतिपद्य प्रतिगतः । ततः खलु पार्श्वः अर्हन् अन्यदा कदाचित् वाराणसीतो नगरीतः आम्रशालवनाच्चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्जनपदविहारं विहरति ।

ततः स सोमिलो ब्राह्मणः अन्यदा कदाचित् असाधुदर्शनेन च अपर्युपासनतया च मिथ्यात्वपर्यवैः परिवर्धमानैः २, सम्यक्त्वपर्यवैः परिहीयमानैः २ मिथ्यात्वंच प्रतिपन्नः ।

सुन्दरबोधिनो टोका वर्ग ३ अध्या. ३ अङ्कति गाथापति

२७१

तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्त-
कालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव-
समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे
अच्चंतमाहणकुलप्पसूए । तएणं मए वयाइं चिण्णाइं, वेया य अहीया, दारा-
आहूया, पुत्ता जणिया, इड्ढीओ समानीयाओ, पशुवधा कया, जन्ना जेट्ठा,
दक्खिणा दिन्ना, अतिही पूजिया, अग्गी हूया, जूपा निक्खिता, तं सेयं
खलु ममं इयाणिं कल्लं जाव जलंते वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे
अंबारामा रोवावित्तए, एवं माउल्लिगा, बिल्ला, कविट्ठा, चिंचा, पुष्फारामा
रोवावित्तए । एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते वाणारसीए,
नयरीए बहिया अंबारामे य जाव पुष्फारामे य रोवावेइ । तएणं बहवे
अंबारामा य जाव पुष्फारामा य अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्ज-

ततः खलु तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य अन्यदा कदाचित्
पूर्वरात्रापररात्रकालसमये कुटुम्बजागरिकां जाग्रतोऽयमेतद्रूप आध्यात्मिकः
यावत् समुदपद्यत-एवं खलु अहं वाराणस्यां नगर्यां
सोमिलो नाम ब्राह्मणोऽत्यन्तब्राह्मणकुलप्रसूतः । ततः खलु मया व्रतानि
चीर्णानि वेदाश्चाधीताः, दारा आहूताः, पुत्रा जनिताः, ऋद्धयः समानीताः,
पशुवधाः कृताः, यज्ञा इष्टाः, दक्षिणा दत्ता, अतिथयः पूजिताः, अग्नयो
हुताः, यूपा निक्षिप्ताः, तच्छ्रेयः खलु ममेदानीं कल्ये यावत् ज्वलति
वाराणस्यां नगर्यां बहिर्वहून् आम्रारामान् रोपयितुम्, एवं मातुल्लिङ्गान्,
बिल्वान्, कपित्थान्, चिञ्चान्, पुष्पारामान् रोपयितुम् । एवं संपेक्षते,
संपेक्ष्य कल्ये यावत् ज्वलति वाराणस्यां नगर्यां बहिः आम्रारामांश्च यावत्
पुष्पारामांश्च रोपयति । ततः खलु बहव आम्रारामाश्च यावत् पुष्पारामाश्च
अनुपूर्वेण संरक्ष्यमाणाः, संगोप्यमानाः, संवर्द्ध्यमानाः आरामाः जाताः

૨૭૨

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

માણા સંવર્ધિયમાણા આરામા જાયા, કિણ્હા કિણ્હોભાસા જાવ રમ્મા
મહામેહનિકુરંબભૂયા પત્તિયા પુષ્પિયા ફલિયા હરિયગરેરિજ્જમાણસિરીયા
અર્ધ ૨ ઉવસોમેમાણા ૨ ચિદંતિ ॥ ૩ ॥

કૃષ્ણાઃ કૃષ્ણાવભાસા યાવત્ રમ્યા મહામેઘનકુરમ્બભૂતાઃ પત્રિતાઃ પુષ્પિતાઃ
ફલિતાઃ હરિતકારારાજ્યમાનશ્રીકાઃ અતીવાતીવ ઉપશોભમાના ઉપશોભમાના-
સ્તિષ્ઠન્તિ ॥ ૩ ॥

ટીકા—

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ. ઉત્કેષકઃ=પ્રારમ્ભવાક્યં યથા—‘જઈણં મંતે !
સમણેણં જાવ સંપત્તેણં દોચ્ચસ્સ અજ્ઞયણસ્સ પુષ્પિયાણં અયમદ્દે પન્નત્તે,

તૃતીય અધ્યયન.

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ—

હે ભદન્ત ! યાવત્ સિદ્ધિગતિસ્થાનકો પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને
પુષ્પિતાકે દ્વિતીય અધ્યયનમેં પૂર્વોક્ત અર્થોંકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ તો હે ભદન્ત !
તૃતીય અધ્યયનમેં ઉન્હોને કિન અર્થોંકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ?

હે જમ્બૂ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં રાજગૃહ નામક નગર થા ! ગુણશિલક

અથ ત્રીજો અધ્યયન.

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ.

હે ભદન્ત ! એ પ્રમાણે સિદ્ધિ ગતિ સ્થાનને પ્રાપ્ત એવા શ્રમણ ભગવાન
મહાવીરે પુષ્પિતાના દ્વિતીય અધ્યયનમાં પૂર્વોક્ત અર્થોંનું નિરૂપણ કર્યું છે તો હે
ભદન્ત ! ત્રીજા અધ્યયનમાં તેમણે કયા અર્થોંનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

હે જમ્બૂ ! તે કાલે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. ગુણશિલક નામે

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૩ અન્ય. ૩ અક્ષતિ ગાથાપતિ

૨૭૩

તત્ત્વસ્સણં મંતે ! અઙ્ગયણસ્સ પુપ્ફિયાણં સમણેણં જાવ સંપત્તેણં કે અદ્દે પપ્પત્તે ? । एवं खलु जंबू ! तेणं काळेणं २ रायगिहे' इत्यादि । मादु-

નામકા ચૈત્ય થા । ઉસ નગરીમેં શ્રેણિક નામકે રાજા થે । વહાં ભગવાન મહાવીર પ્રમુ પધારે । પરિષદ ધર્મે કથા શ્રવણ કરનેકો નિકલી ।

ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં શુક મહાગ્રહ શુકાવતંસક વિમાનમેં શુકસિંહાસન પર ચાર હજાર સામાનિક દેવોકે સાથ બેઠે હુણ થે । વહ શુક મહાગ્રહ ચન્દ્ર ગ્રહ સમાન ભગવાનકે પાસ આવે ઓર નાટ્યવિધિ દિસાકર વૈસે હી ચલે ગયે । ગૌતમકો જિજ્ઞાસા હુઈ કિ હે ભદન્ત ! યહ શુક મહાગ્રહ ઇસ પ્રકાર દેવતાઓકે દ્વારા નાટ્યવિધિ દિસાકર સબકો અન્તર્હિત કરકે અકેલે રહ ગયે યહ બડે આશ્ચર્યકી વાત હૈ ।

ભગવાને કહા—

હે ગૌતમ ! કૂટાકારશાલા—પર્વત શિખરકે સમાન ઝૂંચે વિશાલ મકાનમેં

તેમાં ચૈત્ય હતું. તે નગરમાં શ્રેણિક નામે રાજા હતા. ત્યાં ભગવાન મહાવીર પ્રમુ પધાર્યા. પરિષદ ધર્મ કથાનું શ્રવણ કરવા નીકળી.

તે ઠાલે તે સમયે શુક મહાગ્રહ શુકાવતંસક વિમાનમાં શુક સિંહાસન ઉપર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે બેઠા હતા. તે શુક મહાગ્રહ ચન્દ્રગ્રહની પેઠે ભગવાનની પાસે આવ્યા અને નાટ્ય વિધિ દેખાડીને એમજ ચાલ્યા ગયા.

ગૌતમને જિજ્ઞાસા થઈ કે હે ભદન્ત ! આ શુક મહાગ્રહ આ પ્રકારે દેવતાઓ દ્વારા નાટ્ય વિધિ દેખાડી બધાને અન્તર્હિત કરી એકલા રહી ગયા આ બહુ આશ્ચર્યની વાત છે.

ભગવાને કહ્યું:—

હે ગૌતમ ! કૂટાકારશાલા—પર્વત શિખરની પેઠે એમાં વિશાલ મકાનમાં

२७४

३ पुष्पितासूत्र

वर्षा आदि के भयसे बिखरा हुआ जन समूह जिस प्रकार अन्तर्हित होजाता है उसी प्रकार शुक्रकी वैक्रयिकशक्तिसे उत्पन्न देवगण नाटक दिखाकर उनकी देहमें प्रविष्ट हो गये ।

गौतम स्वामीने पूछा—

हे भगवन् ! यह शुक्र महाग्रह अपने पूर्व जन्ममें कौन थे ?

हे गौतम ! उस काल उस समयमें वाराणसी नामकी नगरी थी । उस नगरीमें सोमिल नामका ब्राह्मण रहता था । वह ब्राह्मण आढ्य यावत् अपरिभूत था । वह ऋग्वेद आदि वेद तथा उनके अङ्ग उपाङ्गमें परिनिष्ठित था । उस नगरीमें भगवान् पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर पधारे । परिषद् धर्मकथा सुननेके लिये भगवानके पास गयी ।

भगवानके आनेका वृत्तान्त सुनकर उस वाराणसी नगरीमें रहनेवाले सोमिल ब्राह्मणके हृदयमें इस प्रकार आध्यात्मिक—विचार उत्पन्न हुआ कि मुमुक्षु जनोके

वरसाहना लयथी विभरार्ध गयेला जन समूह जेवी रीते अन्तर्हित थय जय छे तेवीज रीते शुक्रनी वैक्रयिक शक्तिथी उत्पन्न थयेला देवगण नाटक देखाडी तेनाज देहमां समाध गया.

गौतमे पूछथुः—

हे भगवन् ! आ शुक्रमहाग्रह तेना पूर्वजन्ममां केषु हुता ?

हे गौतम ! ते काले ते समये वाराणसी नामे नगरी हुती ते नगरीमां सोमिल नामे ब्राह्मण रहतेो हुतेो. ते ब्राह्मण आढ्य यावत् अपरिभूत हुतेो. ते ऋग्वेद वगेरे वेद तथा तेनां अंग अने उपांगमां परिनिष्ठित हुतेो. ते नगरीमां भगवान पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर पधार्या परिषद् धर्मकथा सांभणवा भाटे भगवान पासो गय.

भगवानना आववाना समाचार सांभणी ते वाराणसी नगरीमां रहेवावाणा सोमिल ब्राह्मणना हृदयमां आ प्रकारनेो आध्यात्मिक विचार उत्पन्न थयेो के

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૩ અર્જુનિ ગાથાપતિ

૨૭૫

ભવમિ=ઉપસ્થિતો ભવમિ, અર્થાન્=આત્મકલ્યાણરૂપાન્ હેતૂન્=કારણાનિ, યદ્વા-હેતૂન્=અનુમાનસ્ય પશ્ચાવયવવાક્યરૂપાન્, યથા પ્રજ્ઞપ્ત્યાં=વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞપ્ત્યાં ભગવતીસૂત્રે તથા વિજ્ઞેયમ્ । સ્વણ્ડિકવિહીનઃ=શિષ્યરહિતઃ, સોમિ-લો બ્રાહ્મણઃ પાર્શ્વનાથમુપેતઃ એવં=વક્ષ્યમાણમ્ અવાદીત-હે ભદન્ત ! તે=તવ યાત્રા વર્ત્તે ?, તે યાપનીયં વર્ત્તે કિમ્ ? ઇતિ, તથા 'સરિસવયા માસા કુલત્યા એ ભક્ત્રેયા વા અભક્ત્રેયા' ઇતિ, તથા 'એ ભવં, દુવે ભવં'

આશ્રયણીય અર્હત્ પાર્શ્વનાથ તીર્થંકર તીર્થંકરોની મર્યાદાનો પાલન કરતે હુએ યાવત્ આમ્રશાલ વનમેં પધારે હેં ।

હસ લિયે જાઉં ઓર ભગવાન પાર્શ્વનાથકે સમીપ ઉપસ્થિત હોઉં । ઓર ઉનસે અનેકાર્થક શબ્દોકા અર્થ તથા હેતુ=કારણ અથવા અનુમાનકે પશ્ચાવયવ વાક્યોકો પૂછું । એસા વિચાર કર શિષ્યોકો સાથ લિયે બિના અકેલા હી ભગવાનકે પાસ આયા ઓર હસ પ્રકાર ભગવાનસે પ્રશ્ન કિયા-હે ભદન્ત ! આપકે યાત્રા હૈ ? આપકે યાપનીય હૈ ? 'સરિસવયા, માસ, ઓર કુલત્ય' ભક્ત્ર હેં યા અભક્ત્ર ? આપ એક હેં યા દો ? હત્યાદિ પ્રશ્ન કિયા ।

સુસુક્ષ્મનોના આશ્રયણીય અર્હત્ પાર્શ્વનાથ તીર્થંકર તીર્થંકરોની મર્યાદાનું પાલન કરતા અહીં આમ્રશાલ વનમાં પધાર્યા છે.

આ માટે હું જઈને ભગવાન પાર્શ્વનાથની પાસે ઉપસ્થિત થાઉં અને તેમને અનેક અર્થવાળા શબ્દોના અર્થ તથા હેતુ = કારણ અથવા અનુમાનના પંચાવયવ વાક્યો પૂછું. આવો વિચાર કરી શિષ્યોને પોતાની સાથે લીધા વગર-એકલાજ-ભગવાનની પાસે આવ્યો અને આ પ્રકારે ભગવાનને પ્રશ્ન કર્યો:—

હે ભદન્ત ! આપને યાત્રા છે ખરી ? આપને યાપનીય છે ? 'સરિસવયા, માસ, અને કુલત્ય' ભક્ત્ર છે કે અભક્ત્ર ? આપ એક છો કે બે ? હત્યાદિ પ્રશ્નો કર્યા.

૨૭૬

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

इत्यादि च सोमिलो यत्पृष्ठवान् तच्छलेनोपहासार्थम् । 'यात्रा' इत्यस्य संयममार्गेषु प्रवृत्तिरिति । 'यापनीयम्' इत्यस्य मोक्षमार्गे गच्छतां प्रयोजक इन्द्रियवश्यत्वलक्षणो धर्म इति । 'सरिसवया' इत्यस्य सदृशवयसः सर्षपाश्च भक्ष्या वा अभक्ष्या इति । 'मासा' इत्यस्य माषाः पञ्चगुञ्जामानविशेषाः, धान्यविशेषाः 'उडद' इति प्रसिद्धाः, मासाः=कालविशेषाश्चेति । 'एगे भवं' इत्यस्य 'एको भवान्' इत्येकत्वाभ्युपगमे आत्मनः कृते

यहाँ 'यात्रा' का अर्थ है संयम मार्गमें प्रवृत्ति ।

'यापनीय' का अर्थ है—मोक्ष मार्गमें जानेवालोंके प्रयोजक इन्द्रिय और मनका वश करने रूप धर्म ।

'सरिसवया' का अर्थ है—समान अवस्थावाला और सरसों ।

'मास' का अर्थ है—मास=काल विशेष, माष=उडद, माष=प्राचीन रीतिसे पाँच गुञ्जावाला मान विशेष ।

'एको भवान्' इसका अभिप्राय है—यदि भगवान् पार्श्वનાથ આત્માની એકતા માન લેંગે તો મેં શ્રોત્ર આદિકે જ્ઞાન ઓર અવયવોસે આત્માની અનેકતા સિદ્ધ કરુંગા ।

અહીં 'યાત્રા' નો અર્થ છે સંયમ માર્ગમાં પ્રવૃત્તિ.

'યાપનીય' નો અર્થ છે મોક્ષમાર્ગમાં જાવાવાળાઓના પ્રયોજક ઇન્દ્રિય અને મનને વશ કરવારૂપી ધર્મ.

'સરિસવયા' નો અર્થ છે સમાન અવસ્થાવાળા અને સરસો.

'માસ' નો અર્થ છે માસ=કાલવિશેષ, માસ=અડદ, માસ=પ્રાચીન રીત પ્રમાણે પાંચ રતી-ચણોઠીવાલાં માનવિશેષ.

'एको भवान्' આનો એવો મતલબ છે કે જો ભગવાન પાર્શ્વનાથ આત્માની એકતા માની લેશે હું શ્રોત્ર આદિનું જ્ઞાન તથા અવયવોથી આત્માની અનેકતા સિદ્ધ કરીશ.

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ३ अङ्गति गाथापति

२७७

भोत्रादिज्ञानानामवयवानाञ्चात्मनोऽनेकलोपलब्ध्या एकत्वं दूषयिष्यामीत्यभि-
प्रायकस्य, 'दुवे भवं' इत्यस्य द्वौ भवन्ताविति द्वित्वस्वीकारे एकत्वविशिष्ट-
स्यार्थस्य द्वित्वेन सहात्यन्तविरोधाद् द्वित्वं दूषयिष्यामीत्यभिप्रायकस्य च
एतत्प्रभृतिप्रश्नस्य तत्तदर्थं भगवानवधार्य निखिलदोषरहितं स्याद्वादपक्षमाश्रि-
त्योत्तरमदात् । एतद्विषये विशेषजिज्ञासायां भगवतीसूत्रस्य—अष्टादशशतक-
दशमोद्देशकादवगन्तव्यम् । 'अत्यन्तब्राह्मणकुलप्रसूतः=अत्यन्तं=निरति-
शयितं यद् ब्राह्मणकुलं तत्र प्रसूतः=उत्पन्नः विशुद्धब्राह्मणकुलोत्पन्न इति

'द्वौ भवन्तौ' इससे यदि दो आत्मा मानेंगे तो मैं उसका भी खण्डन
करूंगा । क्यों क जो एक है वह दो कभी हो ही नहीं सकता ।

इत्यादि सोमिल ब्राह्मणका प्रश्न सुनकर उन प्रश्नोंका उत्तर भगवानने सभी
दोषोंसे रहित स्याद्वाद मतका आश्रयण करके दिया ।

इसका विस्तृत वर्णन भगवतीसूत्र के अठारहवें शतकके दशवें उद्देशमें
देख लेना चाहिये ।

इस प्रकार छलपूर्वक प्रश्न करनेके बाद वह उचित उत्तर पाकर बोध युक्त
हो श्रावक धर्मको स्वीकार कर भगवान पार्श्वप्रभुके समीपसे अपने स्थानपर गया ।

'द्वौ भवन्तौ' आथी जे आत्मा जे मानथे तो हुं तेनु पणु भंडन
करीश. केमके जे ओके छे ते कही पणु जे यध ज न शके.

इत्यादि सोमिल ब्राह्मणना प्रश्न सांभली तेना जवाबे। भगवाने सर्वे
दोषोथी रहित स्याद्वादमतनु आश्रयण करीने आभ्या.

आनु विस्तारपूर्वकनु वर्युन भगवती सूत्रना अठारभा शतकना दशभा
उद्देशभां जेध लेवु जेधजे.

आ प्रकारे छलपूर्वक प्रश्न कर्या पछी ते उचित उत्तर पाभी जोधयुक्त यध.
श्रावक धर्मने स्वीकारीने भगवान पार्श्वनाथ प्रभुनी पासोथी पोताने स्थाने गथो.

૨૭૮

૩ પુષ્પિતાચર

યાવત્ । દારાઃ=સ્ત્રિયઃ આહૂતાઃ=પરિણયવિધિના સ્વીકૃતાઃ, યજ્ઞા ઇષ્ટાઃ=કૃતાઃ, દક્ષિણા=યજ્ઞસમાપ્તૌ કર્મણઃ સાજ્ઞતાસિદ્ધયર્થં દેયં દ્રવ્યં, દત્તા=બ્રાહ્મણેભ્યો વિતીર્ણાઃ । યૂપાઃ=યજ્ઞસ્તમ્ભાઃ નિશિષ્તાઃ=ભૂમૌ નિશ્વાતાઃ ।

એક સમય મગવાન પાર્શ્વપ્રભુ અર્હત્ વારાણસી નગરીકે આમ્રશાલ વન નામક ચૈત્યસે નિકલકર દેશમેં વિહાર કરને લગે ।

ઉસકે બાદ વહ સોમિલ બ્રાહ્મણ એક સમય અસાધુઓકે દર્શનસે તથા સુસાધુઓકી પર્યુપાસના નહીં કરનેસે એવં મિથ્યાત્વપર્યાયોકે બઢને ઔર સમ્યક્ત્વ પર્યાયોકે ઘટનેકે કારણ મિથ્યાત્વી હો ગયા ।

એક સમય મધ્ય રાત્રિમેં કુટુંબજાગરણા કરતે હુએ ઉસ સોમિલ બ્રાહ્મણકે હૃદયમેં ઇસ પ્રકારકા આધ્યાત્મિક યાવત્ મનમેં સંકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ કિ—મેં વારાણસી નગરીકા રહેનેવાલા અત્યન્ત ઉચ્ચ કુલમેં પેદા હુઆ બ્રાહ્મણ હૂં । મેંને વ્રત ગ્રહણ કિયે બેદ પડે, વિવાહ કિયા, પુત્રવાન બના, સમૃદ્ધિયોકો એકત્રિત કિયા, પશુવધ કિયા, યજ્ઞ કિયા, દક્ષિણા દી, અતિથિકી પૂજા કી, અગ્નિમેં હવન કિયા યૂપ=યજ્ઞીય

એક વખત મગવાન પાર્શ્વપ્રભુ અર્હત્ વારાણસી નગરીના આમ્રશાલ વન નામે ચૈત્યમાંથી નીકળીને દેશમાં વિહાર કરવા લાગ્યા.

ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ એક વખત અસાધુઓનાં દર્શનથી તથા સુસાધુઓની પર્યુપાસના ન કરવાથી અને મિથ્યાત્વ પર્યાયના વધવાથી તથા સમ્યક્ત્વ પર્યાયના ઘટવાથી મિથ્યાત્વી થઇ ગયો.

એક વખત મધ્યરાત્રિમાં કુટુંબ જાગરણ કરતાં કરતાં તે સોમિલ બ્રાહ્મણના હૃદયમાં આવા પ્રકારના આધ્યાત્મિક એટલે મનમાં સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયા કે—હું વારાણસી નગરીમાં રહેવાવાળો બહુ ઊંચા કુળમાં પેદા થયેલો બ્રાહ્મણ છું, મેં વ્રત ગ્રહણ કર્યાં છે, વેદ ભણેલો છું, લગ્ન કરી પુત્રવાન બન્યો, સમૃદ્ધિ એકઠી કરી, પશુવધ કર્યાં, યજ્ઞ કર્યાં, દક્ષિણા આપી, અતિથીની પૂજા કરી, અગ્નિમાં હવન કર્યાં, યૂપ=યજ્ઞીય કાષ્ટને ખોડ્યું, આ બધાં કાર્યો કર્યાં.

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ३ अङ्कति गायपति

२५९

हरितकराराज्यमानश्रीकाः=हरितको नीलवर्णों दूर्वादिवनस्पतिः तेन राराज्य-
माना=शोशुभ्यमाना श्रीः=छटा येषां ते हरितकराराज्यमानश्रीकाः अत एव
अतीवातीव=अत्यन्तं भृशम् उपशोभमाना उपशोभमानाः, तिष्ठन्ति=सन्ति,
शेषं सुगमम् ॥ ३ ॥

स्तम्भ को रोपा, इन सभी कार्यों को किया। अब मुझे उचित है कि मैं रात बीतने
पर प्रातःकालमें वाराणसी नगरीके बाहर बहुतसे आमके बगीचे लगाऊँ, एवं मातु-
लिङ्ग=बिजौरा, वेल, कपित्थ, (कबिठ), चिञ्चा=इमली और फूलोंका बगीचा लगाऊँ,
इस प्रकार विचार करता है।

रात बीतने पर सूर्योदय होते ही उसने वाराणसी नगरीके बाहर आमके
बगीचेसे लेकर फूलके बगीचा तक लगवाया। और वे बगीचे क्रमसे संरक्षित हो
संमोपित हो पूर्णरूपसे बगीचे हो गये। हरे और हरी भरी कांतिवाले, तथा बरसने
वाले नीले मेघवृन्दोंके समान नीलिमा युक्त, एवं पत्रित, पुष्पित, और फलित होकर
वे हरे भरे होनेके कारण अत्यन्त शोभायमान दीखने लगे ॥ ३ ॥

હવે મારે માટે યોગ્ય છે કે હું રાત્રિ પુરી થઈ જ્યારે સવાર પડે ત્યારે વારાણસી
નગરીની બહાર ખૂબ આંખાનાં વૃક્ષોનો બગીચો બનાવું તથા માતુલિંગ=બિજેરા,
વેલ, કપિત્થ, ચિંચા=આમલી તથા કુલોની વાડી બનાવું. આ પ્રકારે વિચાર કરે છે.

રાત્રિ વીતી સૂર્યોદય થતાં જ તેણે વારાણસી નગરીની બહાર આંખાના
બગીચાથી માંડીને કુલોની વાડી સુધી બધું બનાવ્યું અને તે બગીચા હળવે હળવે
સંરક્ષિત અને સંગોપિત થઈ પૂર્ણ રૂપમાં બગીચા થઈ ગયા. લીલા, લીલીછમ
કાન્તિવાળા, પાણીથી ભરેલા મેઘવૃન્દો (વાદળાં) હોય તેવા ઘનીભૂત રંગવાળા,
પત્રો તથા પુષ્પોવાળા અને ફળોવાળા હોવાથી તથા હરિયાળા હોવાથી બહુ
શોભાયમાન દેખાવા લાગ્યા. (૩).

मूलम्—

तएणं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-
 समयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप-
 ज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंत-
 माहणकुलप्पसूए, तए णं मए वयाइं चिण्णाइं जाव जूवा णिक्खित्ता,
 तए णं मए वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अंबारामा जाव पुष्पारामा
 य रोवाविया, तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोहकडा-
 हकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं घडावित्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं
 मित्तनाइ० आमंतित्ता तं मित्तनाइणियग० विउलेणं असण० जाव संमाणित्ता
 तस्सेव मित्त जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता तं मित्तनाइ जाव आपुच्छित्ता
 सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं गहाय जे इमे गंगाकूला

छाया—

ततः खलु तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्याऽन्यदा कदाचित्
 पूर्वरात्रापररात्रकालसमये कुटुम्बजागरिकां जाग्रतोऽयमेतद्रूप आध्यात्मिकः
 यावत् समुदपद्यत—एवं खल्वहं वाराणस्यां नगर्यां सोमिलो नाम
 ब्राह्मणः अत्यन्तब्राह्मणकुलप्रसूतः, ततः खलु मया व्रतानि धीर्णानि यावद्
 यूपा निक्षिप्ताः । ततः खलु मया वाराणस्या नगर्यां बहिर्वहव आम्रारामा
 यावत् पुष्पारामाश्च रोपितास्तच्छ्रेयः खलु ममेदानीं कल्ये यावज्ज्वलति
 सुबहुं लौहकटाहकडुच्छुकं ताम्रीयं तापसभाण्डं घटयित्वा विपुलमशनं पानं
 स्वाद्यं स्वाद्यं मित्रं ज्ञाति० आमन्य तं मित्र-ज्ञाति-निजक० विपुलेन
 अशन० यावत् सम्मान्य तस्यैव मित्र० यावत् ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा
 तं मित्रज्ञातियावत् आपृच्छ्य सुबहुं लौहकटाहकडुच्छुकं ताम्रीयं तापस-

सुन्दरप्रोक्षिणी टीका वर्ग ३ अध्या. ३ अर्जति गायपति

२८१

क्षामपत्या तावसा भवन्ति-तं जहा होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जम्हई सङ्गई
थाळई हुंबउट्टा दंतुक्खल्लिया उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा संपक्खालगा
दक्खिणकूला उत्तरकूला संखधमा कूळधमा मियलुद्धया हत्थितावसा उट्टंडा
दिसापोकखिणो वक्खवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबु-
भक्खिणो वायुभक्खिणो शेवाल्लभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा
पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकंदमूलतयपत्तपुप्फ-
फलाहारा जलामिसेयकटिणगायभूया आयावणार्हि पंचगितावेहि इंगाल-
सोल्लियं कंदुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरन्ति । तत्थ णं जे ते दिसापो-
क्खिया तावसा तेसिं अंतिए दिसापोकखियत्ताए पव्वइत्ताए । पव्वइए वि
य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि कप्पइ मे जाव-
जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिकखित्तेणं दिसाक्कवालेणं तवोकम्मेणं उट्ठं बाहाओ

भाण्डकं गृहीत्वा ये इमे गङ्गाकूलाः वानप्रस्थास्तापसा भवन्ति तद्यथा-
होत्रिकाः, पीत्रिकाः, कौत्रिकाः, यज्ञयाजिनः, श्राद्धकिनः, स्थालकिनः=
गृहीतभाण्डाः, हुण्डिकाश्रमणाः, दन्तोद्वल्लिकाः, उन्मज्जकाः, सम्मज्जकाः,
निमज्जकाः, संप्रक्षालकाः, दक्षिणकूलाः, उत्तरकूलाः, शङ्खध्माः, कूळध्माः,
मृगलुब्धकाः, हस्तितापसाः, उट्टण्डाः, दिशामोक्षिणः, पल्लवससः, बिल-
वासिनः, जलवासिनः, वृक्षमूलकाः, अम्बुभक्षिणः, वायुभक्षिणः, शेवाल-
भक्षिणः, मूलाहाराः, कन्दाहाराः, जगाहाराः, पत्राहाराः, पुष्पाहाराः,
फलाहाराः, बीजाहाराः, परिसटितकन्दमूलत्वक्पत्रपुष्पफलाहाराः, जला-
मिषेकटिणगात्रभूताः, आतापनाभिः पञ्चाश्रितापैः अङ्गारशौल्यकं, कन्दु-
शौल्यकमिव आत्मानं कुर्वाणा विहरन्ति । तत्र खलु ये ते दिशामोक्षका-
न्ताप्रसास्तेषामन्तिके दिशामोक्षकतया प्रव्रजितुम् । प्रव्रजितोऽपि च खलु
सन् इममेतद्रूपमिन्द्रियमिन्द्रादीभ्यामि-कल्पते मे श्रावजीवं षष्ठ-मष्टेनानिश्चितेन

पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तएत्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहिच्चा कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोह जाव दिसापोक्खिय-तावसत्ताए पव्वइए । पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारुवं अभिगग्हं अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ ४ ॥

दिक्चक्रवालेन तपःकर्मणा ऊर्ध्वं बाहू प्रगृह्य २ सूराभिमुखस्याऽऽतापनभूम्या-मातापयतो विहर्तुम् ।

इति कृत्वा एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य कल्ये यावज्ज्वलति सुबहुं लोह० यावत् दिशामोक्षकतापसतया प्रव्रजितः । प्रव्रजितोऽपि च खलु सन् इम-मेतद्रूपमभिग्रहमभिगृह्य प्रथमं षष्ठक्षपणमुपसंपद्य खलु विहरति ॥ ४ ॥

टीका—

‘तएणं तस्स’ इत्यादि । लौहकटाहकटुच्छुकं लौहं=लोहनिर्मितम् कटाहो=भाजनविशेषः, कटुच्छुको=दर्वी=परिवेष्टनाद्यर्थभाजनविशेषः, कटा-हकटुच्छुकयोः समाहारः, कटाहकटुच्छुकं लौहं च तत् इति कर्मधारये कृते तथा, गङ्गाकूलाः=गङ्गाकूलस्थाः गङ्गातीरवासिन इति यावत् ‘मञ्चाः

‘तएणं तस्स’ इत्यादि—

उसके बाद किसी दूसरे समय कुटुम्बजागरणा करते हुए उस सोमिल ब्राह्मणके हृदयमें इस प्रकार आध्यात्मिक-आत्म सम्बन्धी विचार उत्पन्न हुए कि—मैंने व्रत आदि किये यावत् स्तम्भ गाढे और मैं वाराणसी नगरीका अत्यन्त

‘तएणं तस्स’ इत्यादि.

त्यार पछी केछ भीजे वपते कुटुंभ नगरखु करतां करतां ते सोमिल ब्राह्मणुना हुइयभां आ प्रकारनो आध्यात्मिक-आत्म विचार उत्पन्न भयो के भे व्रत आदि कर्या, अज्ञस्तंभ जोडये अने हुं वाराणसी नगरीना गहुं गिया

सुन्दरबोधिनी. टोका वर्ग ३ अन्व. ३ अर्ज्ञेति गाथापति

२८३

‘क्रोशन्ति’ इत्यत्रेवात्र गङ्गाकूलपदस्य तत्स्ये लक्षणा बोध्या । यद्वा-गङ्गा-
कूलं वासत्वेनाऽस्याऽस्तीति ‘अर्श आदित्वादचप्रत्यये निष्पन्नोऽयं’ तेन

उच्च कुल प्रसूत ब्राह्मण हूँ, मैंने वाराणसी नगरीके बाहर बहुतसे आमके बगीचेसे लेकर फूल तकके बगीचे लगवाये अब मुझे उचित है कि रात बीतनेके बाद प्रातः-काल होते ही बहुतसी लोहेकी कड़ाहियाँ तथा कलछू एवं तापसोके लिये ताँबेके बर्तन बनवाकर विपुल अशन पान स्वाद्य स्वाद्य बनवाकर अपने मित्र ज्ञाति आदियों को आमन्त्रित करूँ ।

सनन्तर वह ब्राह्मण उन बर्तनोंको बनवाकर विपुल अशन पान स्वाद्य स्वाद्य तैयार कराकर अपने मित्र ज्ञाति बन्धुओंको आमन्त्रित कर और उन्हें जमाकर तथा उन्हें सम्मानित कर और उन्हीं मित्र-ज्ञाति-स्वजन बन्धुओंके सामने अपने ज्येष्ठपुत्रको कुटुम्बका भार देकर, अपने उन सभी मित्र-ज्ञाति-बन्धुओं से पूछकर मैं बहुतसी लोहेकी कड़ाहियों, कलछू और ताँबेके बने हुए पात्रोंको

कुणभां न-भेदो आदाय धुं. मे' वाराणसी नगरीनी पहार धरा आंभाना भगीआथी भांडीने कुलवाडी सहित जनाव्यां छे. डवे भारे भाटे योग्य छे डे रात बीती गया पछी प्रातःकाल यतांज धरणी न लोढानी कडाछो, कडछीओ आदि तथा तापसोने भाटे तांभाना वासय जनावीने भूष आवापीनाना आद्य-स्वाद्य पदार्थो जनावरावीने भारा मित्र अने ज्ञातिभंधुओ आदिने आमंत्रण आयुं.

पछी ते आदाये ते प्रभाये वासय जनावरावी भूष आनपान आद्य-स्वाद्य तैयार करावी पोताना मित्र अने ज्ञातिभंधुओने आमंत्रण आयुं ने नभाडया तथा तेभनु सन्मान करी ते मित्र-ज्ञाति-स्वजन भंधुओनी साथे पोताना मोटा पुत्रने बोझावी कुटुंओने। भार तेना उपर नापी, पोताना ते सधना मित्र-ज्ञाति भंधुओने पूछी हुं धरणी लोढानी कडाछो, कडछीओ तथा तांभानां जनावेदां

कूलशब्दस्य नपुंसकत्वेऽपि नेह पुंस्त्वानुपपत्तिः । होत्रिकाः=अग्निहोत्रिकाः,
पोत्रिकाः=वस्त्रधारिणो वानप्रस्थाः, कौत्रिकाः=भूमिशायिनो वानप्रस्थाः,
यज्ञयाजिनः=याज्ञिकाः, श्राद्धकिनः=श्राद्धाः, स्थालकिनः=भोजनपात्रधारिणः,
हुण्डिकाश्रमणाः=वानप्रस्थतापसविशेषाः, दन्तोदूखलिकाः=दशनैश्चर्बयित्वा
भोजनशीलाः, उन्मज्जकाः=उन्मज्जनमात्रेण ये स्नान्ति-उपरिष्ठादेव स्नानं
कुर्वन्ति ते तथा, सम्मज्जकाः=उन्मज्जनस्यैवासकृत् करणेन ये स्नान्ति-
हस्तैः पुनः पुनर्जलं गृहीत्वा स्नानं कुर्वन्ति ते तथा, नमज्जकाः=स्नानार्थं
निमग्ना एव जले क्षणमात्रं तिष्ठन्ति ते तथा, संप्रक्षालकाः=ये गात्रं
मृत्तिकाघर्षणपूर्वकं जलेन प्रक्षालयन्ति ते तथा, दक्षिणकूलाः=ये गङ्गाया

लेकर जो गङ्गा तीरवासी वानप्रस्थ तापस हैं जैसे-होत्रिक=अग्निहोत्री, पोत्रिक=
वस्त्रधारी वानप्रस्थ, कौत्रिक=भूमिशायी वानप्रस्थ, यज्ञयाजी=यज्ञ करनेवाले,
श्राद्धकी=श्राद्ध करनेवाले वानप्रस्थ, स्थालकिनः=पात्र धारण करनेवाले, हुण्डिका-
श्रमण=वानप्रस्थतापस विशेष, दन्तोदूखलिक=दांतसे केवल चबाकर खानेवाले,
उन्मज्जक=उन्मज्जन मात्रसे स्नान करनेवाले, अर्थात् पानी डालकर स्नान करनेवाले,
सम्मज्जक=बार बार हाथसे पानीको उछालकर नहानेवाले, निमज्जक=पानीमें डूबकर
नहानेवाले, संप्रक्षालक=मिट्टीसे शरीरको मलकर नहानेवाले, दक्षिणकूल=गङ्गाके

वासवाले। अर्धने ने गंगा तीरे वसनाश वानप्रस्थ तापस छे नेवाडे—होत्रिक=
अग्निहोत्री, पोत्रिक=वस्त्रधारी वानप्रस्थ, कौत्रिक=भूमिशायी वानप्रस्थ, यज्ञयाजी=
यज्ञ करवावाणा, श्राद्धकी=श्राद्ध करवावाणा वानप्रस्थ, स्थालकी=पात्र धारण करवा-
वाणा, हुण्डिका=श्रमण वानप्रस्थ तापस विशेष. दन्तोदूखलिक=दांतवडे केवल आवीने
भावावाणा, उन्मज्जक=उन्मज्जन मात्रधी स्नान करवावाणा अर्थात् पाणी नापीमे
स्नान करवावाणा, सम्मज्जक=बार बार हाथेथी पाणीने उछालीने नहावावाणा,
निमज्जक=पाणीमां डूबडी भारी नहावावाणा, संप्रक्षालक=भाटीधी शरीरने बोलीसे
नहावावाणा, दक्षिणकूल=गंगा नदीना दक्षिण किनारे रहेवावाणा, उत्तरकूल=गंगा

सुन्दरबीचिनी टीका वर्ग ३ अध. ३ अकृति गाथापति

२८९

दक्षिणतटवासिनस्ते तथा, उत्तरकूलाः=ये गङ्गाया उत्तरतटवासिनस्ते तथा, शङ्खध्माः=शङ्खं ध्मात्वा=नादयित्वा ये भुञ्जते ते तथा, कूलध्माः=कूले=तटस्थित्वा शब्दं कृत्वा ये भुञ्जते ते कूलध्माः, मृगलुब्धकाः=मृगं हत्वा तेनैव ये अनेकदिवसं भोजनतो यापयन्ति ते तथा, हस्तितापसाः=हस्तिनं मारयित्वा तेनैव चिरकालं भोजनतो यापयन्ति ते तथा, उद्दण्डाः=ऊर्ध्वकृतदण्डा एव ये संचरन्ति ते तथा, दिशाप्रोक्षिणः=उदकेन दिशःप्रोक्ष्य ये फलपुष्पादिकं समुच्चिन्वन्ति ते तथा, वल्कवाससः=वृक्षत्वग्स्त्रधारिणः, बिलवासिनः=भूमिच्छिद्रवासिनः, जलवासिनः=जले निषण्णा एव ये तिष्ठन्ति ते तथा, वृक्षमूलकाः=तस्तले ये निवसन्ति ते तथा, अम्बुभक्षिणः=जलाहाराः,

दक्षिण तटपर रहनेवाले, उत्तरकूल=गङ्गाके उत्तर तटपर रहनेवाले, और शङ्खध्मा=शङ्ख बजाकर भोजन करनेवाले, कूलध्मा=तटपर स्थित होकर आवाज करते हुए भोजन करनेवाले, मृगलुब्धक=मृगको मारकर उसीके मांससे जीवन बीतानेवाले, हस्तितापस=हाथीको मारकर उसके मांससे जीवन बीतानेवाले, उद्दण्ड=दण्डको ऊँचा उठाकर चलनेवाले, दिशाप्रोक्षी=दिशाको जलसे सींचकर उसपर पुष्प फल आदिको चूनकर रखनेवाले, वल्कलवासस=वृक्षकी छालको धारण करनेवाले, बिलवासी=भूमिके नीचेकी खोहमें रहनेवाले, जलवासी=जलमें ही रहनेवाले, वृक्षमूलक=वृक्षके मूलमें रहनेवाले, अम्बुभक्षी=जल मात्रका आहार करनेवाले, वायु-

नदीने उत्तर किनारे रહેवावाणा तथा शङ्खध्मा=शंख वगाडीने भोजन करवावाणा कूलध्मा=किनारा उपर भेसी रहनेवाला भोजन करता भोजन करवावाणा, मृगलुब्धक=मृगने भारीने तेना मांसथी जीवन बीताउवावाणा, हस्तितापस=हाथीने भारीने तेना मांसथी जीवन बीताउनारा, उद्दण्ड=दंडने छेया उपाडी आलनारा, दिशाप्रोक्षी=दिशाओने पाणीथी मारन करीने (पाणी छांटीने) तेना उपर पुष्पफल वीणीने राखनारा, वल्कलवासस=वृक्षनी छालने धारण करवावाणा, बिलवासी=भूमिनी नीचेनी शुक्ष्मां रडेनारा, जलवासी=जलमां रडेनारा, वृक्षमूलक=वृक्षना मूलमां रडेवावाणा, अम्बुभक्षी=जलमात्रनो आहार लेनारा, वायुभक्षी=वायु मात्रथी

૩૮૬

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

વાયુમક્ષિણઃ=પથનાહારાઃ, શેવાલમક્ષિણઃ=જલોપરિસ્થિતહરિતવનસ્પતિ
 વિશેષભોજિનઃ, મૂલાહારાઃ=મૂલકમક્ષિણઃ, કન્દાહારાઃ=સૂરણાદિકન્દમક્ષિણઃ,
 ત્વગાહારાઃ=નિમ્બાદિત્વગમક્ષિણઃ, પત્રાહારાઃ=ચિલ્વાદિપત્રમક્ષિણઃ, પુષ્પાહારાઃ=
 કુન્દશોભાઞ્જનાદિપુષ્પમક્ષિણઃ, ફલાહારાઃ=કદલીફલાદિભોજિનઃ, બીજા-
 હારાઃ=કૂષ્માળાદિબીજભોજિનઃ, પરિશટિતકન્દમૂલત્વક્ષપત્રપુષ્પફલાહારાઃ=
 વિનષ્ટકન્દમૂલત્વક્ષપત્રપુષ્પફલભોજિનઃ, જલામિષેકકઠિનગાત્રભૂતાઃ=
 સ્નાત્વા ૨ જલામિષેકકઠોરશરીરાઃ, આતાપતામિઃ પશ્ચાગ્નિતાપૈશ્વ અક્ષાર-
 શૌલ્યં=અક્ષારે=વઢ્ઠો શૂલે માંસં નિષજ્ય પક્કં, કન્દુશૌલ્યં=કન્દુઃ=તળડુલાદિ-

મક્ષી=વાયુ માત્રસે જીવીત રહેનેવાલે, શેવાલમોજી=જલમેં ઉત્પન્ન શેવાલ
 =સેમારકો-સ્વાનેવાલે, મૂલાહાર=મૂલ સ્વાનેવાલે, કન્દાહાર=સૂરન આદિ કન્દકા
 આહાર કરનેવાલે, ત્વગાહાર=નીમ આદિકી ત્વચા સ્વાનેવાલે, પત્રાહાર=બીલા આદિકે
 પત્તેકા આહાર કરનેવાલે, પુષ્પાહાર=કુન્દ સોહજન, ગુલાબ આદિ પુષ્પકા આહાર
 કરનેવાલે, ફલાહાર=કેલા આદિ ફલ સ્વાનેવાલે, બીજાહાર=કુમ્હડા આદિકા બીજ
 સ્વાનેવાલે, સડે હુણ કન્દ મૂલ ત્વચા, પત્તે, ફૂલ ઓર ફલ સ્વાનેવાલે, જલકે અમિ-
 ષેકસે કઠિન શરીરવાલે, સૂર્યકી અતાપના ઓર પશ્ચાગ્નિતાપસે અક્ષાર શૌલ્ય=(અંગા-
 રેમેં શૂલપર રસ્કર પકાયે હુણ માંસ) एवं કન્દુશૌલ્ય=(ચાવલ આદિ મૂંજનેકા

જીવન જીવનાશ, શેવાલમોજી=જલના ઉપરના ભાગમાં રહેલ લીલી વનસ્પતિ
 (સેવાળ) ખાવાવાળા, મૂલાહાર=મૂળ ખાવાવાળા, કન્દાહાર=સૂરણ વગેરે કંદના
 આહાર કરનારા, ત્વગાહાર=લીંબડા આદિની છાલ ખાવાવાળા, પત્રાહાર=ખિલીપત્ર
 આદિ પત્રોના આહાર કરવાવાળા, ફલાહાર=ફેળાં વગેરે ફળ ખાવાવાળા, પુષ્પાહાર=
 પુષ્પ-કુંદ, સરગવા ગુલાબ આદિ કુદોનો આહાર કરવાવાળા, બીજાહાર=કોળું
 વગેરેનાં બી ખાવાવાળા, સડી ગયેલાં કંદમૂળ, છાલ, પાન, ફુલ તથા ફળ ખાવા-
 વાળા, જલના અભિષેકથી કઠણ શરીરવાળા, સૂર્યની આતાપના અને પંચાગ્નિના
 તાપથી અંગારશૌલ્ય=દેવતામાં શૂળ ઉપર રાખીને પકાવેલાં માંસ અને કંદુશૌલ્ય-

મુન્દરણીચિની ટીકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૩ અર્જુનિ ગાથાપતિ

૨૮૭

મર્જનપાત્રમાત્રં શૂલં ચ તામ્યાં તન્ન વા ધૃતાદિના વહ્નો પક્કં કન્દુશૌલ્યમ્
 ઇવ=તદ્વદ્ આત્માનં કુર્વાણા વિહરન્તિ=અવતિષ્ઠન્તિ । ‘તત્થળં જે’ ઇત્યાદિ-
 અનિશ્ચિત્તેન=અવિચ્છિન્નેન દિક્ચક્રવાલેન=તન્નામકેન તથાહિ-એકત્ર પારણકે
 પૂર્વસ્યાં દિશિ યાનિ ફલાદીનિ તાન્યાહત્ય શુદ્ધકે, દ્વિતીયે પારણે દક્ષિણસ્યાં

પાત્ર=કન્દુ, તેમાં ધૃત ઢાલકર શૂલપર પકાયે હુણ માંસ) કે સમાન અપને શરી-
 રકો કષ્ટ દેતે હુણ વિચરતે હૈં । તેમાં જો દિશાપ્રોક્ષક હૈં તેમાં પ્રવ્રજિત હોનેકી
 ઇચ્છા રસતા હૈં, ઓર પ્રવ્રજિત હોકર મી ઇસ પ્રકારકા અભિગ્રહ (પ્રતિજ્ઞા) લૂંગા
 કિ યાવજીવ અન્તર રહિત ષષ્ઠ-ષષ્ઠ (બેલા-બેલારૂપ) દિક્ચક્રવાલ તપસ્યા કરતા
 હુઆ સૂર્યકે અભિમુક્ષ મુજા ઉઠાકર આતાપનભૂમિમે આતાપના લેતા રહુંગા ।

ઇસ પ્રકાર મનમે સોચકર વિચાર કરતા હૈ, ઓર વિચાર કરકે સૂર્યોદય
 હોનેપર બહુતસી લોહેકી કઢાહિયૌ યાવત્ લેકર દિશા-પ્રોક્ષક તાપસકે પાસે આયા
 ઓર દિશા-પ્રોક્ષક તાપસ હો ગયા । તાપસ હોકર વહ સોમિલ પૂર્વોક્ત અભિગ્રહ
 ગ્રહણ કરકે પહલા ષષ્ઠ-ક્ષપણ તપ સ્વીકાર કર વિચરને લગા ।

આમા વગેરે સાંધવાનાં પાત્ર=કન્દુ તેમાં ઘી નાખીને શૂલ પર પકાવેલા માંસની
 પેઠે પોતાનાં શરીરને કષ્ટ દેતા જે વિચરે છે તેમાં જે દિશાપ્રોક્ષક છે તેઓની પાસે
 પ્રવ્રજીત બનવાની ઇચ્છા રાખું છું. તથા પ્રવ્રજીત થઇને પણ આ પ્રકારના
 અભિગ્રહ (પ્રતિજ્ઞા) લઇશ કે-જ્યાં સુધી જીવું ત્યાં સુધી અન્તર રહિત છઠ-છઠ
 (નબેલા-બેલાકુપ) દિક્ચક્રવાલ તપસ્યા કરતો સૂર્યની સામે હાથ ઊંચા રાખીને
 આતાપન ભૂમિમાં આતાપના લેતો રહીશ.

આમ વિચાર કરે છે. વિચાર કરીને સૂર્યોદય થતાં ઘણી લોકોની કઠાઇઓ
 કંડાઇઓ, તાંબાનાં તાપસ પાત્રો આદિ લઇને દિશાપ્રોક્ષક તાપસની પાસે આવ્યો
 અને દિશાપ્રોક્ષક તાપસ થઇ ગયો. તાપસ થઇને પણ તે સોમિલ પૂર્વોક્ત અભિ-
 ગ્રહ બરાબર લઇને પહેલા પશ્ચિમ તરફ સ્વીકાર કરીને વિચરવા લાગ્યો.

३. पुष्पितास्रज

तएणं से सोमिले माइणे रिसी पढमछट्टक्खमणपारणंसि आयावण-
भूमिण पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता वागलवत्थ नियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव

ततः खलु सोमिलो ब्राह्मण ऋषिः प्रथमषष्ठ्यपणपारणे आतापन-
भूम्यां प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुहं वल्कलं वस्त्रनिवसितः यत्रैव स्वक उटजस्त-
दिशि स्थितानि फलादीनि चाहत्याश्नातीत्येवं दिक्चक्रवालेन दिङ्मण्डलेन यत्र
तपःकर्मणि पारणकरणं भवति तत् तपःकर्म 'दिक्चक्रवालं' कथ्यते
तेन तपःकर्मणेति ॥ ४ ॥

यहां ' दिक्चक्रवाल ' शब्द आया है, इसका अभिप्राय है—तपस्वी तप-
स्याकी पारम्पाके लिये अपनी तपोभूमिकी चारों दिशाओंमें फलको इकट्ठा करके रखे।
बादमें तपस्याकी पहली पारणामें पूर्वदिशामें स्थित फलसे पारणा करे। दूसरा
पारणा आनेपर दक्षिण दिशामें स्थित फलसे पारणा करे। इसी प्रकार अन्य पारणा
आनेपर पश्चिम उत्तर दिशाओंमें स्थित फलका आहार करे। इस प्रकारकी पारणा
वाली तपस्याको ' दिक्चक्रवाल ' कहते हैं ॥ ४ ॥

અત્રે ‘દિશ્ ચક્રવાલ’ શબ્દ આવ્યો છે તેનો અભિપ્રાય એવો છે કે તપસ્વી તપસ્થાનાં પારણાં માટે પોતાની તપોભૂમિની ચારે દિશામાં ફલ લેર્ગા કરીને રાખે. પછી તપસ્થાનાં પહેલાં પારણામાં પૂર્વ દિશાએ રાખેલાં ફળથી પારણું કરે. બીજી પારણું કરવાનું આવે ત્યારે દક્ષિણ દિશામાં રાખેલાં ફળથી પારણું કરે. ત્રીજી રીતે બીજાં પારણાં આવે ત્યારે પશ્ચિમ-ઉત્તર દિશાઓમાં રાખેલાં ફળનો આહાર કરે. આ પ્રકારની પારણાંવાળી તપસ્થાને ‘દિશ્ ચક્રવાલ’ કહે છે. (૪).

सुन्दरबोधिनी टोका वर्ग ३ अध्या. ३ सोमिल ब्राह्मण

२८९

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसिं पुक्खेइ, पुक्खित्ता 'पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अमिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि ताणि अणुजाणउ'—त्ति कट्ठु पुरत्थिमं दिसं पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गिण्हइ, गिण्हित्ता किढिणसंकाइयं भरेइ, भरित्ता दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च समिहाकट्ठाणि य गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेदिं वड्ढेइ वड्ढित्ता उवळेवणसंमज्जनं करेइ, करित्ता दब्भकलसहत्थगए जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गंगं महानइं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जनं करेइ, करित्ता जलकिडुं करेइ, करित्ता जलामिसेयं करेइ, करित्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए

त्रैवोपागच्छति, उपागत्य किढिणसाङ्कायिकं गृह्णाति, गृहीत्वा पौरस्त्यां दिशं प्रोक्षति, प्रोक्ष्य "पौरस्त्याया दिशः सोमो महाराजः प्रस्थाने प्रस्थितमभिरक्षतु सोमिलब्राह्मणर्षिम्, यानि च तत्र कन्दानि च मूलानि च त्वचश्च पत्राणि च पुष्पाणि च फलानि च बीजानि च हरितानि च तानि अनुजानातु," इति कृत्वा पौरस्त्यां दिशं प्रसरति, प्रसृत्य यानि च तत्र कन्दानि च यावत् हरितानि च तानि गृह्णाति किढिणसाङ्कायिकं भरति, भृत्वा दर्भाश्च कुशाश्च पत्रामोटं च समित्काष्ठानि च गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव स्वक उटजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य किढिणसाङ्कायिकं स्थापयति, स्थापयित्वा वेदीं वर्धयति, वर्धयित्वा उपलेपनसम्मार्जनं करोति, कृत्वा दर्भकलसहस्तगतो यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य गङ्गां महानदीमवगाहते, अवगाह्य जलमज्जनं करोति, कृत्वा जलक्रीडां करोति, कृत्वा जलामिषेकं करोति, कृत्वा आचान्तः स्वच्छः परमशुचिभूतः देवपितृकृतकार्यः,

२९०

३ पुष्पितासत्र

देवपिउकयकज्जे दम्भकलसहत्थगए गंगाओ महानईओ पच्चुत्तरइ, पच्चु-
त्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दम्भेहि य कुसे-
हि य वालुयाए य वेदिं रएइ, रइत्ता सरयं करेइ, करित्ता अरणिं करेइ,
करित्ता सरणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गि पाडेइ, पाडित्ता अग्गि
संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गि उज्जालेइ,
उज्जालित्ता अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादहे । तं जहा—“ सकत्थं
वक्कलं ठाणं, सिज्जं भंडं कमंडलुं । दंडं दारुं तहप्पाणं, अहं ताइं समादहे ।”
महुणा य घणं य तंदुलेहि य अग्गि हुणइ, चरुं साहेइ, साहित्ता बलि-
वइस्सदेवं करेइ, करित्ता अतिहिपूयं करेइ, करित्ता तओ पच्छा अप्पणा
आहारं आहारेइ ॥ ५ ॥

दर्भकलशहस्तगतो गङ्गातो महानदीतः प्रत्यवतरति, प्रत्यवतीर्य यत्रैव स्वक
उटजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य दर्भैश्च कुशैश्च वालुकया च वेदिं रचयति,
रचयित्वा शरकं करोति, कृत्वा अरणिं करोति, कृत्वा शरकेणारणिं मथ्राति
मथित्वा अग्निं पातयति, पातयित्वा अग्निं संधुक्षते, संधुक्ष्य समित्काष्ठानि
प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य अग्निमुज्ज्वालयति, उज्ज्वालय, अग्नर्दक्षिणे पार्श्वे सप्ताङ्गानि
समादधाति, तद्यथा “सकत्थं १ वक्कलं २ स्थानं ३ शय्याभाण्डं ४
कमण्डलुम् ५ ॥, दारुदण्डं ६ तथाऽऽत्मानम् ७ अथ तानि
समादधीत ॥ १ ॥”

ततो मधुना च घृतेन च तण्डुलैश्चाग्निं जुहोति, चरुं साधयति,
साधयित्वा बलिवैश्वदेवं करोति, कृत्वाऽतिथिपूजां करोति, कृत्वा ततः
पश्चात् आत्मना आहारमाहारयति ॥ ५ ॥

टीका—

‘तएणं से सोमिले’ इत्यादि । ‘वागलवत्थ नियत्थे’ ,
 वाल्कलवत्थनिवसितः=वल्कल=वृक्षत्वक् तस्येदं वाल्कलं तच्च वस्त्रं वाल्कलवस्त्रं,
 तत् निवसितं=परिहितं येन स तथा परिहितवाल्कलवस्त्र इति तदर्थः ।

‘तेएणं से सोमिले’ इत्यादि—

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि पहला षष्ठ-क्षपण पारणेके दिन आतापन भूमि पर आता है । वहाँ आकर वह वल्कलवस्त्रधारी तापस जहाँ उसकी कुटी थी वहाँ आया । और आकर किट्टिणसंकायिक (कावड) लेता है । तथा पूर्व दिशाको जलसे प्रोक्षण (सिंचन) करता है और कहता है—‘ हे पूर्व दिशाके अधिपति सोम देव ’ मैं सोमिल ब्राह्मण ऋषि परलोक साधन मार्गमें चलनेके लिये प्रस्थित हूँ, मेरी रक्षा करो, तथा वहाँ जो कुछ कन्द, मूल, त्वचा, पत्र, पुष्प, फल, बीज और हरित वनस्पति हैं उन्हें लेनेकी आज्ञा दो’ । ऐसा कह कर पूर्व दिशामें जाता है । वहाँ जाकर जो कुछ वहाँ कन्द मूल आदि थे उनका

‘तएणं से सोमिले’ इत्यादि.

त्यार पछी ते सोमिल ब्राह्मण ऋषि पछेला षष्ठक्षपणुना पारणुं आवतां
 आतापन भूमि पर आवे छे. त्यां आवीने ते वल्कलवस्त्र धारणु करी रछेले
 तापस जयां पोतानी पणुं कुटी छती त्यां आव्यो. त्यां आवीने पोतानी कावड
 लीधी अने ते लधने पूर्व दिशाभां जलथी सिंचन करे छे अने कहे छे—‘ हे
 पूर्व दिशाना अधिपति सोम महाराज ! परलोकसाधन मार्गभां जवा भाटे
 प्रस्थित सोमिल ब्राह्मण ऋषिनी रक्षा करे अने त्यां जे कांछ कंद, मूल, छाल,
 पांढां, पुष्प, फल, बी तथा लीखोतरी वस्तु आदि छे ते लेवानी आज्ञा आपो’
 जेम कहीने पूर्व दिशाभां जाय छे. त्यां जधने जे कांछ कंद, मूल आदि छतां ते

आर्षत्वात् निवसितेति निष्ठान्तस्य पूर्वप्रयोगाभावः । उटजः=उटः=तृण-
पर्णादिस्तस्माज्जात उटजः=तापसानां पर्णशाला, किटिणसांकायिकं=किटिणं=
वंशमयस्तापसभाजनविशेषः, साङ्कायिकं=भारोद्वहनयन्त्रं किटिण-
साङ्कायिकं=कावटं 'कावड' इति प्रसिद्धम्, प्रस्थाने=परलोकसाधनमार्ग-
प्रयाणे, प्रस्थितं=प्रयातम् फलाद्याहरणार्थं प्रवृत्तमिति यावत्, पत्राऽऽमोटं=
तरुशाखामोटितपत्रसमूहं, वेदिं=अग्निहोत्रपूजादिस्थानं वर्धयति=प्रमार्ज-
यति, उपलेपनसम्मार्जनम्=मृत्तिकागोमयादिना भूमिसंस्कार उपलेपनम्
सम्मार्जनं=तृणादिनिर्मितसम्मार्जन्या भूमितः पिपीलिकादिकानां लघुकाय-

ग्रहण करता है और अपना कावड भरता है । बाद इसके दर्भ, कुश पत्रामोट=
तोड़े हुए पत्ते और समित्काष्ठ (हवनके लिये छोटी २ लकड़ियों) को लेकर
जहाँ अपनी कुटी थी वहाँ आया और अपनी कावड रखी । कावड रखकर वेदी
को बढ़ाया अर्थात् वेदी बनानेका स्थान निश्चय किया । बाद उपलेपन और पिपी-
लिका (कीड़ी मकोड़ी) आदि लघुकाय जीवोंकी रक्षाके लिये समार्जन करने लगा ।
अनन्तर दर्भ और कलशको हाथमें लेकर गङ्गाके तटपर आया और गङ्गामें प्रवेश
कर स्नान करने लगा, और जलमज्जन—डुबकी लगाना, जल क्रीडा=तैरना, तथा
जलाभिषेक करने लगा । बाद आचमन करके स्वच्छ और अत्यन्त शुद्ध हो देवता

ગ્રહણ કરે છે અને પોતાની કાવડ ભરે છે. પછી તેનાં દર્ભ, કુશ, પાંદડાં અને
સમિધ (હોમનાં કાષ્ટ) એ બધું લઈ જ્યાં પોતાની પર્ણકુટી હતી ત્યાં આવ્યો.
ત્યાં આવીને તેણે પોતાની કાવડ રાખી. કાવડ રાખીને વેદીને મોટી કરી અર્થાત્
વેદી બનાવવાનું વિસ્તૃત સ્થાન નિશ્ચિત કર્યું. પછી ઉપલેપન (લીપણ) તથા
કીડી આદિ લઘુકાય જીવોની રક્ષાને માટે સંમાર્જન કરવા લાગ્યો. પછી દર્ભ તથા
કલશને હાથમાં લઈને ગંગાને કાંઠે આવ્યો અને તેમાં પ્રવેશીને સ્નાન કરવા
લાગ્યો, તથા જલમજ્જન=ડુબકી લગાવવું, જલક્રીડા=તેરવું, અને જલાભિષેક કરવા
લાગ્યો. પછી આચમન કરીને સ્વચ્છ અને અત્યંત શુદ્ધ થઈને, દેવતા તથા

दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ३ सोमिक ब्राह्मण

२५३

जीवानामपसारणम्, देवपितृकृतकार्यः देवाश्च पितरश्च देवपितरस्तेषां कृतं= सम्पादितं कार्यं पूजनजलाञ्जलिदानप्रभृतिकृत्यं येन स तथा, दर्भकलशहस्तगतः=दर्भाः=कुशाः कलशः=घटश्च हस्ते गताः प्राप्ताः यस्य स तथा कुशकलशहस्त इति, शरकेण=निर्मन्थनकाष्ठेन अरणिं=घर्षणीयकाष्ठं मश्नाति=घर्षयति, अग्निं संयुक्षते=फूत्करोति । 'समादहे'=समादधाति=स्थापयति, अत्र लटोऽर्थे लिङ् सौत्रत्वात्, तद्यथा=तानि अङ्गानि यथा, चरुं=हवनार्थं दुग्धेन सह तण्डुलादिहविर्घृताभिधारितं साधयति=सम्पादयति, रन्धयतीति यावत् ॥ ५ ॥

और पितरोंका कृत्य करके दर्भ और कलश हाथमें लेकर गङ्गा महानदीसे बाहर निकला, और अपनी कुटीमें आया । वहाँ आकर दर्भ और कुश एक तरफ रखता है और बाइसे वेदी बनाता है । बादमें शरक=निर्मन्थन काष्ठ, जो अग्निके लिए घिसा जाता है; अरणि=निर्मन्थ्यमान काष्ठ, जिसपर अग्नि उत्पन्न करनेके लिए शरक घिसा जाता है, उन्हें तैयार करता है । अनन्तर शरक के द्वारा अरणि का मन्थन करता है, और मन्थन कर उससे अग्नि निकालता है फिर फूककर उसे सुलगाता है । उसमें समिध काष्ठ डालकर उसे प्रज्वलित करता है, प्रज्वलित कर अग्निके दाहिने पार्श्व (जीमणी बाजू) में सात अङ्गों (वस्तुओं) का स्थापन करता है, वे ये हैं—

पितृभ्योनां कर्मो करीने, इर्ल तथा कलश हाथमां लधने, गंगा महानदीमांथी भडार नीकल्यो. अने पोतानी कुटीमां आल्यो. त्मां आवीने इर्ल अने कुशने ओक तरश्च राखे छे तथा रेतीथी वेदी बनावे छे. पछी शरक=निर्मन्थन काष्ठ, जे अग्नि भाटे घसवामां आवे छे, ते तथा अरणि=निर्मन्थ्यमान काष्ठ, जेना उपर अग्नि उत्पन्न करवा भाटे 'शरक' घसाय छे ते तैयार करे छे. अने शरक द्वारा अरणीनुं मन्थन करे छे. मन्थन करी तेमांथी अग्नि प्रगट करे छे अने कुं'क मारी तेने सलगावे छे. तेमां समिधोनां काष्ठ नाभीने प्रज्वलित करे छे. अग्नि प्रज्वलित करीने अग्निनी नभस्पी आबुमां सात अंगो (वस्तुओ) नुं स्थापन करे छे—
जेवाडे :-

૨૧૪

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

મૂલ્ય—

તણ નં સે સોમિલે માહણરિસી દોઢંસિ છટ્ટકસ્વમણપારણગંસિ તં
ચેવ સવ્વં માણિયવ્વં જાવ આહારં આહારેહ, નવરં હમં નાણત્તં—દાહિણાણ
દિસાણ જમે મહારાયા પત્થાણે પત્થિયં અભિરક્કસુ સોમિલં માહણરિસિ

છાયા—

તતઃ સ્વલુ સ સોમિલો બ્રાહ્મણઋષિર્દ્વિતીયે ષષ્ઠક્ષપણપારણકે તદેવ
સર્વં મણિતવ્યં યાવદ્ આહારમાહારયતિ । નવરમિદં નાનાત્મ—દક્ષિણસ્યાં
દિશિ યમો મહારાજઃ પ્રસ્થાને પ્રસ્થિતમભિરક્ષતુ સોમિલં બ્રાહ્મણર્ષિં, યાશ્ચ

(૧) સકત્થ તાપસોંકા એક ઉપકરણ વિશેષ, (૨) વલ્કલ, (૩)
સ્થાન, (૪) શય્યા માળડ, (૫) કમળડલ, (૬) લકડીકા દળડા તથા (૭)
આત્મા અર્થાત્ અપનેકો અગ્નિકે દાહિની તરફ રહે ।

હસકે અનુસાર સવ વસ્તુકોકો યથાસ્થાન રલ્કર વહ મધુ ઘૃત ઓર તળ્ડુલ્સે
હવન કરતા હૈ । ચરુ=(ઘીસે ચુપડકર હવનકે લિયે પકાને યોગ્ય ચાવલ) કો
સિઘાતા હૈ । બલિ-વૈશ્વ દેવ (નિત્ય યજ્ઞ) કરતા હૈ । બાદમેં અતિથિકો મોજન
કરકર સ્વયં મોજન કરતા હૈ ॥ ૫ ॥

(૧) સકત્થ-તાપસોંકા એક ઉપકરણ વિશેષ, (૨) વલ્કલ (૩) સ્થાન,
(૪) શય્યામાડ, (૫) કમળડળ, (૬) લાકડીનો દંડ તથા (૭) આત્મા અર્થાત્
ચોતાને અગ્નિની જમણી બાજુએ રાખે.

આ પ્રમાણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાન રાખી મધ, ઘી તથા ચોખાથી
અગ્નિમાં હવન કરે છે. ચરુ=ઘીથી ચોપડીને હવનને માટે રાંધવાના ચાવલ સીઝાવે
છે. અગ્ને સિઝાવી બલિ વૈશ્વદેવ (નિત્ય યજ્ઞ) કરે છે. પછી અતિથિને જમાડી
ચોતે ભોજન કરે છે. (૫).

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ३ सोमिल ब्राह्मण

२९५

जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव अणुजाणउ त्ति कहु दाहिणं दिसिं पसरइ ।
एवं पच्चत्थिमे णं वरुणे महाराया जाव पच्चत्थिमं दिसिं पसरइ । उत्तरेणं
वेसमणे महाराया जाव उत्तरं दिसिं पसरइ । पुव्वदिसागमेणं चत्तारि
विदिसाओ भाणियव्वाओ जाव आहारं आहारेइ ।

तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयंसि अण्णिज्जागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिष्
जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माह-
णरिसी अच्चंतमाहणकुलप्पसूए, तएणं मए वयाइं चिण्णाइं जाव जूवा
निकिखत्ता । तएणं मए वाणारसीए जाव पुप्फारामा य जाव रोविआ ।
तएणं मए सुबहु लोहं जाव घडावित्ता जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावित्ता
जाव जेट्ठपुत्तं आपुञ्जिता सुबहु लोहं जाव गहाय मुंडे जाव पव्वइए

तत्र कन्दाँश्च यावद् अनुजानातु, इति कृत्वा दक्षिणां दिशं प्रसरति । एवं
पश्चिमे खलु वरुणो महाराजो यावत् पश्चिमां दिशं प्रसरति । उत्तरे खलु
वैश्रवणो महाराजो यावद् उत्तरां दिशं प्रसरति । पूर्वदिग्गमेन चतस्रो
विदिशो भणितव्याः यावद् आहारमाहारयति ।

ततःखलु तस्य सोमिलब्राह्मणर्षेरन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्र-
कालसमये अनित्यजागरिकां जाग्रतोऽयमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत्,
समुदपद्यतःएवं खलु अहं वाराणस्यां नगर्यां सोमिलो नाम ब्राह्मण ऋषि-
रत्यन्तब्राह्मणकूलप्रसूतः, ततः खलु मया व्रताति चीर्णानि यावत् यूषा
निक्षिप्ताः, ततः खलु मया वाराणस्यां यावत् पुष्पारामाश्च यावद् रोपिताः,
ततः खलु मया सुबहुलोहं यावद् घटयित्वा यावत् ज्येष्ठपुत्रं कुडुम्बे
स्थापयित्वा यावद् ज्येष्ठपुत्रमापृच्छय सुबहुलोहं यावद् गृहीत्वा मुण्डो

४२६

३ पुष्पितासत्र

वि य णं समाने छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरामि, तं सेयं खलु मम इयाणि
 कल्लं पाउ जाव जलंते बहवे तावसे दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसंगइए य परियाय-
 संगइए य आपुच्छित्ता आसमसंसियाणि य बहूइं सत्तसयाइं अणुमाणइत्ता
 वागलवत्थनियत्थस्स किट्ठिणसंकाइयगहियसभंडोवगरणस्स कट्ठमुद्दाए मुहं
 बंधिता उत्तरदिसाए उत्तरामिमुहस्स महपत्थाणं पत्थावेत्तए । एवं संपेहेइ,
 संपेहिता कल्लं जाव जलंते बहवे तावसे य दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसंगइए य तं
 चेव जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ,
 जत्थेव णं अहं जलंसि वा एवं थलंसि वा दुग्गंसि वा निबंसि वा पव्वयं-
 सि वा विसमंसि वा गड्ढाए वा दरीए वा पव्वखलिज्ज वा पव्वडिज्ज वा, नो
 खलु मे कप्पइ पच्चुट्ठित्तए त्ति कट्ठु अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ,
 अभिगिण्हित्ता उत्तराए दिसाए उत्तरामिमुहमहपत्थाणं पत्थिए से सोमिळे
 माहणरिसी पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए,

यावत् प्रव्रजितोऽपि च खलु सन् षष्ठषष्ठेन यावत् विहरामि, तच्छ्रेयः
 खलु ममेदानीं कल्ये प्रादुर्यावज्ज्वलति बहून् तापसान् दृष्ट-भ्रष्टांश्च पूर्व-
 सङ्गतिकांश्च पर्यायसंगतिकांश्च आपृच्छय आश्रमसंश्रितानि च बहूनि सत्त्व-
 शतानि अनुमान्य वालकलवस्त्रनिवसितस्य किट्ठिणसंकायिकगृहीतसभाण्डो-
 पकरणस्य काष्ठमुद्रया मुखं बद्धा उत्तरदिशि उत्तरामिमुखस्य महाप्रस्थानं
 प्रस्थापयितुम्, एवं संप्रेक्ष्य कल्ये यावत् ज्वलति बहून् तापसांश्च
 दृष्ट-भ्रष्टांश्च पूर्वसङ्गतिकांश्च तदेव यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्धा
 इममेतद्रूपमभिग्रहमभिगृह्णाति-यत्रैव खलु अहं जले वा, एवं स्थले
 वा दुर्गे वा निम्ने वा पर्वते वा विषमे वा गर्त्तायां वा दर्या
 वा प्रस्वलेयं वा प्रपतेयं वा नो खलु मे कल्पते प्रत्युत्थातुम्, इति कृत्वा
 इममेतद्रूपमभिग्रहमभिगृह्णाति, उत्तरस्यां दिशि उत्तरामिमुखमहाप्रस्थानं
 मस्थितः । स सोमिलो ब्राह्मण ऋषिः पूर्वापराह्णकालसमये यत्रैव अशोकवर-

शुद्धरबोधनी टीका सर्ग ३ अध्या. ३ सोमिल ब्राह्मण

२९७

असोगवरपायवस्स अहे किट्ठिसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेदिं बड्ढेइ, वड्ढित्ता उवळेवणसंमज्जणं करेइ, करित्ता दम्भकलसहत्थगए जेणेव गंगा महानई जहा सिवो जाव गंगाओ महानईओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दम्भेहिं य कुसेहिं य वालुयाए य वेदिं रएइ, रइत्ता सरगं करेइ, करित्ता जाव बलिवइस्सदेवं करेइ, करित्ता कट्ठमुद्राए मुहं बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ६ ॥

पादपस्तत्रैवोपागतः । अशोकवरपादपस्याधः किट्ठिसाङ्कायिकं स्थापयति, स्थापयित्वा वेदिं वर्धयति, वर्धयित्वा उपलेपनसम्मार्जनं करोति, कृत्वा दर्भकलशहस्तगतो यत्रैव गङ्गा महानदी यथा शिवो यावद् गङ्गातो महानदीतः प्रत्युचारति, प्रत्युचीर्य यत्रैव अशोकवरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य दर्भैश्च कुशैश्च वालुक्या च वेदीं रचयति, रचयित्वा शरकं करोति, कृत्वा यावद् बलिवैश्वदेवं करोति, कृत्वा काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, तूष्णीकः संतिष्ठते ॥६॥

टीका—

‘तएणं से सोमिले’ इत्यादि । पूर्वदिशागमेन=कन्दमूलाद्यर्थपूर्व-दिशागमनेन चतस्रो विदिशो भणितव्याः, अयं भाव—चतुर्दिक्षु या क्रिया

‘तएणंसे सोमिले’ इत्यादि—

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण ऋषिने द्वितीय छट्ट (बेला) का पारणा आनेपर पूर्वोक्त प्रकारसे सभी कार्य किये और अन्तमें आहार किया । विशेष यह

तएणं से सोमिले इत्यादि.

त्यार पछी ते सोमिल ब्राह्मण ऋषिने द्वितीय पछ (बेला) नु पारणु आवतां पूर्वोक्त प्रकारे जथा कर्मो कर्था तथा छट्टे आहार कर्था. विशेष ओ छे छे

હૈ કિ યહાં યમકી પ્રાર્થના કરતા હૈ—દક્ષિણ દિશામેં મહારાજ યમ પરલોક સાધક માર્ગમેં પ્રસ્થિત મુજ સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિકી રક્ષા કરેં, ઉસ દિશામેં જો કન્દ, મૂલ, ફલ ફૂલ આદિ હોં ઉન્હે લેનેકી મુજે આજ્ઞા દેં । એસા કહ કર દક્ષિણ દિશામેં જાતા હૈ । ઇસી પ્રકાર પશ્ચિમ દિશામેં મહારાજ વરુણ દેવ પરલોક સાધક માર્ગમેં પ્રસ્થિત મુજ સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિકી રક્ષા કરેં, ઇત્યાદિ પૂર્વોક્ત વિધિસે પશ્ચિમ દિશા મેં જાતા હૈ । બાદ ઉત્તર દિશામેં જાનેકે લિયે ઉસી પ્રકાર મહારાજ વૈશ્રવણ— (કુબેર)—કી પ્રાર્થના કી ઔર ઉત્તર દિશામેં ગયા । ઇસી પ્રકાર ઇસને ચારો—પૂર્વ આદિ દિશાકે સમાન ચારો વિદિશાઓ (કોળો) મેં બી પૂર્વોક્ત વિધિકા આચરણ કિયા, ઔર આહાર કિયા ।

ઉસકે બાદ એક સમય અનિત્ય જાગરણા કરતે હુએ ઉસ સોમિલ બ્રાહ્મણ કે હૃદયમેં ઇસ પ્રકારકા આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ કિ—મેં વારાણસી નગરીકા રહેનેવાલા અત્યન્ત ઉચ્ચ કુલમેં ઉત્પન્ન સોમિલ નામકા બ્રાહ્મણ ઋષિ હૂં । મૈને બહુતસે

‘દક્ષિણ દિશામાં મહારાજ યમ, પરલોક સાધક માર્ગમાં પ્રસ્થિત સોમિલ બ્રાહ્મણની રક્ષા કરો. તે દિશામાં જે કંદ, મૂળ, ફલ, ફૂલ વગેરે હોય તે લેવાની આજ્ઞા આપો’ એમ કહીને દક્ષિણ દિશામાં જાય છે. એજ પ્રકારે પશ્ચિમ દિશામાં મહારાજ વરુણ, પરલોક સાધક માર્ગમાં પ્રસ્થિત સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિની રક્ષા કરો. વગેરે પૂર્વોક્ત વિધીથી પશ્ચિમ દિશામાં જાય છે. પછી ઉત્તર દિશામાં જાવા માટે એજ પ્રકારે મહારાજ વૈશ્રવણ (કુબેર) ની પ્રાર્થના કરી અને ઉત્તર દિશામાં ગયો. આવી રીતે તેણે પૂર્વ આદિ ચારે દિશાઓની પેઠે ચારે વિદિશાઓ (ખૂણા) માં પણ પૂર્વોક્ત વિધિનું આચરણ કર્યું અને પછી આહાર કર્યો.

ત્યાર પછી એક વખત અનિત્ય જાગરણ કરતાં કરતાં તે સોમિલ બ્રાહ્મણના હૃદયમાં એવા પ્રકારનો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે હું વારાણસી નગરીનો રહેવાવાળો અત્યંત ઊંચા કુળમાં જન્મેલો સોમિલ નામનો બ્રાહ્મણ ઋષિ છું. મેં ઘણાં ઘણાં મત કર્યાં તમા યજ્ઞ વગેરેથી માંડી યજ્ઞ સ્તંભ ખોડવા સુધી કર્મ

કૃતા સા ક્રિયા વિદિક્ષવિ । દૃષ્ટ્રાણ=સમ્યક્સ્વસ્થલિતાન્ પૂર્વ-
સજ્જતિકાન્=પૂર્વસ્મિન્ કાલે સજ્જતિઃ=મિત્તત્વં ચૈઃ સહ તાન્ તથા પૂર્વમિત્રાણિ,

વ્રત ક્રિયે, તથા યજ્ઞ આદિ કરનેસે લેકર યજ્ઞ સ્તમ્ભ તક ગાડા । અનન્તર મૈને વારાણસી નગરીકે બાહર આમકે બગીચેસે લેકર ફૂલ તકકે બગીચે લગવાયે । બાદ મૈને બહુતસી લોહેકી કડાહિયાં કલછૂં ઓર તાપસકે લિયે ઉપયુક્ત બહુતસે તામ્બેકે પાત્ર બનવાકર ઓર અપને સમી મિત્ર-જ્ઞાતિ-સ્વજન-બંધુઓકો બુલાકર ઉન્હેં ભોજન આદિકે દ્વારા સમ્માનિત કર, ઉન જ્ઞાતિ બંધુઓકે સમક્ષ અપને પુત્રકો કુટુમ્બકી રક્ષાકે લિયે સ્થાપિત કર યાવત્ ઉસસે સમ્મતિ લેકર ઉન લોહેકી કડાહિયાં આદિ લેકર મુણ્ડ હોકર પ્રવ્રજિત હુઆ । ઓર અનન્તર રહિત પષ્ઠ-પષ્ઠ દિક્ચકવાલ તપ કરતા હુઆ વિચરણ કર રહા હૂં અબ મુઝે ઉચિત હૈ કિ સૂર્યોદય હોતે હી બહુતસે દૃષ્ટ્રાણ દૃષ્ટ=જો કમી દેસે હુએ યથાર્થ ભાવ હૂં ઉનસે બ્રહ્મ સ્થલિત હૂં, તથા પૂર્વસંગતિક=પૂર્વકાલમેં જિનસે સંગતિ=મિત્રતા હુઈ થી એસે, પર્યાયસંગતિક=સમાન તાપસ પર્યાયવાલોકો પૂછકર; આશ્રમ સંશ્રિત=આશ્રમમેં રહનેવાલે અનેક શત પ્રાણિ-

કર્તા. ત્યાર પછી મેં વારાણસી નગરીથી બહાર આંખાના બગીચાથી માંડી કુલ-
વાળા બાગ સુધી બનાવ્યાં. પછી મેં ઘણી લોઢાની કડાઇઓ, કડછી તથા તાપસને
માટે ઉપયોગી એવી ઘણી તાંબાનાં પાત્રો વગેરે વસ્તુ બનાવરાવી અને મારા
પોતાના સઘળા મિત્ર-જ્ઞાતિ-સ્વજન-બંધુઓને બોલાવીને તેમને લોજન વગેરે
દ્વારા સંમાનિત કર્યાં. તે જ્ઞાતિ બંધુઓની સમક્ષ મારા પોતાના પુત્રને કુટુંબની
રક્ષાને માટે સ્થાપિત કરીને તેની સંભતિ લઇને તે લોઢાની કડાઈ વગેરે બધું
લઈ મુંડિત થઈ પ્રવ્રજિત થયો અને અંતરરહિત છઠ-છઠ દિક્ ચક્રવાલ તપ
કરતો કરતો વિચરે છું. આ માટે મને એ યોગ્ય છે કે સૂર્યોદય થતાં જ ઘણાં
દૃષ્ટ્રાણ=દૃષ્ટ=જો ક્યારેક જોવામાં આવેલાં યથાર્થ ભાવોથી બ્રહ્મ-સ્થલિત છે તે
તથા પૂર્વ સંગતિક=સમાન તાપસ પર્યાય વર્તિઓને પૂછીને; આશ્રમ સંશ્રિત=
આશ્રમમાં રહેવાવાળા અનેક સેંકડો પ્રાણીઓને વચન આદિથી સંતુષ્ટ કરી વલકલ

પર્યાયસફ્તિકાન્=તાપસપર્યાયવર્તિનઃ, કાષ્ઠમુદ્રયા=કાષ્ઠમયમુખવન્ધનેન ।
 ગર્તાયાં=મહત્યાં ચઢાયામ્, દર્યાં=કન્દરાયામ્, શેષં સ્પષ્ટમ્ ॥ ૬ ॥

ચોકો વચન આદિસે સન્તુષ્ટ કર વલ્કલ વલ્લ પહના હુઆ કાવડમેં અપને માળહોપ-
 કરણકો લેકર તથા કાષ્ઠમુદ્રાસે મુંહકો બાંધકર ઉત્તરાભિમુખ હોકર ઉત્તર દિશામેં
 મહાપ્રસ્થાન (મરણકે લિયે જાના) કરૂં ।

વહ સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિ હસ પ્રકાર વિચાર કરતા હૈ ઓર સૂર્યોદય હોને
 પર, અપને વિચારકે અનુસાર સમી દૃષ્ટઞ્ચૃષ્ટ આદિ તાપસ પર્યાયવાલોંકો પૂછકર
 તથા આશ્રમસ્થ અનેક શત પ્રાણિયોંકો વચન આદિસે સન્તુષ્ટકર અન્તમેં કાષ્ઠ મુદ્રાસે
 અપના મુખ બાંધતા હૈ, ઓર હસ પ્રકારકા અભિગ્રહ (પ્રતિજ્ઞા) લેતા હૈ કિ-
 ‘ જહાં કહોં મી-ચાહે વહ જલ હો યા સ્થલ હો વા દુર્ગ (વિકટ સ્થાન) હો,
 અથવા નીચા પ્રદેશ હો વા પર્વત હો, વિષમ ભૂમિ હો, વા ગઢ્ઠા હો, વા ગુફા હો,
 હન સબોમેંસે કહોં મી પ્રસ્થલિત હોઁં યા ગિર પડું, તો મુજે વહાંસે ઉઠના નહોં
 કલપતા ’ યેસા વિચાર કરકે હસ પ્રકારકા અભિગ્રહ લેતા હૈ । તથા ઉત્તર દિશાકો

પશ્ચ ધારી કાવડમાં પોતાનાં ભંડોપકરણુ લઇ તથા કાષ્ઠ મુદ્રાથી મોઢાને બાંધી
 ઉત્તર દિશામાં ઉત્તરાભિમુખ થઇને મહાપ્રસ્થાન (મરણુને માટે જવું) કરે.

તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિ આવો વિચાર કરે છે અને સૂર્યોદય થતાં પોતાના
 વિચાર પ્રમાણે બધા દૃષ્ટ-ઞ્ચૃષ્ટ આદિ સમાન તાપસ પર્યાયવર્તિઓને પૂછીને તથા
 આશ્રમમાં રહેનારા અનેક સેંકડો પ્રાણિઓને સંતુષ્ટ કરી કાષ્ઠમુદ્રા વડે પોતાનું
 મોઢું બાંધે છે. અને એવો અભિગ્રહ (પ્રતિજ્ઞા) લે છે કે-‘ જ્યાં જ્યાં પશુ તે
 જલ હોય કે સ્થલ હોય કે દુર્ગ (વિકટ સ્થાન) હોય, નીચો પ્રદેશ હોય કે
 પર્વત હોય, વિષમ ભૂમિ હોય કે ખાડો હોય કે ગુફા હોય એ બધામાંથી જામે
 તે હોય ત્યાં પ્રસ્થલિત થાઉં કે પડી જાઉં તો મારે ત્યાંથી ઉઠવું નહિ કલ્પે’
 એમ વિચારી એવો અભિગ્રહ લે છે અને ઉત્તર દિશા તરફ મહાપ્રસ્થાન માટે

मूलम्—

तएणं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एणे देवे अंतियं पाउब्भूए । तएणं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासी-इंमो

छाया—

ततः खलु तस्य सोमिलब्राह्मणऋषेः पूर्वरात्रापररात्रकालसमये एको देवोऽन्तिकं प्रादुर्भूतः । ततः खलु स देवः सोमिलं ब्राह्मणमेव

और महाप्रस्थानके लिए प्रस्थित होता है । फिर वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि अपराह्न काल (दिनके तिसरे प्रहर) में जहाँ सुन्दर अशोक वृक्ष था वहाँ आया । और उस अशोक वृक्षके नीचे अपना कावड रखा । अनन्तर वेदि=बैठनेकी जगहको साफ किया, साफ करके जहाँ गङ्गा महानदी थी वहाँ आया । और शिवराजऋषिके समान उस गङ्गा महानदीमें स्नान आदि कृत्यकर वहाँसे ऊपर आया और जहाँ अशोक वृक्ष था वहाँ आकर दर्भ कुश और बालुकासे यज्ञ वेदीकी रचना की । यज्ञ वेदीकी रचना करके शरक और अरणिसे अग्निको प्रज्वलित कर यावत् बलिवैश्वदेव (नित्य यज्ञ) करता है, काष्ठ मुद्रासे मुख बाँधता है, और मौन होकर रहता है ॥ ६ ॥

प्रस्थित થાય છે. પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિ અપરાહ્ન કાલ (દિવસના ત્રીજા પ્રહર) માં જ્યાં સુંદર અશોક વૃક્ષ હતું ત્યાં આવ્યો અને તે અશોક વૃક્ષની નીચે પોતાની કાવડ રાખી. અનન્તર વેદિ-બેસવાની જગ્યાને સાફ કરી, તે સાફ કરીને જ્યાં ગંગા મહાનદી હતી ત્યાં આવ્યો. અને શિવરાજ ઋષિની પેઠે તે ગંગા મહાનદીમાં સ્નાન આદિ કર્મ કરી ત્યાંથી ઉપર આવ્યો તથા જ્યાં અશોક વૃક્ષ હતું ત્યાં આવીને-દર્ભ, કુશ તથા રેતીથી યજ્ઞ વેદીની રચના કરી. યજ્ઞ વેદીની રચના કરીને શરક તથા અરણીથી અગ્નિને પ્રજ્વલિત કરીને પછી બલિ-વૈશ્વદેવ (નિત્ય યજ્ઞ) કરે છે અને કાષ્ઠ મુદ્રાથી મુખ બાંધે છે. અને મોન ધારણ કરી બેસી જાય છે. (૬).

सोमिलमाहणा ! पञ्चइया ! दुपञ्चइयं ते । तएणं से सोमिले तस्स देवस्स दोच्चंपि तच्चंपि एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ जाव तुसिणीए संचिट्ठइ । तएणं से देवे सोमिलेणं माहणरिसिणा अणाढाइज्जमाणे जामेव दिसि पाउञ्भूए तामेव दिसं पडिगए । तएणं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किट्ठिसंकाइयं गहाय गहिय-मंडोवगरणे कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराभिमुहे संपत्थिए । तएणं से सोमिले बिइयदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव सत्तवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सत्तवण्णस्स अहे किट्ठि-संकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइ वड्डेइ, वड्डित्ता जहा असोगवरपायवे जाव अग्गि हुणइ, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।

तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउञ्भूए । तएणं से देवे अंतलिकखपडिवन्ने जहा असोगवरपायवे

मवादीत-हं भो सोमिल ब्राह्मण ! प्रव्रजित ! दुष्प्रव्रजितं ते । ततः खलु स सोमिलस्तस्य देवस्य द्वितीयमपि तृतीयमपि एतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति यावत् तूष्णीकः संतिष्ठते । ततः खलु स देवः सोमिलेन ब्राह्मणर्षिणा अनाद्रियमाणः यस्या दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः खलु स सोमिलः कल्ये यावत् ज्वलति वाल्कलवस्त्रनिवसितः किट्ठिसाङ्कायिकं गृहीत्वा गृहीतभाण्डोपकरणः काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्ध्वा उत्तराभिमुखः संप्रस्थितः । ततः खलु स सोमिलो द्वितीयदिवसे पश्चादपराह्णकाल समये यत्रैव सप्तपर्णः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सप्तपर्णस्य अधः किट्ठिसांकायिकं स्थापयति, स्थापयित्वा वेदिं वर्धयति, वर्धयित्वा यथा अशोकवरपादपे यावत् अग्निं जुहोति, काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, तूष्णीकः संतिष्ठते ।

सुन्दरबोधिनी टीका धर्म ३ अध्या. ३ सोमिल ब्राह्मण

३०३

जाव पडिगए । तएणं से सोमिले कलुं जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किट्ठिसंकाइयं गिण्हइ, गिण्हित्ता कट्टमुद्दाए मुहं बंधइ, उत्तरदिसाए उत्तरामिमुहे संपत्थिए ।

तएणं से सोमिले तइयदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे किट्ठिसंकाइयं ठवेइ, वेइं वड्ढेइ जाव गंगं महानइं पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेइं रणइ जाव कट्टमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता तुसिणीए संचिद्धइ । तएणं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भूए तंवेव भणइ जाव पडिगए । तएणं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किट्ठिण संकाइयं जाव कट्टमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराए दिसाए उत्तरामिमुहे संपत्थिए ।

ततः खलु तस्य सोमिलस्य पूर्वरात्रापररात्रकालसमये एको देवोऽन्तिकं प्रादुर्भूतः । ततः खलु स देवोऽन्तरिक्षप्रतिपन्नः यथा अशोकवरपादपे यावत् प्रतिगतः । ततः खलु स सोमिलः कल्ये यावत् ज्वलति वाल्कलवस्त्रनिवसितः किट्ठिणसाङ्कायिकं गृह्णाति, गृहीत्वा काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्ध्वा उत्तरदिशि उत्तरामिमुखः संप्रस्थितः

ततः खलु स सोमिलस्तृतीयदिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैवाशोकवरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अशोकवरपादपस्याधः किट्ठिणसाङ्कायिकं स्थापयति, वेदिं वर्धयति, यावद् गङ्गां महानदीं प्रत्युत्तरति, प्रत्युत्तीर्य यत्रैवाशोकवरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वेदिं रचयति, यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्ध्वा तूष्णीकः संतिष्ठते । ततः खलु तस्य सोमिलस्य पूर्वरात्रापररात्रकाले एको देवोऽन्तिकं प्रादुर्भूतः तदेव भणति यावत् प्रतिगतः । ततः खलु स सोमिलो यावत् ज्वलति वाल्कलवस्त्रनिवसितः किट्ठिण-

३०४

३ पुष्पितासत्र

तएणं से सोमिले चउत्थे दिवसे पञ्चावरणहकालसमयंसि जेणेव वड-
पायवे तेणेव उवागए, वडपायवस्स अहे किट्ठिणसंकाइयं ठवेइ, ठविता
वेइं वड्डेइ, उवलेवणणसंमज्जणं करेइ जाव कट्टमुद्दाए मुहं बंधइ, तुसिणीए
संचिद्धइ । तएणं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउ-
न्मूए तं चेव भणइ जाव पडिगए । तएणं से सोमिले जाव जलंते वागल-
वत्थनियत्थे किट्ठिणसंकाइयं जाव कट्टमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधिता उत्तराए
दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए ।

तएणं से सोमिले पंचमदिवसम्मि पञ्चावरणहकालसमयंसि
जेणेव उंबरपायवे तेणेव उवागच्छेइ, उंबरपायवस्स अहे किट्ठिणसंकाइयं
ठवेइ, वेइं वड्डेइ जाव कट्टमुद्दाए मुहं बंधइ जाव तुसिणीए संचिद्धइ ।

साङ्कायिकं यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्ध्वा उत्तरस्यां दिशि उत्तराभि-
मुखः संप्रस्थितः ।

ततः खलु स सोमिलः चतुर्थे दिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव
वटपादपस्तत्रैवोपागतः, वटपादपस्याधः किट्ठिणसाङ्कायिकं स्थापयति, स्थाप-
यित्वा वेदिं वर्धयति, उपलेपनसंमार्जनं करोति यावत् काष्ठमुद्रया मुखं
बध्नाति, तूष्णीकः संतिष्ठते । ततः खलु तस्य सोमिलस्य पूर्वरात्रापररात्र-
काले एको देवोऽन्तिकं प्रादुर्भूतः । तदेव भणति यावत् प्रतिगतः । ततः
खलु स सोमिलो यावज्ज्वलति वाल्कलवस्त्रनिवसितः किट्ठिणसाङ्कायिकं
यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति बद्ध्वा उत्तरस्यां दिशि उत्तराभिमुखः
संप्रस्थितः ।

ततः खलु स सोमिलः पञ्चमदिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव उदुम्बर-
पादपस्तत्रैवोपागच्छति, उदुम्बर पादपस्याधः किट्ठिणसाङ्कायिकं स्थापयति, वेदिं
वर्धयति यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति यावत् तूष्णीकः संतिष्ठते ।

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ३ सोमिल ब्राह्मण

३०५

तएणं तस्स सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे जाव एवं वयासी-हंभो सोमिला ! पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते पढमं भणइ, तहेव तुसिणीए संचिट्ठइ । देवो दोच्चंपि तच्चंपि वदइ सोमिला ! पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते । तएणं से सोमिले तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे तं देवं एवं वयासी-कहणं देवाणुप्पिया ! मम दुप्पव्वइयं ? । तएणं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमं पासस्स अरहओ पुरि-सादाणीयस्स अंतियं पंचाणुव्वए सत्त सिक्खावए दुवालसविहे सावगधम्मो पडिवन्ने, तएणं तव अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण पुव्वरत्ता० कुडुंब० जाव पुव्वचिंतियं देवो उच्चारेइ जाव जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवा-गच्छसि, उवागच्छित्ता किट्ठिणसंकाइयं जाव तुसिणीए संचिट्ठसि । तएणं पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अंतियं पाउव्वमामि हं भो सोमिला ! पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते तह चेव देवो नियवयणं भणइ जाव पंचमदिवसम्मि पच्छा-

ततः खलु तस्य सोमिलब्राह्मणस्य पूर्वरात्रापररात्रकाले एको देवः यावत् एवमवादीत्-हं भो सोमिल ! प्रव्रजित ? दुष्प्र-व्रजितं ते प्रथमं भणति तथैव तूष्णीकः संतिष्ठते, देवो द्वितीयमपि तृतीय-मपि वदति सोमिल ! प्रव्रजित ? दुष्प्रव्रजितं ते । ततः खलु स सोमिल-स्तेन देवेन द्वितीयमपि तृतीयमप्येवमुक्तः सन् तं देवमेवमवादीत्-कथं खलु देवानुप्रिय ! मम दुष्प्रव्रजितम्

ततः खलु स देवः सोमिलं ब्राह्मणमेवमवादीत्-एवं खलु देवानु-प्रिय ! त्वं पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्यान्तिकं पञ्चानुव्रतानि सप्तशिक्षा-व्रतानि द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपन्नः, ततः खलु तवाऽन्यदा कदाचित् असाधुदर्शनेन पूर्वरात्रा० कुडुम्ब० यावत् पूर्वचिन्तितं देव उच्चारयति यावत् यत्रैवाऽशोकवरपादपस्तत्रैवोपागच्छसि, उपान्तस्य किट्ठिणसाङ्कायिकं यावत् तूष्णीकः संतिष्ठसे । ततः खलु पूर्वरात्रापररात्रकाले तवाऽन्तिकं असाधुदर्शनेन-

३०६

३ पुष्पितासुख

वरुणकालसमयांसि जेणेव उंबरवरपायवे तेणेव उवागए किढिणसंकाइयं ठवेसि, वेइं वड्डेसि, उवलेवणं संमज्जणं करेसि, करित्ता कट्टमुद्दाए मुहं वंधेसि, गंधित्ता तुसिणीए संचिद्धसि, तं चेवं खलु देवानुप्पिया ! तव पव्वइयं दुप्पव्वइयं । तएणं से सोमिले तं देवं एवं वयासी-कहणं देवानुप्पिया ! मम सुप्पव्वइयं ? तएणं से देवे सोमिलं रुवं वयासि-जइणं तुमं देवानुप्पिया ! इयाणि पुव्वपडिवण्णाइं पंच अणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं सममेव उवसंपज्जित्ताणं विहरसि, तोणं तुज्झ इदाणि सुपव्वइयं भविज्जा । तएणं से देवे सोमिलं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसिता जामेव दिसि पाउब्भूए जाव पडिगए ।

तएण से सोमिले माहणरिसो तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे पुव्व-पडिवन्नाइं पंच अणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

हं भो सोमिल ! प्रव्रजित ? दुष्प्रव्रजितं ते तथैव देवो निजवचनं भणति यावत् पञ्चमदिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव उदुम्बरपादपस्तत्रैवोपागतः किढिणसाङ्कायिकं स्थापयसि, वेदीं वर्धयसि, उपलेपनं संमार्जनं करोषि, कृत्वा काष्ठमुद्रया मुखं बध्नासि, बद्ध्वा तूष्णीकः संतिष्ठसे, तदेवं खलु देवानुप्रिय ! तव प्रव्रजितं दुष्प्रव्रजितम् ।

ततः खलु स सोमिलस्तं देवमेवमवादीत्-कथं खलु देवानुप्रिय ! मम सुप्रव्रजितं ? । ततः खलु स देवः सोमिलमेवमवादीत्-यदि खलु त्वं देवानुप्रिय ! इदानीं पूर्वप्रतिपन्नानि पश्चानुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि स्वयमेव उपसंपद्य खलु विहरसि तर्हि खलु तवेदानीं सुप्रव्रजितं भवेत् । ततः खलु स देवः सोमिलं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यत्वा यस्या दिशः प्राट्-भूतः आवृत्तं प्रतिगतः ।

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ३ सोमिल ब्राह्मण

३०७

तएणं से सोमिले बहूहि चउत्थ छट्ठम जाव मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवेवहाणेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियाणं पाउणइ, पाउणिता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदिता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते विराहियसम्मत्ते कालमासे कालं किच्चा सुक्कवडिसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जावतोगाहणाए सुक्कमहग्गहत्ताए उववन्ने । तएणं से सुक्के महग्गहे अहुणो-ववन्ने समाणे जाव भासामणपज्जत्तीए० ।

एणं खलु गोयमा ! सुक्केणं महग्गहेणं सा दिव्वा जाव अभिसमन्ना-गया, एणं पल्लोवमं ठिई । सुक्के णं भंते ! महग्गहे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ कहिं गच्छिहिइ ? २ गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झि-हिइ ५ । एणं खलु जंबू ! समणेणं० निक्खेवओ ॥ ७ ॥

॥ तइयं अज्झयणं समरां ॥ ३ ॥

ततः खलु सोमिलो ब्राह्मण ऋषिस्तेन देवेन एवमुक्तः सन् पूर्वं प्रतिपन्नानि पश्चानुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि स्वयमेव उपसंपद्य खलु विहरति । ततः खलु स सोमिलो बहुमिश्रतुर्थषष्ठाष्टमयावन्मासार्द्धमासक्षणैर्विचित्रैस्तप-उपधानैरात्मानं भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रमणोपासकपर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्धमासिक्या संलेखनया आत्मानं जोषयति, जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि अनशनेन छिनत्ति, छित्त्वा तस्य स्थानस्थानालोचिताऽप्रतिक्रान्तो विराधितसम्यक्त्वः कालमासे कालं कृत्वा शुक्रावतंसके विमाने उपपात-सभायां देवशयनीये यावताऽवगाहनया शुक्रमहाग्रहतया उपपन्नः । ततः खलु स शुक्रमहाग्रहः अधुनोपपन्नः सन् यावद् भाषामनःपर्याप्त्या० ।

एवं खलु गौतम ! शुक्लेण महाग्रहेण सा दिव्या यावत् अभिसम-न्वागता । एकं पल्लोपमं स्थितिः । शुक्रः खलु भदन्त ! महाग्रहस्ततो देवलोकात् आयुःक्षयेण ३ कुत्र गमिष्यति २ ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति ५ ! एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन० निक्षेपकः ॥ ७ ॥

ટીકા—

‘તણં તસ્સ’ इत्यादि । असाधुदर्शनेन=साधुदर्शनाभावादसाधुदर्शनाच्च

‘તણં તસ્સ’ इत्यादि—

उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मण ऋषिके सामने मध्य रात्रिके समय एक देवता प्रकट हुआ । उसके बाद वह देव सोमिल ब्राह्मणको इस प्रकार कहा—हे प्रव्रजित सोमिल ब्राह्मण ! तेरी यह दुष्प्रव्रज्या है । इस प्रकार उस देवके द्वारा दो तीन बार कहे जानेपर भी वह सोमिल उस देवताकी बातका आदर नहीं करता है न उसकी तरफ ध्यान ही देता है, किंतु मौन होकर रहता है उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मणसे अनादृत वह देव जिस दिशासे आया उसी दिशामें चला गया ।

उसके बाद वल्कल वल्लभारी वह सोमिल सूर्योदय होनेपर कावडको उठाकर अपना भाण्ड—उपकरण लेकर काष्ठमुद्रासे अपना मुँह चौंधकर उत्तर दिशाकी ओर प्रस्थान करता है ।

તણં તસ્સ ઇત્યાદિ.

ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિની સામે મધ્યરાત્રિને વખતે એક દેવતા પ્રગટ થયો. પછી તે દેવે સોમિલ બ્રાહ્મણને આમ કહ્યું:—હે પ્રવ્રજીત સોમિલ બ્રાહ્મણ ! તારી આ પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા (દોષવાળી) છે. એ પ્રકારે તે દેવની દ્વારા બે ત્રણ વાર કહેવામાં આવતાં છતાં પણ તે સોમિલ તે દેવતાની વાતનો આદર કરતો નથી કે નથી તેના તરફ ધ્યાન પણ દેતો. પણ એકદમ મૌન થઈ જાય છે. ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણથી અનાદર પામેલો દેવ જે બાજુથી આવ્યો હતો તે બાજુએ ચાલ્યો ગયો.

ત્યાર પછી વલ્કલવલ્લભારી તે સોમિલ સૂર્યોદય થતાં કાવડ ઉપાડી પોતાના બંડ ઉપકરણ લઈને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોં આંધીને ઉત્તર દિશા તરફ પ્રસ્થાન કરે છે.

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ३ सोमिल ब्राह्मण

३०९

अनन्तर वह सोमिल ब्राह्मण दूसरे दिन अपराह्न कालके अंतिम प्रहरमें जहाँ सप्तपर्ण वृक्ष था वहाँ आया। और सप्तपर्ण वृक्षके नीचे अपना कावड रखता है, कावड रखकर वेदी बनाता है, और जैसे अशोक वृक्षके नीचे उसने किया वैसे ही सभी कार्य किये। अन्तमें उसने हवन किया और काष्ठमुद्रासे अपना मुँह बाँधकर मौन होकर बैठ गया। उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मणके समक्ष मध्यरात्रिके समय एक देव प्रकट हुआ। और आकाशमें खड़ा होकर अशोक वृक्षके नीचे जिस प्रकार पहले उस सोमिल ब्राह्मणको देवताने कहा था उसी प्रकार फिर भी कहा, परन्तु उस सोमिल ब्राह्मणने उस देवताकी बातपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। सुनी अनसुनी करके केवल चुप रह गया। वह देवता अन्तर्हित हो गया। उसके बाद वल्कल वस्त्रधारी वह सोमिल ब्राह्मण अपना कावड ग्रहण करता है और काष्ठमुद्रासे अपना मुँह बाँधता है। अनन्तर वह उत्तर दिशामें उत्तराभिमुख होकर प्रस्थित हुआ।

પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણે બીજે દિવસ અપરાહ્ન કાલના છેલ્લા પહોરમાં (સાંજે) જ્યાં સપ્તપર્ણ વૃક્ષ હતું ત્યાં આવ્યો. અને સપ્તપર્ણની નીચે પોતાની કાવડ રાખીને વેદી બનાવે છે. અને જેવી રીતે અશોક વૃક્ષની નીચે તેણે કર્યા હતાં તેવાં જ બધાં કર્મો કરી અને તેણે હવન કર્યો અને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોઢું બાંધી મૌન થઈ રહેવા લાગ્યો. પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણની સમક્ષ મધ્યરાત્રિને વખતે એક દેવ પ્રગટ થયો અને આકાશમાં ઉભો રહી અશોકવૃક્ષની નીચે જેમ પહેલાં તે સોમિલ બ્રાહ્મણને દેવતાએ કહ્યું હતું તેવી જ રીતે બીજી ફરીને કહ્યું. પરંતુ તે સોમિલ બ્રાહ્મણે તે દેવતાની વાત ઉપર કંઈ પણ ધ્યાન ન આપ્યું. સાંભળ્યું ન સાંભળ્યું કરીને બિલકુલ ચુપ થઈ રહ્યો. તે દેવતા અંતર્ધ્યાન થઈ ગયો. પછી વલ્કલવસ્ત્ર ધારી તે સોમિલ બ્રાહ્મણે પોતાની કાવડ લીધી અને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોઢું બાંધે છે. ત્યાર પછી ઉત્તર દિશામાં ઉત્તરાભિમુખ થઈને ચાલવા માંડ્યું.

૩૧૦

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण तीसरे दिन चौथे पहरमें जहाँ अशोक वृक्ष था वहाँ आया। वहाँ आकर कावड रखता है, और बैठनेके लिये वेदी बनाता है और पहलेके ही तरह सभी कार्य करके काष्ठमुद्रासे मुँह बाँधता है, अनन्तर मौन होकर बैठ जाता है। उसके बाद मध्य रात्रिमें उस सोमिल ब्राह्मणके समीप एक देव प्रकट हुआ और फिर उसने उसी प्रकार कहा और यावत् चला गया। उसके बाद सूर्योदय होनेपर बल्कल वस्त्रधारी वह सोमिल ब्राह्मण अपना कावड उठाता है और काष्ठमुद्रासे अपना मुख बाँधता है और उत्तराभिमुख हो उत्तर दिशामें प्रस्थान करता है।

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण चौथे दिवसके चौथे पहरमें जहाँ बडका वृक्ष था वहाँ आया। और उस बट वृक्षके नीचे अपना कावड रखा। अनन्तर बैठनेकी वेदीको बनाया और उसको गोबर मिट्टीसे लीपा और साफ किया बाद में मौन होकर बैठ गया, उसके बाद मध्य रात्रिके समय उस सोमिल ब्राह्मणके समीप एक देव प्रगट हुआ। और उसने वैसे ही कहा यावत् अन्तर्हित हो गया।

પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ત્રીજે દિવસે ચોથા પહોરમાં જ્યાં અશોક વૃક્ષ હતું ત્યાં આવી કાવડ મૂકીને બેસવા માટે વેદી બનાવે છે. પહેલાંની પ્રમાણે બધાં કર્મો કરી કાષ્ઠમુદ્રાથી મોઢું બાંધી પછી મૌન થઇ બેસી જાય છે. ત્યાર પછી મધ્યરાત્રિમાં તે સોમિલ બ્રાહ્મણની પાસે એક દેવ પ્રગટ થયો અને વળી તેણે તેજ પ્રકારે કહ્યું અને પછી ચાલ્યો ગયો. ત્યાર પછી સૂર્યોદય થતાં વલ્કલ-વસ્ત્ર ધારી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ પોતાની કાવડ ઉપાડે છે અને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોઢું બાંધે છે. અને પછી ઉત્તર દિશામાં ઉત્તરાભિમુખ થઇને ચાલવા માંડે છે.

ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ચોથે દિવસે ચોથા પહોરમાં જ્યાં વડનું વૃક્ષ હતું ત્યાં આવ્યો અને તે વડના ઝાડની નીચે પોતાની કાવડ રાખી. પછી બેસવાની વેદી બનાવી તે છાણુ માટીથી લીંપી અને સાફ કરી. પછી મૌન થઇને બેઠો. ત્યાર પછી મધ્યરાત્રિને વખતે તે સોમિલ બ્રાહ્મણની પાસે એક દેવ પ્રગટ થયો અને તેણે એમજ અગાઉ પ્રમાણે કહ્યું અને અંતર્ધાન થઇ ગયો.

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ३ सोमिल ब्राह्मण

३१२

उसके बाद वह सोमिल पाँचवे दिनके चौथे पहरमें जहाँ उदुम्बर (गुल्लर) का वृक्ष था वहाँ आता है और उदुम्बर वृक्षके नीचे अपना कावड रखता है और वेदी बनाता है, यावत् काष्ठमुद्रासे मुख बाँधता है और मौन होकर रहता है। उसके बाद मध्य रात्रिमें उस सोमिल ब्राह्मणके पास एक देव प्रकट हुआ और यावत् इस प्रकार कहा—हे सोमिल प्रव्रजित ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है, इस प्रकार पहली बार उस देवताके मुखसे बाणी सुनकर वह सोमिल मौन रहता है। अनन्तर उस सोमिलने उस देवतासे दुवारा तिवारा कहे जानेपर इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिय ! मेरी प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या क्यों है ?

सोमिलके इस प्रकार पूछनेपर उस देवताने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—

हे देवानुप्रिय ! तुम मुमुक्षु जनोसे सेव्य पार्श्व अर्हतके समीप पाँच अनुव्रत सात शिक्षाव्रत, इस प्रकार बारह व्रतरूप श्रावक धर्मको स्वीकार किया। उसके

त्यार પછી તે સોમિલ પાંચમા દિવસે ચોથા પહેરે જ્યાં ઉદુમ્બર (ઉંબરો) નું વૃક્ષ હતું ત્યાં આવે છે. અને તે ઉદુમ્બર વૃક્ષની નીચે પોતાની કાવડ રાખી વેદી બનાવે છે. પહેલાંની માફક બધાં કૃત્યો કરી પછી કાષ્ઠમુદ્રાથી મોઢું બાંધી મૌન રહે છે. ત્યાર પછી મધ્યરાત્રિમાં તે સોમિલ બ્રાહ્મણની પાસે એક દેવ પ્રગટ થયો અને આ પ્રકારે કહ્યું:—હે સોમિલ પ્રવ્રજિત ! તારી આ પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા છે. આ પ્રકારની પહેલીવારની વાણી તે દેવતાને મુખેથી સાંભળી તે સોમિલ મૌન રહે છે. પછી તે દેવ બીજીવાર, ત્રીજીવાર પણ સોમિલને તે જ પ્રકારે કહે છે. સોમિલે તે દેવતાની વાણી સાંભળી આ પ્રકારે કહ્યું:—

હે દેવાનુપ્રિય ! મારી પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા કેમ છે ?

સોમિલના આ પ્રકારે પુછવાથી તે દેવતા આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો:—

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મુમુક્ષુજનોથી સેવાતા પાર્શ્વ અર્હતની પાસે પાંચ અણુ વ્રત, સાત શિક્ષા વ્રત એમ કુલ બળી આર વ્રત સ્વપ શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો.

૩૧૨

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

બાદ અસાધુઓકે દર્શનસે તુમને ઇસ ધર્મકા પરિત્યાગ કર દિયા । અનન્તર એક સમય મધ્ય રાત્રિમેં કુટુમ્બ જાગરણા કરતે હુએ તુમ્હારે મનમેં વિચાર પૈદા હુઆ કિ—‘ ગઙ્ગાકે કિનારેમેં તપસ્યા કરનેવાલે વિવિધ પ્રકારકે વાનપ્રસ્થ તાપસ હૈં, ઉન તાપસોમેં જો દિશાપ્રોક્ષક તાપસ હૈં ઉનકે પાસ, લોહેકી કડાહિયાં કલછુ ઓર તામ્બેકા તાપસપાત્ર બનવાકર ઉસે લેકર જાઁં ઓર દિશાપ્રોક્ષક તાપસ ‘બૂં’ । ઇત્યાદિ સોમિલ બ્રાહ્મણકે દ્વારા પૂર્વ ચિંતિત વિચારોંકો દેવતાને ઉસસે કહા । ઓર ફિર ઉસને કહા કિ—‘ બાદમેં તુમને દિશાપ્રોક્ષક તાપસકે સમીપ દીક્ષા લી ઓર અભિગ્રહ લિયા યાવત્ જહાં અશોક વૃક્ષ થા વહાં આયે ઓર વહાં કાવડ રખ અપના સમી કૃત્ય ક્રિયા બાદ મેરે દ્વારા પ્રતિબોધિત હોનેપર મી તુમને ઉસપર ધ્યાન નહીં દિયા ઓર મૌન હોકર રહ ગયે । ઇસ પ્રકાર મૈને ચાર દિન તક તુમ્હેં સમ-જ્ઞાયા પર તુમને ધ્યાન નહીં દિયા । બાદ આજ પાંચવેં દિવસ ચૌથે પહરમેં યહાં ઉદુમ્બર વૃક્ષકે નીચે તુમને અપના કાવડ રખા, બૈઠનેકી જગહકો સાફ ક્રિયા,

ત્યાર પછી અસાધુઓના દર્શનથી તમે આ ધર્મનો પરિત્યાગ કર્યો. પછી એક સમય મધ્યરાત્રિમાં કુટુંબ જાગરણ કરતાં કરતાં તમારા મનમાં એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે, ‘ગંગાને કાંઠે તપસ્યા કરવાવાળા જુદા જુદા પ્રકારના વાનપ્રસ્થ તાપસ છે. તે તાપસોમાં જે દિશાપ્રોક્ષક તાપસ છે તેની પાસે, લોહાની કડાઈઓ કઢછી તથા તાંબાનાં તાપસપાત્ર બનાવરાવી તે સમને જાઉં અને દિશાપ્રોક્ષક તાપસ બનું.’ વગેરે સોમિલ બ્રાહ્મણના મનમાં પૂર્વ ચિંતન કરેલા જે વિચારો હતા તે દેવતાએ તેને કહ્યા. ફરી તેણે કહ્યું કે ત્યાર બાદ તમે દિશાપ્રોક્ષક તાપસની પાસે દીક્ષા લીધી અને અભિગ્રહ લીધો ત્યારથી જ્યાં અશોક વૃક્ષ હતું ત્યાં આવ્યા અને ત્યાં કાવડ રાખી તમે તમારાં સર્વે કર્મો કર્યાં. પછી મારા દ્વારા પ્રતિબોધિત કરાયા છતાં પણ તમે તે ઉપર ધ્યાન ન આપ્યું અને મૌન રહ્યા. આ પ્રકારે મેં ચાર દિવસ સુધી તમને સમજાવ્યા પણ તમે ધ્યાન ન આપ્યું. બાદ આજે પાંચમે દિવસ એથા પહોરમાં અહીં ઉદુમ્બર વૃક્ષની નીચે તમે તમારી કાવડ રાખી મેસવાની જગ્યાને સાફ કરી પછી તે લીધી અને સમ્માર્જન કર્યું.

કુશ્વરબોધિની ટોકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૩ સોમિલ બ્રાહ્મણ

૩૧૩

અનન્તર ઉપલેપન ઔર સમ્માર્જન કિયા ઔર કાષ્ઠમુદ્રાસે અપના મુંહ બાંધકર તુમ મૌન હોકર બૈઠે । હે દેવાનુપ્રિય ! હિસ પ્રકાર તુમ્હારી યહ પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા હૈ !

ઉસકે બાદ સોમિલને કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! અવ આપ હી બતાઓ કિ મૈં કૈસે સુપ્રવ્રજિત બનૂં । ઉસકે બાદ ઉસ દેવને સોમિલ બ્રાહ્મણસે હિસ પ્રકાર કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! યદિ તુમ અમી પહેલે પ્રહણ કિયા હુઆ પાંચ અણુવત ઔર સાત શિક્ષાવ્રતકો સ્વયમેવ સ્વીકાર કર વિચરણ કરો તો યહ તુમ્હારી પ્રવ્રજ્યા સુપ્રવ્રજ્યા હો જાંય । ઉસકે બાદ વહ દેવ સોમિલ બ્રાહ્મણકો વન્દન ઔર નમસ્કાર કર જિસ દિશાસે પ્રાદુર્ભૂત હુઆ ઉસી દિશામૈં અન્તર્હિત હો ગયા ।

ઉસ દેવકે અન્તર્હિત હોજાનેપર ઉસકે કથનાનુસાર વહ સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિ પ્રથમ સ્વીકૃત પાંચ અનુવ્રત ઔર સાત શિક્ષાવ્રત અપને હીસે સ્વીકાર કર વિચરણ કરતા હૈ । ઉસકે બાદ વહ સોમિલ બહુતસે ચતુર્થ ષષ્ઠ અષ્ટમ યાવત્ માસાર્ધ માસ

અને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોઢું બાંધી મૌન થઈ બેઠા છે. હે દેવાનુપ્રિય ! આ પ્રકારની તમારી આ પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા છે.

ત્યાર બાદ સોમિલે કહ્યું:—હે દેવાનુપ્રિય ! તો હવે આપજ બતાવો કે હું કેવી રીતે સુપ્રવ્રજિત બનું ? ત્યાર પછી તે દેવતાએ સોમિલ બ્રાહ્મણને આ પ્રકારે કહ્યું:—હે દેવાનુપ્રિય જો તમે હમણાં અગાઉ અહણુ કરેલાં પાંચ અણુવત અને સાત શિક્ષાવ્રતનો પોતાની મેળે સ્વીકાર કરીને વિચરણ કરો તો આ તમારી પ્રવ્રજ્યા સુપ્રવ્રજ્યા થઈ જાય. ત્યાર પછી તે દેવ સોમિલ બ્રાહ્મણને વંદન અને નમસ્કાર કરે છે. પછી જે દિશામાંથી તે પ્રાદુર્ભૂત થયો હતો તેજ દિશામાં અંતર્હિત થઈ ગયો.

તે દેવ અંતર્હિત થઈ ગયા પછી તેના કથન અનુસાર તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિએ અગાઉ સ્વીકારેલાં પાંચ અણુવત અને સાત શિક્ષાવ્રત પોતાની બાંધે સ્વીકારી વિચરણ કરે છે. પછી તે સોમિલ ઘણાં ચતુર્થ ષષ્ઠ અષ્ટમથી માંડી યાવત્ ૪૦

૩૧૪

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

વિરાધિતસમ્યક્ત્વઃ સોમિલસ્તસ્ય સ્થાનસ્યાઽનાલોચિતાઽપ્રતિક્રાન્તતયા શુક્રા-
વતંસકે વિમાને દેવશયનીયે યાવત્યાઽવગાહનયા—યાવત્યા=યત્પરિમિતતયાઽવ-
ગાહનયા જ્યોતિર્દેવસ્યોપપાતો ભવતિ તાવત્યા જઘન્યતોઽર્જુલાસહસ્રેય-
ભાગયા ઉત્કૃષ્ટતઃ સપ્તહસ્તપરિમાણયા અવગાહનયા શુક્રમહાગ્રહતયા સમુત્પન્નઃ ।
શેષં સ્પષ્ટમ્ ॥ ૭ ॥

॥ ઇતિ પુષ્પિતાયા તૃતીયમઅધ્યયનં સમાપ્તમ્ ॥ ૩ ॥

ક્ષપણરૂપ વિચિત્ર તપ ઉપધાનોસે અપની આત્માકો ભાવિત કરતા હુઆ બહુત વર્ષો
તક શ્રમણોપાસક (શ્રાવક) પર્યાયકા પાલન કરતા હૈ । અન્તમેં અર્ધમાસિકી
સંલેક્ષના દ્વારા આત્માકો ભાવિત કર તથા ત્રીસ ભક્ત (આહાર) કો અનશનસે
છેદિત કર ઉસ પૂર્વકૃત પાપ સ્થાનકી આલોચના ઓર પ્રતિક્રમણ નહીં કરતા હુઆ
સમ્યક્ત્વકી વિરાધનાસે કાલ માસમેં કાલકર શુક્રાવતંસક વિમાનમેં ઉપપાત સમાકે
અન્દર દેવશયનીય શય્યામેં જિસ પ્રમાણકી અવગાહનાસે જ્યોતિષ દેવોકી ઉત્પત્તિ
હોતી હૈ, ઉસ પ્રમાણવાલી અવગાહના અર્થાત્ જઘન્ય—અર્જુલકે અસંખ્યાતવેં ભાગ
ઓર ઉત્કૃષ્ટ—સાત હાથ પરિમાણવાલી અવગાહનાસે શુક્ર મહાગ્રહપને ઉત્પન્ન હુઆ ।

માસાર્ધ તથા માસક્ષણપરૂપ વિચિત્રતપ ઉપધાનોથી પોતાના આત્માને ભાવિત
કરતા ઘણા વર્ષો સુધી શ્રમણોપાસક (શ્રાવક) પર્યાયનું પાલન કરે છે. અંતમાં
અર્ધ માસિકી સંલેખના દ્વારા આત્માને ભાવિત કરી તથા ત્રીસ ભક્ત (આહાર) નું
અનશનથી છેદિત કરી તે પૂર્વકૃત પાપસ્થાનની આલોચના અને પ્રતિક્રમણ નહીં
કરતા સમ્યક્ત્વને વિરાધિત કરી કાલમાસમાં કાલ કરીને શુક્રાવતંસક વિમાનમાં
ઉપપાત સમાની અંદર દેવશયનીય શય્યામાં જે પ્રમાણની અવગાહનાથી જ્યોતિષ
દેવોની ઉત્પત્તિ થાય છે તે પ્રમાણવાદી અવગાહના અર્થાત્—જઘન્ય—અર્જુલના
અસંખ્યાતમા ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ સાત હાથ પરિમાણવાળી અવગાહનાથી શુક્ર
મહાગ્રહપણમાં ઉત્પન્ન થયા. પછી તે શુક્રમહાગ્રહ ઉત્પન્ન થઈ ભાષાપર્યાપ્તિ મનઃ

સુન્દરબોધિની ટીકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૩ સોમિક બ્રાહ્મણ

૩૧૫

उसके बाद वह शुक्र महाग्रह उत्पन्न होकर भाषापर्याप्ति मनःपर्याप्ति आदि पाँचों प्रकारकी पर्याप्तिसे पर्याप्तिभावको प्राप्त हुआ ।

हे गौतम ! शुक्र महाग्रहने इस कारण ऐसी दिव्य देव ऋद्धिको प्राप्त की है । शुक्र महाग्रहकी स्थिति एक पल्योपमकी है ।

गौतम स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! वह शुक्र महाग्रह आयु भव स्थिति क्षय होनेके बाद उस देवलोकसे च्यवकर कहाँ जायगा ?

हे गौतम ! यह शुक्र महाग्रह महाविदेहक्षेत्रमें जन्म लेकर यावत् सिद्ध होगा ।

सुषर्मा स्वामी कहते हैं—

इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर प्रभुने पुष्पिताके तृतीय अध्ययनमें इस भावका निरूपण किया है ॥ ७ ॥

। पुष्पिताका तृतीय अध्ययन समाप्त हुआ ।

પર્યાપ્તિ આદિ પાંચે પ્રકારની પર્યાપ્તિથી પર્યાપ્તિ ભાવને પ્રાપ્ત થયા.

હે ગૌતમ ! શુક્રમહાગ્રહે આ કારણથી પોતાની આવી દેવ ઋદ્ધિઓ પ્રાપ્ત કરી છે. શુક્રમહાગ્રહની સ્થિતિ એક પલ્યોપમની છે.

ગૌતમ સ્વામિ પૂછે છે:—

“હે ભદન્ત ! તે શુક્રમહાગ્રહ આયુભવ સ્થિતિક્ષય થતાં તે દેવલોકથી ચ્યવીને ક્યાં જશે ?

હે ગૌતમ ! આ શુક્રમહાગ્રહ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઈ સિદ્ધ થશે.

સુષર્મા સ્વામી કહે છે:—

આ પ્રકારે હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ પુષ્પિતાના ત્રીજા અધ્યયનમાં આ ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે. (૭).

પુષ્પિતાનું તૃતીય અધ્યયન સમાપ્ત.

॥ अथ बहुपुत्रिकारूपं चतुर्थमध्ययनम् ॥

मूलम्—

जइणं भंते ! उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसडे, परिसा निगया । तेणं कालेणं २ बहुपुत्तिया देवी सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तिए विमाणे सभाए सुहम्माए बहुपुत्तियंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सोहिं चउहिं महत्तरियाहिं जहा सूरियाभे जाव भुंजमाणी विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, पासित्ता समणं भगवं महावीरं जहा सूरियाभो जाव णमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा सन्निसन्ना । आभियोगा जहा सूरियाभस्य, सुसरा घंटा, आभिओगियं देवं सदावेइ जाणविमाणं जोयणसहस्सवित्थिणं, जाणविमाणवण्णओ, जाव उत्तरिल्लेणं निज्जाणमग्गेणं जोयणसाहस्सिएहिं विगगहेहिं

छाया—

यदि खलु भदन्त ! उत्क्षेपकः । एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरं, गुणशिलकं चैत्यं, श्रणिको राजा, स्वामी समवसृतः । परिषत् निर्गता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये बहुपुत्रिका देवी सौधर्मे कल्पे बहुपुत्रिके विमाने सभायां सुधर्मायां बहुपुत्रिके सिंहासने चतसृभिः सामानिकसाहस्रीभिः चतसृभिः महत्तरिकाभिः यथा सूर्याभो यावद् भुञ्जाना विहरति, इमं च खलु केवलकल्पं जम्बूद्वीपं द्वीपं विपुलेन अवधिना आभोगयन्ती २ पश्यति, दृष्ट्वा श्रमणं भगवन्तं महावीरं यथा-सूर्याभो यावद् नमस्त्यक्ता सिंहासनवरे पौरस्त्याऽभिमुखी संनिषण्णा । आभियोगा यथा सूर्याभस्य सुसरा घण्टा आभियोगिकं देवं शब्दयति यानविमानं योजनसहस्रविस्तीर्णं, यानविमानवर्णकः, यावद् उत्तरीयेण निर्याण-

सुन्दरबोधिनी टोका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३१४

आगया जहा सूरियाभे । धम्मकहा समत्ता । तण्णं सा बहुपुत्तिवा देवी
दाहिणं भुयं पसारेइ देवकुमाराणां अट्टसयं, देवकुमारियाण य वामाओ
भुयाओ अट्टसयं, तयाणंतरं च णं बहवे दारगा दारियाओ य डिंभए य
डिंमियाओ य विउव्वइ, नट्टविहिं जहा सूरियाभो उवदंसित्ता पडिगया ।
भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, कूडागारसाला० ।
बहुपुत्तियाए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविट्ठी पुच्छा जाव अभिसम-
णागया ॥ १ ॥

मार्गेण योजनसाहस्रिकैः विग्रहैरागता यथा सूर्याभः । धर्मकथा समाप्ता ।
ततः खलु सा बहुपुत्रिकादेवी दक्षिणं भुजं प्रसारयति देवकुमाराणामष्टशतम्,
देवकुमारिकाणां च वामतो भुजतोऽष्टशतम्, तदनन्तरं च खलु बहून् दार-
कांश्च दारिकाश्च डिम्भकांश्च डिम्भिकाश्च विकुरुते, नात्र्यविधिं यथा सूर्याभः,
उपदर्श्य प्रतिगता । भदन्त ! इति भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं
वन्दते नमस्यति, कूटागारशाला० । बहुपुत्रिकया खलु भदन्त ! देव्या सा
दिव्या देवर्द्धिः, पृच्छा यावत् अभिसमन्वागता ॥ १ ॥

टीका—

‘जइणं भंते’ इत्यादि—महत्तरिकाभिः=प्रधानतमाभिः तुल्यविभवादि-

चौथा अध्ययन.

‘जइणं भंते’ इत्यादि—

जम्बू स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! यदि पुष्पिता (पुष्पिया) के तृतीय अध्ययनमें भगवान्ने

चौथे अध्ययन.

जइणं भंते इत्यादि.

जम्बू स्वामी पूछे छे:-

हे भदन्त ! जो पुष्पिताके तृतीय अध्ययनमें भगवान्ने पूछे छे:-

૩૧૮

૩ પુષ્પિતાસુત્ર

કુમારિકાનામનતિક્રમણીયવચનાભિઃ દિશાકુમારિકાભિઃ, ઉત્તરીયેણ=ઉત્તરદિ-
ગ્મવેન, વિગ્રહૈઃ=શરીરઃ, દેવકુમારાણામ્=દેવાનાં=સુરાણાં કુમારાઃ=બહુતર-

પૂર્વોક્ત ભાવકા વર્ણન ક્રિયા હૈ તો ફિર ઉસકે બાદ ચતુર્થ અધ્યયનકે ભાવકો
અન્હોને કિસ પ્રકાર નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ।

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ—

હે જમ્બૂ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં રાજગૃહ નામક નગર થા । ઉસ નગરમેં
ગુણશિલક ચૈત્ય થા । ઉસ નગરકા રાજા શ્રેણિક થા । ઉસ નગરમેં મહાવીર સ્વામી
પધારે ! પરિષદ્ ઉનકે દર્શનકે છિયે નિકલી । ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં બહુપુત્રિકા
દેવી સૌધર્મ કલ્પકે બહુપુત્રિક વિમાનમેં સુધર્મા સમાકે અન્દર બહુપુત્રિક સિંહાસન
પર ચાર હજાર સામાનિક દેવિયોં તથા ચાર મહત્તરિકાઓં=તુલ્ય વિભવવાલી કુમારિ-
યોસે, જિનકા વચન . ઉલ્લઘિત નહીં ક્રિયા જા સકતા એસી, પ્રધાનતમ ચાર દિશા
કુમારિકાઓસે પરિવૃત સૂર્યામદેવકે સમાન ગીતવાદિત્રાદિ નાનાવિધ દિવ્ય ભોગોંકો
ભોગતી હુઈ વિચર રહી હૈ, ઓર વહ ઇસ સમ્પૂર્ણ જમ્બૂદ્વીપકો વિશાલ અવધિજ્ઞાનસે

વર્ણન કર્યું છે તેા પછી તેના પછી ચોથા અધ્યયનના ભાવને તેમણે કયા પ્રકારે
નિરૂપણ કર્યો છે ?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે:-

હે જમ્બૂ ! તે કાલે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તે નગરમાં
ગુણશિલક ચૈત્ય હતો. તે નગરમાં મહાવીર સ્વામી પધાર્યા. પરિષદ તેમનાં દર્શન
માટે નીકળી. તે કાલ તે સમયે બહુપુત્રિકાદેવી સૌધર્મ કલ્પના બહુપુત્રિક
વિમાનમાં સુધર્માસભાની અંદર બહુ પુત્રિક સિંહાસન પર ચાર હજાર સામાનિક
દેવીઓ તથા ચાર મહત્તરિકાઓ=સમાન વૈભવવાળી કુમારિકાઓ, જેનું વચન
ઉલ્લંઘન ન કરી શકાય એવી પ્રધાનતમ, ચારે દિશા કુમારીઓ સહિત સૂર્યામદેવ
સમાન ગીત વાદિત્ર આદિ નાના વિધ દિવ્ય ભોગોને ભોગવતી વિચરણ કરતી
હતી અને તે આ સંપૂર્ણ જમ્બૂદ્વીપને વિશાલ અવધિ જ્ઞાન વડે ઉપયોગપૂર્વક

सुश्रवणोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३१८

उपयोग पूर्वक देखती हुई राजगृहमें समवसृत भगवान महावीर स्वामीको देखती है । और उनको देखकर सूर्याभदेवके समान यावत् नमस्कार करके अपने श्रेष्ठ सिंहासनपर पूर्व दिशाकी ओर मुख करके बैठी । सूर्याभदेवके समान आभियोगिक (भृत्य) देवको बुलवाकर उसने सुस्वरा घंटा बजानेकी आज्ञा दी । अनन्तर सुस्वरा घण्टा बजवाकर भगवान महावीरके दर्शन करनेको जानेके लिए सभी देवताओंको सूचित किया । उसका यानविमान हजार योजन विस्तीर्ण था, साढ़े बासठ योजन ऊँचा था । उसमें लगा हुआ महेन्द्रध्वज पच्चीस योजन ऊँचा था । अन्तमें वह बहुपुत्रिका देवी यावत् उत्तर दिशाके मार्गसे सूर्याभ देवके समान हजार योजनका वैक्रयिक शरीर बनाकर उतरी । बादमें भगवानके समीप आई, और धर्मकथा सुनी । उसके बाद वह बहुपुत्रिका देवी अपनी दाहिनी भुजाको फैलाती है । और उससे एक सौ आठ देवकुमारोंको निकालती है । फिर बायीं भुजाको फैलाती है, उससे एकसौ आठ देवकुमारियोंको निकालती है । उसके बाद बहुतसे दारक दारिका=बड़ी

जेती जेती राजगृहमां पधारेल भगवान महावीर स्वामीने लुभ्ये छे, तेभने जेधने सूर्याभदेवनी पेठे यावत् नमस्कार करीने पोताना श्रेष्ठ सिंहासन उपर पूर्व दिशानी तरङ्ग मोड़ुं राभीने जेठी. सूर्याभदेवनी पेठे न आभियोगिक (भृत्य) देवने जेलावीने तेणे सुस्वरा घंटा वगाडवानी आज्ञा आपी. पछी सुस्वरा घंटा वगाडवीने भगवान महावीरनां दर्शन करवाने नवां भाटे सर्वे देवताओने सूचना आपी. तेनुं यान विमान हजार योजननां विस्तारवाणुं हुतुं. साडा आसठ योजन उंचुं हुतुं तेमां थडावेला महेन्द्र ध्वज पचीस योजन उंचा हुतो. छेवटे ते बहुपुत्रिकादेवी यावत् उत्तर दिशानां मार्गथी सूर्याभदेवनी पेठे हजार योजननुं वैक्रयिक शरीर बनावीने उतरी पछी भगवाननी पासो आवी अने धर्मकथा सांभणी. तयार पछी ते बहुपुत्रिकादेवी पोतानी नभणी लुभ (दाय) ने इलावे छे अने तेमांथी जेकसो आठ देवकुमारोने काठे छे पछी ठाणी लुभने इलावे छे तेमांथी जेकसो आठ देवकुमारिओने काठे छे पछी धन्य

૩૨૦

૩ પુષ્પિતાસજ્જ

કાલિકાઃ પુત્રાઃ તેષામ્ । દારકાન્=બહુકાલિકાન્ બાલકાન્, દારિકાઃ=બાલિકાઃ, હિમ્બાન્=અલ્પકાલિકાન્ બાલકાન્, શેષં નિગદસિદ્ધમ્ ॥

एतया 'दिवा देविङ्गी पुच्छे' त्ति, 'किण्णा लद्धा' = केन हेतुनो-
पार्जिता ? 'किण्णा पत्ता' = केन हेतुना उपार्जिता सती स्वायत्तीकृता ?

उमरबाले बच्चेबच्चियोंको तथा डिम्भक, डिम्भिका=अल्प उमरबाले बच्चेबच्चियोंको अपनी वैक्रियिक शक्तिसे बनाती है । और सूर्याभदेवके समान नाट्यविधि दिखाकर चली जाती है । उसके जानेके बाद भगवान् गौतमने 'हे भदन्त' इस प्रकार सम्बोधन कर भगवान् महावीरको वन्दन और नमस्कार किया और पूछा कि-हे भगवन् ! इस बहुपुत्रिका देवीकी दिव्य ऋद्धि दिव्य द्युति और दिव्य देवानुभाव कहाँ गया और किसमें समा गया ?

भगवानने कहा—

हे गौतम ! वह देवऋद्धि उसीके शरीरसे निकली और उसीमें विलीन हो गयी ।

દારક અને દારિકાઓ (મોટી ઉમરવાળાં છોકરા છોકરીઓ) તથા હિમ્બક હિમ્બિકા (નાના નાના બાળકો અને બાળિકાઓ)ને પોતાની વૈક્રિયિક શક્તિથી બનાવે છે અને સૂર્યાભદેવની પેઠે નાટ્યવિધિ બતાવીને ચાલી જાય છે તેના ગયા પછી ભગવાન ગૌતમે 'ભદન્ત' એવું સંબોધન કરી ભગવાન મહાવીરને વંદન તથા નમસ્કાર કર્યા અને પૂછ્યું કે હે ભગવન્ ! આ બહુપુત્રિકાદેવીની દિવ્ય ઋદ્ધિ અને દિવ્ય તથા દિવ્ય દેવાનુભાવ ક્યાં ગયા અને શેમાં સમાઈ ગયા ?

ભગવાને કહ્યું—

हे गौतम ! ते देवऋद्धि तेना शरीरमांशी नीकणी અને તેમાંજ વિલીન થઈ ગઈ.

‘કિષ્ણા અભિસમન્નાગયા’=સ્વાયત્તીકૃતાઽપિ કેન હેતુનાઽઽભિમુખ્યેન સાંગ-
ત્યેન ચ ઉપાર્જનસ્ય પશ્ચાદ્ ભોગ્યતામુપગતેતિ ? ॥ ૧ ॥

ગૌતમ સ્વામીને પૂછા—

હે ભગવન્ ! વહ વિશાલ દેવઋદ્ધિ ઉસમેં કૈસે વિલીન હો ગયી ?

ભગવાને કહા—

હે ગૌતમ ! જિસ પ્રકાર કિસી ઉત્સવ આદિકે કારણ ફૈલા હુઆ જન સમૂહ વર્ષા આદિકે કારણ પવત શિખરકે સમાન ઊંચા ઓર વિશાલ ઘરમેં સમા જાતા હૈ, ઉસી પ્રકાર યે દેવકુમાર ઓર દેવકુમારિયાં આદિ દેવઋદ્ધિ બહુપુત્રિકાકે શરીરમેં અન્તર્હિત હો ગયીં ।

ગૌતમને ફિર પૂછા—

હે મદન્ત ! હિસ બહુપુત્રિકાદેવીકો હિસ પ્રકારકી દિવ્ય દેવઋદ્ધિ કિસ પ્રકાર મિલી ? ઓર કિસ પ્રકાર ઉસકો પ્રાપ્ત હુઈ ? ઓર કિસ પુણ્યસે ઉપભોગમેં આઈ હૈ ? ઓર ઉન ઋદ્ધિયોકે ભોગનેમેં કૈસે સમર્થ હુઈ ? ॥ ૧ ॥

ગૌતમે પૂછયું:—

હે ભગવન્ ! તે વિશાલ દેવઋદ્ધિ તેમાં કેવી રીતે વિલીન થઇ ગઇ ?

ત્યારે ભગવાન કહે છે:—

હે ગૌતમ ! જેવી રીતે ઉત્સવ પ્રસંગે એકઠો થયેલો જનસમૂહ વરસાદ વગેરેના કારણથી પર્વત શિખરની પેઠે ઊંચા અને વિશાલ ઘરમાં સમાઈ જાય છે તેજ પ્રકારે આ દેવકુમાર અને દેવકુમારીઓ વગેરે દેવઋદ્ધિ બહુપુત્રિકાના શરીરમાં અન્તર્હિત થઇ ગઇ.

ગૌતમે વળી પૂછયું:—હે મદન્ત ! આ બહુપુત્રિકા દેવીને આ પ્રકારની દિવ્ય દેવઋદ્ધિ કેવી રીતે મળી ? અને કેવી રીતે તેને પ્રાપ્ત થઇ અને કેવા પુણ્યથી તેના ઉપભોગમાં આવી છે ? વળી તે ઋદ્ધિઓને ભોગવવામાં કેવી રીતે સમર્થ થઇ ? (૧)

एवं पृष्टे सति भगवानाह—‘एवं खलु’ इत्यादि ।

मूलम्—

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ वाणारसी नामं नयरी, अंवसालवणे चेइए । तत्थ णं वाणारसीए नयरीए भदे नामं सत्थवाहे होत्था, अड्डे अपरिभूए तस्स णं भदस्स य सुभदा नामं भारिया सुकुमाल० वंक्का अवियाउरी जाणुकोप्परमाता यावि होत्था । तए णं तीसे सुभदाए सत्थवाहीए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाले कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे जाव संकप्पे समुप्पजित्था—एवं खलु अहं भदेणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जाव

छाया—

एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये वाराणसी नाम नगरी, आम्रशालवनं चैत्यम् । तत्र खलु वाराणस्यां नगर्यां भद्रो नाम सार्थवाहोऽभवत्, आढ्योऽपरिभूतः । तस्य खलु भद्रस्य च सुभद्रा नाम भार्या सुकुमारपाणिपादा बन्ध्या अविजनयित्रो जानुकूर्परमाता चापि अभवत् । ततः खलु तस्याः सुभद्रायाः सार्थवाहिकायाः अन्यदा कदाचित् पूर्वरत्ना-पररात्रकाले कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या अयमेतद्रूपो यावत् संकल्पः समुद-पद्यत—एवं खलु अहं भद्रेण सार्थवाहेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरामि, नो चैव खलु अहं दारकं वा दारिकां वा प्रजनयामि, तद्

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३२३

सुलद्वे णं तासिं अम्मगाणं मणुयजम्मजीवियफले, जासिं मन्ने नियकुच्चि संभूयगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं मधुरसमुल्लावगाणि मंजुल (मम्मण) प्पजंपियाणि थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणगाणि पण्हयंति, पुणो य कोमलकमलो वमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंगनिवेसियाणि देति, समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मम्मण (मंजुल) प्पभणिए अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता ओहय० जाव फ़ियाइ ।

तेणं कालेणं २ सुव्वयाओ णं अज्जाओ इरियासमियाओ भासा-समियाओ एसणासमियाओ आयाणभंडमत्तनिकखेवणासमियाओ उच्चारपास-वणखेलजल्लसिंघाणपारिद्धावणासमियाओ मणगुत्तीओ वयगुत्तीओ कायगुत्तीओ गुत्तिदियाओ गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणीओ गामाणुगामं दूइजमाणीओ जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव

धन्याः खलु ताः अम्बिकाः (मातरो) यावत् सुलब्धं खलु तासाम् अम्बिकानां (मातृणां) मनुजजन्मजीवितफलम्, यासां मन्ये निजकुक्षिसंभू-तकाः स्तनदुग्धलुब्धकाः मधुरसमुल्लापकाः मञ्जुल (मम्मण) प्रजल्पिताः स्तनमूलकक्षदेशभागम् अभिसरन्तः प्रस्तुवन्ति । पुनश्च कोमलकमलोपमाभ्यां हस्ताभ्यां गृहीत्वा उत्सङ्गनिवेसिताः (सन्तः) ददति समुल्लापकान् सुमधुरान् पुनः पुनर्मम्मण (मञ्जुल) प्रभणितान्, अहं खलु अधन्या अपुण्या अकृतपुण्या (अस्मि यदहं) एततः (एतेषां मध्यात्) एकमपि न प्राप्ता । (एवं) अपहतमनः—संकल्पा यावत् ध्यायति ।

तस्मिन् काले २ सुव्रताः खलु आर्याः ईर्यासमिताः, भाषासमिताः, एषणासमिताः, आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमिताः, उच्चारप्रसवणश्लेष्ममल सिंघाणपरिष्ठापनासमिताः, मनोगुप्तिकाः, वचोगुप्तिकाः, कायगुप्तिकाः, गुप्तेन्द्रियाः, गुप्तब्रह्मचारिण्यः, बहुश्रुताः, बहुपरिवाराः पूर्वानुपूर्वी चरन्त्यः

३२४

३ पुष्पितासुख

उवांगया, उवागच्छिता अदापडिरुवं ओगगहं ओगिण्हित्ताणं संजमेगं तस्मा
अप्पाणं भावेमाणीओ विहरन्ति ।

तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वाणारसीनयरीए
उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्षवायरियाए अडमाणे भदस्स
सत्थवाहस्स गिहं अणुपविट्ठे ।

तएणं सुभदा सत्थवाही ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता
हट्ठ जाव खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ,
अणुगच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असगणणत्वाइमसाइ-
मेणं पडिलाभित्ता एवं वयासी-एवं खलु अहं अज्जाओ ! भदेणं सत्थवाहेणं
सद्धिं विउलां भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारणं
दारियं वा पयामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जाव एतो एगमवि

ग्रामानुग्रामं द्रवन्त्यः यत्रैव वाराणसी नगरी तत्रैवोपागताः, उपागत्य यथा-
प्रतिरूपम् अवग्रहम् अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्त्यो विहरन्ति ॥

ततः खलु तासां सुव्रतानामार्याणाम् एकः सङ्घाटको वाराणसी-
नगर्यां उच्चनीचमध्यमानि कुलानि गृहसमुदायस्य भिक्षाचर्यायै अटनं भदस्य
सार्थवाहस्य गृहमनुप्रविष्टः ।

ततः खलु सुभद्रा सार्थवाहिका ता आर्याः एजमानाः पश्यति,
दृष्ट्वा हृष्ट यावत् क्षिमेव आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय सप्ताष्टपदानि
अनुगच्छति, अनुगत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा विपुलेन अशन-
पानखाद्यस्वाद्येन प्रतिलम्ब्य एवमवादीत्-एवं खलु अहम् आर्याः ! भद्रेण
सार्थवाहेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरामि नो चेव खलु
अहं दारकं दारिकां वा प्रजनयामि, तद् धन्याः खलु ताः अम्बिकाः

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३२५

न पत्ता, तं तुम्हे अज्जाओ ! बहुणायाओ बहुवठियाओ बहूणि गामागर-
नगर० जाव सण्णिवेसाई आहिंडह, बहूणं राईसरतलवर जाव सत्यवाहप्प-
भिईणं गिहाई अणुपविसह, अत्थि से केह किहिं चि विज्जापओए वा
मंतप्पओए वा वमणं वा विरेयणं वा वत्थिकम्मं वा ओसहे वा भेसज्जे वा
उवलद्धे, जेणं अहं दारणं वा दारिय वा पयाएज्जा ॥ २ ॥

(मातरः) यावत्-एततः एकमपि न प्राप्ता, तद् यूयम् आर्याः ! बहुज्ञात्र्यः
बहुपठिताः बहून् ग्रामाऽऽकर नगर० यावत् सन्नित्तेशान् आहिण्डध्वे बहूनां
राजेश्वर तलवर० यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां गृहान् अनुप्रविश्य, अस्ति स
कश्चित् क्वचित् विद्याप्रयोगो वा मन्त्रप्रयोगो वा वमनं वा विरेचनं वा
वस्तिकर्म वा औषधं वा भैषज्यं वा उपलब्धं येनाहं दारकं वा दारिकां वा
प्रजनयामि ॥ २ ॥

टीका—

‘एवं खलु गोयमा’ इत्यादि—हे गौतम ! एवं खलु तस्मिन् काले
तस्मिन् समये ‘वाराणसी’ नाम नगरी ‘आम्रशालवन’ चैत्यां चासीत्

ऐसे पूछनेपर भगवान् कहते हैं—

‘एवं खलु’ इत्यादि—

हे गौतम ! उस काल उस समयमें वाराणसी नामकी नगरी थी । उस
वाराणसी नगरीमें आम्रशालवन नामक उद्यान था । उस नगरीमें भद्र नामका सार्थ-

गौतम स्वामीजी आवा प्रश्नो पूछवाथी भगवाने कहे:—

‘एवं खलु’ इत्यादि.

हे गौतम ! ते काल ते समये वाराणसी नामे नगरी હતી. તે વારાણસી
નગરીમાં આમ્રશાલવન નામનો ઉદ્યાન (બાગ) હતો. તે નગરીમાં ભદ્ર નામનો

તત્ર=વારાણસ્યાં નગર્યાં સ્વલુ મદ્રો નામ સાર્થવાહોઽમૃત આઢ્યઃ અપરિમૃતઃ, એતદ્વચાહ્યા પ્રાગેવોક્તા । તસ્ય સ્વલુ મદ્રસ્ય ચ સુમદ્રા નામ માર્યા સુકુ-
મારપાણિપાદાં બન્ધ્યા અવિજનયિત્રી=પુત્રાદિકાનામપ્રસવશીલા, અત એવ
'જાનુકૂર્પરમાતા'—જાનુકૂર્પરાણામેવ માતા=જનની યા સા તથા, યદ્વા-
જાનુકૂર્પરાણ્યેવ નત્વપત્યં મિમતે=સ્પૃશન્તિ તસ્યાઃ સ્તનૌ ઇતિ, અથવા—જાનુ-
કૂર્પરમાત્રેતિચ્છાયા—જાનુકૂર્પરાણ્યેવ માત્રા=પરિકરઃ=ક્રોડનિવેશનીયઃ પરકીય-
પુત્રાદિસદ્વાયતાસમર્થરૂપો યસ્યાઃ ન તુ સ્વપુત્રલક્ષણ ઉત્સન્નનિવેશનીયઃ

વાહ રહતા થા જો ધનધાન્યાદિસે સમૃદ્ધ ઓર દૂસરોસે અપરિમૃત થા । ઉસ મદ્ર સાર્થવાહકી પત્નીકા નામ સુમદ્રા થા, જો સુકુમાર હાથ પૈરવાલી થી । પરન્તુ વહ બન્ધ્યા થી । અતએવ ઉસને એક મી સન્તાનકો જન્મ નહીં દિયા થા । કેવલ જાનુ ઓર કૂર્પરકી માતા થી । યહાં “ જાનુકૂર્પરમાતા ” કા યહ મી અર્થ હોતા હૈ= જિસકે સ્તનોકો કેવલ ઘુટને ઓર કોહનિયાં સ્પર્શ કરતી થી, નકિ સન્તાન । અથવા યહાં “ જાનુકૂર્પરમાત્રા ” યહ મી છાયા હોતો હૈ । હિસકા અર્થ હોતા હૈ—જિસકે જાનુ ઓર કૂર્પર અર્થાત્ ગોદી ઓર હાથ દૂસરોકે પુત્રોકે લાડ પ્યારમેં હી સમર્થ થે, નકિ અપને પુત્રોકે લાડ પ્યારમેં । ક્યોંકિ ઉસકો અપની કોઈ સન્તાન નહીં થી ।

સાર્થવાહ રહેતો હતો કે જે ધનધાન્યાદિથી સમૃદ્ધ અને ઊભાઓથી અપરિમૃત (અણત) હતો. તે મદ્ર સાર્થવાહની સ્ત્રીનું નામ સુમદ્રા હતું જે સુકુમાર હાથ-પગવાળી હતી. પરંતુ તે વાંઝણી હતી. એટલે તેને એક પણ સંતાનને જન્મ આપ્યો નહોતો કેવળ જાનુ અને કૂર્પરની માતા હતી. અહીં “ જાનુકૂર્પરમાતા ” નો એવો અર્થ થાય છે કે જેનાં સ્તનોને કેવળ ગોઠણ અને કોણીઓ જ સ્પર્શ કરતી હતી નહિ કે સન્તાન. અથવા અહીં ‘ જાનુકૂર્પરમાત્રા ’ એવી પણ છાયા થાય છે—એનો અર્થ એવો થાય છે કે જેના જાનુ અને કૂર્પર એટલે ખોળો અને હાથ ઊભાના પુત્રોને લાડ પ્યારમાં જ સમર્થ હતા; નહિ કે પોતાના પુત્રોને લાડ પ્યારમાં. કારણ કે તેને પોતાનું કોઈ સંતાન નહોતું.

सुन्दरबोधिनो टोका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३२७

परिकरः, इति जानुकूर्परमात्रा च अपि अभवत् । ततः=तदनन्तरं तस्याः= पूर्वोक्तायाः खलु सुभद्रायाः सार्थवाहिकायाः अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रा-पररात्रकाले रात्रिपूर्वपरभागसमये कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्याः=कुटुम्बार्थं जागरणां कुर्वत्याः अयमेतद्रूपः=बक्ष्यमाणलक्षणः 'यावत्' शब्देन आध्यात्मिकः, चिन्तितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत=जातः, आध्यात्मिकादिसंकल्पान्तानां पदानां व्याख्या प्रागेव कृता । सुभद्रायाः संकल्प-स्वरूपमाह-'एवं खल्वि' त्यादिना-अहं=सुभद्रा सार्थवाहिका भद्रेण=तन्नामकेन सार्थवाहेन स्वपतिना सार्द्धं=सह विपुलान्=बहून् भोगभोगान्=शब्दा-

उसके बाद एक समय पिछली रातमें कुटुम्बजागरणा करती हुई उस सुभद्रा सार्थवाहीके हृदयमें यह इस प्रकारका आध्यात्मिक, चिन्तित प्रार्थित और मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ कि-मैं भद्रसार्थवाहके साथ अनेक प्रकारके शब्दादि विपुल भोगोंको भोगती हुई विचरण कर रही हूँ । पर आजतक मेरे एक भी सन्तान नहीं हुई । वे माताएँ धन्य हैं, पुण्यशील हैं, उन्होंने पुण्योंका अर्जन किया है, उनका स्त्रीत्व सफल है और उन माताओंने अपने मनुष्य जन्म और जीवनका फल अच्छीतरह पाया है, जिन माताओंकी अपने उदरसे उत्पन्न, स्तनके दूधकी लोभी, कानोंको लुभानेवाली वाणीको उच्चारण करनेवाली, माँ ! माँ !! इस हृदयस्पर्शी

त्यार पछी એક વખત પાછલી રાત્રિમાં કુટુંબ જાગરણ કરતાં તે સુભદ્રા સાર્થવાહીના હૃદયમાં આ એક એવી પ્રકારનો આધ્યાત્મિક, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, અને મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે હું ભદ્ર સાર્થવાહની સાથે અનેક પ્રકારના શબ્દ આદિ વિપુલ ભોગોને ભોગવતી વિચરું છું પણ આજ સુધી મને એક પણ સંતાન થયું નથી. તે માતાને ધન્ય છે-તે પુણ્યશીલ છે-તેમણે પુણ્ય મેળવ્યું છે તેમનું સ્ત્રીપણું સફળ છે અને તે માતાઓના, પોતાનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી રીતે મેળવ્યું છે કે જે માતાઓએ, પોતાના ઉદરની ઉત્પન્ન, સ્તનનાં દૂધનાં લોભવાળાં, કાનોને લલચાવનારી વાણી બોલતાં, મા-મ એવા હૃદય સ્પર્શી શબ્દ

३२८

३ पुष्पिताम्र

दीन विषयान् भुञ्जाना विहरामि, किन्तु नो चैव खलु अहं दारकं=पुत्रं
 दारिकां=कन्यां वा प्रजनयामि=प्रसूये, तत्=तस्मात् हेतोः खलु ताः
 अम्बिकाः=मातरो धन्याः धनं=प्रशंसारूपमर्हन्तीति धन्याः=कृतार्थाः,
 यावच्छब्देन-पुण्याः, कृतपुण्याः, कृतलक्षणाः, इत्येषां सङ्ग्रहो विधेयः, तत्र
 पुण्याः=पवित्राः कृतपुण्याः=विहितसुकृताः, कृतलक्षणाः=सफलीकृतलक्षणाः,
 पुनस्तासाम् अम्बिकानां=मातृणां मनुजजन्म, जीवितफलम्=जीवनफलम् च

शब्दको बोलनेवाली, तथा स्तनमूल और कक्षके बीच भागमें अभिसरण करनेवाली
 सन्तान उन माताओंके स्तनोंको दूधसे परिपूर्ण करती है अर्थात् सन्तानके वात्सल्यसे
 माताके स्तनोमें दूधभर आता है। फिर वे सन्तान कोमल कमल सदृश हाथोंके
 द्वारा गोदमें बैठायी जानेपर उच्च स्वरसे उच्चारित कानोंको अच्छे लगनेवाले मधुर
 शब्दोंको सुनाकर माताओंको प्रसन्न करती है।

मैं भाग्यहीन हूँ, पुण्यहीन हूँ और मैंने पूर्व जन्ममें कभी पुण्योपाजन नहीं
 किया इसी लिये इनमेंसे सन्तान सम्बन्धी एक भी सुखको न पासकी क्योंकि मुझे
 एक भी संतान नहीं हुई। इस प्रकार सोच-विचार करती हुई वह अत्यन्त दीन
 तथा मलीन हो नीचा मुख करके आर्तध्यान करने लगी।

બોલતાં તથા સ્તનમૂલ અને કાંખના વચલા ભાગમાં અભિસરણ કરવાવાલાં સંતાન
 તે માતાઓનાં સ્તનને દૂધથી પરિપૂર્ણ કરે છે. અર્થાત્ સંતાનના સ્નેહથી માતાના
 સ્તનોમાં દૂધ ભરાઈ જાય છે. પછી તે સંતાન કોમળ કમળના જેવા હાથો વડે
 બોજામાં બેસાડવામાં આવે ત્યારે ઉચ્ચ સ્વરથી બોલીને કાનોને સાફ લાગે એવા
 મધુર શબ્દોને સંભળાવીને માતાઓને પ્રસન્ન કરે છે.

હું ભાગ્યહીન છું-પુણ્યહીન છું-અને મેં પૂર્વજન્મમાં કદી પુણ્યનું ઉપા-
 જન નથી કર્યું તેથી સંતાન સંબંધી આ સુખોમાંનું એક પણ સુખ મેળવી
 શકી નથી. કેમકે મને એક પણ સંતાન થયું નથી આ પ્રકારે સોચ વિચાર
 કરતી તે અત્યંત દીન તથા મલીન થઈ નીચે મુખ કરી આર્તધ્યાન કરવા લાગી.

सुलब्धं=सम्यक्प्राप्तम् सफलमिति यावत् मन्ये=रवीकुव, यासां मातृणां निज-
कुक्षिसम्भूताः=स्वकीयोदरजाताः शिशवः, अत्र सूत्रे नपुंसकत्वं प्राकृतत्वात् ।
स्तनदुग्धलब्धकाः=स्तनयोर्दुग्धं तस्मिन् लब्धाः=प्रसक्ताः त एव लब्धकाः
मधुरसमुल्लापकाः मधुराः= श्रवणरमणीयाः समुल्लापाः=सम्यगुच्चैः-
शब्दाः येषां ते तथा, मञ्जुल (मम्मण) प्रजल्पिताः=मञ्जुलं=रुचिरं हृदय-
स्पृहणीयमिति यावत्, प्रजल्पितं (मा-मा प्रभृति) शब्दोच्चारणं
येषां ते तथा, स्तनमूलकक्षदेशभागम्=स्तनयोर्मूलम् स्तनमूलम् तस्मात्
कक्षावेव देशौ 'बाहुमूले उभे कक्षौ' इत्यमरात्, बाहुमूलप्रदेशौ तयोर्भागः=

उस काल उस समयमें ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति तथा
आदान, भाण्ड और अमत्रके निक्षेपणाकी समिति, और उच्चार-प्रस्रण-श्लेष्म-सिद्धाण
-परिष्ठापना समिति, इन समितियोंसे तथा मनोगुप्ति, वचोगुप्ति और कायगुप्ति, इन
तीनों गुप्तियोंसे युक्त, इन्द्रियोंको दमन करनेवाली, गुप्तब्रह्मचारिणी, बहुश्रुता=बहुत
शास्त्रोंको जाननेवाली, और बहुत परिवारसे युक्त, सुव्रता नामकी आर्याएँ, तीर्थङ्कर
परम्परासे विचरण करती हुई ग्रामानुग्राम विहार करती हुई वाराणसी नगरीमें आयीं ।
वहाँ आकर कल्पानुसार अवग्रह=आज्ञा लेकर उपाश्रयमें उतरती और संयम तपके
द्वारा अपनी आत्माको भावित करती हुई विचरने लगीं ।

ते काल ते सभये ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति तथा
आदान लांड अने अमत्रनी निक्षेपणाणी समिति तथा उच्चारण, प्रस्रवण, श्लेष्म
सिद्धाण परिष्ठापना समिति आ अधी समितिआधी तथा मनोगुप्ति, वचोगुप्ति
अने कायगुप्ति, आ तण्ण शुचिआधी युक्त, इन्द्रियोने दमन करवावाणी, गुप्त
ब्रह्मचारिणी, बहुश्रुता=बहुशास्त्रोने ज्ञाणवावाणी अने बहु परिवारधी युक्त,
सुव्रता नामनी आर्याआ, तीर्थंकर परंपराधी विचरती ऐक गाभधी बीजे गाभ
विहार करती करती वाराणसी नगरीमां आवी. अहाँ आवीने कल्पानुसार अवग्रह=
आज्ञा लधने उपाश्रयमां उतरती अने संयम तथा तपद्वारा पोताना आत्माने
भावित करती करती विचरवा लागी.

३३०

३ पुण्यतासुत्र

प्रान्तस्तम् अभिसरन्तः सम्मुखामिसरणं कुर्वाणाः प्रस्तुवन्ति=मातृस्तन्यं प्रक्षारयन्तीत्यन्तर्भावितव्यर्थः । तथा पुनश्च कोमलकमलोपमाभ्यां=कोमलपङ्कजसदृशाभ्यां हस्ताभ्यां गृहीत्वा उत्सङ्गनिवेशिताः=उत्सङ्गः क्रोडः (अङ्गं) तत्र निवेशिताः=स्थापिताः सन्तः समुल्लापकान्=सम्यगुच्चैः शब्दान् सुमधुरान् पुनः पुनः=भूयो भूयः मम्मण (मञ्जुल) प्रभणितान्=मा मा इति श्रवणरमणीयभाषितान् ददति=मातृप्रभृतिश्रवणाय वितरन्ति तादृशान् शब्दान् कुर्वन्तीति भावः ।

अहं=सुभद्रा खलु=निश्चयेन अधन्या, अपुण्या=अपवित्रा यद्वा एतस्मिन् जन्मनि पुण्यरहिता, अकृतपुण्या=असञ्चितसुकृता पूर्वजन्मन्यपि असम्पादितदानादिसुकर्मकलापेति तात्पर्यम्, अस्मि, यद् एततः=एतन्मध्यात्

उसके बाद उन सुव्रता आर्याओंका एक संघाडा वाराणसी नगरीके उच्च नीच मध्यम कुलोमें गृहसमुदानी भिक्षा (अनेक घरोंसे लीजानेवाली भिक्षा) कें लिये फिरता हुआ भद्रसार्थवाहके घरमें आया । उसके बाद सुभद्रा सार्थवाही आती हुई उन आर्याओंको देखा और उनको देखकर उसका हृदय हृष्ट और तुष्ट हो गया, और विनयके लिये शीघ्र ही आसनसे उठी । उठकर सात आठ पग सामने गई । सामने जाकर उनको वन्दन नमस्कार किया । बाद, विपुल अशन पान खाद्य स्वाद्यका प्रतिलाभ कराकर इस प्रकार बोली.

त्यार पछी ते सुव्रता आर्याओंने ओक संघाडो वाराणसी नगरीना उच्च नीच अने मध्यम कुलमां गृहसमुदांनी भिक्षा (अनेक घरमांथी लेवानी भिक्षा) ने माटे करता करता भद्रसार्थवाहना घरमां आव्यो. त्यार पछी सुभद्रा सार्थवाहीओ ते आर्याओंने आवती ओछ अने तेभने ओछने ते सार्थवाहीनुं हृदय हृष्ट अने तुष्ट थछ गथुं अने तेभनुं स्वागत विनय करवा माटे तुरत पोताने आसनेथी ओठी. ओठीने सात आठ पगदां सामे गछ. अने तेभने वंदन नमस्कार कर्था. त्यार पछी विपुल अशन (पान) पान आद्य स्वाद्यना प्रतिलाभ करावी आ प्रकारे बोली.

पूर्वोक्तविशेषणविशिष्टानां पुत्राणां मध्यात् एकमपि सन्तानं न प्राप्ता= न लब्धवती, इत्येवं प्रकारेण अपहतमनःसंकल्पा=विनष्टमनोऽमिलषितकामना 'यावत्' शब्देन अधोमुखीत्यादीनां प्रागुक्तानां संग्रहो बोध्यः, ध्यायति= आर्तध्यानं करोति । सुव्रता=तन्नामिका आर्यिकाः । 'सङ्घाटकः=साध्वी-

हे देवानुप्रिये ! मैं भद्रसार्थवाहके साथ अनेक प्रकारके विपुल भोगोंको भोगती हुई विचरती हूँ । परन्तु आज तक मेरे एक भी सन्तान नहीं हुई । वे माताएँ धन्य हैं, पुण्यशीला हैं उन्होंने पूर्व जन्ममें पुण्य उपार्जन किया है और उन माताओंने ही अपने मनुष्य जन्म और जीवनका फल अच्छी तरह पाया है. जिन माताओंकी अपने उदरसे उत्पन्न, स्तनके दूधकी लोभी, कानोको लुभानेवाली वाणीको उच्चारण करनेवाली, माँ ! माँ !! इस हृदयस्पर्शी शब्दको बोलनेवाली, तथा स्तन मूल और कक्षके बीच भागमें अभिसरण करनेवाली सन्तान, उन माताओंके स्तनोंको दूधसे परिपूर्ण करती है, फिर वे कोमल कमल सदृश हाथोंके द्वारा गोदीमें बैठाये जानेपर उच्च स्वरोसे उच्चारित, कानोंको अच्छे लगनेवाले, मधुर शब्दोंको बोलकर माताओंको प्रसन्न करती है । मैं भाग्यहीन हूँ, पुण्यहीन हूँ, मैंने कभी पुण्याचरण नहीं किया

हे દેવાનુપ્રિયે ! હું ભદ્ર સાર્થવાહની સાથે અનેક પ્રકારના વિપુલ ભોગ ભોગવતી વિચરું છું. પરંતુ આજપર્યંત મને એક પણ સંતાન થયું નથી. તે માતાઓને ધન્ય છે-તે પુણ્યશીલા છે-તેમણે પૂર્વજન્મમાં પુણ્ય ઉપાર્જન કર્યું છે અને તે માતાઓએ જ પોતાના મનુષ્યજન્મ અને જીવનનું કળ સારી રીતે મેળવ્યું છે કે જે માતાઓનાં પોતાનાં ઉદરથી ઉત્પન્ન, સ્તનના દૂધ માટે લોભી, કાનોને લલચાવનારો વાણી બોલતાં, માં-માં એવા હૃદયસ્પર્શી શબ્દને બોલવાવાળાં તથા સ્તનમૂલ અને કૂખની વચલા ભાગમાં અભિસરણ કરવાવાળાં સંતાન, તે માતાઓના સ્તનોને દૂધથી પરિપૂર્ણ કરે છે વળી તે કોમલ કમલ જેવા હાથો વડે ખોળામાં બેસાડતાં ઉચ્ચ સ્વરથી બોલી કાનોને સાડું લાગે તેવા મધુર શબ્દો બોલીને માતાઓને પ્રસન્ન કરે છે. હું ભાગ્યહીન છું, પુણ્યહીન છું.

६६

३ पुष्पिताम्र

समूहः, गृहसमुदानस्य=गृहेषु=अनेकेषु गेहेषु समुदानं=मिश्राटनं, गृहसमुदानम्
अनेकगृहगृहीतं भैसं तस्य तथा, शेषं सुगमम् ॥ २ ॥

मूलम्—

तएणं ताओ अज्जाओ सुभदं सत्थवाहिं एव वयासी-अम्हे णं

छाया—

ततः खलु ता आर्यिकाः सुभद्रां सार्थवाहीमेवमवादिषुः—वयं खलु

इसी लिये इन सभी सुखोंमेंसे मैं एक भी सुखको न पा सकी। क्यों कि मुझे एक भी संतान नहीं हुई।

हे देवानुप्रियों ! आप लोग बहुत ज्ञानवाली हैं, बहुतसी बातोंको जानती हैं और बहुतसे ग्राम, नगर यावत् सन्निवेशोंमें विचरती हैं बहुतसे राजा, ईश्वर, तलवर आदिसे लेकर सार्थवाहोंके घरोंमें भिक्षार्थ आपका जाना होता है। क्या कहीं कोई विद्या—प्रयोग वा मंत्र—प्रयोग, वमन अथवा विरेचन, वस्तिकर्म वा औषध अथवा भैषज्य आपको मिला है ? जिससे मेरे लडका या लडकी हो सके ॥ २ ॥

મેં કદી પુણ્યનું આચરણ કર્યું નથી. તેથી આવા પ્રકારનાં સુખોમાંથી હું એક પણ સુખને મેળવી શકી નહિ. કેમકે મને એક પણ સંતાન થયું નથી.

હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ લોક બહુ જ્ઞાનવાળાં છો. ઘણીએ વાતોને જાણી છે. અને ઘણાં ગામ નગર યાવત્ સન્નિવેશોમાં વિચરો છો. ઘણા ઘણા રાજા, ઈશ્વર, તલવર આદિથી માંડીને સાર્થવાહોના ઘરોમાં ભિક્ષાર્થ આપને જાવાનું પણ થાય છે. તો શું કયાંય કોઈ વિદ્યાપ્રયોગ અથવા મંત્રપ્રયોગ, વમન અથવા વિરેચન, અસ્તિકર્મ કે ઔષધ અથવા ભૈષજ્ય તમને મળ્યું છે ? જેથી મને પુત્ર કે પુત્રી થઈ શકે ? (૨).

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३३३

देवानुप्पिए ! समणीओ निगंथीओ इरियासमिधाओ जाव गुत्तवंमयारीओ,
नो खलु कप्पइ अम्हं एयमहं कण्णेहिं वि णिसामित्ते, किमंग ! पुण
उदिसित्ते वा समायरित्ते वा, अम्हे णं देवानुप्पिये ! णवरं तव विचित्रं
केवल्लिपण्णत्तं धम्मं परिकहेमो ।

तए णं सुमदा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा
निसम्म हट्ठतुट्ठा ताओ अज्जाओ तिसुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
एवं वयासी-सद्दहामिणं अज्जाओ ! निगंथं पावयणं, पत्तियामिणं रोएमिणं
अज्जाओ ! निगंथं पावयणं ! एवमेयं, तहमेयं, अवितहमेयं, जाव साव-
गधम्मं पडिवज्जए । अहासुहं देवानुप्पिए ! मा पडिवज्जं करेह । तएणं सा
सुमदा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए जाव पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता ताओ
अज्जाओ वंदइ नमंसइ पडिविसज्जइ ।

देवानुप्पिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य ईर्यासमिता यावत् गुप्तब्रह्मचारिण्यः, नो
खलु कल्पते अस्माकम् एतमर्थं कर्णाभ्यामपि निशामयितुं किमङ्ग !
पुनरुपदेष्टुं वा समाचरितुं वा, वयं खलु देवानुप्पिये ! नवरं तव विचित्रं
केवल्लिपण्णत्तं धर्मं परिकथयामः ।

ततः खलु सुमद्रा सार्थवाही तासामार्याणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा
निश्म्य हृष्टतुष्टा ता आर्यास्त्रिकुलो वन्दते नमस्यति वन्दित्ता नमस्यित्ता
एवमवादीत्-श्रद्धधामि खलु आर्याः ! निर्ग्रन्थं प्रवचनं, प्रत्येमि खलु, रोचयामि
खलु आर्याः ! निर्ग्रन्थं प्रवचनम् एवमेतत्, तथ्यमेतत्, अवितथमेतत्,
यावत् श्रावकधर्मं प्रतिपद्ये । यथासुखं देवानुप्पिये ! मा प्रतिबन्धं कुरु ।
ततः खलु सा सुमद्रा सार्थवाही तासामार्याणामन्तिके यावत् प्रतिपद्यते,
प्रतिपद्य ता आर्याः वन्दते नमस्यति प्रतिविसर्जयति ।

३३४

३ पुष्पितासुत्र

तएणं सुभदा सत्थवाही समणोवासिया जाया जाव विहरइ ।
 तएणं तीसे सुभदाए समणोवासियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-
 समए कुडुंबजागरियं जागरमाणीए समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव
 संकप्पे समुपज्जित्था-एवं खलु अहं भदेणं सत्थवाहेण सद्धिं विउलाइं
 भोगभोगां भुञ्जमाणी जाव विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारिगं
 वा पयामि, तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउप्पमायाए जाव जलंते भइस्स
 आपुच्छित्ता सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए अज्जा भवित्ता अगाराओ जाव
 पव्वइत्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता, कल्ले जेणेव भदे सत्थवाहे तेणेव उवा-
 गया, करतल-जाव एवं वयासी-एवं खलु अहं देवानुप्पिया ! तुम्हेहिं
 सद्धिं बहूइं वासाइं विउलाइं भोगभोगां भुञ्जमाणी जाव विहरामि, नो चेव
 णं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं इच्छामि णं देवानुप्पिया ! तुम्हेहिं
 अब्भणुणाया समाणी सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइत्तए । तएणं से भदे

ततः खलु सुभद्रा सार्थवाही श्रमणोपासिका जाता यावद् विहरति ।
 ततः खलु तस्याः सुभद्रायाः श्रमणोपासिकाया अन्यदा कदाचित्
 पूर्वरात्रापररात्रकाले कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या सत्याः अयमेतद्रूपो यावत्
 समुदपद्यत-एवं खलु अहं भद्रेण सार्थवाहेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान्
 भुञ्जाना यावद् विहरामि, नोचैव खलु अहं दारकं वा दारिकां वा प्रजनयामि,
 तत्तत्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुर्यावत् ज्वलति भद्रमापृच्छय सुव्रतानामार्याणा-
 मन्तिके आर्या भूत्वा अगाराद् यावत् प्रव्रजितुम् । एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य
 कल्ये यत्रैव भद्रः सार्थवाहस्तत्रैवोपागता, करतल-यावत् एवमवादीत्-एवं
 खलु अहं देवानुप्पियाः ! युष्माभिः सार्द्धं बहूनि वर्षाणि विपुलान् भोग-
 भोगान् भुञ्जाना यावद् विहरामि, नो चैव खलु दारकं वा दारिकां वा
 प्रजनयामि, तद् इच्छामि खलु देवानुप्पियाः ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती
 सुव्रतानामार्याणामन्तिके यावत् प्रव्रजितुम् । ततः खलु स भद्रः सार्थवाहः

सुभद्राबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३३५

सत्यवाहे सुभद्रं सत्यवाहीं एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इदणिं मुंडा जाव पव्वयाहि, भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, ततो पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वयाहि । तए णं सुभद्रा सत्यवाही भद्रस्स० एयमद्वं नो आढाइ नो परिजाणइ दोच्चं पि तच्चं पि भद्रा सत्यवाही एवं वयासी-इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुव्वेहिं अब्भणुन्नाया समाणी जाव पव्वइत्तए । तए णं से भदे सत्यवाहे जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य एवं पन्नवणाहिय सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा जाव विण्णवित्तए वा ताहे अकामए चेव सुभद्राए निक्खमणं अणुमणित्था ॥ ३ ॥

सुभद्रां सार्थवाहीम् एवमवादीत्-मा खलु त्वं देवानुप्रिये ! इदानीं मुण्डा यावत् प्रव्रज । भुङ्क्ष्व तावद् देवानुप्रिये ! मया सार्द्धं विपुलान् भोग-भोगान्, ततः पश्चात् भुक्तभोगिनी सुव्रतानामार्याणामन्तिके यावत् प्रव्रज । ततः खलु सुभद्रा सार्थवाही भद्रस्य० एतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति द्वितीयमपि तृतीयमपि भद्रा सार्थवाही एवमवादीत्-इच्छामि खलु देवानु-प्रियाः ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती यावत् प्रव्रजितुम् । ततः खलु स भद्रः सार्थवाहो यदा नो शक्नोति-बह्वीभिराख्यापनाभिश्च एवं प्रज्ञापनाभिश्च संज्ञा-पनाभिश्च, विज्ञापनाभिश्च, आख्यापयितुम् वा, यावत् विज्ञापयितुं वा, तदा अकामतश्चैव सुभद्राया निष्क्रमणमन्वमन्यत ॥ ३ ॥

टीका—

‘ तएणं ताओ ’ इत्यादि-रोचयामि=रुचिबिषयीकरोमि, प्रतिपद्ये=

‘ तएणं ताओ ’ इत्यादि—

उसके बाद वह साध्वी उस सुभद्रा सार्थवाहीसे इस प्रकार बोली—

‘ तएणं ताओ ’ इत्यादि.

त्यार भाद ते साध्वी (आर्या) ते सुभद्रा सार्थवाहीसे आ प्रकारे बोली—

४३६

३ पुण्यसाधन

हे देवानुप्रिये ! हम लोग ईर्यासमिति आदि समितियोंसे तथा तीन गुप्ति-
ओंसे युक्त, इन्द्रियको वशमें रखनेवाली गुप्तब्रह्मचारिणी निर्ग्रन्थ श्रमणी हैं। हमको
इन बातोंका कानोंसे सुनना भी नहीं कल्पता, तो फिर हम लोग इनका उपदेश
या आचरण कैसे कर सकती हैं। हे देवानुप्रिये ! विशेष यह है कि हम लोग
केवल प्ररूपित दानशील आदि नाना प्रकारके धर्मका ही उपदेश करती हैं। उसके
बाद वह सुभद्रा सार्थवाही उन आर्याओंसे धर्म सुनकर उसे हृदयमें धारण कर
हृष्ट-तुष्ट हृदयसे उनको तीनबार वन्दन और नमस्कार कर इस प्रकार बोली-हे
देवानुप्रिये ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचनपर श्रद्धा करती हूँ, विश्वास करती हूँ। निर्ग्रन्थ प्रव-
चनपर मेरी रुचि हुई है। आपने जो उपदेश दिया है वह सत्य है, सर्वथा सत्य
है, मैं यावत् श्रावक धर्मको स्वीकार करती हूँ। उन आर्याओंने कहा-हे देवानुप्रिये !
जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा ही करो धर्माचरणमें प्रमाद मत करना। उसके
बाद उस सुभद्रा सार्थवाहीने उन आर्याओंके समीप निर्ग्रन्थ धर्मको स्वीकार किया।

हे देवानुप्रिये ! अमे ढोड्डे धर्या समिति आदि समितिओथी तथा त्रष्टु
शुप्तिओथी युक्त, इन्द्रियोने वशमां राखवावाणी, शुप्त ब्रह्मचारिणी निर्ग्रन्थ
श्रमणी छीये. अमे ढोड्डे आवी जाणत कानेथी पणु सांभजवा कल्पती नथी तो
पछी तेनो उपदेश अथवा आचरणु केवी रीते करी शक्यी ? हे देवानुप्रिये !
विशेष ओ छे के अमे ढोड्डे केवली प्ररूपित दान शील आदि नाना प्रकारना
धर्मनो ओ उपदेश करीये छीये. त्थार जाड ते सुभद्रासार्थवाही ते आर्याओ
पासेथी धर्म सांभजीने ते हृदयमां धारणु करी हृष्ट-तुष्ट हृदयथी तेमने त्रष्टु वार
वन्दन अने नमस्कार करी आ प्रभाणु जाली:—हे देवानुप्रिये ! हुं निर्ग्रन्थ
प्रवचन पर श्रद्धा कइं छुं-विश्वास कइं छुं. निर्ग्रन्थ प्रवचन पर भारी इत्थी थछ
छे. आपे ने उपदेश आप्यो छे ते सत्य छे-सर्वथा सत्य छे. हुं यावत् श्रावक
धर्मनो स्वीकार कइं छुं. ते आर्याओओ कहुं:—

हे देवानुप्रिये ! तने ने प्रकारे सुण थाय तेमने कर. धर्माचरणमां प्रमाद
न करवो. त्थार पछी ते सुभद्रासार्थवाहीने ते आर्याओनी पासे निर्ग्रन्थ धर्मनो

अङ्गीकरोमि, भोगभोगान्-भोगाः=शब्दादयस्तेषां भोगाः=आसेवनानि तान् ।
 आख्यापनाभिः= 'गृहवासः श्रेयान्' इति तत्परीक्षार्थं समान्यतः कथनैः,
 प्रज्ञापनाभिः='त्वं मा परिव्रज' 'संयमाऽऽचरणं दुष्करम्'

अनन्तर उन आर्याओका वन्दन और नमस्कारके साथ विसर्जन किया ।

उसके बाद वह सुभद्रा सार्थवाही श्रमणोपासिका हो गयी, यावत् श्रावक-धर्म पालती हुई विचरने लगी । उसके बाद एक समय पिछली रातमें कुटुम्बजागरणा करती हुई उस सुभद्रा सार्थवाहीके हृदयमें इस प्रकारका आध्यात्मिक यावत् विचार उत्पन्न हुआ कि—मैं भद्र सार्थवाहके साथ विपुल भोगोंको भोगती हुई यावत् विचर रही हूँ । पर आजतक मेरे एक भी सन्तान नहीं हुई । इसलिये मुझे उचित है कि सूर्योदय होनेपर भद्र सार्थवाहको पूछकर सुव्रता आर्याओके समीप आर्या हो घर छोड़कर प्रव्रजित बूँ । ऐसा विचारकर भद्रसार्थवाहके पास आयी और हाथ जोड़ कर इस प्रकार बोली—हे देवानुप्रिय ! मैं तुम्हारे साथ बहुत वर्षों तक विपुल भोगों को भोगती हुई विचर रही हूँ, पर आजतक मेरे एक भी सन्तान नहीं हुई ।

स्वीकार कर्यो. ने पछी ते आर्याओने वंदन अने नमस्कार करीने विसर्जन कर्युं
 (विदाय आपी.)

त्यार पछी ते सुभद्रा सार्थवाही श्रमण उपासिका थछ गछ. तभाम श्रावक-धर्मनुं पालन करती विचरवा लागी. त्यार पछी ओक सभये पाछली रात्रिओ कुटुंभ जागरणा करती करती ते सुभद्रासार्थवाहीना हृदयमां आ प्रकारनो आध्यात्मिक-विचार आय्यो के हुं भद्र सार्थवाहनी साथे विपुल भोगोने भोगवती विचरणुं कइं छुं पणु आन पर्यन्त मने ओ सन्तान थयुं नथी. आथी मने ओ योग्य छे के सूर्योदय थतांन भद्र सार्थवाहने पछीने सुव्रता आर्याओनी पासे आर्या थछ घर गछुं छोडी दधने प्रव्रजित अनुं. ओवे विचार करीने भद्र-सार्थवाहनी पासे आवी अने हाथ जोडी आ प्रकारे बोलीः—हे देवानुप्रिय ! हुं तभारी साथे घणुं वर्षो सुधी विपुल भोगविलास भोगवती कइं छुं. पणु

इतिविशेषतः कथनैः, 'संज्ञापनाभिः=' संयमाऽऽराधनं भुक्तभोगावस्थायाम् सुकरम् ' इति संबोधनाभिः, विज्ञापनाभिः=संयमग्रहणे तदन्तःकरणद्रष्टिम-
परीक्षार्थं सप्रेमप्रतिपादनैः, अकामतः= संयममार्गे तां सुभद्रां निरोद्धुमक्षमः

इसलिये मैं चाहती हूँ कि तुमसे आज्ञा लेकर सुव्रता आर्याओंके समीप दीक्षा लेकर प्रव्रजित हो जाऊँ। उसके बाद वह भद्र सार्थवाह सुभद्रा सार्थवाहीसे इस प्रकार कहने लगा:—

हे देवानुप्रिये ! तुम अभी दीक्षा मत लो। तुम अभी संसारमें ही रहो। विपुल भोग भोगनेके बाद सुव्रता आर्याओंके समीप दीक्षा लेकर प्रव्रजित होना। भद्र सार्थवाहके द्वारा इस प्रकार कहे जानेपर भी उस सुभद्रा सार्थवाहीने भद्रके वचनोंका आदर नहीं किया, और न उसके वचनों पर विचार ही किया। दूसरी बार तीसरी बार भी सुभद्रा सार्थवाहीने इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिय ! तुमसे आज्ञा पाकर प्रव्रज्या लेनेकी इच्छा करती हूँ।

उसके बाद वह भद्र सार्थवाह बहुत प्रकारकी 'आख्यापना'='घरमें रहना

आजन्मुधी भने ओक पणु संतान नथी थयुं माटे हुं आहुं छुं के तभारी आज्ञा लध सुव्रता आर्याओनी पासे दीक्षा लधने प्रव्रजित थध नई. त्थार पछी ते भद्रसार्थवाह सुभद्रा सार्थवाहीने आ प्रभाणु कडेवा लाग्यो:—

हे देवानुप्रिये ! तमे डभणुं दीक्षा न ले। तमे डभणुं संसारमां न रहे। विपुलभोग भोगवी लीधा पछी सुव्रता आर्याओनी पासे दीक्षा लधने प्रव्रजित थजे. भद्र सार्थवाह आ प्रभाणु कडेवाथी ते सुभद्रासार्थवाहीओ भद्रनां वचनो भान्यां नहि तेम तेना वचनो उपर विचार पणु न कर्यो. जीणवार त्रीणवार पणु सुभद्रासार्थवाहीओ आ प्रभाणु कहुं:—हे देवानुप्रिय ! तभारी आज्ञा लधने प्रव्रज्या लेवानी धच्छा हुं करं छुं.

त्थार पछी ते भद्रसार्थवाह भणु प्रकारे आख्यापना=' घरमां रहेवुं ओक

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अच्य. ४ बहुपुत्रिका देवी

३३९

सन्ननिच्छन्नपि सुभद्रायाः निष्क्रमणं=परिव्रजनम् अन्वमन्यत=स्वीचकार ।
शेषं सुबोधम् ॥ ३ ॥

मूलम्—

तण्णं से भदे सत्थवाहे विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ, मित्तनाइ
जाव आमंतेइ, तओ पच्छा भोयणवेलाए जाव मित्तनाइ० सकारेइ सम्माणेइ,

छाया—

ततः खलु स भद्रः सार्थवाहो विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम्
उपस्कारयति मित्रज्ञाति यावदामन्त्रयति । ततः पश्चात् भोजनवेलायां

ही श्रेयस्कर है' इस प्रकार उसकी परीक्षाके लिये जो सामान्य कथन, तत्त्वरूप
आख्यापनाओसे, एवं 'प्रज्ञापना'='तुम प्रव्रजित मत होओ, संयमका आचरण
दुष्कर है' इस प्रकार विशेष रूपसे कथन स्वरूप प्रज्ञापनाओसे, और 'संज्ञापना'=
'भोगोंको भोग लेनेके बाद ही संयमका आराधन सुकर है' इस प्रकारका
समझाना रूप संज्ञापनाओसे, तथा 'विज्ञापना'='संयम ग्रहणमें उसके अन्तःकरणकी
दृढताकी परीक्षाके लिये युक्ति प्रतिपादनरूप विज्ञापनाओसे समझानेमें समर्थ नहीं हो
सका तब उसने अनिच्छापूर्वक सुभद्राको दीक्षा लेनेकी आज्ञा दी ॥ ३ ॥

श्रेयस्कर छे' ओ प्रकारे तेनी परीक्षाने भाटे जे सामान्य कथन के तेना जेवी आख्यापना-
ओथी, तथा प्रज्ञापना='तमे प्रव्रजित न थाओ संयमनु आचरण मुश्किल छे' आ
प्रकारनु विशेषरूपे कथन-तेवी कथनस्वरूप प्रज्ञापनाओथी, तथा संज्ञापना='बोगो
भोगवी बीधा पछी न संयमनु आराधन सुकर (सहज) छे' ओ प्रकारे समझववा-
इथी संज्ञापनाथी, तथा विज्ञापना='संयमभङ्ग करतां तेना अंतःकरणनी दृढतानी
परीक्षाने भाटे युक्तिप्रतिपादनरूप विज्ञापनाओथी आख्या समझववामां समर्थ
न थइ थइयो आरे तेबे अनिच्छापूर्वक सुभद्राने दीक्षा लेनानी आज्ञा आथी. (३)

सुभदं सत्थवाहिं ण्हायं जाव पायच्छित्तं सन्वालंकारविभूसियं पुरिससहस्स-
वाहिणिं सीयं दुरुहेइ । तओ सा सुभदा सत्थवाही मित्तनाइ जाव संबंवि-
संपरिखुडा सव्विह्वीए जाव रवेणं वाणारसीनयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव
सुव्वयाणं अज्जाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्स-
वाहिणिं सीयं ठवेइ, सुभदं सत्थवाहिं सीयाओ पच्चोरुहेइ । तएणं भवे
सत्थवाहे सुभदं सत्थवाहिं पुरओ काउं जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुभदा सत्थवाही ममं भारिया
इट्ठा कंता जाव मा णं वाइवा पित्तिया सिंभिया सन्निवाइया विविहा रोगा-
तंका फुसंतु, एसणं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा, भीया जम्मणमरणणं,
देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वयाइ, तं एयं अहं देवाणु-

यावत् मित्रज्ञाति० सत्करोति सम्मानयति, सुभद्रा सार्थवाही स्नातां यावत् कृत-
प्रायश्चित्तां सर्वालङ्कारविभूषितां पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकां दूरोहयति । ततः
सा सुभद्रा सार्थवाही मित्रज्ञाति० यावत् सम्बन्धिसंपरिवृता सर्वकृद्व्या-
यावत् रवेण वाराणसीनगर्या मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामार्याणामुपाश्रयस्त-
त्रैव उपागच्छति, उपागत्य पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकां स्थापयति, सुभद्रा
सार्थवाही शिविकातः प्रत्यवरोहति । ततः खलु भद्रः सार्थवाहः सुभद्रां
सार्थवाहीं पुरतः कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्याः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य
सुव्रता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-एवं खलु
देवानुप्रियाः ! सुभद्रा सार्थवाही मम भार्या इष्टा कान्ता यावत् मा खलु वातिकाः
पैत्तिकाः श्लैष्मिकाः सान्निपातिका विविधा रोगातङ्काः स्पृशन्तु, एषा खलु
देवानुप्रियाः ! संसारभयोद्दिग्धा, भीता जन्ममरणाभ्यां, देवानुप्रियाणामन्तिके
मुण्डा भूत्वा यावत् प्रव्रजति ! तद् एतामहं देवानुप्रियभ्यो शिष्याभिसां

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३४२

पियाणं सीसिणीभिक्षं दक्षयामि, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सीसिणी-
भिक्षं । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं ।

तएणं सा सुभदा सत्थवाही तुट्ठा सुव्वयार्हि अज्जारहि एवं वुत्ता
समाणी हट्ठं सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता, सयमेव
पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ तिसुत्तो आयाहिणपयाहिणेणं वंदइ नमंसइ,
वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-आलित्तेणं भंते ! जहा देवाणंदा तहा पव्वइया
जाव अज्जा जाया जाव गुत्त बंभयारिणी ॥ ४ ॥

ददामि, प्रतीच्छन्तु खलु देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षाम् । यथासुखं देवानु-
प्रियाः ! मा प्रतिबन्धम् ।

ततः खलु सा सुभद्रा सार्थवाही सुव्रताभिरार्याभिरेवमुक्ताः सती
स्वयमेव आभरणमालयाङ्गारमवमुञ्चति, अवमुच्यः स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं : लोचं
करोति, कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्यास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुव्रता आर्यास्त्रि-
कुल आदक्षिणप्रदक्षिणेन वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, एवमवादीत्-
आदीप्तः खलु भदन्ते ! यथा देवानन्दा तथा प्रव्रजिता यावत् आर्या जाता
यावद् गुप्तब्रह्मचारिणी ॥ ४ ॥

टीका—

‘तएणं से भदे’ इत्यादि—एतस्य व्याख्या निगदसिद्धेति बोध्यम् ॥ ४ ॥

‘तएणं से भदे’ इत्यादि—

उसके बाद उस भद्र सार्थवाहने विपुल अशन पान स्वाद्य स्वाद्यको तैयार

‘तएणं से भदे’ इत्यादि.

तयार पछी ते बहूसार्थवाह विपुल अशनपान आद्य स्वाद्य तैयार करावत.

करवाया और अपने सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको बुलाया और आदर सत्कार के साथ सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको भोजन कराया। बादमें स्नानकी हुई यावत् मसीतिलक आदिसे युक्त, सभी अलङ्कारोंसे विभूषित सुभद्रा हजार मनुष्योंके द्वारा वाहित शिबिका पर बैठायी गई।

उसके बाद वह सुभद्रा सार्थवाही मित्र ज्ञाति स्वजन-बन्धु और सम्बन्धियोंसे युक्त सभी प्रकारकी ऋद्धि यावत् मेरी आदि बाजोंके स्वरके साथ वाराणसी नगरीके बीचोबीचसे होती हुई सुव्रता आर्याओंके उपाश्रयमें आई, और हजार पुरुषोंसे वाहित उस शिबिकासे उतरी। बादमें वह भद्र सार्थवाह सुभद्रा सार्थवाहीको आगे कर सुव्रता आर्याके पास आया, और वन्दन नमस्कार किया। बाद उसके उसने इस प्रकार कहा:—

हे देवानुप्रियों ! यह मेरी भार्या सुभद्रा सार्थवाही मेरी अत्यन्त इष्ट और कान्त है। इसको वात पित्त कफ आदि रोग तथा शीत-उष्ण आदिके दुःख,

अने पोताना अधा मित्रो ज्ञाति-स्वजन बन्धुओंने छोड़ाव्या अने आदर सत्कार करीने ते अधाने लोभन कराव्युं। पछी सुभद्राने नवरावी यावत् मसी तिलक (आंउलो) आदि करावी तमाम अलङ्कार (धरेणुं) थी शशुगारी हजार मनुष्योंके उपाडेही शिबिका (पालणी) उपर भेसावामां आवी।

त्यार पछी ते सुभद्रासार्थवाही मित्र, ज्ञाति, स्वजन-बन्धु तथा सम्बन्धियोंनी साथे तमाम प्रकारनी ऋद्धि, लेरी आदि वाजोंगाजोंना स्वर साथे वाराणसी नगरीनी वर्योवर्य थधने सुव्रता आर्याओंना उपाश्रयमां आवी. अने हजार पुरुषोंके उपाडेही ते शिबिकामांथी उतरी. पछी ते भद्रसार्थवाह सुभद्रा सार्थवाहीने आगण करीने सुव्रता आर्यानी पासे आव्यो. अने वन्दन नमस्कार कर्या पछी तेछे आ प्रकारे कहुं:—

हे देवानुप्रियो ! आ भारी श्री सुभद्रा सार्थवाही भारी धणीज छष्ट अने कान्त (प्रिय) छे. तेने वात पित्त कफ वगैरे रोग ठंडी गरमी वगैरेमां दुःख

સુન્દરબોધિની ટીકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૪ બહુપુત્રિકા દેવો

૩૪૨

સ્પર્શ ન કર સકે. - ઇસકે લિખ સર્વદા યત્ન કરતા આરહા હૂં, સો યહ સાર્થવાહી સંસારકે ભયસે ઉદ્વિગ્ન હો તથા જન્મ મરણસે ડરકર આપ લોગોંકે પાસ મુઝ હોકર પ્રવ્રજિત હો રહી હૈ, ઇસલિયે મૈં આપ લોગોંકો યહ શિષ્યારૂપ ભિક્ષા દે રહા હૂં. હે દેવાનુપ્રિયો ! ઇસકો આપ લોગ સ્વીકાર કરૈં.

ભદ્ર સાર્થવાહકે ઇસ પ્રકાર કહને પર ઇસ મહાસતીને ઇસ સાર્થવાહીસે કહા-હે દેવાનુપ્રિયે ! જૈસી તુમ્હારો ખુશી હો, શુભ કામમેં પ્રમાદ મત કરો. સુવ્રતા મહાસતી દ્વારા ઇસ પ્રકાર કહે જાનેપર વહ સુભદ્રા સાર્થવાહી અપને હાથોસે માલા ઓર આભૂષણોંકો ઉતાર દિયા, ઓર ઇસને અપને હાથસે પચ્ચમુષ્ટિક લુચ્ચન ક્રિયા. બાદમેં વહ સુવ્રતા આર્યાંકે સમીપ આકર તોન વાર આદક્ષિણ-પ્રદક્ષિણા પૂર્વક વન્દન નમસ્કાર કરકે બોલી—

હે મહાસતી ! યહ સંસાર જરા-મરણ રૂપ આગસે જલ રહા હૈ,—અત્યન્ત જલ રહા હૈ. જિસ તરહ કોઈ ગૃહસ્થ ઘરમેં આગ લગનેપર જલતી હુઈ વસ્તુઓસે

સ્પર્શ કરો ન શકે તે માટે હું હમેશાં યત્ન કરતો આવું છું. તે આ સાર્થવાહી સંસારના ભયથી ચિંતાતુર બનીને તથા જન્મમરણના ડરથી આપ લોકોની પાસે મુઠિત થઈ પ્રવ્રજિત થાય છે. માટે હું આપ લોકોને આ શિષ્યારૂપ ભિક્ષા આપું છું. હે દેવાનુપ્રિયો, આનો આપ લોકો સ્વીકાર કરો.

ભદ્ર સાર્થવાહના આ પ્રકારે કહેવાથી તે મહાસતીએ તે સાર્થવાહીને કહ્યું:— હે દેવાનુપ્રિયે ! જેવી તમારી ખુશી. કોઈ શુભ કામમાં પ્રમાદ ન કરો. સુવ્રતા મહાસતીએ આ પ્રમાણે કહેવાથી તે સુભદ્રાસાર્થવાહીએ પોતાના હાથેથી માલા અને ઘરેણાં ઉતારી નાખ્યાં અને તેણે પોતાને હાથેથી પંચ મુષ્ટિક લુંચન કર્યું. પછી તે સુવ્રતા આર્યાની પાસે આવીને ત્રણ વાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણાપૂર્વક વન્દન નમસ્કાર કરીને બોલી:—

હે મહાસતી ! આ સંસાર જરા-મરણરૂપ અગ્નિ વડે બળી રહ્યો છે—પૂજ્ય બળે છે. જેમ કોઈ ગૃહસ્થ ઘરમાં આગ લાગે ત્યારે બળી જતી વસ્તુઓમાંથી

૩૪૪

૩ ગુણિતાશ્રવણ

બહુમૂલ્ય ઓર થોડે વજનવાળી વસ્તુકો નિકાલ લેતા હૈ ઓર-ઉસે સુરક્ષિત રક્ષતા હૈ ડસી પ્રકાર મૈં અપની આત્માકો જો મેરી ઇષ્ટ હૈ, કાન્ત હૈ, પ્રિય હૈ, સંમત =સમ્માનિત હૈ અનુમત-બડે પ્રેમસે સુરક્ષિત હૈ, બહુમત હૈ અનેક પ્રકારસે લલિત પાલિત હૈ, ડસકો શીત, ઉષ્ણ, ભૂસ્થ, તૃષા, ચોર, સિંહ, સર્પ, ડાંસ, મચ્છર તથા વાત પિત્ત કફ આદિ રોગ પરીષદ ઉપસર્ગ કોઈ નુકસાન ન પહુંચા સકેં તથા મેરી આત્મા પરલોકમૈં હિત રૂપ, સુસ્થરૂપ કુશલ રૂપ ઓર પરમ્પરાસે કલ્યાણ રૂપ રહે । ઇસ લિયે મૈં આપકે પાસ મુઙ્ગિત હોકર પ્રવ્રજિત હોતી હૂં । મૈં પ્રતિલેખના આદિ ક્રિયાકો સીઁઁઁગી । આપકી આજ્ઞાસે સંયમકી સબ ક્રિયાકો પાલૂંઁગી । ઇસ પ્રકાર વહ સાર્થવાહી દેવાનન્દાકે સમાન પ્રવ્રજિત હુઈ ઓર આર્યા હો ગઈ તથા પાંચ-સમિતિ ઓર ત્રીન ગુણિયોસે યુક્ત હો સકલ ઇન્દ્રિયોકા દમન કર વહ ગુણવ્રદ્ધચારિણી હો ગયી ॥ ૪ ॥

બહુ કિમતવાળી અને ઓછા વજનવાળી વસ્તુને કાઢી લે છે અને તેને સુરક્ષિત રાખે છે તેવીજ રીતે હું મારો આત્મા-કે જે મારો ઇષ્ટ છે-કાન્ત છે-પ્રિય છે-સંમત=સમ્માનિત છે, અનુમત=બહુ પ્રેમથી સુરક્ષિત છે, બહુમત છે=અનેક પ્રકારથી લલિત પાલિત છે, તેને ઠંડી, ગરમી, ભૂખ, તરસ, ચોર, સિંહ, સર્પ, ડાંસ, મચ્છર, તથા વાત, પિત્ત, કફ વગેરે રોગ, પરીષદ, ઉપસર્ગ કોઈ નુકસાન પહોંચાડી ન શકે તથા મારો આત્મા પરલોકમાં હિતરૂપ, સુખરૂપ, કુશલરૂપ તથા પરમ્પરાથી કલ્યાણરૂપ રહે તે માટે તમારી પાસે મુંડિત થઇને પ્રવ્રજિત બનું છું. હું પ્રતિલેખના આદિ ક્રિયાને શીખીશ. આપની આજ્ઞાથી સંયમની બધી ક્રિયાઓનું પાલન કરીશ. આ પ્રકારે તે સાર્થવાહી દેવાનન્દાની પેઠે પ્રવ્રજિત બની અને આર્યા થઇ ગઇ તથા પાંચ સમિતિ અને ત્રણ ગુણિઓથી યુક્ત થઇને બધી ઇન્દ્રિઓનું દમન કરીને તે ગુણવ્રદ્ધચારિણી થઇ ગઇ. ॥ ૪ ॥

मूलम्—

तएणं सा सुभद्रा अज्जा अन्नया कयाइ बहुजणस्स चेडरूवे संसु-
 च्छिया जाव अज्झोववण्णा अब्भंगणं च उव्वट्ठणं फासुयपाणं च अलत्तगं च
 कंकणाणि य अंजणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेळगाणि य खज्जलगाणि य
 खीरं च पुप्फाणि य गवेसइ, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए वा दारियाए वा
 कुमारे य कुमारियाए य डिंभए य डिंभियाओ य अप्पेगइयाओ अब्भंगेइ,
 अप्पेगइयाओ उव्वट्ठेइ, एवं अप्पेगइयाओ फासुयपाणएणं ण्हावेइ, अप्पे-
 गइयाणं पाए रयइ, अप्पेगइयाणं उट्ठे रयइ, अप्पेगइयाणं अच्छीणि अंजेइ,
 अप्पेगइयाणं उसुए करेइ, अप्पेगइयाणं तिलए करेइ, अप्पेगइयाओ
 दिगिंदलए करेइ, अप्पेगइयाणं पंतियाओ करेइ, अप्पेगगाइं छिज्जाइं
 करेइ, अप्पेगइया वन्नएणं समालभइ, अप्पेगइया चुन्नएणं
 समालभइ, अप्पेगइयाणं खेळणगाइं दलयइ, अप्पेगइयाणं खज्जल-

छाया—

ततः खलु सा सुभद्रा आर्या अन्यदा कदाचि बहुजनस्य चेटरूपे
 समूर्च्छिता यावद् अध्युपपन्ना अभ्यञ्जनं च उद्वर्त्तनं च प्रासुकपानं च
 अलक्तकं च कङ्कणानि च अञ्जनं च वर्णकं च चूर्णकं च खेलकानि च
 खज्जलकानि च क्षीरं च पुष्पाणि च गवेषयति, गवेषयित्वा बहुजनस्य
 दारकान् दारिका वा कुमारांश्च कुमारिकाश्च डिम्भांश्च डिम्भिकाश्च अप्येक-
 कान् अभ्यङ्गयति अप्येककान् उद्वर्त्तयति, एवम् अप्येककान् प्रासुकपानकेन
 स्नपयति, अप्येककानां पादौ रञ्जयति, अप्येककानाम् ओष्ठौ रञ्जयति,
 अप्येककानाम् अक्षिणी अञ्जयति, अप्येककानाम् इषुकान् करोति, अप्येक-
 कानां तिलकान् करोति, अप्येककान् दिलिन्दलके करोति, अप्येककानां
 पङ्क्तीः करोति, अप्येककान् छेद्यान् (छिन्नान्) करोति, अप्येककान्
 वर्णकेन समालभते, अप्येककान् चूर्णकेन समालभते, अप्येककेभ्यः खेलकानि

गाईं दलयइ, अप्पेगइयाओ क्षीरभोजनं भुंजावेइ, अप्पेगइयाणं पुष्पाईं ओमुयइ, अप्पेगइयाओ पाएसु ठवेइ, अप्पेगइयाओ जंघासु करेइ, एवं ऊरुसु, उच्छंगे, कडीए, पिठे, उरसि, खंधे, सीसे य करतलपुडेणं गहाय हलउलेमाणी २ आगायमाणी २ परिगायमाणी २ पुत्तपिवासं च धूयपिवासं च नत्तुयपिवासं च नत्तिपिवासं च पच्चणुब्भवमाणी विहरइ ।

तएणं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सुभदं अज्जं एवं वयासी-अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निगंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तवंभयारिणीओ नो खलु अम्हं कप्पइ जातककम्मं करित्तेए, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया जाव अज्झोववन्ना अब्भंगणं जाव नत्तिपिवास वा पच्चणुब्भवमाणी विहरसि, तं णं तुमं देवाणुप्पिया एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि । तएणं सा सुभदा अज्जा

ददाति, अप्पेककेभ्यः खज्जुलकानि ददाति, अप्पेककान् क्षीरभोजनं भोजयति, अप्पेककानां पुष्पाणि अवमुञ्चति, अप्पेककान् पादयोः स्थापयति, अप्पेककान् जङ्घयोः करोति, एवं ऊर्वोः, उत्सङ्गे, कट्यां, पृष्ठे, उरसि, स्कन्धे, शीर्षे च करतलपुटेन गृहीत्वा हलउल्लयन्ती २ आगायन्ती २ परिगायन्ती २ पुत्रपिपासां च दुहितृपिपासां च नप्तृकपिपासां च नपूत्रीपिपासां च प्रत्यनुभवन्ती विहरति ।

ततः खलु ताः सुव्रता आर्याः सुभद्रामार्यामेवमवादीत्-वयं खलु देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य इर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यो नो खलु अस्माकं कल्पते जातकर्म कर्तुम्, त्वं च खलु देवानुप्रिये ! बहुजनस्य चेटरूपेषु मूर्च्छिता यावत् अध्युपपन्ना अभ्यञ्जनं च यावत् नपूत्रीपिपासां वा प्रत्यनुभवन्ती विहरसि, तत् खलु देवानुप्रिये ! एतस्य स्थानस्य आलोचय यावत् प्रायश्चित्तं प्रतिपद्यस्व । ततः खलु सा सुभद्रा आर्या सुव्रताना-

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३४७

सुव्वयाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ ।

तएणं ताओ समणीओ निगंथीओ सुभइं अज्जं हीलेंति निंदंति खिसंति गरहंति अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति । तएणं तीसे सुभइए अज्जाए समणीहिं निगंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारिज्जमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था-जयाणं अहं अगारवासं वसामि तयाणं अहं अप्पवसा, जप्पमिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता, तप्पमिइं च णं अहं परवसा, पुव्वि च समणीओ निगंथीओ आढेंति परिजाणेंति, इयाणिं नो आढाइंति नो परिजाणंति, तं सेयं खलु मे कल्लं जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडियक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए । एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ

मार्याणामेतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति, अनाद्रियमाणा अपरिजानन्ती विहरति ।

ततः खलु ताः श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्यः सुभद्रामार्या हीलन्ति निन्दन्ति खिसन्ति गर्हन्ते अभीक्ष्णम् २ एतमर्थं निवारयन्ति । ततः खलु तस्याः सुभद्राया आर्यायाः श्रमणीभिर्निर्ग्रन्थीभिर्हील्यमानाया यावत् अभीक्ष्णम् २ एतमर्थं निवारयन्त्या अयमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् समुद-पद्यत-यदा खलु अहम् अगारवासं वसामि तदा खलु अहम् आत्मवशा, यतः प्रभृति च खलु अहं मुण्डा भूत्वा अगारात् अनगारतां प्रव्रजिता ततः प्रभृति च खलु अहं परवशा, पूर्वं च श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य आद्रियन्ते, परि-जानन्ति, इदानीं नो आद्रियन्ते नो परिजानन्ति, तत् श्रेयः खलु मे कल्ये यावत् ज्वलति सुव्रतानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रम्य प्रत्येकम् उपाश्रयम् उपसंपद्य खलु विहर्तुम् ; एवं संप्रक्षते, संप्रेक्ष्य कल्ये यावत् ज्वलति

३४८

३ पुण्ड्रिकावली

पडिनिक्खमेइ, पडिनिक्खमित्ता पाडियकं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।
तए णं सा सुभद्दा अज्जा अज्जाहिं अणोहट्ठिया अणिवारिया सच्छंदमई
बहुजणस्स चेट्ठरूपेसु मुच्छिता जाव अब्भंगणं च जाव नत्तिपिपासं च
पच्चणुभवमाणी विहरइ ।

तएणं सा सुभद्दा अज्जा पासत्था पासत्थविहारी एवं ओसण्णा०
ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी संसत्ता संसत्तविहारी अहाच्छंदा
अहाच्छंदविहारी बहूइं वासाइं सामन्नपरियाणं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासि-
याए संलेहणाए अत्ताणं झुसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता तस्स
ठाणस्स अणालोइयप्पडिकंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मं कप्पे बहुपुत्ति-
याविमाणे उववायसमाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरियाए अंगुलस्स असंखेज्ज-
भागमेत्ताए ओगाहणाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववण्णा ।

सुव्रतानामार्याणामन्तिकत्वा प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य प्रत्येकमुपाश्रयमु-
पसंपद्य खलु विहरति । ततः खलु सा सुभद्रा आर्या आर्याभिः अनपघ-
ट्टिका अनिवारिता स्वच्छन्दमतिः बहुजनस्य चेट्ठरूपेषु मूर्च्छिता यावत्
अभ्यञ्जनं च यावत् नपूत्रीपिपासां च प्रत्यनुभवन्ती विहरति ।

ततः खलु सा सुभद्रा आर्या पार्श्वस्था पार्श्वस्थविहारिणी एवमवसन्ना
अवसन्नविहारिणी कुशीला कुशीलविहारिणी संसक्ता संसक्तविहारिणी यथा-
च्छन्दा यथाच्छन्दविहारिणी बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पाल-
यित्वा अद्धमासिकया संलेखनया आत्मानं जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि अनशनेन
छित्त्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा
सौधर्मे कल्पे बहुपुत्रिकाविमाने उपपातसभायां देवशयनीये देवदूष्यान्तरिता
अंगुलस्य असंख्येयभागमात्रया अवगाहनया बहुपुत्रिकादेवीतया उपपन्ना ।

सुन्दरबोधिनो टोका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३४९

तए णं सा बहुपुत्तिया देवी अहुणोवन्नमिता समानी पंचविहाए पज्जत्तीए जाव भासामणपज्जत्तीए० । एवं खलु गोयमा ! बहुपुत्तियाए देवीए सा दिव्वा देविङ्की जाव अभिसमण्णागया । से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ बहुपुत्तिया देवी २ ? गोयमा ! बहुपुत्तिया णं देवी जाहे जाहे सकस्स देविदस्स देवरण्णो उवत्थाणियणं करेइ, ताहे २ बहवे दारए य दारियाए य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सकस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविङ्की दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवानुभागं उवदंसेइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ बहुपुत्तिया देवी ॥ ५ ॥

ततः खलु सा बहुपुत्रिका देवी अधुनोपपन्नमात्रा सती पञ्चविधया पर्याप्त्या यावद् भाषामनःपर्याप्त्या० । एवं खलु गौतम ! बहुपुत्रिकया देव्या दिव्या देवर्द्धिः यावत् अभिसमन्वागता । अथ सा केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते बहुपुत्रिका देवी २ ? गौतम ! बहुपुत्रिका खलु देवी यदा यदा शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य उपस्थानं (प्रत्यासत्तिगमनं) करोति । तदा तदा बहून् दारकांश्च दारिकाश्च डिम्भांश्च डिम्भिकाश्च विकुरुते, विकृत्य यत्रैव शक्रो देवेन्द्रो देवराजस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य दिव्यां देवर्द्धिं दिव्यं देवज्योतिः दिव्यं देवानुभागमुपदर्शयति । तत्तेनाऽर्थेन गौतम ! एवमुच्यते बहुपुत्रिका देवी ॥ ५ ॥

टीका—

‘तएणं सा’ इत्यादि—ततः=तदनन्तरं खलु इति वाक्यालङ्कारे सा=

‘तएणं सा’ इत्यादि—

उसके बाद वह सुभद्रा आर्या एक समय गृहस्थके बालबच्चोंपर प्रेम करने

‘तएणं सा’ इत्यादि

त्यार पछी ते सुभद्रा आर्या ओक वખत गृहस्थनां बालबच्चों उपर प्रेम

३५०

३ पुष्पिताम्र

पूर्वोक्ता प्रसिद्धा वा आर्या=साध्वी सुभद्रानाम्नी, अन्यदा=अन्यस्मिन् समये कदाचित्=अनिश्चितकाले बहुजनस्य=बहुलोकस्य चैतरूपे=कुमारस्वरूपे संमूर्च्छिता=संमोहिता यावद् अध्युपपन्ना=बालप्रेमासक्ता संजाता अत एव अभ्यङ्गनं=तैलादिमर्दनम्, चकारः सर्वत्र वाक्यालङ्कारार्थकः, उद्वर्तनं=गात्र-मलापनयनाय पिष्टादिसुगन्धिद्रव्यविशेषम्, प्रासुकपानं=प्रगता असवः उच्छ्वासनिच्छ्वासात्मकाः प्राणा यतस्तत् प्रासुकं, पीयते यत् तत् पानं, प्रासुकं च तत्पानं प्रासुकपानं सकलजीवोपाधिरहितमचित्तजलम् अलक्तकम्=हस्तचरणादिरञ्जकं मेहंघादिद्रव्यविशेषम्, कङ्कणानि=बलयानि करभूषणविशेषान्, अञ्जनं=कञ्जलम्, वर्णकं=चन्दनादिविशेषम्, चूर्णकं=गन्धद्रव्यसम्बन्धिरजः, खेलकानि=शालभञ्जिकादीनि ('खिलौना' इति भाषायाम्) खज्जलकानि=खाद्यद्रव्यविशेषान् (खाजा इति भाषायाम्) क्षीरं=दुग्धं पुष्पाणि=कुसुमानि

लगी और प्रेमके आवेशमें उन बच्चोंके लिये वह आर्या लगानेके लिये तेल, शरीरका मैल दूर करनेके लिये उबटन, पीनेके लिये प्रासुक जल, उन बच्चोंके हाथ पैर रंगनेके लिए मेंहदी आदि रञ्जक द्रव्य, कङ्कण=हाथोंमें पहननेका कडा, अञ्जन=काजल, वर्णक=चन्दन आदि, चूर्णक=सुगन्धित द्रव्य, खेलक=खेलनेके लिये शाल-भञ्जिका (पुतली) आदि खिलौने, खानेके लिये खाजे, पीनेके लिये दूध और माला आदिके लिये अचित्त फूल, इन सभी वस्तुओंका अन्वेषण करती थी। बादमें उन

करवा लागी અને પ્રેમના આવેશમાં તે બચ્ચાંને માટે તે આર્યા, ચોળવા માટે તેલ, શરીરનો મેલ દૂર કરવા માટે ઉબટન (પીડી), પીવા માટે પ્રાસુક પાણી, તે બચ્ચાંના હાથ પગ રંગવા માટે મેંદી વગેરે રંજક દ્રવ્ય, કંકણ=હાથમાં પહેરવા માટે કડાં, અંગડી, અંજન=કાજળ, વર્ણક=ચન્દન આદિ, ચૂર્ણક=સુગન્ધિત દ્રવ્ય, ખેલક=રમવા માટે પૂતળીઓ આદિ રમકડાં, ખાવા માટે ખાનાં, પીવા માટે દૂધ તથા માલા (હાર) ને માટે અચિત્ત ફૂલ, આ બધી વસ્તુઓ મેળવવાની શોધ કરતી હતી પછી તે ગૃહસ્થોના છોકરા, છોકરીઓમાંથી, કુમાર કુમારિકાઓ-

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३५१

च गवेषयति=अन्वेषयति, गवेषयित्वा=अभ्यङ्गनादिपुष्पान्तवस्तूनि अन्वेष्य
 बहुजनस्य=विपुललोकस्य दारकान्=बहुकालिकबालकान् दारिकाः=बहुकालिक-
 बालिका वा=अथवा कुमारान्=अधिकतरवर्षकान् बालकान्, कुमारिकाः बहु-
 तरवार्षिका बालिकाः, डिम्भान्=अल्पकालिकशिशून् डिम्भिकाः=अल्पकालिक-
 बालिकाश्च, अप्येककान्=कैश्चन अभ्यङ्गयति=तैलेन गात्रं मर्दयति, अपीति
 समुच्चयार्थकः; तेन एकमपि तदतिरिक्तञ्च अनेकमित्यर्थः। एककान् उद्वर्तयति=
 गात्रमलपनयनाय पिष्टादिसुगन्धिद्रव्यं लेपयति, एवम्=अनेन प्रकारेण
 एककान् प्रासुकपानीयेन स्नपयति, एककानां पादौ=चरणौ रञ्जयति=अलक्त-
 कादिना रक्तवर्णौ करोति, एककानाम् ओष्ठौ=अधरौ रञ्जयति=रक्तवर्णौ विदधाति,
 एककानाम् अक्षिणी=नेत्रे अञ्जयति=अञ्जनेन भूषिते करोति, एककानाम् इषुकान्=
 ललाटदेशे बाणाकारान् तिलकविशेषान् करोति, एककानां तिलकान्=केशरकुङ्कु-
 मादिना ललाटे विन्यासविशेषान् करोति, एककान् दिगिन्दलके देशीशब्दो-

गृहस्थोके लडके लडकियों में से कुमारकुमारियों में से, बच्चे बच्चियों में से, किसी एक
 को तेलकी मालिश करती थी, किसीकी देहमें उबटन लगातीथी, किसी एकको
 प्रासुक जलसे स्नान कराती थी, किसी एकके पैरोंको रंगती थी, एकके ओठोंको
 रंगती थी, किसीकी आँखोंमें अँजन लगाती थी, किसीके ललाट पर बाण आदिके
 आकारका तिलक लगाती थी, किसीके ललाटपर केशर आदिके द्वारा तिलक विस्-
 षका विन्यास करती थी, किसी एक बच्चेको हिण्डोलेमें रखकर झुलाती थी, और

मांथी, भाण्डो अने भाजाओमांथी डोहने तेव भावीस करती हती, डोहने शरीरे
 उभटन (पीठी) लगाउती हती, डोहने प्रासुक पाणीथी स्नान करावती हती,
 डोहना पग रंगी देती हती, डोहना डोठ रंगती हती, डोहने आंभळ
 आंभती हती तो डोहना कपाण उपर भाणु आदिना आकारना आउवो आउती
 हती, डोहना कपाणे केशर आदिथी लुदा लुदा प्रकारना तिलक आदिना विन्यास
 करती हती, डोह ओक भाण्डोने हींयका नाभती हती तथा डेटवांक भाण्डोनी ओक

અર્થે તેન-‘ હિન્દોલકે ’ હત્યર્થઃ કરોતિ, એકકાનાં પદ્ધત્તીઃ=ત્રેણીઃ કરોતિ, એકકાન્ છિન્નાન્=છિન્નમિન્નાન્ એકત્રસ્થિતાન્ પૃથક્પૃથક્ કરોતિ, એકકાન્ ચૂર્ણકેન=ચન્દનવિશેષેણ સમાલભતે=અનુલેપયતિ, એકકાન્ ચૂર્ણકેન=સુગન્ધિ-દ્રવ્યવિશેષેણ સમાલભતે=સુવાસયતિ, એકકેભ્યઃ સ્વેલકાનિ=શાલમઙ્ગિકાદીનિ વ્રદાતિ, એકકેભ્યઃ સ્વજ્જુલકાનિ=સ્વાદ્યદ્રવ્યવિશેષાન્ ‘ સ્વાજા ’ ઇતિ ભાષા-પ્રસિદ્ધાન્ દદાતિ, એકકાન્ ક્ષીરભોજનં=દુગ્ધપાનં ભોજયતિ=કારયતિ, એક-કાનાં પુષ્પાણિ=કુસુમાનિ અવમોચયતિ=કણ્ઠાદિતોઽધસ્તાદ્વિસર્જયતિ, એકકાન્ પાદયોઃ=ચરણયોઃ સ્થાપયતિ, એકકાન્ જઙ્ગયોઃ કરોતિ, એવમ્=અનેન પ્રકા-રેણ ઝર્વોઃ, ઉત્સન્ને=ક્રોડે, કઠ્યાં=શ્રોણ્યાં, પૃષ્ઠે=પૃષ્ઠભાગે, ઉરસિ=વક્ષસિ, સ્કન્ધે

કુછ બચ્ચોકો એક કતાર (પંક્તિ) મેં સઢા કરતી થી, તથા પંક્તિમેં સઢે હુએ બચ્ચોકો અલગ ૨ સઢા કરતી થી, એકકે શરીરમેં ચન્દન લગાતી થી, તો એકકે શરીર કો સુગન્ધિત ચૂર્ણક (પાઉડર) સે સુવાસિત કરતી થી, એકકો સ્વેલનેકે લિયે સ્વિલૌના દેતી થી, તથા કિસીકો સ્નાનેકે લિયે સ્વાજે દેતી થી, ઓર કિસીકો દૂધ પીલાતી થી, કિસીકે કણ્ઠમેં પડી હુઈ અચિત્ત (કાગદકે) ફૂલોંકી માલા ઉતાર લેતી થી, કિસીકો અપને પૈરોંપર બૈઠાતી થી તો કિસીકો અપની જઘાપર રસવતી થી ઓર હીસી પ્રકાર કિસીકો ઝરૂપર, કિસીકો અપની ગોદીમેં કિસીકો અપની કમરપર, કિસીકો પીઠપર કિસીકો અપની છાતીપર કિસીકો કન્ધેપર કિસીકો અપને

હાર કરી ઊભાં રાખતી હતી અને તે હારમાં ઉભેલાંમાંથી કેટલાંક ખાળકોને જુદાં જુદાં ઊભાં રાખતી હતી. એકના શરીરને ચંદન લગાવતી હતી તો એકને સુગન્ધિત પાઉડરથી સુવાસિત કરતી હતી. એકને રમવા માટે રમકડાં દેતી તો કોઇને ખાવા માટે ખાબાં દેતી હતી અને કોઇને દૂધ પાતી હતી. કોઇની ડાકમાંથી અચિત્ત (કાગળનાં) ફૂલની માળા ઉતારી લેતી. કોઇને પોતાના પગ ઉપર બેસાડતી તો કોઇને પોતાના ખોળામાં રાખતી કોઇને પેટ ઉપર તો કોઇને સાથળ ઉપર અને કોઇને કેડે તો કોઇને ખીંઠ ઉપર, કોઇને છાતી ઉપર તો કોઇને કાંધ

=असे शीर्षे=शिरसि, करतलपुटेन=पाणितलपुटेन गृहीत्वा हलउल्लयन्ती=
बालरञ्जनाय मधुरालापं ' हुलरावा ' इति भाषामसिद्धं कुर्वती, आगायन्ती=
बालरञ्जनाय मन्दं मन्दं गायन्ती, परिगायन्ती=बालान् रुदतो विलोक्य उच्चस्वरेण
गायन्ती, पुत्रपिपासां=पुत्रलालसां दुहितृपिपासां=पुत्रीवाञ्छां नप्तृकपिपासां=
पौत्रदौहित्रलालसां नपुत्रीपिपासां=पौत्री दौहित्री स्पृहां च प्रत्यनुभवन्ती=एतत्कार्येण
सन्तोषं मन्यमाना विहरति=आस्ते । ततः खलु ताः=दीक्षादात्र्यः सुव्रता
आर्याः=साध्व्यः सुमद्रामेवं=वक्ष्यमाणम् अवादिषुः-हे देवानुग्रिये ! वयं
श्रमण्यः=संसारविषयविरक्ताः साध्व्यः निर्ग्रन्थ्यः=ग्रन्थिरहिताः इर्यासमिताः

शिरपर रखती थी, किसीको हाथसे पकडकर हुलराती हुई और बालकोंके मनोरंजनके
लिये मन्द स्वरसे गाती हुई, बालकोंको रोते हुए देखकर उच्च स्वरसे गाती हुई
पुत्रकी लालसा, पुत्रीकी वाञ्छा, पोते और दौहित्रोंकी वाञ्छा, पौत्री और दौहित्रीकी
इच्छाका अनुभव करती हुई, अपने उक्त कार्योंसे सन्तुष्ट होती हुई विचरण कर
रही थी ।

उसके ऐसे आचरणको देखकर सुव्रता आर्या सुमद्रा आर्यासे इस प्रकार
बोली-हे देवानुग्रिये ! अपन लोग संसारिक विषयोंसे विरक्त, ईर्यासमिति आदिसे

ઉપર કોઇને માથા ઉપર રાખતી તો કોઇને હાથેથી પકડીને હુલરાવતી. બાળકને
આનંદ માટે ધીમા ધીમા સ્વરથી ગાતી અને રોતાં બાળકને જોઇને તાણીને
ગાતી, પુત્રની લાલસા, પુત્રીની વાંચ્છા, પોત્ર અને દૌહિત્રની વાંચ્છા, તથા પૌત્રી
અને દૌહિત્રીની વાંચ્છાના અનુભવ કરીને પોતાનાં એ કાર્યોથી સંતોષ માની
વિચરણ કરતો હતો.

તેનાં આવાં આચરણો જોઇને સુવ્રત્રા આર્યા સુમદ્રા આર્યાને આ પ્રકારે
કહેવા લાગી-હે દેવાનુગ્રિયે ! આપણે લોકો સાંસારિક વિષયોથી વિરક્ત ધર્મ-

યાવત્ શબ્દેન ભાષાસમિતાઃ, ઇત્યાદીનાં સંગ્રહઃ, ગુપ્તબ્રહ્મચારિણ્યઃ=સુરસિત્ત-
 બ્રહ્મચર્યાઃ, નો સ્વલ્પ અસ્માકં=શ્રમણીનાં નિર્ગ્રન્થીનામ્ જાતકર્મ=શિશુક્રીડનાદિ-
 ક્રિયાં કર્તુમ્=અનુષ્ઠાતું કલ્પતે=યુજ્યતે, હે દેવાનુપ્રિયે ! સુમદ્રે !
 ત્વં વહુજનસ્ય ચેટરૂપેષુ = કુમારસ્વરૂપેષુ મૂર્ચ્છિતા = સંમોહિતા યાવત્
 અધ્યુપપન્ના દત્તચિત્તા અભ્યક્તનં યાવચ્છબ્દેન વર્ણકાદીનાં સંગ્રહઃ,
 નપૂત્રીપિપાસાં=પૌત્રોદૌહિત્રીસ્પૃહાં પ્રત્યનુભવન્તી વિહરસિ, તત્=તસ્માત્
 કારણાત્ હે દેવાનુપ્રિયે ! એતસ્ય સ્થાનસ્ય એતત્કર્તવ્યસ્ય આલોચય=
 આલોચનાં કુરુ યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્તં=પાપાપનોદનરૂપામ્ ક્રિયાં પ્રતિપદ્યસ્વ=

યુક્ત યાવત્ ગુપ્તબ્રહ્મચારિણી નિર્ગ્રન્થ શ્રમણી છે, ઇસલિયે હમ છોગોંકો બાલક્રીડા
 કરના કરાના આદિ નહીં કલપતા હૈ । હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ ગૃહસ્થોંકે વચ્ચોંસે પ્રેમ
 કરને લગ ગયો હો વચ્ચોંકો તેલ આદિ લગાનેકી ક્રિયા આદિ અકલ્પનીય કાર્ય કર
 રહી હો । તથા પુત્ર પુત્રી, પૌત્ર પૌત્રી ઓર દૌહિત્ર દૌહિત્રીકી વાચ્છાકા અનુભવ
 કરતી હુઈ વિચર રહી હો, સો હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ અપને ઇસ કાર્યપર વિચાર કરો
 ઓર ઇસ પાપકી વિશુદ્ધિકે લિયે આલોચના કરો ઓર પ્રાયશ્ચિત લો ।

સમિતિ આદિથી યુક્ત યાવત્ ગુપ્ત બ્રહ્મચારિણી નિર્ગ્રન્થ શ્રમણી છીએ માટે
 આપણે આળકને રમાડવું આદિ કલ્પવાનું નથી. હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે ગૃહસ્થોના
 બચ્ચાંને પ્રેમ કરવા લાગી ગયાં છો. બચ્ચાંને તેલ આદિ લગાડવાની ક્રિયાથી
 માંડીને બધાં અકલ્પનીય કાર્યો કરી રહ્યાં છો. તથા પુત્ર-પુત્રી, પૌત્ર-પૌત્રી અને
 દૌહિત્ર-દૌહિત્રીની વાચ્છાના અનુભવ કરતાં વિચરો છો. માટે હે દેવાનુપ્રિયે !
 તમે તમારાં આ કાર્યો માટે વિચાર કરો અને આ પાપની વિશુદ્ધિને માટે આલો-
 ચના કરો અને પ્રાયશ્ચિત લો.

स्वीकुरु । ततः खलु सुभद्रा आर्या सुव्रतानामार्याणामेतम्=अव्यवहितोक्तम्
अर्थम्=निर्दिष्टविषयम् नो आद्रियते=न सत्करोति नो परिजानाति=कर्तव्यत्वेन
नो स्वीकरोति, अनाद्रियमाणा=उपेक्षमाणा, अपरिजानन्ती=कर्तव्यत्वेन
तदुक्तमस्वीकुर्वाणा विहरति ।

ततः खलु ताः श्रमण्यो निर्ग्रन्थः सुभद्रामार्यं हिलन्ति=जन्मकर्म-
मर्मोद्धाटनपूर्वकं निर्भत्सयन्ति, निन्दन्ति=कुत्सितशब्दपूर्वकं दोषोद्धाटनेन
अनाद्रियन्ते, खिसन्ति=हस्तमुखादिविकारपूर्वकमवमन्यन्ते, गर्हन्ते=गुर्वादि-

उन आर्याओंके द्वारा इस प्रकार अकल्पनीय बातोंका निषेध करनेपर भी
उस सुभद्रा आर्याने न उन बातोंका कुछ आदर किया और न उन बातोंपर कुछ
ध्यान ही दिया अपितु उसी प्रकारका व्यवहार करती हुई विचरने लगी ।

उसके बाद वे आर्यायें सुभद्रा आर्याकी 'तुम उत्तम कुलमें जन्म लेकर
और उत्तम संयम अवस्थामें आकर ऐसे तुच्छ कर्म करती हो' इस प्रकारकी
'हीलना' करती हैं, और वे कुत्सित शब्द बोलकर उसका दोष प्रकट करती हुई
'निन्दना' करती हैं। हाथ मुख आदिको विकृत करके अपमान करती हुई
'खिसना' करती हैं। गुरु जनोके समीप उसके दोषोंका उद्घाटन करती हुई

ते आर्याओंना आ प्रकारे अकल्पनीय बातोंना निषेध करवा छतां पणु
ते सुभद्रा आर्याओ न तो ते बातोंने भानी के न तेना उपर कांछ ध्यान आर्युं.
पणु तेज प्रकारना व्यवहार करती विचरवा लागी.

त्यार पछी ते आर्याओ कहेती के:—'तमे उत्तम कुलमा जन्मीने उत्तम
संयम अवस्थांमां आवी आवां तुच्छ कर्म करे छे' आवा प्रकारनी होलना
करती, कुत्सित शब्दो (भेषां) ओलीने तेना दोष ओडेर करती करती निन्दना
करवा लागी. हाथ भों आदिथी याणा पाडी अपमान करती खिसना
करवा लागी. शत्रुनोनी पासे तेना दोषो खुल्वा कहीने तिरस्कारइये गर्हणा

૩૫૬

૨ પુનિવસન

સમક્ષં દોષાઽઽવિષ્કરણપૂર્વકં તિરસ્કુર્વન્તિ, અમીક્ષ્ણં ૨=વારંવારમ્ એતમર્થઃ
પુત્રાદિલાલનાદિવિષયં નિવારયન્તિ=અવરુન્ધન્તિ । તતઃ લલુ તસ્યાઃ સુભ-
દ્રાયા આર્યાયાઃ શ્રમણીર્મિર્નિર્ગ્રન્થીભિઃ હિલ્યમાનાયા યાવત્ અમીક્ષ્ણમ્ ૨
એતમર્થ નિવાર્યમાણાયા અયમેતદ્રૂપઃ=વક્ષ્યમાણલક્ષણઃ આધ્યાત્મિકઃ=અન્તઃ-
કરણગતઃ સંકલ્પો યાવત્ સમુદપદ્યત । અનપઘટ્ટિકા=અવિઘ્નમાનોઽપઘટ્ટકો-

તિરસ્કાર રૂપ ‘ ગર્હણા ’ કરતી હૈં ઓર વે બાલક બાલિકાઓ આદિકા લાલન વિષય
કા બાર બાર નિવારણ કરતી હૈં ।

અસકે બાદ અન સુવ્રતા આદિ આર્યાઓકે દ્વારા પૂર્વોક્ત પ્રકારસે હીલના
નિન્દના આદિ કરનેપર તથા વારંવાર નિવારણ કરનેપર અસ સુભદ્રા આર્યાકે અન્તઃ-
કરણમેં અસ પ્રકારકા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ કિ ‘ જબ મૈં અપને ઘરમેં થી તો સ્વતંત્ર થી,
જબ મૈં ઘર છોડકર સુખિંદત હો પ્રવાંજત હો ગઈ તબસે મૈં પરાધીન હૂં । પહેલે યે
શ્રમણ નિર્ગ્રન્થિયૌં મેરા આદર કરતી થીં ઓર મેરે સાથ પ્રેમકા વર્તાવ કરતી થીં,
પર આજ યે ન મેરા આદર હી કરતી હૈં ઓર ન પ્રેમકા વર્તાવ હી કરતી હૈં,
અપિતુ યે સર્વદા મેરી નિન્દા કરતી રહતી હૈં । અસલિયે મુઝે ઉચિત હૈ કિ પ્રાતઃ-
કાલ હોતે હી અન સુવ્રતા આર્યાઓકો છોડકર અલગ ઉપાશ્રયમેં જાકર અતરૂં । એસા

કરતી વારંવાર પુત્ર આદિના લાલન વિષયનું નિવારણ કરે છે.

તે સુવ્રતા આદિ આર્યાઓના ઉપરોક્ત પ્રકારે હીલના-નિન્દના આદિ કર-
વાથી અને નિવારણ (મનાઈ) કરવામાં આવતાં તે સુભદ્રા આર્યાના અંતઃકરણમાં
એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે ‘ જ્યારે હું મારે ઘર હતી ત્યારે સ્વતંત્ર હતી. હવે
જ્યારે ઘર છોડી મુંડિત થઈ પ્રવ્રજિત થઈ, ત્યારથી હું પરાધીન છું. પહેલાં આ
શ્રમણ નિર્ગ્રન્થિઓ મારો આદર કરતી હતી અને મારા સાથે પ્રેમનો વર્તણૂક
કરતી હતી. પણ આજે તે નથી મારો આદર કરતી કે નથી મારી સાથે પ્રેમનો
વર્તાવ કરતી. ઉલટી તે હમેશાં મારી નિન્દા કર્યા કરે છે. માટે સવાર પડતાં જ
આ સુવ્રતા આર્યાઓને છોડી છઠ્ઠ કોઈ બુદ્ધ ઉપાશ્રયમાં ઉતરું એ મારા આદર

યદૃચ્છયા પ્રવર્તમાનાયા હસ્તગ્રહણાદિના નિવર્તકો યસ્યાઃ સા તથા, સ્વચ્છન્દ-
પ્રવૃત્તા, પાર્શ્વસ્થા પાર્શ્વે=સાધુગુણાનામેકતઃ=સાધુગુણેભ્યઃ પૃથગિત્યર્થઃ; તિષ્ઠ-
તીતિ તથા, અવસન્ના=સામાચારીપાલને અવસીદતિ=સ્વેદમનુભવતીતિ તથા,
કુશીલા=કુ=કુત્સિતં ઉત્તરગુણપ્રતિસેવનયા સંજ્વલનકષાયોદયેન વા દૂષિ
તત્વાત્ શીલં યસ્યાઃ સા તથા, સંસક્તા=ગૃહસ્થાદિપ્રેમબન્ધનેન સામાચારી-

વિચાર કર સૂર્યોદય હોતે હી સુવ્રતા આર્યાઓકો છોડકર વહ સુભદ્રા આર્યા નિકલ
ગયી ઓર અલગ ઉપાશ્રયમેં જાકર અકેલી હી રહને લગી। ઉસકે બાદ વહ સુભદ્રા
આર્યા ગુરુણી આદિકે દ્વારા રુકાવટ ન હોનેકે કારણ સ્વચ્છન્દ મતિ હો ગૃહસ્થોંકે
બન્ધોસે પૂર્વવત્ વ્યવહાર કરને લગી।

ઉસકે બાદ વહ સુભદ્રા આર્યા પાર્શ્વસ્થા=સાધુકે ગુણોસે દૂર હો, પાર્શ્વસ્થ-
વિહારિણી હો ગયી, હસી પ્રકાર અવસન્ન=સામાચારી પાલનમેં સ્થિત હો અવસન્ન
વિહારિણી હો ગયી। ઓર ઉત્તર ગુણમેં દોષ લગાનેસે તથા સંજ્વલન કષાયકે ઉદયસે
કુશીલા હો કુશીલ વિહારિણી હો ગઈ ઓર સંસક્તા=ગૃહસ્થ આદિકે સાથ પ્રેમ
બન્ધન કરનેકે કારણ સામાચારોમેં શિથિલતાસે પ્રવૃત્ત હો સંસક્તવિહારિણી હો ગયી,

ઉચિત છે. એમ વિચાર કરી સૂર્યોદય થતાં જ સુવ્રતા આર્યાઓને છોડીને તે
સુભદ્રા આર્યા નીકળી પડી અને જુદા ઉપાશ્રયમાં જઈ એકલી જ રહેવા લાગી.
ત્યાર પછી તે સુભદ્રા આર્યા ગુરુણી આદિનો અંકુશ ન રહેવાથી સ્વચ્છન્દચારિણી
થઈ ગૃહસ્થોનાં ખાળકો સાથે આગળના જેવો વ્યવહાર કરવા લાગી.

ત્યાર પછી તે સુભદ્રા આર્યા પાર્શ્વસ્થ થઈ=સાધુના ગુણોથી દૂર થઈ
પાર્શ્વસ્થ વિહારિણી થઈ. આ પ્રકારે અવસન્ન થઈ=સામાચારી પાલનમાં ખિન્ન થઈ
અવસન્ન વિહારિણી બની. કુશીલ થઈ અને ઉત્તરગુણમાં દોષ લાગવાના કારણે
તથા સંજ્વલન કષાયોના ઉદયથી કુશીલા થઈ કુશીલ વિહારિણી થઈ,
અને સંસક્તા =ગૃહસ્થ વગેરેની સાથે પ્રેમ બન્ધન કરવાના કારણથી સામાચારીમાં

-૩૫૮

૩ પુણ્યતામ્ર

શિથિલીકરણપૂર્વકં પ્રવૃત્તા, યથાચ્છન્દા=સ્વામિપ્રાયપૂર્વકસ્વમતિકલ્પિતમાર્ગે
પ્રવૃત્તા । શેષં સુગમમ્ ॥ ૫ ॥

યથાચ્છન્દા=અપને અભિપ્રાયસે કલ્પિત માર્ગમેં પ્રવૃત્ત હો યથાચ્છન્દવિહારિણી હો ગયી ।
હસ પ્રકાર બહુત વર્ષોં તક ઉસને શ્રામણ્ય પર્યાયકા પાલન કિયા । અન્તમેં અર્ધ-
માસિકી સંલેખના દ્વારા અપની આત્માકો સેવિત કર તીસ ભક્તોંકો અનશન દ્વારા
છેદન કર અપને ઉત્તરગુણ પ્રતિસેવનરૂપ પાપ સ્થાનકી આલોચના ઓર પ્રતિક્રમણ
નહીં કરકે કાલ અવસરમેં કાલકર સૌધર્મ કલ્પકે બહુપુત્રિકા વિમાનમેં ઉપપાત
સભાકે અન્દર દેવશયનીય શય્યામેં દેવદૂષ્ય વસ્ત્રોંસે આચ્છાદિત જઘન્ય અંગુલકે
અસંખ્યાતવેં ભાગમાત્ર અવગાહનાવાલી બહુપુત્રિકા દેવી હોકર ઉત્પન્ન હુઈ । ઉસકે
બાદ યહ બહુપુત્રિકાદેવી ભાષાપર્યાસિ મનઃપર્યાસિ આદિ પાંચ પ્રકારકી પર્યાસિસે
પર્યાસ અવસ્થાકો પ્રાપ્ત કર ઉત્કૃષ્ટ સાત હાથકી અવગાહનાવાલી દેવી હોકર દેવ-
અવસ્થામેં વિચરને લગી ।

શિથિલ પ્રવૃત્તિવાળી અર્ધ=સંસકૃતવિહારિણી થઈ ગઈ. યથાચ્છન્દા=પોતાની મરજીમાં
આવે તે કલ્પિત માર્ગમાં પ્રવૃત્ત થઈ=યથાચ્છન્દ વિહારિણી થઈ. આ પ્રકારે ઘણાં
વર્ષોં સુધી તેણે દીક્ષા પર્યાયનું પાલન કર્યું. આખરે અર્ધમાસિકી સંલેખનાથી
પોતાના આત્માને સેવિત કરીને ત્રીસ ભક્તોંનું અનશન દ્વારા છેદન કરી પોતાના
ઉત્તરગુણ પ્રતિસેવનરૂપ પાપસ્થાનની આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ ન કરતાં કાલ-
અવસરમાં કાલ કરી સૌધર્મ કલ્પના બહુપુત્રિકા નામે વિમાનમાં ઉપપાત સભાની
અંદર દેવશયનીય શય્યામાં દેવદૂષ્ય વસ્ત્રોંથી આચ્છાદિત જઘન્ય અંગુલના અસંખ્યાતમા
ભાગ માત્ર (અવગાહના) વાળી બહુપુત્રિકા દેવી થઈને ઉત્પન્ન થઈ. ત્યાર પછી
જન્મતી વખતે આ બહુપુત્રિકા દેવી ભાષાપર્યાસિ મનપર્યાસિ આદિ પાંચ
પ્રકારોની પર્યાસિથી પર્યાસિ અવસ્થાને પામી ઉત્કૃષ્ટ-સાત હાથની અવગાહનાવાળી

સુન્દરબીચિની ટીકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૪ બહુપુત્રિકા દેવી

૩૫૨

મૂલમ્—

બહુપુત્રિયાણં મંતે ! દેવીણ કેવદ્યં કાલં ઠિઈ પળ્ણત્તા ? ગોયમા !
ચત્તારિ પલિભોવમાઈ ઠિઈ પળ્ણત્તા । બહુપુત્રિયાણં મંતે ! દેવી તાઓ

છાયા—

બહુપુત્રિકાયા ભદન્ત ! દેવ્યાઃ કિયન્તં કાલં સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞસા ?
ગૌતમ ! ચતુઃપલ્યોપમા સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞસા । બહુપુત્રિકા સ્વલ્લ ભદન્ત !

હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકાદેવી હસ પ્રકાર અપની દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિ આદિસે
યાવત્ સમન્વિત હુઈ હૈ ।

હે ભદન્ત ! કિસ કારણસે હસકા નામ બહુપુત્રિકા હુઆ ?

હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકાદેવી જબ—જબ દેવરાજ ઇન્દ્રકે પાસ જાતી હૈ તબ—તબ
વહ બહુતસે લડકે લડકિયોંકી ઓર બચ્ચે બચ્ચિયોંકી વિકુર્વણા કરતી હૈ । વિકુર્વણા
કરનેકે વાદ જહાં દેવતાઓંકે રાજા ઇન્દ્ર હૈ વહાં બાતી હૈ, ઓર દેવતાઓંકે રાજા
ઇન્દ્રકો અપની દિવ્ય ઋદ્ધિ, દિવ્ય દેવ જ્યોતિ ઓર દિવ્ય તેજકો દિસલાતી હૈ ।
હે ગૌતમ ! હસલિયે યહ બહુપુત્રિકા દેવી કહલાતી હૈ ॥ ૫ ॥

હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકા દેવી આ પ્રકારે પોતાની દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિથી
સમન્વિત (પરિપૂર્ણ) થઈ છે.

હે ભદન્ત ! કયા કારણથી તેનું નામ બહુપુત્રિકા પડ્યું ?

હે ગૌતમ ! બહુ પુત્રિકા દેવી જ્યારે જ્યારે દેવોના રાજા ઇન્દ્રની પાસે
જાય છે ત્યારે ત્યારે તે ઘણાં છોકરા—છોકરી તથા બાલકો અને બાળાઓની વિકુર્વણા
કર્યા પછી જ્યાં દેવતાઓના રાજા ઇન્દ્ર છે ત્યાં આવે છે અને તે દેવતાઓના
રાજા ઇન્દ્રને પોતાની દિવ્ય ઋદ્ધિ—દિવ્ય દેવજ્યોતિ તથા દિવ્ય તેજ દેખાડે છે.
હે ગૌતમ ! આ માટે તે બહુપુત્રિકા દેવી કહેવાય છે. (૫).

देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उक्खज्जिहिइ ? गोयमा ! इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे विज्झगिरिपायमूले विभेलसंनिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चा-याहिइ । तएणं तीसे दारियाए अम्मापियरो एकारसमे दिवसे वितिकंते जाव बारसेहिं दिवसेहिं वितिकंतेहिं अयमेयारूवं नामधिज्जं करेति, होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जं सोमा । तएणं सोमा उम्मुक्कवालभावा विणयपरिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूपेण य जोव्वणेण य लावण्येण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाव भविस्सइ । तएणं तं सोमं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कवालभावं विणयपरिणयमित्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिक्कूविणं सुक्कणं पडिरूपएणं नियगस्स भायणिज्जस्स रट्ठकूडयस्स भारियत्ताए दलइस्सइ । सा णं तस्स भारिया भविस्सइ इट्ठा कंता जाव भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविआ चेलपेला (डा) इव सुसंपरिगगहिया रयणकरंडगओ विव

देवी तस्माद्देवल्लोकादायुःक्षयेण स्थितिक्षयेण भवक्षयेण अनन्तरं चयं च्युत्ता क गमिष्यति क उत्पत्स्यते ? गौतम ! अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वष विन्ध्यगिरिपादमूले विभेलसंनिवेशे ब्राह्मणकुले दारिकातया प्रत्याया-स्यति । ततः खलु तस्या दारिकाया अम्बापितरौ एकादशे दिवसे व्यति-क्रान्ते यावद् द्वादशभिर्दिवसैर्व्यतिक्रान्तैरिदमेतद्रूपं नामधेयं कुरुतः, भवतु अस्माकमस्या दारिकाया नामधेयं सोमा । ततः खलु सोमा उन्मुक्तवालभावा विज्ञकपरिणतमात्रा यौवनमनुप्राप्ता रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च उत्कृष्टा उत्कृष्टशरीरा यावद् भविष्यति । ततः खलु तां सोमां दारिकाम् अम्बापितरौ उन्मुक्तवालभावां विज्ञकपरिणतमात्रां यौवनमनुप्राप्तां प्रतिकृजि-तेन शुल्केन प्रतिरूपेण निजकाय भागिनेयाय राष्ट्रकूटकाय भार्यातया दास्यति । सा खलु तस्य भार्या भविष्यति इष्टा कान्ता यावद् भाण्डकरण्ड-कसमाना तैलकेला इव सुसंगोपिता चेलपेटा इव सुसंपरिशृङ्गीता रत्नकरण्डक

सुसारक्खिया सुसंगोविया मा णं सीयं जाव मा णं विविहा रोगातंका फुसंतु ।

तए णं सा सोमा माहिणी रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगां
 भुंजमाणी संवच्छरे २ जुयल्लं पयायमाणी सोलसेहि संवच्छरेहिं बत्तीसं
 दारगरूवे पयाइ । तए णं सा सोमा माहिणीं तेहिं बहूहिं दारगेहि य
 दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य
 अप्पेगइएहि उत्ताणसेज्जएहि य अप्पेगइएहि थणियाएहि य अप्पेगइएहि
 पीहगपाएहि अप्पेगइएहि परंगणएहि अप्पेगइएहिं परक्कममाणेहिं, अप्पेगइएहिं
 पक्खोलणएहिं अप्पेगइएहिं थणं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खीरं मग्गमाणेहिं
 अप्पेगइएहिं खिल्लणयं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खज्जगं मग्गमाणेहिं अप्पे-
 गइएहिं कूरं मग्गमाणेहिं पाणियं मग्गमाणेहिं हसमाणेहिं रुसमाणेहिं अक्को-
 रसमाणेहिं अक्कुसमाणेहिं हणमाणेहिं विप्पलायमाणेहिं अणुगम्ममाणेहिं
 रोवमाणेहिं कंदमाणेहिं विलवमाणेहिं कूवमाणेहिं उक्कूवमाणेहिं निद्धायमाणेहिं

इव सुसारक्षिता सुसंगोपिता मा खलु शीतं यावत् मा विविधाः रोगातङ्काः
 स्पृशन्तु । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् भोग-
 भोगान् भुञ्जाना संवत्सरे संवत्सरे युगलं प्रजनयन्ती षोडशभिः संवत्सरैः
 द्वात्रिंशद् दारकरूपाणि प्रजनयति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी तैर्बहुमि-
 दारकश्च दारिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च डिम्भैश्च डिम्भिकाभिश्च
 अप्येककैः उत्तानशयकैश्च, अप्येककैः स्तनितैश्च अप्येककैः स्पृहकपादैः,
 अप्येककैः पराङ्गणकैः, अप्येककैः पराक्रममाणैः, अप्येककैः प्ररखलनकैः,
 अप्येककैः स्तनं मृग्यमाणैः, अप्येककैः क्षीरं मृग्यमाणैः, अप्येककैः खेलनकं
 मृग्यमाणैः, अप्येककैः खाद्यकं मृग्यमाणैः, अप्येककैः कूरं (भक्तं) मृग्यमाणैः,
 पानीयं मृग्यमाणैः, हसद्भिः, रुष्यद्भिः, आक्रोशद्भिः, आक्रुश्यद्भिः, घ्नद्भिः,
 हन्यमानैः, विप्लवद्भिः, अनुगम्यमानैः, रुदद्भिः, क्रन्दद्भिः, विलपद्भिः,

૩૬૨

૩ પુત્રિપાણ

પલંબમાણેહિં દહમાણેહિં દંસમાણેહિં વમમાણેહિં છેરમાણેહિં મુત્તમાણેહિ મુત્ત-
પુરીસવમિયસુલિત્તોવલિત્તા મહલવસણપુચ્છડા જાવ અમુહવીમચ્છા પરમ-
દુર્ગંધા નો સંચાણઈ રટ્ઠકૂડેણં સંદ્ધિં વિહાણં મોગમોગાં મુંજમાણી વિહ-
રિત્તણ ॥ ૬ ॥

કૂજદિમ્ઃ, ઉત્કૂજદિમ્ઃ, નિર્ધાવદિમ્ઃ, પ્રલમ્બમાનૈઃ, દહદિમ્ઃ, દશદિમ્ઃ,
વમદિમ્ઃ, છેરદિમ્ઃ, મૂત્રયદિમ્ઃ, મૂત્રપુરીષવાન્તસુલિત્તોપલિત્તા મલિનવસન-
પુચ્છડા યાવદ્ અશુચિવોમત્સા પરમદુર્ગંધા નો શક્નોતિ રાષ્ટ્રકૂટેન સાર્દ્ધે
વિપુલાન્ મોગમોગાન્ મુજ્જાના વિહર્તુમ્ ॥ ૬ ॥

ટીકા—

‘બહુપુત્રિયાણં’ इत्यादि—हे भदन्त ! बहुपुत्रिकाया देव्याः कियन्तं
कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? हे गौतम ! चतुःपल्योपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता । हे
भदन्त ! बहुपुत्रिका देवी तस्माद् देवलोकाद् आयुःक्षयेण=आयुर्दलिक-
निर्जरणेन देवलोकवासोचितावधिव्यतिगमेन स्थितिक्षयेण=आयुःकर्मणः

‘બહુપુત્રિયાણં’ इत्यादि—

हे भदन्त ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति कितने कालकी है ?

हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति चार पल्योपमकी है !

हे भदन्त ! वह बहुपुत्रिकादेवी आयुक्षय भवक्षय और स्थितिक्षयके बाद देव-
लोकेसे च्यवकर कहाँ जायगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?

‘બહુપુત્રિયાણં’ इत्यादि.

હે ભદન્ત ! બહુપુત્રિકા દેવીની સ્થિતિ કેટલા સમયની છે ?

હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકા દેવીની સ્થિતિ ચાર પલ્યોપમ છે.

હે ભદન્ત ! તે બહુપુત્રિકા દેવી આયુક્ષય, ભવક્ષય તથા સ્થિતિક્ષય પછી
દેવલોકમાંથી ચ્યવીને કયાં જશે ? કયાં જન્મ લેશે ?

स्थितिनिर्जरेण भवक्षयेण=देवभवकारणभूतकर्मणां गत्यादीनां निर्जरेण
 क=कुत्र उत्पत्स्यते ?=जनिष्यते ? गौतम ! अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे=तन्नामके
 द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे भारते=तन्नामके वर्षे विन्ध्यगिरिपादमूले=विन्ध्याचला-
 धस्तले विभेलसंनिवेशे=विभेलनामकग्रामविशेषे ब्राह्मणकुले=ब्राह्मणवंशे
 दारिकातया=पुत्रीत्वेन प्रजनिष्यते=समुत्पत्स्यते । ततः=जननानन्तरं खलु
 तस्या दारिकाया अम्बापितरौ=मातापितरौ एकादशे दिवसे=दिने व्यति-
 क्रान्ते=व्यतीते यावत् द्वादशभिर्दिवसैः इदमेतद्रूपं=वक्ष्यमाणलक्षणं नामधेयं
 कुरुतः, अस्माकमस्याः दारिकायाः=पुत्र्याः 'सोमा' इति नामधेयं=नाम
 भवतु । ततः=तदनन्तरम् खलु=निश्चयेन सोमा उन्मुक्तबालभावा=व्यतीतबाल्या-
 वस्था, विज्ञकपरिणतमात्रा=विषयसुखाभिज्ञा यौवनम्=युवतिदशाम् अनुप्राप्ता=
 अनु=बाल्यात् पश्चात् प्राप्ता, रूपेण=आकृत्या, च=पुनः, यौवनेन=तारुण्येन, च=
 पुनः लावण्येन=मुक्ताफलगतच्छायातरलतासदृशशरीरावयवान्तःप्रविष्टचाक-
 चिक्येन; उक्तं च —

हे गौतम ! यह बहुपुत्रिकादेवी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर भरत क्षेत्रमें
 विन्ध्यपर्वतके समीप विभेल संनिवेश (गाम) में ब्राह्मणकी कन्या होकर जन्म लेगी ।
 उसके बाद उसके माता पिता ग्यारह दिन बीतनेपर बारहवें दिन अपनी लड़कीका
 नाम सोमा रखेंगे । वह सोमा बालभाव छोड़ती हुई विषय सुखके परिज्ञानके साथ
 यौवनावस्थामें प्रवेशकर रूप-यौवन-लावण्यसे उत्कृष्ट और उत्कृष्ट शरीरवाली होगी ।

हे गौतम ! आ बहुपुत्रिका देवी जम्बूद्वीपनी अंदर भरत
 क्षेत्रमां विन्ध्य पर्वतनी पासे विभेल (संनिवेश) गाममां ब्राह्मणुनी
 कन्या थधने जन्म लेसे. त्यार पछी तेनां मातापिता अगीयांर द्विस वीती गया
 पछी भारमे द्विसे पोतानी छोडरीनु नाम सोमा राखसे. ते सोमा बालभाव
 छोडी विषय सुखनां परिज्ञानवाणी यौवन अवस्थांमां प्रवेश करसे त्यारे रूप-
 यौवन-लावण्यथी उत्कृष्ट अने उत्कृष्ट शरीरवाणी थसे.

“મુક્તાફલેષુચ્છાયાયાસ્તરલત્તમિવાન્તરે ।

પ્રતિભાતિ યદક્ષેષુ તલ્લાવળ્યમિહોચ્યતે ॥ ૧ ॥”

ઉત્કૃષ્ટા=ઉત્કૃષ્ટશરીરા=મનોહરકાયા યાવદ્ ભવિષ્યતિ, તતઃ=પરિણયયોગ્ય-
તાપ્રાપ્ત્યનન્તરં સ્વલુ તાં સોમાં દારિકામ્ અમ્બાપિતરૌ=અનુક્રમવાલમાર્ગ
વિજ્ઞપરિણતમાર્ગાં યૌવનમનુષાસામ્ એતેવાં વપારુયાડ૩૩૩૩ સૂત્રે પ્રાગુપસાદિતા,
પ્રતિકૃજિતેન=સ્વીકૃતિતયા પ્રતિભાષિતેન શુલ્કેન દેયદ્રવ્યેણ પ્રચુરાભરણાદિના
વિભૂષિતાં કૃત્વેતિ શેષઃ, પ્રતિરૂપેણ=અનુકૃતેન પ્રિયવચનેન ‘મયગોપ્યેય’
મિતિપ્રમૃતિના વચસા, નિજકાયા=સ્વકીયાય ભાગિનેયાય=ભગિનીપુત્રાય
રાષ્ટ્રકૂટાય ભાર્યાતયા=સ્ત્રીત્વેન દાસ્યતિ । સા=સોમા સ્વલુ તસ્ય=રાષ્ટ્રકૂટસ્ય
ભાર્યા ભવિષ્યતિ, ઇષ્ટા=વલ્લભા કાન્તા કમનીયતાત્, યાવચ્છબ્દેન, પ્રિયા

ગૌર આદિ સુંદર વર્ણવાળે આકારનો ‘રૂપ’ કહેતે હૈં ।

મોતીકે અન્દરની ચમકકે સમાન જો શરીરની ચમક હો ઉસે ‘લાવળ્ય’
કહેતે હૈં ।

ઉસકે બાદ માતા પિતા, બાલ્યાવસ્થા પાર ૪ વનાવસ્થામૈં પ્રવિષ્ટ ઉસ
સોમા બાલિકાનો વિષય સુલસે અભિજ્ઞ જાનકર નિશ્ચિત દેને યોગ્ય દ્રવ્ય ઔર
પ્રિયવચનકે સાથ અપને માનજે રાષ્ટ્રકૂટકે સાથ ઉસકા વિવાહ કર દેંગે । વહ
સોમા ઉસની ઇષ્ટા કાન્તા અર વલ્લભા હોગી, ઔર વહ ઉસ સોમાની આભૂષણકે

ગૌર આદિ સુંદરવર્ણવાળા આકારને ‘રૂપ’ કહે છે. મોતીની અંદરની
ચમકના જેવી શરીરની ચમક થાય તેને લાવળ્ય કહે છે.

ત્યાર પછી માતાપિતા, બાલ્યાવસ્થા વીતી ગયા પછી યૌવન અવસ્થામાં
આવેલી તે સોમા બાલિકાને વિષય સુખથી અભિજ્ઞ (બાણ્ણીતી) થયેલી બાણ્ણી
નિશ્ચિત દેવાયોગ્ય દ્રવ્ય તથા પ્રિય વચન સાથે પોતાના લાલ્લુજી રાષ્ટ્રકૂટની સાથે
તેના વિવાહ કરશે તે સોમા તેની ઇષ્ટા કાન્તા અને વલ્લભા થશે અને તે,

सदाप्रेमविषयत्वात्, मनोज्ञा सुन्दरत्वात् एवं 'मणामा संमया अणुमया' इत्यादि दृश्यम् । एतद्व्याख्या पूर्वं प्रतिपादिता । भाण्डकरण्डकसमाना=भूषणादिकरण्डकवत्, तैलकेला=तैलधानी सौराष्ट्रदेशप्रसिद्धो मृन्मय-तैलपात्रविशेषः, तद्वत् सुसंरक्षिता=अतितरां परिपालिता, सुसंगोपिता=यत्नेन रक्षिता चेलपेटा इव=वस्त्रमञ्जूषावत् सुसंपरिगृहीता=सुष्ठु परिग्रहत्वेन संरक्षिता । रत्नकरण्डकवत्=इन्द्रनीलादिरत्नमञ्जूषावत् सुसंगोपिता च, शीतं=शीतवाधाः यावत् विविधाः=नानाप्रकाराः रोगातङ्काः=रोगाः=चिरघातिनः, आतङ्काः सद्योघातिनः, इमां मा खलु=नैव स्पृशन्तु=आश्रयन्तु । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटेन=साद्ध विपुलान् बहून् भोगभोगान्=विषयभोगान् भुञ्जाना संवत्सरे संवत्सरे=प्रतिवर्षं युगलं=सन्तानयुग्मं प्रजनयन्ती=प्रसूयमाना षोडशभिः संवत्सैः=वर्षैः द्वात्रिंशद्=द्वयधिकत्रिंशद् दारकरूपान्=बालक-

करण्डकके समान, तेलके सुन्दर बर्तनके समान यत्नपूर्वक रक्षा करेगा, वस्त्रोंकी पेटी के समान उसको अच्छी तरह रखेगा और इन्द्रनील आदि रत्नकरण्डकके समान प्राणोंसे अधिक महत्व देकर रक्षा करेगा, और उसको वात पित्त आदि रोग और आतङ्क न स्पर्श कर सकें इस प्रकार सर्वदा रक्षाको चेष्टा करता रहेगा । उसके बाद वह सोमा दारिका राष्ट्रकूटके साथ विपुल भोगोंको भोगती हुई प्रत्येक वर्षमें एक २ सन्तान-युगलको जन्म देगी । और वह सोलह वर्षमें बत्तीस बच्चोंकी माँ

सोमानी आभूषणना कर'उकनी पेठे, तेलनां सुंदर वासणुनी पेठे यत्नपूर्वक रक्षा करशे. वस्त्रोनी पेटीनी पेठे तेने सारी रीते राखशे अने धनद्र नील आदि रत्न कर'उकनी पेठे प्राणुथी पणु वधारे महत्व दधने तेनी रक्षा करशे. तथा तेने वात पित्त आदि रोग तथा आत'क पणु स्पर्श न करी शके अेवी रीते हमेथां रक्षा करवानी व्यवस्था करतो रहेशे. तयार पछी ते सोमा दारिका राष्ट्रकूटनी साथे विपुल भोगोने भोगवती हर वरसे अेक अेक संताननां जेठवाने जन्म देशे अने ते सोण वर्षमां अत्रीस भाण्ड आणडीअोनी भा थध जशे. पछी नानां भोय्

३६६

३ पुष्पितासूत्र :

‘लक्षणान्’, अत्र दारिकाश्च दारकाश्चेत्यर्थे एकशेषेण दारिका शब्दस्य लोपे रूपशब्देन समासे पुत्रीपुत्ररूपान् इति तदर्थः, प्रजनयति=उत्पादयति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी तैः बहुभिः=अनेकैः दारकैः=पुत्रैः दारिकाभिः=पुत्रीभिः बहुकालिकीभिः, कुमारैः=बहुतरकालिकैः पुत्रैः, कुमारिकाभिः=बहुतरकालिकीभिः पुत्रीभिः, डिम्भैः=अल्पकालिकपुत्रैः, डिम्भिकाभिः=अल्पकालिकीभिः पुत्रीभिश्च, अप्येकैः उत्तानशयकैः=ऊर्ध्वमुखशयनशीलैः, अप्येकैः स्तनितैः=चीत्कारशब्दितैः, अप्येकैः स्पृहकपादैः=स्पृहन्ति=गमनं वाञ्छन्ति, इति स्पृहकाः पादाः=चरणा येषामिति ते तथा गमनेच्छुचरणाः, गमनोत्सुकपादा इत्यर्थः, अत्र गमनेच्छायाश्चेतनवृत्तित्वेऽपि पादेऽप्यारोपात् ‘स्थाली पचति’ स्थाल्या पच्यते, इत्यादिवत् साधुता बोध्या ।
उक्तञ्च —

“वस्तुतस्तदनिर्देश्यं नहि वस्तु व्यवस्थितम् ।

स्थाल्या पच्यत इत्येषा, विवक्षा दृश्यते यतः ॥” इति

अप्येकैः पराङ्गणकैः=परं=स्वकीयादन्यत् अङ्गणं=चत्वरं गम्यत्वेन येषां ते तथा, अन्याङ्गणगमनशीलैः, अथवा पराञ्चनकैरितिच्छाया, परम्=उत्कृष्टम् अञ्चनं=

होजायगी बाद उसके वह सोमा ब्राह्मणी अपने उन छोटे बड़े बच्चे बच्चियोंसे तंग आजायगी । उसके उन बच्चोंमें कोई अल्पकालका जन्मा हुआ बच्चा उत्तान होकर सोता रहेगा, कोई चीत्कार मार कर रोता रहेगा, कोई चलनेकी इच्छा करेगा, कोई दूसरोके आङ्गनमें चला जायेगा अथवा कोई बच्चा अच्छी तरह चलेगा, कोई बच्चा

भाण्डोथी ते सोमा ब्राह्मणी तंग थड जशे. तेनां ये भय्यांभोमां डोड थोडाज काणमां जन्मेलां भय्यां उत्तान थडने सुध रडेथे, डोड राडो पाडीने रोवा लागथे, डोड आलवानी धच्छा करथे, डोड भीजनानां इणीयामां जतुं रडेथे, अथवा डोड भय्युं सारी रीते आलथे. डोड भाण्ड उत्साह करथे, डोड पडथे, डोड भय्युं

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३६७

गमनं येषां ते तथा, सम्यग्गमनवद्भिः, अप्येकैः पराक्रममाणैः=उत्सहमानैः, अप्येकैः प्रस्खलनकैः=प्रकृष्टनिपतनवद्भिः, अप्येकैः स्तनं=पानाय मातुः कुचं मृग्यमाणैः=अन्वेषयद्भिः, अप्येकैः क्षीरं=दुग्धं मृग्यमाणैः, अप्येकैः खेलनकं=खेलत्यनेनेति खेलनं तदेव खेलनकं=क्रीडासाधनं कन्दुक-लगुडादिकं मृग्यमाणैः, अप्येकैः खाद्यकं खाद्यमेव खाद्यकं खाद्यवस्तु 'लपन-श्रीमोदकप्रभृति' मृग्यमाणैः, अप्येकैः कूरं=भक्तम् (ओदनं) मृग्यमाणैः, पानीयं=जलं मृग्यमाणैः, हसद्भिः, रुष्यद्भिः,=रोषं कुर्वद्भिः, आक्रोशद्भिः=क्रुध्यद्भिः आक्रुडयद्भिः, स्वस्ववस्तु ग्रहीतुं कलहं कुर्वद्भिः, घ्नद्भिः=ताड्यद्भिः, हन्यमानैः=अन्येन ताड्यमानैः, विप्रलयद्भिः=विरुद्धं वदद्भिः, अनुगम्यमानैः=पलायनादिकाले पश्चाद् गम्यमानैः, रुदद्भिः=शब्दायमानैः, क्रन्दद्भिः=चीत्कुर्वद्भिः, विलपद्भिः=आर्तस्वरं कुर्वाणैः, कूजद्भिः=स्फुटदधरपूर्वकमप्रकटशब्दं कुर्वद्भिः, उत्कूजद्भिः=उच्चैः शब्दं कुर्वाणैः पूत्कुर्वद्भिः, निद्रादिभिः=

उत्साह करेगा, कोई गिरेगा, कोई बच्चा स्तनको दूँढेगा, कोई दूध चाहेगा, कोई बच्चा खाना माँगेगा, कोई मातके लिये हठ करेगा, कोई पानीका हठ करेगा, कोई हंसता रहेगा कोई रुष्ट होता रहेगा, कोई क्रोध करता रहेगा और कुछ बच्चे अपनी २ वस्तुके लिए लड़ते रहेंगे कोई किसीको मारता रहेगा । कोई किसीकी मार खाता रहेगा, कोई बच्चा अण्डवण्ड बकेगा अर्थात् व्यर्थका बकवाद-शोर गुल करेगा । कोई किसीके पीछे २ दौडता रहेगा, कोई रोता रहेगा, कोई बच्चा

स्तनने शोधवा लागशे, डोध दूध भागशे, डोध अन्धुं आवानुं भागशे, डोध भातने माटे डठ करशे, डोध पाणी माटे डठ करशे, डोध हसतुं रडेशे, डोध शुरसे थतुं रडेशे, डोध रीसाध नशे, डोध अन्ध्यां तो पोतपोतानी यीज माटे डडतां रडेशे, अने डोध डोधने मारतां रडेशे, डोध तो डोधने मार आतां रडेशे, तो डोध अन्ध्यां नेम तेम भडशे अर्थात् व्यर्थ अकवाद-शोरअंभोर करी भूडशे, डोध डोधनी पाछण पाछण होडया करशे, डोध रोतां रडेशे, डोध प्रलाप

૩૬૮

૩ પુણ્યભાષ્ય

નિદ્રાં સેવમાનૈઃ, (સ્વપદ્મિ) પ્રલમ્બમાનૈઃ=વસ્ત્રાશ્ચલં સમાલમ્બમાનૈઃ દહદિમઃ=જ્વલદિમઃ, દશદિમઃ=દન્તૈઃ ક્રુન્તદિમઃ વમદિમઃ=ઉદ્ગિલદિમઃ (પ્રચ્છર્દયદિમઃ) છેરદિમઃ=વારંવારંઃ હદમાનૈઃ, મૂત્રયદિમઃ=મૂત્રં કુર્વદિમઃ મૂત્રપુરીષવાન્તસુલિ-
ક્ષીપલિપ્તા પ્રસ્રાવ-વિષ્ઠોદ્ગીર્ણોત્તમ્રોતા, મલિનવસનપુષ્પડા=મલયુક્તવસ્ત્રૈઃ પુષ્પડા=નિશ્શોભા કાન્તિહીનેત્યર્થઃ, યાવદ્ અશુચિબીમત્સા=અશુચિત્વેન નિતરાં દુર્નિ-
રીક્ષણીયા (ઘૃણિતા) પરમદુર્ગન્ધા=અતિદુર્ગન્ધયુક્તા, રાષ્ટ્રકૂટેન સ્વપતિના સાર્દ્ધં વિપુલાન્=બહૂન્ ભોગભોગાન્ ખુજ્યન્તે=ભોગવિષયીક્રિયન્તે इति ભોગાઃ
શબ્દાદયો વિષયાસ્તેષાં ભોગાઃ=સેવનાનિ તાન્, તથા ખુજ્જાના=સેવમાના વિહર્તુમ્=અવસ્થાતું નો શક્નોતિ=ન પ્રભવતિ ॥ ૬ ॥

પ્રલાપ કરતા રહેગા, કોઈ આર્તસ્વરસે રોયેગા, કોઈ બચ્ચા કૂજતા-અવ્યક્ત શબ્દ કરતા રહેગા, કોઈ જોરસે અવ્યક્ત શબ્દ કરતા રહેગા, કોઈ સોતા રહેગા, કોઈ કપડેકા અંચલ પકડકર લટકતા રહેગા, કોઈ આગસે જલ જાયગા, કોઈ દાંતસે કાટતા રહેગા, કોઈ વમન કરતા રહેગા, કોઈ પાશ્વના કરતા રહેગા, કોઈ મૂત્ર કરતા રહેગા । इसलिये उन बच्चोंका पेशाब पाखाना वमनसे भरी हुई तथा मैले कपड़ोंसे कान्तिहीन, यावत् अशुचि, बीमत्स, अत्यन्त दुर्गन्धित हो राष्ट्रकूटके साथ अपने विपुल भोगोंको भोगनेमें समर्थ न हो सकेगी ॥ ૬ ॥

કરતાં રહેશે, કોઈ આર્તસ્વરથી રૂદન કરશે, કોઈ બચ્ચાં કૂજતા (ટૌકા કરતાં) અવ્યક્ત ન સમભય તેવા શબ્દ બોલ્યા કરશે. કોઈ ભેરથી અવ્યક્ત શબ્દ કર્યા કરશે, કોઈ સુતાં રહેશે, કોઈ કપડાંના છેડા પકડીને લટક્યા કરશે, કોઈ અગ્નિમાં બળી જશે, કોઈ દાંત વડે કરડવા લાગશે, કોઈ ઉલટી કરશે, કોઈ ઝાડે ફરત । રહેશે, કોઈ મુતર્યા કરશે. આ માટે તે બચ્ચાંના પેશાબ-પાયખાના-ઉલટીથી ભરેલી એવાં કપડાંથી કાન્તિહીન એટલે અશુચિ, બીમત્સ અત્યન્ત દુર્ગન્ધિત થઈ રાષ્ટ્રકૂટની સાથે પોતાના વિપુલ ભોગ ભોગવવામાં સમર્થ નહિ થઈ શકશે. (૬).

मूलम्—

तएणं तीसे सोमाए माहणीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-
 समयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुपज्जित्था—एवं
 खलु अहं इमेहिं बह्वाह दारगेहि य जाव डिंभियाहि य अप्पेगइएहि उत्ताण-
 सेज्जएहि य जाव अप्पेगइहिं मुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं दुज्जम्मएहिं हयविप्प-
 हयभग्गेहिं एगप्पहारपडिएहिं जाणं मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता जाव
 परमदुब्बिगंधा नो संचाएमि रट्ठकूडेण सद्धिं जाव भुंजमाणी विहरित्ते ।
 तं धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव जीवियफले जाओणं वंझाओ अवि-
 याउरीओ जाणुकोप्परमायाओ सुरमिसुगंधगंधियाओ विउलाइं माणुस्सगाइं
 भोगभोगाइं भुजमाणीओ विहरन्ति, अहं णं अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा नो
 संचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव विहरित्ते ।

छाया—

ततः खलु तस्याः सोमाया ब्राह्मण्या अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रा-
 पररात्रकालसमये कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या अयमेतद्रूपो यावत् समुदपद्यत—
 एवं खलु अहमेभिर्वहुभिर्दारकैश्च यावद् डिम्भिकमिश्च अप्येकैः उत्तान-
 शयकैश्च यावद् अप्येकैर्मूत्रयद्भिः दुर्जातैः दुर्जन्मभिः इतविप्रहतभाग्यैश्च
 एकमहारपतितैः या खलु मूत्रपुरीषवमितसुलिप्तोपलिप्ता यावत् परमदुरभिगन्धा
 नो शक्नोमि राष्ट्रकूटेन सार्द्धं यावद् भुञ्जाना विहर्तुम् । तद् धन्याः खलु
 ता अम्बिका यावद् जीवितफलं याः खलु बन्ध्या अविजननशीला जानु-
 कूपरमातरः सुरमिसुगन्धगन्धिका विपुलान् मानुष्यान् भोगभोगान् भुञ्जाना
 विहरन्ति, अहं खलु अधन्या अपुण्या नो शक्नोमि राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान्
 यावद् विहर्तुम् ।

तेणं कालेणं २ सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ जाव बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं जेणेव विभेले संनिवेसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओगगहं जाव विहरंति । तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए विभेले सन्निवेसे उच्चनीय जाव अडमाणे रट्ठकूडस्स गिहं अणुपविट्ठे । तएणं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्त-ट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वंदइ नमंसइ, विउलेणं असण ४ पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता एवं वयासी-एवं खलु अहं अज्जाओ रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव संवच्छरे २ जुगलं पयामि, सोलसहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाया ।

तएणं अहं तेहिं बहूहिं दारएहि य जाव डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसिज्जएहिं जाव सुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं जाव नो संचाएमि रट्ठकूडेणं

तस्मिन् काले तस्मिन् समये सुव्रता नाम आर्या इर्यासमिता यावद् बहुपरिवाराः पूर्वानुपूर्वीं यत्रैव वेभेलः सन्निवेशस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यथाप्रतिरूपम् अवग्रहं यावद् विहरन्ति । ततः खलु तासां सुव्रतानामार्याणाम् एकः संघाटको वेभेले सन्निवेशे उच्चनीच० यावत् अटन् राष्ट्रकूटस्य गृहमनुप्रविष्टः । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी ता आर्या एजमानाः पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टा० क्षिप्रमेव० आसनादभ्युत्तिष्ठति अभ्युत्थाय सप्ताष्टपदानि अनुगच्छति, अनुगत्य वन्दते नमस्यति विपुलेन अशन० ४ प्रतिलम्भयति, प्रतिलम्भ्य एवमवादीत्-एवं खलु अहमार्याः ? राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् यावत् संवत्सरे २ युगलं प्रजनयामि षोडशभिः संवत्सरैः द्वात्रिंशद् दारकरूपान् प्रजाता ।

ततः खलु अहं तैर्बहुभिर्दारकैश्च यावद् डिम्भिकाभिश्च अप्येकैः

सुन्दरबीचिनी टोका वर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३७१

सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुंजमाणी विहरित्तए, तं इच्छामि णं
अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए धम्मं निसामित्तए । तएणं ताओ
अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्रं जाव केवल्लिपणत्तं धम्मं
परिकहेइ । तएणं सा सोमा माहणी तासि अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म
हट्ठतुट्ठा जाव हियया ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-
सहहामि णं अज्जाओ ! निगगंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि णं अज्जाओ निगगंथं
पावयणं, एवमेयं अज्जाओ जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं नवरं अज्जाओ !
रट्ठकूडं आपुच्छामि । तएणं अहं देवानुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि ।
अहासुहं देवानुप्पिए ! मा पडिबन्धं । तएणं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ
वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥ ७ ॥

उत्तानशयकैः यावत् मूत्रयद्भिः दुर्जातैः यावद् नो शक्नोमि राष्ट्रकूटेन
सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहर्तुम्, तदिच्छामि खलु
आर्याः ! युष्माकमन्तिके धर्मं निशामयितुम् । ततः खलु ता आर्याः
सोमायै ब्राह्मण्यै विचित्रं यावत् केवल्लिपणत्तं धर्मं परिकथयन्ति ।
ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी तासामार्याणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा
निश्म्य हट्ठतुष्टा० यावद् हृदया ता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्ता
नमस्यत्ता एवमवादीत्-श्रद्धधामि खलु आर्याः ! निर्ग्रन्थं प्रवचनम्, इदमेतद्
आर्याः ! यावत् यद् यथेदं यूयं वदथ, यद् नवरमार्याः ! राष्ट्रकूटमा-
पृच्छामि । ततः खलु अहं देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा यावत् प्रव्रजामि ।
यथासुखं देवानुप्रिये ! मा प्रतिबन्धम् । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी ता
आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्ता नमस्यत्ता प्रतिविसर्जयति ॥ ७ ॥

ટીકા—

‘તણં તીસે’ ઇત્યાદિ-દુર્જાતૈઃ-દુષ્ટં જાતં=માદુર્ભાવો યેષાં તે તથા તૈઃ,
અત એવ-દુર્જન્મભિઃ=દુષ્ટં=કુત્સિતં જન્મ યેષાં મમ દુઃસ્વદાયિતાત્ તે તથા તૈઃ,

‘ તણં તીસે ’ ઇત્યાદિ—

અસકે બાદ એક સમય પિછલો રાતમેં કુટુમ્બજાગરણા કરતી હુઈ અસં સોમા બ્રાહ્મણીકે આત્મામેં ઇસ પ્રકારકા વિચાર ઉત્પન્ન હોગા—કિ અહો ! મેં મલમૂત્ર કરનેવાલે ઇન બહુતસે અમાગે દુસ્વદાયી થોડે ૨ દિનોમેં ઉત્પન્ન હોનેવાલે, દુર્જન્મા છોટે બડે ઓર નવજાત શિશુઓકે દ્વારા મલમૂત્ર ઓર વમનસે લિપી-પુતી અત્યન્ત દુર્ગન્ધમયી હોકર રાષ્ટ્રકૂટકે સાથ સુસ્કા અનુભવ નહીં કર પાતી હૂં ।

વે માતાઈ ધન્ય હૂં ઓર અનકા જીવન સફલ હૈ, જો બન્ધ્યા હૂં, જિન્હેં બચ્ચા નહીં હોતા, જો જાનુકૂર્પરમાતા હૂં જો સુગન્ધ દ્રવ્યોસે સુવાસિત હો મનુષ્ય સમ્બન્ધી ભોગોંકો ભોગતી હુઈ વિચર રહી હૂં, મેં અધન્ય હૂં, અપુણ્ય હૂં, જો કિ મેં રાષ્ટ્રકૂટકે સાથ વિપુલ ભોગોંકો નહીં ભોગ સકતી હૂં ।

‘ તણં તીસે ’ ઇત્યાદિ.

ત્યાર પછી એક સમય પાછલી રાતે કુટુંબ જાગરણ કરતાં તે સોમા બ્રાહ્મણીના મનમાં એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે:—અહો ! હું મળમૂત્ર કરવાવાળાં આ ઘણાં કમનશીબ દુઃખદાયી થોડા થોડા દિવસોમાં જન્મ લેવાવાળાં દુર્જન્મા નાનાં મોટાં અને નવાં જન્મેલાં બાળકોનાં મળમૂત્ર તથા વમનથી લીપાયેલ, ખરડાયેલ અત્યંત દુર્ગન્ધમયી બની હોવાથી રાષ્ટ્રકૂટની સાથે સુખનો અનુભવ લઈ શકતી નથી.

તે માતાએને ધન્ય છે અને તેમના જીવન સફળ છે કે જે વાંઝણી છે—જેને છોકરું થતું નથી, જે જાનુકૂર્પરમાતા છે, જે સુગંધી દ્રવ્યોથી સુવાસિત થઈને મનુષ્ય સંબંધી ભોગો ભોગવતી વિચરે છે. હું અધન્ય છું, અપુણ્ય છું જેથી હું રાષ્ટ્રકૂટની સાથે વિપુલ ભોગોને ભોગવી શકતી નથી.

सुन्दरबोधिनी टोका वर्ग ३ अभ्य. ४ बहुपुत्रिका देवी

३७३

उस काल उस समयमें सुव्रता नामकी आर्याएँ ईर्यासमिति आदिसे युक्त बहुत सी साध्वियोंके साथ तीर्थकर परम्परासे विचरती हुई वेमेल सन्निवेशमें आवेंगी और यथोचित अवग्रह लेकर वहाँ रहने लगेगी। बाद उसके एक दिन उन सुव्रता आर्याओंका एक संघाटक वेमेल सन्निवेशके उच्च नीच मध्यम कुलमें फिरता हुआ राष्ट्रकूटके घरमें आयेगा। उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी आती हुई उन आर्याओंको देखेगी देखकर दृष्ट तुष्ट हृदय हो शीघ्रातिशीघ्र अपने आसनसे उठ कर खड़ी होगी। और उन आर्याओंका आदर सत्कार करनेके लिए सात आठ पग आगे जायेगी। अनन्तर वन्दन और नमस्कार कर विपुल अशन पान आदिसे प्रतिलाभित करेगी। और उनसे इस प्रकार कहेगी—हे देवानुग्रिये। राष्ट्रकूटके साथ विपुल भोगोंको भोगती हुई हमने प्रत्येक वर्षमें युगल बच्चोंको जन्म देकर सोलह वर्षोंमें बत्तीस बच्चोंको जन्म दिया है। मैं दुर्जन्मा उन बच्चोंके मल—मूत्र और वमन आदिसे सनी—पुती दुर्गन्धित शरीर हो अपने पतिके

તે કાળે તે સમયે સુવ્રતા નામની આર્યાઓ ધર્યાસમિતિ આદિ યુક્ત ઘણી સાધ્વીઓની સાથે તીર્થંકર પરંપરાથી વિચરતી બિભેલ સન્નિવેશમાં આવશે અને યથોચિત અવચક્ર લઇને ત્યાં રહેવા લાગશે. પછી એક દિવસ તે સુવ્રતા આર્યાઓનું એક સંઘાડું બિભેલ સન્નિવેશના ઊંચા નીચા અને મધ્યમ કુલમાં ફરતાં ફરતાં રાષ્ટ્રકૂટના ઘરમાં આવશે. ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓને આવતી જશે અને તેમને જોઇને હૃષ્ટતુષ્ટ અંતઃકરણથી જલદી જલદી પોતાને આસનેથી ઉઠીને ઉભી થશે અને તે આર્યાઓનો આદર સત્કાર કરવા માટે સાત આઠ પગલાં સામે જશે ત્યાર પછી વન્દન અને નમસ્કાર કરીને સારી રીતે અશનપાન આદિથી પ્રતિલાભિત કરશે (વહોરાવશે) અને તેમને આ પ્રકારે કહેશે:—

હે દેવાનુપ્રિયે ! રાષ્ટ્રકૂટની સાથે વિપુલ ભોગોને ભોગવતી મેં પ્રત્યેક વર્ષે એક જોડકાં બાળકને જન્મ આપતાં સોળ વર્ષમાં બત્રીસ બચ્ચાંને જન્મ આપ્યો છે. હું હજી જન્મી તે બચ્ચાંના મળખૂત અને ઉલટી આદિથી લીપાયેલી

૩૭૪

૩ પુણિસાસન

હતવિમહતભાગ્યૈઃ=સર્વથા ભાગ્યહીનૈઃ । એકમહારપતિતૈઃ=અલ્પકાલેનૈવ મમ
કુશ્યવતીર્ણૈઃ । શેષં સુગમમ્ ॥ ૭ ॥

સાથ કુછ મી આનન્દ મોગ નહીં કર પાતી । હે આર્યાઈ ! મેં આપ ઓગોકે સમીપ
ધર્મ સુનના ઢાહતી હૂં । ડસકે બાદ વે સાધ્વીયો સોમા બ્રાહ્મણીકો વિચિત્ર યાવત્
કેવલિ પ્રરૂપિત ધર્મકા ઉપદેશ દેંગી ।

ડસકે બાદ વહ સોમા બ્રાહ્મણી ડન આર્યાઓસે ધર્મ સુનકર ડસે હૃદયમેં
અવધારિત કર હૃષ્ટ તુષ્ટ હો અત્યન્ત હર્ષયુક્ત હૃદયસે ડન આર્યાઓકા વન્દન ઓર
નમસ્કાર કરકે ડસ પ્રકાર કહેગી—

હે આર્યાઓ ! મેં નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનપર શ્રદ્ધા રસતી હૂં, ઓર નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન
કો સમ્માનિત કરતી હૂં ।

હે દેવાનુપ્રિયે ! જો આપ કહતી હેં વહી સત્ય હૈ । મેં રાષ્ટ્રકૂટકો પૂછતી
હૂં, બાદમેં આપકે પાસ મુણ્ડિત હોકર પ્રવ્રજિત હોઝંગી ।

હર્ગન્ધવાળાં શરીરે મારા પતિની સાથે કોઇ જાતનો આનંદ મોગ કરી શકતી
નથી. હે આર્યાઓ ! હું આપ લોકોની પાસે ધર્મ સાંભળવા માશું છું ત્યાર
પછી તે સાધ્વીઓ સોમા બ્રાહ્મણીને વિચિત્ર એટલે કેવલી પ્રરૂપિત ધર્મનો
ઉપદેશ આપશે.

ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓ પાસેથી ધર્મ સાંભળીને તે
હૃદયમાં ધારણ કરીને હૃષ્ટ તુષ્ટ થઈને અત્યંત હર્ષયુક્ત હૃદયથી તે આર્યાઓને
વંદન અને નમસ્કાર કરીને આ પ્રકારે કહેશે:—

હે આર્યાઓ ! હું નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન ઉપર શ્રદ્ધા રાખું છું અને નિર્ગ્રન્થ
પ્રવચનને સમ્માનિત કરું છું.

હે દેવાનુપ્રિયે ! જે આપ કહેા છે તેજ સત્ય છે. હું રાષ્ટ્રકૂટને પૂછું છું.
પછી આપની પાસે મુંડિત થઈને પ્રવ્રજિત થઈશ.

सुन्दरबोधिनी टीका सर्ग ३ अध्या. ४ बहुपुत्रिका देवी

३७५

मूलम्—

तएणं सा सोमा माहणी जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागया करतल०
एवं वयासी-एवं खलु मए देवाणुप्पिया ! अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते,
से वि य णं धम्मे इच्छिए जाव अभिरुचिए, तएणं अहं देवाणुप्पिया !
तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइत्तए । तए णं से
रट्ठकूडे सोमं माहणिं एव वयासी-मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! इदाणिं मुंडा
भवित्ता जाव पव्वयाहि । भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं
भोगभोगाइं, ततो पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए मुंडा जाव
पव्वयाहि । तएणं सा सोमा माहणी ण्हाया जाव सरीरा चेडियाचक्कवाल-

छाया—

ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी यत्रैव राष्ट्रकूटस्तत्रैव उपागता
करतल० एवमवादीत्-एवं खलु मया देवानुप्रियाः ! आर्याणामन्तिके
धर्मो निशान्तः (श्रुतः) सोऽपि च खलु धर्म इष्टो यावद् अभिरुचितः,
ततः खलु अहं देवानुप्रियाः ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सुव्रतानामार्याणां यावत्
प्रव्रजितुम् । ततः खलु स राष्ट्रकूटः सोमां ब्राह्मणीमेवमवादीत्-मा खलु
देवानुप्रिये ! इदानीं मुण्डा भूत्वा यावत् प्रव्रज, भुङ्क्ष्व तावद् देवानुप्रिये !
मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान्, ततः पश्चाद् भुक्तभोगा
सुव्रतानामार्याणामन्तिके मुण्डा यावत् प्रव्रज । ततः खलु सा सोमा

उसके बाद आर्याने कहा-जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो । शुभ
काममें प्रमाद मत करो । उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओंको वन्दन
और नमस्कार कर विसर्जन करेगी ॥ ७ ॥

त्यार पछी आर्याओ कडे छेः—जेवी रीते तने सुभ थाय तेम कर. शुभ
काममां प्रमाद न कर. त्यार पछी ते सोमा ब्राह्मणी ते आर्याओने वंदन अने
नमस्कार करी विसर्जन करशे. (७)

परिकिण्णा साओ गिह्वाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता विभेलं संनिवेशं मज्झमज्झेण जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ पज्जुवासइ । तएणं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं केवल्लिपण्णत्तं धम्मं करि-
कहेइ, जहा जीवा वज्झंति । तएणं सा सोमा माहणी सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया । तएणं सा सोमा माहणी समणोवासिया जाया अभिगतं जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।

तएणं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णया कयाइ विभेलाओ संनिवेशाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता, बहिया जणवयविहारं विहरंति ॥ ८ ॥

ब्राह्मणी राष्ट्रकूटस्य एतमर्थं प्रतिगृणोति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी स्नाता यावत् सर्वालङ्कारभूषितशरीरा चेटिकाचक्रवालपरिकीर्णा स्वस्माद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति; प्रतिनिष्क्रम्य वेभेलं संनिवेशं मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामार्याणामुपाश्रयस्तत्रैव उपागच्छति; उपागत्य सुव्रता आर्या वन्दते नमस्यति पर्युपास्ते । ततः खलु ताः सुव्रता आर्याः सोमार्यै ब्राह्मण्यै विचित्रं केवल्लिपण्णत्तं धर्मं परिकथयन्ति, यथा जीवा बध्यन्ते । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी सुव्रतानामार्याणामन्तिके यावद् द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य सुव्रता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यत्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेवदिशं प्रतिगता । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिका जाता अभिगतं यावत् आत्मानं भावयन्ती विहरति ।

ततः खलु ताः सुव्रता आर्या अन्यदा कदाचित् वेभेलात् संनिवेशात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति ॥ ८ ॥

टीका—

‘तण्णं सा’ इत्यादि—व्याख्या पठितसिद्धा ॥ ८ ॥

‘तण्णं सा’ इत्यादि—

उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटके पास आयेगी और हाथ जोड़कर इस प्रकार कहेगी—हे देवानुप्रिय ! मैंने आर्याओंके समीप धर्म सुना । वह धर्म भी मुझे इष्ट प्रिय और हितकारक जान पड़ा और अच्छा लगा, इसलिये हे देवानुप्रिय ! मेरी इच्छा है कि तुमसे आज्ञा लेकर मैं उन आर्याओंके पास जाऊँ और दीक्षा ग्रहण करूँ । सोमा ब्राह्मणीका ऐसा वचन सुनकर राष्ट्रकूट उससे कहेगा—

हे देवानुप्रिये ! अभी तुम मुण्डित होकर प्रव्रजित मत होओ । हे देवानुप्रिये ! अभी तुम मेरे साथ विपुल भोगोंका भोग करो । उसके बाद मुक्तभोगा होकर सुव्रता आर्याके पास प्रव्रजित होना । सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटकी इस सलाहको मान जायगी । बादमें वह सोमा ब्राह्मणी स्नान करके सभी प्रकारके अलङ्कारोंसे

‘तण्णं सा’ इत्यादि.

त्यार पछी ते सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटनी पासे आवशे अने हाथ जेडीने आ प्रकारे कडेशे:—हे देवानुप्रिय ! मे आर्याओं पासेथी धर्मनुं अवश्य कथुं. ते धर्म पणु भने धष्ट प्रिय अने हितकारक लाग्यो ने सारे पणु नष्टायो छे. भाटे हे देवानुप्रिय ! भारी छिछा छे के तभारी आज्ञा लधने हुं ते आर्याओं पासे जळ अने दीक्षा ग्रहण करे. सोमा ब्राह्मणीनां जेवां वचन सांखणी राष्ट्रकूट तेने कडेशे:—

हे देवानुप्रिये ! हाव तुं मुंडित यधने प्रव्रजित न भा. हे देवानुप्रिय ! हाव तो भारी साथे विपुल भोगोने भोगव. त्यार पछी मुक्तभोगा यध सुव्रता आर्यानीं पासे प्रव्रजित थजे. सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटनी अ सलाहने भाणी नशे. पछी ते सोमा ब्राह्मणी स्नान करीने तभाम अतनं धरेखुं-जांअथी अलंकृत

૩૭૮

૩ પુણિતાવા

અલ્લદૃત્ત હો દાસિયોંકે સમૂહસે ધિરી હુઈ અપને ઘરસે નિકલ કર વિમેલ સન્નિવેશકે મધ્ય ભાગસે હોતી હુઈ સુવ્રતા આર્યાઓંકે ઉપાશ્રયમેં આયેગી । આકર વહ સુવ્રતા આર્યાઓંકો વન્દન ઓર નમસ્કાર કર સેવા કરેગી । ઉસકે બાદ વે સુવ્રતા આર્યા ઉસ ઉસ સોમા બ્રાહ્મણીઓં અનેક પ્રકારસે વિચિત્ર કેવલી પ્રજ્ઞત ધર્મકા ઉપદેશ કરેગી— ‘ જિસ પ્રકાર જીવ કર્મસે બદ્ધ હોતે હૈં ઓર મુક્ત હોતે હૈં ’ । ઇસ પ્રકાર કેવલી પ્રહુ-પિત ધર્મ સુનકર વહ સોમા બ્રાહ્મણી સુવ્રતા આર્યાઓંકે પાસ યાવત્ બારહ પ્રકારકા શ્રાવક ધર્મકો સ્વીકાર કરેગી । બાદ ઉત આર્યાઓંકો વન્દન—નમસ્કાર કર જિસ દિશાસે આયેગી ઉસી દિશામેં લોટ જાયગી ।

તદનન્તર વહ સોમા બ્રાહ્મણી શ્રમણાપાસિકા બનેગી । ઓર સમી જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોંકો જાનકર શ્રાવકવ્રતસે આત્માકો ભાવિત કરતી હુઈ વિચરેગી । ઉસકે બાદ વહ સુવ્રતા આર્યા કિસી સમય વિમેલ સન્નિવેશસે નિકલકર બાહર દેશમેં વિહાર કરતી હુઈ વિચરેગી ॥ ૮ ॥

અથ દાસીઓની મંડળીમાં ઘેરાઇને પોતાના ઘરમાંથી નીકળી બિભેલ સન્નિવેશના મધ્ય ભાગમાંથી થઇને સુવ્રતા આર્યાઓના ઉપાશ્રયમાં આવશે આવીને તે સુવ્રતા આર્યાને વંદન નમસ્કાર કરી સેવા કરશે ત્યાર પછી તે સુવ્રતા આર્યાઓ તે સોમા બ્રાહ્મણીને વિચિત્ર કેવલી પ્રજ્ઞત ધર્મનો—અનેક પ્રકારે ઉપદેશ કરશે જે પ્રકારે જીવ કર્મથી બંધાય છે અને મુક્ત થાય છે. ઇત્યાદિ કેવલી પ્રજ્ઞિત ધર્મ સાંભળીને તે સોમા બ્રાહ્મણી સુવ્રતા આર્યાઓની પાસે બાર પ્રકારના શ્રાવકધર્મનો સ્વીકાર કરશે. પછી તે આર્યાઓને વંદન—નમસ્કાર કરીને જે દિશાથી તેઓ આવી હશે તે દિશામાં પાછી જશે.

ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી શ્રમણ ઉપાસિકા બનશે અને બધાં જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોને બાણી શ્રાવક વ્રતથી આત્માને ભાવિત કરતી વિચરશે. ત્યાર પછી સુવ્રતા આર્યાઓ કોઈ સમયે બિભેલ સન્નિવેશથી નીકળીને બીજા દેશમાં વિહાર કરતી વિચરશે. (૮)

मूलम्—

तएणं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ पुव्वानुपुव्वि जाव विहरइ। तएणं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठट्ठा ण्हाया तहेव निग्गया जाव वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता धम्मं सोच्चा जाव नवरं रट्ठकूडं आपुच्छामि, तएणं पव्वयामि । अहामुहं० । तएणं सा सोमा माहणी सुव्वयं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करतल परिग्गहियं० तहेव आपुच्छइ जाव पव्वइत्तए । अहामुहं देवानुप्पिण ! मा पडिबन्धं । तएणं से रट्ठकूडे विउलं असणं तहेव जाव पुव्वभवे सुभद्दा जाव अज्जा जाता, इरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी । तएणं सा सोमा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं

छाया—

ततः खलु ताः सुव्रता आर्या अन्यदा कदाचित् पूर्वानुपूर्वी यावद् विहरन्ति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी अस्याः कथाया लब्धार्था सती हट्ठट्ठा० स्नाता तथैव निर्गता यावद् वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा धर्मं श्रुत्वा यावद् नवरं राष्ट्रकूटमापृच्छामि, यथामुखम्० । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी सुव्रतामार्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा सुव्रतानामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव राष्ट्रकूटस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीत० तथैव आपृच्छति यावत् प्रव्रजितुम् । यथामुखं देवानुप्पिये ! मा प्रतिबन्धम् । ततः खलु स राष्ट्रकूटो विपुलमशनं तथैव यावत् पूर्वभवे सुभद्रा यावद् आर्या जाता, ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिणी । ततः खलु सा सोमा आर्या सुव्रतानामार्याणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अभीते, अधीत्य बहुभिः

३८०

३ पुष्पिका

अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि छट्ठम दसम दुवालस० जाव भावेमाणी बहूइं वासाइं सामणपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिकंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा सकस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववन्ना । तत्थणं अत्थे-गइयाणं देवाणं दोसागरोवमाइं ठिई पणत्ता, तत्थ णं सोमस्स वि देवस्स दोसागरोवमाइं ठिई पणत्ता ।

से णं भंते ! सोमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाव अंतं काहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥ ९ ॥

॥ पुष्पियाए चउत्थं अज्झयणं समत्ते ॥ ४ ॥

षष्ठाष्टमदशमद्वादश० यावद् भावयन्ती बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिकया संलेखनया षट्ठि भक्तानि अनशनेन छित्त्वा आलोचितप्रतिक्रान्ता समाधिप्राप्ता कालमासे कालं कृत्वा शक्रस्व देवेन्द्रस्य देवराजस्य सामानिकदेवतया उदपद्यत । तत्र खलु अस्त्येकैकेषां देवानां द्विसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्र खलु सोमस्यापि देवस्य द्विसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता ।

स खलु भदन्त ! सोमो देवः तस्माद् देवलोकाद् आयुःक्षयेण यावत् चयं च्युत्वा क्व गमिष्यति ? क्व उत्पत्स्यते ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे यावद् अन्तं करिष्यति । एवं खलु जम्बू । श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन चतुर्थस्याध्ययस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः ॥ ९ ॥

॥ पुष्पिकायां चतुर्थमध्ययनं समाप्तम् ॥ ४ ॥

टीका—

‘तएणं ताओ’ इत्यादि—व्याख्या निगदसिद्धा ॥ ९ ॥

‘तएणं ताओ’ इत्यादि—

उसके बाद वह सुव्रता आर्या किसी समय पूर्वानुपूर्वी विचरती हुई फिर विमेल सन्निवेशमें आएगी और वसतिकी आज्ञा लेकर वहाँ तप संयमसे आत्माको भावित करती हुई रहेगी। बाद वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओंके आनेका समाचार पाकर दृष्ट तुष्ट हृदय हो स्नान कर तथा सभी अलङ्कारोंसे विभूषित हो पूर्ववत् उन आर्याओंके पास जाकर यावत् वन्दन और नमस्कार करेगी। वन्दन नमस्कार करके धर्म सुनकर उस आर्यासे कहेगी—हे देवानुप्रिये ! मैं राष्ट्रकूटसे पूछकर आपके समीप मुण्डित होकर प्रव्रज्या लेना चाहती हूँ। वह आर्या उससे कहेगी—हे देवानुप्रिये ! तुम्हें जिस प्रकार सुख हो वैसा करो। प्रमाद मत करो। उसके बाद सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओंको वन्दन और नमस्कार कर उनके पाससे अपने घरमें राष्ट्रकूटके पास आयेगी। आकर हाथ जोड़ राष्ट्रकूटसे पूर्ववत् पूछेगी

‘तएणं ताओ’ इत्यादि.

त्यार पछी ते सुव्रता आर्याओ डोछ समये पूर्वानुपूर्वी विचरण करतां करतां पाछी जिलेस सन्निवेशमां आवशे अने वस्तीनी आज्ञा लप त्यां तपसंयमथी आत्माने भावित करती रहेशे. त्यार पछी ते सोमा ब्राह्मणी ते आर्याओन्हा आववाना समाचार भजतां दृष्ट तुष्ट हृदयथी स्नान करी तथा घरेलुं आभूषणथी विभूषित थछ अगाडनी नेम ते आर्याओनी पासे नधने वंदन नमस्कार करथे अने वंदन नमस्कार करी धर्म सांभजोने ते आर्याओने कडेशे:—हे देवानुप्रिये ! हुं राष्ट्रकूटने पूछीने आपनी पासे मुंडित थछने प्रव्रज्या लेवा आहुं छुं ते आर्या तेने कडेशे:—हे देवानुप्रिये ! तने ने प्रकारे सुख थाय तेम कर. प्रमाद न कर. त्यार पछी सोमा ब्राह्मणी ते आर्याओने वंदन नमस्कार करी तेमनी पासेथी पोताना घरमां राष्ट्रकूटनी पासे आवशे. आनीने हाथ जोडी राष्ट्रकूटने

३८२

३ पुष्पिस्तोत्र

कि हे देवानुप्रिय ! मेरी इच्छा है कि मैं तुमसे आज्ञा लेकर सुव्रता आर्याओंके पास प्रव्रजित होऊँ। इस बातको सुनकर राष्ट्रकूट कहेगा—हे देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो। इस कार्यको करनेमें प्रमाद मत करो। उसके बाद वह राष्ट्रकूट विपुल अशन पान स्वाद्य स्वाद्य चार प्रकारके भोजन बनवाकर अपने मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको आमंत्रित करेगा। और आदर सत्कारके साथ उनको भोजन करायेगा। जिस प्रकार पूर्वभवमें सुभद्रा आर्या हुई थी उसी प्रकार यह भी आर्या होकर ईयासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी होवेगी। उसके बाद वह सोमा आर्या उन सुव्रता आर्याओंके समीप सामायिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन करेगी, और बहुतसे षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश आदि तपोके द्वारा आत्माको भावित करती हुई बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्यायका पालन कर मासिकी संलेखनासे साठ भक्तोंको अनशनसे छेदन कर अपने पाप स्थानोंका आलोचन और प्रतिक्रमण कर समाधिको प्राप्त हो काल मासमें काल कर देवेन्द्र शक्रके

अगाडिनी जेम पूछशे के:—हे देवानुप्रिय ! भारी धन्धा छे के हुं तभारी आज्ञा लधने सुव्रता आर्याओंनी पासे प्रव्रजित थाई. आ वात सांभणी राष्ट्रकूट कडेशे:— हे देवानुप्रिये ! जेम तने सुभ थाय तेम कर. आ कार्य करवामां प्रमाद न कर. त्यार पछी ते राष्ट्रकूट विपुल (धण्डा) अन्नपान, पाद्यस्वाद्य चार प्रकारना भोजन जनावरावी पोताना मित्र, ज्ञाति, स्वजन बन्धुओंने आमंत्रणु आपसे अने आदर सत्कार सहित तेमने भोजन करावशे. जे प्रकारे आगला जवमां सुभद्रा आर्या थर्छ हती तेज प्रकारे आ पणु आर्या यधने ईयासमिति आदिथी युक्त थर्छ यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी थशे. त्यार पछी ते सोमा आर्या ते सुव्रता आर्याओंनी पासे सामायिक आदि अगीयार अंगोनु अध्ययन करशे अने धण्डांजे तप-षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादशम आदि तपोथी आत्माने भावित करती धण्डां वर्षो सुधी दीक्षा पर्यायनु पालन करी पछी मासिकी संलेखनाथी साठ भक्तोने अनशन द्वारा (उपवासथी) छेदन करी पोतानां पापस्थानोना आलोचन अने प्रतिक्रमण करी समाधिने प्राप्त थर्छ काल मासमां काल करी देवेन्द्र शक्रनी सामानिक देव

હુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૩ અભ્ય. ૪ ચતુપુત્રિકા દેવી

૧૮૩

સામાનિક દેવ હોકર ઉત્પન્ન હોગી + વહાં એક ૨ દેવકી સ્થિતિ દો સાગરોપમ હૈ ।
 ઉસ દેવલોકમેં સોમદેવકી મી સ્થિતિ દો સાગરોપમ હોગી ।

ગૌતમ સ્વામી પૂછતે હૈ—હે ભદન્ત ! વહ સોમદેવ આયુ ભવ સ્થિતિ ક્ષયકે
 બાદ ઉસ દેવલોકસે ચ્યવકર કહાં જાયગા ? ઓર કહાં ઉત્પન્ન હોગા ?

ભગવાન કહતે હૈ—હે ગૌતમ ! મહાવિદેહ ક્ષેત્રમેં ઉત્પન્ન હોકર ચાલત
 સિદ્ધ હોગા, ઓર સવ દુસ્વોકા અન્ત કરેગા ।

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ—હે જમ્બૂ ! ઇસ પ્રકાર શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને
 પુષ્પિતાકે ચતુર્થ અધ્યયનકે ભાવોકા નિરૂપણ કિયા હૈ ॥ ૯ ॥

। પુષ્પિતાકા ચૌથા અધ્યયન સમાપ્ત હુઆ ।

થઇને ઉત્પન્ન થશે. ત્યાં એક એક દેવની સ્થિતિ એ સાગરોપમ છે. તે દેવલોકમાં
 સોમદેવની પણ સ્થિતિ એ સાગરોપમની થશે.

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે:—હે ભદન્ત ! તે સોમદેવ આયુભવ અને સ્થિતિ-
 ક્ષય પછી તે દેવલોકમાંથી વ્યવીને ક્યાં જશે ? અને ક્યાં ઉત્પન્ન થશે ?

ભગવાન કહે છે:—હે ગૌતમ ! મહા વિદેહક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થઇને તે સિદ્ધ
 થશે અને તમામ દુઃખોનો અંત કરશે,

સુધર્મા સ્વામી કહે છે:—હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે
 પુષ્પિતાના ચતુર્થ અધ્યયનના ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે. (૬).

પુષ્પિતાનું ચોથું અધ્યયન સમાપ્ત.

३८४

३ पुष्पिताम्र

पञ्चमध्वयनम्

मूलम्—

जइणं भंते ! समणेणं भगवया उक्खेवओ० । एवं खलु जंबू !
 तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नयरे गुणसिलए चेइए, सेणियराया, सामी
 समोसरिए, परिसा निग्गया । तेणं कालेणं २ पुण्णभदे देवे सोहम्ममे कप्पे
 पुण्णभदे विमाणे सभाए सुहम्मए पुण्णभदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणिय-
 साहस्सीहिं जहा सूरियाभो जाव वत्तीसविहं नट्टविहिं उवदंसित्ता जामेव
 दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए । कूडागारसाला० पुव्वभवपुच्छा ।
 एवं गोयमा ! तेणं कालेणं २ इहेव जम्बूदीवे दीवे भारहे वासे मणिवइया
 नामं नयरी होत्था रिद्ध०, चंदो राया, ताराइण्णे चेइए । तत्थणं मणिवइयाए
 नयरीए पुण्णभदे नाम गाहावई परिवसइ अट्ठे । तेणं कालेणं २ थेरा
 भगवंतो जातिसंपण्णा जाव जीवियासमरणभयविप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा

छाया—

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता उत्क्षेपकः । एवं खलु जम्बू !
 तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरं गुणशिलं नाम चैत्यम्,
 श्रेणिको राजा, स्वामी समवसृतः, परिषद् निर्गता । तस्मिन् काले २
 पूर्णभद्रो देवः सौधर्मे कल्पे पूर्णभद्रे विमाने सभायां सुधर्मायां पूर्णभद्रे
 सिंहासने चतुर्भिः सामानिकसहस्रैः बथा सूर्याभो यावद् द्वात्रिंशद्विधं
 नाट्यविधिमुपदर्श्य यस्या दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः, कूटागार-
 शाला, पूर्वभवपृच्छा । एवं गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये अत्रैव
 जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मणिपदिका नाम नगरी अभवत्, ऋद्धस्तिमित-
 सद्गदा०, चन्द्रो राजा, ताराकीर्णं चैत्यम् । तत्र खलु मणिपदिकायां
 नगर्यां पूर्णभद्रो नाम गाथापतिः परिवसति, आढ्यः । तस्मिन् काले

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ५ पूर्णभद्र देव

३८५

पुष्पाणुपुर्वि जाव समोसदा, परिता निगया । तएणं से पुण्णभदे गाहावई
इमीसे कहाए लद्धे समाने हट्ट० जाव पण्णत्तीए गंगदत्ते तदेव निगच्छइ
जाव निक्खंतो जाव गुत्तबंभयारी । तएणं से पुण्णभदे अणगारे भगवंताणं अंतिए
सामाइयमादियाइं एकारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्टट्टम
जाव भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए
संलेहणाए सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिकंते समाहिपत्ते
कालमासे कालं किच्चा सोहम्मो कप्पे पुण्णभदे विमाणे उववायसभाए देव-
सयणिज्जंसि जाव भाषामणपज्जत्तीए । एवं खलु गोयमा ! पुण्णभदेणं देवेणं
सा दिव्वा देविट्ठी जाव अभिसमण्णागया । पुण्णभदस्स णं भंते ! देवस्स
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! दोसागरावमा ठिई पण्णत्ता ।
पुण्णभदे णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ जाव कहिं गच्छिहिइ ? कहिं

तस्मिन् समये स्थविरा भगवन्तो जातिसम्पन्नाः, यावत् जीविताशामरणभय-
विप्रमुक्ता बहुश्रुता बहुपरिवाराः पूर्वानुपूर्वी यावत् समवसृताः । परिषत्
निर्गता । ततः खलु स पूर्णभद्रो गाथापतिः अस्याः कथाया लब्धार्थः सन्
इष्टतुष्टो० यावत् प्रज्ञप्त्यां गङ्गदत्तस्तथैव निर्गच्छति यावद् निष्क्रान्तो यावद्
गुप्तब्रह्मचारी । ततः खलु स पूर्णभद्रोऽनगारो भगवतामन्तिके सामायिका-
दीनि एकादशाङ्गानि अधीते; अधीत्य चतुर्थ षष्ठाष्टम० यावद् भावयित्वा
बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिकया संलेखनया
षष्टि भक्तानि अनशनेन छित्त्वा आलोचित-प्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः काल-
मासे कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे पूर्णभद्रे विमाने उपपातसभायां देवशयनीये
आसिद् भाषामनःपर्याप्त्या । एवं खलु गौतम ! पूर्णभद्रेण देवेन सा
दिव्या देवर्द्धिः यावद् अभिसमन्वागता । पूर्णभद्रस्य खलु भदन्त !
देवस्य कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! द्विसागरोपमा स्थितिः

૩૮૬

૩ પુષ્પિતાલુપ

ઉવવજ્જિહિ ? ગોયમા ! મહાવિદેહે વાસે સિજ્જિહિ જાવ અંતં કાહિ ?
 एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं निक्खेवओ ॥ १ ॥

॥ પંચમં અજ્ઞયણં સમત્તં ॥ ૫ ॥

મજ્જસા । પૂર્ણમદ્રઃ खलु भदन्त ! देवस्तस्माद् देवलोकाद् यावत् क्व
 गमिष्यति ? क्व उत्पत्स्यते ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावदन्तं
 करिष्यति । एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन
 निक्षेपकः ॥ १ ॥

॥ पञ्चममध्ययनं समाप्तम् ॥ ૫ ॥

ટીકા—

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા ॥ ૧ ॥

॥ इति पञ्चममध्ययनं समाप्तम् ॥ ૫ ॥

પાંચવો અધ્યયન.

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ—

હે મદન્ત ! શ્રમણ મગવાન મહાવીરને પુષ્પિતાકે ચતુર્થ અધ્યયનમેં પૂર્વોક્ત
 માવોકા વર્ણન ક્રિયા હૈ તો હે મગવન્ ! પશ્ચમ અધ્યયનમેં મગવાને કિસ અભિપ્રાય
 કા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ?

‘અધ્યયન પાંચમું.’

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ

હે મદન્ત ! શ્રમણ મગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના એથા અધ્યયનમાં પૂર્વોક્ત
 માવોકા વર્ણન કયું છે તો હે મગવન્ ! પાંચમા અધ્યયનમાં મગવાને કયા
 અભિપ્રાયનું નિરૂપણ કયું છે ?

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ३ अध्या. ५ पूर्णभद्र देव

३८७

आर्य सुधर्मानि कहा—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें राजगृह नामक नगर था । वहाँ गुण-
शिलक नामक चैत्य था । उस नगरका राजा श्रेणिक था । उस कालमें श्रमण
भगवान महावीर स्वामी उस नगरीमें पधारे । भगवानके दर्शनके लिये परिषद निकली ।
उस काल उस समयमें पूर्णभद्र देव सौधर्म कल्पके पूर्णभद्र विमानमें सुधर्मा सभाके
अन्दर पूर्णभद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक देवोंके साथ बैठे हुए थे वह
पूर्णभद्र देव सूर्याभ देवके समान भगवानको यावत् बत्तीस प्रकारकी नाट्यविधि
दिखाकर जिस दिशासे आये उसी दिशामें चले गये । गौतमने भगवानसे पूर्णभद्र
देवकी देव ऋद्धिके विषयमें पूछा भगवानने पूर्ववत् कूटागार शालाके दृष्टान्तसे उन्हें
प्रतिबोधित किया । फिर गौतमको उस देवके पूर्वभव जाननेकी जिज्ञासा होनेपर
भगवानने कहा—उस काल उस समय इसी मध्य जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें मणिप-
दिका नामकी नगरी थी, जो बड़ी २ अट्टालिकाओंसे युक्त तथा बाहरी भीतरी

आर्य सुधर्माणि कहुं:—

हे जम्बू ! ते काणे ते समये राजगृह नामे नगर હતું ત્યાં ગુણશિલક
નામનું ચૈત્ય હતું. તે નગરનો રાજા શ્રેણિક હતો, તે કાળે શ્રમણ ભગવાન મહા-
વીર સ્વામી તે નગરીમાં પધાર્યા. ભગવાનનાં દર્શન માટે પરિષદ નીકળી. તે કાળ
તે સમયે પૂર્ણભદ્ર દેવ સૌધર્મકલ્પના પૂર્ણભદ્ર વિમાનમાં સુધર્મા સભાની અંદર
પૂર્ણભદ્ર સિંહાસન ઉપર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે બેઠેલા હતા. તે
પૂર્ણભદ્ર દેવ, સૂર્યાભદેવના જેવા ભગવાનને બત્રીસ પ્રકારની નાટ્યવિધિ બતાવી
જે દિશામાંથી આવ્યા તે દિશામાં પાછા ગયા. ગૌતમે ભગવાનને પૂર્ણભદ્ર દેવની
દેવઋદ્ધિના વિષયમાં પૂછ્યું, ભગવાને પૂર્વવત્ કૂટાગારશાલાના દૃષ્ટાંતથી તેને
પ્રતિબોધિત કર્યા પછી ગૌતમને તે દેવના પૂર્વભવ બહુવાની જિજ્ઞાસા થવાથી
ભગવાને કહ્યું:—તે કાળ તે સમયે આ મધ્ય જમ્બૂદ્વીપના ભારત ક્ષેત્રમાં મણિ-
પદિકા નામે નગરી હતી. જેમાં મોટી મોટી અટારિઓવાળી હવેલીઓ હતી તથા

शत्रुभोसे रहित एवं धनधान्य आदिसे सम्पन्न थी। उस नगरीके राजाका नाम चन्द्र था। उसमें ताराकीर्ण नामक एक उद्यान था। उस नगरीमें पूर्णभद्र नामक धनधान्यसम्पन्न गाथापति रहता था। उस काल उस समयमें जातिसम्पन्न कुल-सम्पन्न स्थविरपदभूषित मुनिराज यावत् जीवनकी आशा और मरणभयसे रहित, बहुश्रुत तथा बहुत मुनि परिवारसे युक्त तीर्थंकर परम्परासे विचरते हुए मणिपदिका नगरीमें पधारे। जनसमुदायरूप परिषद उनके दर्शनार्थ निकली। उसके बाद वह पूर्णभद्र गाथापति उन स्थविरोंके आनेका वृत्तान्त जानकर द्रष्टुं तुष्ट हृदयसे भगवती सूत्रमें उक्त गङ्गदत्तके समान उनके दर्शनके लिए गया और धर्मकथा सुनकर यावत् प्रव्रजित होगया। तथा ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारी हो गया। उसके बाद उस पूर्णभद्र अनगारने उन स्थविरोंके पास सामायिक आदि ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया और बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम आदि तपसे आत्मा को भावित करके बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्याय पाछा। बादमें मासिक संछे-

अडार तेभज अंदर शत्रुओथी रहित अने धनधान्य आदिथी संपन्न छती। ते नगरीना राजानु नाम चन्द्र छतुं। तेमां ताराकीर्ण नामे ओके उद्यान छतो। ते नगरीमां पूर्णभद्र नामे धनधान्य संपन्न गाथापति ते काल ते सभये जातिसंपन्न-कुलसंपन्न स्थविर पदथी भूषित ओवा मुनिराज ने जीवनकी आशा अने मरणभयसे रहित तथा बहुश्रुत अने बहुमुनि परिवारथी युक्त तीर्थंकर परंपराथी विचरतुं करता मणिपदिका नगरीमां पधारे। जनसमुदायरूप परिषद तेमना दर्शन भाटे नीकणी। त्वार पछी ते पूर्णभद्र गाथापति ते स्थविरोंका आववाना अजर बाणी दृष्ट तुष्ट हृदयथी भगवतीसूत्रमां छेले गंगदत्तनी चेठे, तेमना दर्शनने भाटे गया अने धर्मकथा सांझणीने यावत् प्रव्रजित थछ गया। तथा ईर्यासमिति आदिथी युक्त थछने गुप्तब्रह्मचारी थछ गया। त्वार पछी ते पूर्णभद्र अनगारने ते स्थविरोंनी पासे सामायिक आदि अगीयार अंगोंनु अध्ययन करुं अने धरुं अतुर्थषष्ठ अष्टम आदि तपोथी आत्माने भावित करीने अहु वर्षे सुधी दीक्षा पर्यायनुं पाछन करुं। पछी मासिक संछेअनाथी साठ

શુભરસોધિની ટીકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૫ પૂર્ણભદ્ર દેવ

૩૮૯

સ્નાસે સાઠ ભક્તોંકો અનશનસે છેદકર અપને પાપસ્થાનોંકી આલોચના ઔર પ્રતિ-
ક્રમણકર સમાધિ પ્રાપ્ત કી । તથા કાલ અવસરમેં કાલકર સૌધર્મ કલ્પકે પૂર્ણભદ્ર
વિમાનમેં ઉપપાત સમાકે અન્દર દેવશયનીય શય્યામેં યાવત્ પૂર્ણભદ્ર દેવપનેમેં ઉત્પન્ન
હોકર ભાષાપર્યાપ્તિ મન:પર્યાપ્તિ આદિ પર્યાપ્તિયોસે પર્યાપ્તભાવકો પ્રાપ્ત કિયા । હે
ગૌતમ ! પૂર્ણભદ્ર દેવને હસ પ્રકારસે હસ દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિકો પ્રાપ્ત કિયા ।

ગૌતમ સ્વામી પૂછતે હૈં—

હે ભદન્ત ! પૂર્ણભદ્ર દેવકી સ્થિતિ કિતને કાલકી હૈ ?

ભગવાન કહતે હૈં—

હે ગૌતમ ! પૂર્ણભદ્ર દેવકી સ્થિતિ દો સાગરોપમકી હૈ ।

ગૌતમને ફિર પૂછા—

હે ભદન્ત ! યહ પૂર્ણભદ્ર દેવ દેવલોકસે વ્યવકર કહૌં જાયગા તથા કહૌં
ઉત્પન્ન હોગા ?

ભક્તોંનું અનશન વડે છેદન કરી પોતાના પાપ સ્થાનોની આલોચના તથા પ્રતિ-
ક્રમણ કરી સમાધિ પ્રાપ્ત કરી. તથા કાળ અવસર આવતાં કાળ કરી સૌધર્મ
કલ્પના પૂર્ણભદ્ર વિમાનમાં ઉપપાત સભાની અંદર દેવશયનીય શય્યામાં તે પૂર્ણ-
ભદ્ર દેવપણમાં ઉત્પન્ન થઇને ભાષાપર્યાપ્તિ મન:પર્યાપ્તિ આદિ પર્યાપ્તિઓથી
પર્યાપ્તિભાવોને પ્રાપ્ત કર્યા. હે ગૌતમ ! પૂર્ણભદ્રદેવે આ પ્રકારે આ દિવ્ય દેવની
ઋદ્ધિને પ્રાપ્ત કરી.

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે:—

હે ભદન્ત ! પૂર્ણભદ્ર દેવની સ્થિતિ કેટલા કાળની છે ?

ભગવાન કહે છે:—

હે ગૌતમ ! પૂર્ણભદ્ર દેવની સ્થિતિ બે સાગરોપમની છે.

ગૌતમે વળી પૂછ્યું:—

હે ભદન્ત . આ પૂર્ણભદ્રદેવ દેવલોકથી મ્યુત થઇને કયાં જશે અને કયાં
ઉત્પન્ન થશે ?

●

३ पुष्पिमास

मूलम्—

जइणं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उक्खेवओ०, एवं खल्ल
जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया,
सामो समोसरिए । तेणं कालेणं २ माणिभदे देवे सभाए सुहम्माए माणि-

छाया—

यदि खलु भदन्त ! भ्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन उत्क्षेपकः ।
एवं खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले २ राजगृहं नगरं, गुणशिलं चैत्यं,
श्रेणिको राजा, स्वामी समवसृतः, तस्मिन् काले तस्मिन् समये माणिभद्रो

भगवानने कहा—

हे गौतम ! यह पूर्णभद्र देव महाविदेह क्षेत्रमें उत्पन्न होकर सिद्ध होगा और यावत् सब दुःखोंका अन्त करेगा ।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने इस प्रकार पुष्पिताके पांचवें अध्यायनका भाव कहा है सो मैंने तुम्हें कहा ॥ १ ॥

। पुष्पिताका पाँचवाँ अध्ययन समाप्त हुआ ।

ભગવાને કહ્યું:—

હે ગૌતમ ! આ પૂર્ણબદ્ધેવ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થઈ સિદ્ધ થશે અને તમામ દુઃખોનેા અંત આણશે.

સુધર્મા સ્વામી કહે છે:

હે જરૂર ! મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરે આ પ્રકારે પ્રણિતાના
ચાંચમા અધ્યયનનો ભાવ કહ્યો છે તે મેં તને કહ્યો છે.

પ્રુષિપતાનું પાંચમું અધ્યયન સમાપ્ત.

सुन्दरबोधनी टीका वर्ग ३ अध्या. ६ माणिभद्र देव

३९१

महंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जेहा पुण्णभदो, तंहेव
आगमणं, नट्टविही, पुव्वभवपुच्छा, मणिवया नयरी, माणिभदे गाहावई,
थेराणं अंतिए पव्वज्जा, एकारस अंगाई अहिज्जइ, बहूइं वासाइं परियाओ,
मासिया संलेहणा, सट्ठिं भत्ताइं०, माणिभदे विमाने उववाओ,
दोसागरोवमा ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । एवं खलु जंबू !
निक्खेवओ ॥

॥ छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

देवः सभायां सुधर्मायां माणिभद्रे सिंहासने चतुर्भिः सामानिकसहस्रैर्यावत्
पूर्णभद्रस्तथैवाऽऽगमनं, नाट्यविधिः, पूर्वभवपृच्छा, मणिपदा नगरी, माणिभद्रो
गाथापतिः, स्थविराणामन्तिके प्रव्रज्या, एकादशाङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि
पर्यायः, मासिकी संलेखना, षष्टिं भक्तानि०, माणिभद्रे विमाने उपपातः,
द्विसागरोपमा स्थितिः, महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति । एवं खलु जम्बू !
निक्षेपकः ॥ १ ॥

॥ इति षष्ठाध्ययनं समाप्तम् ॥ ६ ॥

टीका—

‘जइणं भंते’ इत्यादि—ध्याख्या स्पष्टा ॥ १ ॥

छठा अध्ययन.

‘जइणं भंते’ इत्यादि—

जम्बू स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने पाँचवें अध्ययनका

छट्ठं अध्ययन.

‘जइणं भंते’ इत्यादि

जम्बू स्वामी पूछे थे—

हे भदन्त ! मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने पाँचवां अध्ययनका

૩૧૨

૩ પુણ્યસ્થાન

પૂર્વોક્ત ભાવ બતલાયા છે, તો ફિર છટે અધ્યયનમેં ઉન્હોને કિસ ભાવકા નિરૂપણ ક્રિયા છે ?

ભગવાન કહતે હૈ—

હે જમ્બૂ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં રાજગૃહ નામકા નગર થા । ઉસ નગરમેં ગુણશિલક ચૈત્ય થા । શ્રેણિક નામકે રાજા ઉસમેં રાજ્ય કરતે થે । ભગવાન મહાવીર સ્વામી ઉસ નગરમેં પધારે । પરિષદ ભગવાનકે વન્દનકે નિમિત્ત ગઈ । ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં માણિભદ્ર દેવ સુધર્મા સભામેં માણિભદ્ર સિંહાસન પર ચાર હજાર સામાનિક દેવોકે સાથ બૈઠે હુણ થે । વે માણિભદ્ર દેવ પૂર્ણભદ્રકે સમાન ભગવાનકે પાસ આયે ઔર નાટ્યવિધિ દિસાકર ચલે ગયે । ગૌતમને માણિભદ્રકી દિવ્ય દેવ-ઋદ્ધિકે બારેમેં પૂર્વવત્ પ્રશ્ન કિયા । ભગવાનને કૂટાગારશાલાકે દૃષ્ટાન્તસે ઉસકા ઉત્તર દિયા । ગૌતમને માણિભદ્ર દેવકે પૂર્વ જન્મકે બારેમેં પ્રશ્ન કિયા ।

પૂર્વોક્ત ભાવ બતાવ્યો છે તે પછી છઠ્ઠા અધ્યયનમાં તેમણે કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું.

ભગવાન કહે છે:—

હે જમ્બૂ ! તે કાળે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તે નગરમાં ગુણશિલક નામે ચૈત્ય હતો. શ્રેણિક નામના રાજા તેમાં રાજ્ય કરતા હતા. ભગવાન મહાવીર સ્વામી તે નગરમાં પધાર્યા. પરિષદ ભગવાનને વંદન કરવા ગઈ. તે કાળ તે સમયે માણિભદ્ર દેવ સુધર્મા સભામાં માણિભદ્ર સિંહાસન ઉપર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે બેઠેલા હતા. માણિભદ્ર દેવ પૂર્ણભદ્રની પેઠે ભગવાનની પાસે આવ્યા અને નાટ્ય વિધિ દેખાડી અન્તર્ધાન થઈ ગયા—પાછા જતા રહ્યા. ગૌતમે માણિભદ્રની દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિના બાબત અગાઉની પેઠે પ્રશ્ન કર્યો. ભગવાને કૂટાગારશાલાના દૃષ્ટાંતથી તેનો ઉત્તર આપ્યો. ગૌતમે માણિભદ્ર દેવના પૂર્વજન્મ વિષે પ્રશ્ન કર્યો.

શ્રુત્વરબોધિની ટીકા ઘર્ગ ૩ અધ્ય. ૬ માણિભદ્ર દેવ

૩૯૩

મગવાનને કહા—

અસ કાલ અસ સમયમેં મણિપદિકા નામકી નગરી થી, અસમેં માણિભદ્ર નામકા એક ગાથાપતિ થા । જિસને સ્થવિરોકે સમીપ પ્રવ્રજ્યા પ્રહ્ણકર ગ્યારહ અંગોં કા અધ્યયન ક્રિયા । વહુત વર્ષોં તક શ્રામણ્ય પર્યાયકા પાલન ક્રિયા ઓર માસિક સંલેખના કી, અનશન દ્વારા સાઠ મકોંકો છેદનકર પાપસ્થાનોંકા આલોચન પ્રતિક્રમણ કરકે કાલ અવસરમેં કાલકર માણિભદ્ર વિમાનમેં ઉત્પન્ન હુઆ । યહાં અસકી સ્થિતિ દો સાગરોપમ હૈ । અન્તમેં દેવલોકસે ચ્યવ કર મહાવિદેહ ક્ષેત્રમેં જન્મ લેકર સિદ્ધ હોગા ઓર સબ દુઃસ્વોંકા અન્ત કરેગા ।

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ—

હે જમ્બૂ ! ઇસ પ્રકાર શ્રમણ મગવાન મહાવીરને પુષ્પિતાકે છઠે અધ્યયનકે ભાવકા પ્રતિપાદન ક્રિયા ।

। પુષ્પિતાકા છઠા અધ્યયન સમાપ્ત હુઆ ।

મગવાને કહું:—

તે કાળ તે સમયે મણિપદિકા નામની નગરી હતી. તેમાં માણિભદ્ર નામે એક ગાથાપતિ હતો. જેણે સ્થવિરોની પાસે પ્રવ્રજ્યા શ્રદ્ધા કરી અગીયાર અંગોંનું અધ્યયન કર્યું. ઘણા વર્ષોં સુધી દીક્ષા પર્યાય, આશ્રિત પર્યાયનું પાલન કર્યું. માસિકી સંલેખનાથી અનશન દ્વારા સાઠ ભક્તોંનું છેદન કરી પાપ સ્થાનોની આલોચના પ્રતિક્રમણ કરી કાળ અવસરમાં કાળ કરીને માણિભદ્ર વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા. ત્યાં તેની સ્થિતિ બે સાગરોપમ છે. આખરે દેવલોકથી ચ્યવી મહા-વિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઇ સિદ્ધ થશે. અને સર્વે દુઃખોનો અંત લાવશે.

સુધર્મા સ્વામી કહે છે:—

હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે શ્રમણ મગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના છઠા અધ્ય-યનના ભાવનું પ્રતિપાદન કર્યું.

પુષ્પિતાનું છઠું અધ્યયન સમાપ્ત.

३९४

३ पुष्पिताख्य

मूलम्—

एवं दत्ते ७ सिवे ८ बले ९ अणादिषु १० सर्वे जहा पुष्पभदे
देवे । सर्वेसि दोसागरोवमाइं ठिई । विमाणा देवसरिसनामा । पुष्पभवे
दत्ते चंदणाए, सिवे मिहिलाए, बलो हत्थिणपुरनयरे, अणादिषु काकंदीए,
चेइयाइं जहा संगहणीए ॥

॥ तइओ वगो सम्मत्तो ॥

छाया—

एवं दत्तः ७ शिवः ८ बलः ९ अनादृतः १० सर्वे यथा पूर्णभद्रो
देवः । सर्वेषां द्विसागरोपमा स्थितिः, विमानानि देवसदृशनामानि, पूर्वभवे
दत्तः चन्दनायाम्, शिवो मिथिलायां, बलो हस्तिनापुरे नगरे, अनादृतः
काकन्ध्यां, चैत्यानि यथा संग्रहण्याम् ॥ १ ॥

॥ इति पुष्पितायां सप्तमाष्टमनवमदशमान्यव्ययनानि समाप्तानि ॥

७ । ८ । ९ । १० ॥

॥ इति तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥

टीका—

‘एवं’ इत्यादि-व्याख्या स्पष्टा ॥ २ ॥

पुष्पिताख्यस्तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

इसी प्रकार ७ दत्त, ८ शिव, ९ बल, १० अनादृत, इन सभी
देवोंका वर्णन पूर्णभद्र देव के समान जानना चाहिये । सभीकी स्थिति दो दो

आ प्रकारे ७ दत्त, ८ शिव, ९ बल, १० अनादृत आ बर्धा
देवोनु वर्णन पुष्पभद्र देवना नेवुं न्नाएँ देवुं नेधये. अथानी

સુવર્ણચોધિની ટીકા વર્ગ ૩ અધ્ય. ૭, ૮, ૯, ૧૦, દત્ત, શિવ, વલ્લ, અનાદત, ૩૧૫

સાગરોપમ છે । इन देवोंके नामके समान ही इनके विमानोंका नाम है । ‘ दत्त ’ अपने पूर्ण जन्ममें चन्दना नगरीमें, ‘ शिव ’ मिथिलामें, ‘ वल्ल ’ हस्तिनापुरमें, ‘ अनादत ’ काकन्दीमें, जन्मे थे । संप्रहणी गाथाके अनुसार उद्यान जानना चाहिये । ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ पुष्पिताका सातवाँ, आठवाँ, नववाँ, और दसवाँ अध्ययन समाप्त हुआ ।

પુષ્પિતા નામકા તૃતીય વર્ગ સમાપ્ત હુઆ ॥ ૩ ॥

સ્થિતિ બધે સાગરોપમ છે. તે દેવોના નામના જેવાજ તેમનાં વિમાનનાં નામ છે. દત્ત પોતાના પૂર્વજન્મમાં ચન્દના નગરીમાં, શિવ મિથિલામાં, બલ હસ્તિનાપુરમાં અનાદત કાકન્દીમાં જન્મ્યા હતાં. સંપ્રહણી ગાથા અનુસાર ઉદ્યાન બાણી લેવાં જોઈએ. ॥ ૭ ॥ ૮ ॥ ૯ ॥ ૧૦ ॥ પુષ્પિતાનું સાતમું-આઠમું-નવમું-દશમું અધ્યયન સમાપ્ત.

પુષ્પિતા નામે તૃતીય વર્ગ સમાપ્ત.

अथ पुष्पचूलिकाख्यश्चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

मूलम्—

जइणं भंते ! समणेणं भगवया उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा
पणत्ता । तं जहा—

“ सिरि-हिरि-धिइ-कित्तीओ, बुद्धी लच्छी य होइ बोधव्वा ।
इलादेवी सुरादेवी, रसदेवी गंधदेवी य ॥ १ ॥ ”

जइणं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं
चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलाणं दस अज्झयणा पणत्ता । पढमस्स
णं भंते ! उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २
रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसडे,
परिसा निग्गया । तेणं कालेणं २ सिरि देवी सोहम्मे कप्पे

छाया—

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता उत्क्षेपको यावद् दश अध्यय-
नानि प्रज्ञप्तानि । तद् यथा—

“ श्री-ही-धृति-कीर्तयो बुद्धिलक्ष्मीश्च भवति बोद्धव्या ।
इलादेवी सुरादेवी, रसदेवी गन्धदेवी च ॥ १ ॥ ”

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् संप्राप्तेन उपाङ्गानां
चतुर्थस्य वर्गस्य पुष्पचूलानां दशाऽध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ।
उत्क्षेपकः, एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरं,
गुणशिलं चैत्यं, श्रेणिको राजा, स्वामी समवसृतः, परिषद् निर्गता । तस्मिन्
काले तस्मिन् समये श्रीदेवी सौधर्मे कल्पे श्रवतंसके विमाने सभायां सुधर्मायां

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ४ अध्या. १ भी देखो

३९७

सिरिवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिसि सीहासणंसि चउहिं सामा-
णियसाहस्सेहिं चउहिं महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं जहा बहुपुत्तिया जाव
नटविहिं उवदंसित्ता पडिगया । नवरं [दारस्य] दारियाओ नत्थि ।
पुण्वभवपुच्छा । एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नयरे
गुणसिलए चेइए जियसत्तू राया । तत्थं णं रायगिहे नयरे सुदंसणे नामं
गाहावई परिवसइ, अड्ढे । तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स पिया नामं भारिया
होत्था सोमाला । तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स भूया पियाए गाहावइणीए
अत्तया भूया नामं दारिया होत्था बुद्धा बुद्धकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडिय-
पुयत्थणी वरगपरिवज्जिया यावि होत्था । तेणं कालेणं २ पासे अरहा पुरिसा-
दाणीए जाव नवरयणिए, वण्णओ सो चेव, समोसरणं, परिसा निग्गया । तएणं
सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठुट्ठा जेणेव अम्मापियरो
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्मताओ !

श्रियि सिंहासने चतुर्भिः सामानिकसहस्रैः चतष्टभिर्महत्तरिकाभिः सपरि-
वाराभिः यथा बहुपुत्रिका यावद् नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता । नवरं [दारक]
दारिका न सन्ति । पूर्वभवपृच्छा । एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये राजगृहं नगरं, गुणशिलं चैत्यं, जितशत्रू राजा । तत्र खलु
राजगृहे नगरे सुदर्शनो नाम गाथापतिः परिवसति, आढ्यः । तस्य खलु
सुदर्शनस्य गाथापतेः प्रिया नाम भार्या अभवत् सुकुमारा । तस्य खलु
सुदर्शनस्य गाथापतेः दुहिता प्रियाया गाथापतिकाया आत्मजा भूता नाम
दारिका-अभवत् वृद्धा वृद्धकुमारी जीर्णा जीर्णकुमारी पतितपुतस्तनी वरपरि-
वर्जिता चापि अभवत् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोऽर्हन् पुरुषा-
दानीयो यावद् नवरत्निको वर्णकः सएव, समवसरणं, परिपद् निर्गता ।
ततः खलु सा भूता दारिका अस्याः कथाया लब्धार्था सती हष्टुष्टा-
यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एवं खलु

पासे अरहा पुरिसादाणीए पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे जाव देवगणपरिवुडे विहरइ,
तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुम्हेहिं अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स अरहओ
पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए । अहामुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंथं ।

तए णं सा भूया दारिया ण्हाया० जाव सरीरा चेडीचकवालपरिकिण्णा
साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा । तएणं सा
भूया दारिया निययपरिवारपरिवुडा रायगिहं नयरं मज्झंमज्जेण निग्गच्छइ,
निग्गच्छित्ता जेणेव गुणमिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए
तित्थकरातिसए० पासइ; धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता
चेडीचकवालपरिकिण्णा जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासइ । तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए
भूयाए दारियाए तीसे महइ० धम्मकहा, धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ०
वंदइ, वंदित्ता एवं वयासीसइहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जाव अब्भु-

अम्बतातौ ! पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः पूर्वानुपूर्वीं चरन् यावद् देवगणपरि-
वृतो विहरति, तद् इच्छामि खलु अम्बतातौ ! युवाभ्यामभ्यनुज्ञाता सती
पार्श्वस्याऽर्हतः पुरुषादानीयस्य पादवन्दनाय गन्तुम्, यथासुखं देवानुमिये !
मा प्रतिबन्धम् । ततः खलु सा भूता दारिका स्नाता यावत् सर्वालङ्कार-
विभूषितशरीरा चेटीचकवालपरिकीर्णा स्वस्माद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति,
प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्योपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं
यानप्रवरं दुरूढा । ततः खलु सा भूता दारिका निजपरिवारपरिवृता
राजगृहं नगरं मध्यमच्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव गुणशिलं चैत्यं
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य छत्रादीन् तीर्थकरातिशयान् पश्यति । धार्मिकात्
यानप्रवरात् प्रत्यवरुद्ध चेटीचकवालपरिकीर्णा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीय-
स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त्रिकुत्वो बाधत् पर्युपास्ते । ततः खलु
पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयो भूतायै दारिकायै तस्यां महातिमहत्यां० धर्मकथा ।

द्वेमिणं भंते ! निगंथं पावयणं, से जहे तं तुब्भे वदेह, जं नवरं देवाणु-
 प्पिया ! अम्मापियरो आपुञ्छामि, तएणं अहं जाव पव्वइत्तए । अहासुहं
 देवाणुप्पिया ! । तएणं सा भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवरं जाव
 दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागया, रायगिहं नयरं मज्झं
 मज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया, रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव
 अम्मापियरो तेणेव उवागया, करतल० जहा जमाली आपुञ्छइ । अहासुहं
 देवाणुप्पिए ! तएणं से सुदंसणे गाहावई विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ,
 मित्तनाइ० जाव जिमियभुत्तुत्तरकाले सुईभूए निक्खमणमाणित्ता कोडुंविय-
 पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !
 भूयादारियाए पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता जाव पच्चप्पिणह ।
 तएणं ते जाव पच्चप्पिणति ॥ १ ॥

धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा० वन्दते, वन्दित्वा एवमवादीत्—अहं धामि खलु
 भदन्त ! निर्ग्रन्थं प्रवचनं यावद् अभ्युत्तिष्ठामि खलु भदन्त ! निर्ग्रन्थं
 प्रवचनम्, तद् यथैतद् यूयं वदथ; यद् नवरं देवानुप्रिय ! अम्बापितरौ
 आपृञ्छामि । ततः खलु अहं यावत् प्रव्रजितुम् । यथासुखं देवानुप्रिये !
 ततः खलु सा भूता दारिका तदेव धार्मिकं यानप्रवरं यावद् दूरोहति,
 दूरुह्य यत्रैव राजगृहं नगरं तत्रैवोपागता, राजगृहं नगरं मध्यमध्येन यत्रैव
 स्वं गृहं तत्रैवोपागता, रथात् प्रत्यवरुह्य यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागता,
 करतल० यथा जमालिः आपृञ्छति । यथासुखं देवानुप्रिये ! ततः स
 सुदर्शनो गाथापतिः विपुलमशनम् ४ उपस्कारयति, मित्रज्ञाति० आमन्त्रयति,
 आमन्त्र्य यावत् जिमितभुत्तुत्तरकाले शुचिभूतो निष्क्रमणमाज्ञाप्य कौटुम्बिक-
 पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः !
 भूतादारिकायै पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकामुस्थापयत, उपस्थाप्य० प्रत्यर्पयत ।
 ततः खलु ते यावत् प्रत्यर्पयन्ति ॥ १ ॥

૩૬૦

૪ પુષ્પચૂલિકા સત્ર

ટીકા—

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ વ્યાખ્યા સુગમા ॥ ૧ ॥

ચતુર્થ વર્ગ (૪)

પુષ્પચૂલિકા.

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ—

જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં—

હે ભદ્રન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને પુષ્પિતા વર્ગમાં દસ અધ્યયનોંકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈં । ઉસકે બાદ ઉન્હોને કયા કહા હૈં ?

સુઘર્મા સ્વામી કહતે હૈં—

હે જમ્બૂ ! ઉસકે બાદ ભગવાને પુષ્પચૂલિકા વર્ગકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈં । ઉસમેં ઉન્હોને દસ અધ્યયન બતલાયે હૈં । જોકિ ઇસ પ્રકાર હૈં—(૧) શ્રી, (૨) હ્રી, (૩) ધી, (૪) કીર્તિ, (૫) બુદ્ધિ, (૬) લક્ષ્મી, (૭) હિલાદેવી, (૮) સુરાદેવી, (૯) રસદેવી, (૧૦) ગન્ધદેવી ॥

અતુર્થ વર્ગ (૪)

પુષ્પચૂલિકા.

‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ.

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે:—

હે ભદ્રન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતા વર્ગમાં દશ અધ્યયનનું નિરૂપણ કર્યું છે. ત્યાર પછી તેમણે શું કહ્યું છે ?

હે જમ્બૂ ! ત્યાર પછી ભગવાને પુષ્પચૂલિકા વર્ગનું નિરૂપણ કર્યું છે. તેમાં તેઓએ દશ અધ્યયન બતાવ્યાં છે. જેનાં નામ આવા પ્રકારનાં છે:—(૧) શ્રી, (૨) હ્રી, (૩) ધી, (૪) કીર્તિ, (૫) બુદ્ધિ, (૬) લક્ષ્મી, (૭) હિલાદેવી, (૮) સુરાદેવી, (૯) રસદેવી, (૧૦) ગન્ધદેવી.

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૪ અધ્ય. ૧ શ્રી દેવી

૪૦૧

હે જમ્બૂ ! હસ પ્રકાર ભગવાને દસ અધ્યયનોકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ।

જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈ—

હે ભદ્રન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને પુષ્પચૂલિકા નામક ચતુર્થવર્ગી રૂપ ઉપાક્ષમે દસ અધ્યયનોકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ, તો પ્રથમ અધ્યયનકા ઉન્હોને ક્યા ભાવ ફરમાયા હૈ ।

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ—

હે જમ્બૂ ! પ્રથમ અધ્યયનકે ભાવકો ભગવાને હસ પ્રકાર નિરૂપણ ક્રિયા હૈ—ઉસ કાલ ઉસ સમયમે રાજગૃહ નામક નગર થા । ઉસ નગરમે ગુણશિલક નામક ચૈત્ય થા । ઉસ નગરીકે રાજા શ્રેણિક થે, વહૈ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પધારે । પરિષદ ઉનકે દર્શનકે લિયે નિકલી । ઉસ કાલ ઉસ સમયમે શ્રી-દેવી સૌધર્મ કલ્પકે શ્રી-અવતંસક વિમાનમે સુધર્મા સમાકે અન્દર શ્રી-સિંહાસનપર ચાર

હે જમ્બૂ ! આ પ્રમાણે ભગવાને દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે:—

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે:—

હે ભદ્રન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પચૂલિકા નામે ચોથા વર્ગરૂપ ઉપાંગમાં દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે. તો પ્રથમ અધ્યયનમાં તેમણે કયો ભાવ બતાવ્યો છે ?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે:—

હે જમ્બૂ ! પ્રથમ અધ્યયનના ભાવને આવી રીતે નિરૂપણ કર્યો છે:—
તે કાળ તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તે નગરમાં ગુણશિલક નામે ચૈત્ય હતું. તે નગરીનો રાજા શ્રેણિક હતો. ત્યાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પધાર્યા પરિષદ તેમના દર્શન માટે નીકળી. તે કાળ તે સમયે શ્રી દેવી સૌધર્મકલ્પના શ્રી અવતંસક વિમાનમાં સુધર્માસભાની અંદર શ્રી સિંહાસન પર ચાર હબાર

हजार सामानिक देवोंके साथ तथा सपरिवार चार महत्तरिकाओंके साथ बैठी हुई थी। वह श्री-देवी बहुपुत्रिका देवीके समान भगवानके दर्शनके लिये आई और नाट्यविधि दिखाकर वापस गयी। बहुपुत्रिकासे विशेष केवल इतना ही है कि इसने कुमार कुमारियोंको वैक्रियिक शक्तिसे उत्पन्न नहीं किया।

गौतमने पूछा—

हे भदन्त ! यह श्री देवी पूर्व जन्ममें कौन थी।

भगवानने कहा—

हे गौतम ! उस काल उस समयमें राजगृह नामका नगर था। उस नगरमें गुणशिलक नामक चैत्य था। उस नगरके राजाका नाम जितशत्रु था। उसमें सुदर्शन नामका गाथापति रहता था जो धन धान्यादिसे सम्पन्न था। उस गाथापतिकी पत्नीका नाम प्रिया था। जो अत्यन्त सुकुमार थी। उस सुदर्शन गाथापतिकी पुत्री तथा प्रिया गाथापत्नीकी आत्मजा-लडकीका नाम भूता था, जो कि वृद्धा और वृद्ध कुमारी (अधिक वयवाली कन्या) तथा जीर्णा और जीर्ण

सामानिक देवीनी साथे तथा सपरिवार चार महत्तरिकाओंनी साथे बैठी होती। ते श्रीदेवी बहुपुत्रिका देवीनी चेठे भगवानना दर्शन भाटे आवी अने नाट्यविधि देखाडी पाछी खाकी गछ। बहुपुत्रिकाथी विशेष मात्र ओ हुतुं के आवे कुमार कुमारियोंने वैक्रियिक शक्तिथी उत्पन्न कर्था नडेता।

गौतमने पूछ्युं:—हे भदन्त ! आ श्रीदेवी पूर्वजन्ममां केवु होती ?

भगवाने कहुं:—हे गौतम ! ते काल ते समये राजगृह नामनु नगर हुतुं। ते नगरमां गुणशिलक नामनु चैत्य हुतुं। ते नगरना राजानु नाम जितशत्रु हुतुं। ते राजगृह नगरमां सुदर्शन नामने गाथापति रहेता हुतो जे धनधान्य आदिथी संपन्न हुतो। ते गाथापतिनी पत्नीनु नाम प्रिया हुतुं, जे अत्यंत सुकुमार हुती। ते सुदर्शन गाथापतिनी पुत्री तथा प्रिया गाथापत्नीनी आत्मजा (लडकी) नु नाम भूता हुतुं के जे वृद्धा अने वृद्धकुमारी (वधारे वयवाली

કુમ્ભારબોધિની ટોકા વર્ગ ૪ અધ્ય. ૧ બો દેવો

૪૦૩

કુમારી થી, એવં શિથિલ નિતમ્બ ઔર સ્તનબાલી થી, તથા અવિવાહિત થી । ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં પુરુષાદાનીય (પુરુષોમેં શ્રેષ્ઠ) નૌ હાથકે અવગાહનાવાલે અર્હત પાર્શ્વ પ્રમુ ઉસ નગરીમેં પધારે । ભગવાનકે દર્શનકે લિયે પરિષદ અપને ૨ ઘરસે નિકલી । ઉસકે બાદ વહ મૂતા દારિકા ભગવાન પાર્શ્વ પ્રમુકે આનેકા વૃત્તાન્ત સુનકર હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયસે માતા પિતાકે સમીપ આયો ઔર ઉનસે હસ પ્રકાર કહા—

હે માતા પિતા ! પુરુષાદાનીય ભગવાન પાર્શ્વ પ્રમુ તીર્થંકરપરમ્પરાસે વિચરતે હુએ દેવગણોસે પરિવૃત્ત હો હસ રાજગૃહ નગરમેં પધારે હૈં, હસ લિયે મેરી હચ્છા હૈ કિ પુરુષાદાનીય ઉન પાર્શ્વ પ્રમુકી ચરણ વન્દનાકે લિયે જાઁ । પુત્રીકી એસી હચ્છા જાનકર ઉન્હોને કહા—જાઓ બેટી ! જિસ પ્રકાર તુમ્હે સુસ હો વૈસા કરો । પ્રમાદ મત કરો ।

ઉસકે બાદ વહ મૂતા દારિકા સ્નાન કર સમી પ્રકારોકે અલંકારોસે અપને કો અલંકૃતકર દાસિયોસે પરિવેષ્ટિત હો અપને ઘરસે નિકલકર બાહર ઉપવેશન શાલામેં

કન્યા) તથા છુણી અને છુણીકુમારી હતી, એટલે કે શિથિલ નિતંબ અને સ્તન-વાળી તથા અવિવાહિત હતી. તે કાળ તે સમયે ત્યાં પુરુષાદાનીય (પુરુષોમાં શ્રેષ્ઠ) નવહાથની અવગાહનાવાળા અર્હત પાર્શ્વ પ્રમુ તે નગરીમાં પધાર્યા. ભગવાનનાં દર્શન કરવા માટે પરિષદ પોતપોતાનાં ઘરમાંથી નીકળી. ત્યાર પછી તે મૂતા દારિકા ભગવાન પાર્શ્વ પ્રમુના આવવાનું વૃત્તાન્ત સાંભળીને હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી માતાપિતાની પાસે આવી અને તેમને આ પ્રકારે કહ્યું:—હે માતાપિતા ! પુરુષાદાનીય ભગવાન પાર્શ્વ પ્રમુ તીર્થંકર પરંપરાથી વિચરતા દેવગણોથી પરિવૃત્ત આ રાજ-ગૃહ નગરમાં પધાર્યા છે. આ માટે મારી ઇચ્છા છે કે પુરુષાદાનીય તે પ્રભુની ચરણ વન્દનાને માટે બાઉ. પુત્રીની એવી ઇચ્છા બાણીને તેઓએ કહ્યું:—બાઓ ઠીકરી ! જે પ્રકારે તમને સુખ થાય તેમ કરો. કોઈ પ્રકારનો પ્રમાદ ન કરો.

ત્યાર પછી તે મૂતા દારિકા સ્નાન કરી બધા પ્રકારના અલંકારો (ઘરેણાં) થી વિભૂષિત થઇ દાસીઓથી પરિવેષ્ટિત (ઘેરાયેલી) થઇને પોતાના ઘરથી નીકળી

४०४

४ पुष्पशिलका सूत्र

आयी। वहाँ अपने धार्मिक रथपर चढ़ी। उसके बाद वह भूता दारिका अपनी दासियोंसे परिवेष्टित हो राजगृह नगरके मध्यसे होती हुई गुणशिलक चैत्यमें पहुँची। वहाँ उसने तीर्थंकरोंके अतिशय, छत्र आदिको देखा और अपने धार्मिक रथसे उतरी। बादमें अपनी दासियोंसे परिवेष्टित हो पुरुषादानीय भगवान पार्श्व प्रभुके पास गयी और तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक वन्दन नमस्कार करके उपासना करने लगी। उसके बाद पुरुषादानीय अर्हत् भगवान पार्श्व प्रभुने उस महती सभामें भूता दारिकाको धर्मोपदेश किया। अनन्तर भूता दारिका धर्म सुनकर उसे हृदयमें अवधारण कर दृष्ट तुष्ट हृदय हो भगवानको वन्दन और नमस्कार किया। पश्चात् उसने इस प्रकार कहा—हे भगवन् ! जिस प्रकार आपने निर्ग्रन्थ प्रवचनका निरूपण किया है उस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर मैं श्रद्धा रखती हूँ और उसके आराधनके लिये मैं उद्यत हूँ। हे भदन्त ! मैं अपने माता पिताको पूछकर आपके समीप प्रव्रज्या लेना चाहती हूँ।

आहार भोजवानी शालाभां आवी. त्यां पोताना धार्मिक रथ ઉપર ચડી. ત્યાર પછી તે ભૂતા દારિકા પોતાની દાસીઓથી પરિવેષ્ટિત થઈ રાજગૃહ નગરની વચ્ચે થઈને ગુણશિલક ચૈત્યમાં પહોંચી. ત્યાં તેણે તીર્થંકરોનાં અતિશયક છત્ર આદિ જોયાં. ત્યાં પોતાના ધાર્મિક રથમાંથી નીચે ઉતરી. પછી પોતાની દાસીઓથી ઘેરાઈને પુરુષાદાનીય ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે ગઈ અને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણાપૂર્વક વંદન નમસ્કાર કરી ઉપાસના કરવા લાગી. ત્યાર પછી પુરુષાદાનીય અર્હત ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુએ તે મોટી સભામાં ભૂતા દારિકાને ધર્મોપદેશ કર્યો. પછી ભૂતા દારિકાએ ધર્મનું શ્રવણ કરી તેને હૃદયમાં અવધારણ કરી દૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી ભગવાનને વંદન તથા નમસ્કાર કર્યા. પછી આ પ્રકારે કહ્યું:—હે ભગવન્ ! જે પ્રકારે આપે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનનું નિરૂપણ કર્યું છે તે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનમાં હું શ્રદ્ધા રાખું છું અને તેના આરાધન માટે હું ચત્નશીલ છું.

હે ભદન્ત ! હું મારાં માતાપિતાને પૂછીને આપની પાસે પ્રવ્રજ્યા લેવા આહું છું.

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ४ अध्या. १ श्री देवी

४०५

भगवाने कहा—

हे देवानुप्रिये ! जिस प्रकार तुझे सुख हो वैसा करो ।

उसके बाद वह भूता दारिका उसी धार्मिक रथपर चढ़ी और वहाँसे राज-गृहकी ओर आयी । राजगृह नगरमें जहाँ उसका घर था वहाँ गयी । अपने घर जाकर रथसे उतरी, अनन्तर अपने माता पिताके समीप पहुँची । जमालीके तरह हाथ जोड़कर अपने माता पितासे प्रव्रज्याके लिये आज्ञा माँगी । उन लोगोंने आज्ञा दी—हे पुत्री ! जैसी तुम्हारी इच्छा हो ।

उसके बाद उस सुदर्शन गाथापतिने विपुल अशन पान स्वाद्य और स्वाद्य इन चारों प्रकारके आहारको तैयार करवाया तथा मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको निमन्त्रित किया और आदर सत्कार पूर्वक भोजन कराया । खाने पीनेके बाद पवित्र हो कौटुम्बिक (आज्ञाकारी) पुरुषोंको बुलवाकर दीक्षाकी तैयारी की आज्ञा देते

भगवाने कहुँ:—

हे देवानुप्रिये ! जे प्रकारे तने सुभ थाय तेम कर. त्यार पछी ते भूता-दारिका तेज धार्मिक रथ छपर थडी अने त्यांथी राजगृह तरङ्ग आवी. राजगृह नगरमां न्यां तेनुं घर હતું त्यां गઇ. पोताने घેર જઇ રથમાંથી ઉતરી, પછી પોતાનાં માતાપિતાની પાસે પહોંચી. જમાલીની પેઠે હાથ બેડીને પોતાનાં માતા-પિતા પાસે પ્રવ્રજ્યા લેવા માટે આજ્ઞા માગી. તેઓએ આજ્ઞા આપી:—‘હે પુત્રી ! જેવી તારી ઇચ્છા.’

ત્યાર પછી તે સુદર્શન ગાથાપતિએ વિપુલ (ખૂબ) અશનપાન—ખાદ્યસ્વાદ્ય એવા ચારે પ્રકારનાં આહાર તૈયાર કરાવ્યા તથા મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન બંધુઓને નિમંત્રણ આપ્યું અને આદર સત્કારપૂર્વક ભોજન કરાવ્યું. ખાવાપીવાનું થઇ રહ્યા પછી પવિત્ર થઇ કૌટુંબિક (આજ્ઞાકારી) પુરુષોને બોલાવી દીક્ષાની તૈયારી કરવાની આજ્ઞા દેતાં તેઓને આ પ્રકારે કહ્યું:—હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો હજાર

મૂલમ્—

તણં સે સુદંસણે ગાહાવઈ મૂયં દારિયં ણહાયં જાવ વિભૂસિયસરીરં
 પુરિસસહસ્સવાહિણિં સોયં દુરુહ્હ, દુરુહિત્તા મિત્તનાઇ૦ જાવ રવેણં રાયગિહં નયરં
 મજ્ઞં મજ્ઞેણ જેણેવ ગુણસિલે વેઇએ તેણેવ ઉવાગએ, છત્તાઈએ તિત્થયરાઇસએ
 પાસઇ, પાસિત્તા સોયં ઠાવેઇ, ઠાવિત્તા મૂયં દારિયં સોયાઓ પચ્છોરુહેઇ । તણં
 તં મૂયં દારિયં અમ્માપિયરો પુરઓ કાઠં જેણેવ પાસે અરહા પુરિસાદાણીએ—
 તેણેવ ઉવાગયા, તિસુત્તો વંદંતિ નમંસંતિ, વંદિત્તાં નમંસિત્તા એવં વયાસી—એવં સ્વલ્લ
 દેવાણુપ્પિયા ! મૂયા દારિયા અમ્હં એગા ધૂયા ઇટ્ઠા૦, એસ ણં દેવાણુપ્પિયા !
 સંસારમહાવિગ્ગા મીયા જાવ દેવાણુપ્પિયાણં અંતિએ મુંડા જાવ પવ્વયઇ ।

છાયા—

તતઃ સ્વલ્લ સ સુદર્શનો ગાથાપતિઃ ભૂતાં દારિકાં સ્નાતાં યાવદ્
 વિભૂષિતશરીરાં પુરુષસહસ્રવાહિનીં શિબિકાં દૂરોહયતિ, દૂરોહ્ય મિત્રજ્ઞાતિ૦
 યાવદ્ રવેણ રાજગૃહ નગરં મધ્યમધ્યેન યત્રૈવ ગુણશિલં ચૈત્ય તત્રૈવોપાગતઃ,
 છત્રાદીન્ તીર્થકરાતિશયાન્ પश्यति, દૃષ્ટ્વા શિબિકાં સ્થાપયતિ, સ્થાપયિત્વા
 ભૂતાં દારિકાં શિબિકાતઃ પ્રત્યવરોહયતિ । તતઃ સ્વલ્લ તાં ભૂતાં દારિકા-
 મમ્બાપિતરૌ પુરતઃ કૃત્વા યત્રૈવ પાર્શ્વોર્ઽર્હન્ પુરુષાદાનીયસ્તત્રૈવોપાગતૌ,
 ત્રિઃકૃત્લો વન્દેતે નમસ્યતઃ, વન્દિત્ત્વા નમસ્યિત્ત્વા એવમવાદિષ્ટામ્—એવં સ્વલ્લ

હુએ સ્વલ્લ પ્રકાર કહા—હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ હજાર પુરુષોસે ઉઠાયી જાનેવાલી
 શિબિકાકો ભૂતા દારિકાકે લિયે તૈયાર કરો ઓર લે આઓ । ઉસકે બાદ વે લોગ
 શિબિકાકો સજાકર લે આયે ॥ ૧ ॥

પુરુષોથી ઉપાસાય એવી શિબિકા (પાલખી) ને ભૂતા દારિકા માટે તૈયાર કરો
 અને લઈ આવો. ત્યાર પછી તે બોડો તે પાલખીને સજાવીને લાવ્યા. (૧).

सुन्दरबीचिनी टीका वर्ग ४ अष्ट. १ श्री देवी

४०७

तं एयं णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिमिक्खं दलयामो, षडिच्छं तु णं देवाणु-
प्पिया ! सिस्सिणीमिक्खं । अहासुहं देवाणुप्पिए० । तएणं सा भूया दारिया
पासेणं अरहया० एवं वुत्ता समाणी हट्टुट्टा० उत्तरपुरत्थिमं सयमेव आभरणमल्ला-
लकारं ओमुयइ, जहा देवाणंदा पुप्फचूलाणं अंति ए जाव गुत्तवंभयारिणी ।
तएणं सा भूया अज्जा अणया कयाइ सरीरबाओसिया जाया यावि होत्था,
हत्थे धोवइ, पाये धोवइ, एवं सीसं धोवइ, मुहं धोवइ, थणगंतराई धोवइ,
कक्खंतराई धोवइ, गुज्झंतराई धोवइ, जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सिज्जं वा
निसीहियं वा चेएइ, तत्थ तत्थ वि य णं पुव्वामेव पाणएणं अब्भुक्खेइ ।
तओ पच्छा ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेएइ । तएणं ताओ पुप्फ-
चूलाओ अज्जाओ भूयं अज्जं एवं वयासी अम्हे णं देवाणुप्पिए !
समणीओ निगंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तवंभयारिणीओ, नो खलु
कप्पइ अम्हं सरीरबाओसियाणं होत्तए, तुमं च णं देवाणुप्पिए ! सरीरबाओ-

देवानुप्रियाः ! भूता दारिका अस्साकमेका दुहिता इष्टा०, एषा खलु देवानु-
प्रियाः ! संसारभयोद्विग्ना भीता यावद् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा यावत्
प्रव्रजति, तद् एतां खलु देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षां दद्मः, प्रतीच्छन्तु
खलु देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षाम् । यथासुखं देवानुप्रियाः ! । ततः खलु
सा भूता दारिका पार्श्वेनार्हता० एवमुक्ता सती दृष्टा उत्तरपौरस्त्यां स्वयमेव
आभरणमाल्यालङ्कारमवमुञ्चति, यथा देवानन्दा पुष्पचूलानामन्तिके यावद्
गुप्तब्रह्मचारिणी । ततः खलु सा भूता आर्या अन्यदा कदाचित् शरीरबा-
कुशिका जाता चापि अभवत् । अभीक्षणमभीक्षणं हस्तौ धावति, पादौ धावति,
एवं शीर्षं धावति, मुखं धावति, स्तनान्तराणि कक्षान्तराणि धावति,
गुह्यान्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं
(स्वाध्यायभूमिं) चेतयते (करोति) तत्र तत्रापि च खलु पूर्वमेव पानीयेन
अभ्युक्षति । ततः पश्चात् स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं वा चेतयते ।

सिया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव निसीहियं चेएसि, तं णं तुमं देवाणु-
प्पिण् ! एसस्स ठाणस्स आलोएहि त्ति, सेसं जहा सुभद्दाए जाव पाडियकं
उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । तएणं सा भूया अज्जा अणोहट्ठिया
अणिवारिया सञ्चंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवइ जाव चेएइ । तएणं सा
भूया अज्जा बहूहि चउत्थल्लट्ठं बहूइ वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता
तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिकंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मं कप्पे
सिरिवडिसए विमाने उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जावतोगाहणाए सिरि-
देवित्ताए उववणा पंचविहाए पज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए पज्जत्ता । एवं
खलु गोयमा ! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविट्ठी लद्धा पत्ता । ठिई
एगं पलिओवमं । सिरी णं भंते ! देवी जाव कहिं गच्छिहिइ ? महाविदेहे

ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्या भूतामार्यामेवमवादिषुः—वयं खलु
देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्यः, ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यः, नो
खलु कल्पते अस्माकं शरीरबाकुशिकाः खलु भवितुम्, त्व च खलु
देवानुप्रिये ! शरीरबाकुशिका अभीक्ष्णमभीक्ष्णं हस्तौ धावसि यावद्
नैषेधिकीं चेतयसि, तत् खलु त्वं देवानुप्रिये ! एतस्य स्थानस्य आलो-
चयेति, शेषं यथा सुभद्रायाः यावत् प्रत्येकमुपाश्रयमुपसंपद्य खलु विहरति ।
ततः खलु सा भूता आर्या अनपघट्टिका अनिवारिता खञ्जन्दमतिः अभी-
क्ष्णमभीक्ष्णं हस्तौ धावति यावत् चेतयते । ततः खलु सां भूता आर्या
बहुमिः चतुर्थ षष्ठाष्टमं बहूनि वर्षाणि श्रमण्यपर्यायं पालयित्वा तस्य
स्थानस्य अनालोचितप्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे
श्रवतंसके विमाने उपपातसभायां देवशयनीये यावत् तदगाहनया श्रीदेवी-
तयोपपन्ना पञ्चविधया पर्याप्त्या भाषामनःपर्याप्त्या पर्याप्ता । एवं खलु
गौतम ! श्रिया देव्या एषा दिव्या देवऋद्विर्लब्धा प्राप्ता; स्थितिरेकं फल्यो-
पमम् । श्रीः खलु मदन्त ! देवी यावत् क्व गमिष्यति ? महाविदेहे वर्षे

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ४ अध्या. १ ओ देवी

४०९

कसे सिज्झहिइ । एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ । एवं सेसाणं वि नवण्हं
भाणियव्वं, सरिसनामा विमाणा, सोहम्मे कप्पे, पुव्वभवे नयरचेइय-
पियमाईणं अप्पणो य नामादी जहा संगहणीए; सव्वा पासस्स
अंतिए निक्खंता । ताओ पुप्फचूलाणं सिस्सिणियाओ सरीरबाओसियाओ
सव्वाओ अणंतरं चइं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झहिइति ॥ २ ॥

॥ पुप्फचूलिया णामं चतुत्थवग्गो सम्मत्तो ॥ ४ ॥

सेत्स्यति । एवं खलु जम्बू ! निक्षेपकः । एवं शेषाणामपि नवानां भणितव्यं,
सदृशनामानि विमानानि, सौधर्मे कल्पे, पूर्वभवे नगरचैत्यपित्रादीनाम्
आत्मनश्च नामादिर्यथा संग्रहण्याम्, सर्वाः पार्श्वस्यान्तिके निष्क्रान्ताः । ताः
पुष्पचूलानां शिष्याः शरीरबाकुशिकाः सर्वा अनन्तरं चयं च्युत्वा महाविदेहे
वर्षे सेत्स्यन्ति ॥ २ ॥

टीका—

‘तएणं से सुदंसणे’ इत्यादि । ‘अभ्युक्खइ’=अभ्युक्षति=अभि-
षिञ्चति । चेएइ’ चेतयति=उपविशति । शेषं स्पष्टम् ॥

पुष्पचूलिकारुयश्चतुर्थो वर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥

‘तएणं से’ इत्यादि—

उसके बाद उस सुदर्शन गाथापतिने स्नान की हुई तथा सभी अलङ्कारोंसे
अलङ्कृत उस भूता दारिकाको शिविकामें बैठाया । अनन्तर वह अपने सभी मित्र

‘तएणं से’ इत्यादि.

त्यार पछी ते सुदर्शन गाथापतिअे भूता दारिका के ने स्नान करीने तथा
तयाम अलङ्कारेथी विभूषित हती तेने ते शिविकाभां भेसाडी पछी ते
५२

૪૧૦

૪ પુણ્યલિપિ

જ્ઞાતિ સ્વજન બંધુઓકે સાથ મેરી આદિ વાજોંકી ધ્વનિસે દિશાકો મુસરિત કરતા હુઆ રાજગૃહ નગરીકે બીચોબીચસે હોતા હુઆ ગુણશિલક ચૈત્યકે પાસ પહુંચા । વહાં ઉસને તીર્થકરોકે અતિશયકો દેસા ઓર શિબિકાકો ઠહરાયા । તથા ભૂતા દારિકા શિબિકાસે ઉતરી । ઉસકે બાદ માતા પિતા ભૂતા દારિકાકો આગે કર જહાં પર પુરુષાદાનીય અર્હત પાર્શ્વ પ્રભુ થે વહાં આયે, ઓર તોન વાર આદક્ષિણ-પ્રદક્ષિણ કરકે વન્દન ઓર નમસ્કાર કિયા અનન્તર ઉન્હોને કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! યહ ભૂતા દારિકા હમારો ઇકા-ઇક (ઇકલૌતી) પુત્રો હૈ, યહ હમલોગોંકી અત્યન્ત પ્યારી હૈ । યહ દારિકા સંસારકે ભયસે અત્યન્ત ઉદ્વિગ્ન હૈ, તથા ઇસકો જન્મ ઓર મરણકા ભય લગા હુઆ હૈ, ઇસલિયે યહ આપકે સમીપ મુખિંદત હોકર પ્રવ્રજિત હોના ચાહતી હૈ । હે ભદન્ત ! ઇસલિયે હમ આપકો યહ શિષ્યારૂપ ભિક્ષા દેતે હૈં । હે દેવાનુપ્રિય ! ઇસ શિષ્યારૂપ ભિક્ષાકો આપ સ્વીકાર કરેં ।

ભગવાને કહા—હે દેવાનુપ્રિયે ! જૈસી તુમ્હારી ઇચ્છા હો ।

પોતાના સર્વે મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન અંધુઓની સાથે ભેરી, શરણાધ આદિ વાળાં-ઓના ધ્વનિથી દિશાઓને મુખરિત કરતા રાજગૃહ નગરીની વચ્ચેવચ્ચ થઇને આવતાં ગુણશિલક ચૈત્યની પાસે પહોંચ્યા. ત્યાં તેમણે તીર્થ કરેના અતિશયને જોયો અને ત્યાં તે પાદપીને થોભાવી. તથા ભૂતા દારિકા શિબિકામાંથી નીચે ઉતરી. ત્યાર પછી માતાપિતા ભૂતા દારિકાને આગળ કરીને આવતાં જ્યાં પુરુષાદાનીય અર્હત પાર્શ્વ પ્રભુ હતા ત્યાં આવ્યા. અને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરીને વંદન તથા નમસ્કાર કર્યા. પછી તેઓએ કહ્યું:—હે દેવાનુપ્રિય ! આ ભૂતા દારિકા અમારી એકની એક પુત્રી છે. તે અમને ખડુજ વહાલી છે. આ દારિકા સંસારના ભયથી ઘણીજ ઉદ્વિગ્ન છે અને તેને જન્મ તથા મરણનો ભય લાગ્યા કરે છે. તે માટે તે આપની પાસે મુખિત થઇને પ્રવ્રજિત થવા ચાહે છે. હે ભદન્ત ! તે માટે અમે આપને આ શિષ્યારૂપ ભિક્ષા દઇએ છીએ. હે દેવાનુપ્રિય ! આ શિષ્યા-રૂપ ભિક્ષાનો આપ સ્વીકાર કરો.

ભગવાને કહ્યું:—હે દેવાનુપ્રિયે ! જેવી તમારી ઇચ્છા.

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૪ અધ્ય. ૧ શ્રી દેવી

૪૧૧

उसके पश्चात् अर्हत बार्ध प्रभुके इस प्रकार कहने पर वह भूता दारिका ह्मण्टुष्टद्वयसे ईशान कोणमें जाकर अपने ही हाथोंसे आभूषण आदिको अपने शरीरसे उतारती है। बादमें वह देवानन्दाके समान पुष्पचूला आर्याके समीप प्रव्रजित हो यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी होती है। उसके बाद वह भूता आर्या किसी समय शरीर बाकुशिका हो गयी, जिससे वह अपने हाथोंको, पैरोंको, शिरको, मुँहको, तथा स्तनके अन्तर भागोंको, एवं कँसके अन्तरको और गुह्यके अन्तरको बार बार धोने लगी। जहाँ कहीं भी सोनेके लिये, बैठनेके लिये, स्वाध्याय करनेके लिये उपयुक्त स्थान निश्चित करती थी उसे पहलेसे ही पानीसे छिडकती थी, बाद वहाँ बैठती थी, सोती थी, स्वाध्याय करती थी। अनन्तर उस भूता आर्याके इस प्रकारके व्यवहारको देखकर पुष्पचूला आर्याने उससे इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिये ! हमलोग ईर्यासमिति आदि समितियोंसे युक्त यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी श्रमणी निर्ग्रन्थी हैं। हमें शरीर बाकुशिका होना उचित नहीं है। हे देवानुप्रिये ! तुम शरीर बाकुशिका हो

ત્યાર પછી અર્હત પાર્થ પ્રભુના એ પ્રકારે કહેવાથી તે ભૂતા દારિકા હ્રષ્ટ પુષ્ટ હૃદયથી ઈશાન કોણમાં જઇને પોતાના જ હાથેથી આભૂષણ આદિને પોતાના શરીર ઉપરથી ઉતારે છે. પછી તે દેવાનન્દાની પેઠે પુષ્પચૂલા આર્યાની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ ગુપ્તબ્રહ્મચારિણી બને છે. ત્યાર પછી તે ભૂતા આર્યા કોઇ એક વખતે શરીર બાકુશિકા થઇ ગઇ જેથી તે પોતાના હાથ, પગ, માથું, મોં તથા સ્તનના અંદરના ભાગોને અને કાંબના અંદરના ભાગો તથા શુદ્ધાની અંદરના ભાગો વારં-વાર ધોવા લાગી. જ્યાં ત્યાં પણ સુવા માટે, બેસવા માટે સ્વાધ્યાય કરવા માટે ઉપયુક્ત સ્થાનનો નિશ્ચય કરતી હતી તે પહેલાં જ ત્યાં પાણી છાંટતી હતી, પછી ત્યાં બેસતી હતી, સુતી હતી, સ્વાધ્યાય કરતી હતી. પછી તે ભૂતા આર્યાનો આ પ્રકારનો વ્યવહાર જોઇને પુષ્પચૂલા આર્યાએ તેને આ પ્રકારે કહ્યું:—હે દેવાનુપ્રિયે ! આપણે ઈર્યાસમિતિ આદિ સમિતિઓથી યુક્ત અને ગુપ્તબ્રહ્મચારિણી શ્રમણી નિર્ગ્રન્થી છીએ. આપણને શરીર બાકુશિકા થવું ઉચિત નથી. હે દેવાનુપ્રિયે ! તું શરીરબાકુશિકા થઇ ગઇ છે. તેથી હમેશાં હાથ, પગ આદિ અંગોને વારં-

ગયી હો, ઉસસે સર્વદા—વાર વાર હાથ પૈર આદિ અંગોકો ઘોતી હો, બૈઠને સોને તથા સ્વાધ્યાય કરનેકી જગહકો પાનીસે છિડકા કરતી હો । ઇસલિયે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ ઇસ પાપ સ્થાનકી આલોચના કરો । ઉસકે બાદ પુણ્યચૂલાકો વાત ન માનકર વહ ભૂતા આર્યા સુભદ્રા આર્યાકે સમાન અકેલી હી અલગ ઉપાશ્રયમેં ઉતરી ઔર પૂર્વવત્ ક્રિયા કરતી હુઈ સ્વતન્ત્ર હોકર રહને લગી । ઉસકે બાદ વહ ભૂતા આર્યા બહુતસે ચતુર્થે ષષ્ઠ અષ્ટમ આદિ તપસે આત્માકો ભાવિત કરતી હુઈ તથા બહુત વર્ષોં તક શ્રામણ્યપર્યાયકો પાલન કરતી હુઈ અપને પાપસ્થાનોકી આલોચના ઔર પ્રતિક્રમણ કિયે વિના કાલ અવસરમેં કાલકર સૌધર્મ કલ્પકે શ્રી—અવતંત્રક વિમાનમેં ઉપપાત સભાકે અન્દર દેવ—શયનીય શય્યામેં ઉસ દેવ સમ્બન્ધી અવગાહનાસે શ્રી—દેવી પને ઉત્પન્ન હુઈ ઔર ભાષાપર્યાસિ મનઃપર્યાસિ આદિ પાંચ પર્યાસિયોસે યુક્ત હો ગયી । દેવગતિમેં ભાષા ઔર મનપર્યાસિ એક સાથ બાંધનેકે કારણ પાંચ પર્યાસિ કહી ગયી હૈ ।

વાર ધુએ છે. એસવા, સુવા તથા સ્વાધ્યાય કરવાની જગા ઉપર પાણી છાંટે છે. માટે હે દેવાનુપ્રિયે ! તું આ પાપસ્થાનની આલોચના કર. ત્યાર પછી તે પુણ્યચૂલાની વાત ન માનીને તે ભૂતા આર્યા સુભદ્રા આર્યાની પેઠે એકલી જ જુલુસ ઉપાશ્રયમાં ઉતરી અને પૂર્વવત્ વર્તતી સ્વતંત્ર થઇને રહેવા લાગી. ત્યાર પછી તે ભૂતા આર્યા ઘણાં ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ આદિ તપોથી આત્માને ભાવિત કરતી અને ઘણાં વર્ષો સુધી હીક્ષા પર્યાયનું પાલન કરતી તેણે પોતાનાં પાપસ્થાનોની આલોચના અને પ્રતિક્રમણ કર્યા વગર પછી કાળ અવસરમાં કાળ કરીને સૌધર્મ કલ્પના શ્રી અવતંત્ર વિમાનમાં ઉપપાત સભાની અંદર દેવશયનીય શય્યામાં તે દેવ સમ્બન્ધી અવગાહના દ્વારા શ્રી—દેવી પાણીમાં જન્મ લીધે! અને ભાષાપર્યાસિ, મનઃપર્યાસિ આદિ પાંચ પર્યાસિઓથી યુક્ત થઇ ગઈ. દેવગતિમાં ભાષા અને મન પર્યાસિ એક સાથે બાંધવાના કારણે પાંચ પર્યાસિ કહી છે.

પ્રવચનોચિત્રની ટોચના વર્ગ ૪ અધ્ય. ૧ ઓ દેવો

૪૧૩

હે ગૌતમ ! શ્રી-દેવીને હસ પ્રકાર હસ દિવ્ય દેવશુદ્ધિનો પાયા છે । દેવ પ્રેક્ષામાં હસની સ્થિતિ એક પલ્લોપમની છે ।

ગૌતમ સ્વામીને પૂછા—

હે ભદ્રાન્ત ! યહ શ્રી-દેવી યહાંસે વ્યવકર કહાં જાયગા ।

ભગવાન કહતે હૈ—

હે ગૌતમ ! વહ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લેકર સિદ્ધ હોગી ઓર સબ :સ્વોકા અન્ત કરેગી ।

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ—

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને પુષ્પચૂલિકાકે પ્રથમ અધ્યયનના ભાવ ત્ત પ્રકાર નિરૂપિત કિયા છે ।

હસી પ્રકાર શેષ નૌ અધ્યયનોના ભી ભાવ જાનના ચાહિયે । હન નવોકે ઈમાનોના નામ હનકે નામોકે સમાન છે । સૌધર્મ કલ્પમાં યે સબ દેવીપનમાં

હે ગૌતમ ! શ્રી-દેવીએ આ પ્રકારે આ દિવ્ય દેવશુદ્ધિને મેળવી છે. ત્તોક્ષમાં તેની સ્થિતિ એક પલ્લોપમની છે.

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે:—

હે ભદ્રાન્ત ! આ શ્રી-દેવી અહીંથી વ્યવીને કયાં જશે

ભગવાન કહે છે:—

હે ગૌતમ ! તે મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઈ સિદ્ધ થશે અને બધાં બધો અન્ત લાવશે.

સુધર્મા સ્વામી કહે છે:—

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પચૂલિકાના પ્રથમ અધ્યયનનો ભાવ ઉપર પ્રમાણે નિરૂપિત કર્યો છે.

આ પ્રકારે શેષ (બાકીના) નવ અધ્યયનોનો પણ ભાવ જાણી લેવો ઈચ્છે. આ નવનાં વિમાનનાં નામ તેના નામના જેવાંજ છે. સૌધર્મ કલ્પમાં

४१४

.४ पुष्पचूलिका सूत्र

उत्पन्न हुई। इनके पूर्वभवमें नगर उद्द्यान पिता आदि तथा इनका अपना नाम आदि संग्रहणीगाथामें आये हुए नामके समान जानना चाहिये। ये सभी पार्श्व प्रभुके समीपमें प्रव्रजित होकर पुष्पचूलाकी शिष्या हुई तथा सभी शरीरबाकुशिका हो गयीं। और ये सभी देवलोकसे च्यवकर महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेकर सिद्ध होगी। और सब दुस्त्रोका अन्त करेंगी ॥ २ ॥

पुष्पचूलिका नामका चतुर्थ वर्ग समाप्त हुआ.

એ અધીનો દેવીપણામાં જન્મ થયો. તેમના પૂર્વ ભવમાં નગર, ઉદ્યાન, પિતા આદિ તથા તેનાં પોતાનાં નામ આદિ સંગ્રહણી ગાથામાં આવેલાં નામનાં જેવાં જાણવાં. આ અધી પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ અને તે અધી પુષ્પચૂલાની શિષ્યાઓ થઈ હતી તથા અધી શરીરબાકુશિકા થઈ ગઈ હતી. પછી અધી દેવલોકમાંથી ચ્યવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઈ સિદ્ધ થશે અને સર્વે દુઃખનો અંત લાવશે. (૨)

પુષ્પચૂલિકા નામનો ચોથો વર્ગ સમાપ્ત.

वृष्णिदशा ५

मूलम्—

जइणं भंते ! उक्खेवओ० उवंगणं चउत्थस्स पुण्फचूलाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगणं वद्धिदसाणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

“निसिदे १ मायनि २ वह ३ वहे ४, पगता ५ जुत्ती ६ दसरहे ७ दहरहे ८ य ।

महाधणू ९ सत्तधणू १०, दसधणू ११ नामे सयधणू १२ य ॥ १ ॥”

जइणं भंते ! समणेणं जाव दुवालस्स अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ बारवई नामं नयरी होत्था दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोयभूया

छाया—

यदि खलु भदन्त ! उत्क्षेपकः, उपाङ्गानां चतुर्थस्य पुष्पचूलानाम-यमर्थः प्रज्ञप्तः, पञ्चमस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य उपाङ्गानां वृष्णिदशानां श्रमणेन भगवता यावत्संपत्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावद् द्वादशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद् यथा—

निषधः १, मायनी २ वहः ३ वहे ४ पगता, ५ ज्योतिः ६ दशरथः ७ दहरथश्च ८

महाधन्वा, ९ सप्तधन्वा, १० दशधन्वा, ११ नाम शतधन्वाच १२ ॥ १ ॥

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावद् द्वादशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! श्रमणेन यावद् द्वादशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! उत्क्षेपकः । एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावती नाम नगरी अभवत् द्वादशयोजनायामा यावत् प्रत्यक्षं देव-

४१६

५ वृष्णिदशास्त्र

पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तीसे णं बारवईए नयरीए
 बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए; एत्थ णं रेवए नामं पव्वए होत्था, तुंगे
 गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविहरूक्खगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगतामिरामे
 हंस-मिय-मयूर-कौच-सारस-चक्रवाग-मयणसाला-कोइलकुलोववेए अणेग-
 तडकडगवियरओज्झरपवायपुब्भारसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जा-
 हरमिहुणसंनिविन्ने निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोकवलवगाणं सोमे
 सुभए पियदंसणे सुरूवे पासाईए जाव पडिरूवे । तत्थ णं रेवयगस्स
 पव्वयस्स अदूरसामंते एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फ
 जाव दरिसणिज्जे । तत्थणं नंदणवणे उज्जाणे सुरप्पियस्स जक्खस्स
 जक्खाययणे होत्था चिराईए जाव बहुजणो आगम्म अच्चेइ सुरप्पियं
 जक्खाययणं । से णं सुरप्पिए जक्खाययणे एणेणं महया वणसंढेणं सव्वओ
 समंता संपरिक्खित्ते जहा पुण्णभदे जाव सिलावट्टए । तत्थ ण बारवईए

लोकभूता प्रासादीया दर्शनीया अमिरूपा प्रतिरूपा । तस्याः खलु द्वारावत्याः
 नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे; अत्र खलु रैवतो नाम पर्वतोऽभवत्, तुङ्गो
 गगनतलमणुलिहच्छिखरः नानाविधवृक्षगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगतामिरामः
 हंसमृगमयूरकौचसारसचक्रवाकमदनशालाकोकिलकुलोपपेतः, अनेकतटकट-
 कविवरावभ्रम्रपातप्राग्भारशिखरप्रचुरः अप्सरोगणदेवसंघ-चारण
 विद्याधरमिथुनसन्निचीर्णः, नित्यक्षणकः, दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यबलवतां
 सोमः शुभः प्रियदर्शनः सुरूपः प्रासादीयो यावत् प्रतिरूपः । तस्य खलु
 रैवतकस्य पर्वतस्य अदूरसामन्ते; अत्र खलु नन्दनवनं नाम उद्यानम् अभवत्,
 सर्वक्रतु पुष्पं यावद् दर्शनीयम् । तत्र खलु नन्दनवने उद्याने सुरप्रियस्य
 यक्षस्य यक्षायतनमभवत्, चिरातीतं, यावद् बहुजन आगम्य अर्चयति सुरप्रियं
 यक्षायतनम् । तत् खलु सुरप्रियं यक्षायतनम् एकेन महता वनषण्डेन
 सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तम् यथा पूर्णभद्रो यावत् सिलापट्टकः । तत्र खलु

४२७

द्वारावत्यां नगर्यां कृष्णो नाम वासुदेवो राजाऽभवत् यावत् प्रशासद् विहरति । स खलु तत्र समुद्रविजयप्रमुखानां दशानां दशार्हाणां, बलदेव-प्रमुखानां पञ्चानां महावीराणाम्, उग्रसेनप्रमुखानां षोडशानां राजसहस्राणां, प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अध्युष्टानां (सार्द्धतृतीयानां) कुमारकोटीनां, शाम्बप्रमुखानां षष्ट्याः दुर्दान्तसहस्राणं, वीरसेनप्रमुखानामेकविंशत्याः वीरसहस्राणां, महासेन-प्रमुखानां षट्पञ्चाशतो बलवत्सहस्राणां, रुक्मिणीप्रमुखानां षोडशानां देवी-साहस्रीणाम्, अनङ्गसेनाप्रमुखानामनेकासां गणिकासाहस्रीणाम्, अन्येषां च बहूनां राजेश्वर० यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां वैताढ्यगिरिसागरमर्यादस्य दक्षिणार्द्धभरतस्याधिपत्यं यावद् विहरति । तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्यां बलदेवो नाम राजाऽभवत्, महता यावद् राज्यं प्रशासद् विहरति । तस्य खलु बलदेवस्य राज्ञो रेवती नाम देव्यभवत् सुकुमारपाणिपादा यावद् विहरति । ततः खलु सा रेवती देवी अन्यदा कदाचित् तादृशे शयनीये

५३

૪૧૮

૫ વૃષ્ણિદશાસ્ત્ર

સગંસિ સયજિજ્ઞંસિ જાવ સીહં સુમિણે પાસિત્તા ણં પહિબુદ્ધાં, એવં સુમિણ
દંસણપરિકહણં, નિસદે નામં કુમારે જાણ જાવ કલાઓ જહા મહાબલે,
પંનાસઓ દાઓ, પળ્લાસરાયકળ્ણગાણં એગદિવસેણં પાણિં ગિળ્હાવેહ, નવરં નિસદે
નામં જાવ ઉપ્પિ પાસાણ વિહરહ ॥ ૧ ॥

યાવત્ સિંહં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા સ્વલ્લ પ્રતિબુદ્ધા એવં સ્વપ્નદર્શનપરિકથનં, નિષધો
નામ કુમારો જાતઃ, યાવત્ કલા યથા મહાબલસ્ય, પચ્ચાશદ્ દાયાઃ,
પચ્ચાશદ્રાજકન્યકાનામેકદિવસેન પાણિં ગ્રાહયતિ, નવરં નિષધો નામ યાવદ્
ઉપરિ પાસાદે વિહરતિ ॥ ૧ ॥

ટીકા—

‘યદિ સ્વલ્લ’ ઇત્યાદિ—નાનાવિધગુચ્છગુલ્મલતાવહ્નીપરિગતામિરામઃ—

। વૃષ્ણિદશા વર્ગ ૫ ।

‘જહણં મંતે’ ઇત્યાદિ—

જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈ—

હે ભદન્ત ! પુષ્પચૂલા નામકે ચતુર્થ ઉપાક્ષમે ભગવાને પૂર્વોક્ત પ્રકારસે
દસ અધ્યયનોકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ તો હે ભદન્ત ! ઉસકે બાદ વૃષ્ણિદશા નામક
પાંચવે ઉપાક્ષમે મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને કિન અર્થોકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ।

વૃષ્ણિદશા વર્ગ (૫) પાંચમો.

‘જહણં મંતે’ ઇત્યાદિ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે:—

હે ભદન્ત ! પુષ્પચૂલા નામના ચાથા ઉપાંગમાં ભગવાને પૂર્વોક્ત પ્રકારથી
દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો હે ભદન્ત ! ત્યાર પછી વૃષ્ણિદશા નામના
પાંચમા ઉપાંગમાં મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કયા અર્થોનું નિરૂપણ કર્યું છે.

સુધર્માચીની ટીકા વર્ગ ૫ અધ્ય. ૧ નિષધ

૪૧૯

સુધર્મા સ્વામી કહેતે હૈ—

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વૃષ્ણિદશા નામક પાંચવેં વર્ગમેં બારહ અધ્યયનોકા નિરૂપણ કિયા હૈ ।

उनके नाम (१) निषध, (२) मायनी, (३) वह, (४) वह, (५) पगता, (६) ज्योति, (७) दशरथ, (८) दृढरथ, (९) महाधन्वा, (१०) सप्तधन्वा, (११) दशधन्वा, और (१२) शतधन्वा हैं ।

જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈ—

હે ભદન્ત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વૃષ્ણિદશામેં બારહ અધ્યયનોકા નિરૂપણ કિયા હૈ તો ઉન અધ્યયનોમેં પ્રથમ અધ્યયનકા ક્યા ભાવ કહા હૈ ?

સુધર્મા સ્વામી કહેતે હૈ—

હે જમ્બૂ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં દ્વારાવતી નામકી નગરી થી । જો બારહ

સુધર્મા સ્વામી કહે છે:--

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે વૃષ્ણિદશા નામના પાંચમા વર્ગમાં બાર અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે.

તેમનાં નામ:--(૧) નિષધ, (૨) માયની, (૩) વહ, (૪) વહ, (૫) પગતા (૬) જ્યોતિ, (૭) દશરથ, (૮) દૃઢરથ, (૯) મહાધન્વા, (૧૦) સપ્તધન્વા, (૧૧) દશધન્વા અને (૧૨) શતધન્વા છે.

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે:--

હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે વૃષ્ણિદશામાં બાર અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો તે અધ્યયનોમાં પ્રથમ અધ્યયનનો શું ભાવ કહ્યો છે ?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે:--

હે જમ્બૂ ! તે કાળ તે સમયે દ્વારાવતી નામની નગરી હતી, જે બાર

નાનાવિધાઃ=અનેકપ્રકારાઃ વૃક્ષાશ્ચ ગુચ્છાઃ=સ્તવકાશ્ચ ગુલ્મઃ=સ્તમ્બાશ્ચ
(સ્કન્ધરહિતાસ્તરવઃ) લતાઃ=વ્રતતયશ્ચ વલ્યઃ=લતાવિશેષાશ્ચ, તામિઃ પરિ-
ગતઃ=સમ્પ્રાપ્તઃ અમિરામઃ=શોભા યત્ર સ તથા અનેકપ્રકારકતરુસ્તવકસ્તમ્બ-
લતાવહ્લીસમ્પ્રાપ્તચ્છવિઃ, હંસ-મૃગ-મયૂર-ક્રૌશ્ચ-સારસ-ચક્રવાકમદનશાલા
કોકિલકુલોપપેતઃ હંસાઃ=પ્રસિદ્ધાઃ, મૃગાઃ=હરિણાઃ, મયૂરાઃ, ક્રૌશ્ચાઃ,
સારસાઃ, ચક્રવાકાઃ, મદનશાલાઃ=સારિકાવિશેષાઃ, કોકિલાશ્ચ,તેષાં યત્ કુલં=
સમૂહસ્તેન ઉપપેતઃ=યુક્તઃ । અનેકતટકટકવિવરાવજ્જરપપાતપ્રાગ્ભાર-

યોજન લમ્બી યાવત્ પ્રત્યક્ષ દેવલોક સદશ 'પ્રસાદીયા' =મનકો પ્રસન્ન કરને
વાલી તથા 'દર્શનીયા' =દેખને યોગ્ય એવં 'અભિરૂપા' =સુંદર છટાવાલી ઓર
'પ્રતિરૂપા' =અનુપમ શિલ્પકલાસે સુશોભિત થી । ઉસ દ્વારાવતી નગરીકે બાહર
ઈશાનકોણમેં ઊંચા તથા આકાશકો છૂનેવાલે શિખરોસે યુક્ત રૈવતક નામક પર્વત
થા । વહ પર્વત અનેક પ્રકારકે વૃક્ષ ગુચ્છ ગુલ્મ ઓર લતા વહ્લિયોસે મનોહર થા ।
વહ હંસ, મૃગ, મયૂર, ક્રૌશ્ચ (પક્ષી વિશેષ) સારસ, ચક્રવાક, મદનશાલા (મૈના)
ઓર કોકિલ આદિ પક્ષિવૃન્દસે સુશોભિત થા । તથા જિસમેં અનેક તટ=કિનારે
ઓર કટક=પર્વતકા રમણીય ભાગ, તથા વિવર=સુંદર ગુફાઈ ઓર અવજ્જર=સુંદર
જરને એવં પ્રપાત=જહાં જરના ગિરતા હૈ વહ સ્થાન, તથા પ્રાગ્ભાર=પર્વતકા છુકા

યોજન લાંબી યાવત્ પ્રત્યક્ષ દેવલોકના જેવી, પ્રસાદીયા=મનને પ્રસન્ન કરવાવાળી
તથા દર્શનીયા=દેખવા યોગ્ય, અભિરૂપા=સુંદર છટાવાળી અને પ્રતિરૂપા=અનુપમ
શિલ્પકલાથી સુશોભિત હતી. તે દ્વારાવતી નગરીની બહાર ઇશાન કોણમાં જાયો
તથા ગગનચુંબી શિખરોવાળો રૈવતક નામનો પર્વત હતો. તે પર્વત અનેક
બીતનાં વૃક્ષો, ગુચ્છ, ગુલ્મ અને લતાવહ્લીઓથી મનોહર હતો. વળી તે હંસ,
મૃગ, મયૂર, ક્રૌચ (પક્ષી), સારસ, ચક્રવાક, મદનશાલા (મૈના) અને કોકિલા
આદિ પક્ષિવૃન્દથી સુશોભિત હતો. તથા જેમાં અનેક તટ=કિનારા અને કટક=
પર્વતના રમણીય ભાગ તથા વિવર=સુંદર ગુફાઓ અને અવજ્જર=સુંદર ઝરણાઓ,
પ્રપાત=બધાં ઝરણાં પડે છે તે સ્થાન, તથા પ્રાગ્ભાર=પર્વતના નમેલા રમણીય

शिखरप्रचुरः-अनेकानि तटानि=तीराणि कटकाः=गण्डशैलाः पर्वतात्संयुज्य-
पतिता महापाषाणाः, विवराणि=छिद्राणि, अवक्षराः=निर्झरविशेषाः, प्रपाताः=
भृगवः=गर्जरूपाणि निर्झरणजलपतनस्थानानि, प्राग्भाराः=ईषदवनताः पर्वतप्रदे-

हुआ रम्य प्रदेश और अनेक सुन्दर शिखर विद्यमान थे। वहाँ अप्सरागण देवगण और विद्याधरोके युगल आकर क्रोड़ा करते थे। और जहाँ जङ्घाचरण विद्याचरण मुनि भी ध्यान मौनादिके लिये निवास करते थे। तथा वह पर्वत उत्सवका एक रमणीय स्थल था। और नेमिनाथ भगवानसे युक्त होनेके कारण तीनों लोकमें श्रेष्ठ बलवीर दशार्होंका वह पर्वत सोम=आह्लाद उत्पन्न करनेवाला था, शुभ=मंगलकारी था प्रियदर्शन=नेत्रोंको सुख देनेवाला था, सुरूप=सुहावना था, प्रसादीय=मनको प्रसन्न करनेवाला था, दर्शनीय=देखने योग्य था, अभिरूप=अपनी सुन्दरताके कारण चमकता था, प्रतिरूप=दर्शक जनोके हृदयमें प्रतिबिम्बित हो जाता था। उस रैवतक पर्वतके समीपमें नन्दनवन नामक उद्यान था, जो सभी ऋतुओंके फूलोंसे सम्पन्न थावत् दर्शनीय था। उस नन्दनवन उद्यानमें सुरप्रिय यक्षका यक्षायतन बहुत

भाग अने सुंदर शिखर विद्यमान होता था। अप्सरागण, देवगण, अने विद्याधरोंनां जोड़वां आवीने क्रीडा करतां होतां अने जहां जंघाचरण, विद्याचरण मुनि पण ध्यान, मोन आदि भाटे निवास करता होता। तथा आ पर्वत हमेशां उत्सवनुं एक रमणीय स्थान हतुं अने नेमीनाथ भगवानथी युक्त होवाथी त्रैलोक्य भां श्रेष्ठ अलवीर दशार्होंनां ते पर्वत सोम=आह्लाद उत्पन्न करवावावाणो होता, शुभ=मंगलकारी होता, प्रियदर्शन=नेत्रोंने सुख आपवावाणो होता, सुरूप=रूपाणो शोभादार होता, प्रसादीय=मनने प्रसन्न करवावाणो होता, दर्शनीय=जोवा योग्य होता, अभिरूप=पोतानी सुंदरताने लीये चमकतो होता, प्रतिरूप=जोनारनां हृदयभां छाप पाडे तेवा होता, (प्रतिबिम्बित थछ जतो होता।) ते रैवत पर्वतनी पास नन्दनवन नामे एक उद्यान होता। जे अभी ऋतुओंभां फूलोथी संपन्न होवाथी दर्शनीय होता। ते नन्दनवन उद्यानभां सुरप्रिय=यक्षनुं यक्षायतन अहु प्राचीन हतुं

જ્ઞાઃ, શિશ્વરાણિ=શ્વૃઙ્ગાણિ, ઇતાનિ પ્રચુરાણિ યત્ર સ તથા, અપ્સરોગણદેવ-
સંઘચારણવિદ્યાધરમિથુનસંનિચીર્ણઃ-અપ્સરસાં ગણઃ=સમૂહઃ, દેવસઙ્ગઃ=દેવસમૂહઃ
ચારણાઃ=જઙ્ગાચારણાદયઃ સાધુવિશેષાઃ, વિદ્યાધરમિથુનાનિ, તૈઃ સંનિચીર્ણઃ

પ્રાચીન થા ઓર લોક ઉસે માનતે થે । વહ સુરપ્રિય યક્ષાયતન ચારો તરફસે
એક બઢા વનષ્ણડસે ઘિરા હુઆ થા । જૈસા પૂર્ણમદ્ર ઉદ્યાન થા । ઉસમેં અશોક
વૃક્ષકે નીચે એક શિલા પટ્ટક થા ।

ઉસ દ્વારાવતી નગરીમેં કૃષ્ણ વાસુદેવ રાજા થે, જો ઉસ નગરીકા યાવત્
સાસન કરતે હુએ વિચરતે થે । વહ કૃષ્ણ વાસુદેવ સમુદ્રવિજય પ્રમુખ દશ
દશારોકે, બલદેવ પ્રમુખ પાંચ મહાવીરોકે, ઉપ્રસેન પ્રમુખ સોલહ હજાર રાજાઓકે,
પ્રદ્યુમ્ન પ્રમુખ સાઢે ત્રીસ કરોડ કુમારોકે, શામ્બ પ્રમુખ સાઠ હજાર દુર્દાન્ત શૂરોકે,
વીરસેન પ્રમુખ એકીસ હજાર વીરોકે, મહાસેન પ્રમુખ છપ્પન હજાર બલવાનોકે,
રુક્મિણી પ્રમુખ સોલહ હજાર દેવિયોકે તથા અનન્ગસેના પ્રમુખ અનેક હજાર ગણિ-
કાઓકે ઓર બહુતસે રાજા ઈશ્વર તલવર માહમ્બિક કૌટુમ્બિક શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ

અને લોકો તેને માનતા હતા. તે સુરપ્રિય યક્ષાયતન ચારે તરફથી એક મોટા
વનષ્ણડથી ઘેરાયેલું હતું કે જેવું પૂર્ણમદ્ર ઉદ્યાન હતું. તેમાં અશોકવૃક્ષની નીચે એક
શિલાપટ્ટક હતું.

તે દ્વારાવતી નગરીમાં કૃષ્ણ વાસુદેવ નામે રાજા હતા જે તે નગરીમાં
રાજ્ય કરતા વિચરતા હતા. તે કૃષ્ણ વાસુદેવ સમુદ્રવિજય પ્રમુખ દશ દશારોના,
બલદેવ પ્રમુખ પાંચ મહાવીરોના, ઉપ્રસેન પ્રમુખ સોળ હજાર રાજાઓના, પ્રદ્યુમ્ન
પ્રમુખ સાઠા ત્રણ કરોડ કુમારોના, શામ્બ પ્રમુખ સાઠ હજાર દુર્દાન્ત શૂરવીરોના,
વીરસેન પ્રમુખ એકવીસ હજાર વીરોના, મહાસેન પ્રમુખ છપ્પન હજાર બલવાનોના,
રુક્મિણી પ્રમુખ સોળ હજાર દેવીઓનાં તથા અનંગ સેના પ્રમુખ અનેક હજાર
અણિકાઓનાં, વળી ઘણા રાજા ઈશ્વર તલવર માહમ્બિક કૌટુમ્બિક શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ

અધિષ્ઠિતઃ, નિત્યક્ષણકઃ—નિત્યમ્=અનવરતં ક્ષણ એવ ક્ષણકઃ=ઉત્સર્ગો યત્ર સઃ, કેષામયં ગિરિઃ ? इत्याह—दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यबलवतां—दशार्हाः=समुद्रविजयादयो दश दशार्हाः, तेषु वराः=श्रेष्ठाः, वीरपुरुषाश्च ते, त्रैलोक्ये=

સાર્થવાહ પ્રમૃત્તિઓકે તથા વૈતાલ્યગિરિ ઓર સાગરસે મર્યાદિત દક્ષિણ અર્ધભરતકે, ઉપર આધિપત્ય કરતે હુએ વિચર રહે થે ।

ઉસ દ્વારાવતી નગરીમેં બલદેવ નામક રાજા થે, જો મહાબલી થે ઓર યાવત્ અપને રાજ્યકા શાસન કરતે હુએ વિચર રહે થે । ઉસ બલદેવ રાજાકી પત્ની કા નામ રેવતી દેવી થા, જો સુકુમાર હાથ પૈરવાલી ઓર સર્વાંગ સુંદર થી । તથા પાંચો ઇન્દ્રિયોકે સુખોકા અનુભવ કરતી હુઈ વિચરતી થી । અનન્તર કિસી સમય વહ રેવતી દેવી પુણ્યવાનકે સોને લાયક અપની સુકોમલ શય્યામેં સોયી હુઈ સ્વપ્નમેં સિંહકો દેખા ઓર જાગ ગયી । સ્વપ્નકા વૃત્તાન્ત ઉસને રાજા બલદેવકો સુનાયા । અનન્તર સમય બીતને પર રેવતીકે ગર્ભસે એક કુમાર પૈદા હુઆ, જિસકા નામ નિષધ રહ્યા ગયા । વહ કુમાર બડા હોકર મહાબલકે સમાન બહત્તર કલાઓમેં

સાર્થવાહ આદિના તથા વૈતાલ્યગિરિ અને સાગરથી મર્યાદિત દક્ષિણ અર્ધભરતના ઉપર આધિપત્ય કરતા મહા રહેતા હતા.

તે દ્વારાવતી નગરીમાં બલદેવ નામે રાજા હતા જે મહાબલવાન હતા. અને પોતાના રાજ્યનું શાસન કરતા વિચરતા હતા. તે બલદેવ રાજાની પત્નીનું નામ રેવતી દેવી હતું, જે સુકુમાર હાથપગવાળી હતી અને સર્વાંગ સુંદર હતી અને પાંચે ઇન્દ્રિયોનાં સુખ અનુભવ કરતી વિચરતી હતી. પછી કોઈ સમયે તે રેવતી દેવી પુણ્યવાન લોકોને પોઢવા યોગ્ય એવી પોતાની સુકોમલ શય્યામાં સુતી હતી ત્યાં સ્વપ્નમાં સિંહને જોયો અને જાગી યા. સ્વપ્નનું વૃત્તાન્ત તેણે રાજા બલદેવને કહી સંભળાવ્યું. પછી સમય વીતતાં રેવતીના ગર્ભથી એક કુમારનો જન્મ થયો, જેનું નામ નિષધ રાખવામાં આવ્યું. તે કુમાર મોટો થતાં મહાબલના જેવો બહુતેર કળાઓમાં પ્રવીણ થઈ ગયો. પચાસ રાજકન્યાઓની સાથે

मूलम्—

तेणं कालेणं २ अरहा अरिष्टनेमी आदिकरे दसधणूइं वण्णओ जाव समोसरिए, परिसा निगया । तएणं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठट्ठे० कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाणियं भेरिं तालेह । तएणं से कोडुंबियपुरिसे जाव षडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए जेणेव सामुदाणिया भेरी तेणेव उवागच्छइ

छाया—

तस्मिन् काले तस्मिन् समये अर्हन् अरिष्टनेमिः आदिकरो दश-धनुष्कः वर्णकः यावत् समवसतः, परिषत् निर्गता । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवोऽस्याः कथाया लब्धार्थः सन् दृष्टतुष्टः० कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव देवानुप्रियाः ! सभायां सुधर्मायां सामु-दानिकीं भेरीं ताडयत । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रतिश्रुत्य

लोकत्रये बलवन्तश्च अतुलबलशालिनेमिनाथयुक्तत्वात्, ये ते तथा तेषाम् । शेषं सुगमम् ॥ १ ॥

प्रवीण हो गया । पचास राज कन्याओंके साथ एक दिनमें उसका विवाह हुआ तथा उसको पचास—पचास दहेज मिला । अनन्तर पूर्वजन्म उपार्जित पुण्यसे मिळे हुए पाँचो इन्द्रियोंके सुखोंका अनुभव करता हुआ अपने महलमें उत्सव आदिके साथ रहने लगा ॥ १ ॥

ओके दिवसभां तेनां लग्न थयां अने पचास पचास दहेज भल्या. पछी पूर्वजन्म उपार्जित पुण्यथी भजेलां पांचे इन्द्रियोंनां सुखोना अनुभव करतो ते पोताना भडेसभां आनंद उत्सवभां रहेवा लाग्यो. (१).

उवागच्छिता तं सामुदाणियं भेरीं महया २ सहेणं तालेइ, तएणं तीसे सामुदाणियाए भेरीए महया २ सहेण तालियाए समाणीए समुद्विजयपामोक्खा दस दसारा देवीओ उण भाणियव्वाओ जाव अणंगसेणापामोक्खा अणेगा गणियासहस्सा, अन्ने य बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया जहा विभवइ हिंसकारसमुदएणं, अप्पेगइया हयगया जाव पुरिसवगुरापरिक्खित्ता० जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करतल० कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेति । तए णं से कण्हे वासुदेवे कौडुंबियपुरिसे एवं वयासी खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! आभिसेकं हत्थिरयणं कप्पेह हयगयरहपवरजाव पच्चप्पिणंति । तएणं से कण्हे वासुदेवे मज्जणघरे जाव दुरूढे, अट्टमंगलगा, जहा कूणिए, सेयवरचामरेहि उद्धूयमाणेहि २ समुद्विजयपामोक्खेहि दसारेहि जाव सत्थवाहप्पभिईहि सद्धि संपरिवुढे सव्विहोए जाव रवेणं बारवईनयरीमज्झं-

यत्रैव सभायां सुधर्मायां सामुदानिकी भेरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तां सामुदानिकीं भेरीं महता २ शब्देन ताडयन्ति । ततः खलु तस्यां सामुदानिक्यां भेर्या महता २ शब्देन ताडितायां सत्यां समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्हाः, देव्यः पुनर्भणितव्याः, यावद् अनङ्गसेनाप्रमुखानि अनेकानि गणिकासहस्राणि, अन्ये च बहवो राजेश्वर० यावत् सार्थवाहप्रभृतयः स्नाताः यावत् कृतप्रायश्चित्ताः सर्वालंकारविभूषिता यथाविभवऋद्धिसत्कारसमुदयेन अप्येकके हयगताः यावत् पुरुषवागुरापरिक्षिप्ता यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतल० कृष्णं वासुदेवं जयेन विजयेन वर्द्धयन्ति । ततः खलु कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषानेवमवादीत-क्षिप्रमेव भो देवानुप्पियाः ! आभिषेकं हस्तिरत्नं कल्पयध्वम्, हय-गज-रथ प्रवरान् यावत् प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो मज्जनगृहे यावद् दुरूढः अष्टाष्टमङ्गलकानि, यथा कूणिकः, श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः २ समुद्रविजयप्रमुखैः

मज्जेण सेसं जहा कूणिओ जाव पज्जुवासइ । तए णं तस्स निसदस्स कुमारस्स उप्पि पासायवरगयस्स तं महया जणसइं च जहा जमाली जाव धम्मं सोच्चा निसम्म वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सइहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जहा चित्तो जाव सावगघम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता पडिगए । तेणं कालेणं २ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी वरदत्ते नामं अणगारे उराले जाव विहरइ । तएणं से वरदत्ते अणगारे निसदं कुमारं पासइ, पासित्ता जायसद्धे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी अहो णं भंते ! निसदे कुमारे इहे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे एवं पिए० मणुन्नए० मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे । निसदेणं भंते ! कुमारेणं अयमेयारूवे माणुयइट्ठी किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता ? पुच्छा जहा सूरियाभस्स, एवं खलु वरदत्ता ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए नामं नयरे होत्था, रिद्ध-त्थिमियसमिद्धे०, मेहवन्ने उज्जाणे, मणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे । तत्थ णं

दशभिर्दशहैर्यावत् सार्थवाहप्रभृतिभिः सार्द्धं संपरिवृतः सर्वऋद्ध्या यावत् रवेण यावत् द्वारावतीनगरीमध्यमध्येन शेषं यथा कूणिको यावत् पर्युपास्ते । ततः खलु तस्य निषधस्य कुमारस्योपरिप्रासादवरगतस्य तं महाजनशब्दं च यथा जमालिर्यावद् धर्मं श्रुत्वा निशम्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्ता नमस्यित्ता एवमवादीत्—श्रद्धधामि खलु भदन्त ! निर्ग्रन्थं प्रवचनं यथा चित्तो० यावत् श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य प्रतिगतः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तेवासी वरदत्तो नाम अनगारः उदारो यावद् विहरति । ततः स वरदत्तोऽनगारो निषधं कुमारं पश्यति, दृष्ट्वा जातश्रद्धो यावत् पर्युपासीन एवमवादीत्—अहो ! खलु भदन्त ! निषधः कुमार इष्ट इष्टरूपः कान्तः कान्तरूपः, एवं प्रियो० मनोज्ञो० मनोऽमो मनोऽमरूपः सोमः सोमरूपः प्रियदर्शनः सुरूपः । निषधेन भदन्त ! कुमारेण अयमेतद्रूपा मानुष्यऋद्धिः कथं लब्धा ? कथं प्राप्ता ?

रोहीडए नयरे महबले नामं राया, पउमावई नामं देवी, अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सीहं सुमिणे, एवं जम्मणं भाणियव्वं जहा महबलस्स, नवरं वीरंगओ नामं, बत्तीसओ दाओ, बत्तीसाए रायवरकन्नगा-
णं पाणिं जाव उवगिज्जमाणे २ पाउसवरिसारत्तसरयहेमंतवसन्तगिम्ह-
पज्जंते छप्पि उऊ जहाविभवेणं भुंजमाणे २ कालं गालेमाणे इट्ठे
सहे जाव विहरइ । तेणं कालेणं २ सिद्धत्था नाम आयरिया जाइ-
संपन्ना जहा केसी, नवरं बहुस्सुया बहुपरिवारा जेणेव रोहीडए नयरे
जेणेव मेहवन्ने उज्जाणे जेणेव मणिदत्तस्य जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव
उवागया, अहापडिरूवं जाव विहरंति; परिसा निग्गया । तएणं तस्स
वीरंगणस्य कुमारस्य उप्पि पासायवरगतस्स तं महया जणसहं च जहा
जमाली निग्गओ धम्मं सोच्चा जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो
आपुच्छामि जहा जमाली तहेव निक्खंतो जाव अणगारे जाए जाव गुत्तवंभ-

पृच्छा यथा सूर्याभस्य । एवं खलु वरदत्त ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव
जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे रोहीतकं नाम नगरमभवत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्० मेघ-
वर्णमुद्यानं, मणिदत्तस्य यक्षस्य यक्षायतनम् । तत्र खलु रोहीतके नगरे महा-
बलो नाम राजा, पद्मावती नाम देवी, अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशे
शयनीये सिंहं स्वप्ने०, एवं जन्म भणितव्यं यथा महाबलस्य, नवरं वीरंगतो
नाम, द्वात्रिंशद् दायाः, द्वात्रिंशतो राजकन्यकानां पाणिं यावद् उपगो-
यमानः २ प्रावृद्धैर्षारात्रशरद्धेमन्तग्रीष्मवसन्तान् षडपि ऋतून् यथाविभवेन
भुञ्जानः इष्टान् शब्दान् यावद् विहरति । तस्मिन् काले तस्मिन् समये
सिद्धार्थं नाम आचार्यं जातिसम्पन्ना यथा केशी, नवरं बहुश्रुता बहुपरि-
वारा यत्रैव रोहीतकं नगरं यत्रैव मेघवर्णमुद्यानं यत्रैव मणिदत्तस्य यक्षस्य
यक्षायतनं तत्रैवोपागतः, यथाप्रतिरूपं यावद् विहरति, परिषद् निर्गता ।
ततः खलु तस्य वीरंगतस्य कुमारस्य उपरिपासादवरगतस्य तं महाजन-

४२८

५ वृष्णिदशरत्न

यारी । तए णं से वीरंगए अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अंतिए सामाइ-
यमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूइं जाव चउत्थ जाव अप्पाणं
भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं पणयालीसवासाइं सामन्नपरियायं पाउणिच्चा,
दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झसित्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता
आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे मनोरमे
विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमा
ठिई पणत्ता । तत्थणं वीरंगयस्स देवस्सवि दस सागरोवमा ठिई पणत्ता,
से णं वीरंगए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अणंतरं चयं
चइत्ता इहेव बारवईए नवरीए बलदेवस्स राज्ञो रेवईए देवीए कुञ्चिसि
पुत्तत्ताए उववन्ने । तएणं सा रेवई देवी तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि
सुमिणदंसणं जाव उप्पि पासायवरगए विहरइ । तं एवं खलु वरदत्ता !

शब्दं च, यथा जमालिर्निर्गतो धर्मश्रुत्वा यद् नवरं देवानुप्रियाः ! अम्बा-
पितरौ आपृच्छामि यथा जमालिस्तथैव निष्क्रान्तो यावद् अनगारो जातो
यावद् गुप्तराजचारी । ततः खलु स वीरंगतोऽनगारः सिद्धार्थानामाचार्याणा-
मन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहूनि यावत्
चतुर्थं० यावत् आत्मानं भावयन् बहुप्रतिपूर्णानि पञ्चचत्वारिंशद् वर्षाणि
श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा द्वैमासिकया संलेखनया आत्मानं जोषित्वा सर्वशक्तिं
भक्तशतमनशनेन छित्त्वा आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे
कालं कृत्वा ब्रह्मलोके कल्पे मनोरमे विमाने देवतया उपपन्नः । तत्र खलु
अस्त्येकेषां देवानां दशसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता । तत्र खलु वीरंगतस्य
देवस्यापि दशसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता । स खलु वीरंगतो देवस्तस्माद्
देवलोकात् आयुःक्षयेण यावद् अनन्तरं चयं च्युत्वा इहैव द्वारावत्यां नगर्यां
बलदेवस्य राज्ञो रेवत्या देव्याः कुक्षौ पुत्रतयोपपन्नः । ततः खलु सा रेवती
देवी तस्मिन् तादृशे शयनीये स्वप्नदर्शनं यावद् उपरि प्रासादवरगतो विहरति ।

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ५ अध्या. १ निषध

४२९

निसदेणं कुमारेणं अयमेयाखा ओराला मणुयइह्मी लद्धा ३ । पभू णं भंते ! निसदे कुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वइत्तए ? इंता पभू । से एवं भंते ! २ इय वरदत्ते अणमारे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ २ ॥

तदेवं खलु वरदत्त ! निसधेन कुमारेण इयमेतद्रूपा उदारा मनुष्य-
ऋद्धिर्लब्धा ३ । प्रभुः खलु भदन्त ! निषधः कुमारो देवानुप्रियाणामन्तिके
यावत् प्रव्रजितुम् ? हन्त प्रभुः । स एवं भदन्त ! २ इति वरदत्तोऽनगारो
यावदात्मानं भावयन् विहरति ॥ २ ॥

टीका—

‘ तेणं कालेणं ’ इत्यादि । व्याख्या स्पष्टा ॥ २ ॥

‘ तेणं कालेणं ’ इत्यादि—

उस काल उस समयमें दस धनुष प्रमाण शरीरवाले धर्मके आदिकर अर्हत्
अरिष्टनेमि उस द्वारका नगरीमें पधारे । परिषद उनके दर्शन निमित्त अपने २
घरसे निकली । भगवानके आनेका समाचार सुनकर कृष्ण वासुदेवने हृष्टतुष्ट
हृदयसे कौटुम्बिकपुरुषोंको बुलवाया और इस प्रकारकी आज्ञा दी—

‘ तंणं कालेणं ’ इत्यादि.

ते काल ते समये दश धनुषना जेटलां प्रभाशु (भाप) ना शरीरवाणा
धर्मना आदिकर अर्हत् अरिष्टनेमी ते द्वारका नगरीमां पधार्थी. परिषद् तेमना
दर्शन निमित्ते पोतपोताने घेरथी नीकणी. भगवानना आव्याना समाचार सांलणी
कृष्णवासुदेवे हृष्ट तुष्ट हृदयथी कौटुम्बिक पुरुषोने ओलाव्या अने आ प्रकारे आज्ञा आपी.

હે દેવાનુપ્રિય ! શીઘ્ર હી જાકર સુધર્મા સભાકી સામુદાનિક મેરીકો બજાઓ ।
જિસ મેરીકે બજાયે જાનેપર જન સમુદાય એકત્રિત હો જાય, ઉસે સામુદાનિક મેરી
કહતે હૈં । વાસુદેવ કૃષ્ણકે દ્વારા હસ પ્રકાર આજ્ઞાપિત વે કૌટુંબિક પુરુષ ઉનકી
આજ્ઞાકો સ્વીકાર કર જહાં સામુદાનિક મેરી થી ઉધર ગયે ઓર વહાં જાકર સામુ-
દાનિક મેરીકો સ્વૂબ જોરસે બજાયા । ઉસકો અત્યધિક જોરસે બજાયે જાનેપર
સમુદ્રવિજય પ્રમુખ દસ દશાર્હસે લેકર યાવત્ રુક્મિણી આદિ દેવિયાં તથા
અનંગસેના પ્રમૃતિ અનેક સહસ્ર ગણિકાર્યે ઓર દૂસરે બહુતસે રાજા રૈશ્વર તલવર
માહમ્બિક કૌટુંબિક યાવત્ સાર્થવાહ આદિ સ્નાન ઓર દુઃસ્વપ્ન આદિકે નિવારણકે
લિયે મધી તિલક આદિ કરકે સમી અલક્ષારોસે અલક્ષૃત હો અપને ૨ વિમવકે
અનુસાર સત્કાર સામગ્રિયોકે સાથ ઘોડે આદિ સવારિયો પર બૈઠકર અપને ૨ અનુચર
પુરુષોકે સાથ જહાં કૃષ્ણ વાસુદેવ થે વહાં આયે । વહાં આકર હાથ જોડકર કૃષ્ણ
વાસુદેવકો જય વિજય શબ્દસે વધાયા । ઉસકે બાદ કૃષ્ણ વાસુદેવને અપને કૌટું-
બિક પુરુષોકો બુલાકર હસ પ્રકાર કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! આમિષેક્ય (પદ) હસ્તિ-

હે દેવાનુપ્રિય ! જલદી જધને સુધર્મા સભાની સામુદાનિક ભેરી (વાળુ)
વગાડો. જે ભેરીને વગાડવાથી જનસમુદાય એકત્રિત થઈ જાય તેને સામુદાનિક
ભેરી કહે છે. કૃષ્ણવાસુદેવ તરફથી આ પ્રકારે આજ્ઞા મળતાં તે કૌટુંબિક પુરુષ
તેમની આજ્ઞાનો સ્વીકાર કરી જ્યાં સામુદાનિક ભેરી હતી ત્યાં ગયા અને ત્યાં
જધને સામુદાનિક ભેરી ખૂબ જોરથી વગાડી. તે બહુ જોરથી વગાડવાથી સમુદ્ર-
વિજય પ્રમુખ દશ દશાર્હથી માંડીને રુક્મિણી આદિ દેવિઓ તથા અનંગસેના
આદિ અનેક સહસ્ર ગણિકાઓ તથા બીજા રાજા રૈશ્વર, તલવર, માહમ્બિક કૌટુંબિક
અને સાર્થવાહ આદિ સ્નાન તથા દુઃસ્વપ્નનાં નિવારણને માટે મસી
તિલક કરીને બધાં ઘરેણાંથી વિભૂષિત થઈને પોતપોતાના વૈભવ પ્રમાણે સત્કાર
સામગ્રીઓ લઈને ઘોડા વગેરે ઉપર સવારી કરીને પોતાના નોકર—ચાકર સાથે જ્યાં
કૃષ્ણવાસુદેવ હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને હાથ જોડી કૃષ્ણવાસુદેવને જયવિજય
શબ્દથી વધાવ્યા. ત્યાર પછી કૃષ્ણવાસુદેવે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવી આ

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ५ अध्या. १ निषध

४३१

रत्नको और अन्य हाथी घोड़े रथ आदिको सजाकर ले आओ। कृष्ण वासुदेवकी ऐसी आज्ञा सुनकर वे कौटुम्बिक पुरुष शीघ्र ही हाथी घोड़े रथ आदिको सजाकर ले आये। उसके बाद कृष्ण वासुदेव मज्जनगृहमें स्नान करनेके लिये गये, स्नान कर सभी अलङ्कारोंसे अलङ्कृत हो अपने आभिषेक्य हाथी पर चढ़े। और उन्हें शुभ शकुनके लिये आठ-आठ माङ्गलिक वस्तुएँ दिखायी गईं। इसके बाद वह कृष्ण वासुदेव कूणिकके समान डुलाए जाते हुए श्वेतचामरोंसे सुशोभित तथा समुद्र-विजय प्रमुख दस दशाहोंसे लेकर यावत् सार्थवाह प्रभृतियोंसे घिरे हुए तथा सभी प्रकारके विभवके साथ मेरी आदि बाजोंके शब्दोंसे दिशाको मुखरित करते हुए द्वारावती नगरीके बीचोबीच चलते हुए भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमिके पास पहुँचे। और कूणिकके समान तीनबार आदक्षिण प्रदक्षिण करके वन्दन नमस्कार किया और सेवा करने लगे।

उसके बाद वह निषध कुमारने अपने उपरी महलमें शब्दादिविषयोंका

प्रकारे कथुं:—हैं देवानुप्रिय ! आभिषेक्य (पट्ट) हाथीरत्नने तथा भीजा हाथी घोड़ा रथ आदि तैयार करी लध आये। कृष्णवासुदेवनी अेवी आज्ञा सांभलीने ते कौटुम्बिक पुरुष नलदी हाथी घोड़ा रथ आदिने तैयार करी लध आव्या। त्थार पछी कृष्णवासुदेव स्नानघरमां न्हावा गया। स्नान करी जधां धरेण्ण्णी विभूषित पोताना आभिषेक्य पट्ट हाथी उपर चढ्या। अने तेमने शुभ शुकन्ने माटे आठ आठ मांगलिक वस्तुओ देखाववामां आवी। त्थार पछी कृष्णवासुदेव कोण्डिकनी पेठे ठाणाध रहेतां श्वेत आमरेथी सुशोभित तथा समुद्रविजय प्रमुख दशदशार्द्धथी मांडीने यावत् सार्थवाह आदिथी घेरायेल तथा सर्वे प्रकारना वैभव साथे, बेरी वगेरे वाजना शब्दोथी दिशाओने मुखरित करता द्वारावती नगरीनी वन्ध्या-वन्ध्याथी आलता भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमीनी पास पहुँच्या अने त्रयुवार आदक्षिण प्रदक्षिण करीने वन्दन नमस्कार कर्था अने सेवा करवा लाग्या।

त्थार पछी ते निषध कुमारने पण पोताना जाया भइलमां शब्दादिविषयोना

સુસ્તાનુભવ કરતા હુણ મનુષ્યોને મહાન કોલાહલનો સુના । ઉસે જિજ્ઞાસા હુઈ કિ કયા વાત હૈ ? પૂછને પર ઉસે જ્ઞાત હુઆ કિ ભગવાન અર્હત અરિષ્ટનેમિ યહાં પધારે હૈ । જનતા ઉનકી વન્દનાકે લિયે જા રહી હૈ । સીલિયે યહ કોલાહલ હો રહા હૈ । યહ જાનકર જમાલિકે સમાન વહ મી ભગવાનકે દર્શનકે લિયે આયે, ઓર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરકે વન્દન નમસ્કાર કિયા । અનન્તર ધર્મ સુનકર ઉસે હૃદયસે અવધારણ કર વન્દન નમસ્કાર કર સિ પ્રકાર કહને લગા—હે ભદન્ત ! મૈં નિર્ગન્થ પ્રવચન પર શ્રદ્ધા કરતા હૂં । સિકે બાદ વહ ચિત્ત પ્રધાનકે સમાન યાવત શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર અપને ઘર છોટ આયા ।

ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં અર્હત અરિષ્ટનેમિકે અન્તેવાસી ઉદાર પ્રધાન ઓજસ્વી વરદત્ત નામકે અનગાર ધર્મધ્યાન કરતે હુણ એકાન્તમેં બૈઠે થે । ભગવાનકે સમીપ આયે હુણ નિષધ કુમારનો દેખકર ઉન્હેં શ્રદ્ધા જિજ્ઞાસા ઓર કૌતૂહલ ઉત્પન્ન હુઆ ઓર ઉન્હેને ભગવાનસે સિ પ્રકાર પૂછા—

સુખાનુભવ કરતા થકા મનુષ્યોનો મોટો કોલાહલ સાંભળ્યો. તેમને જિજ્ઞાસા થઈ કે શું વાત છે ? પૂછવાથી અગર પડી કે ભગવાન અર્હત અરિષ્ટનેમિ અહીં પધાર્યા છે અને જનતા તેમનાં વંદન-દર્શન માટે જાય છે. તેથી આ કોલાહલ થાય છે. આ જાણીને જમાલીની પેઠે તે પણ ભગવાનનાં દર્શન માટે આવ્યા અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરીને વંદન નમસ્કાર કર્યા પછી ધર્મનું શ્રવણ કરી તેને હૃદયમાં અવધારણ કરીને વંદન નમસ્કાર કરી આ પ્રકારે કહ્યું:—

હે ભદન્ત ! હું નિર્ગન્થ પ્રવચન ઉપર શ્રદ્ધા રાખું છું. ત્યાર પછી તે ચિત્ત પ્રધાનની પેઠે શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કરીને પોતાને ઘર પાટો આવ્યો.

તે કાળ તે સમયે અર્હત અરિષ્ટનેમિના અન્તેવાસી ઉદાર પ્રધાન ઓજસ્વી વરદત્ત નામે અનગાર ધર્મધ્યાન કરતા એકાન્તમાં બેઠા હતા. ભગવાનની પાસે આવેલા નિષધ કુમાર ને જોઈને તેને જિજ્ઞાસા અને કૌતૂહલ ઉત્પન્ન થયું. અને ભગવાનને આ પ્રમાણે પૂછ્યું:—હે ભદન્ત ! નિષધ કુમાર ઇષ્ટ છે. ઇષ્ટરૂપ છે,

સુન્દરબોધિની ટીકા ઘર્ગ ૫ અધ્ય. ૧ નિષધ

૪૩૩

હે ભદ્રન્ત ! વહ નિષધ કુમાર ઇષ્ટ છે, ઇષ્ટરૂપ છે, કાન્ત છે, કાન્તરૂપ છે । इसी तरह प्रिय है मनोज्ञ है मनोऽम (मन्त्रको अच्छा लगनेवाला) है, सोम है, सोमरूप है, प्रियदर्शन है, सुरूप है ।

હે ભદ્રન્ત ! इस निषध कुमारको इस प्रकारकी मनुष्य सम्बन्धी ऋद्धि कैसे मिली, कैसे प्राप्त हुई, और कैसे यह ऋद्धि इसके भोगमें आई ? इत्यादि — गौतमने सूर्याभकी देव ऋद्धिके बारेमें जिस प्रकार भगवानसे पूछा था उसी प्रकार—वरदत्तने पूछा ।

भगवान कहते हैं—

હે વરદત્ત । उस काल उस समयमें इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर भरत क्षेत्रमें रोहितक नामक नगर था , जो कि धन धान्यादि ऋद्धिसे समृद्ध था । उस नगरमें मेघवर्ण नामक उद्यान था । उस उद्यानमें मण्डित नामक यक्षका एक यक्षायतन था । उस रोहितक नगरका राजा महाबल था । उसकी रानीका नाम पद्मावती था ।

કાન્ત છે, કાન્તરૂપ છે. એવીજ રીતે પ્રિય છે, મનોજ્ઞ છે, મનોરમ છે. સોમ છે, સોમરૂપ છે. પ્રિયદર્શન છે, સુરૂપ છે.

હે ભદ્રન્ત ! આ નિષધ કુમાર ને આ પ્રકારની મનુષ્ય સંબંધી ઋદ્ધિ કેવી રીતે મળી, કેમ પ્રાપ્ત થઈ, અને કેવી રીતે તે ઋદ્ધિ તેમના ભોગમાં આવી ?

ગૌતમે સૂર્યાભની દેવઋદ્ધિ વિષે જેવી રીતે ભગવાનને પૂછ્યું હતું તેવી રીતે વરદત્તે પૂછ્યું :

ભગવાને કહ્યું:—હે વરદત્ત ! તે કાળ તે સમયે આ જમ્બૂદ્વીપ નામે દ્વીપની અંદર ભરતક્ષેત્રમાં રોહિતક નામે નગર હતું કે જે ધનધાન્ય ઋદ્ધિથી સમૃદ્ધ હતું. તે નગરમાં મેઘવર્ણ નામે ઉદ્યાન હતું. તે ઉદ્યાનમાં મણિદત્ત નામે યક્ષનું યક્ષાયતન હતું. તે રોહિતકના રાજા મહાબલ હતો. તેની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું.

एक समय सुकोमल शय्यापर सोयी हुई उस पद्मावती रानीने स्वप्नमें सिंहको देखा। अनन्तर उसके गर्भसे एक बालक उत्पन्न हुआ। उसका जन्म आदिका वर्णन महाबलके समान जानना चाहिये। उस बालकका नाम वीरङ्गत रखा गया। जब वह कुमार बड़ा हुआ तो उसका विवाह बत्तीस राजकन्याओंके साथ किया गया। और उसे बत्तीस-बत्तीस प्रकारका दहेज मिला।

उसके महलके उपरी भागमें सर्वदा मृदङ्ग आदि बाजे बजते रहते थे। तथा गायक उसके गुणोंको गाते रहते थे। वह वीरङ्गत वर्षा आदि छ ऋतु सम्बन्धी दृष्टशब्दादि विषयोंको अपने विभवानुसार भोगता हुआ विचरता था।

उस काल उस समयमें केशी श्रमणके समान जातिमन्त तथा बहुश्रुत और बहुत शिष्यपरिवारसे युक्त सिद्धार्थ नामक आचार्य रोहितक नगरके मेघवर्ण उद्यानके अन्दर मणिभद्र यक्षायतनमें पधारे। और उद्यानपालसे आज्ञा लेकर वहाँ विचरने लगे। परिषद् उन आचार्यवरके दर्शनके लिये अपने-अपने घरसे निकली,

एक समय सुकोमल शय्या उपर सूतेदी ते पद्मावती राणीने स्वप्नमां सिंहने जेयो। पछी तेना गर्भथी महाबल ना जेवो। एक भाणक उत्पन्न थयो। तेना जन्म आदिनु वर्णन महाबलना जेवुं समजवुं। तेनु नाम वीरङ्गत राख्युं हुतुं। ज्यारे ते कुमार भोटो थयो। त्यारे तेनां लग्न भत्रीस राजकन्याओंनी साथे करवामां आल्यां अने तेने भत्रीस-भत्रीस दहेज भज्या।

तेना भहेलना उपला भाणमां हुमेशां मृदङ्ग आदि वाजां वागतां रडेतां हुतां तथा गायक तेना गुणानां गान कर्था करता हुता। ते वीरङ्गत वर्षा आदि छ ऋतु सम्बन्धी दृष्ट शब्दादि विषयाने पोताना वैभव प्रमाणे लोगवतो विचरतो हुतो।

ते काल ते समये केशी श्रमणना जेवा जलपान तथा बहुश्रुत अने बहु शिष्य परिवारवाणा सिद्धार्थ नामे आचार्य रोहितक नगरना मेघवर्ण उद्याननी अंदर मणिभद्र यक्षायतनमां पधार्या। अने उद्यानपालनी आज्ञा लधने त्यां विचरवा लाज्या। परिषद् ते आचार्यवरनां दर्शन भाटे पोतपोताना घेरथी नीकणी। त्यार

સુન્દરબોધિની ટોકા વર્ગ ૫ અધ્ય. ૧ નિષ્પત્ત

૪૩૫

उसके बाद वह वीरङ्गत कुमारने सिद्धार्थ आचार्यके दर्शन करनेके लिये जाते हुए मनुष्योंके महान कोलाहलको सुना । अनन्तर उसने कोलाहलके कारणका अन्वेषण किया उसे ज्ञात हुआ कि सिद्धार्थ आचार्य यहाँ पधारे हुए हैं, जनता उनके दर्शनके लिये जा रही है, उसीका यह कोलाहल है । यह जानकर वीरङ्गत कुमार जमालिके समान उन आचार्यके दर्शन करनेके लिये गया । धर्म सुनकर उसने उन सिद्धार्थ आचार्यको वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार कहा—

हे देवानुप्रिय ! मैं माता पितासे पूछकर आपके समीप प्रव्रज्या लेना चाहता हूँ । उसके बाद वह वीरङ्गत कुमार जमालिके समान प्रव्रजित होकर अनगार हो गया, और ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारी हो गया । उसके बाद वह वीरङ्गत अनगारने उन सिद्धार्थ आचार्यके समीप सामायिक आदि ग्यारह अंगोका अध्ययन किया अनन्तर बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम आदि तपसे आत्माको आवित करते हुए पूरे पैंतालीस वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन किया । बाद दो

પછી તે ચીરંગત કુમારે પણ સિદ્ધાર્થ આચાર્યનાં દર્શન કરવા માટે જતાં મનુષ્યોનો મહાન કોલાહલ સાંભળ્યો. પછી તેણે તે કોલાહલનું કારણ સમજવા તપાસ કરાવી તો તેને માલુમ પડ્યું કે સિદ્ધાર્થ આચાર્ય અહીં પધાર્યા છે. જનતા તેનાં દર્શન માટે જઈ રહી છે. તેનો આ કોલાહલ છે. આ જાણીને ચીરંગત કુમાર જમાલીની પેઠે આચાર્યનાં દર્શન કરવા માટે ગયા. ધર્મનું શ્રવણ કરીને તેણે તે સિદ્ધાર્થ આચાર્યને વંદન નમસ્કાર કરી આ પ્રકારે કહ્યું:—

હે દેવાનુપ્રિય ! હું મારાં માતાપિતાને પૂછીને આપની પાસે પ્રવ્રજ્યા લેવા આહું છું. ત્યાર પછી તે ચીરંગત કુમાર જમાલીની પેઠે પ્રવ્રજિત થઈ અનગાર થઈ ગયા અને ઈર્યાસમિતિ આદિથી યુક્ત થઈ યાવત્ ગુપ્તબ્રહ્મચારી બની ગયા. ત્યાર પછી તે અનગારે તે સિદ્ધાર્થ આચાર્યની પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું. પછી ઘણાં ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ આદિ તપોથી આત્માને આવિત કરતાં પૂરાં પીસતાલીસ વર્ષ સુધી દીક્ષા પર્યાયનું પાલન કર્યું. પછી બે

૪૩૬

૫ કૃષ્ણદશાસ્ત્ર

માસકો સંલેખનાસે આત્માકો સેવિત કરતે હુણે એક સૌ બીસ ભક્તોકો અનશનસે છેદિત કર અપને પાપ સ્થાનોકી આલોચના ઓર પ્રતિક્રમણ કર સમાધિ પ્રાપ્ત હૌ કાલ અવસરમે કાલ કર બ્રહ્મ નામક પાંચવેં દેવલોકકે મનોરમ વિમાનમેં દેવતા હોકર ઉત્પન્ન હુણે । વહૌ કઈ એક દેવોકી સ્થિતિ દસ સાગરોપમ હૈ, વહૌ ઈસે વીરજ્ઞત દેવકી ભી સ્થિતિ દશ સાગરોપમ થી । વહ વીરજ્ઞત દેવ દેવસમ્બન્ધી આયુ ભવ ઓર સ્થિતિકે ક્ષય હોનેપર ઈસ બ્રહ્મલોકસે ચ્યવકર ઈસ દ્વારાવતી નગરીમેં રાજા બલદેવકી પત્ની રેવતીકે ઉદરમેં પુત્ર હોકર જન્મે । ઈસ રેવતી દેવીને સ્વપ્નમેં સિંહ દેસા । ઓર ઈસકે બાદ યહ નિષધ કુમાર ઉત્પન્ન હુણે યાવત્ શબ્દાદિ વિષયોકા અનુભવ કરતે હુણે અપને ઊપરી મહલમેં બિચર રહે હૈ । હે વરદત્ત ! ઈસ પ્રકાર ઈસ નિષધ કુમારને ઈસ પ્રકારકી ઉદાર મનુષ્યકૃદ્ધિ પાચી હૈ ।

વરદત્ત પૂછતે હૈ—

હે ભદ્રન્ત ! કયા યહ નિષધ કુમાર આપકે સમીપ પ્રવ્રજિત હોગા ?

માસની સંલેખનાથી આત્માને સેવિત કરતાં એકસો વીસ ભક્તોનું અનશનથી છેદન કરી પોતાનાં પાપસ્થાનોની આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિ પ્રાપ્ત થતાં કાળ અવસરમાં કાળ કરીને બ્રહ્માનામક પાંચમા દેવલોકના મનોરમ વિમાનમાં દેવતા થઈને ઉત્પન્ન થયા. ત્યાં કેટલાક દેવોની સ્થિતિ દશ સાગરોપમની છે. ત્યાં વીરંગતદેવ ની પણ સ્થિતિ દશ સાગરોપમની હતી. તે વીરંગતદેવ દેવ સંબંધી આયુષ્ય ભવ અને સ્થિતિ ક્ષય થવાથી તે બ્રહ્મલોકમાંથી ચ્યવીને આ દ્વારાવતી નગરીમાં રાજા બલદેવની પત્ની રેવતીના ઉદરમાં પુત્ર થઈને જન્મ્યા. તે રેવતી દેવીએ સ્વપ્નમાં સિંહને દીઠો અને ત્યાર પછી આ નિષધકુમાર ઉત્પન્ન થયા. અને યાવત્ શબ્દાદિ વિષયોનો અનુભવ કરતાં તે પોતાના મહેલના ઉપરે માળે રહેવા લાગ્યા. હે વરદત્ત ! આ પ્રકારે આ નિષધકુમાર ને આવા પ્રકારની ઉદાર મનુષ્યકૃદ્ધિ મળેલી છે.

વરદત્ત પૂછે છે:—

હે ભદ્રન્ત ! આ નિષધકુમાર આપની પાસે પ્રવ્રજિત થવામાં સમર્થ છે ?

કુવરબોધિની ટોકા વર્ગ ૫ અધ્ય. ૧ નિષધ

૪૩૭

મૂલમ્—

તણં અરહા અરિદ્ધનેમી અણયા કયાઈ ચારવઈઓ નયરીઓ જાવ
બહિયા જળવયવિહારં વિહરઈ । નિસઢે કુમારે સમણોવાસણ જાઈ અમિગથ-
જીવાજીવે જાવ વિહરઈ । તણં સે નિસઢે કુમારે અણયા કયાઈ જેણેવ પોસહસાલા
તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિતા જાવ દબ્બસંથારોવગણ વિહરઈ । તણં
નિસઢસ્સ કુમારસ્સ પુવ્વરત્તાવરત્તં ધમ્મજાગરિયં જાગરમાણસ્સ ઇમેયારૂથે

છાયા—

તતઃ સ્વલ્પ અર્હન્ અરિદ્ધનેમિરન્યદા કદાચિત્ દ્વારાવત્યા નગર્યા
યાવત્ બહિર્જનપદવિહારં વિહરતિ । નિષધઃ કુમારઃ શ્રમણોપાસકો જાતઃ
અમિગતજીવાજીવો યાવદ્ વિહરતિ । તતઃ સ્વલ્પ સં નિષધઃ કુમારઃ
અન્યદા કદાચિત્ યત્રૈવ પોષધશાલા તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય યાવદ્ દર્મ-
સંસ્તારોપગતો વિરહતિ । તતઃ સ્વલ્પ તસ્ય નિષધસ્ય કુમારસ્ય પૂર્વરાત્રાપર-

ભગવાન કહતે હૈં—

હૈં; વરદત્ત ! યહ નિષધ કુમાર અનગાર બન સકેગા ।

વરદત્ત કહતે હૈં—

હે ભદ્રન્ત ! આપ જો કહતે હૈં વહ સત્ય હી હૈ; એસા કહકર વરદત્ત
અનગાર આત્માકો તપ સંયમસે ભાવિત કરતે હુણ વિચરને છો ॥ ૨ ॥

ભગવાન કહે છે:—

હે વરદત્ત ! હા, આ નિષધકુમાર અનગાર બનવામાં સમર્થ છે.

વરદત્ત કહે છે:—

હે ભદ્રન્ત ! આપ કહેા છો તેમજ છે. એમ કહીને વરદત્ત અનગાર
આત્માને તપ-સંયમ વડે ભાવિત કરતાં વિચરવા લાગ્યા. (૨).

अञ्जत्थिणं० धन्ना णं ते गामागर जाव संनिवेसा जत्थणं अरहा अरिष्टनेमी विहरइ । धन्ना णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभईओ जे णं अरिष्टनेमि वंदंति नमंसंति जाव पज्जुवासंति, जइ णं अरहा अरिष्टनेमी पुव्वाणुपुव्वि० नंदणवणे विहरेज्जा तोणं अहं अरहं अरिष्टनेमि वंदिज्जा जाव पज्जुवासिज्जा । तएणं अरहा अरिष्टनेमी निसदस्स कुमारस्स अयमेयारूवं अञ्जत्थियं जाव वियाणित्ता अट्टारसहिं समणसहस्सेहिं जाव नंदणवणे उज्जाणे समोसडे । परिसा निग्गया । तएणं निसडे कुमारे इमीसे कहाए लद्धे समाने हट्ठ० चाउग्घटेणं आसरहेणं निग्गए, जहा जमाली, जाव अम्मापियरो आपुच्छित्ता पव्वइए, अणगारे जाते जाव गुत्तवंभयारी । तए णं से निसडे अणगारे अरहतो अरिष्टनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहूइं चउत्थच्छट्ठ जाव विचित्तेहिं तत्रोक्कमेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं नव वासाइं सामणपरियागं पाउणइ, बायालीसं

रात्रकाले धर्मजागरिकां जाग्रतोऽयमेतद्रूप आध्यात्मिकः०—धन्याः खलु ते ग्रामागर यावत् सन्निवेशाः, यत्र खलु अहंन् अरिष्टनेमिर्विहरति, धन्याः खलु ते राजेश्वर यावत् सार्थवाहप्रभृतिकाः, ये खलु अरिष्टनेमिं वन्दन्ते नमस्यन्ति यावत्० पर्थुपासते, यदि खलु अहंन् अरिष्टनेमिः पूर्वानुपूर्वी० नन्दनवने विहरेत् तर्हि खलु अहमर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्देय नमस्येयं यावत् पर्थुपासीय । ततः खलु अहंन् अरिष्टनेमिः निषधस्य कुमारस्य इममेतद्रूप-माध्यात्मिकं यावद् विज्ञाय अष्टादशमिः श्रमणसहस्रैः यावद् नन्दनवने उद्याने समवसृतः, परिषद् निर्गता । ततः खलु निषधः कुमारः अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् हट्ठ० चातुर्थ्येण अश्वरथेन यावद् निर्गतः, यथा जमालिः, यावद् अम्बापितरौ आपृच्छथ प्रव्रजितः, अनगारो जातो यावद् गुप्तब्रह्मचारी । ततः खलु स निषधोऽनगारः अर्हतोऽरिष्टनेमेस्तथारूपाणां स्वविराणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहूनि

सुन्दरबोधिनो टोका वर्ग ५ अध्या. १ निषध

४३९

भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, आलोइयपडिक्कंते सामाहिपत्ते अणुपुव्वीए कालगए । तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं अणगारं कालगतं जाणित्ता जेणेव अरहा अरिहनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभइए जाव विणीए, से णं भंते ! निसढे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववक्खे ? वरदत्ताइ ! अरहा अरिहनेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी-एवं खलु वरदत्ता । ममं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभइ जाव विणीए ममं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहु-पडिपुण्णाइं नववासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते सामाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उहुं चंदिमसू-रियगहनकखत्ततारारूवाणं सोहम्मीसाणं जाव अच्चुते तिण्णि य अट्टारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीतिवत्तिता सव्वट्ठसिद्धविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।

चतुर्थ षष्ठ यावद् विचित्रैः तपःकर्ममिरात्मानं भावयन् बहुप्रतिपूर्णानि नव वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, चत्वारिंशद् भक्तानि अनशनेन छिनत्ति, आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः आनुपूर्व्यां कालगतः । ततः खलु स वरदत्तोऽनगारो निषधमनगारं कालगतं ज्ञात्वा यत्रैव अर्हन् अरिहनेमिस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावद् एवमवादीत्-एवं खलु देवानुप्रियाणामन्तेवासी निषधो नाम अनगारः प्रकृतिभद्रको यावद् विनीतः । स खलु भदन्त ! निषधोऽनगारः कालमासे कालं कृत्वा क्व गतः ? क्व उपपन्नः ? वरदत्त ! इति अर्हन् अरिहनेमिः वरदत्तमनगारमेवमादीत्-एवं खलु वरदत्त ! ममान्तेवासी निषधो नाम अनगारः प्रकृतिभद्रो यावद् विनीतो मम तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीत्य बहुप्रतिपूर्णानि नव वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा द्विचत्वारिंशद् भक्तानि अनशनेन छित्त्वा आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे कालं कृत्वा ऊर्ध्वं

तत्थ णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमा ठिई पणत्ता । तत्थ णं
 निसदस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । से णं
 भंते ! निसदे देवे ताओ देवलोगाओ आउवखएणं भवक्खएणं ठिइवखएणं
 अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? वरदत्ता !
 इहेव जंबूद्वीवे दीवे महाविदेहे वासे उन्नाए नयरे विसुद्धपिट्ठवंसे रायकुले
 पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । तएणं से उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमिस्से जोव्व-
 णगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलबोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झित्ता अगा-
 राओ अणगारियं पव्वज्जिहिइ । से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ इरिया-
 समिए जाव गुत्तवंभयारी । से णं तत्थ बहूइं चउत्थछट्टट्टमदसमदुवालसेहिं
 मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं
 सामण्णपरियागं पाउणिस्सइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं
 भूसिहिइ, भूमित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदिहिइ । जस्सट्ठाए कीरइ णगभावे
 मुंडभावे अण्हाणए जाव अदंतवणए अज्जत्तए अणोवाहणए फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा

चन्द्र-सूर्य-ग्रह-नक्षत्र-तारारूपाणां सौधर्मेक्षान० यावद् अच्युतं त्रीणि च
 अष्टादशोत्तराणि ग्रैवेयकविमानावासशतानि व्यतिवर्त्य सर्वार्थसिद्धविमाने
 देवत्वेनोपपन्नः । तत्र खलु देवानां त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता ।
 तत्र खलु निषधस्यापि देवस्य त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता ।
 स खलु भदन्त ! निषधो देवस्तस्माद् देवलोकाद् आयुःक्षयेण भवक्षयेण
 स्थितिक्षयेण अनन्तरं चयं च्युत्वा क्व गमिष्यति ? क्व उपपत्स्यते ? वरदत्त !
 इहेव जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे उन्नाते नगरे विशुद्धपिट्ठवंशे राजकुले
 पुत्रतया प्रत्यायास्यति । ततः खलु स उन्मुक्तबालभावः विज्ञातपरिणत-
 मात्रः यौवनकमनुप्राप्तः तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके केवलबोधिं बुद्ध्वा
 अगाराद् अनगारतां प्रव्रजिष्यति । स खलु तत्राऽनगारो भविष्यति, ईर्या-
 समितो यावद् गुप्तब्रह्मचारी । स खलु तत्र बहूनि चतुर्थषष्ठाष्टमदशमद्वादशे
 र्मासार्द्धमासक्षपणैः विचित्रैः तपःकर्मभिरात्मानं भावयन् बहूनि वर्षाणि

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ५ अध्या. १ निषध

४४१

केशलो ए बभचेरवासे परधरपवसे पिडवाओ लद्धाविलद्धे उच्चावया य
गामकटया अहियासिज्जइ, तमट्ठं आराहिइ, आराहिता, चरिमेहि उस्सासनि-
स्सासेहि सिज्जिहिइ बुज्जिहिइ जाव सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ । एवं
खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं जाव निक्खेवओ ॥३॥

पहमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

श्रामण्यपर्यायं पालयिष्यति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया आत्मानं
जोषयिष्यति, जोषयित्वा षष्टि भक्तानि अनशनेन छेत्स्यति । यस्यार्थं
क्रियते नग्नभावो, मुण्डभावः, अस्नानको, यावद् अदन्तवर्णकः, अच्छत्रकः,
अनुपानत्कः, फलकशय्या, काष्ठशय्या, केशलोचो, ब्रह्मचर्यवासः, परगृहप्रवेशः,
पिण्डपातः, लब्धापलब्धः, उच्चावचाश्च ग्रामकण्टका अध्यास्यन्ते, तमर्थमारा-
धयिष्यति, आराध्य चरमैरुच्छवास-निःश्वासैः सेत्स्यति, भोत्स्यते, यावत्
सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति । एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता महा-
वीरेण यावत्संप्राप्तेन यावत् निक्षेपकः ॥ ३ ॥

॥ प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥ १ ॥

टीका—

‘तएणं अरहा’ इत्यादि । यस्यार्थं=यन्मोक्षप्राप्त्यर्थं क्रियते नग्न-

‘तएणं अरहा’ इत्यादि—

उसके बाद अर्हत् अरिष्टनेमि एक समय द्वारावती नगरीसे निकलकर जन-
पद=देशमें विहार करने लगे । निषधकुमार श्रमणोपासक हो गये और वह जीव

‘तएणं अरहा’ इत्यादि.

त्यार पछी अर्हत् अरिष्टनेमि ओक समय द्वारावती नगरीसे निकलीने
देशमें विहारवा लाग्या. निषधकुमार श्रमणोपासक भए गया अने ते छव

અજીવ આદિ તત્ત્વોનો જાનકર વિચરને લો । ઉસકે બાદ વહ નિષધકુમાર પ્રક્ર સમય જહાં પોષધશાલા થી વહાં ગયે ઓર વહાં દામકા આસનપર બેઠકર ધર્મધ્યાન કરતે હુપ વિચરને લો । ઉસકે બાદ રાત્રિકે અન્તિમ પ્રહરમેં ધર્મ જાગરણા કરતે હુપ ઉસ નિષધકુમાર કે હૃદયમેં હસ પ્રકારકા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ કિ વહ ગ્રામ યાવત્ સન્નિવેશ ધન્ય હૈ જહાં અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ ભગવાન વિચરતે હૈં ! વે રાજા ર્શ્વર તલવર માહમ્બિક કૌટુમ્બિક યાવત્ સાર્થવાહ પ્રમૃતિ ધન્ય હૈં જો ભગવાનનો વન્દન નમસ્કાર કરતે હૈં ઓર સેવા કરતે હૈં ।

યદિ અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ ભગવાન પૂર્વાનુર્વી વિચરતે હુપ નન્દન વનમેં પધારેં તો મૈં મી ભગવાનનો વન્દન નમસ્કાર કરૂં ઓર ઉનકી સેવા કરૂં । ઉસકે બાદ ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ ઉસ નિષધકુમાર કે હસ પ્રકારકા આધ્યાત્મિક=અન્ત:- કરણકા વિચાર જાનકર, અઠારહ હજાર શ્રમણોકે સાથ ઉસ નન્દનવન ઉદ્યાનમેં પધારે । ભગવાનકે દર્શનકે લિપે પરિષદ્ અપને ૨ ઘરસે નિકલી । ઉસકે બાદ

અજીવ આદિ તત્ત્વોને જાણીને વિચરવા લાગ્યા. ત્યાર પછી તે નિષધકુમાર એક વખત જ્યાં પોષધશાળા હતી ત્યાં ગયા અને ત્યાં દામનો સંસ્તારક (આસન) બિછાવી તેના પર બેસી ધર્મધ્યાન કરતા વિચરવા લાગ્યા. ત્યાર પછી પાછલી રાત્રિએ ધર્મ-જાગરણ કરતાં તે નિષધકુમાર ના મનમાં એવો વિચાર પેદા થયો કે તે ગ્રામ સન્નિવેશ આદિ ધન્ય છે કે જ્યાં અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ ભગવાન વિચરે છે. તે રાજા ર્શ્વર, તલવર, માહમ્બિક, કૌટુમ્બિક યાવત્ સાર્થવાહ આદિ ધન્ય છે જે ભગવાનને વંદન નમસ્કાર કરે છે.

જો અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ ભગવાન પૂર્વાનુર્વી વિચરતાં નન્દનવનમાં પધારે તો હું પણ ભગવાનને વંદન નમસ્કાર કરું અને તેમની સેવા કરું. ત્યાર પછી ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ તે નિષધકુમાર ના આ પ્રકારના આધ્યાત્મિક=અન્ત:- કરણના વિચાર આદિ જાણીને અઠાર હજાર શ્રમણોની સાથે તે નન્દનવન ઉદ્યાનમાં પધાર્યા. ભગવાનનાં દર્શન કરવા માટે પરિષદ્ પોતપોતાને ઘેરથી નીકળી. ત્યાર

सुन्दरबोधिनी टीका वर्ग ५ अध्या. १ निषध

४७३

निषधकुमार भी इस वृत्तान्तको जानकर दृष्ट तुष्ट हृदयसे चार घंटावाला अश्वरथपर चढ़कर भगवानका दर्शनके लिये निकले, और जमालिके समान यावत् माता पिताकी आज्ञासे प्रव्रजित होकर अनगार हो गये। तथा ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हो गये। उसके बाद वह निषध अनगार अर्हत् अरिष्टनेमि भगवानके तथारूप स्थविरोंके समीप सामायिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन किया तथा बहुतेरे चतुर्थ प्रष्ट अष्टम आदि विचित्र तपसे आत्माको भावित करते हुए पूरे नौ वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन किया। बयालीस भक्तोंको अनशनसे छेदनकर पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमण कर समाधि प्राप्त हो, क्रमसे काल प्राप्त हुए। उसके बाद निषध अनगारको कालगत जानकर वरदत्त अनगार जहाँ अर्हत् अरिष्टनेमि थे वहाँ आये और वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार पूछे—हे भदन्त ! आपके अन्तेवासी निषध अनगार प्रकृतिभद्रक और यावत् विनीत थे, सो हे भदन्त ! वह निषध अनगार काल अवसरमें कालकर कहाँ गये और कहाँ

पछी निषधकुमार पशु आ वृत्तान्तने ज्ञाष्टीने दृष्ट तुष्ट हृदयथी चार घंटावाला अश्वरथ उपर चढ़ीने भगवानना दर्शन करवा नीकल्या अने जभादीनी पेठे मातापितानी आज्ञाथी प्रव्रजित थधने अनगार थध गया तथा ईर्यासमिति आदिथी युक्त थध शुभप्रव्रज्यारी अनी गया। त्यार पछी ते निषध अनगारे अर्हत् अरिष्टनेमि भगवानना तथाइय स्थविरांनी पासे सामायिक आदि अगीयार अंगोनु अध्ययन कर्तुं तथा धष्टां चतुर्थ, प्रष्ट, अष्टम आदि विचित्र तप वडे आत्माने भावित करतां पूरां नव वर्ष सुधी दीक्षा पर्यायनु पालन कर्तुं। जेतादीस भक्तोनु अनशनथी छेदन करी पापस्थानोनी आलोचना तथा प्रतिक्रमण करी समाधि प्राप्त थतां आनुपूर्वीथी कालगत थया। त्यार पछी निषध अनगारने कालगत थयेदा ज्ञाष्टीने वरदत्त अनगार ज्थां अर्हत् अरिष्टनेमि हता त्यां आव्या अने वंदन नमस्कार करी आ प्रकारे पूछ्युं:—हे भदन्त ! आपना अन्तेवासी निषध अनगार प्रकृतिभद्रक अने बहुत विनीत हता। माटे हे भदन्त ! ते निषध अनगार काल अवसरमां काल करीने क्थां गया अने क्थां

૫૬૬

૫. વૃક્ષિયાના વચ્ચે

ઉત્પન્ન હુય ? વરદત્ત અનગારકા ઇસ પ્રકાર વચન સુનકર ભગવાને અને કહ્યું—

હે વરદત્ત ! મેરા અન્તેવાસી પ્રકૃતિભદ્રક યાવત્ વિનીત નિષધ અનગાર મેરે તથારૂપ સ્થવિરોકે સમીપ સામાયિક આદિ ગ્યારહ અંગોકા અધ્યયનકર પૂરે નૌ વર્ષોં તક શ્રામણ્યપર્યાયકા પાલનકર બચાલીસ ભક્તોકા અનશનસે છેદનકર પાપ-સ્થાનોંકી આલોચના ઔર પ્રતિક્રમણકર સમાધિ પ્રાપ્ત હો કાલ અવસરમેં કાલકર ચન્દ્ર સૂર્ય ગ્રહ નક્ષત્ર તારા આદિસે ઉપર સૌધર્મ ઈશાન આદિ યાવત્ અચ્યુત દેવ-લોકોકો ઉલ્લંઘન કર તોનસૌ અઠારહ ઐવેયક વિમાનાવાસકો મો ઉલ્લંઘન કરતા હુઆ સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમેં દેવતા હોકર ઉત્પન્ન હુઆ । વહૌં દેવતાઓંકી સ્થિતિ તેંતીસ સાગરોપમ હૈ । ડસી પ્રકાર નિષધ દેવકી મો તેંતીસ સાગરોપમ સ્થિતિ હૈ ।

વરદત્ત પૂછતે હૈ—

હે મદન્ત ! વહ નિષધ દેવ ડસ દેવલોકસે દેવ સમ્બન્ધી આયુ મવ ઔર સ્થિતિ ક્ષયકે વાદ ચ્યવકર કહૌં જાયૈંગે ઔર કહૌં ઉત્પન્ન હોંગે ?

જન્મશે ? વરદત્ત અનગારનાં આ પ્રકારનાં વચન સાંભળીને ભગવાને તેને કહ્યું:—

હે વરદત્ત ! મારા પ્રકૃતિભદ્રક અન્તેવાસી અને વિનીત એવા નિષધ અનગાર મારા તથારૂપ સ્થવિરોની પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કરી પૂરાં નવ વરસ સુખી દીક્ષા પર્યાયનું પાલન કરીને અનશન વડે એતાલીસ ભક્તોનું છેદન કરી પોતાનાં પાપસ્થાનની આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરીને સમાધિ પ્રાપ્ત થતાં કાળ અવસરમાં કાળ કરીને ચન્દ્ર, સૂર્ય, શુક્ર, નક્ષત્ર, તારા, આદિથી ઉપર સૌધર્મ ઇશાન આદિ યાવત્ અચ્યુત દેવલોકનું ઉલ્લંઘન કરી ત્રણસો અઠાર ઐવેયક વિમાનાવાસનું પણ ઉલ્લંઘન કરતાં સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાં દેવતાપણ્યામાં ઉત્પન્ન થયા. ત્યાં દેવતાઓની સ્થિતિ તેત્રીસ સાગરોપમ છે. એવીજ રીતે નિષધ દેવની પણ તેત્રીસ સાગરોપમ સ્થિતિ છે.

વરદત્ત પૂછે છે:—

હે ભદન્ત ! તે નિષધદેવ તે લોકમાંથી દેવ સમ્બન્ધી આયુભાવ અને સ્થિતિ ક્ષય પ્રધી અવીને કયાં જશે અને કયાં ઉત્પન્ન થશે ?

अष्टावक्रोक्तिनी टीका वर्ग ५ अध्या. १ निषध

७५५

भावः=अचेलत्वं परिमितवस्त्रधारित्वमित्यर्थः, मुण्डभावः=वीक्षितत्वम् । अस्नानकः=देशसर्वस्नानवर्जितः स्वात्मेति शेषः, अदन्तवर्णकः=दन्तवर्णो-दन्ताना-

भगवान् कहते हैं—

हे वरदत्त ! यह निषध देव इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमें विशुद्ध पितृवंशवाले राजकुलमें पुत्ररूपसे उत्पन्न होगा । उसके बाद बाल्यकाल बीतनेपर, सुप्त दसो अंगोंके जागनेपर वह युवावस्था को प्राप्त होगा, और तथारूप स्थविरोके समीप शुद्ध सम्यक्त्वको प्राप्तकर अगारसे अनगार होगा । वह अनगार वहाँ ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारी होगा । वह वहाँ बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम दशम द्वादश मासार्द्ध मास क्षणरूप विचित्रतपसे आत्माको भावित करता हुआ बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन करेगा । बादमें मासिकी संलेखनासे आत्माको सेवित कर साठ भक्तोंको अनशनसे छेदित करेगा । जिस मोक्ष प्राप्तिके लिये अनगार, नग्नत्व=परिमितवस्त्रधारित्व मुण्डभाव=द्रव्य भावसे मुण्डत्व, अस्नानक=देशतः और सर्गतः स्नान वर्जन,

भगवान् कहे छेः—

हे वरदत्त ! आ निषधदेव आज जम्बूद्वीप नामे द्वीपनी अंदर महाविदेह क्षेत्रना उन्नात नगरमां विशुद्ध पितृवंशवाला राजकुलमां पुत्ररूपे जन्मशे. त्थार पछी आव्यकाण वीती गया पछी सुतेला दशेय अंगोनी जगृत्ति थतां ते युवावस्थाने प्राप्त थशे. अने तथारूप स्थविरो पासो शुद्ध सम्यक्त्वने प्राप्त करी अगारमांथी अनगार थशे. ते अनगार त्यां ईर्यासमिति आदिथी युक्त थध यावत् गुप्तब्रह्मचारी थशे. ते त्यां ध्यां चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, मासार्द्ध, मास, क्षणरूप विचित्र तपथी—आत्माने भावित करतां ध्यां वर्ष सुधी दीक्षापर्यायानु पालन करशे. पछी मासिकी संलेखनाथी आत्माने सेवित करी अनशनथी साठ भक्तोनु छेदन करशे जे मोक्षप्राप्ति माटे अनगार नग्नत्व=परिमित वस्त्रधारित्व; मुण्डभाव=द्रव्य भावथी मुण्डत्व, अस्नानक=देशतः अने सर्गतः स्नान

મુજ્જ્વલીકરણં સ એવ દન્તવર્ણકઃ, અશુલિદન્તશાણકાષ્ઠાદિમિર્દન્તઘર્ષણં, ન દન્તવર્ણકોઽદન્તવર્ણકઃ=દન્તોઞ્જ્વલીકરણવ્યાપારરાહિત્યમ્ । અચ્છત્રકઃ=છત્ર-રહિતઃ । અનુપાનત્કઃ=પાદત્રાણરહિતઃ, ઉપલક્ષણમેતત્-શકટશિબિકાતુરગાદિ-વાહનાનામપિ, ફલકશય્યા=ફલકં=પ્રતલમાયતકાષ્ઠં તદ્રૂપા શય્યા (પાટા) इति भाषायाम् । કાષ્ઠશય્યા=કાષ્ઠં સ્થૂલમાયતમેવ તદ્રૂપા શય્યા, કેશલોચઃ=સ્વપરહસ્તેન કેશોત્પાટનમ્ । બ્રહ્મચર્યવાસઃ-બ્રહ્મચર્યે=વિષયસુખત્યાગે વસનં બ્રહ્મચર્યવાસઃ । પરગૃહપ્રવેશઃ=મિક્ષાદ્યર્થમન્યગૃહપ્રવેશઃ । પિન્ડપાતઃ=મિક્ષા-

અદન્તવર્ણક=અશુલિ દાંતને આદિસે દાંતોનો સ્વચ્છ ન કરના ઓર મિસી આદિસે દાંતનો ન રંગના, અચ્છત્ર=રજોહરણ આદિકા મી છત્ર ધારણ નહીં કરના, અનુપાનત્ક=પગરખી તથા મોજે આદિકો નહીં પહિનના, એવં ગાડી શિબિકા ઓર ઘોડા આદિકી સવારી નહીં કરના, ફલકશય્યા=કાષ્ઠ આદિકે પાટપર સોના, કાષ્ઠશય્યા=કાષ્ઠપર સોના, કેશલોચ=અપને યા દૂસરે સાધુઓંકે હાથસે કેશોંકા ડુંચન કરના-કરાના । બ્રહ્મચર્યવાસ=વિષય સુખ પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્યમેં સ્થિર હોના, પરગૃહપ્રવેશ=મિક્ષાકે લિપે ગૃહસ્થોંકે ઘરમેં જાના, પિન્ડપાત=મિક્ષાપ્રહણ, લઙ્ઘાપલઙ્ઘ

વર્ણન (ન નહાવું), અદન્તવર્ણક=અશુલિ દન્તશાણ=કાષ્ઠ (લાકડું) આદિથી દાંતોને સ્વચ્છ ન કરવા તથા મીશી આદિથી દાંતને ન રંગવા. અચ્છત્ર=રજોહરણ આદિનું પણ છત્ર ધારણ ન કરવું, અનુપાનત્ક=પગરખાં અને મોજાં આદિ પગમાં ન પહેરવાં, વળી ગાડી પાણખી અને ઘોડા આદિની સવારી ન કરવી, ફલકશય્યા=લાકડાની (કાષ્ઠની બનાવેલી) પાટ ઉપર સુવું, કાષ્ઠશય્યા=લાકડા પર સુવું. કેશલોચ=પોતાના કે બીજા સાધુઓના હાથથી કેશોનું ડુંચન કરવું-કરાવવું, બ્રહ્મચર્યવાસ=વિષયસુખ પરિત્યાગરૂપી બ્રહ્મચર્યમાં સ્થિર રહેવું, પરગૃહપ્રવેશ=મિક્ષા ખાટે ગૃહસ્થોના ઘરમાં જવું, પિન્ડપાત=મિક્ષાપ્રહણ, લઙ્ઘાપલઙ્ઘ=લાભ તેમજ ગેરલાભ,

સુન્દરબોધિની ટીકા વર્ગ ૫ અધ્ય. ૧ નિષઘ

૪૪૭

અર્હણમ્ । લબ્ધાપલબ્ધઃ=લાભાલાભઃ । ઉચ્ચાવચાઃ-ઉચ્ચાશ્ચ અવચાશ્ચ ઉચ્ચાવચાઃ=અનુકૂલપ્રતિકૂલાઃ । ગ્રામકણ્ટકાઃ-ગ્રામઃ=ઇન્દ્રિયસમૂહસ્તસ્ય કણ્ટકા इव कण्टकाः इन्द्रियवर्गानुकूलप्रतिकूलशब्दादिषु सुखदुःखोत्पादकत्वेन मुक्तिमार्गे प्रति विघ्नहेतुत्वादेषां कण्टकत्वं व्यक्तम् । ઉચ્ચાવચા ગ્રામકણ્ટકા અધ્યાસ્યન્તે તમ્ અર્થ=મોક્ષપ્રાપ્તિરૂપમ્ આરાધયિષ્યતિ । સેત્સ્યતિ=સકલકાર્યકારિતયા સિદ્ધો ભવિષ્યતિ । મોત્સ્યતે=વિમલકેવલાલોકેન સકલલોકાલોકં જ્ઞાસ્યતિ । યાવચ્છબ્દેન-‘ મુચ્ચિહિં પરિણિન્વાહિં ’ इत्यनयोः सङ्गोहः, તથાહિ-મોક્ષ્યતે=સર્વકર્મભ્યો મુક્તો ભવિષ્યતિ । પરિનિર્વાસ્યતિ=સમસ્તકર્મ-કૃતવિકારરહિતત્વેન સ્વસ્થો ભવિષ્યતિ । સર્વદુઃખાનાં=સમસ્તક્લેશાનામ્ અન્તં=નાશં કરિષ્યતિ અવ્યાવાધસુખભાગ્ મવિષ્યતીત્યર્થઃ । હે જમ્બૂ !

=લાભ ઓર અલાભ, ઓર ઉચ્ચાવચગ્રામકણ્ટક=ઇન્દ્રિયોકે અનુકૂલ પ્રતિકૂલ શબ્દ બાદિકો સહન કરના, આદિ મર્યાદામેં ચલતેહેં; ઉસ મોક્ષરૂપ અર્થકો આરાધના કરેગા । ઓર સકલ કાર્યોકો સિદ્ધ કરકે અન્તિમ ઉચ્છ્વાસ નિઃશ્વાસોસે સિદ્ધ હોગા । નિર્મલ કેવલજ્ઞાનસે સકલ લોકાલોકકો જાનેગા ઓર સર્વકર્મોસે મુક્ત હોગા, ઓર સકલ-કર્મવિકારરહિત હોકર શીતલીભૂત હોગા ઓર સમ્પૂર્ણ દુઃસ્વોકા અન્ત કરકે અવ્યાવાધ સુખકો પ્રાપ્ત કરેગા ।

અને ઉચ્ચાવચગ્રામકણ્ટક=ઇન્દ્રિયોને અનુકૂળ પ્રતિકૂળ શબ્દો આદિ સહન કરવા આદિ મર્યાદામાં ચલે છે; તે મોક્ષરૂપ અર્થની આરાધના કરશે. અને સકલ કાર્ય સિદ્ધ કરી છેલ્લા ઉચ્છ્વાસ નિઃશ્વાસો પછી સિદ્ધ થશે. નિર્મળ કેવળજ્ઞાનથી તમામ લોકો અને સર્વ કર્મથી મુક્ત થશે. અને સકલ કર્મ વિકાર રહિત થઇને શીતલીભૂત (શાન્ત) થશે અને સંપૂર્ણ, દુઃખોનો અંત લાગીને અવ્યાવાધ સુખને પ્રાપ્ત કરશે.

३३८

५ वृष्णिदशाका

एवं सेसा वि एकारस अज्झयणा नेयन्वा संगहणीअणुसारेण,
अहीणमइरिच एकारससु वि । तिबेमि ॥ ३ ॥

॥ बारस अज्झयणा समत्ता ॥ १२ ॥

॥ वह्निदसा नामं पंचमो वग्गो समत्तो ॥ ५ ॥

॥ निरयावलिया सुयक्खंधो समत्तो ॥

॥ समत्ताणि उवंगानि ॥

एवं शेषाण्यपि एकादशाध्ययनानि ज्ञेयानि संग्रण्यनुसारेण, अहीनाऽ-
तिरिक्तम् एकादशस्वपि । इति ब्रवीमि ॥ ३ ॥

॥ द्वादशाध्ययनानि समाप्तानि ॥ १२ ॥

॥ वृष्णिदशानामा पञ्चमोवर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥

॥ निरयावलिकाश्रुतस्कन्धः समाप्तः ॥

॥ समाप्तानि उपाङ्गानि ॥

एवम्=उक्तप्रकारेण श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सिद्धिगतिनामधेयं
स्थानं संप्राप्तेन यावद् निक्षेपकः=समाप्तिसूचको वाक्यप्रबन्धः ॥ ३ ॥

इति प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥ १ ॥

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरने वृष्णिदशाके प्रथम अध्ययनका भाव
इस प्रकार कहा है ॥ ३ ॥

वृष्णिदशाका प्रथम अध्ययन समाप्त हुआ.

सुधर्मा स्वामी कहें हैं:—

हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरे वृष्णिदशाना प्रथम अध्ययनका भाव
इस प्रकार कहा है. (३).

वृष्णिदशानु प्रथम अध्ययन समाप्त.

ટીકા—

एवं शेषाण्यपि=अवशिष्टान्यपि एकादशाध्ययनानि संग्रहण्यनुसारेण=अस्यैवाध्ययनस्यादौ “ निसंखे मायनी ” इत्यादिसंग्रहणीगाथानुसारेण ज्ञातव्यानि । एकादशस्वपि=सर्वेष्वप्यध्ययनेषु अहीनातिरिक्तं=न्यूनाधिकभावरहितं वर्णनं विज्ञेयमिति भावः । शेषं निगदसिद्धम् । इति=यथा भगवत्समीपे मया श्रुतं तथैव ब्रवीमि=कथयामि ॥ ३ ॥

॥ इति द्वादशमध्ययनं समाप्तम् ॥ १२ ॥

इसी प्रकार शेष ग्यारह अध्ययनोंको भी संग्रहणी गाथाके अनुसार जानना चाहिये । ग्यारहों अध्ययनोंमें न्यूनाधिकभावसे रहित वर्णन जानना चाहिये ।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! भगवानके समीप मैंने जैसा सुना वैसा तुम्हें कहा ॥३॥

। बारहवाँ अध्ययन समाप्त हुआ ।

। वृष्णि दशा नामक पाँचवाँ वर्ग समाप्त हुआ ।

निरयावલિકા નામક શ્રુતસ્કન્ધ સમાપ્ત.

(ઉપાંગ સમાપ્ત હુଏ)

આવી રીતે બાકીના અગીયાર અધ્યયનને પણ સંગ્રહણી ગાથાને અનુસરીને જાણવા જોઈએ. અગીયારે અધ્યયનોમાં ન્યૂનાધિક (વધતા ઓછા) ભાવથી રહિત વર્ણન જાણવું જોઈએ.

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ ! ભગવાનની પાસે મેં જે સાંભળ્યું એવું તને કહું છું. (૩).

બારમું અધ્યયન સમાપ્ત.

વૃષ્ણિદશા નામનો પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત.

નિરયાવલિકા નામનો શ્રુતસ્કન્ધ સમાપ્ત.

(ઉપાંગ સમાપ્ત).

૪૫૦

૫ ધૃતિવંશ સૂત્ર

મૂલમ્—

નિરયાવલિયાઉવંગે જં ઇગો સુચકલંધો, પંચ વર્ગા, પંચસુ દિવસેસુ
ઉદિસ્સંતિ, તત્થ ચઉસુ વર્ગેસુ દસ દસ ઉદેસગા, પંચમવર્ગે બારસ ઉદેસગા ॥

॥ નિરયાવલિયાસુત્રં સમાપ્તં ॥

છાયા—

નિરયાવલિકોપાજ્ઞે સ્વલ્લુ એકઃ શ્રુતસ્કન્ધઃ, પંચ વર્ગાઃ, પંચસુ દિવ-
સેસુ ઉદિશ્યન્તે, તત્ર ચતુર્ણ વર્ગેષુ દશ દશ ઉદેશકાઃ, પંચમવર્ગે દ્વાદશોદેશકાઃ ॥

॥ ઇતિ નિરયાવલિકામૂત્રં સમાપ્તમ્ ॥

નિરયાવલિકા ઉપાજ્ઞામાં એક શ્રુતસ્કન્ધ છે, પાંચ વર્ગો છે, પાંચ દિવસોમાં
ઇસકા ઉપદેશ દિવા ગયા છે. ઇસકે ચાર વર્ગોમાં દસ-દસ ઉદેશ છે, પાંચવે વર્ગમાં
બારહ ઉદેશ છે.

ઇતિ નિરયાવલિકા સૂત્ર સમાપ્ત.

નિરયાવલિકા ઉપાજ્ઞામાં એક શ્રુતસ્કન્ધ છે. પાંચ વર્ગો છે. પાંચ દિવસમાં
આનો ઉપદેશ અપાયો છે. આના ચાર વર્ગોમાં દસ-દસ ઉદેશો છે. પાંચમા વર્ગમાં
બાર ઉદેશો છે.

ઇતિ નિરયાવલિકા સૂત્ર સમાપ્ત.

सुन्दरबोधिनी टीका शास्त्र प्रशस्ति

४५१

॥ शास्त्रप्रशस्तिः ॥

काठियावाड देशेऽस्मिन्, वाँकानेरपुरं महत् ।
 अत्रेत्य मुनिभिः सार्द्धं, ग्रामार्द्रामान्तरं व्रजन् ॥ १ ॥

टीकामकार्षमेतर्हि, मृद्वी सुन्दरबोधिनीम् ।
 त्रिपरद्विसहस्रान्दे, विक्रमीये सुखावहे ॥ २ ॥

आषाढे बहुले पक्षे, पञ्चम्यां बुधवासरे ।
 सेयं सम्पूर्णतां याता, भव्यानामुपकारिणी ॥ ३ ॥

प्रशस्ति.

काठियावाड प्रान्तमें वाँकानेर नामका एक नगर है । तीर्थंकर परम्परासे ग्रामानुग्राम विहार करते हुए इस नगरमें आकर विक्रम संवत् २००३ को मैंने इस सुन्दरबोधिनी नामक टीकाकी रचना की ॥ १ ॥ २ ॥

भक्त्योंकी उपकारिणी यह टीका आषाढ कृष्ण पञ्चमी बुधवारको समाप्त हुई ॥ ३ ॥

प्रशस्ति

काठियावाड प्रान्तमां वाँकानेर नामे एक नगर छे. तीर्थंकर परंपराधी अभिशास विहार करता करता आ नगरमां आवीने विक्रम संवत् २००३ मां मे आ सुन्दरबोधिनी नामनी टीका रथी. (१-२)

भक्त्योंनी उपकार करवावाणी आ टीका आषाढ (शु० जेठ) वदि पांचम बुधवारे समाप्त थध. (३).

૪૫૨

૫ કલિંગસંપ્રદાય

ટીકાસમાપ્તિકાલે ચ સાધ્યઃ સ્વયં ઉત્તમાઃ ।

સન્ત્યજ તૈષાં નામાનિ, કથ્યન્તે ગુણવૃદ્ધયે ॥ ૪ ॥

સમ્પ્રદાયા લસન્ત્યજ, નિરપાયાઃ સદાહૃતાઃ ।

લિમ્બહીસમ્પ્રદાયોઽજ, દીપ્યતે દિવિ ચન્દ્રવત્ ॥ ૫ ॥

તત્રાસ્તિ જ્ઞાન્તો મનસાઽથ દાન્તઃ, કૃતો મુનિઃ કેશવલાલનામા ।

ગુણૈર્ગુરોરુચ્છપદ્માઽધિકારી, સ્વતત્ત્વધારી વિઠ્ઠસત્પ્રભાવઃ ॥ ૬ ॥

હસ ટીકાકો સમાપ્તિકે સમય જો મહાસતિયાં સ્થા મુનિરાજ શિરાજો થે અનેકે નામ ગુણવૃદ્ધિકે લિયે કહે જાતે હૈ ॥ ૪ ॥

હસ સંસારમેં પવિત્ર ઓર નિર્મલ બહુતસી આર્હત સંપ્રદાયેં હૈ । હન સંપ્રદાયોમેં લિમ્બહી સમ્પ્રદાય આકાશમેં ચન્દ્રમાકે સમાન દેદીપ્યમાન હૈ ॥ ૫ ॥

હસ લિમ્બહી સમ્પ્રદાયમેં જ્ઞાન્ત તથા મન ઓર ઇન્દ્રિયોંકો દમન કરમે વાલે કૃતી અર્થાત્ પંડિતરાજ મુનિશ્રી કેશવલાલજી મહારાજ હૈ, જો ગુણસે ગુરુકે ઉચ્ચ પદકે ઉત્તરાધિકારી હૈ । તથા યે મુનિવર સ્વ=આત્મા અથવા જૈનાગમકે તત્ત્વોંકે નિરૂપણ કરનેમેં પ્રવીણ હૈ, એવં અપને તેજસે દેદીપ્યમાન હૈ ॥ ૬ ॥

આ ટીકાની સમાપ્તિ વખતે જે ઉત્તમ સાધુ અને ઉત્તમ સાધ્વીઓ હતી તેમનાં નામ ગુણવૃદ્ધિ માટે કહું છું (૪).

આ સંસારમાં ધણા નિર્મલ અને ઉત્તમ જૈન સંપ્રદાયો છે. તે સંપ્રદાયોમાં લિમ્બહી સંપ્રદાય આકાશમાં ચન્દ્ર ની પેઠે દેહીપ્યમાન છે. (૫).

આ લિમ્બહી સંપ્રદાયમાં જ્ઞાન્ત તથા મન અને ઇન્દ્રિયોંને સંયમથી દમન કરવાવાળા કૃતી અર્થાત્ પંડિત પ્રવર મુનિશ્રી કેશવલાલજી મહારાજ છે જે ગુણો વડે ગુરુના ઉચ્ચપદના ઉત્તરાધિકારી છે; તથા આ મુનિવર સ્વ=આત્મા અથવા જૈન આગમનાં તત્ત્વોંને નિરૂપણ કરવામાં પ્રવીણ છે. એ પ્રમાણે તેઓ પોતાના તેજ વડે દેહીપ્યમાન છે. (૬).

સુન્દરગોવિન્દી દ્વોકા રામચંદ્ર પ્રસાદિચ

૪૫૩

ગુણાભિરામો ગુણસ્મપ્રચારે, સર્વદાઽવિરામો નિઃકલંકામ્ ।

સુત્યક્તરામોઽપિ વિભતિ નામ્ના, રામો મુનિઃ કેવલ ઇયં ચ ॥ ૭ ॥

પ્રવર્તિની ભાકલવાઈનામ્ની, શ્રીજીકુમારેતિ સતીતરા ચ ।

સન્તોકવાઈતિ પરા સતી ચ, તિસ્રોઽપ્યજસં દધતે વ્રતિત્વમ્ ॥ ૮ ॥

और दूसरे मुनि जो कि गुणोंसे अभिराम (सुन्दर) हैं तथा गुणोंके प्रचारमें सर्वदा लगे रहते हैं और जिन्होंने सभी सांसारिक कामनाओंका त्याग कर दिया है इस प्रकारके यह मुनिराज सुत्यक्तराम=(रामा=ल्लोके त्यागी) हमेशेपर भी ' राम ' इस नामसे प्रसिद्ध हैं । और तीसरे विद्यार्थी केवल मुनि हैं ॥ ७ ॥

અથ મહાસતિયોકે નામ કહેતે હૈં—

यहाँ पर ये महासतियाँ सर्वदा पञ्चमहाव्रतको धारण करती हुई विचर रही हैं, इनमें प्रथम महासतीका नाम प्रवर्तिनी श्री झाकलवाई स्वामी है, दूसरी महासतीका नाम श्री श्रीजी कुँवरवाई स्वामी है, तथा तीसरी महासतीका नाम श्री सन्तोकवाई स्वामी है । ये तीन ठाणों से स्थिरवास विराजती हैं ॥ ८ ॥

વળી બીજા મુનિ કે જે શુભો વડે અભિરામ (સુન્દર) છે તથા શુભોના પ્રચારમાં સર્વદા મંડ્યા રહે છે તથા જેમણે સાંસારિક બધી કામનાઓનો ત્યાગ કર્યો છે એવા મુનિરાજ સુત્યક્તરામ=રામા (સ્ત્રી) ને છોડીને પણ ' રામ ' આવાં નામથી શોભી રહ્યા છે. અર્થાત્ બીજા રામ મુનિ છે. ત્રીજા કેવલમુનિ છે. (૭).

હવે મહાસતીઓનાં નામ કહે છે:—

અહીં સાધ્વીઓ હમેશાં પાંચ મહાવ્રત ધારણ કરતી વિચરે છે. તેમાં પ્રથમ મહાસતીનું નામ પ્રવર્તિની झाकलवाई स्वामी છે. બીજી સતીનું નામ શ્રીજીકુવરवाई स्वामी તથા ત્રીજી સતીનું નામ શ્રીસંતોકवाई स्वामी છે. આ ત્રણેય યાજ્ઞાં સ્થિરવાસ બિરાજે છે. (૮).

સાધ્વી શ્રીપાર્વતીબાઈ, શ્રીહેમકુમરા ડમિધા ।

વૈયાવૃત્યૈકશીલા શ્રી, સમ્ભૂવાઈ મહાસતી ॥ ૯ ॥

વાંકાનેરપુરસ્થ એષ પરમોદારો મહાધાર્મિકઃ,

શુદ્ધસ્થાનકવાસિધર્મનિરતઃ સમ્યક્ત્વભાવાન્વિતઃ ।

તત્ત્વાતત્ત્વપયોવિવેચનવિધૌ હંસાયમાનઃ સદા,

સર્વેષામુપકારકો વિજયતે શ્રી જૈનસંઘો મહાન્ ॥ ૧૦ ॥

તથા મહાસતી શ્રી પાર્વતીબાઈ સ્વામી ઓર મહાસતી શ્રી હેમકુંવરબાઈ સ્વામી એવં સેવાભાવી મહાસતી શ્રી સમ્ભૂબાઈ સ્વામી યહાં ત્રીન ઠાણોં સે વિરાજતી હૈં ॥ ૯ ॥

વાંકાનેરકા યહ પરમ ઉદાર મહાધાર્મિક શ્રી જૈનસંઘ સદા વિજયશાલી હૈ । યહ જૈનસંઘ શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મમેં નિરત હૈ તથા સમ્યક્ત્વભાવસે યુક્ત હૈ, એવં તત્ત્વ ઓર અતત્ત્વ રૂપી દુગ્ધ ઓર જલકે વિવેચનમેં હંસકે સમાન હૈ, ઓર યહ સંઘ સમી પ્રાણિયોંકા હિતકારક હૈ ॥ ૧૦ ॥

મહાસતી શ્રી પાર્વતીબાઈ સ્વામી તથા શ્રી હેમકુંવરબાઈ સ્વામીં અને સેવાપરાયણ શ્રી સમજુબાઈ સ્વામીં અહીં બિરાજે છે. (૯).

વાંકાનેરનો આ પરમ ઉદાર મહાધાર્મિક શ્રી જૈનસંઘ સદા વિજયશાળી છે. આ જૈનસંઘ શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મમાં નિરત છે તથા સમ્યક્ત્વ ભાવથી યુક્ત છે. અર્થાત્ તત્ત્વ અને અતત્ત્વરૂપી દૂધ અને પાણીના વિવેચનમાં હંસ સમાન છે. અને આ સંઘ સર્વ પ્રાણીઓનો હિતકારક છે. (૧૦).

સુન્દરબોધિની ટીકા શાસ્ત્ર પ્રશસ્તિ

૪૫૫

દેવે ગુરૌ ધર્મપથે ચ ભક્તિર્યેષાં સદાચારરુચિર્હિ નિત્યમ્ ।

તે શ્રાવકા ધર્મપરાયણાશ્ચ સુશ્રાવિકાઃ સન્તિ ગૃહે ગૃહેઽત્ર ॥ ૧૧ ॥

इति प्रशस्तिः

इति श्री विश्वविल्यात-जगदबल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलितललित-
कलापालापक-प्रविशुद्धमथपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक-वादिमानमर्दक-श्री शम्भूछत्रपति कोल्हापुर
राजप्रदत्त-‘जैनाखाचार्य’-पद भूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्म
दिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचिता श्री निरयावलिकादिपञ्चसूत्राणां सुन्दर-
बोधिनी टीका समाप्ता ।

इस नगरके घर घरमें देव, गुरु और धर्ममें सर्वदा श्रद्धा रूचि रखनेवाले
तथा सदाचारसे युक्त एवं धर्मपरायण श्रावक और श्राविकाएँ विद्यमान हैं । ॥ ११ ॥

। इति श्री निरयावलिका आदि पाँच सूत्रोंकी सुन्दरबोधिनी टीकाका

हिन्दी अनुवाद समाप्त ।

જેમની દેવ, ગુરૂ તથા ધર્મમાં હૃદયમાં ભક્તિ છે તથા સદાચારમાં રૂચી છે
એવાં શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ આ નગરમાં ઘેરઘેર વિદ્યમાન છે. (૧૧).

इति निरयावलिका आदि पांच सूत्रोनी सुन्दरबोधिनी टीकाने।

शुभशाली अनुवाद समाप्त.

मङ्गलं भगवान् वीरो मङ्गलं गौतमः प्रभुः ।

सुधर्मा मङ्गलं जम्बूजैनेधर्मश्च मङ्गलम् ॥

